

महाराष्ट्राची आर्थिक पाहणी

२००४-०५

*ECONOMIC SURVEY OF
MAHARASHTRA*

2004-05

NIEPA DC



D12607

338.954792
MAH 04-MA

Rec. no. 32691

LIBRARY & DOCUMENTATION CENT.
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg.

New Delhi-110016
DOC. No. W-12607
156205

प्रस्तावना

अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय 'महाराष्ट्राची आर्थिक पाहणी' हे प्रकाशन दरवर्षी तयार करते. सदर मराठी व इंग्रजी अशा संयुक्त स्वरूपातील प्रकाशन २००४-०५ या वर्षासाठी तयार करण्यात आले असून हा या मालिकेतील ४४ वा अंक आहे.

२. महाराष्ट्र राज्याच्या अर्थव्यवस्थेची ठळक वैशिष्ट्ये प्रकाशनाच्या पहिल्या भागात दिली असून दुसऱ्या भागात सांख्यिकीय तक्ते दिले आहेत.

३. या प्रकाशनात अद्ययावत् माहिती देण्याच्या प्रयत्नात काही ठिकाणी अस्थायी स्वरूपाची आकडेवारी देण्यात आली आहे. अंतिम माहिती मिळाल्यावर अशा आकडेवारीमध्ये बदल होण्याची शक्यता आहे.

द.रा.भोसले

अर्थ व सांख्यिकी संचालक

नियोजन विभाग

मुंबई,

दिनांक २१ मार्च, २००५

PREFACE

The Directorate of Economics and Statistics brings out the publication 'Economic Survey of Maharashtra' every year. The present publication for the year 2004-05 is the 44th issue in the series and is prepared in combined form in Marathi and English.

2. The salient features of the State's economy are given in Part-I and statistical tables are presented in Part-II of this issue.

3. In attempting to give up-to-date data in this publication, provisional figures have been included at some places and those are likely to be revised after final data become available.

D.R.Bhosale

Director of Economics and Statistics
Planning Department

Mumbai,

Dated 21st March, 2005

भाग एक - पाहणी

| अनुक्रमणिका | | |
|----------------|---|------------|
| प्रकरण क्रमांक | विषय | पृष्ठ क्र. |
| 1 | समग्र आढावा | 1 |
| 2 | आर्थिक दृष्टिक्षेप व आनुषंगिक धोरणे | 7 |
| 3 | नोकसंख्या | 12 |
| 4 | नोकवित्त | 17 |
| | राज्यशासनाची वित्तीय स्थिती | 17 |
| | स्थानिक स्वराज्य संस्थांची वित्तीय स्थिती | 25 |
| 5 | राज्य उत्पन्न | 28 |
| 6 | संस्थांद्वारे वित्तपुरवठा | 32 |
| 7 | केमती व वितरण | 37 |
| | किमतीविषयक स्थिती | 37 |
| | नागरी पुरवठा | 41 |
| 8 | उद्योग | 44 |
| 9 | कृषि व संलग्न कार्ये | 54 |
| | कृषि | 54 |
| | फलोत्पादन | 58 |
| | सिंचन | 58 |
| | वने व सामाजिक वनीकरण | 65 |
| | पशुसंवर्धन | 65 |
| | दुग्धव्यवसाय | 67 |
| | मत्स्यव्यवसाय | 67 |
| 10 | सहकार | 68 |
| 11 | गायाभूत सुविधा | 75 |
| | ऊर्जा | 75 |
| | परिवहन व दळणवळण | 82 |
| 12 | सामाजिक क्षेत्रे | 88 |
| | दारिद्र्य | 88 |
| | रोजगार | 89 |
| | शिक्षण | 96 |
| | सार्वजनिक आरोग्य | 103 |
| 13 | विशेष अभ्यास | 115 |

PART I - SURVEY

| CONTENTS | | |
|-------------|---|----------|
| Chapter No. | SUBJECT | Page No. |
| 1. | Executive summary | 131 |
| 2. | Economic Outlook and Policy Imperatives | 138 |
| 3. | Population | 144 |
| 4. | Public Finance | 149 |
| | Finances of State Government | 149 |
| | Finances of local bodies | 157 |
| 5. | State Income | 161 |
| 6. | Institutional Finance | 165 |
| 7. | Prices and Distribution | 170 |
| | Price situation | 170 |
| | Civil supplies | 174 |
| 8. | Industries | 178 |
| 9. | Agriculture and allied activities | 190 |
| | Agriculture | 190 |
| | Horticulture | 194 |
| | Irrigation | 195 |
| | Forests and social forestry | 202 |
| | Animal husbandry | 203 |
| | Dairy development | 204 |
| | Fisheries | 204 |
| 10. | Co-operation | 205 |
| 11. | Infrastructure | 212 |
| | Energy | 212 |
| | Transport & Communications | 220 |
| 12. | Social sectors | 226 |
| | Poverty | 226 |
| | Employment | 227 |
| | Education | 235 |
| | Public Health | 242 |
| 13. | Special study | 256 |

अनुक्रमणिका / CONTENTS

आलेख पृष्ठ क्रमांक १२० नंतर

Graphs after Page No. 120

| आलेख | GRAPHS |
|--|--|
| 1. लोकसंख्या व साक्षरतेचे प्रमाण (जनगणनेनुसार) | Population and literacy rate (As per population census) |
| 2. राज्य उत्पन्न | State Income |
| 3. राज्य उत्पन्नाची क्षेत्रवार विभागणी | Sectoral Composition of State Income |
| 4. दरडोई राज्य व राष्ट्रीय उत्पन्न | Per capita State and National Income |
| 5. अखिल भारतीय घाऊक किंमतीचे निर्देशांक | All-India wholesale price index numbers |
| 6. औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | Consumer price index numbers for industrial workers |
| 7. महाराष्ट्रातील नागरी व ग्रामीण भागांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | Consumer Price Index numbers for urban & rural Maharashtra |
| 8. कारखाने आणि कारखान्यांतील रोजगार | Factories and factory employment |
| 9. अन्नधान्य उत्पादन | Foodgrains production |
| 10. कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक | Index numbers of agricultural production |
| 11. महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील साखर कारखान्यांची संख्या, व साखर उत्पादन | No. of Sugar factories & Sugar production in Maharashtra & rest of India |
| 12. सहकारी संस्थांची वाढ | Growth of co-operative societies |
| 13. विजेची एकूण निर्मिती आणि वापर | Total electricity generation and consumption |

| विषय | पृष्ठ क्रमांक Page No. | SUBJECT |
|--|---------------------------|---|
| दृष्टिक्षेपात महाराष्ट्र | 121 | Maharashtra at a glance |
| महाराष्ट्राची आणि भारताची तुलनात्मक माहिती | 124 | Maharashtra's comparison with India |
| भारतातील राज्यांचे निवडक सामाजिक व आर्थिक निर्देशक | 126 | Selected socio-economic indicators of States in India |

अनुक्रमणिका/CONTENTS

| विवरण | पृष्ठ क्रमांक Page No. | SUBJECT |
|--|---------------------------|--|
| 1. महाराष्ट्राची व भारताची लोकासंख्या | T-1 | Population of Maharashtra and India |
| 2. राज्यातील ग्रामीण आणि नागरी लोकसंख्या | T-1 | Rural and Urban population in the State |
| 3. महाराष्ट्र राज्याचे नमुना नोंदणी पाहणीवर आधारलेले जन्मदर, मृत्युदर व बालमृत्यू दर | T-2 | Birth rate, death rate and infant mortality rates based on Sample Registration Scheme, Maharashtra State |
| 4. काम करणाऱ्या लोकांची १९९१ जनगणनेनुसार आर्थिक वर्गवारी | T-3 | Economic classification of workers as per population census, 1991 |
| 5. महाराष्ट्र राज्यातील कृषि क्षेत्रवरील करांपासून महसुली जमा | T-4 | Revenue receipts from taxes on agriculture sector in Maharashtra State |
| 6. महसुली व भांडवली लेखांवगेल जमेतील कल | T-5 | Trends in receipts on revenue and capital accounts |
| 7. महसुली व भांडवली लेखांवगेल खर्चातील कल | T-6 | Trends in expenditure on revenue and capital accounts |
| 8. महाराष्ट्र राज्य शासनाच्या अर्थसंकल्पाचे आर्थिक व उद्देशानुसार वर्गीकरण | T-8 | Economic and purpose classification of Maharashtra State Government Budget |
| 9. महाराष्ट्र राज्य शासनाचा अर्थसंकल्पीय जमा व खर्च | T-10 | Budgetary Receipts and Expenditures of Maharashtra State Government |
| 10. राज्य शासनाची भांडवल निर्मिती व त्यासाठी वित्तीय सहाय्य | T-11 | The Capital Formation by State Government and its financing |
| 11. वर्षभरातील कर्ज व इतर दायित्व | T-12 | Borrowings and Other Liabilities during the years |
| 12. नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे २००३-०४ मधील उत्पन्न व खर्च | T-13 | Income and Expenditure of Urban LSGs during 2003-04 |
| 13. औद्योगिक स्रोतांनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न - चालू किंमतीनुसार | T-14 | Gross State domestic product by industry of origin at current prices |
| 14. औद्योगिक स्रोतांनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न - स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार | T-15 | Gross State domestic product by industry of origin at constant (1993-94) prices |
| 15. औद्योगिक स्रोतांनुसार राज्य उत्पन्न - चालू किंमतीनुसार | T-16 | Net State domestic product by industry of origin at Current prices |
| 16. औद्योगिक स्रोतांनुसार राज्य उत्पन्न - स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार | T-17 | Net State domestic product by industry of origin at Constant (1993-94) prices |
| 17. औद्योगिक स्रोतांनुसार निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न व राष्ट्रीय उत्पन्न - चालू किंमतीनुसार | T-18 | Net National domestic product by industry of origin and National Income at Current prices |

अनुक्रमणिका - चालू

CONTENTS - contd.

| विषय | पृष्ठ क्रमांक Page No. | SUBJECT |
|---|---------------------------|---|
| 18. औद्योगिक स्रोतांनुसार निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न व राष्ट्रीय उत्पन्न -स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार | T-19 | Net National domestic product by industry of origin and National Income at Constant (1993-94) prices |
| 19. निव्वळ जिल्हा उत्पन्न आणि दरडोई जिल्हा उत्पन्न | T-20 | Net District Domestic Product and Per Capita Net District Domestic Product |
| 20. महाराष्ट्र राज्याच्या ग्रामीण, निमनगरी व नागरी/महानगर क्षेत्रातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या ठेवी व कर्ज | T-22 | Deposits and credits of all scheduled commercial banks in rural, semi-urban and urban / metropolitan areas of Maharashtra State |
| 21. अखिल भारतीय घाऊक किंमतीचे निर्देशांक | T-23 | All India Wholesale Price Index numbers |
| 22. औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | T-24 | All India Consumer Price Index numbers for industrial workers |
| 23. महाराष्ट्र राज्यातील निवडक केंद्रांमधील औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | T-25 | Consumer Price Index numbers for industrial workers at selected centres in Maharashtra State |
| 24. नागरी श्रमिकेतर कर्मचाऱ्यांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | T-27 | Consumer Price Index numbers for urban non-manual employees |
| 25. महाराष्ट्र व अखिल भारतातील शेतमजुरांकरिता व ग्रामीण मजुरांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक | T-27 | Consumer Price Index numbers for agricultural labourers and rural labourers in Maharashtra and All India |
| 26. महत्त्वाच्या किंमत निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचे दर | T-28 | Inflation rates based on important price indices |
| 27. महाराष्ट्रातील नागरी भागाकरिता ग्राहक किंमतीचे गटवार निर्देशांक | T-29 | Groupwise Consumer Price Index Numbers for urban Maharashtra |
| 28. महाराष्ट्रातील ग्रामीण भागाकरिता ग्राहक किंमतीचे गटवार निर्देशांक | T-30 | Groupwise Consumer Price Index Numbers for rural Maharashtra |
| 29. महाराष्ट्रातील अधिकृत शिधावाटप/रास्त भाव दुकानांना देण्यात आलेला तांदूळ व गहू | T-31 | Quantity of rice and wheat issued to authorised ration/fair price shops in Maharashtra |
| 30. भारत सरकारकडून महाराष्ट्र राज्याला मिळालेले तांदूळ व गहू यांचे नियतन | T-31 | Quantity of rice and wheat allotted by Government of India to Maharashtra State |
| 31. भारतातील औद्योगिक उत्पादनाचे निर्देशांक | T-32 | Index numbers of industrial production in India |
| 32. महाराष्ट्र राज्यातील उद्योगांच्या महत्त्वाच्या बाबी | T-33 | Important characteristics of industries in Maharashtra State |
| 33. महाराष्ट्रातील निवडक उद्योग गटांतील कारखान्यांची रोजगार आकारवर्गाप्रमाणे टक्केवारी २००२-०३ | T-35 | Percentage distribution of factories by size class of employment in selected industry groups in Maharashtra 2002-03 |
| 34. महाराष्ट्रातील निवडक उद्योग गटांतील कारखान्यांची स्थिर भांडवल आकारवर्गाप्रमाणे टक्केवारी २००२-०३ | T-36 | Percentage distribution of factories by size class of fixed capital in selected industry groups in Maharashtra 2002-03 |

| विषय | पृष्ठ क्रमांक Page No. | SUBJECT |
|---|---------------------------|---|
| 35. महाराष्ट्रराज्यातील उद्योगांकरिता ढोबळ उद्योग गट समुहानुसर महत्त्वाची गुणोत्तरे | T-37 | Important ratios for broad groups of industry divisions of industries in Maharashtra State |
| 36. महाराष्ट्रराज्यातील उद्योगांना वित्तीय संस्थांनी मंजूर केलेले व वित्तिसि केलेले अर्थसहाय्य | T-38 | Financial assistance sanctioned and disbursed by financial institutions to the industries in Maharashtra State |
| 37. महाराष्ट्रराज्यातील खनिजांचे उत्पादन | T-39 | Minerals production in Maharashtra State |
| 38. कृषि गणनांनुसार महाराष्ट्रातील एकूण वहिती खातेदार, वहितीचे एकूण क्षेत्र व सरासरी क्षेत्र | T-40 | Total number, area and average size of operational holdings in Maharashtra according to Agricultural Censuses |
| 39. महाराष्ट्रतील जमिनीच्या वापराची आकडेवारी | T-41 | Land utilisation statistics of Maharashtra |
| 40. महाराष्ट्रराज्यातील मुख्य पिकांखालील क्षेत्र, पीक उत्पादन आणि द हेक्टरी उत्पादन | T-42 | Area under principal crops, production and yield per hectare in Maharashtra State |
| 41. विविध स्रोतांनुसार महाराष्ट्र राज्यातील सिंचित क्षेत्र | T-44 | Area irrigated by various sources in Maharashtra State |
| 42. महाराष्ट्रराज्यातील कृषि उत्पादनांचे पीकनिहाय निर्देशांक | T-45 | Cropwise index numbers of agricultural production in Maharashtra State |
| 43. महाराष्ट्रराज्यातील पशुधन आणि कांबड्या व बदके | T-47 | Livestock and poultry in Maharashtra State |
| 44. महाराष्ट्रराज्यातील सहकारी संस्था (ठळक वैशिष्ट्ये) | T-48 | Co-operative societies in Maharashtra State (Salient features) |
| 45. महाराष्ट्रराज्यातील वीजपुरवठा | T-50 | Electricity supply in Maharashtra State |
| 46. महाराष्ट्रराज्यातील रस्त्यांची निरनिराळ्या प्रकारांनुसार लांबी (सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषद यांच्या देखभालखालील) | T-52 | Road length by type of roads in Maharashtra State (Maintained by Public Works Department and Zilla Parishad) |
| 47. महाराष्ट्रराज्यातील वापरात असलेली मोटार वाहने | T-53 | Number of motor vehicles in operation in Maharashtra State |
| 48. महाराष्ट्र राज्यातील प्रमुख उद्योग गटांनुसार कारखान्यांतील रोजगार | T-54 | Factory employment in major industry divisions in Maharashtra State |
| 49. महाराष्ट्र राज्यातील चालू कारखाने व त्यातील रोजगार | T-55 | Working factories and factory employment in Maharashtra State |
| 50. महाराष्ट्र राज्यातील विविध उद्योगांतील रोजगार | T-57 | Employment in different industries in Maharashtra State |
| 51. राज्यातील रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांमध्ये नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या, अधिसूचित केलेली रिक्त पदे व भरलेली पदे | T-58 | Registrations in the Employment and Self-Employment guidances centres in the state the vacancies notified and placements effected |

| विषय | पृष्ठ क्रमांक Page No. | SUBJECT |
|--|---------------------------|---|
| 52. रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांच्या चालू नोंदवहीत डिसेंबर, २००४ अखेर असलेल्या व्यक्तींची संख्या | T-59 | Number of persons on the live register off Employment & Self-employment guidance Centres as at the end of December, 2004 |
| 53. रोजगार हमी योजनेखाली महाराष्ट्र राज्यात घेण्यात आलेली प्रकारानुसार कामे व त्यावरील खर्च | T-60 | Categorywise number of works and expenditure incurred thereon under the Employment Guarantee Scheme in Maharashtra State: |
| 54. महाराष्ट्र राज्यात राबविण्यात येणाऱ्या केंद्रपुरस्कृत रोजगार कार्यक्रमांची प्रगती | T-61 | Performance of Centrally sponsored employment programmes implemented in Maharashtra State |
| 55. महाराष्ट्र राज्यातील औद्योगिक विवाद | T-62 | Industrial disputes in Maharashtra State: |
| 56. महाराष्ट्रातील शिक्षणाची वाढ | T-63 | Growth of education in Maharashtra |
| 57. राज्यातील वर्ष २००४-०५ मधील वैद्यकीय, परिचर्या महाविद्यालये / संस्थांची संख्या व त्यांची प्रवेश क्षमता | T-64 | Number of Medical, Nursing colleges / institutions in the state and their intake capacity for the year 2004-05 |
| 58. राज्यातील वर्ष २००४-०५ मधील तंत्रशिक्षणाची महाविद्यालये/ संस्थांची संख्या व त्यांची प्रवेश क्षमता | T-65 | Number of Technical colleges/institutions in the state and their intake capacity for the year 2004-05 |
| 59. महाराष्ट्र राज्यातील उपलब्ध वैद्यकीय सुविधा (सार्वजनिक आणि शासन सहाय्यित) | T-66 | Medical facilities available in Maharashtra State (Public and Government aided) |
| 60. उपभोग्य वस्तूंच्या गटांनुसार दरडोई मासिक खर्च (द.मा.ख.) | T-68 | Monthly per capita expenditure (MPCE) lby group of items of consumption |
| 61. दरडोई मासिक खर्चाच्या वर्गाप्रमाणे लोकसंख्येची टक्केवारी | T-70 | Percentage distribution of population according to monthly per capita expenditure class |
| 62. दृष्टिक्षेपात आर्थिक गणना १९९० आणि १९९८ | T-71 | Economic Census 1990 and 1998 at a glance |
| 63. प्रमुख उद्योग गटांनुसार उपक्रमांची आणि कामगारांची संख्या | T-72 | Number of enterprises and persons usuaily working according to major industry groups |

भाग एक
पाहणी

PART I
SURVEY



समग्र आढावा

देशातील आर्थिक स्थिती

राष्ट्रीय उत्पन्न

१.१ पूर्वनुमानानुसार, देशाच्या अर्थव्यवस्थेत २००३-०४ मधील ८.५ टक्के लक्षणीय दराने झालेल्या वाढीच्या तुलनेत २००४-०५ वर्षात ६.९ टक्के दराने वाढ होईल असे अपेक्षित आहे. स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नाचे क्षेत्रनिहाय वृद्धिद २००४-०५ मध्ये प्राथमिक क्षेत्रात (कृषि व संलग्न कार्ये) १.१ टक्के, द्वितीय क्षेत्रात ७.८ टक्के व तृतीय क्षेत्रात (सेवा) ८.९ टक्के इतके अंदाजित आहेत. चालू किमतीनुसार स्थूल देशांतर्गत उत्पन्न २००३-०४ मध्ये २५,१९,७८५ कोटी रुपये आणि निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्न (म्हणजेच राष्ट्रीय उत्पन्न) २२,५२,०७० कोटी रुपये होईल असा अंदाज आहे. २००३-०४ मध्ये दरडोई राष्ट्रीय उत्पन्न २०,९८९ रुपये इतके अंदाजित असून, हे मागील वर्षाच्या तुलनेत १० टक्क्यांनी जास्त असेल.

मोसमी पाऊस (जून ते सप्टेंबर)

१.२ भूतीय हवामान शास्त्र विभागाच्या भाकीतानुसार संपूर्ण देशातील २००४ मधील मोसमी पावसाचे प्रमाण सर्वसाधारण असेल आणि हा पाऊस दीर्घकालीन सरासरीच्या १०० टक्के असेल असा अंदाज होता. तथापि, संपूर्ण मोसमात क्षेत्र-भारानुसार देशभरात दीर्घकालीन सरासरीच्या ८७ टक्केच पाऊस पडला. पावसातील ही घट प्रामुख्याने जुलै, २००४ मध्ये अंदाजित असलेल्या दीर्घकालीन सरासरीच्या ९८ टक्के पावसाच्या तुलनेत पडलेल्या कमोभावसामुळे (दीर्घकालीन सरासरीच्या ८१ टक्के) निर्माण झाली होती. जून व ऑगस्ट मध्ये देशभरात पडलेला पाऊस सरासरीच्या आसपास होता. हवामान शास्त्र विषयक उपविभागाच्या आधारावर मोसमाच्या अखेरपर्यंत देशातील कोणत्याही हवामान शास्त्र विषयक उपविभागात तीव्र दुष्काळ सदृश्य स्थिती (पावसाची कमतरता ५० टक्क्यांपेक्षा अधिक) निर्माण झालेली नव्हती. तथापि, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम उत्तर प्रदेश, पंजाब, पश्चिम जस्थान, विदर्भ आणि तेलंगाना प्रदेशात साधारण दुष्काळ पडला होता (पासाची कमतरता २५ ते ५० टक्के).

कृषि उत्पादन

१.३ अयमित पडलेल्या पावसामुळे २००४ मध्ये खरिप पिकांच्या उत्पादनात लक्ष्य घट झाली. अन्नधान्यांचे उत्पादन २००४-०५ मध्ये २०६.४ दशलक्ष टन इतके अपेक्षित असून ते आधीच्या वर्षाच्या उत्पादनाच्या तुलनेत ६ दशलक्ष टनांनी कमी असेल. तेलबियांचे उत्पादन

२४.८ दशलक्ष टन इतके अंदाजित असून, ते गेल्या वर्षाच्या २५.१ दशलक्ष टन उत्पादनाच्या तुलनेत थोडेसे कमी असेल असा अंदाज आहे. तथापि, कापसाचे उत्पादन १७.१ दशलक्ष गासड्या इतके अपेक्षित असून ते गत वर्षातील १३.८ दशलक्ष गासड्यांच्या तुलनेत २४ टक्क्यांनी जास्त असेल. उसाच्या उत्पादनात २००४-०५ या वर्षात किंचितशी घट अपेक्षित असून, ते आधीच्या वर्षातील २३६.२ दशलक्ष टन उत्पादनाच्या तुलनेत २३४.२ दशलक्ष टन होईल अशी अपेक्षा आहे.

औद्योगिक उत्पादन

१.४ २००४-०५ मधील एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीकरिता अखिल भारतीय औद्योगिक उत्पादनाच्या मासिक निर्देशांकांची (पायाभूत वर्ष १९९३-९४) सरासरी १९९.४ होती व ती मागील वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील निर्देशांकांच्या सरासरीपेक्षा ८.४ टक्क्यांनी जास्त होती. औद्योगिक उत्पादन निर्देशांकांच्या एकूण भारापैकी ७९ टक्के भार असलेल्या वस्तुनिर्माण क्षेत्राच्या उत्पादनाचा सरासरी निर्देशांक २००३-०४ या संपूर्ण वर्षातील ७.४ टक्के दराने वाढीच्या तुलनेत एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत ९.० टक्के इतक्या चांगल्या दराने वाढला.

सेवा क्षेत्र

१.५ स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात जवळपास ५१ टक्के वाटा असणाऱ्या सेवा क्षेत्राचा वृद्धिदर २००३-०४ मधील ९.१ टक्के दराच्या तुलनेत २००४-०५ मध्ये ८.९ टक्के इतका असेल असे अपेक्षित आहे.

लोकवित्त

१.६ केंद्र सरकारच्या राजकोषीय तुटीचे स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नाशी असलेल्या प्रमाणात किंचितशी घट होऊन ते २००४-०५ (सुधारित अंदाज) मधील ४.५ टक्क्यांच्या तुलनेत २००५-०६ (अर्थसंकल्पिय अंदाज) मध्ये ४.३ टक्के होईल असा अंदाज आहे. २००५-०६ (अर्थसंकल्पिय अंदाज) मध्ये महसुली तुटीचे स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नाशी असलेले प्रमाण मागील वर्षा इतकेच म्हणजेच २.७ टक्के असेल असा अंदाज आहे.

आयात-निर्यात

१.७ २००४-०५ च्या पहिल्या दहा महिन्यातील देशातील अंदाजित निर्यात ६०,७५४ दशलक्ष अमेरिकन डॉलर इतकी होती व ती मागील वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील निर्यातीच्या तुलनेत २५.६ टक्के इतक्या

लक्षणीय दराने वाढली. याच कालावधीतील अंदाजित आयात ८३,४४२ दशलक्ष अमेरिकन डॉलर होती व ती ३४.७ टक्क्यांनी जास्त होती. या कालावधीतील विदेशी व्यापारातील अंदाजित तूट २२,६८८ दशलक्ष अमेरिकन डॉलर होती. मार्च, २००४ अखेर भारतीय रिझर्व्ह बँकेकडे विदेशी चलनातील गंगाजळी १,०७,४४८ दशलक्ष अमेरिकन डॉलर इतकी होती, तर जानेवारी, २००५ अखेर ती १,२३,६५४ दशलक्ष अमेरिकन डॉलर इतकी झाली. एप्रिल, २००४ ते जानेवारी, २००५ या कालावधीतील सरासरी विनिमय दर ४५.१८ रुपये प्रति अमेरिकन डॉलर असा होता.

आंतरराष्ट्रीय व्यवहार श्रेष

१.८ २००४-०५ च्या आंतरराष्ट्रीय व्यवहार श्रेषाच्या पहिल्या सहामाही (एप्रिल - सप्टेंबर) अंदाजानुसार, २०००-०१ पासून चालू खात्यात प्रथमच तूट दिसून आली. ही तूट मुख्यत्वे वाणिज्यिक वस्तूंच्या व्यापारात झालेल्या मोठ्या प्रमाणातील तुटीमुळे निर्माण झालेली आहे. आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील कच्च्या तेलाच्या किमतीत झालेली वाढ व स्थानिक उद्योगांच्या तेला व्यतिरिक्त आयातीत झालेली वाढ यामुळे एकूण आयातीत ३९.० टक्के इतकी भरीव वाढ झाली. मात्र, भांडवल खाल्यात भरीव आधिक्य नोंदविण्यात आले. परंतु, हे आधिक्य २००३ च्या याच कालावधीच्या (एप्रिल ते सप्टेंबर) तुलनेत १.७ अब्ज डॉलरने कमी आहे. चालू खात्यातील तुटीमुळे २००४-०५ च्या पहिल्या सहामाहीत गोळा झालेल्या ठेवी जवळपास ७ अब्ज अमेरिकन डॉलर इतक्या मर्यादित राहिल्या, ज्या २००३-०४ च्या पहिल्या सहामाहीत (एप्रिल ते सप्टेंबर) गोळा झालेल्या ठेवींच्या साधारणपणे निम्म्या होत्या.

चलन पुरवठा

१.९ ढोबळ चलन पुरवठ्याच्या (M3) वाढीचा वेग हा चलनविषयक बदल दर्शवितो. वर्ष ते वर्ष स्थितीच्या आधारे २१ जानेवारी, २००५ रोजी ढोबळ चलन पुरवठ्याच्या वाढीचा अंदाजित वेग (११ ऑक्टोबर, २००४ रोजी भारतीय औद्योगिक विकास बँकेचे बँकेमध्ये झालेल्या रुपांतराच्या परिणामांती) १३.९ टक्के होता, व तो जवळजवळ आधीच्या वर्षांच्या तत्सम तारखेला असलेल्या वेगाइतकाच होता. २००४-०५ मध्ये चलन पुरवठ्याच्या विविध घटकांपैकी जनतेकडील चलनातील वाढीचा वेग २१ जानेवारी, २००५ पर्यंत १३.३ टक्के होता, आणि तो आधीच्या वर्षांच्या तत्सम कालावधीतील १५.३ टक्के वाढीच्या तुलनेत कमी होता.

किंमतीविषयक स्थिती

१.१० चालू वर्षात, भारतीय घाऊक किंमतीच्या निर्देशांकावर आधारित असलेला बिंदू ते बिंदू चलनवाढीचा दर ३ एप्रिल, २००४ रोजी ४.५ टक्के होता व तो २८ ऑगस्ट, २००४ रोजी ८.७ टक्के इतका झाला. मात्र त्यात सप्टेंबर, २००४ पासून घसरण होण्यास सुरुवात झाली. चलनवाढीचा हा दर २९ जानेवारी, २००५ रोजी ५.२ टक्के इतका होता व तो वर्षभरापूर्वी नोंदविण्यात आलेल्या ५.९ टक्के दराच्या तुलनेत कमी होता. तथापि, वर्षांच्या सुरुवातीस चलनवाढीचा दर जास्त असल्याकारणाने २९ जानेवारी, २००५ रोजी नोंदविलेला ५.२ आठवड्याचा सरासरी

चलनवाढीचा ६.५ टक्के इतका दर वर्षभरापूर्वी नोंद झालेल्या ५.५ टक्के दरापेक्षा जास्त होता.

१.११ २००४-०५ मध्ये औद्योगिक कामगारांसाठीच्या अखिल भारतीय ग्राहक किंमती निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचा दर एप्रिल, २००४ मधील २.२ टक्क्यांवरून वाढून तो सप्टेंबर, २००४ मध्ये ४.८ टक्क्यांवर पोहोचला. त्यानंतर हा दर घसरण्यास सुरुवात झाली आणि डिसेंबर, २००४ मध्ये तो ३.८ टक्के इतका झाला. एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीतील औद्योगिक कामगारांसाठीच्या सरासरी निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचा दर ३.७ टक्के होता, जो जवळपास आधीच्या वर्षातील तत्सम कालावधीतील दरा इतकाच होता.

महाराष्ट्र राज्याची आर्थिक स्थिती

स्थूल राज्य उत्पन्न

१.१२ पूर्वांनुमानानुसार, २००४-०५ मध्ये महाराष्ट्राच्या स्थूल राज्य उत्पन्नात स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार ७.० टक्के दराने वाढ होणे अपेक्षित आहे. स्थूल राज्य उत्पन्नाचे क्षेत्रनिहाय वृद्धिदर, प्राथमिक क्षेत्रात (कृषि व संलग्न कार्ये) (-) १.१ टक्के, द्वितीय क्षेत्रात ८.५ टक्के व तृतीय क्षेत्रात (सेवा) ८.१ टक्के इतके अपेक्षित आहेत. महाराष्ट्राचे स्थूल राज्य उत्पन्न स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार २००३-०४ मध्ये १,९०,१५१ कोटी रुपये इतके अंदाजित करण्यात आले आहे, तर ते २००२-०३ मध्ये १,७७,१३८ कोटी रुपये होते. २००३-०४ मध्ये चालू किंमतीनुसार राज्याचे स्थूल राज्य उत्पन्न ३,३३,१४५ कोटी रुपये इतके अंदाजित करण्यात आले आहे, आणि ते आधीच्या वर्षाच्या २,९५,५२५ कोटी रुपयांच्या तुलनेत १२.७ टक्क्यांनी अधिक आहे.

राज्य उत्पन्न

१.१३ प्रारंभिक अंदाजाप्रमाणे, २००३-०४ मध्ये चालू किंमतीनुसार महाराष्ट्रातील राज्य उत्पन्न (निव्वळ राज्य उत्पन्न) २,९४,००१ कोटी रुपये आणि दरडोई राज्य उत्पन्न २९,२०४ रुपये असेल. स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार २००३-०४ मधील अंदाजित राज्य उत्पन्न १,६५,८९६ कोटी रुपये आणि दरडोई राज्य उत्पन्न १६,४७९ रुपये असेल.

लोकवित्त

१.१४ राज्य शासनाची महसूली जमा १९९३-९४ च्या १२,९८७ कोटी रुपयांवरून २००४-०५ (अर्थसंकल्पिय अंदाज) मध्ये ४०,३९४ कोटी रुपये इतकी वाढली. याच कालावधीत शासनाचा एकूण महसूली खर्चही १३,१०९ कोटी रुपयांवरून वाढून ५०,१४५ कोटी रुपये इतका झाला. राज्य शासनाची कर्जे १९९९-२००० मधील ४२,६६६ कोटी रुपयांवरून वाढून २००४-०५ (अ.अं.) मध्ये ९३,२०७ कोटी रुपये इतकी झाली आणि त्याच कालावधीत कर्जांच्या स्थूल राज्य उत्पन्नाशी असलेल्या प्रमाणातही वाढ होऊन ते १७.५ टक्क्यांवरून २४.६ टक्के इतके झाले. राज्य शासनावरील व्याज आणि ऋण सेवा यांच्या बोज्यातही वाढ होऊन ते १९९९-२००० मधील ४,९९६ कोटी रुपयांवरून २००४-०५ (अ.अं.) मध्ये १०,३२० कोटी रुपये इतके

झाले. यव कालावधीत त्यांच्या महसुली जमेशी असलेल्या प्रमाणातही वाढ होऊन ते १९९८ टक्क्यांवरून २५.५ टक्के इतके झाले. राज्य शासनाची महसुली ८ १९९३-९४ मधील १२२ कोटी रुपयांवरून २००४-०५ (अ.अं.) मध्ये ९,७९१ कोटी रुपयांपर्यंत वाढली. राज्याच्या अर्थसंकल्पातील राजकोषीय तूट १९९९-९४ मधील २,२६५ कोटी रुपयांवरून २००४-०५ (अ.अं.) मध्ये १५,२५८ कोटी रुपयांपर्यंत वाढली. राजकोषीय तुटीचे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी असलेले प्रमाण १९९३-९४ मध्ये २.० टक्के होते व ते वाढून २००४-०५ मध्ये ४.० टक्के इतके झाले.

मोसमी गाऊस

१.१५ राज्यामध्ये नैऋत्य मोसमी पावसाचे आगमन ३ दिवस उशीराने, म्हणजेच ० जून, २००४ रोजी झाले. २० जून पासून बहुतेक जिल्ह्यांत पावसात ३ ते १२ दिवसांचा तर विदर्भ, मराठवाडा व कोकण वगळता, उर्वरित माराष्ट्रातील काही जिल्ह्यांमध्ये त्याहूनही अधिक दिवसांचा खंड पडला. त्यामुळे काही खरीप पिकांची दुबार पेरणी करावी लागली. २१ जुलै पासून मात्र राज्यभरात पुरेसा पाऊस पडला. ३१ ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत राज्यात, सरासरी पावसाच्या ८६.१ टक्के पाऊस पडला. राज्यातील ३३ जिल्ह्यांपैकी (मुंबई शहर व मुंबई उपनगर जिल्हे वगळून), ८ जिल्ह्यांत सरासरीपेक्षा जास्त पाऊस पडला (दीर्घकालीन सरासरीच्या १०० टक्क्यांहून अधिक), ० जिल्ह्यांत सरासरीच्या ८१ ते १०० टक्के पाऊस पडला, तर १५ जिल्ह्यांत पुरा (दीर्घकालीन सरासरीच्या ८० टक्क्यांहून कमी) पाऊस पडला. विदर्भ, मराठवाडा व पश्चिम महाराष्ट्रातील काही जिल्ह्यांत पावसाच्या विषम वितरण व विस्तारामुळे काही खरीप पिके व कडधान्यांवर प्रतिकूल परिणाम झाला. राज्यातील जवळपास सर्व भागात जानेवारी, २००५ मध्ये (२३ ते ३१ जानेवारी) अकाली पडलेल्या पावसामुळे आणि मराठवाडा व विदर्भातील काही भागात गारांसह पडलेल्या अतिवृष्टीमुळे रब्बी व फळ पिकांचे नुकसान झाले.

कृषि उत्पादन

१.१६ २००४-०५ मध्ये राज्यात अन्नधान्याचे उत्पादन १०७.५ लाख टन अपेक्षित असून ते २००३-०४ मधील उत्पादनाच्या तुलनेत सुमारे ५ टक्क्यांनी जास्त असेल. मात्र, कापसाचे (रुई) उत्पादन ५.०८ लाख टन अपेक्षित असून ते आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत जवळपास ३.१ टक्क्यांनी कमी असेल. तेलबियांच्या उत्पादनात २.६ टक्क्यांची वाढ अपेक्षित असून ते २९.१ लाख टन होईल असा अंदाज आहे. उसाच्या उत्पादनात मात्र मोठी घट अपेक्षित असून ते आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत २४.५ टक्क्यांनी कमी म्हणजे २०४ लाख टन होईल असा अंदाज आहे.

पशुधन उत्पादन

१.१७ २००४-०५ ह्या वर्षात राज्यातील दूध उत्पादन ६५.६ लाख टन अपेक्षित असून ते २००३-०४ मधील ६४.२ लाख टन अंदाजित दूध उत्पादनापेक्षा २.२ टक्क्यांनी अधिक असेल. २००४-०५ मध्ये अंड्यांचे उत्पादन ३४१ कोटी अंडी इतके अपेक्षित असून ते २००३-०४ मधील ३३९ कोटी अंड्यांच्या अंदाजित उत्पादनापेक्षा २.१ टक्क्यांनी अधिक असेल. २००४-०५ मध्ये मांसाचे उत्पादन २.३० लाख टन अपेक्षित असून ते

२००३-०४ मधील २.२५ लाख टन अंदाजित उत्पादनापेक्षा २.२ टक्क्यांनी अधिक असेल.

१.१८ २००४-०५ मध्ये राज्यातील (बृहन्मुंबई वगळून) शासकीय व सहकारी दुग्धशाळांचे सरासरी दूध संकलन प्रतिदिन ३८.८८ लाख लिटर होईल असा अंदाज आहे व ते २००३-०४ या वर्षाच्या सरासरी ३७.८६ लाख लिटर दैनिक दूध संकलनापेक्षा २.७ टक्क्यांनी जास्त असेल.

मत्स्योत्पादन

१.१९ २००४-०५ मध्ये, राज्यातील सागरी क्षेत्रातील व गोड्या पाण्यातील मत्स्योत्पादन सप्टेंबर अखेर अनुक्रमे १.२३ लाख टन आणि ०.७० लाख टन होईल असा अंदाज आहे. राज्यातील सागरी क्षेत्रातील वार्षिक मत्स्योत्पादन क्षमता ६.३ लाख टन इतकी अंदाजित करण्यात आली आहे. त्या तुलनेत २००३-०४ मधील मत्स्योत्पादन ४.२० लाख टन इतके होते, जे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ८.५ टक्क्यांनी जास्त होते. २००३-०४ मध्ये गोड्या पाण्यातील अंदाजित मत्स्योत्पादन १.२५ लाख टन होते आणि ते २००२-०३ मधील उत्पादनापेक्षा १.६ टक्क्यांनी कमी होते. २००३-०४ मधील राज्यातील सागरी व गोड्या पाण्यातील एकत्रित मत्स्योत्पादनाचे स्थूल मूल्य १,५५३ कोटी रुपये होते.

खनिज उत्पादन

१.२० राज्यातील खनिज उत्पादनक्षम क्षेत्र ५८ हजार चौरस कि.मी. (राज्याच्या एकूण भौगोलिक क्षेत्रफळाच्या १९ टक्के) आहे. २००३-०४ मध्ये राज्यातील उत्पादित खनिजांचे एकूण मूल्य ३,१३२ कोटी रुपये होते व त्यामध्ये कोळशाचा वाटा जवळपास ८३ टक्के (२,६०८ कोटी रुपये) होता.

औद्योगिक उत्पादन

१.२१ उपलब्ध माहितीच्या आधारे, राज्यातील औद्योगिक उत्पादन (वस्तुनिर्माण) क्षेत्रात २००४-०५ या वर्षातील पहिल्या नऊ महिन्यांमध्ये ८.२ टक्के दराने वाढ होईल अशी अपेक्षा आहे. आधीच्या वर्षी म्हणजे २००३-०४ मध्ये संपूर्ण वर्षासाठी ही वाढ ७.८ टक्के होती. राज्यातील वार्षिक उद्योग पाहणीत समाविष्ट असणाऱ्या उद्योगांची निव्वळ मूल्यवृद्धि २००२-०३ मध्ये ३५,१४९ कोटी रुपये होती व ती मागील वर्षाच्या मूल्यवृद्धिच्या तुलनेत १७.६ टक्क्यांनी अधिक होती.

औद्योगिक संबंध

१.२२ कारखान्यांतील संप व टाळेबंदीमुळे २००४ मध्ये झालेल्या काम स्थगित्यांची संख्या २३ होती व ती २००३ मधील २७ च्या तुलनेत कमी होती. २००४ मध्ये काम स्थगित्यांमुळे, आधीपासून चालू असलेल्या काम स्थगित्यांसह, वाया गेलेले मनुष्य दिवस २७.८ लाख होते व ते २००३ मधील वाया गेलेल्या ४३.५ लाख मनुष्य दिवसांच्या तुलनेत कमी होते.

माहिती व तंत्रज्ञान

१.२३ सिडको व महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ यांच्या सहकार्याने महाराष्ट्र शासन राज्यातील निरनिराळ्या भागात सार्वजनिक माहिती तंत्रज्ञान पार्क विकसित करित आहे. या अंतर्गत २७ शासकीय/

सार्वजनिक व १० खाजगी माहिती तंत्रज्ञान पार्क उभारले जात आहेत. ई-गव्हर्नन्स धोरणाचा उद्देश नागरिकांना चांगल्या सेवा पुरविणे, सेवा पोहचविण्यातील गुणवत्ता सुधारणे, शासनाचा महसूल वाढविणे आणि राज्यकारभारात पारदर्शकता आणणे हा आहे. यानुसार राज्यात 'सेतू' (नियमित लागणारे ८३ प्रकारचे दाखले मागणीनुसार 'सेतू' प्रकल्पामध्ये दिले जातात) नावाने सुविधा केंद्रांची २५ जिल्हा मुख्यालयांच्या आणि २७३ तालुक्यांच्या ठिकाणी स्थापना करण्यात आली आहे.

नवीन गुंतवणूक प्रस्ताव

१.२४ भारत सरकारने आर्थिक उदारीकरणाचे धोरण अवलंबिल्यापासून ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत देशातील एकूण प्रस्तावित औद्योगिक गुंतवणुकीपैकी २०.४७ लाख रोजगार क्षमतेसह २,६५,४११ कोटी रुपये गुंतवणुकीचे ११,९६७ औद्योगिक प्रकल्प महाराष्ट्रात उभारण्यास मंजूरी दिली आहे. या पैकी ८८,३३४ कोटी रुपये गुंतवणुकीच्या ५,५३६ प्रकल्पांनी प्रत्यक्षात उत्पादन सुरु केले असून अंदाजे ५.९५ लाख रोजगार उपलब्ध झाला आहे.

विदेशी थेट गुंतवणूक

१.२५ उदारीकरणाचे धोरण अवलंबिल्यापासून ऑगस्ट, २००४ पर्यंत विदेशी थेट गुंतवणुकी अंतर्गत ५२,०९२ कोटी रुपये गुंतवणुकीचे ३,६५५ प्रकल्प महाराष्ट्र राज्यात उद्योग स्थापन करण्यासाठी भारत सरकारने मंजूर केले आहेत. या मंजूर प्रकल्पापैकी ३२,०२० कोटी रुपये (६१ टक्के) गुंतवणुकीचे १,३०३ प्रकल्प (३६ टक्के) याआधीच कार्यान्वित झाले आहेत. विदेशी थेट गुंतवणुकीखाली देशातील एकूण प्रस्तावित गुंतवणुकीमध्ये महाराष्ट्र राज्य सातत्याने प्रथम स्थानावर राहिलेले आहे. विदेशी थेट गुंतवणुकीस मान्यता मिळालेले प्रकल्प ग्रामुख्याने सेवा (२४ टक्के), माहिती तंत्रज्ञान (२१ टक्के), पायाभूत सेवा (१२ टक्के), ऑटोमोबाईल (१० टक्के), इंजिनअरींग (५ टक्के), वीज आणि इंधन (५ टक्के), मूलभूत धातू (५ टक्के) या क्षेत्रातील आहेत.

आजारी उद्योग

१.२६ औद्योगिक व वित्तिय पुर्नरचना मंडळाच्या सुरुवातीपासून ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत राज्यातून आजारी उद्योगांची ७९४ प्रकरणे मंडळाकडे प्राप्त झाली होती. त्यापैकी १२९ प्रकरणांमध्ये पुर्नवसनास मंजूरी देण्यात आली, ९५ प्रकरणांमध्ये उद्योग गुंडाळण्याची शिफारस करण्यात आली, १०७ प्रकरणे फेटाळण्यात आली तर ५ प्रकरणांमध्ये उद्योगांचे कामगारांच्या सहकार्याने पुर्नवसन करण्यात आले. उर्वरित ४५८ प्रकरणे अद्याप प्रलंबित आहेत. लघुउद्योगांच्या संदर्भात ५,०७० आजारी उद्योगांपैकी ५०९ उद्योगांना डिसेंबर, २००४ पर्यंत राज्य सरकार तर्फे आजारी असल्याचे प्रमाणपत्र देण्यात आले व ३ प्रकरणे विचाराधीन आहेत. त्यामुळे या उद्योगांना प्रलंबित विक्रीकर व वीज बिले भरण्यास अधिक कालावधी मिळेल.

किंमतीविषयक स्थिती

१.२७ २००४-०५ मध्ये राज्यातील किंमतवाढ जवळपास देशातील किंमतवाढी इतकीच होती. राज्यातील नागरी व ग्रामीण क्षेत्रासाठी तयार

करण्यात येणाऱ्या ग्राहक किंमतीच्या निर्देशांकांनुसार एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ ह्या कालावधीत राज्यातील किंमतवाढ माफक प्रमाणात होती. या कालावधीत नागरी भागातील ग्राहक किंमतीचा निर्देशांक २.६ टक्क्यांनी वाढला, तर ग्रामीण भागात ही वाढ ४.६ टक्के इतकी होती. अशा तऱ्हेने राज्यातील किंमतवाढ सलग सहाव्या वर्षांही माफक राहिली.

सार्वजनिक वितरण व्यवस्था

१.२८ सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत फेब्रुवारी, २००४ अखेरपर्यंत राज्यात अधिकृत शिधावाटप/रास्त भाव दुकानांची संख्या ५०,१६० होती. फेब्रुवारी, २००४ पर्यंत पिवळ्या, भगव्या व पांढऱ्या रंगाची अनुक्रमे ७३.४० लाख, १४७.२१ लाख व ८.८६ लाख शिधापत्रके वाटण्यात आली. २००४-०५ ह्या वर्षात डिसेंबर, २००४ अखेरपर्यंत लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांकडून तांदूळ आणि गव्हाचे उचलोचे एकूण नियतनाशी प्रमाण अनुक्रमे ७६ टक्के आणि ८२ टक्के इतके होते. त्याचप्रमाणे अंत्योदय अन्न योजने अंतर्गत तांदूळ व गव्हाचे उचलिते प्रमाण अनुक्रमे ८५ व ९१ टक्के होते. दारिद्र्यरेषेच्या वरील कुटुंबांच्या बाबतीत अन्नधान्याच्या उचलीचे एकूण नियतनाशी प्रमाण एक टक्क्यापेक्षाही कमी होते. यावरून असे दिसून येते की, ही कुटुंबे सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेतून बाहेर पडलेली आहेत.

वीज निर्मिती

१.२९ महाराष्ट्रातील विद्युत् निर्मितीची स्थापित क्षमता २००३-०४ मध्ये १५,०९२ मेगॅवॅट होती. २००४-०५ मध्ये नोव्हेंबर, २००४ अखेरपर्यंत त्यामध्ये काहीही वाढ झाली नाही. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर, २००४ अखेरपर्यंत राज्यात विजेची निर्मिती ५०,६९३ दशलक्ष किलोवॅट तास झाली व ती आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील निर्मितीपेक्षा ३.५ टक्क्यांनी जास्त होती. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर पर्यंत १४,५०६ मेगॅवॅट विजेचे अत्युच्च मागणी नोंदविण्यात आली आणि ती ३,०३९ मेगॅवॅट भार नियमना पुरविण्यात आली. राज्यात रात्रीच्या कमी मागणीचा कालावधी (२२.०० वाजता पासून ते ०६.०० वाजेपर्यंत) वगळता संपूर्ण दिवसभरात विजेचे तुटवडा भासतो आणि त्यामुळे भारनियमन ही नित्याची बाब झाली आहे २००३-०४ मध्ये महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची विजेची पारेषण व वितरणातील हानी वितरीत केलेल्या एकूण विजेच्या ३८.२ टक्के इतकी होती. महाराष्ट्र शासन १ जुलै, २००४ पासून कृषी पंपासाठी मोफत वीज पुरवित आहे १ जुलै ते ३१ डिसेंबर, २००४ या सहा महिन्यात वापरलेल्या विजेची भरपाई रक्कम म्हणून राज्यशासनाने महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाला ८१० कोटी रुपये तर मुळा- प्रवरा वीज सहकारी संस्थेला २०.५० कोटी रुपये इतकी रक्कम अनुदान स्वरूपात अदा केली आहे. ३१ मार्च, २००४ अखेर राज्यात वीज पुरवठा करण्यात आलेल्या कृषी पंपाची संख्या २२.७ लाख होती. केंद्र शासनाच्या वीज अधिनियम, २००३ अन्वये महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची १० जून, २००५ पर्यंत पुर्नरचना करणे आवश्यक आहे, पुर्नरचनेअंतर्गत महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाचे १) व्यवस्थापन २) निर्मिती ३) वहन आणि ४) वितरण या चार संस्थामध्ये विभाजन करण्याचे प्रस्तावित आहे.

परिवहन व दळणवळण

१.३० मार्च, २००४ अखेर पर्यंत राज्यातील सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदा यांनी देखभाल केलेल्या रस्त्यांची एकूण लांबी २.२७ लाख कि.मी. होती. मार्च, २००४ अखेर पर्यंत राज्यातील लोहमार्गांची एकूण लांबी ५,१९७ कि.मी. होती व ती देशातील एकूण लोहमार्गांच्या (६३,२२१ कि.मी.) ८.७ टक्के होती. राज्यातील रस्त्यावरील मोटारवाहनांची संख्या १ जानेवार, २००५ रोजी ९६.५६ लाख होती. मार्च, २००४ अखेर राज्यातील टपाल कार्यालयांची संख्या १२,६३८ होती. त्यापैकी, ११,३०९ टपाल कार्यालये ग्रामीण भागात, तर १,३२९ नागरी भागात होती. ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यात असलेल्या दूरध्वनी जोडण्यांची संख्या ६३.५४ लाख होती. डिसेंबर, २००४ अखेरीस भारतातील भ्रमणध्वनींची संख्या ३.७४ कोटी होती. यंपैकी ६६.१६ लाख (१७.७ टक्के) भ्रमणध्वनी एकट्या महाराष्ट्रात (मुंब: सकलसह) होते.

लोकसंख्या

१.३१ २०१ च्या जनगणनेनुसार महाराष्ट्राची लोकसंख्या ९.६९ कोटी होती. राज्यातील अनुसूचित जाती व जमातीची लोकसंख्या अनुक्रमे ९८.८२ व ८५.१७ लाख होती. लोकसंख्येच्या बाबतीत महाराष्ट्र हे उत्तर प्रदेश या राज्याखालोखाल भारतातील दुसऱ्या क्रमांकाचे मोठे राज्य आहे. ४२.४ टक्के नगरी लोकसंख्येसह, देशातील नागरीकरण झालेल्या प्रमुख राज्यांमध्ये महाराष्ट्राचा तामिळनाडूनंतर (४४.० टक्के) दुसरा क्रमांक लागतो. राज्यातील स्त्री-पुरुष प्रमाण १९९१ मधील ९३४ वरून कमी होऊन २००१ मध्ये ९२२ इतकं आतापर्यंत सर्वात कमी झाले. राज्यातील मुलांच्या (० ते ६ वर्षे वयोगटातील) स्त्री पुरुष प्रमाणातही घट होऊन १९९१ च्या ९४५ वरून २०२ मध्ये ते ९१३ वर आले. राज्यातील लोकसंख्येची घनता ३१५ व्यक्ती प्रति चौ. कि.मी. इतकी होती. २००१ च्या जनगणनेत अपंग लोकांची संख्या गांच्या अपंगत्वाच्या प्रकारानुसार मोजण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. त्यानुसार राज्यातील १.६ टक्के लोकांमध्ये विविध प्रकारचे अपंगत्व आढळून आले. देशातील २.१ टक्क्यांच्या तुलनेत हे प्रमाण बरेच कमी आहे. २००२ मध्ये महाराष्ट्र राज्यातील जन्मदर, मृत्युदर आणि बालमृत्यु दर (नमुना नोंदी पाहणीवर आधारित) अनुक्रमे २०.३, ७.३ व ४५.० इतके होते. १ मार्च, २००५ रोजीची राज्याची प्रक्षेपित लोकसंख्या सुमारे १०.२७ कोटी इकी आहे.

रोजगार

१.३२.१ गे्या काही वर्षांत कारखान्यांतील रोजगारात उतरता कल दिसून येतो. कारखान्यांसंबंधीच्या आकडेवारीनुसार डिसेंबर, २००३ अखेर राज्यातील कारखान्यांतील सरासरी दैनिक रोजगार ११.७ लाख होता. हा रोजगार डिसेंबर २००२ अखेरच्या सरासरी दैनिक रोजगारापेक्षा ०.८ टक्क्यांनी कमी होता.

१.३२.२ रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमाखाली गोळा करण्यात आलेल्या आकडेवारीनुसार राज्यातील सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रांमध्ये ३१ मार्च, २००४ रोजी ३६ लाख रोजगार होता व तो आधीच्या वर्षी ३५.९ लाख इतका होता.

१.३२.३ २००४-०५ ह्या वर्षात डिसेंबर, २००४ अखेर राज्यात रोजगार हमी योजनेअंतर्गत १९.४ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार पुरविण्यात आला. २००३-०४ या वर्षी १८.५ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार पुरविण्यात आला होता. या शिवाय संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजनेअंतर्गत डिसेंबर, २००४ अखेर पर्यंत ३.९ कोटी मनुष्य दिवस रोजगार पुरविण्यात आला होता, तर २००३-०४ या संपूर्ण वर्षात ६.३ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार पुरविण्यात आला.

१.३२.४ २००४-०५ मध्ये एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांत नवीन नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या ६.६ लाख होती, तर २००३-०४ मध्ये ही संख्या ६.४ लाख होती. २००४-०५ मध्ये एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत प्रत्यक्षात रोजगार पुरविलेल्या जागा ११ हजार होत्या, ज्या आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीमध्ये १३.५ हजार होत्या. रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रातील चालू नोंदवहीमध्ये नोंदलेल्या व्यक्तींची संख्या डिसेंबर, २००४ अखेर ४१.१ लाख होती.

शिक्षण

१.३३ राष्ट्रीय तसेच वैयक्तिक विकास साधण्याकरिता शिक्षण हे एक महत्त्वाचे सर्वमान्य असे साधन आहे. २००४-०५ ह्या वर्षात राज्यात ६७,९६४ प्राथमिक, १४,३९१ माध्यमिक, ३,६९३ उच्च माध्यमिक शाळा, तर ६३३ कनिष्ठ महाविद्यालये कार्यरत होती. वर्ष २००४-०५ मध्ये राज्यातील प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शाळांतील व कनिष्ठ महाविद्यालयांतील विद्यार्थ्यांची पटावरील संख्या अनुक्रमे ११७.४७ लाख, ५४.६६ लाख, ४३.३१ लाख व ७.०२ लाख अशी होती. २००४-०५ या शैक्षणिक वर्षाकरिता इयत्ता १ ली ते १० वी पर्यंतच्या शासकीय, मान्यता प्राप्त अनुदानित खाजगी शाळा व स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या सर्व शाळांना (इंग्रजी माध्यमाच्या शाळा वगळून) मोफत पाठ्यपुस्तक पुरविण्याचा निर्णय शासनाने घेतला आहे.

प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था

१.३४ प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांनी २००३-०४ मध्ये ३,७६९ कोटी रुपयांचा कर्ज पुरवठा केला. २००३-०४ अखेर कर्जाची एकूण रक्कम ७,३८९ कोटी रुपये होती. २००३-०४ मध्ये ३,४२९ कोटी रुपयांची कर्जवसुली करण्यात आली. ती वसुलीयोग्य कर्जाच्या रकमेच्या ५७ टक्के होती व ती आधीच्या वर्षापेक्षा कमी होती. कर्जाच्या थकबाकीची रक्कम ३१ मार्च, २००४ रोजी २,५६१ कोटी रुपये होती.

अनुसूचित वाणिज्यिक बँका

१.३५ राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या कार्यालयांची (शाखा) एकूण संख्या ३० सप्टेंबर, २००४ रोजी ६,३३२ इतकी होती व ती देशातील एकूण अनुसूचित वाणिज्यिक बँक कार्यालयांच्या (६७,२२१) ९.४ टक्के इतकी होती. ३० सप्टेंबर, २००४ अखेर राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या एकूण ठेवी ३,२९,३३० कोटी रुपये इतक्या होत्या व त्या आधीच्या वर्षापेक्षा १९ टक्क्यांनी जास्त होत्या. याच कालावधीत ह्या बँकांच्या स्थूल

पतपुरवठ्यामध्ये २४ टक्क्यांनी वाढ होऊन तो २,८३,५९१ कोटी रुपये इतका झाला. सप्टेंबर, २००४ अखेर राज्यातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या पतपुरवठ्याचे ठेवींशी असलेले प्रमाण ८६ टक्के होते. ३० सप्टेंबर, २००४ रोजीच्या स्थितीनुसार अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या एकूण ठेवी व स्थूल पतपुरवठा ह्या दोन्हीबाबत भारतात महाराष्ट्राचा पहिला क्रमांक लागतो.

अल्पबचत

१.३६ वित्तीय वर्ष २००३-०४ मध्ये अल्पबचती अंतर्गत ७,७०४ कोटी रुपये इष्टांकांच्या तुलनेत निव्वळ जमा ११,०३३ कोटी रुपये इतकी होती. वित्तीय वर्ष २००४-०५ मध्ये अल्पबचतीचा ११,१७१ कोटी रुपये इष्टांक ठेवण्यात आला असून मार्च, २००५ अखेर १२,००० कोटी रुपये जमा होणे अपेक्षित आहे.

भांडवली बाजार

१.३७ चालू वर्षात ३० नोव्हेंबर, २००४ पर्यंत संपूर्ण देशामध्ये प्रारंभिक सार्वजनिक देकाराद्वारे १७,०३४ कोटी रुपयांचे भांडवल उभारण्यात आले. या रकमेत महाराष्ट्राचा वाटा ७,१८६ कोटी रुपये (४२ टक्के) इतका होता. वर्ष २००३-०४ मध्ये देशातील सर्व शेअर बाजारांच्या उलाढालींमध्ये महाराष्ट्राचा वाटा ९८.९ टक्के इतका होता.

म्युच्युअल फंड

१.३८ म्युच्युअल फंड हा सेबीचे नियंत्रण असलेला एक वेगाने वाढणार उद्योग आहे. ३१ डिसेंबर, २००४ रोजी देशात ४२९ योजनांमध्ये १,५०,५३७ कोटी रुपयांची गुंतवणूक असलेले २९ नोंदणीकृत म्युच्युअल फंड्स नोंदणीकृत होते. यापैकी २६ (९० टक्के) म्युच्युअल फंड्सची नोंदणी महाराष्ट्रात झालेली होती, व त्यांनी जमा केलेली रक्कम १,४८,४३४ कोटी रुपये (९९ टक्के) होती.

विशेष अभ्यास

१.३९ राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या ६० व्या फेरीमध्ये (जानेवारी-जून, २००४) 'आजारपण व आरोग्याची देखभाल' या विषयावर माहिती गोळा करण्यात आली. या पाहणीचे काही महत्त्वाचे निष्कर्ष पुढील प्रमाणे आहेत.

(i) ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागांत रुग्णालयात दाखल झालेल्या एकूण रुग्णांपैकी एक चतुर्थांश रुग्ण हे सार्वजनिक रुग्णालय दवाखान्यात दाखल झाले होते.

(ii) ग्रामीण भागातील १४ टक्के तर नागरी भागातील ११ टक्के रुग्णांनी मोफत रुग्णभरती सेवेचा लाभ घेतला.

(iii) ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागांत मातांनी त्यांच्या बाळांचे जन्मासाठी शासकीय रुग्णालयांना प्राधान्य दिले. तथापि, ग्रामीण भागात प्रत्येक १० प्रसूत्यांपैकी ३ प्रसूत्या घरीच झाल्या होत्या, तर नागरी भागात प्रत्येक दहा प्रसूत्यांपैकी फक्त एक प्रसूती घरी झाली.

१.४० राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या ६१ व्या फेरीच्या (जुलै, २००४ ते जून, २००५) पहिल्या दोन उपफेरींच्या शिघ्र तक्तीकरणावर आधारित काही निष्कर्ष खाली दिले आहेत. हे निष्कर्ष 'कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील खर्च' आणि 'रोजगार व बेरोजगारी' या विषयांच्या गोळ केलेल्या माहितीवर आधारित आहेत.

(i) कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील सरासरी दरडोई मासिक खर्च ग्रामीण भागात ६०८ रुपये तर नागरी भागात १,२३९ रुपये होता.

(ii) ग्रामीण भागात अन्न व अन्नतर बाबींवरील खर्चाची एकूण खर्चाशी टक्केवारी अनुक्रमे ४९ टक्के आणि ५१ टक्के होती. तर हेच प्रमाण नागरी भागात ३९ टक्के आणि ६१ टक्के असे होते.

(iii) ग्रामीण भागातील जवळपास तीन चतुर्थांश पुरुष शेतकरी क्षेत्रामध्ये स्वयंरोजगारी अथवा नैमित्तिक मजूर म्हणून कार्यरत होते.

(iv) नागरी भागातील १५ ते ५९ वर्षे वयोगटातील एकूण स्त्रियांपैकी जवळपास ५० टक्के स्त्रिया, निग्रमित वेतनावर, कार्यरत होत्या

(v) राज्यातील ७ वर्षे व अधिक वयाच्या लोकसंख्येकरिता साक्षरतेचे अंदाजित प्रमाण जवळपास ८० टक्के इतके होते. हे प्रमाण पुरुषांकरिता ८८ टक्के व स्त्रियांकरिता ७१ टक्के होते.

(vi) 'सर्व शिक्षा अभियान' कार्यक्रमाच्या अंमलबजावणी नंतरही ६ ते १४ वर्षे वयोगटातील ग्रामीण भागातील ७ टक्के तर नागरी भागातील ४ टक्के मुले कोणत्याही शाळेत जात नव्हती.



आर्थिक दृष्टिक्षेप व आनुषंगिक धोरणे

राज्याची अर्थव्यवस्था

२.१ महाराष्ट्र हे देशातील सर्वाधिक औद्योगिकीकरण झालेले राज्य असून देशाच्या औद्योगिक उत्पादनात राज्याच्या औद्योगिक उत्पादनाचा वाढ जवळपास २० टक्के इतका आहे. राज्याच्या अर्थव्यवस्थेने १९०च्या दशकाच्या मध्यापर्यंत जलद गतीची आणि सातत्यपूर्ण स्वरूपाची वाढ अनुभवल्यानंतर त्यानंतरच्या कालावधीत ती चढउतारांमध्ये दोषायमान राहिली. राज्याच्या अर्थव्यवस्थेने २०००-०१ मध्ये ३.४ टक्क्यांच्या ऋणवृद्धिने झालेली तीव्र पीछेहाट अनुभवल्यानंतर राज्याची अर्थव्यवस्था अलिकडील ३ वर्षांत ७ टक्के व त्यापेक्षा अधिक प्रभावी वृद्धिदराने वाढून सुधारणेच्या मार्गावर आहे.

२.२ दहावा पंचवार्षिक योजनेसाठी (२००२-०७) महाराष्ट्रास स्थूल राज्य उत्पन्नाबाबत वार्षिक ८ टक्के वृद्धिदराचे लक्ष्य ठरवून देण्यात आले आहे. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेच्या पहिल्या ३ वर्षांमध्ये (२००२-०३ ते २००४-०५) राज्याचा स्थूल राज्य उत्पन्नाचा वार्षिक सरासरी वृद्धिदर ७.२ टक्के इतका अंदाजित केला आहे. गेल्या काही सलग वर्षांत असमाधानकारक मोसमी पावसाचा कृषि उत्पन्नाच्या वाढीवर प्रतिकूल परिणाम होऊन देखील, राज्याची अर्थव्यवस्था वस्तुनिर्माण व सेवा क्षेत्रांतील वाढीमुळे वृद्धिंगत होत आहे. राज्य शासनाने आर्थिक सुधार धोरणांच्या केलेला प्रभावी अंमलबजावणीमुळे राज्याची अर्थव्यवस्था अधिक वृद्धिदर राठण्यात यशस्वी झाली आहे. गेल्या ४ वर्षांत कृषि क्षेत्रात झालेल्या भावहीन कामगिरीनंतर सुध्दा राज्याने प्रभावी वृद्धिदर राठविला आहे. जराद्वितीय व तृतीय क्षेत्रांतील वाढीचा वेग असाच राहिला आणि जर पावसाचे मान समाधानकारक राहिले तर येत्या दोन वर्षांत राज्याची अर्थव्यवस्था ८ ते ८.५ टक्के इतक्या प्रभावी दराने वाढू शकेल आणि योजना आंगाने दहाव्या पंचवार्षिक योजनेत ठरवून दिल्याप्रमाणे आर्थिक वृद्धिदराने लक्ष्य गाठणे शक्य होईल.

२.३ उच्चआर्थिक वृद्धिदर गाठण्यासाठी सर्व क्षेत्रांमध्ये पायाभूत संक असलेली ध्दी होणे आवश्यक आहे. त्याकरिता, आवश्यक त्या स्थितीत व पायाभूत सुविधा आणि मोठ्या प्रमाणावर कायदेविषयक सुधारणा करून, द्याग स्थापनेकरिता प्रोत्साहने आणि सुलभ अटीवर स्तपुरवठा उपलब्ध करून देऊन औद्योगिक वाढीवर जास्तीत जास्त भर घेणे आवश्यक आहे. पारंपरिक पिकांची उत्पादकता वाढविणे, व्यापारिक क्षेत्रातून शेत वेवध्द आणणे आणि कोरडवाहू शेतिका विकास

साधणे इ. द्वारे कृषि क्षमतेचा पुरेपूर वापर करणे गरजेचे आहे. आर्थिक आणि सामाजिक विकासासाठी पायाभूत सुविधांमधील विकास प्रेरणादायी ठरत असल्याने पायाभूत सुविधा किफायतशीर किंमतीत उपलब्ध करून देण्यामध्ये शासनाने सहाय्यकाची भूमिका अंगीकारणे गरजेचे आहे.

लोकवित्त

२.४ राज्याच्या राजकोषीय तूटीच्या स्थितीमध्ये १९९०च्या दशकाच्या सुरुवातीस सुधारणा दिसून येत होती. त्यानंतर ही स्थिती अधिकाधिक खराब होत जाऊन ती राज्याच्या अर्थव्यवस्थेच्या स्थैर्यास आणि वृद्धीस बाधा निर्माण करित आहे. राज्य शासनाची राजकोषीय तूट १९९३-९४ मध्ये स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या २.० टक्के होती, ती १९९९-२००० मध्ये ४.१ टक्क्यांवर पोहोचली. ती २०००-०१ मध्ये अल्प प्रमाणात म्हणजे ३.६ टक्क्यांपर्यंत खाली आली आणि त्यानंतर तिच्यात सतत वाढ होत असून २००३-०४ मध्ये ती स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ५.५ टक्क्यांपर्यंत पोहोचली. राज्याच्या महसुली तूटीचे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी १९९३-९४ मध्ये असलेले ०.१ टक्के हे प्रमाण २००३-०४ मध्ये २.७ टक्क्यांपर्यंत वाढले. महसुली जमा वाढविण्यातील अधोगती आणि वाढता अनुत्पादक खर्च यांच्या परिणामी राज्याच्या राजकोषीय आणि महसुली तूटीत वाढ झाली आहे. अर्थसंकल्पीय समतोल बिघडविण्यास प्रामुख्याने व्याजाचे वाढते भार, अर्थसंकल्पबाह्य मोठी कर्जे, सार्वजनिक सेवांमधून व मोठी गुंतवणूक असलेल्या प्रकल्पांमधून होणारी असमाधानकारक वसुली आणि कापूस एकाधिकार योजना व इतर सेवांवरील अनुदाने या बाबी कारणीभूत आहेत. राज्यास केंद्र शासनाकडून मिळणाऱ्या कराच्या हिश्यात झालेली घट हे देखील राज्याचा वित्तीय समतोल बिघडविण्यास कारणीभूत ठरले आहे.

२.५ राज्य शासनाचे वाढते कर्ज ही सर्वात चिंतेची बाब आहे. राज्य शासनाचे एकूण कर्ज २००४-०५ मध्ये १,१०,२११ कोटी रुपये इतक्या अत्युच्च पातळीपर्यंत वाढले असून अंदाज आहे. राज्याच्या कर्जाचे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी प्रमाण आणि व्याज प्रदान रकमांचे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी प्रमाण ही प्रमाणे सतत वाढत आहेत. त्यामुळे, राज्य शासनाची उच्च व्याजदराची कर्जे केंद्राच्या कर्ज रूपांतरण योजनेतर्गत कमी व्याज दराच्या कर्जांत रूपांतरित करणे याला शासनाने प्राधान्य देणे आवश्यक आहे.

२.६ मध्यम मुदत काळात वित्तीय स्थिरता आणण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने मध्यम मुदत वित्तीय सुधारणा कार्यक्रम २०००-०१ ते २००४-०५ ला मंजुरी दिली असून केंद्र शासनाच्या वित्त मंत्रालयाशी

त्याबाबत ऑक्टोबर, २००२ मध्ये सामंजस्य करार केला आहे. मध्यम मुदत काळात राजकोषीय संतुलन प्राप्त करण्यासाठी, राज्याचा स्वतःचा कर महसूल आणि बिगर-कर महसूल वाढविण्यासाठी अधिकाधिक प्रयत्न करणे, खर्चाची पुनर्रचना करणे आणि कमी व्याज दराचे कर्ज धोरण या प्रमुख क्षेत्रांचे राज्याने प्रभावीपणे सैनियंत्रण करणे गरजेचे आहे. जागतिक बँकेकडून विशेष स्ट्रक्चरल अँडजस्टमेंट कर्जसहाय्य मिळण्यास पात्र ठरण्यासाठी, महसूली खर्चाचे महसूली जमेशी असलेले प्रमाण प्रतिवर्षी ५ टक्क्यांनी कमी करण्याच्या आवश्यक अटीची पूर्तता राज्याने करणे गरजेचे आहे. राज्य विधिमंडळापुढे यापूर्वीच प्रस्तावित केलेले राजकोषीय उत्तरदायित्व विधेयक पारित करून वेळ न घालवता त्याची अंमलबजावणी करणे गरजेचे आहे.

लोकसंख्या

२.७ राज्याच्या लोकसंख्येचा वार्षिक वृद्धिदर सुमारे २ टक्क्यांच्या जवळपास राहिला असून भारताच्या तत्सम वृद्धिदरापेक्षा तो अधिक आहे. जनगणना २००१ नुसार राज्यातील लोकसंख्येपैकी ५९ टक्के लोकसंख्या ही १५ ते ५९ वर्षे ह्या वयोगटातील होती. या वयोगटातील लोकसंख्येस आर्थिक कार्यात जास्तीत जास्त सहभागी करून घेऊन आर्थिक वृद्धीचा वेग वाढविण्यास राज्यास बराच वाव आहे. राज्यातील जनतेचे आयुर्मान वाढत असून वयस्कर नागरिकांचे (६०+) प्रमाण १९६१ मधील ५.२ टक्क्यांवरून २००१ मध्ये ८.७ टक्क्यांपर्यंत वाढले आहे. कुटुंब संस्थेचे बदलते स्वरूप आणि लोप पावत चाललेली एकत्र कुटुंब पध्दती यामुळे काळजी घेण्याची आणि आधार देण्याची गरज असलेल्या वृद्ध व्यक्तींच्या प्रमाणात वाढ होत आहे. समाजातील या संवेदनशील घटकास भौतिक, सामाजिक आणि आर्थिक सुरक्षितता प्रदान करण्यासाठी कार्यक्रम आणि योजना आखण्याची गरज आहे. राज्य शासनाने ज्येष्ठ नागरिकांसाठी अन्न आणि आर्थिक सुरक्षितता कार्यक्रम राबविणे, तसेच त्यांना वैद्यकीय सेवा आणि सुविधा यांमध्ये प्राधान्य मिळेल अशी व्यवस्था करणे गरजेचे आहे.

नागरीकरण

२.८ महाराष्ट्र हे देशातील सर्वाधिक नागरीकरण झालेले राज्य असून राज्याच्या लोकसंख्येपैकी ४२ टक्के लोकसंख्या नागरी भागात रहात आहे. राज्याच्या नागरी भागातील लोकसंख्या जरी मोठ्या प्रमाणात नैसर्गिकरित्या वाढली असली तरी, महाराष्ट्राच्या नागरी भागात मोठ्या प्रमाणात आंतरराज्य आणि ग्रामीण भागातून होणारे स्थलांतर हे नागरी लोकसंख्येच्या बेसुमार आणि प्रचंड वाढीस कारणीभूत असलेले गंभीर धोके आहेत.

२.९ जलद गतीने होणाऱ्या नागरी वाढीच्या परिणामी शहरांना कष्टप्रद अशा रचनात्मक तडजोडींना सामोरे जावे लागत आहे. शहरे ही मालवाहतूक, आर्थिक, भांडवली आणि नागरिकांच्या दळणवळणाची, तसेच माहितीच्या आदानप्रदानाची महत्त्वाची केंद्रस्थाने बनत आहेत. शुध्द पिण्याचे पाणी, सार्वजनिक स्वच्छता, जल-मल निःसारण, घन कचरा व्यवस्थापन, गृहनिर्माण, रस्ते, सार्वजनिक परिवहन आणि शुध्द हवा या मूलभूत सुविधा नागरिकांना पुरविण्यास शहरे असमर्थ ठरली आहेत. या

समस्यांकडे प्राधान्याने लक्ष देणे आवश्यक आहे. ही शहरे कार्यक्षम आणि राहण्यायोग्य करण्यासाठी वाढत्या नागरीकरणास सहाय्यभूत ठरतील अशा रीतीने स्थानिक व्यवस्थापनाचे बळकटीकरण करणे गरजेचे आहे. तसेच पर्यावरणात सुधारणा करण्यासाठी आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अवलंब करून पायाभूत सुविधा कार्यक्षम आणि किफायतशीर होण्याच्या दृष्टीने नियोजन व आराखडे तयार करणे यासाठी ठोस प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

२.१० सार्वजनिक सेवा पुरविणाऱ्या उपक्रमांतील प्रचंड तूट निधीची आवश्यकता आणि आधुनिक तंत्रज्ञान व व्यवस्थापन यांची गरज विचारात घेता, काही विशिष्ट भौतिक व सामाजिक पायाभूत सुविधा पुरविण्याकरिता खाजगी क्षेत्राचा मोठ्या प्रमाणावर सहभाग प्राप्त करणे आवश्यक आहे. नागरी विकासासाठी मोठ्या प्रमाणावर साधनसंपत्तीची असलेली आवश्यकता विचारात घेता अर्थव्यवस्थेच्या विविध क्षेत्रांतून उपलब्ध साधनसंपत्तीचा पूर्ण क्षमतेने वापर करणे आणि कर महसूल व बिगर-कर महसूल वसुलीची कार्यक्षमता वाढविणे आवश्यक आहे. तसेच नागरिकांना उपलब्ध करून दिल्या जात असलेल्या सेवांचे शुल्क प्रदान करण्याची मानसिकता त्यांच्यात निर्माण करणे आवश्यक आहे.

किंमती

२.११ घाऊक किंमत निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचा दर २००१-०३ या दोन वर्षांच्या कालावधीत ३.५ टक्क्यांच्या आसपास होता तो २००३-०४ मध्ये ५.५ टक्के इतका माफक राहिला. चालू आर्थिक वर्षाच्या एप्रिल ते जानेवारी या कालावधीत चलनवाढीचा सरासरी दर ६.७ टक्क्यांपर्यंत पोहोचला. विलंबाने झालेला मोसमी पाऊस, आंतरराष्ट्रीय बाजारपेठेतील कूड तेलाची सातत्याने होणारी किंमतवाढ आणि पोलादाच्या वाढलेल्या किंमती या बाबी किंमतवाढीस कारणीभूत होत्या 'इंधन, शक्ती, दिवाबत्ती आणि वंगण' या प्रमुख गटांच्या सरासरी निर्देशांकात झालेली १० टक्के वाढ ही प्रामुख्याने 'कोळसा खनिज आणि खनिज तेल' या उपगटांच्या निर्देशांकात झालेल्या वाढीच्या परिणामी होती त्याचा परिणाम चलनवाढीचा दर वाढण्यावर झाला.

सार्वजनिक वितरण व्यवस्था

२.१२ दारिद्र्यरेषेखालील, आदिवासी आणि ग्रामीण जनता सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेवर मोठ्या प्रमाणात अवलंबून असते. तथापि, केंद्र सरकारचे अन्नधान्याचे (गहू आणि तांदूळ) नियतन आणि राज्याने केलेले उचल यांमध्ये तफावत असल्याने सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेच्या सुधारणेचा वाव असल्याचे निदर्शनास येते. विशेषतः लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेतील अन्नधान्याची कमी झालेली उचल कदाचित रोजगार ह्य योजनांसारख्या योजनांमधून लक्ष्यनिर्धारित गटातील जनतेस मजुरी ३५ कि.ग्रा. अन्नधान्य रूपात देण्यात येत असल्यामुळे असू शकेल.

उद्योग व पायाभूत सुविधा

२.१३ महाराष्ट्र हे अग्रगण्य औद्योगिक राज्य असून देशाती वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा विचार करता, त्यामध्ये राज्यास महत्त्वपूर्ण स्थान आहे. राज्याच्या वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा वाटा राज्य उत्पन्नात सुमारे १०

टक्के असून देशातील औद्योगिक क्षेत्राच्या उत्पादन मूल्यामध्ये सुध्दा त्याचा वाट जवळपास २० टक्के आहे. राज्यातील औद्योगिक वाढीमध्ये बरेच चढतार दिसून आले. ही वाढ १९९० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात आणि २००० च्या सुरुवातीस मंद राहिली. तथापि, २००२-०३ पासून वस्तुनिर्माण क्षेत्रामध्ये त्या तुलनेत जास्त वृद्धिदराने वाढ दिसून येत आहे. दूरसंचार आणि आंतरराष्ट्रीय संपर्क या दोन बाबींच्या पायाभूत सुविधांची उपलब्धता राज्यात लक्षणीयरीत्या चांगली आहे. तंत्रज्ञान जलद गतीने प्रगत होत आहे आणि बाजारपेठेतील स्पर्धेने अटीतटीचे स्वरूप धारण केले आहे. यासाठी, वाढत्या मागणीशी जुळवून घेऊन सातत्याने गुंतवणूक करणे आणि पायाभूत सुविधा कालानुरूप प्रगत करणे आवश्यक आहे.

२.१४ औद्योगिक वाढ आणि उद्योगांचा सर्वदूर विस्तार होण्यासाठी, याबाबतच्य सध्याच्या धोरणाचा आढावा घेण्याची गरज आहे. औद्योगिक वाढीमध्ये गततय रहावे यासाठी गुंतवणूक वर्धनशील पोषक वातावरण निर्माण करण्यासाठी राज्याने पूर्वअट म्हणून प्राथम्याने सक्षम आणि माफक दरत पायाभूत सुविधा, कुशल मनुष्य बळ, स्थैर्यपूर्ण वातावरण आणि चांगले प्रशासन पुरविण्याकरिता टोस उपाय योजले पाहिजेत.

कृषी व सिंचन

२.१५ राज्यातील शेती मुख्यत्वे मोसमी पावसावर अवलंबून आहे. कृषि रीति रीवाज पिकांखालील स्थूल क्षेत्रापैकी केवळ १६ टक्के क्षेत्र सिंचनाखाल आहे. देशाच्या ३८.७ टक्के स्थूल सिंचन क्षेत्राच्या तुलनेत ते निम्न्याहून नमी आहे. गेल्या दशकात सिंचन प्रकल्पांवर मोठ्या प्रमाणावर गुंतवणूक करून देखील राज्यातील स्थूल सिंचित क्षेत्राचे पिकांखालील स्थूल क्षेत्राशी प्रमण जवळपास त्याच पातळीवर राहिले आहे.

२.१६ राज्यातील सुमारे एक-तृतीयांश क्षेत्र पर्जन्य छायेच्या क्षेत्रात मोडते, जिथे पाऊस अपुरा आणि अनियमित असतो. राज्यातील जमीन, भूचरणा आणि वातावरण शेतीस फारसे पूरक नाही. राज्यातील प्रति हेक्टरी पीक उत्पादन सर्वसाधारणतः राष्ट्रीय सरासरीपेक्षा बरेच कमी आहे.

२.१७ राज्याच्या लोकसंख्येपैकी सुमारे ५८ टक्के लोकसंख्या ग्रामीण भाग राहात असून, अद्याप तेथील बहुतांश लोक हे उपजीविकेचे मुख्य साधन म्हणून शेतीवर अवलंबून आहेत. परंतु गेल्या सलग चार वर्षांत कृषि क्षेत्राचा वृद्धिदर असमाधानकारक मोसमी पावसामुळे ऋण राहिला आहे.

२.१८ कृषि क्षेत्रातील उत्पादकता वाढविण्याच्या उद्देशाने, या क्षेत्रातील वढीस चालना देण्याकरिता शासनाने कोरडवाहू शेतीस पोषक असे वातावरण निर्माण करणारी धोरणे आखून ती प्राधान्य क्रमानुसार राबविणे अत्रश्यक आहे. वारंवार अनुभवास येणारी मोसमी पावसाच्या प्रतिकूलतेमुळे पाण्याच्या तुटपुंज्या उपलब्ध साधनसंपत्तीचा अधिकाधिक चांगल्या प्रकारे कसा वापर करता येईल याकडे नव्याने लक्ष केंद्रित झाले आहे. पाण्याची मागणी कमी करण्यासाठी सुयोग्य उपाययोजना राबविणे गरजेचे आहे. सर्वकष पाणलोट क्षेत्र विकास कार्यक्रमाची प्रभावी अंमलबजावणी, पूर्णत्वाच्या टप्प्यातील सिंचन प्रकल्पांस प्राधान्य आणि

नागरी संस्थांच्या क्षेत्रातील सांडपाण्याचा पुनर्वापर करून पाणी पुरवठा वाढविता येईल. निर्मित सिंचनक्षमता आणि सिंचनाखालील प्रत्यक्ष क्षेत्र यांतील तफावत भरून काढण्यास प्राधान्य दिले पाहिजे. शासनाने पाण्याचा समजसपणे वापर करणे, फलोत्पादन आणि पुष्पोत्पादन क्षेत्रांमधून लाभ उठविणे, कृषि संलग्न इतर कार्यांना जास्त गती देणे, ग्रामीण पायाभूत सुविधांचे बळकटीकरण करणे, कृषि क्षेत्रांत खाजगी क्षेत्राच्या सहभागास व गुंतवणुकीस प्रोत्साहन देणे आणि ग्रामीण भागात विंगर-कृषि रोजगारास चालना देणे आवश्यक आहे.

२.१९ आरोग्याची निगा आणि पर्यावरणाची स्वच्छता राखणे या बाबत ग्रामीण जनतेत प्रचंड जागृती निर्माण करण्यात 'ग्राम स्वच्छता अभियान' ही संत गाडगे महाराजांच्या नावाने सुरू करण्यात आलेली योजना मोठ्या प्रमाणावर यशस्वी ठरली आहे. या योजनेमध्ये सार्वजनिक कार्यात जनतेच्या मोठ्या प्रमाणावरील सहभागाचे महत्त्व दिसून आले आहे. लोकसहभागाच्या अशाच प्रकारच्या योजना पाणलोट क्षेत्रविकास आणि जलसंवर्धन या क्षेत्रात राबविल्यास राज्यातील कोरडवाहू शेतीचा चेहरामोहराच बदलण्यास मदत होईल व त्यामुळे कृषि उत्पादन मोठ्या प्रमाणात वाढेल. त्याचबरोबर पिण्याच्या पाण्याची समस्या दूर होईल.

वीज

२.२० वीज हा आर्थिक विकासाच्या प्राक्रियेतील एक महत्त्वाचा घटक आहे. राज्यातील मोठ्या प्रमाणावरील औद्योगिकीकरण आणि नागरीकरण यांमुळे राज्यातील विजेची मागणी मोठी असून ती सातत्याने वाढत आहे. तथापि, नजिकच्या गतकालावधीत राज्यातील विजेची स्थापित क्षमता तेवढीच राहिली आहे. परिणामतः राज्यातील विजेची मागणी आणि तिचा पुरवठा यांतील तफावत मोठ्या प्रमाणात वाढली आहे. राज्यात भारनियमन ही नित्याची बाब झाली असून कमी दाबाने होणारा वीज पुरवठा आणि त्यात वारंवार होणारे चढउतार यामुळे वीज पुरवठा निकृष्ट दर्जाचा राहिला आहे. २००३-०४ मध्ये कमाल मागणी आणि पुरवठा यांतील तफावत २,०४२ मेगावॉट होती.

२.२१ राज्याची एकूण स्थापित क्षमता आणि विद्युत् निर्मिती या दोन्हीमध्ये महाराष्ट्र राज्य विद्युत् मंडळाचा वाटा ७५ टक्के आहे. महाराष्ट्र राज्य विद्युत् मंडळाची पारेषण आणि वितरणातील हानी जवळपास ३८ टक्के इतक्या मोठ्या प्रमाणात असून विकसित राष्ट्रांच्या आंतरराष्ट्रीय सरासरीशी तुलना करता, ती बरीच जास्त आहे. व्यापक क्षेत्रात, विशेषतः अतिदुर्गम ग्रामीण भागात विखुरलेला विद्युत् पुरवठा, पारेषण व्यवस्थेतील अपुरी गुंतवणूक आणि विजेची मोठ्या प्रमाणावरील गळती इत्यादी कारणे पारेषण आणि वितरणातील मोठ्या प्रमाणावरील हानीस कारणीभूत असावीत. विजेच्या वापरापैकी जरी २५ टक्के वापर कृषि क्षेत्रात होत असला तरी, महाराष्ट्र राज्य विद्युत् मंडळाच्या महसुली जमेत त्या क्षेत्राचा वाटा केवळ १०.७ टक्के इतका आहे. शेतकऱ्यांना मोफत वीज पुरविण्याच्या शासनाच्या धोरणात्मक निर्णयामुळे कृषि क्षेत्रामधील विजेची मागणी वाढली असून राज्याच्या विद्युत् पुरवठ्यातील समस्यांमध्ये त्यामुळे आणखी भर पडली आहे. असमाधानकारक महसूल वसुली, गतकालावधीत

सातत्याने सवलतीच्या दरात केलेला वीज पुरवठा, मोठ्या प्रमाणावरील पारेषण व वितरणातील हानी आणि विजेची मोठ्या प्रमाणावरील गळती यामुळे महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची आर्थिक स्थिती कमकुवत झाली आहे. राज्यातील ऊर्जा क्षेत्राची स्थिती सुधारण्यासाठी तंत्रज्ञान, उपकरणे, कार्यप्रणाली व देखभाल, साहित्य यामध्ये सुधारणा करण्यासाठी प्रयत्न करणे ही काळाची गरज आहे. कार्यक्षमता, स्वायत्तता आणि निर्णयक्षमता यांना उत्तेजन देणे, वीज चोरीला आळा घालण्यासाठी कायदा करणे, सर्व ग्राहकांना वीज पुरवठा मीटरद्वारे करणे, तांत्रिक आणि वाणिज्यिक हानी कमी करणे या बाबींचा अंतर्भाव असलेल्या महाराष्ट्र वीज सुधार विधेयकाची प्रभावी अंमलबजावणी राज्यास वीज टंचाईच्या समस्येवर मात करण्यास निश्चितच सहाय्यभूत ठरेल.

रस्ते

२.२२ मार्च, २००४ अखेरीस सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदेच्या देखभालीखालील राज्यातील रस्त्यांची एकूण लांबी २.२७ लक्ष कि.मी. होती. राज्यातील लोकवस्ती असलेल्या गावांपैकी ९३.९ टक्के गावे बारमाही रस्त्यांनी जोडलेली होती, तर ४.२ टक्के गावे हंगामी रस्त्यांनी जोडलेली होती. मागील दोन दशकांमध्ये रस्त्यांवरील वाहनांच्या संख्येत आठपटीहून अधिक अशी भरीव वाढ झाली आहे. परिणामी, रस्त्यांचा दर्जा खालावला असून ते कार्यक्षम व जलद वाहतूकीची गरज पूर्ण करू शकत नाहीत. मोटार वाहनांच्या संख्येच्या तुलनेत राज्यातील रस्त्यांच्या पायाभूत सुविधा फारच अपुऱ्या आहेत. राज्याच्या औद्योगिक, वाणिज्यिक, आर्थिक उद्योगांच्या वाढीसाठी आणि सर्वसामान्य जनतेस सार्वजनिक रस्त्यांची वाहतूक माफक दरात उपलब्ध करून देण्यासाठी चांगल्या दर्जेदार व खात्रीच्या रस्त्यांची आवश्यकता आहे. त्यामुळे इंधन व वेळ यांची बचत होऊन अपघातांमुळे होणारी हानी कमी होते. शासनाने यापूर्वीच रस्त्यांच्या विकासासाठी आणि देखभालीसाठी महाराष्ट्र राज्य रस्ते विकास मंडळामार्फत खाजगी सहभाग घेण्यास सुरुवात केली आहे. तथापि, रस्त्यांच्या पायाभूत सुविधांमध्ये दर्जेदार सुधारणा करण्याकरिता जास्तीत जास्त खाजगी सहभागास प्रोत्साहन देण्याची आवश्यकता आहे.

शिक्षण

२.२३ शिक्षण हा मानवाच्या आर्थिक विकासातील अत्यंत महत्त्वाचा घटक आहे. मानव विकास प्रक्रियेची गती सतत तीव्र करण्यामध्ये शिक्षण ही एक महत्त्वाची बाब राहणार आहे. राज्यातील साक्षरता गेल्या काही दशकांत सातत्याने वाढली असून मागील दशकात राज्याच्या साक्षरतेत १२.० टक्के बिंदूची भरीव वाढ झाली आहे. साक्षरतेच्या वाढत्या प्रमाणाचे श्रेय पायाभूत शिक्षणाची सुविधा सर्वदूर पुरविणे, शाळांतील पट नोंदणीमधील भरीव वाढ, तसेच जनतेच्या आर्थिक स्थितीतील सुधारणा यांना देता येईल. प्राथमिक व माध्यमिक शाळांच्या संख्येमध्ये भरीव वाढ झाली आहे. जरी शालेय शिक्षणाच्या संधी संख्यात्मक दृष्ट्या प्रभावीपणे वाढल्या असल्या तरी, त्यांचा गुणात्मक दर्जा अनुत्तरित राहता. शाळांतील अपुऱ्या पायाभूत सुविधा, एकशिक्षकी शाळा, विशेषतः ग्रामीण भागामध्ये शिक्षकांच्या गैरहजेरीचे मोठे प्रमाण, शिक्षकांच्या

मोठ्या प्रमाणावरील रिक्त जागा, अपुरी उपकरणे, विद्यार्थ्यांच्या गळतीचे मोठे प्रमाण, शालांत मंडळाच्या परीक्षेतील उत्तीर्णतेचे कमी प्रमाण, इत्यादी प्रश्नांनी शिक्षणक्षेत्रास ग्रासले आहे.

२.२४ राज्यातील प्रत्येक बालक हे शाळेत जात आहे आणि शिकत आहे अशी व्यवस्था करण्यासाठी साक्षरता आणि मूलभूत शिक्षणाचे कालबद्ध आणि जलद सार्वत्रिकीकरण करण्यावर गांभीर्याने भर देण्याचा गरज आहे. जेव्हा सगळे प्रौढ साक्षर झालेले असतील आणि सगळी मुले शाळेत शिकत असतील तेव्हा 'शिक्षण' हा 'मानवी विकासाचा मूलभूत पाया' बळकट व स्थैर्यपूर्ण होईल. साधनसंपत्तीचा सुयोग्य वापर आणि दूरदृष्टीपूर्वक उपाययोजना यांच्या बांधीलकीतून हे साध्य करता येईल.

सार्वजनिक आरोग्य

२.२५ आयुर्मानातील वाढ व अभंग मृत्यूदरातील घट या दोन बाबतीत महाराष्ट्राने चांगले यश प्राप्त केले असले तरी, त्यामध्ये सुधारणेस अद्याप वाव आहे. तथापि, राज्यातील सर्वसाधारण आर्थिक वृद्धीच्या गतीशी सुसंगत गती ठेवून न शकल्यामुळे एकंदरीत आरोग्य क्षेत्र कमकुवत राहिले आहे. राज्याच्या नागरी भागात आरोग्यविषयक सुविधा मोठ्या प्रमाणावर उपलब्ध आहेत, मात्र ग्रामीण भाग त्याबाबतीत मागे पडला आहे. नागरी व ग्रामीण भागांतील आरोग्य सेवेच्या पायाभूत सुविधांमध्ये गुणात्मक व संख्यात्मकदृष्ट्या मोठी तफावत आहे. आदिवासी व दुर्गम डोंगरी ग्रामीण भागात पायाभूत सुविधांची उपलब्धता अत्यंत निकृष्ट आहे. ग्रामीण भागातील प्राथमिक आरोग्य केंद्रे आणि उपकेंद्रे या पायाभूत सुविधा त्यासाठीच्या निकषांनुसार आहेत, परंतु आरोग्य सेवा सुविधा व्यवस्थितरित्या पुरविण्यासाठी त्यांच्याकडे पुरेशी संसाधने उपलब्ध नाहीत.

२.२६ सार्वजनिक आरोग्य सेवेवरील गुंतवणूक ब खर्च कमी होत असल्यामुळे त्याचा परिणाम राज्यातील आरोग्य सेवांचा दर्जा खालावण्यात झाला आहे. आरोग्य सेवेस मूलभूत हक्काचे स्थान देणे, खाजगी वैद्यकीय क्षेत्राकरिता सर्वसाधारण मानके ठरवून सामाजिक कायदा करणे, आरोग्याकरिता अर्थसंकल्पीय तरतुदीत वाढ करणे आणि गाव पातळीवर आवश्यक आरोग्य सेवा उपलब्ध करून देण्याकरिता योजना आखणे ह्या धोरणांची अंमलबजावणी प्राधान्याने व प्रभावीपणे करणे गरजेचे आहे. त्यामुळे सार्वजनिक आरोग्य क्षेत्र बळकट होऊन त्याचा लाभ जनतेस, विशेषतः गरीब व वंचित घटकांना होईल.

रोजगार

२.२७ गेल्या काही वर्षांपासून राज्यातील कारखान्यांतील रोजगारात सातत्याने घट होत आहे. कारखाने बंद पडणे आणि सार्वजनिक व खाजगी उपक्रमांमध्ये राबविली जाणारी ऐच्छिक सेवानिवृत्ती योजना यामुळे रोजगाराच्या स्थितीवर वाईट परिणाम झाला आहे. कृषि क्षेत्रातील रोजगारावरील अवलंबित्व जरी कमी झाले असले तरी, राज्यातील ५५ टक्के कार्यशक्ती अजूनही उपजीविकेकरिता शेतीवरच अवलंबून आहे. यास्तव बिगर-कृषि क्षेत्रांत रोजगार वाढविणे आवश्यक आहे. इतर क्षेत्रांमध्ये पूरक आणि पर्यायी रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देणाऱ्या

उपक्रमां प्रोत्साहन देणे आवश्यक आहे. शासन लघुउद्योगांना वित्तविषयक अनेक प्रोत्साहने देत आहे. तथापि, आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अभाव, कुशल कामगारांची कमतरता, संस्थांकडून होणारा अपुरा पतपुरवठा आणि कार्यक्षम पणन व्यवस्थेचा अभाव ह्या समस्या या लघुउद्योगांना भेडसावणऱ्या आहेत. त्यामुळे रोजगाराच्या संधी निर्माण करण्याकरिता कौशल्य विकास, व्यवसाय प्रशिक्षण आणि तांत्रिक शिक्षण कार्यक्रम यांसारखे कार्यक्रम मोठ्या प्रमाणावर राबविणे अत्यंत आवश्यक आहे. सेवा क्षेत्रातील रोजगार वाढत असला तरी, मुख्यत्वे कुशल मनुष्यबळावर अवलंबून असलेल्या माहिती व तंत्रज्ञान क्षेत्राच्या रोजगार वाढीवर मर्यादा आहेत. तथापि, पर्यटन व पर्यटनावर आधारित सेवा उदा. हॉटेल्स यामध्ये रोजगार निर्मितीची मोठी क्षमता आहे. औद्योगिक क्षेत्रात जलद गतीने वाढ होणे आवश्यक असून ते केवळ अर्थव्यवस्थेच्या एकंदरीत वाढीस उत्तेजन देण्यासाठीच नसून सध्या बेरोजगार असलेल्यांकरिता लाभदायक रोजगार निर्माण करण्यासाठीही आवश्यक आहे.

दारिद्र्य

२.२८ राज्य शासनाच्या आर्थिक विकास कार्यक्रमाचा दारिद्र्य निर्मूलन हे एक नेहमीच अविभाज्य घटक राहिला आहे. दारिद्र्याचे प्रमाण १९७३-७४ मधील ५३.२ टक्क्यांवरून १९९९-२००० मध्ये २५ टक्क्यांपर्यंत सातत्याने कमी झाले, हे राज्य शासनाच्या दारिद्र्य निर्मूलनाच्या धोरणाचे यश आहे. राज्यातील दारिद्र्याचे प्रमाण नागरी भागाच्या तुलनेत ग्रामीण भागात वेगळे कमी झाले आहे. राज्याचे दरडोई उत्पन्न राष्ट्रीय दरडोई उत्पन्नाच्या गीडपटीपेक्षा अधिक असले तरी, राज्यातील दारिद्र्य निर्मूलनाचा वेग मात्र ज्वळपास देश पातळीवरील दारिद्र्य निर्मूलनाच्या वेगाइतकाच राहिला आहे. तेव्हा शासनाने ग्रामीण औद्योगिकीकरणाला व त्यात विविधता अणण्यास सर्वांचे प्राधान्य देणे, रोजगार विषयक कार्यक्रमांची गती वाढविणे आणि सार्वजनिक वितरण व्यवस्था गरिबांभिमूख करून

सुयोग्य पध्दतीने व तत्परतेने राबविणे आवश्यक आहे. स्थूल राज्य उत्पन्नाचा त्यामानाने उच्च पातळीवरील सरासरी वार्षिक वृद्धिदर विचारात घेता. तसेच पुढील कालावधीत द्वितीय आणि तृतीय क्षेत्रातील वाढीचा वेग असाच राहिल्यास अथवा त्यात आणखी भर पडल्यास आणि त्याचबरोबर, पुढील दोन वर्षांत मानसून समाधानकारक राहिल्यास योजना आयोगाने दहाव्या पंचवार्षिक योजने अखोरीस (२००६-०७) राज्याकरिता निश्चित केलेले दारिद्र्य निर्मूलनाचे १६.२ टक्के हे उद्दिष्ट साध्य करणे राज्यास शक्य होईल, असे वाटते.

उपसंहार

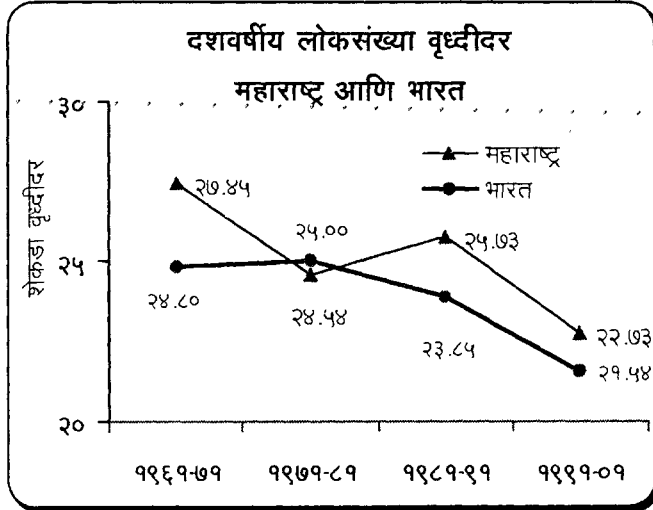
२.२९ अलिकडील वर्षांमध्ये असमाधानकारक पर्जन्यमान झाल्यामुळे कृषि क्षेत्रातील वाढीवर त्याचा प्रतिकूल परिणाम होऊनही, राज्याची अर्थव्यवस्था २००१-०२ पासून सुधारणेच्या मार्गावर असून, राज्याच्या अर्थव्यवस्थेचा सरासरी वार्षिक वृद्धिदर ७.२ टक्के राहिला आहे. राज्याच्या अर्थव्यवस्थेने यापूर्वी उच्च पातळीचा वृद्धिदर गाठला असून, अर्थव्यवस्थेचा वृद्धिदर ८.० टक्के आणि त्यापेक्षा अधिक इतका गाठण्याची क्षमता तिच्यामध्ये आहे. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेमध्ये राज्याला आर्थिक वृद्धीचे दिलेले लक्ष्य गाठण्यासाठी औद्योगिक आणि सेवा क्षेत्रातील वृद्धिदर प्रतिवर्षी १० टक्क्यांहून सातत्याने अधिक राहिल अशा रीतीने धोरणे आखून हे लक्ष्य साध्य करणे शक्य आहे. त्याकरिता पायाभूत सुविधांचा विकास, कायदेविषयक व कर प्रणालीत सुधारणा आणि अर्थव्यवस्था भक्कम करणे या बाबींकडे प्राथम्याने लक्ष देणे गरजेचे आहे. राज्यात खाजगी क्षेत्राला पायाभूत सुविधा आणि कृषि क्षेत्रांमध्ये सहभागी होण्यास प्रोत्साहन देणे आवश्यक आहे. आर्थिक सुधारणांचा वेग असाच कायम ठेवल्यास, येत्या थोड्याच वर्षांत राज्याची अर्थव्यवस्था देशात अग्रगण्य स्थान प्राप्त करू शकेल.



लोकसंख्या

३.१ महाराष्ट्र हे लोकसंख्येच्या बाबतीत उत्तर प्रदेश या राज्यांनंतर भारतातील दुसऱ्या क्रमांकाचे मोठे राज्य आहे. जनगणना २००१ नुसार महाराष्ट्राची लोकसंख्या ९.६९ कोटी असून ती भारताच्या एकूण (१०२.८६ कोटी) लोकसंख्येमध्ये ९.४ टक्के इतकी आहे. १ मार्च, २००५ रोजीची राज्याची प्रक्षेपित लोकसंख्या सुमारे १०.२७ कोटी इतकी आहे.

३.२ १९९१-२००१ या दशकात राज्याच्या लोकसंख्येमध्ये २२.७ टक्के (वार्षिक सरासरी चक्रवाढ वृद्धिदर २.०७ टक्के) वाढ झाली. ती आधीच्या दशकातील २५.७ टक्के वाढीपेक्षा कमी होती. मागील चार दशकातील राज्याच्या लोकसंख्येचा दशवर्षीय वृद्धिदर, १९७१-८१ या दशकाचा अपवाद वगळता, भारताच्या लोकसंख्या वाढीच्या तत्सम वृद्धिदरापेक्षा जास्त होता. राज्याबाहेरून राज्यात स्थलांतरित होणारी लोकसंख्या हे राज्याच्या मोठ्या प्रमाणातील लोकसंख्या वाढीच्या कारणपैकी एक प्रमुख कारण आहे.



३.३ जनगणना २००१ वर आधारित स्थलांतराविषयीची आकडेवारी अद्याप उपलब्ध नाही. तथापि, लोकसंख्येतील प्रत्यक्ष वाढ व नैसर्गिक वाढ यातील फरक विचारात घेऊन राज्यातील निव्वळ स्थलांतरितांच्या लोकसंख्येचा अंदाज करता येऊ शकतो. १९९१ ते २००० या कालावधीतील नमुना नोंदणी पाहणी अंतर्गत जन्म व मृत्यू दरातील फरकाचा विचार करता, १९९१-२००१ या कालावधीत प्रति वर्ष राज्यातील लोकसंख्येतील नैसर्गिक वृद्धिदर १.७ टक्के होता. यावरून राज्यात १९९१-२००१ या कालावधीत स्थलांतरित होणाऱ्यांची निव्वळ संख्या सुमारे ४ लाख प्रतिवर्ष इतकी येते. यावरून असे दिसून येते की, १९९१-२००१ या कालावधीत राज्यातील लोकसंख्या वाढीत स्थलांतरितांचा हिस्सा २३

टक्के इतका होता. गत दशकामध्ये लोकसंख्येत झालेल्या वाढीतील प्रत्येक पाच व्यक्तीमधील एक व्यक्ती स्थलांतरित होती.

भारतातील काही मोठ्या राज्यांचे दशवर्षीय लोकसंख्या वृद्धिदर

| | | | |
|--------------|---------|--------------|---------|
| आंध्र प्रदेश | - १४.५९ | महाराष्ट्र | - २२.७३ |
| आसाम | - १८.९२ | बिहार | - २८.६२ |
| गुजरात | - २२.६६ | हरियाणा | - २८.४७ |
| कर्नाटक | - १७.५१ | मध्य प्रदेश | - २४.२६ |
| केरळ | - ९.४३ | राजस्थान | - २८.४१ |
| ओरिसा | - १६.२५ | उत्तर प्रदेश | - २५.८५ |
| पंजाब | - २०.१० | | |
| तामीळनाडू | - ११.७२ | | |
| पश्चिम बंगाल | - १७.७७ | | |

दृष्टीक्षेपात लोकसंख्या विषयक बाबी

महाराष्ट्र व भारत

(जनगणना २००१)

| बाब | महाराष्ट्र | भारत |
|--|------------|--------|
| लोकसंख्या (लाखांमध्ये) | | |
| एकूण | | |
| व्यक्ती | ९६९ | १०,२८६ |
| पुरुष | ५०४ | ५,३२२ |
| स्त्रिया | ४६५ | ४,९६४ |
| ग्रामीण | | |
| व्यक्ती | ५५८ | ७,४२५ |
| पुरुष | २८५ | ३,८१६ |
| स्त्रिया | २७३ | ३,६०९ |
| नागरी | | |
| व्यक्ती | ४११ | २,८६१ |
| पुरुष | २१९ | १,५०५ |
| स्त्रिया | १९२ | १,३५६ |
| अनुसूचित जातींची लोकसंख्या (%) | १०.२ | १६.२ |
| अनुसूचित जमातींची लोकसंख्या (%) | ८.९ | ८.२ |
| दशवर्षीय वाढ टक्केवारी (१९९१-२००१) | २२.७ | २१.५ |
| नागरी लोकसंख्येची टक्केवारी | ४२.४ | २७.८ |
| स्त्री-पुरुष प्रमाण (प्रति हजार पुरुषांमध्ये स्त्रिया) | ९२२ | ९३३ |
| क्षेत्रफळ (लाख चौ.कि.मी. मध्ये) | ३.०८ | ३२.८७ |
| लोकसंख्येची घनता (प्रति चौ.कि.मी.) | ३१५ | ३१३ |
| साक्षरतेची टक्केवारी | ७६.९ | ६४.८ |
| (७ वर्ष व त्यावरील लोकसंख्येकरिता) | | |

लोकसंख्येची घनता

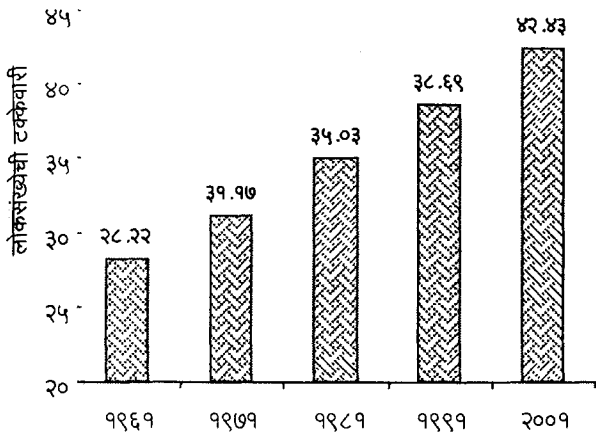
३.४ जनगणना २००१ नुसार राज्यातील लोकसंख्येची घनता (लोकसंख्ये प्रति चौ.कि.मी.) ३१५ असून ती भारताच्या लोकसंख्या घनतेपेक्षा ३१३) थोडी अधिक आहे. जनगणना १९९१ नुसार राज्यातील लोकसंख्येची घनता २५७ इतकी होती. १९९१-२००१ या दशकात त्यात प्रति चौ.कि.मी. ५८ व्यक्तींची भर पडली.

३.५ राज्याच्या जिल्ह्यांमधील लोकसंख्येच्या घनतेमध्ये मोठ्या प्रमाणात फावट दिसून येते. लोकसंख्येची घनता सर्वात जास्त मुंबई शहर जिल्ह्यामध्ये (२१,१९०) होती, तर ती गडचिरोली जिल्ह्यामध्ये सर्वात कमी (६७) होती. राज्यातील आठ जिल्ह्यांमध्ये लोकसंख्येची घनता राज्य सरासरी (३१५) पेक्षा जास्त होती, आणि २७ जिल्ह्यांमध्ये ती राज्य सरासरीपेक्षा कमी होती.

नागरी लोकसंख्या

३.६ २००१ च्या जनगणनेनुसार राज्याच्या एकूण लोकसंख्येपैकी ४२.४ टक्के लोकसंख्या नागरी भागात राहत होती. राज्यातील हे प्रमाण भारताच्या तत्सम प्रमाणापेक्षा (२७.८) खूपच जास्त होते. राज्यातील नागरी लोकसंख्येचे प्रमाण १९९१ मधील ३८.७ टक्क्यांवरून २००१ मध्ये ४२.४ टक्क्यांपर्यंत वाढले. नागरी लोकसंख्येच्या प्रमाणाच्या बाबतीत भारतातील प्रमुख राज्यांमध्ये तामीळनाडूनंतर (४४.० टक्के) महाराष्ट्राचा दुसरा क्रमक लागतो.

महाराष्ट्र राज्याचे तीव्रगतीने होणारे नागरीकरण

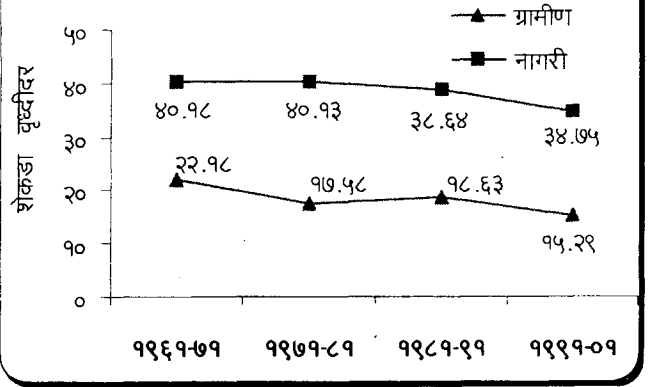


ग्रामीण लोकसंख्या

३.७ २००१ च्या जनगणनेनुसार राज्यातील ४१,०९५ खेड्यांमध्ये राहणाऱ्या ग्रामीण लोकसंख्येचे एकूण लोकसंख्येशी प्रमाण ५७.६ टक्के इतके होते. १९९१-२००१ या दशकात राज्यातील ग्रामीण लोकसंख्या १५.३ टक्क्यांनी वाढली. ही वाढ भारताच्या तत्सम वाढीपेक्षा (१८.१ टक्के) कमी होती. तसेच सदर वाढ ही राज्याच्या १९८१-९१ या दशकातील वाढीपेक्षा (८.६ टक्के) कमी होती.

३.८ राज्यातील नागरी व ग्रामीण भागातील लोकसंख्येच्या दशवर्षीय वृद्धिदरांवरून असे निदर्शनास येते की, नागरी भागातील लोकसंख्या वृद्धिदर ग्रामीण भागातील वृद्धिदरापेक्षा दुप्पट किंवा त्यापेक्षा जास्त आहेत. गेल्या चार दशकांमध्ये, १९८१-९१ या दशकाचा अपवाद वगळता, वृद्धिदरांमध्ये उतरता कल दिसून येतो.

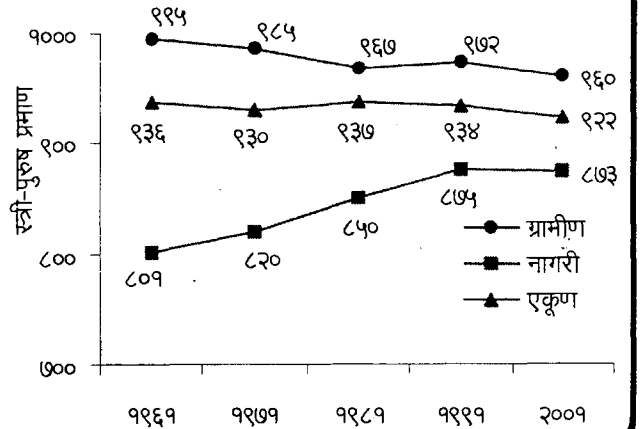
महाराष्ट्राचे दशवर्षीय लोकसंख्या वृद्धिदर



स्त्री-पुरुष प्रमाण

३.९ जनगणना २००१ च्या निष्कर्षानुसार महाराष्ट्र राज्यातील स्त्री-पुरुष प्रमाण, १९९१ मधील ९३४ वरून कमी होऊन ते २००१ मध्ये आतापर्यंत सर्वात कमी म्हणजे ९२२ इतके झाले. राष्ट्रीय स्तरावर स्त्री-पुरुष प्रमाणांमध्ये वाढ होत असताना राज्यातील स्त्री-पुरुष प्रमाणात झालेली घट ही चिंताजनक बाब आहे. राज्याच्या ग्रामीण भागाकरिताचे स्त्री-पुरुष प्रमाण नागरी भागातील प्रमाणापेक्षा नेहमीच जास्त होते.

स्त्री-पुरुष प्रमाण



मुलांमधील स्त्री-पुरुष प्रमाण

३.१० राज्याच्या भविष्यकालीन लिंगनिहाय रचनेचा कल दर्शविण्यासाठी ० ते ६ वर्षे वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाण हा महत्वाचा निर्देशक आहे. जनगणना २००१ च्या निष्कर्षानुसार राज्यातील ०-६ वर्षे

वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाण १९९१ मधील ९४५ वरून कमी होऊन ते ११३ इतके झाले. केरळ राज्यात हे प्रमाण ९५८ वरून ९६३ इतके सुधारले असतांना महाराष्ट्रात मात्र याउलट चित्र दिसते. राष्ट्रीय स्तरावरदेखील ०-६ वर्षे वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाण (१९७७) महाराष्ट्र राज्यातील स्त्री-पुरुष प्रमाणापेक्षा (१९३) जास्त आहे. मुलगा असावा अशी आत्यंतिक मानसिकता असलेला समाज व गर्भलिंग निश्चितीची उपलब्धता यामुळे कदाचित लिंग निवडीनुसार गर्भपात करण्याचे प्रमाण वाढले असण्याची शक्यता आहे.

साक्षरता

३.११ भारतातील प्रमुख राज्यांमध्ये महाराष्ट्र राज्याने साक्षरता वाढीमध्ये प्रभावी कामगिरी केल्याचे जनगणना २००१ चे निष्कर्ष दर्शवितात. सात वर्षे व त्यापेक्षा अधिक वय असलेल्या महाराष्ट्रातील लोकसंख्येच्या साक्षरतेच्या प्रमाणात १९९१ मधील ६४.९ टक्क्यावरून २००१ मध्ये ७६.९ टक्के अशी सुधारणा झाली. साक्षरता प्रमाणातील १२.० टक्के अंक वाढ ही गत चार दशकामधील सर्वाधिक वाढ होती. स्त्रियांच्या साक्षरतेच्या प्रमाणात झालेली अशी वाढ अधिक ठळक होती, आणि ती १४.७ टक्के अंक एवढी होती. असे असले तरी पुरुष व स्त्रियांच्या साक्षरतेच्या प्रमाणात अजूनही बरीच तफावत असून, राज्याने स्त्रियांच्या साक्षरतेच्या प्रमाणात वाढ होण्यासाठी विशेष प्रयत्न केले पाहिजेत. साक्षरतेच्या बाबतीत महाराष्ट्र राष्ट्रीय सरासरीपेक्षा नेहमीच वरच्या पातळीवर राहिला आहे.

३.१२ जनगणना २००१ नुसार साक्षरतेच्या प्रमाणात भारतातील प्रमुख राज्यांमध्ये केरळ राज्यानंतर (९०.९ टक्के) महाराष्ट्राचा दुसरा क्रमांक लागतो. ग्रामीण व नागरी भागातील स्त्री आणि पुरुषांचे साक्षरता प्रमाण तक्ता क्र. ३.१ मध्ये दिले आहेत.

तक्ता क्र. ३.१

महाराष्ट्रातील साक्षरतेचे प्रमाण

(टक्के)

| बाब | व्यक्ती | पुरुष | स्त्रिया |
|----------------------|---------|-------|----------|
| जनगणना - २००१ | | | |
| एकूण | ७६.९ | ८६.० | ६७.० |
| ग्रामीण | ७०.४ | ८१.९ | ५८.४ |
| नागरी | ८५.५ | ९१.० | ७९.१ |
| जनगणना - १९९१ | | | |
| एकूण | ६४.९ | ७६.६ | ५२.३ |
| ग्रामीण | ५५.५ | ६९.७ | ४१.० |
| नागरी | ७९.२ | ८६.४ | ७०.९ |

३.१३ राज्याच्या साक्षरता प्रमाणात निःसंशयपणे जरी भरीव वाढ झाली असली तरी, राज्यात अद्याप सुमारे १.९२ कोटी व्यक्ती निरक्षर असून त्यापैकी सुमारे ६९ टक्के स्त्रिया आहेत.

राष्ट्रीय साक्षरता प्रमाणापेक्षा जास्त साक्षरता प्रमाण असणारी राज्ये (जनगणना २००१)

| | | |
|-------------------|---|-------------|
| केरळ | - | ९०.९ |
| महाराष्ट्र | - | ७६.९ |
| तामीळनाडू | - | ७३.५ |
| पंजाब | - | ६९.७ |
| गुजरात | - | ६९.१ |
| कर्नाटक | - | ६६.६ |
| अखिल भारत | - | ६४.८ |

अनुसूचित जातींची लोकसंख्या

३.१४ २००१ च्या जनगणनेनुसार राज्यातील अनुसूचित जातींची लोकसंख्या ९८.८२ लाख (पुरुष ५०.६३ लाख व स्त्रिया ४८.१९ लाख) होती. त्यापैकी, ६९.७ टक्के लोक ग्रामीण भागात राहत होते. अनुसूचित जातींच्या लोकसंख्येचे राज्यातील एकूण लोकसंख्येशी प्रमाण १०.२ टक्के होते. अनुसूचित जातींच्या लोकसंख्येतील स्त्री-पुरुष प्रमाण ९५.२ होते व ते राज्यातील एकूण लोकसंख्येतील तत्सम प्रमाणापेक्षा जास्त होते.

अनुसूचित जमातींची लोकसंख्या

३.१५ २००१ च्या जनगणनेनुसार राज्यातील अनुसूचित जमातींची लोकसंख्या ८५.७७ लाख (पुरुष ४३.४८ लाख व स्त्रिया ४२.२९ लाख) होती. त्यापैकी, ८७.३ टक्के लोक ग्रामीण भागात राहत होते. अनुसूचित जमातींच्या लोकसंख्येचे राज्यातील एकूण लोकसंख्येशी प्रमाण ८.९ टक्के होते. अनुसूचित जमातींच्या लोकसंख्येतील स्त्री-पुरुष प्रमाण ९७.३ होते व ते राज्यातील एकूण लोकसंख्येतील तत्सम प्रमाणापेक्षा बरेच जास्त होते.

३.१६ जनगणना २००१ वर आधारित महाराष्ट्रातील अनुसूचित जाती व जमातींच्या लोकसंख्येची काही महत्वाची वैशिष्ट्ये तक्ता क्र.३.२ मध्ये दिली आहेत.

तक्ता क्र. ३.२

महाराष्ट्रातील अनुसूचित जाती व जमातींची लोकसंख्या

| बाब | एकूण | अनुसूचित जाती | अनुसूचित जमाती |
|---------------------------|--------|---------------|----------------|
| लोकसंख्या (हजारात) | | | |
| व्यक्ती | ९६,८७९ | ९,८८२ | ८,५७७ |
| पुरुष | ५०,४०१ | ५,०६३ | ४,३४८ |
| स्त्रिया | ४६,४७८ | ४,८१९ | ४,२२९ |
| स्त्री-पुरुष प्रमाण | ९२२ | ९५२ | ९७३ |

धर्मानुसार लोकसंख्या

३.१७ प्रत्येक दशवार्षिक जनगणनेमध्ये धर्मानुसार लोकसंख्येची माहिती देण्याचा प्रयत्न केला जातो. राज्यातील लोकसंख्येचे धर्मानुसार असलेले वर्गीकरण हे अखिल भारताच्या वर्गीकरणाशी जवळपास मिळतेजुळते आहे. १९९१ व २००१ च्या सलग दोन जनगणनांनुसार प्रमुख धर्मानिहाय लोकसंख्येची टक्केवारी राज्य व भारताकरिता तक्ता क्र.३.३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ३.३

धर्मनिहाय लोकसंख्येची एकूण लोकसंख्येशी टक्केवारी

| धर्म | एकूण लोकसंख्येशी टक्केवारी | | | |
|----------|----------------------------|-------|-------|-------|
| | महाराष्ट्र | | भारत | |
| | १९९१ | २००१ | १९९१* | २००१ |
| हिंदू | ८१.१ | ८०.४ | ८२.० | ८०.५ |
| मुस्लिम | ९.७ | १०.६ | १२.१ | १३.४ |
| ख्रिश्चन | १.१ | १.१ | २.३ | २.३ |
| शिख | ०.२ | ०.२ | १.९ | १.९ |
| बौध्द | ६.४ | ६.१ | ०.८ | ०.८ |
| जैन | १.२ | १.३ | ०.४ | ०.४ |
| इतर@ | ०.३ | ०.३ | ०.५ | ०.७ |
| एकूण | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |

@ धर्म न सांगितलेले धरून

* जम्मू व काश्मिर वगळून

३.१८ जनगणना २००१ नुसार एकूण हिंदू धर्मियांपैकी जवळपास ३७.३ टक्के लोकसंख्या राज्याच्या नागरी भागात राहत होती. ख्रिश्चन आणि शिख धर्मीय लोकसंख्येपैकी बहुतांशी (८४.९ आणि ८६.३ टक्के

अनुक्रमे) लोकसंख्या नागरी भागात राहत होती. राज्य पातळीवरील स्त्री-पुरुष प्रमाणाशी (९२२) तुलना करता ख्रिश्चन धर्मीयांमध्ये स्त्री-पुरुष प्रमाण सर्वाधिक (९९३) आहे. तर शिख धर्मीयांमध्ये ते सर्वात कमी (८२९) आहे.

शारिरीकदृष्ट्या विकलांगतेनुसार लोकसंख्या

३.१९ जनगणना २००१ मध्ये शारिरीकदृष्ट्या विकलांग व्यक्तींची गणना विकलांगतेच्या प्रकारानुसार करण्यात आली. त्यानुसार राज्याच्या एकूण लोकसंख्येपैकी १.६ टक्के लोकसंख्या निरनिराळ्या प्रकारानुसार विकलांग असून हे प्रमाण अखिल भारताच्या तत्सम प्रमाणापेक्षा (२.१ टक्के) खूपच कमी होते. विकलांगतेचे प्रमाण महिलांपेक्षा पुरुषांमध्ये अधिक होते. शारिरीकदृष्ट्या विकलांगतेच्या एकूण लोकसंख्येत ५९.५ टक्के पुरुष आणि ४०.५ टक्के स्त्रिया होत्या. शारिरीकदृष्ट्या विकलांग व्यक्तींची टक्केवारी विकलांगतेच्या प्रकारानुसार तक्ता क्र.३.४ मध्ये देण्यात आली आहे.

तक्ता क्र. ३.४

शारिरीकदृष्ट्या विकलांग व्यक्तींची विकलांगतेच्या प्रकारानुसार टक्केवारी

(जनगणना-२००१)

| विकलांगतेचा प्रकार | महाराष्ट्र | भारत |
|--------------------|------------|---------|
| अंधत्व | ३७.० | ४८.५ |
| मुके | ७.२ | ७.५ |
| बहिरे | ५.९ | ५.८ |
| अपंग | ३६.३ | २७.९ |
| मेंदू संबंधी | १३.६ | १०.३ |
| एकूण | १००.० | १००.० |
| | (१५.७) | (२१९.१) |

टिप : कंसातील आकडे एकूण विकलांग व्यक्तींची लोकसंख्या लाखात दर्शवितात.

वयोगटानुसार लोकसंख्या

३.२० १९९१ व २००१ च्या जनगणनांनुसार वयोगटनिहाय लोकसंख्येची वर्गीकृत टक्केवारी तक्ता क्र. ३.५ मध्ये देण्यात आली आहे.

तक्ता क्र.३.५

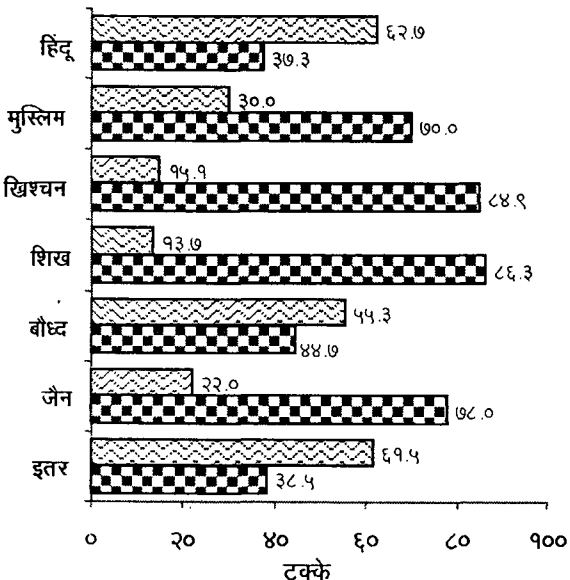
वयोगटानुसार लोकसंख्येची टक्केवारी व स्त्री-पुरुष प्रमाण

| वयोगट (वर्षांमध्ये) | लोकसंख्येची टक्केवारी | | स्त्री-पुरुष प्रमाण | |
|---------------------|-----------------------|----------|---------------------|------|
| | १९९१ | २००१ | १९९१ | २००१ |
| ०-६ | १७.१० | १४.११ | ९४५ | ९१३ |
| ७-१४ | १८.५० | १७.९९ | ९३३ | ९१८ |
| १५-४९ | ५०.३६ | ५२.७३ | ९२२ | ८९३ |
| ५०-५९ | ६.६५ | ६.३२ | ९१४ | ९२२ |
| ६० + | ६.९८ | ८.७३ | १०१८ | ११५० |
| वय न सांगितलेले | ०.४० | ०.१२ | ८३१ | ७९७ |
| एकूण | १००.० | १००.० | ९३४ | ९२२ |
| | (७८९.२१) | (९६८.७९) | | |

टिप : कंसातील आकडे एकूण लोकसंख्या लाखांत दर्शवितात.

निवासाच्या स्थितीनुसार धर्मनिहाय लोकसंख्येची टक्केवारी

■ नागरी □ ग्रामीण

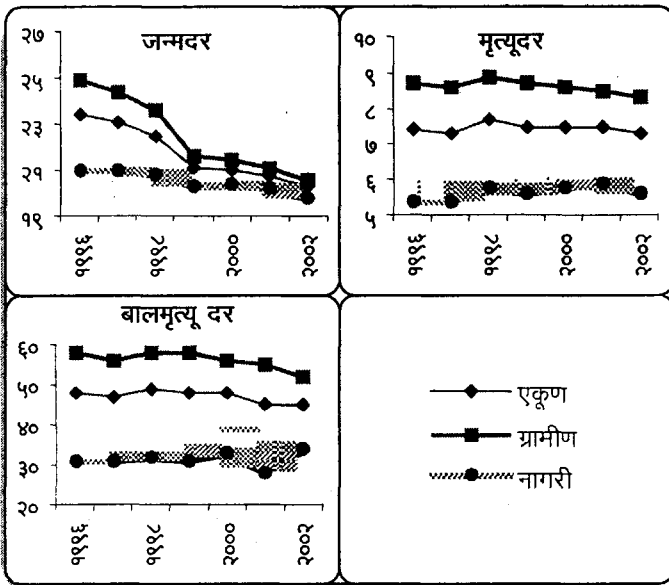


३.२१ जनगणनांवर आधारित माहिती असे दर्शविते की, ० ते ६ वर्षे आणि ७ ते १४ वर्षे वयोगटातील लोकसंख्येच्या प्रमाणाच्या टक्केवारीत १९९१-२००१ या कालावधीत लक्षणीय घट झाली आहे. त्याचवेळी १५ ते ४९ वर्षे या वयोगटातील म्हणजेच काम करणाऱ्या व्यक्तींच्या वयोगटातील लोकसंख्येच्या प्रमाणात जवळपास अडीच टक्के बिंदू अंकांनी वाढ झाल्याचे दिसून येते. कामकरी वर्ग असलेल्या लोकसंख्येत गेल्या दशकात वाढ झाल्याचे यावरून सूचित होते. वृद्ध व्यक्तींची लोकसंख्या (६० व त्यापेक्षा जास्त वय) १९९१ मधील ६.९८ टक्क्यांवरून वाढून २००१ मध्ये ८.७३ टक्के इतकी झाली.

३.२२ विशिष्ट वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाणांवरून असे दिसून येते की, ० ते ६ वर्षे वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाणात लक्षणीय घट झाली आहे. सदर वयोगटातील लोकसंख्या राज्याच्या लोकसंख्येची भविष्यकालीन रचनात्मक रुपरेषा स्पष्ट करित असल्याने स्त्री-पुरुष प्रमाणात होणारी घट ही चिंताजनक बाब आहे. तसेच लहान वयोगटातील लोकसंख्येच्या रचनेत महिलांच्या प्रती असलेला सापत्नभाव यामुळे स्पष्ट होतो. लिंग निवडीनुसार गर्भपात करणे व माता-मृत्यू ही त्याची कारणे असू शकतील.

जन्मदर, मृत्यूदर व बालमृत्यूदर

३.२३ १९७१-२००१ या कालावधीसाठी राज्यवार व भारताकरिता नमुना नोंदणी पाहणीवर आधारित जन्मदर, मृत्यूदर आणि बालमृत्यूदराबाबतची माहिती उपलब्ध आहे. २००२ मध्ये महाराष्ट्रातील जन्मदर, मृत्यूदर आणि बालमृत्यूदर अनुक्रमे २०.३, ७.३ व ४५.० होते. हे दर भारताच्या तत्सम दरापेक्षा कमी होते. भारताकरिता हे दर अनुक्रमे २५.०, ८.१ आणि ६३.० होते. महाराष्ट्र आणि भारतासाठीचे हे दर भाग-२ मधील तक्ता क्र.३ मध्ये दिले आहेत.



३.२३.१ जन्म-मृत्यू नमुना नोंदणी पाहणीवर आधारित राज्याच्या ग्रामीण व नागरी भागांतील जन्मदरांचे कल केंद्रीभूत होत असल्याचे दिसत आहे. त्यामध्ये ग्रामीण भागातील जन्मदरात तीव्र घट दिसून येते

लोकसंख्याविषयक नवीन धोरण

३.२४ विविध राष्ट्रीय कार्यक्रम राबविण्यामध्ये महाराष्ट्र राज्य नेहमीच आघाडीवर राहिले आहे. राज्य शासन कुटुंब कल्याणाच्या विविध योजना राबवीत असल्यामुळे त्याच्या परिणामी राज्यातील जन्मदर, मृत्यूदर व बालमृत्यूदर कमी होत आहेत. राज्य शासनाने कुटुंब नियोजनाचे कार्यक्रम राज्यात प्रभावीपणे राबविला आहे. असे असले तरीही राज्यातील लोकसंख्या १९६१ ते २००१ या कालावधीत अडीच पट झाली त्यामुळे राज्याची लोकसंख्या नियंत्रणात ठेवण्यासाठी राज्य शासनाने नवीन लोकसंख्या धोरण जाहीर केले आहे. नवीन लोकसंख्या धोरणामध्ये निश्चित करण्यात आलेली लक्ष्ये तक्ता क्र.३.६ मध्ये दिली आहेत.

तक्ता क्र. ३.६

नवीन लोकसंख्या धोरणानुसार महाराष्ट्राची निर्धारित लक्ष्ये

| निर्देशक | २००२ पर्यंत साध्य | २०१० पर्यंत लक्ष्य |
|----------------|-------------------|--------------------|
| जन्मदर * | २०.३ | १५ |
| मृत्यूदर * | ७.३ | ५ |
| एकूण जननदर # | २.५ | १.८ |
| बालमृत्यूदर@ | ४५ | १५ |
| अर्भकमृत्यूदर@ | ३३ | १० |

* जन्मदर व मृत्यूदर प्रति हजार लोकसंख्येमागे

@ बालमृत्यूदर व अर्भकमृत्यूदर प्रति हजार जिवंत जन्मांमागे

१५ ते ४९ वर्षे या जननक्षम वयोगटातील प्रति १००० स्त्रियांमागे एकूण जननदर व अर्भक मृत्यू दराचे आकडे वर्ष २००० शी संबंधित



लोकवित्त

राज्याची वित्तीय स्थिती

४.१ राज्याची भरभराट आणि आर्थिक स्थिरता टिकविण्यासाठी राज्याची वित्तीय व्यवस्था भक्कम असणे हा सर्वात महत्त्वाचा भाग आहे. सततच्या सर्व राज्यांमध्ये महाराष्ट्राने आर्थिक व्यवस्थापनेच्या बाबतीत अग्रेसर अग्रभागी असण्याचा मान पटकाविला आहे. तथापि, अलिकडील काळात, राज्य, तीव्र आर्थिक तणावाखाली आल्याचे दिसून येते. वाढत्या व्याज प्रदान रकमा, निवृत्ती वेतनाचे वाढते दायित्व आणि आसकीय खर्चातील मोठी वाढ हे घटक, राज्याची तीव्र राजकोषीय तूट दृष्टीपासून कारणीभूत ठरले आहेत. राज्याची महसुली तूट, राजकोषीय तूट आणि एकूण ऋण या बाबी २००३-०४ च्या अखेरीस मूळ राज्य उत्पन्नाच्या अनुक्रमे २.७ टक्के, ५.५ टक्के आणि २५.० टक्के इतक्या झाल्या आहेत.

४.२ राज्याची महसुली स्थिती आणि महसुली खर्च यांच्यातील द्विधी तुलना करता, महसुली खर्चातील सरासरी वाढ ही १९९९-२०००-२००३-०४ या कालावधीत ११.८ टक्के होती, त्या तुलनेत, महसुली खर्चातील वाढ मात्र, प्रतिवर्षी सरासरी १०.१ टक्के, अशी कमी झाली. परिणामी, २००३-०४ ची महसुली तूट १९९९-२००० मधील तुटीच्या तुलनेत २.२ पट झाली. महसुली जमेकडे बाराकाईने लक्ष टाकले असता अलिकडून मिळणाऱ्या महसुली अनुदानात बरीच घट झाल्याचे दिसून येते. केंद्रीय अनुदानातील वार्षिक वाढ १९९९-२००० मधील ५.८ टक्केपेक्षा खालच्या २००२-०३ मध्ये ४.८ टक्केपर्यंत कमी झाली. याच तुलनेत केंद्रीय करांतून राज्याला मिळणाऱ्या हिश्यात सुध्दा घट झाली. महाराष्ट्राच्या एकूण महसुली जमेत, राज्याचा स्वतःचा कर सूलाचा हिस्सा २००१ ते २००३ या कालावधीत जवळपास ७० टक्के कमी राहिला आहे.

४.३ राज्याचा स्वतःचा कर महसूल हा, उद्योग व सेवा क्षेत्रातील उदारावर परिणाम करणारा असून औद्योगिक घसरण हा एक मोठा धोखा आहे. त्यामुळे राज्याचा स्वतःचा कर महसूल तसेच केंद्रीय आरण्यातील राज्याचा हिस्सा हा कमी झालेला आहे. उद्योगांची प्रगती ही उद्योग करणाऱ्या प्राप्तीवर सुध्दा बरीचशी अवलंबून असते. त्यासाठी औद्योगिक वाढ टिकविणे हाच एक प्रमुख घटक, राज्याच्या आर्थिक स्थिरतेसाठी चांगला परिणाम करणारा दिसून येतो.

४.४ महसुली तूट सतत वाढत राहिल्याने, कर्जाऊ घेतलेल्या

रकमा, महसुली खर्चासाठी वापरल्या जातात. कर्जाऊ रकमांपैकी बरीच मोठी रक्कम, अशा खर्चासाठी वापरली जाते की त्यापासून कोणतीही प्राप्ती होत नाही. परिणामी, राज्याच्या एकूण कर्जात सातत्याने वाढ होत असून, ते २००४-०५ अखेरीस १,१०,२११ कोटी रुपये होण्याचे अपेक्षित आहे. अपेक्षित कर्जाचा भार कमी करण्यासाठी, महाराष्ट्र शासनाने केंद्राच्या कर्ज निवारण योजनेच्या माध्यमातून, जुने महागडे कर्ज कमी खर्चिक कर्जांमध्ये रूपांतरित करून मिळण्याबाबत विनंती केली आहे.

४.५ कोणतीही संस्थात्मक संरचना अथवा संविधानिक पाठबळ याशिवाय आर्थिक सुधारणांसाठी केलेले प्रयत्न यशस्वी होणे शक्य नाही. शासनाने विधीमंडळात अनुसरलेले आर्थिक दायित्व आणि त्या अनुषंगाने आर्थिक धोरणात केलेले नियम यामुळे तूट कमी करणे, कर्ज कमी करणे आणि मोठी आर्थिक शिस्त लावून घेणे शक्य आहे. तथापि, आर्थिक धोरणाच्या कायदेशीर चौकटीद्वारे राजकोषीय शिस्त, आर्थिक व्यवस्थापन आणि संस्थात्मक संरचना यासारख्या महत्त्वाच्या बाबींना पाठबळ देण्याची गरज आहे. यासाठी राज्यशासनाने विधीमंडळात सादर केलेला 'राजकोषीय उत्तरदायित्व कायदा' मंजूर करून घेणे आवश्यक आहे.

वित्तीय स्थिती २००४-०५

४.६ राज्याचा २००४-०५ चा अर्थसंकल्प ९,७५१ कोटी रुपयांची महसुली तूट आणि ८,६०७ कोटी रुपयांचे भांडवली आधिक्य दाखवितो. अशाप्रकारे २००४-०५ ची अर्थसंकल्पीय स्थिती १,१४४ कोटी रुपयांची अर्थसंकल्पीय तूट दर्शविते. वर्षाच्या सुरुवातीस असलेली ९५० कोटी रुपयांची तूट आणि अर्थसंकल्पात तरतूद न केलेला ५,२०९ कोटी रुपयांचा नियतव्यय लक्षात घेता २००४-०५ ची एकूण तूट ७,३०३ कोटी रुपये इतकी दिसून येते. याबाबतचा तपशील तक्ता क्र. ४.१ मध्ये दिला आहे.

दृष्टिक्षेप

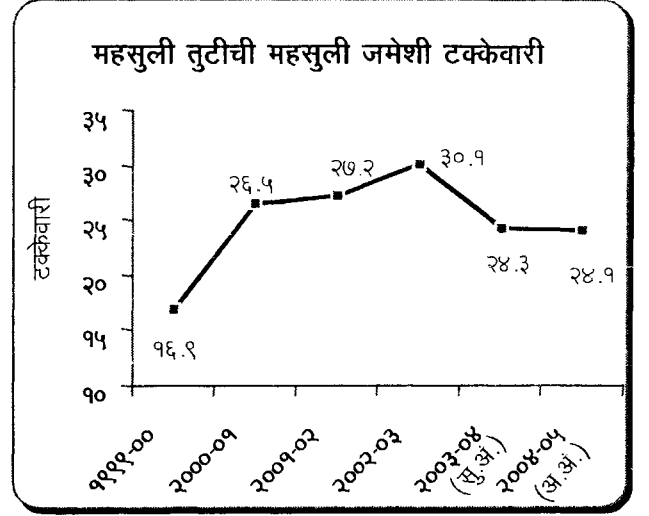
४.७ गेल्या काही वर्षांत, प्रत्यक्षातील महसुली तूट जरी वाढता कल दर्शवित असली, तरी स्थूल राज्य उत्पन्नाशी असलेली तिची टक्केवारी अलिकडील काही वर्षांमध्ये उतरता कल दर्शवित आहे. १९९३-९४ ची महसुली तूट १२२ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ०.१ टक्के) होती, ती २०००-०१ मध्ये ७,८३४ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ३.३ टक्के) इतकी वाढली. त्यानंतर २००१-०२ आणि २००२-०३ मध्ये ही तूट स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या अनुक्रमे ३.१ टक्के आणि

तक्ता क्रमांक ४.१
सन २००४-०५ मधील एकूण वित्तीय स्थिती
(रुपये कोटीत)

| बाब | जमा | खर्च | आधिक्य(+)/ तूट(-) |
|--|-------------|-------------|----------------------|
| अ. महसुली लेखा | ४०,३९३.८० | ५०,१४४.८८ | (-)९,७५१.०८ |
| ब. भांडवली लेखा (१ ते ८) | ७६,९८१.४५ | ६८,३७४.५६ | ८,६०६.८९ |
| (१) महसुली लेख्याबाहेरील भांडवली खर्च | ०.०० | ३,६९९.८८ | (-)३,६९९.८८ |
| (२) राज्य शासनाचे देशांतर्गत ऋण | २२,७७४.९८ | १४,१३९.०२ | ८,६३५.९६ |
| (३) केंद्र शासनाकडून कर्ज व आगाऊ रकमा | १,४०५.२७ | १,५५८.७२ | (-)१५३.४५ |
| (४) राज्य शासनाने दिलेली कर्ज व आगाऊ रकमा | ४२२.५४ | १,७२९.८७ | (-)१,३०७.३३ |
| (५) आंतरराज्यीय तडजोड | ०.०० | ०.०० | ०.०० |
| (६) आकस्मिकता निधीत केलेली विनियोजने | ४५०.०० | ४५०.०० | ०.०० |
| (७) आकस्मिकता निधी | ०.०० | ०.०० | ०.०० |
| (८) लोक लेखा | ५१,९२८.६६ | ४६,७९७.०७ | ५,१३१.५९ |
| क. वित्तीय स्थिती (अ+ब) | १,१७,३७५.२५ | १,१८,५१९.४४ | (-)१,१४४.१९ |
| (१) आरंभीची शिल्लक/तूट | | | (-)९४९.९६ |
| (२) अर्थसंकल्पातील असमाविष्ट नियतव्य | | | (-)५,२०९.२० |
| (३) २००४-०५ ची सर्वसाधारण वित्तीय स्थिती | | | (-)७,३०३.३५ |

३.२ टक्के इतकी खाली आली. महसुली तूट म्हणजे चालू महसुली खर्चाचे महसुली जमेशी असलेले आधिक्य होय. अर्थसंकल्पीय अंदाज २००४-०५ नुसार ही महसुली तूट, स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या २.६ टक्के (९,७५१ कोटी रुपये) इतकी अंदाजित केली आहे. अलिकडील काही वर्षांमध्ये महसुली तूट मोठ्या प्रमाणात वाढत असलेली दिसून येते. तथापि, तिची स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी २००२-०३ पासून उतरता कल दर्शावित आहे.

४.८ राजकोषीय तूटीची व्याख्या म्हणजे शासनाने आपल्या मिळकतीपेक्षा केलेला अतिरिक्त जादा खर्च होय. थोडक्यात, गणिती पध्दतीनुसार, शासनाच्या एकूण खर्चातून, एकूण महसुली जमा, कर्जाची वसुली आणि इतर जमा यांची बेरीज वजा केली असता येणारा फरक म्हणजे राजकोषीय तूट होय. सुधारित अंदाज २००३-०४ नुसार राजकोषीय तूट स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ५.५ टक्के (१८,४६० कोटी रुपये) होती. राज्याची राजकोषीय तूट, स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या टक्केवारीत सातत्याने वाढत असल्याचे दिसून येते. १९९३-९४ या वर्षी ती २.० टक्के (२,२६५ कोटी रुपये) होती तर त्या तुलनेत २००२-०३ मध्ये ती ५.० टक्के अशी वाढली. अर्थसंकल्पीय अंदाज २००४-०५ नुसार



राजकोषीय तूट स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ४.० टक्क्यांपर्यंत (१५,२५८ कोटी रुपये) कमी होईल असे अपेक्षित आहे. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.२ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ४.२
राज्य अर्थसंकल्पातील तूटीचे कल

| वर्ष | महसुली तूट | प्राथमिक तूट | राजकोषीय तूट |
|-----------------|----------------|-----------------|-----------------|
| १९९३-९४ | १२२ (०.१) | ७५५ (०.७) | २,२६५ (२.०) |
| २०००-०१ | ७,८३४ (३.३) | ३,३५१ (१.४) | ८,५७६ (३.६) |
| २००१-०२ | ८,१८९ (३.१) | ४,१६२ (१.६) | १०,५९२ (४.०) |
| २००२-०३ | ९,३७१ (३.२) | ७,५९५ (२.६) | १४,८८१ (५.०) |
| २००३-०४(सु.अं.) | ९,०३७ (२.७) | ९,७५८ (२.९) | १८,४६० (५.५) |
| २००४-०५(अ.अं.) | ९,७५१ (२.६) | ४,९३८ (१.३) | १५,२५८ (४.०) |

सु.अं. - सुधारित अंदाज अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज
कसातील आकडे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी दर्शवितात

४.९ राजकोषीय तूटीतून व्याजप्रदान आणि ऋणसेवा यावरील खर्च वजा जाता येणारी तूट म्हणजेच प्राथमिक तूट होय. ऋणसेवांवरील तरतूदी, ऋण कमी करणे किंवा ऋण-प्रतिबंधन यासाठीच्या विनियोजनासाठी वापरल्या जातात. १९९३-९४ पासूनची प्राथमिक तूट आणि तिची स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी या दोन्ही बाबी वाढत असल्याचे दिसून येते. ही तूट २००४-०५ च्या अर्थसंकल्पीय अंदाजानुसार ४,९३८ कोटी रुपयांपर्यंत (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या १.३ टक्के) कमी होण्याची अपेक्षा आहे.

स्थूल राजकोषीय तूट

४.१० स्थूल राजकोषीय तूटीचे तीन भाग आहेत (१) महसुली तूट (२) महसुली लेख्याबाहेरील भांडवली खर्च आणि (३) राज्य शासनाने दिलेली निव्वळ कर्जे व आगाऊ रकमा. गेल्या काही वर्षांपासून स्थूल राजकोषीय तूट ही सातत्याने वाढत आहे. तथापि, २००४-०५ मध्ये ती १४.७५८ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ३.९ टक्के) अशी अर्थसंकल्पित केली आहे. स्थूल राजकोषीय तूटीतील वाढते प्रमाण हे मूलतः वाढत्या महसुली तूटीमुळेच दिसून येते. अर्थसंकल्पीय अंदाज २००४-०५ नुसार स्थूल राजकोषीय तूटीतील महसुली तूटीचा हिस्सा हा ६६.१ टक्के इतका दिसून येतो. स्थूल राजकोषीय तूटीची प्रत्यक्षातील आकडेवारी ही जरी मोठी असली तरी स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या टक्केवारीत, राज्यनिहाय तुलनेत महाराष्ट्राची, इतर अनेक राज्यांपेक्षा चांगली स्थिती असल्याचे दिसून येते. याबाबतचा तपशील क्र.४.३ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ४.३ स्थूल राजकोषीय तूट

| बाब | (रुपये कोटीत) | | | |
|---|------------------------|------------------------|---------------------|--------------------|
| | २००१-०२ (प्रत्यक्ष) | २००२-०३ (प्रत्यक्ष) | २००३-०४ (सु.अं.) | २००४-०५ (अ.अं.) |
| १ महसुली तूट | ८,१८९ | ९,३७१ | ९,०३७ | ९,७५१ |
| २ महसुली लेख्या- बाहेरील भांडवली खर्च | २,९४८ | ३,६८४ | ९,६८७ | ३,७०० |
| ३ राज्य शासनाने दिलेली निव्वळ कर्जे व आगाऊ रकमा | (-)२३९ | १,२३५ | ७५३ | १,३०७ |
| एकूण (१+२+३) | १०,८९८ | १४,२९० | १९,४७७ | १४,७५८ |
| स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी | (४.१) | (४.८) | (५.९) | (३.९) |

सु.अं. - सुधारित अंदाज अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज

राज्य निहाय, २००३-०४ ची स्थूल राजकोषीय तूट

| राज्य | रुपये कोटीत | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
|--------------|-------------|-------------------------------------|
| उत्तरप्रदेश | १९,८०३ | ९.० |
| ओरीसा | ४,२१९ | ८.२ |
| राजस्थान | ७,४१५ | ७.६ |
| पश्चिम बंगाल | १२,३८४ | ६.९ |
| बिहार | ४,१०७ | ६.९ |
| पंजाब | ५,१०८ | ६.७ |
| गुजरात | ९,४५७ | ५.९ |
| महाराष्ट्र | १९,४७७ | ५.९ |
| कर्नाटक | ६,०३३ | ४.९ |
| आंध्र प्रदेश | ७,३३८ | ४.३ |
| मध्यप्रदेश | ४,००० | ४.३ |
| तामिळनाडू | ६,५१५ | ३.८ |
| केरळ | ३,३०७ | ३.३ |

कर विषयक धोरण

४.११ राज्य शासनाचे गेल्या पांच वर्षांपासूनचे कर प्रस्ताव हे एका समान तात्विक भूमिकेतून मांडलेले आहेत. करांचे दर जर सुसह्य असतील तर उत्पादन खर्च कमी होऊन राज्यातील उद्योगधंधांची स्पर्धात्मकता वाढते आणि किंमती कमी होऊन वस्तूंचा खप देखील वाढतो. यामुळे रोजगार वाढून महसुलात वाढ होते. राज्य शासनाने मांडलेले कर प्रस्ताव हे वरील भूमिकेशी सुसंगत असेच आहेत. यामुळे, राज्याच्या आर्थिक परिस्थितीत सुधारणा होऊन, त्यामुळे शासनाच्या महसूल वाढीला चालना मिळते.

महसुली जमा

४.१२ एकूण महसुली जमेचे दोन भागात वर्गीकरण करण्यात येते. (१) कर महसूल आणि (२) करांव्यतिरिक्त महसूल. २००३-०४ च्या सुधारित अंदाजातील एकूण महसुली जमा ही गतवर्षीपेक्षा १९.५ टक्क्यांनी वाढून ३७,१५९ कोटी रुपये इतकी झाली असून ती २००४-०५ मध्ये ८.७ टक्क्यांनी वाढून ४०,३९४ कोटी रुपये इतकी अर्थसंकल्पित करण्यात आली आहे. तिची स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी २००३-०४ मध्ये ११.२ अशी होती. एकूण महसुली जमेतील, कर महसुलाची टक्केवारी २००३-०४ या वर्षी ७८.३ टक्के इतकी होती, तर ती २००४-०५ च्या अर्थसंकल्पीय वर्षात ७९.५ टक्के इतकी अपेक्षित आहे. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.४ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्र. ४.४

महाराष्ट्र राज्याची महसुली जमा

| वर्ष | (रुपये कोटीत) | | | |
|------------------------|---------------|------------------------|-----------------------|--|
| | कर महसूल | कराव्यतिरिक्त महसूल | एकूण महसुली जमा | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
| १९९३-९४ | ९,२३८ | ३,७४९ | १२,९८७ | ११.५ |
| २०००-०१ | २२,५०८ | ७,०५९ | २९,५६७ | १२.४ |
| २००१-०२ | २३,७५६ | ६,३३७ | ३०,०९३ | ११.३ |
| २००२-०३ | २५,०७९ | ६,०२४ | ३१,१०३ | १०.५ |
| २००३-०४(सु.अं.) | २९,१११ | ८,०४८ | ३७,१५९ | ११.२ |
| २००४-०५(अ.अं.) | ३२,१०६ | ८,२८८ | ४०,३९४ | १०.७ |
| सु.अं. - सुधारित अंदाज | | | | अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज |

कर महसूल

४.१३ राज्याच्या एकूण कर महसुलाचे दोन भाग आहेत. (१) राज्याचा स्वतःचा कर महसूल आणि (२) केंद्रीय करांतून राज्याला मिळणारा हिस्सा. २००२-०३ चा एकूण कर महसूल २५,०७९ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ८.५ टक्के) होता, तो २००३-०४ मध्ये २९,१११ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ८.७ टक्के) इतका वाढला. पुढे, २००४-०५ च्या अर्थसंकल्पीय वर्षात तो ३२,१०६ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या ८.५ टक्के) होईल अशी अपेक्षा आहे. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.५ मध्ये दिला आहे.

तक्का क्र. ४.५
महाराष्ट्र राज्याचा कर महसूल

(रुपये कोटीत)

| वर्ष | राज्याचा स्वतःचा कर महसूल | केंद्रीय करातील हिस्सा | एकूण कर महसूल | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
|-----------------|---------------------------|------------------------|---------------|----------------------------------|
| १९९३-९४ | ७,६९६ | १,५४२ | ९,२३८ | ८.२ |
| २०००-०१ | १९,७२७ | २,७८१ | २२,५०८ | ९.४ |
| २००१-०२ | २१,३०४ | २,४५२ | २३,७५६ | ८.९ |
| २००२-०३ | २२,८१४ | २,२६५ | २५,०७९ | ८.५ |
| २००३-०४(सु.अं.) | २६,०७४ | ३,०३७ | २९,१११ | ८.७ |
| २००४-०५(अ.अं.) | २८,४६२ | ३,६४४ | ३२,१०६ | ८.५ |

सु.अं. - सुधारित अंदाज अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज

अलिकडील महसुली जमा

४.१४ एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत उपलब्ध झालेल्या प्रत्यक्ष कर महसुलाच्या माहितीच्या आधारे असे दिसून आले आहे की, आधीच्या वर्षाच्या याच कालावधीतील प्राप्तीपेक्षा, सध्याचा विक्रीकर महसूल २१.८ टक्क्यांनी वाढलेला आहे. तसेच मुद्रांक व नोंदणी शुल्क २३.५ टक्के, वाहनावरील कर १२.७ टक्के, माल व उतारुवरील कर १६.३ टक्के, विक्रेय वस्तू व सेवा यावरील इतर कर व शुल्क यामध्ये १४.१ टक्के आणि जमीन महसुलामध्ये १०.३ टक्क्यांनी वाढ झालेली आहे. त्यामुळे राज्य, करमहसुलाचे अर्थसंकल्पातील उद्दीष्ट पार करू शकेल असे अपेक्षित आहे. याबाबतचा तपशील तक्का क्र.४.६ मध्ये दिला आहे.

तक्का क्र. ४.६

एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ मधील प्रत्यक्ष कर महसुली जमा
(रुपये कोटीत)

| बाब | एप्रिल ते डिसेंबर, २००३ | एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ | गतवर्षाच्या तुलनेत टक्केवारीतील वाढ |
|---|-------------------------|-------------------------|-------------------------------------|
| १) विक्रीकर | १०,८८८.९७ | १३,२६७.२७ | २१.८ |
| २) मुद्रांक व नोंदणी शुल्क | २,३९७.०१ | २,९५९.९४ | २३.५ |
| ३) वाहनावरील कर | ७५०.४३ | ८४५.७४ | १२.७ |
| ४) माल व उतारुवरील कर | ८९.५७ | १०४.२१ | १६.३ |
| ५) जमीन महसूल | १६२.१९ | १७८.९६ | १०.३ |
| ६) विक्रेय वस्तू व सेवा यावरील इतर कर व शुल्क | ३६५.४२ | ४१६.८० | १४.१ |

राज्याचा स्वतःचा कर महसूल

४.१५ राज्याच्या एकूण कर महसुलात 'राज्याचा स्वतःचा कर महसूल' महत्वाची भूमिका बजावतो. एकूण कर महसुलात त्याचा वाटा २००३-०४ व २००४-०५ यावर्षामध्ये अनुक्रमे ८९.६ टक्के आणि ८८.७ टक्के इतका आहे. महाराष्ट्र राज्याला सर्वात जास्त महसूल विक्रीकरापासून मिळतो, तर त्या खालोखाल मुद्रांक व नोंदणी शुल्क आणि राज्य उत्पादन शुल्क यापासून मिळतो. राज्याचा, स्वतःचा कर

महसुलातील विक्रीकराचा वाटा २००३-०४ आणि २००४-०५ या वर्षामध्ये अनुक्रमे ५९.४ टक्के आणि ५९.३ टक्के असा आहे. राज्यातील करविषयक प्रभाव (स्वतःच्या करमहसुलाचे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी असलेले शकडा प्रमाण) हा ७.८ टक्के इतका आहे. देशातील प्रमुख राज्यांमध्ये, कर्नाटकातील करविषयक प्रभाव हा सर्वात जास्त म्हणजे १०.२ टक्के असा आहे. तर आंध्रप्रदेश, तामिळनाडू, केरळ आणि पंजाब या राज्यांतील करविषयक प्रभाव हा महाराष्ट्रापेक्षा जास्त आहे. याबाबतचा तपशील तक्का क्र. ४.७ मध्ये दिला आहे.

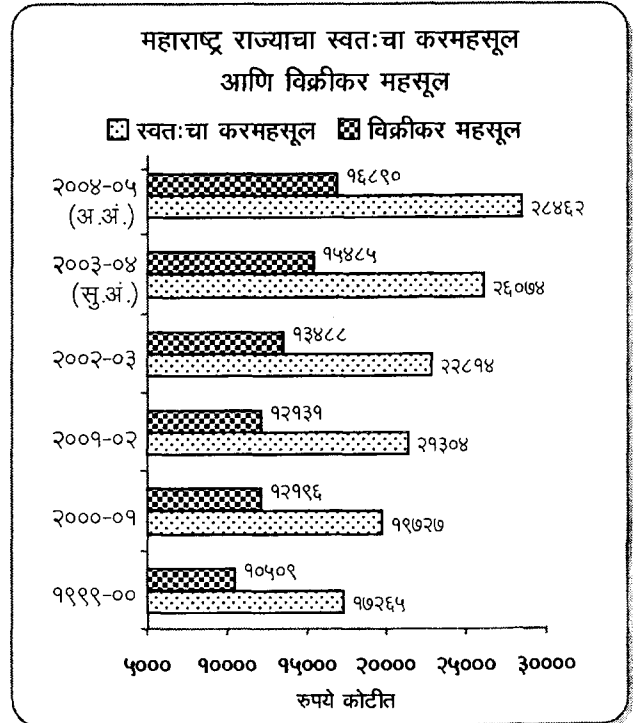
तक्का क्र. ४.७

महाराष्ट्र राज्याचा स्वतःचा कर महसूल

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००२-०३ (प्रत्यक्ष) | २००३-०४ (सु.अं.) | २००४-०५ (अ.अं.) |
|---|---------------------|------------------|-----------------|
| १) विक्रीकर | १३,४८८ | १५,४८५ | १६,८९० |
| २) मुद्रांक व नोंदणी शुल्क | २,८२३ | ३,१०० | ३,३७५ |
| ३) राज्य उत्पादन शुल्क | १,९३९ | २,३०० | २,६०० |
| ४) विजेवरील कर व शुल्क | १,१४९ | १,२८० | १,२९० |
| ५) उत्पन्न व खर्चावरील इतर कर | १,०३२ | १,०२० | १,१०० |
| ६) वाहनावरील कर | ९४१ | १,०२५ | १,१५५ |
| ७) विक्रेय वस्तू व सेवा यावरील इतर कर व शुल्क | ८११ | ८६१ | ९६३ |
| ८) माल व उतारुवरील कर | २४५ | ६६५ | ७१० |
| ९) जमीन महसूल | ३८६ | ३३८ | ३७९ |
| १०) कृषि उत्पन्नावरील कर | - | - | - |
| एकूण (१ ते १०) | २२,८१४ | २६,०७४ | २८,४६२ |

सु.अं. - सुधारित अंदाज अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज



राज्यांचा २००३-०४ चा स्वतःचा कर महसूल
(रुपये कोटीत)

| राज्य | राज्याचा स्वतःचा कर महसूल | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
|--------------|---------------------------|----------------------------------|
| कर्नाटक | १२,५८८ | १०.२ |
| आंध्र प्रदेश | १६,०६२ | ९.४ |
| तामिळनाडू | १५,८३३ | ९.३ |
| केरळ | ८,६८४ | ८.७ |
| पंजाब | ६,३३६ | ८.३ |
| महाराष्ट्र | २६,०७४ | ७.८ |
| मध्यप्रदेश | ७,०२७ | ७.६ |
| राजस्थान | ७,२५८ | ७.५ |
| उत्तर प्रदेश | १४,५३९ | ६.६ |
| गुजरात | १०,१०० | ६.३ |
| ओरिसा | ३,०२८ | ५.९ |
| विहार | ३,४०९ | ५.७ |
| पश्चिम बंगाल | ८,७०७ | ४.९ |

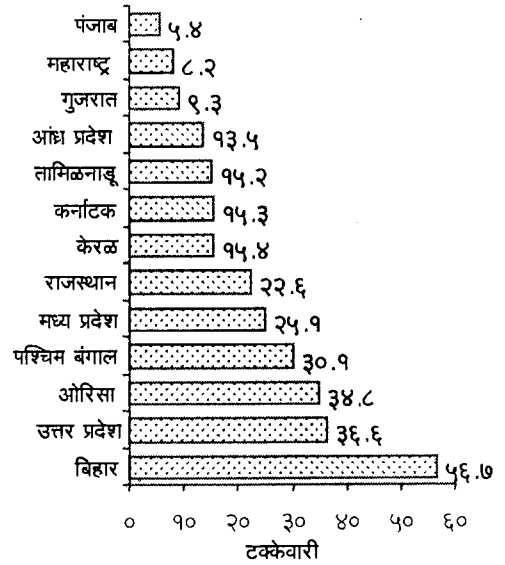
केंद्रीय करातील राज्याला मिळणारा हिस्सा
वर्ष - २००३-०४

| राज्य | केंद्रीय करातील हिस्सा (रुपये काटीत) | महसुली जमेशी टक्केवारी |
|--------------|--------------------------------------|------------------------|
| बिहार | ७,३९२ | ५६.७ |
| उत्तर प्रदेश | १२,२०७ | ३६.६ |
| ओरिसा | ३,४३१ | ३४.८ |
| पश्चिम बंगाल | ५,१७७ | ३०.१ |
| मध्य प्रदेश | ३,९७६ | २५.१ |
| राजस्थान | ३,४९१ | २२.६ |
| केरळ | १,९५० | १५.४ |
| कर्नाटक | ३,०४५ | १५.३ |
| तामिळनाडू | ३,४३५ | १५.२ |
| आंध्र प्रदेश | ३,९४६ | १३.५ |
| गुजरात | १,७४० | ९.३ |
| महाराष्ट्र | ३,०३७ | ८.९ |
| पंजाब | ७२८ | ५.४ |

राज्यांचा २००३-०४ चा विक्रीकर महसूल

| राज्य | विक्रीकर महसूल (रुपये कोटीत) | महसुली जमेशी टक्केवारी |
|--------------|------------------------------|------------------------|
| केरळ | ६,४१८ | ५०.५ |
| तामिळनाडू | १०,४७६ | ४६.२ |
| महाराष्ट्र | १५,४८५ | ४१.७ |
| गुजरात | ६,५०० | ३४.७ |
| कर्नाटक | ६,७०१ | ३३.८ |
| आंध्र प्रदेश | ९,७४१ | ३३.३ |
| पश्चिम बंगाल | ४,९८३ | २९.० |
| ओरिसा | १,७६७ | २९.० |
| पंजाब | ३,५७५ | २६.४ |
| राजस्थान | ३,९७० | २५.७ |
| उत्तर प्रदेश | ८,१३८ | २४.४ |
| मध्यप्रदेश | ३,३४० | २१.१ |
| विहार | १,९९५ | १५.३ |

केंद्रीय करातील हिस्स्याची
महसुली जमेशी टक्केवारी - २००३-०४



केंद्रीय करातील महाराष्ट्राचा हिस्सा

४.१६ महाराष्ट्र राज्याला केंद्रीय करातून मिळणाऱ्या हिस्श्याचे प्रमाण, गेल्या अनेक वर्षांपासून, सातत्याने घटत आहे. दुसऱ्या वित्त आयोगाच्या कालावधीत (१९५७ ते १९६२) राज्याला मिळणारा केंद्रीय करातील हिस्सा १५.९७ टक्के इतका होता, तो दहाव्या वित्त आयोगाच्या कालावधीत (१९९५-२०००) ६.१२६ टक्के इतका खाली घसरला. आकराव्या वित्त आयोगाच्या कालावधीत, केंद्रीय करातून राज्याला मिळणारा हिस्सा, हा पूर्वीच्या ६.१२६ टक्क्यांवरून ४.६३२ टक्के इतका खाली आला. यामुळे महाराष्ट्र राज्याला २००० ते २००५ या कालावधीत एकूण ५,६०० कोटी रुपयांचा तोटा सहन करावा लागणार आहे. केवळ एकट्या मुंबईतून, केंद्राला, दरवर्षी निरनिराळ्या केंद्रीय कराच्या माध्यमातून ४०,००० कोटी रुपये महसूल मिळतो आणि त्यातील फक्त

एक टक्का इतकी रक्कम राज्याला परत मिळते. त्यामुळे केंद्रीय करातून राज्याला आणखी जादा सहाय्य मिळणे आवश्यक असल्याचे दिसून येते. बाराव्या वित्त आयोगाने, डिसेंबर, २००४ मध्ये, आपला अहवाल केंद्राला सादर केला असून त्यातील जवजवळ सर्व शिफारशी शासनाने स्विकारल्या आहेत. त्यामुळे सर्व राज्यांना, केंद्रीय करातून ३०.५ टक्के, इतका हिस्सा मिळेल जो आधिच्या वित्त आयोगाच्या एक टक्का जास्त आहे. बाराव्या वित्त आयोगाच्या अहवालानुसार, महाराष्ट्र राज्यासाठी, केंद्रीय करातील हिस्सा ४.९९७ टक्के इतका निश्चित केला असून त्यानुसार राज्याला ३०,६६३.१९ कोटी रुपये मिळतील आणि याशिवाय सहाय्यक अनुदानापोटी सुद्धा ५,५३१.०६ कोटी रुपये मिळतील.

केंद्राकडून मिळणारे वित्तीय सहाय्य

४.१७ केंद्र शासनाकडून, महाराष्ट्र शासनाला मिळणाऱ्या वित्तीय सहाय्यात सतत चढउतार होत असून २००१-०२, २००२-०३ व २००३-०४ या वर्षांमध्ये अनुक्रमे १०,४७० कोटी रुपये, ४,७३३ कोटी रुपये आणि ८,७७१ कोटी रुपये, केंद्रीय वित्त सहाय्य राज्यास मिळाले. अर्थसंकल्पीय वर्ष २००४-०५ मध्ये ही रक्कम ८,५९७ कोटी रुपये अशी कमी प्राप्त होण्याची अपेक्षा आहे. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.८ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्र. ४.८

केंद्राकडून मिळणारे वित्तीय सहाय्य

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००१-०२ (प्रत्यक्ष) | २००२-०३ (प्रत्यक्ष) | २००३-०४ (सु.अं) | २००४-०५ (अ.अं) |
|---------------------------|------------------------|----------------------------|--------------------|-------------------|
| १) केंद्रीय करातील हिस्सा | २,४५२ | २,२६५ | ३,०३७ | ३,६४४ |
| २) केंद्रीय अनुदाने | १,६८१ | १,५०६ | ४,२७३ | ३,५४८ |
| ३) केंद्र शासनाकडून कर्जे | ६,३३७ | ९६२ | १,४६१ | १,४०५ |
| एकूण (१ ते ३) | १०,४७० | ४,७३३ | ८,७७१ | ८,५९७ |
| सु.अं. - सुधारित अंदाज | | अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज | | |

करांव्यतिरिक्त महसूल

४.१८ करांव्यतिरिक्त महसूलाच्या एकूण चार बाबी आहेत. (१) व्याजाच्या जमा रकमा, (२) नफा व लाभांश, (३) केंद्रीय अनुदाने आणि (४) करांव्यतिरिक्त मिळणारा इतर महसूल उदा. शुल्क, दंड आणि शिक्षा याद्वारे मिळणारी प्राप्ती इत्यादी. करांव्यतिरिक्त मिळणारा महसूल हा २००२-०३, २००३-०४ आणि २००४-०५ या वर्षांकरिता अनुक्रमे ६,०२४ कोटी रुपये, ८,०४८ कोटी रुपये आणि ८,२८८ कोटी रुपये इतका होता. एकूण करांव्यतिरिक्त महसूलामध्ये सर्वात मोठा वाटा हा करांव्यतिरिक्त इतर महसूलाचा म्हणजेच शुल्क, दंड आणि शिक्षा या पासूनचा असून, एकूण करांव्यतिरिक्त महसूलामध्ये, त्याचा वाटा २००३-०४ व २००४-०५ या वर्षांकरिता अनुक्रमे ३९.५ टक्के आणि ५०.६ टक्के इतका आहे. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.९ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्र. ४.९

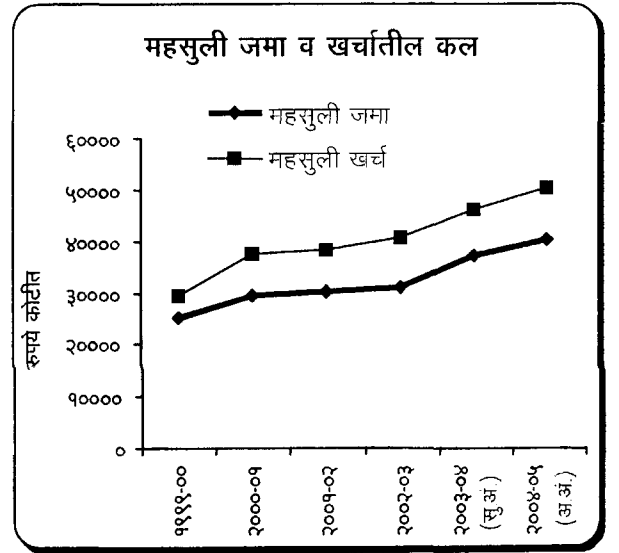
महाराष्ट्र राज्याचा करांव्यतिरिक्त महसूल

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००२-०३ (प्रत्यक्ष) | २००३-०४ (सु.अं) | २००४-०५ (अ.अं) |
|-------------------------------|------------------------|----------------------------|-------------------|
| (१) व्याजाच्या जमा रकमा | १,७७७ | ५९५ | ५४५ |
| (२) लाभांश व नफा | १ | २ | २ |
| (३) केंद्रीय अनुदाने | १,५०६ | ४,२७३ | ३,५४८ |
| (४) करांव्यतिरिक्त इतर महसूल | २,७४० | ३,१७८ | ४,१९३ |
| एकूण (१ ते ४) | ६,०२४ | ८,०४८ | ८,२८८ |
| महसूली जमेशी टक्केवारी | १९.४ | २१.७ | २०.५ |
| सु.अं. - सुधारित अंदाज | | अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज | |

महसूली खर्च

४.१९ महसूली खर्चाचे एकूण दोन भाग आहेत. (१) विकास खर्च आणि (२) विकासेतर खर्च. विकास खर्चाची वर्गवारी आणखी तीन बाबींमध्ये केली जाते. (अ) सामाजिक सेवांवरील खर्च; (ब) आर्थिक सेवांवरील खर्च आणि (क) स्थानिक संस्था व पंचायत राज्य संस्था यांना देण्यात येणारी सहाय्यक अनुदाने व अंशदाने इत्यादीवरील खर्च. विकास खर्चातील मोठा वाटा हा सामाजिक सेवांवरील खर्चाचा असून, तो खर्च २००२-०३, २००३-०४ व २००४-०५ या तीन वर्षांमध्ये ६३ ते ६८ टक्केचा दरम्यान होता. विकासेतर खर्चाची वर्गवारी (अ) सर्वसाधारण सेवा आणि (ब) व्याज प्रदान व ऋण सेवा अशा दोन बाबींमध्ये केली



तक्ता क्र. ४.१०

महाराष्ट्र राज्याचा महसूली खर्च

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००२-०३ (प्रत्यक्ष) | २००३-०४ (सु.अं) | २००४-०५ (अ.अं) |
|--|------------------------|----------------------------|-------------------|
| (१) विकास खर्च (अ+ब+क) | २२,५२८ | २५,३१५ | २३,९३७ |
| अ) सामाजिक सेवा | १४,२१८ | १६,८०२ | १६,३७६ |
| ब) आर्थिक सेवा | ७,६३६ | ७,४१९ | ६,९०५ |
| क) स्थानिक/पंचायत राज संस्थांना अनुदाने | ६७४ | १,०९४ | ६५६ |
| (२) विकासेतर खर्च (अ+ब) | १७,९४६ | २०,८८१ | २६,२०८ |
| अ) सर्वसाधारण सेवा | १०,६६० | १२,१७९ | १५,८८८ |
| ब) व्याज प्रदान व ऋणसेवा | ७,२८६ | ८,७०२ | १०,३२० |
| एकूण महसूली खर्च (१+२) | ४०,४७४ | ४६,१९६ | ५०,१४५ |
| सु.अं. - सुधारित अंदाज | | अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज | |

जाते. विकासेतर खर्चाचा मोठा वाटा हा सर्वसाधारण सेवांवर होणाऱ्या खर्चाचा असून गेल्या तीन वर्षांमध्ये तो ५८ ते ६१ टक्क्यांच्या दरम्यान होता. २००२-०३ चा एकूण महसूली खर्च ४०,४७४ कोटी रुपये इतका होता, तो २००३-०४ मध्ये ४६,१९६ कोटी रुपये (आधीच्या वर्षांपेक्षा १४.१ टक्के जास्त) झाला. पुढे २००४-०५ मध्ये हा खर्च ५०,१४५ कोटी रुपये होईल असे अपेक्षित आहे. अवर्षणग्रत भागातील पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न, तोट्यात चालणारी कापूस खरेदी योजना आणि शेतकऱ्यांना दिला जाणारा मोफत वीजपुरवठा या प्रमुख बाबी, राज्याच्या महसूली खर्चावर, मोठा ताण आणणाऱ्या ठरल्या आहेत. याबाबतचा तपशील तक्ता क्र. ४.१० मध्ये दिला आहे.

भांडवली जमा आणि खर्च

४.२० भांडवली जमेचे तीन भाग आहेत. (१) कर्जाची वसुली, (२) इतर जमा म्हणजे रोख शिल्लक गुंतवणूक लेखा यापासूनची निव्वळ जमा आणि (३) कर्ज व इतर दायित्व.

४.२१ 'कर्ज व इतर दायित्व' याचे दोन भाग आहेत. (१) ऋण प्राप्ती आणि (२) बिगर ऋण प्राप्ती. ऋण प्राप्तीचे सुध्दा आणखी तीन भाग आहेत. ते म्हणजे, राज्य शासनाची देशांतर्गत कर्ज म्हणजेच खुल्या बाजारातील व वित्तीय संस्थांकडील कर्ज, केंद्र शासनाकडील कर्ज आणि व्याजी गटबंधनापासूनची निव्वळ प्राप्ती, यामध्ये भविष्य निर्वाह निधी, राखीव निधी आणि नागरी ठेवी इत्यादींचा समावेश असतो.

४.२२ बिगर ऋण प्राप्तीचे दोन भाग आहेत (१) लोक लेख्यातील राखीव निधी, नागरी ठेवी, निलंबन व संकीर्ण लेखा आणि वित्तप्रेषण लेखा इत्यादी मधील विनाव्याजी गटबंधने यातून मिळणारी निव्वळ प्राप्ती आणि (२) आंतरराज्यीय तडजोड, आकस्मिकता निधीकडे विनियोजन व आकस्मिकता निधी यातून मिळणारी निव्वळ भांडवली जमा, इत्यादी

तक्ता क्रमांक ४.११

महाराष्ट्र राज्याची भांडवली जमा व खर्च

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००१-०२ | २००२-०३ | २००३-०४ | २००४-०५ |
|---|-------------|-------------|----------|----------------------------|
| | (प्रत्यक्ष) | (प्रत्यक्ष) | (सु.अं.) | (अ.अं.) |
| भांडवली जमा (१ ते ३) | १०,६१५ | १४,७५५ | १९,२४१ | १४,०३७ |
| १ कर्जाची वसुली | २९८ | ४६९ | ५८७ | ४२३ |
| २ इतर जमा | ३०६ | (-)५९१ | १,०१६ | (-)५०० |
| ३ कर्ज व इतर दायित्व | १०,०११ | १४,८७७ | १७,६३८ | १४,११४ |
| भांडवली खर्च (१ ते २) | ३,००७ | ५,३८८ | ११,०२७ | ५,४३० |
| १ महसूली लेख्याबाहेरील भांडवली खर्च | २,९४८ | ३,६८४ | ९,६८८ | ३,७०० |
| २ राज्य शासनाने दिलेली कर्ज व आगाऊ रकमा | ५९ | १,७०४ | १,३३९ | १,७३० |
| सु.अं. - सुधारित अंदाज | | | | अ.अं. - अर्थसंकल्पीय अंदाज |

होय. भांडवली जमेतील मोठा वाटा हा 'कर्ज व इतर दायित्व' या बाबीचा असून त्यामुळे राजकोषीय तूट मोठ्या प्रमाणात वाढते. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.११ मध्ये दिला आहे.

४.२३ भांडवली खर्चाचे दोन भाग आहेत. (१) महसूली लेख्याबाहेरील भांडवली खर्च आणि (२) राज्य शासनाने दिलेली कर्ज व आगाऊ रकमा. एकूण भांडवली खर्चातील मोठा वाटा, हा महसूली लेख्याबाहेरील भांडवली खर्चाचा असतो. १९९५-९६ पासून भांडवली खर्चातील सरासरी वाढ, १९९९-२००० वगळता, सातत्याने उतरता कल दर्शविते. याबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक ४.१२ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ४.१२

महाराष्ट्र राज्याचा वर्षनिहाय भांडवली खर्च

| वर्ष | भांडवली खर्च (रुपये कोटीत) | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
|---------|----------------------------|----------------------------------|
| १९९३-९४ | २,३५४ | २.१ |
| १९९४-९५ | ४,७५८ | ३.७ |
| १९९५-९६ | ३,७०३ | २.४ |
| १९९६-९७ | ३,५७२ | २.० |
| १९९७-९८ | ४,०५६ | २.१ |
| १९९८-९९ | ३,८०६ | १.८ |
| १९९९-०० | ७,६८८ | ३.२ |
| २०००-०१ | ३,७३७ | १.६ |
| २००१-०२ | ३,००७ | १.१ |
| २००२-०३ | ५,३८८ | १.८ |

महाराष्ट्राची ऋण स्थिती

४.२४ राज्याच्या एकूण ऋणाचे तीन भाग आहेत (१) सरकारी ऋण (२) भविष्य निर्वाह निधीतील उचल आणि (३) 'लोकलेखा' व्यवहारातील उचल, म्हणजेच राखीव निधी आणि नागरी ठेवी यातील व्याजी गटबंधने इत्यादी. राज्यावरील एकूण ऋण १९९३-९४ मध्ये १५,३५४ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या १३.५ टक्के) होते, ते २०००-०१ मध्ये ५०,३१९ कोटी रुपये (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या २१.१ टक्के) असे वाढले आणि पुढे, २००३-०४ मध्ये ते ८३,१५४ कोटी रुपये इतके झाले. अर्थसंकल्पीय अंदाज २००४-०५ नुसार हे ऋण ९३,२०७ कोटी रुपयांपर्यंत (स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या २४.६ टक्के) वाढेल असे अपेक्षित आहे. वाढत्या महसूली तुटीमुळे राजकोषीय तूट वाढत जाते, तर वाढत्या राजकोषीय तुटीमुळे, ऋण हे उत्तरोत्तर वाढतच जाते. परिणामतः राज्याची तूट, एकूण ऋण आणि ऋण सेवांचे ओझे यांचे दुष्टचक्र सतत चालू राहते. राज्य शासनास, या परिस्थितीची जाण असून, वाढत्या ऋणावर प्रतिबंध घालण्यासाठी अनेक उपाययोजना केल्या जात आहेत. याबाबतचा तपशील तक्ता क्र.४.१३ मध्ये दिला आहे.

तत्का क्र. ४.१३
महाराष्ट्र राज्याची एकूण ऋणस्थिती

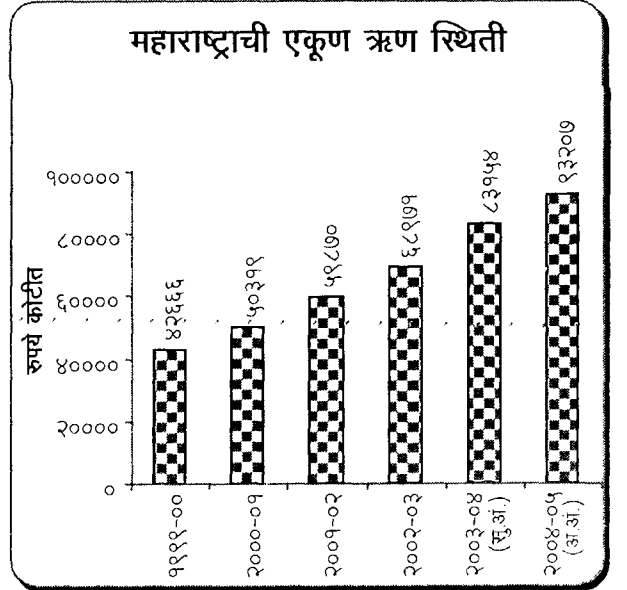
(रुपये कोटीत)

| बाब | १९९३-९४ | २०००-०१ | २००१-०२ | २००२-०३ | २००३-०४ (सु.अ.) | २००४-०५ (अ.अ.) |
|---|---------|---------|---------|---------|--------------------|-------------------|
| १. सरकारी ऋण (अ+ब) | १२,४५३ | ३८,१७१ | ४५,६५२ | ५४,०५५ | ६५,६४७ | ७४,१३० |
| अ) राज्य शासनाचे देशांतर्गत ऋण | १,४७४ | ६,४८२ | ८,५८७ | १७,१५१ | ३२,२२७ | ४०,८६३ |
| ब) केंद्र शासनाकडील कर्ज | १०,९७९ | ३१,६८९ | ३७,०६५ | ३६,९०४ | ३३,४२० | ३३,२६७ |
| २. भविष्य निर्वाह निधी | १,७८२ | ६,५०९ | ७,१४३ | ७,२०१ | ९,०४५ | ९,८०० |
| ३. इतर व्याजी गठबंधने - (राखीव निधी व नागरी ठेवी मधून) | १,११९ | ५,६३९ | ७,०७५ | ७,७१५ | ८,४६२ | ९,२७७ |
| एकूण ऋण (१ + २ + ३) | १५,३५४ | ५०,३२९ | ५९,८७० | ६८,९७१ | ८३,१५४ | ९३,२०७ |
| राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी | (१३.५) | (२१.१) | (२२.४) | (२३.३) | (२५.०) | (२४.६) |
| व्याज प्रदान व ऋण सेवांवरील खर्च | १,८९३ | ५,३५९ | ६,५६२ | ७,२८६ | ८,७०२ | १०,३२० |
| महसुली जमेशी टक्केवारी | १४.६ | १८.१ | २१.८ | २३.४ | २३.४ | २५.५ |

राज्य निहाय ऋण स्थिती - वर्ष २००३-०४

| राज्य | एकूण ऋण (रुपये कोटीत) | स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी |
|--------------|--------------------------|-------------------------------------|
| विहार | ४९,८८२ | ८३.३ |
| ओरिसा | ३३,७५६ | ६५.५ |
| पंजाब | ४२,०५७ | ५४.९ |
| राजस्थान | ४८,७१४ | ५०.२ |
| उत्तर प्रदेश | १,०४,०७९ | ४७.३ |
| पश्चिम बंगाल | ७९,५७५ | ४४.६ |
| मध्यप्रदेश | ४०,८८८ | ४४.४ |
| गुजरात | ५५,३१८ | ३४.६ |
| आंध्र प्रदेश | ५७,५७४ | ३३.७ |
| केरळ | ३३,७०८ | ३३.७ |
| कर्नाटक | ३८,०९१ | ३१.० |
| तामिळनाडू | ४४,८३४ | २६.३ |
| महाराष्ट्र | ८३,१५४ | २५.० |

महाराष्ट्राची एकूण ऋण स्थिती



बाराव्या वित्त आयोगाची भूमिका

४.२५ बाराव्या वित्त आयोगाच्या शिफारशीनुसार, जी राज्य सरकारे 'राजकोषीय उत्तरदायित्व कायदा' मंजूर करून घेतील आणि केंद्राच्या वित्तीय दूरदर्शी प्रमाणास अनुरूप वागतील, त्यांच्यासाठी १ एप्रिल, २००५ पासून सुरु होणाऱ्या आगामी पाच वर्षांत कर्जांचे निर्लेखन करण्याचा फायदा त्यांना घेता येऊ शकेल. केंद्रीय कर्जांची सर्वथा पुनर्सूची तयार करून, सर्वच राज्यांना कर्ज मुक्ततेची सवलत उपलब्ध

करून देण्यात येणार आहे. त्यासाठी, सर्वच केंद्रीय कर्जांचे एकत्रीकरण करून, त्याची परतफेड वीस वर्षांच्या कालावधीसाठी, सध्याच्या ९.० टक्के ऐवजी ७.५ टक्के व्याज दराने निश्चित करण्यात येईल.

४.२६ केंद्राच्या परवानगीने, खुल्या बाजारातील कर्ज घेण्यासाठी राज्यांना मुभा देण्यात येईल. तथापि, जी राज्ये खुल्या बाजारातून पैसा उभा करू शकणार नाहीत त्यांच्यासाठी मात्र केंद्राकडून कर्ज घेण्याचा पर्याय तसाच पुढे चालू राहील.

स्थानिक स्वराज्य संस्था

४.२७ स्थानिक स्वराज्य संस्था या अतिशय महत्वाच्या संस्था असून त्या सार्वजनिक साधन संपत्तीच्या माध्यमातून स्थानिक स्तरावरील विकासात महत्वाची भूमिका बजावतात. स्थानिक स्वराज्य संस्था या ग्रामीण व नागरी भागात सुस्पष्टपणे विभागल्या गेल्या आहेत.

४.२८ राज्यात मार्च, २००४ अखेर प्रकारानुसार असणाऱ्या निरनिराळ्या स्थानिक स्वराज्य संस्था, त्यांचे २००३-०४ मधील एकूण उत्पन्न (सुरूवातीची शिल्लक धरून) व एकूण खर्च तक्ता क्र. ४.१४ मध्ये देण्यात आले आहे. नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था संख्येने कमी असल्या, तरी त्यांचा सर्व स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या एकूण उत्पन्न व खर्च या दोन्हीतील वाटा २००३-०४ मध्ये प्रत्येकी ५९ टक्के होता. (उत्पन्न १३.०३४ कोटी रुपये व खर्च ११,३२७ कोटी रुपये)

तक्ता क्रमांक ४.१४
स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे २००३-०४ मधील
उत्पन्न व खर्च

(रुपये कोटीत)

| स्थानिक स्वराज्य संस्था | संख्या | एकूण उत्पन्न @ | एकूण खर्च |
|-------------------------|--------|----------------|-----------|
| १. ग्रामपंचायती | २७,९४६ | ९३९.०९ | ६६२.४६ |
| २. जिल्हा परिषदा | ३३ | ८,१६५.३६ | ७,२२८.५० |
| ३. महानगरपालिका | २२ | ११,१३४.७८ | ९,७५०.८७ |
| ४. नगरपरिषदा | २२२ | १,७४१.१८ | १,४४३.८५ |
| ५. नगरपंचायती | ३ | १२.४२ | ८.५४ |
| ६. कटक मंडळे | ७ | १४५.६८ | १२३.५३ |
| एकूण | ... | २२,१३८.५१ | १९,२१७.७५ |

@ आरंभीची शिल्लक धरून.

ग्रामपंचायती

४.२९ सर्व ग्रामपंचायतींचे २००२-०३ आणि २००३-०४ या वर्षासाठीचे प्रमुख स्रोतनिहाय उत्पन्न व त्यांचा ढोबळ शीर्षनिहाय खर्च तक्ता क्र.४.१५ मध्ये दर्शविला आहे.

४.२९.१ राज्यातील सर्व ग्रामपंचायतींची २००३-०४ मधील एकूण जमा आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत २२ टक्क्यांनी वाढून ती ७१० कोटी रुपये इतकी झाली. ही वाढ मुख्यत्वे शासकीय अनुदानातील झालेल्या ५१ टक्के इतक्या वाढीमुळे झाली. २००२-०३ मधील १५०.३२ कोटी रुपये इतक्या शासकीय अनुदानात वाढ होऊन ते २००३-०४ मध्ये २२७.५९ कोटी रुपये इतके झाले. एकूण जमेतील शासकीय अनुदानाचा हिस्सा २००२-०३ मधील २६ टक्क्यांवरून २००३-०४ मध्ये ३२ टक्के झाला. ग्रामपंचायतींच्या एकूण जमेमध्ये शासकीय अनुदानाचा महत्वाचा हिस्सा असून १९९५-९६ पासूनच्या कालावधीत २००३-०४ मध्ये तो सर्वाधिक ३२ टक्के इतका होता. २००३-०४ मध्ये प्रति ग्रामपंचायत सरासरी जमा २.५४ लाख रुपये होती.

४.२९.२ सर्व ग्रामपंचायतींच्या २००२-०३ या वर्षातील ५४४ कोटी रुपये इतक्या एकूण खर्चात २२ टक्क्यांनी वाढ होऊन २००३-०४ मध्ये

तक्ता क्रमांक ४.१५
ग्रामपंचायतींचे उत्पन्न व खर्च

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००२-०३ | | २००३-०४ | |
|---------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | प्रत्यक्ष | टक्केवारी @ | प्रत्यक्ष | टक्केवारी @ |
| उत्पन्न | | | | |
| अ) आरंभीची शिल्लक | १९३.१२ | - | २२९.३९ | - |
| ब) जमा | | | | |
| १. कर | | | | |
| i) घरे व इतर मालमत्ता | १७२.९३ | २९.७ | १९७.५७ | २७.८ |
| यांवरील कर | | | | |
| ii) इतर कर | ११२.९२ | १९.४ | ११८.९६ | १६.८ |
| एकूण कर (i+ii) | २८५.८५ | ४९.१ | ३१६.५३ | ४४.६ |
| २. शासकीय अनुदाने | १५०.३२ | २५.८ | २२७.५९ | ३२.१ |
| ३. अंशदान व देणग्या | ९१.११ | १५.७ | ९९.९० | १४.१ |
| ४. इतर जमा | ५४.६० | ९.४ | ६५.६८ | ९.३ |
| एकूण जमा (ब) | ५८१.८८ | १००.० | ७०९.७० | १००.० |
| एकूण उत्पन्न (अ+ब) | ७७५.०० | - | ९३९.०९ | - |

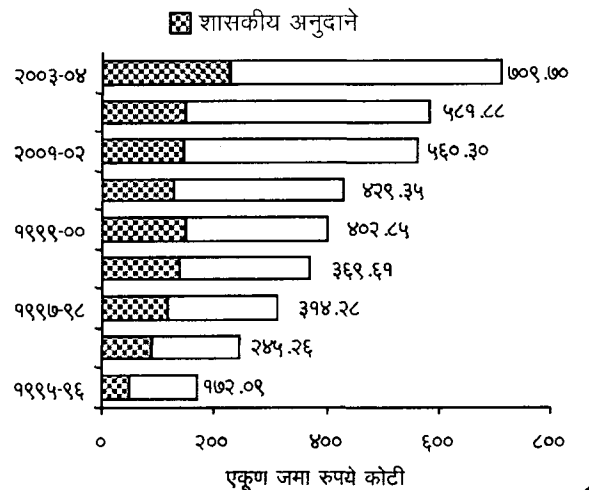
खर्च

| | | | | |
|---------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| १. प्रशासन | १०२.६८ | १८.८ | १२१.८९ | १८.४ |
| २. आरोग्य व स्वच्छता | १४८.१८ | २७.२ | १६६.५८ | २५.२ |
| ३. सार्वजनिक बांधकामे | १८५.१६ | ३४.० | २३६.७५ | ३५.७ |
| ४. सार्वजनिक दिवाबत्ती | २९.८४ | ५.५ | ३२.६४ | ४.९ |
| ५. शिक्षण | १४.१९ | २.६ | १६.७३ | २.५ |
| ६. लोककल्याण | ४५.५३ | ८.४ | ५७.६३ | ८.७ |
| ७. इतर खर्च | १८.८१ | ३.५ | ३०.२५ | ४.६ |
| एकूण खर्च (१ ते ७) | ५४४.३९ | १००.० | ६६२.४६ | १००.० |

@ आरंभीची शिल्लक वगळून

तो ६६२ कोटी रुपये इतका झाला. ग्रामपंचायतींच्या एकूण खर्चापैकी सर्वाधिक ३६ टक्के खर्च सार्वजनिक बांधकाम व त्या खालोखाल २५ टक्के खर्च आरोग्य व स्वच्छता या बाबींवर झाला. २००३-०४ मध्ये प्रति ग्रामपंचायत सरासरी खर्च २.३७ लाख रुपये होता.

ग्रामपंचायतींच्या एकूण जमेतील शासकीय अनुदाने



जिल्हा परिषदा

४.३० राज्यातील सर्व जिल्हा परिषदांचे प्रमुख स्रोतानुसार २००२-०३ (प्रत्यक्ष) आणि २००३-०४ (सुधारित अंदाज) मधील उत्पन्न तक्ता क्र. ४.१६ मध्ये दर्शविले आहे.

तक्ता क्रमांक ४.१६
जिल्हा परिषदांचे उत्पन्न

| बाब | (रुपये कोटीत) | | | |
|---------------------------|---------------|-------------|---------------|-------------|
| | २००२-०३ | | २००३-०४ | |
| | प्रत्यक्ष | टक्केवारी @ | सुधारित अंदाज | टक्केवारी @ |
| अ) आरंभीची शिल्लक | ४६६.०८ | - | ६७७.६४ | - |
| ब) महसुली जमा | | | | |
| १. स्वनिर्मित साधनांपासून | १८६.७२ | २.५ | ४९६.६८ | ६.६ |
| २. शासकीय अनुदाने | ६,०५४.८२ | ८१.४ | ५,३९२.२३ | ७२.० |
| २.१ सार्वधिक अनुदाने | | | | |
| अ) सहेतुक | २,६३८.६५ | ३५.५ | २,१०५.४८ | २८.१ |
| ब) आस्थापना | १,५७२.४८ | २१.२ | १,८१९.२३ | २४.३ |
| क) योजनांतर्गत | ७७९.२९ | १०.५ | ५५७.८९ | ७.४ |
| ड) इतर | ४७४.१७ | ६.४ | ३९४.२४ | ५.३ |
| एकूण (२.१) | ५,४६४.५९ | ७३.५ | ४,८७६.७५ | ६५.१ |
| २.२ अभिकरण योजनांसाठी | ५९०.२३ | ७.९ | ५१५.४८ | ६.९ |
| एकूण महसुली जमा (ब)(१+२) | ६,२४१.५४ | ८४.० | ५,८८८.९२ | ७८.६ |
| क) भांडवली जमा | १,१९२.३४ | १६.० | १,५९८.८० | २१.४ |
| ड) एकूण जमा (ब+क) | ७,४३३.८७ | १००.० | ७,४८७.७२ | १००.० |
| एकूण उत्पन्न (अ+ड) | ७,८९९.९६ | | ८,१६५.३६ | |

@ आरंभीची शिल्लक वगळून

४.३०.१ जिल्हा परिषदांची २००२-०३ मधील एकूण जमा ७,४३४ कोटी रुपये इतकी होती. त्यात वाढ होऊन २००३-०४ मध्ये ती ७,४८८

कोटी रुपये इतकी झाली. भांडवली जमा व स्वनिर्मित साधनांपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नात २००३-०४ मध्ये भरीव वाढ झालेली असली तरी, शासकीय अनुदानातील झालेल्या ११ टक्के घटीमुळे जिल्हा परिषदांच्या एकूण जमेत अल्पशी वाढ झाली आहे. एकूण जमेतील २००२-०३ मधील ८१ टक्के शासकीय अनुदानाच्या हिश्यात घट होऊन २००३-०४ मध्ये तो ७२ टक्के इतका झाला.

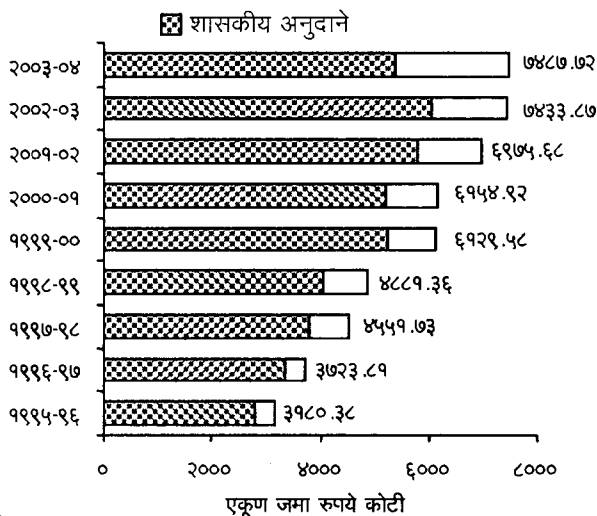
४.३०.२ जिल्हा परिषदांचा २००२-०३ (प्रत्यक्ष) व २००३-०४ (सुधारित अंदाज) या वर्षातील प्रमुख शीर्षनिहाय खर्च तक्ता क्र.४.१७ मध्ये दर्शविला आहे.

तक्ता क्रमांक ४.१७
जिल्हा परिषदांचा खर्च

| बाब | (रुपये कोटीत) | | | |
|---|---------------|-----------|---------------|-----------|
| | २००२-०३ | | २००३-०४ | |
| | प्रत्यक्ष | टक्केवारी | सुधारित अंदाज | टक्केवारी |
| अ) महसुली खर्च | | | | |
| १. सामान्य प्रशासन | ४७१.७३ | ६.७ | ७१८.७७ | ९.९ |
| २. शिक्षण | २,७६५.६८ | ३९.२ | २,५००.६३ | ३४.६ |
| ३. इमारती व दळणवळण (सार्वजनिक बांधकामे) | ३६२.९३ | ५.१ | ३७२.९९ | ५.२ |
| ४. पाटबंधारे | १४३.४६ | २.० | १४७.९० | २.० |
| ५. कृषि | ७७.३१ | १.१ | ५५.१२ | ०.८ |
| ६. पशुसंवर्धन | ७०.५५ | १.० | ६६.८१ | ०.९ |
| ७. वने | ४.८४ | ०.१ | ८.२२ | ०.१ |
| ८. वैद्यकीय आणि आरोग्य सेवा | ४२२.५६ | ६.० | ३५९.३० | ५.० |
| ९. सार्वजनिक आरोग्य अभियांत्रिकी | १७९.८३ | २.५ | १९५.७१ | २.७ |
| १०. समाजकल्याण | २१८.५६ | ३.१ | २३१.२१ | ३.२ |
| ११. सामूहिक विकास | १४९.८४ | २.१ | २३५.०७ | ३.३ |
| १२. इतर खर्च | ९२३.८१ | १३.१ | ८३९.६४ | ११.६ |
| एकूण (अ) | ५,७९१.०९ | ८२.० | ५,७३१.३७ | ७९.३ |
| ब) भांडवली खर्च | १,२६९.८२ | १८.० | १,४९७.१३ | २०.७ |
| एकूण खर्च (अ+ब) | ७,०६०.९१ | १००.० | ७,२२८.५० | १००.० |

४.३०.३ जिल्हा परिषदांच्या २००३-०४ मधील एकूण खर्चात, मागील वर्षाच्या तुलनेत नाममात्र २ टक्के इतकी वाढ झाली. शिक्षण व वैद्यकीय आणि आरोग्य सेवा या जिल्हा परिषदांनी पार पाडावयाच्या मुलभूत कार्यांवरील खर्चाच्या टक्केवारीत तसेच प्रत्यक्ष रकमात मागील वर्षाच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये झालेली घट ही चिंतेची बाब आहे. तथापि, सामान्य प्रशासनावर झालेल्या खर्चाच्या टक्केवारीत ३.२ बिंदुनी वाढ झाली आहे.

जिल्हा परिषदांच्या एकूण जमेतील शासकीय अनुदाने



नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था

४.३१ राज्यातील नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये मार्च, २००४ अखेर २२ महानगरपालिका, २२२ नगरपरिषदा व ३ नगरपंचायती यांचा समावेश होता. राज्यातील २२२ नगरपरिषदांपैकी १८ 'अ' वर्गीय (लोकसंख्या एक लाखापेक्षा जास्त), ६२ 'ब' वर्गीय (लोकसंख्या ४०,००० पेक्षा जास्त आणि एक लाख पेक्षा अधिक नाही) आणि १४२ 'क' वर्गीय (लोकसंख्या ४०,००० किंवा त्यापेक्षा कमी) नगरपरिषदा होत्या. या व्यतिरिक्त मार्च, २००४ अखेर राज्यात ७ कटक मंडळे होती. नागरी संस्थांचे (नगर पंचायती वगळून) २००२-०३ व २००३-०४ मधील उत्पन्न व खर्च तक्ता क्र.४.१८ मध्ये देण्यात आला आहे.

तक्ता क्रमांक ४.१८

नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे उत्पन्न व खर्च

(रुपये कोटीत)

| बाब | २००२-०३ | २००३-०४ |
|------------------------|-----------|-----------|
| अ) महानगरपालिका | | |
| १. संख्या | १९ | २२ |
| २. उत्पन्न | १०,४५६.०१ | ११,१३४.७८ |
| २.१ आरंभीची शिल्लक | १,०३५.९९ | १,२३४.५४ |
| २.२ जमा | ९,४२०.०२ | ९,९००.२३ |
| ३. खर्च | ९,२३४.०२ | ९,७५०.८७ |
| ब) नगरपरिषदा | | |
| १. संख्या | २२४ | २२२ |
| २. उत्पन्न | १,५६०.५३ | १,७४१.१८ |
| २.१ आरंभीची शिल्लक | २०१.५८ | २४९.८२ |
| २.२ जमा | १,३५८.९५ | १,४९१.३६ |
| ३. खर्च | १,२७९.४२ | १,४४३.८५ |
| क) कटक मंडळ | | |
| १. संख्या | ७ | ७ |
| २. उत्पन्न | १३४.०६ | १४५.६८ |
| २.१ आरंभीची शिल्लक | १४.१९ | ११.८४ |
| २.२ जमा | ११९.८७ | १३३.८४ |
| ३. खर्च | १२२.२२ | १२३.५३ |

४.३१.१ नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे २००३-०४ मधील प्रमुख स्रोतनिहाय उत्पन्न आणि प्रमुख ढोबळ शीर्षनिहाय खर्च ह्या प्रकाशनाच्या सारणी-२ मधील तक्ता क्र. १२ मध्ये दिला आहे.

महानगरपालिका

४.३२ सर्व महानगरपालिकांची २००३-०४ मधील एकूण जमा ९,९०० कोटी रुपये (बेस्ट उपक्रम वगळून) होती व ती आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ५ टक्क्यांनी जास्त होती. एकूण जमेपैकी जकातीद्वारे मिळणाऱ्या उत्पन्नाचा वाटा ३७ टक्के, मालमत्ता कराचा वाटा ७ टक्के, शासकीय अनुदाने व अंशदाने ४ टक्के आणि पाणीपट्टी/ शुल्क यापासून जमा झाल्याचा रकमेचा वाटा १० टक्के होता.

४.३२.१ सर्व महानगरपालिकांचा २००३-०४ या वर्षातील एकूण खर्च ९,७५१ कोटी रुपये (बेस्ट उपक्रम वगळून) होता आणि आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत तो ६ टक्क्यांनी जास्त होता. एकूण खर्चापैकी

आस्थापनेवर ३४ टक्के, पाणी पुरवठ्यावर ८ टक्के, जल व मलनिःसारणावर ५ टक्के, बांधकामावर ६ टक्के खर्च झाला.

४.३२.२ बृहन्मुंबई महानगरपालिकेची (बेस्ट उपक्रम वगळून) २००३-०४ या वर्षातील एकूण जमा ५,९११ कोटी रुपये होती व ती राज्यातील सर्व महानगरपालिकांच्या एकूण जमेच्या ६० टक्के होती.

४.३२.३ बृहन्मुंबई महानगरपालिकेचा २००२-०३ या वर्षातील (बेस्ट उपक्रम वगळून) एकूण खर्च ५,७९४ कोटी रुपये होता व तो राज्यातील सर्व महानगरपालिकांच्या एकूण खर्चाच्या ५९ टक्के होता.

४.३२.४ बेस्ट उपक्रमाची २००३-०४ या वर्षातील एकूण जमा २,४२० कोटी रुपये इतकी होती. त्यापैकी विद्युत पुरवठा विभागाचा वाटा ६८ टक्के इतका होता. विद्युत पुरवठा विभागाला २००३-०४ या वर्षात १४४ कोटी रुपये इतका नफा झाला असला तरी, बेस्ट उपक्रमाचा एकूण तोटा ३१ कोटी रुपये इतका होता.

४.३२.५ २००१ च्या जनगणनेनुसार बृहन्मुंबई महानगरपालिका क्षेत्रातील एकूण लोकसंख्या १.१९ कोटी होती. राज्यातील सर्व २२ महानगरपालिकांच्या लोकसंख्येच्या ती ४१ टक्के होती. २००३-०४ या वर्षातील मुंबई महानगरपालिकेची दरडोई जमा (बेस्ट उपक्रम वगळून) ४,९६७ रुपये होती व इतर सर्व महानगरपालिकांच्या बाबतीत दरडोई जमा २,३६० रुपये होती. तत्सम कालावधीसाठी दरडोई खर्चाच्या रकमा अनुक्रमे ४,८६९ रुपये आणि २,३४९ रुपये होत्या.

नगरपरिषदा

४.३३ सर्व नगरपरिषदांची २००३-०४ या वर्षातील एकूण जमा १,४९१ कोटी रुपये होती. यात 'अ' वर्ग २८ टक्के, 'ब' वर्ग ४२ टक्के व 'क' वर्ग नगरपरिषदांचा वाटा ३० टक्के होता. सर्व नगरपरिषदांच्या एकूण जमेमध्ये कर, शुल्क आणि भाडे यांचा वाटा ३१ टक्के, शासकीय अनुदानांचा वाटा ४६ टक्के आणि ठेवी व कर्जांचा वाटा ९ टक्के होता.

४.३३.१ सर्व नगरपरिषदांचा २००३-०४ वर्षातील एकूण खर्च १,४४४ कोटी रुपये होता व तो आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत १३ टक्के इतका कमी होता. एकूण खर्चापैकी २८ टक्के 'अ' वर्ग, ४५ टक्के 'ब' वर्ग व २७ टक्के खर्च 'क' वर्ग नगरपरिषदांनी केला. सर्व नगरपरिषदांच्या एकूण खर्चापैकी, ३२ टक्के आस्थापनेवर, १४ टक्के बांधकामांवर, ९ टक्के पाणीपुरवठ्यावर व १० टक्के खर्च कर्ज सेवा यावर झाला.

नगरपंचायती व कटक मंडळे

४.३४ राज्यात तीन नगरपंचायती असून २००३-०४ मधील त्यांची एकूण जमा ९.०६ कोटी रुपये व एकूण खर्च ८.५४ कोटी रुपये इतका होता.

४.३५ राज्यात सात कटक मंडळे असून त्यांची २००३-०४ मधील एकूण जमा १३३.८४ कोटी रुपये व एकूण खर्च १२३.५७ कोटी रुपये इतका होता.



राज्य उत्पन्न

स्थूल देशांतर्गत उत्पन्न २००४-०५ : पूर्वानुमान

५.१ केंद्रीय सांख्यिकी संघटनेने प्रसिध्द केलेल्या पूर्वानुमानानुसार २००४-०५ मध्ये स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात म्हणजेच एकूण राष्ट्रीय उत्पन्नात ६.९ टक्के एवढी वाढ अपेक्षित आहे. मागील वर्षाच्या स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नातील ८.५ टक्के तीव्र वाढीच्या तुलनेत ही वाढ प्रभावी दिसून येते. २००४-०५ मध्ये झालेल्या निराशाजनक मोसमी पाऊसाच्या पार्श्वभूमीवर स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात झालेली ही वाढ विचारात घेणे योग्य होईल. देशाच्या अर्थव्यवस्थेतील वाढ मुख्यत्वे वस्तुनिर्माण व सेवा क्षेत्राच्या वाढीमुळे झाली आहे. स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात २२.८ टक्के वाढ असलेल्या प्राथमिक क्षेत्राची वाढ १.५ टक्के अपेक्षित आहे. कृषि, वनसंवर्धन आणि मासेमारी या उपक्षेत्रातील २००३-०४ मधील ९.६ टक्के प्रभावी वाढीच्या तुलनेत २००४-०५ मध्ये १.१ टक्के वाढ अपेक्षित आहे. स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात २४.८ टक्के वाढ असलेल्या द्वितीय क्षेत्रात २००४-०५ मध्ये ८.० टक्के वाढ अपेक्षित आहे. ही वाढ प्रामुख्याने ८.९ टक्के वेगाने वाढणाऱ्या वस्तुनिर्माण या उपक्षेत्रातील वाढीमुळे आहे. तृतीय क्षेत्रातील व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे आणि दळणवळण या उपक्षेत्रातील ११.३ टक्के वाढ अपेक्षित असून २००४-०५ मध्ये तृतीय क्षेत्रात ८.९ टक्के वाढ होईल व स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात तृतीय क्षेत्राचा वाटा ५२.४ टक्के राहिल. तथापि, २००४-०५ मध्ये चालू किंमतीनुसार स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नात १२.६ टक्के वाढ अपेक्षित आहे.

५.२ पूर्वानुमानानुसार महाराष्ट्राचे स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न २००४-०५ मध्ये ७.० टक्क्यांनी वाढेल असे अपेक्षित आहे. तथापि, स्थूल राज्य उत्पन्नात २००३-०४ मधील वाढ ७.३ टक्के

होती. पूर्वानुमानानुसार प्राथमिक क्षेत्राची वाढ ऋण १.१ टक्के अपेक्षित असून, स्थूल राज्य उत्पन्नात सदर क्षेत्राचा वाटा १२.४ टक्के राहिल. प्राथमिक क्षेत्रातील ऋण वाढ ही मुख्यत्वेकरून असमाधानकारक पाऊसामुळे राज्यातील खरीप पिकावर झालेल्या विपरीत परिणामामुळे दिसून येते. स्थूल राज्य उत्पन्नामध्ये द्वितीय क्षेत्राचा हिस्सा २९.८ टक्के इतका अपेक्षित आहे. बांधकाम (१२.२ टक्के) आणि वस्तुनिर्माण (८.२ टक्के) या उपक्षेत्रातील उत्साहवर्धक वाढीमुळे द्वितीय क्षेत्राची वाढ ८.५ टक्के उच्च दराने वाढण्यास मदत झाली आहे. मागील वर्षाच्या ११.७ टक्के भरीव वाढीच्या पार्श्वभूमीवर द्वितीय क्षेत्रातील अपेक्षित वाढ प्रभावशाली दिसून येते. स्थूल राज्य उत्पन्नात ५७.८ टक्के हिस्स्यासह तृतीय क्षेत्राचा वाटा मोठा असून २००४-०५ मध्ये तृतीय क्षेत्रात ८.१ टक्के वाढ अपेक्षित आहे. तृतीय क्षेत्रातील वाढ ही मुख्यत्वेकरून व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे, परिवहन व दळणवळण मधील ९.५ टक्के आणि सार्वजनिक प्रशासन व इतर सेवा या मधील ११.३ टक्के उच्च वाढीमुळे अपेक्षित आहे. मागील तीन वर्षातील कृषि क्षेत्रातील कामगिरी जरी निराशाजनक राहिली असली तरी द्वितीय व तृतीय क्षेत्रातील उच्च वृद्धिदरांमुळे राज्याचा मागील तीन वर्षातील सरसंधारण वृद्धिदर ७ टक्के व त्याहून अधिक असा प्रभावी राहिला आहे. तथापि, २००४-०५ मध्ये चालू किंमतीनुसार स्थूल राज्य उत्पन्नात १३.८ टक्के वाढ अपेक्षित आहे.

स्थूल राज्य उत्पन्न २००३-०४

५.३ प्रारंभिक अंदाजानुसार महाराष्ट्राचे २००३-०४ मधील स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार अंदाजित स्थूल राज्य उत्पन्न १,९०,१५१ कोटी रुपये असून ते २००२-०३ मधील १,७७,१३८ कोटी रुपयांच्या तुलनेत ७.३ टक्क्यांनी जास्त आहे. स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नाचा तत्सम वृद्धिदर ८.५ टक्के होता. २००३-०४ मधील मान्सून हंगामात राज्यातील असमाधानकारक पाऊसामुळे खरीप व रब्बी या दोन्ही पिकांच्या कृषि उत्पादनात तीव्र घट झाली, याचा परिणाम प्राथमिक क्षेत्राचा वृद्धिदर (-)५.५ टक्के होण्यास झाला. द्वितीय क्षेत्रात मात्र ११.७ टक्के इतकी भरीव वाढ, मुख्यत्वे वस्तुनिर्माण व बांधकाम या उपक्षेत्रातील वाढीमुळे झाली. दळणवळण (१८.८ टक्के) आणि व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे (११.८ टक्के) या उपक्षेत्रात झालेल्या लक्षणीय वाढीमुळे २००३-०४ मध्ये तृतीय क्षेत्रात ८.६ टक्के इतकी वाढ झाली. स्थूल राज्य उत्पन्नाचे स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार क्षेत्रनिहाय वृद्धिदर तक्ता क्र. ५.१ मध्ये दिले आहे.

२००४-०५ मध्ये स्थूल देशांतर्गत उत्पन्नातील अपेक्षित वाढीचे दर

(टक्के)

| क्षेत्र | महाराष्ट्र | भारत |
|----------|------------|------|
| प्राथमिक | (-) १.१ | १.५ |
| द्वितीय | ८.५ | ८.० |
| तृतीय | ८.१ | ८.९ |
| एकूण | ७.० | ६.९ |

तक्का क्र. ५.१

महाराष्ट्राचे स्थूल राज्य उत्पन्नाचे क्षेत्रनिहाय वृद्धिदर *

स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार

| क्षेत्र | मागील वर्षाच्या तुलनेत बदलाची टक्केवारी | |
|-------------------------------|---|---------------|
| | २००२-०३ | २००३-०४ |
| प्राथमिक क्षेत्र | (-)१.४ | (-)५.५ |
| कृषि | (-)१.७ | (-)७.३ |
| वन संवर्धन आणि ऑडके पाडणे | (-)०.६ | ५.१ |
| मासेमारी | (-)२.७ | ४.४ |
| खाण आणि दगड खाणकाम | ४.८ | ८.३ |
| द्वितीय क्षेत्र | ८.७ | ११.७ |
| वस्तुनिर्माण | | |
| (अ) नोंदणीकृत | १०.८ | ८.६ |
| (ब) अनोंदणीकृत | १.८ | ६.१ |
| बांधकाम | १६.३ | ३३.१ |
| वीज, गॅस आणि पाणीपुरवठा | ५.९ | ५.० |
| तृतीय क्षेत्र | १०.१ | ८.६ |
| रेल्वे | ५.७ | ३.८ |
| परिवहन व साठवण | ८.० | ७.१ |
| दळणवळण | ७.८ | १८.८ |
| व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे | १८.५ | ११.८ |
| बँका व विमा उद्योग | ११.५ | ५.७ |
| स्थावर मालमत्ता, | | |
| राहत्या घरांची मालकी | | |
| व व्यवसाय सेवा | ४.६ | ४.५ |
| सार्वजनिक प्रशासन | ४.३ | ७.६ |
| इतर सेवा | ५.३ | ६.४ |
| एकूण | ७.८ | ७.३ |

* अस्थायी

५.४ प्रारंभिक अंदाजानुसार महाराष्ट्राचे २००३-०४ मधील चालू किंमतीनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न ३,३३,१४५ कोटी रुपये होते व ते २००२-०३ मधील २,९५,५२५ कोटी रुपयांपेक्षा १२.७ टक्क्यांनी जास्त होते.

राज्य उत्पन्न व दरडोई राज्य उत्पन्न

५.५ प्रारंभिक अंदाजानुसार महाराष्ट्राचे २००३-०४ मधील चालू किंमतीनुसार, राज्य उत्पन्न म्हणजेच निव्वळ राज्य उत्पन्न २,९४,००१ कोटी रुपये होते व ते २००२-०३ च्या तुलनेत १२.७ टक्क्यांनी जास्त होते. २००३-०४ मध्ये प्राथमिक क्षेत्रातील निव्वळ उत्पन्नात (-)१.४ टक्के घट झाली तर द्वितीय व तृतीय क्षेत्रात अनुक्रमे २०.१ टक्के आणि १३.४ टक्के वाढ झाली. अशाप्रकारे एकंदरीत निव्वळ राज्य उत्पन्नात २००३-०४ मध्ये १२.७ टक्क्यांनी वाढ झाली. राज्य उत्पन्नाबाबत तपशीलवार माहिती तक्का क्र. ५.२ मध्ये दिली आहे.

तक्का क्र. ५.२

महाराष्ट्राचे क्षेत्रवार निव्वळ राज्य उत्पन्न

(रुपये कोटीत)

| वर्ष | प्राथमिक | द्वितीय | तृतीय | एकूण |
|------------------------------------|----------|---------|----------|----------|
| स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार | | | | |
| २००२-०३ | २५,३०४ | ३८,३३३ | ९०,९१५ | १,५४,५५२ |
| २००३-०४ | २३,८७९ | ४३,१६६ | ९८,८५० | १,६५,८९६ |
| शेकडा बदल | (-)५.६ | १२.६ | ८.७ | ७.३ |
| चालू किंमतीनुसार | | | | |
| २००२-०३ | ४०,०८५ | ६३,०५० | १,५७,६७७ | २,६०,८१२ |
| २००३-०४ | ३९,५१६ | ७५,७०१ | १,७८,७८४ | २,९४,००१ |
| शेकडा बदल | (-)१.४ | २०.१ | १३.४ | १२.७ |

५.६ स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार दरडोई राज्य उत्पन्नात (दरडोई निव्वळ राज्य उत्पन्न) २००२-०३ च्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये ५.८ टक्के वाढ झाली तर चालू किंमतीनुसार ही वाढ ११.१ टक्के इतकी झाली. दरडोई राज्य उत्पन्नाबाबत तपशीलवार माहिती तक्का क्र. ५.३ मध्ये दिली आहे.

तक्का क्र. ५.३

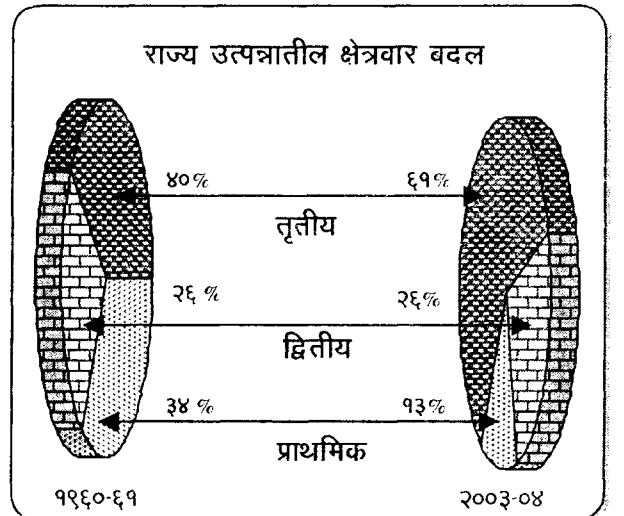
महाराष्ट्राचे दरडोई निव्वळ राज्य उत्पन्न

(रुपये)

| | स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार | चालू किंमतीनुसार |
|-----------|-----------------------------|------------------|
| २००२-०३ | १५,५८० | २६,२९१ |
| २००३-०४ | १६,४७९ | २९,२०४ |
| शेकडा बदल | ५.८ | ११.१ |

राज्य उत्पन्नाची क्षेत्रवार विभागणी

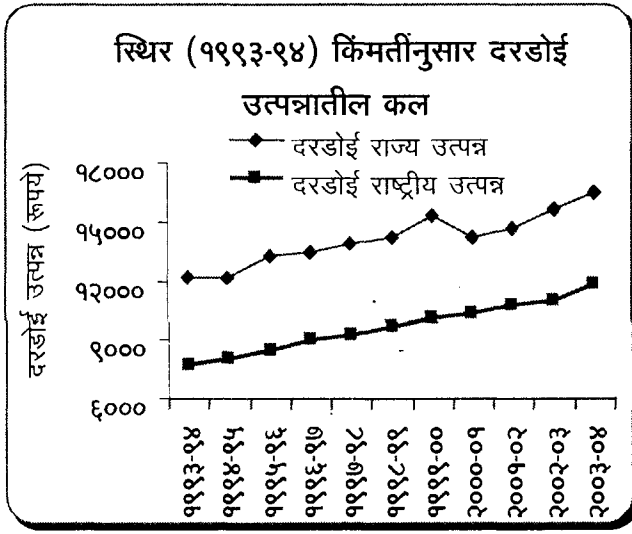
५.७ १९६०-६१ ते २००३-०४ या कालावधीत राज्य उत्पन्नाच्या क्षेत्रनिहाय विभागणीत लक्षणीय बदल झाले आहेत. या ४० हून अधिक वर्षांच्या कालावधीत प्राथमिक क्षेत्राचा वाटा ३४.४ टक्क्यांवरून १३.४ टक्क्यांपर्यंत खाली आला आणि द्वितीय क्षेत्राचा वाटा २६ टक्क्यांच्या



जवळपास राहिला. तथापि, तृतीय क्षेत्राचा वाटा मात्र ३१.९ टक्क्यांवरून ६०.८ टक्के असा वाढला. तथापि, १९९३-९४ (राष्ट्रीय लेखा श्रृंखलेचे आधारभूत वर्ष) साठी त्या-त्या क्षेत्रातील तत्सम वाटा अनुक्रमे २१.२ टक्के ३१.२ टक्के आणि ४७.६ टक्के असा होता.

वाढीचे कल

५.८ १९९३-९४ ते २००३-०४ या दशकात स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार राज्य उत्पन्नाचा सरासरी वार्षिक वृद्धिदर ४.७ टक्के होता. या कालावधीत दरडोई राज्य उत्पन्नाचा वार्षिक वृद्धिदर २.८ टक्के इतका राहिला. याच कालावधीत राज्यातील प्राथमिक, द्वितीय व तृतीय क्षेत्रातील वृद्धिदर अनुक्रमे १.५ टक्के, १.८ टक्के आणि ७.५ टक्के होते.



आंतरराज्य तुलना

५.९ १९९३-९४ ते २००२-०३ या कालावधीचे देशातील प्रमुख राज्यांचे राज्यनिहाय राज्य उत्पन्न व दरडोई राज्य उत्पन्न यांचे वार्षिक वृद्धिदर आणि २००२-०३ या वर्षातील दरडोई राज्य उत्पन्नाची चालू किंमतीनुसार आकडेवारी तक्ता क्र. ५.४ मध्ये देण्यात आली आहे. दरडोई राज्य उत्पन्नाच्या बाबतीत भारतातील प्रमुख राज्यात महाराष्ट्र राज्य हे हरियाणा राज्यानंतर दुसऱ्या क्रमांकावर होते.

राष्ट्रीय उत्पन्नाशी तुलना

५.१० चालू किंमतीनुसार २००३-०४ मध्ये अंदाजित राष्ट्रीय उत्पन्न २२,५२,०७० कोटी रुपये असून ते २००२-०३ मधील २०,०८,७७० कोटी रुपये राष्ट्रीय उत्पन्नापेक्षा १२.१ टक्क्यांनी अधिक होते. राज्य उत्पन्नातील तत्सम वाढ १२.७ टक्के इतकी होती. २००३-०४ मध्ये चालू किंमतीनुसार दरडोई राष्ट्रीय उत्पन्न २०,९८९ रुपये होते, तर दरडोई राज्य उत्पन्न २९,२०४ रुपये होते. दरडोई राज्य उत्पन्न अधिक असण्याचे प्रमुख कारण म्हणजे राज्यातील नोंदणीकृत वस्तुनिर्माण आणि तृतीय क्षेत्राचे प्राबल्य हे होय. २००२-०३ च्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार राष्ट्रीय उत्पन्नात ९.० टक्क्यांची वाढ दिसून आली. याच कालावधीत राज्य उत्पन्नात ७.३ टक्के वाढ झाली.

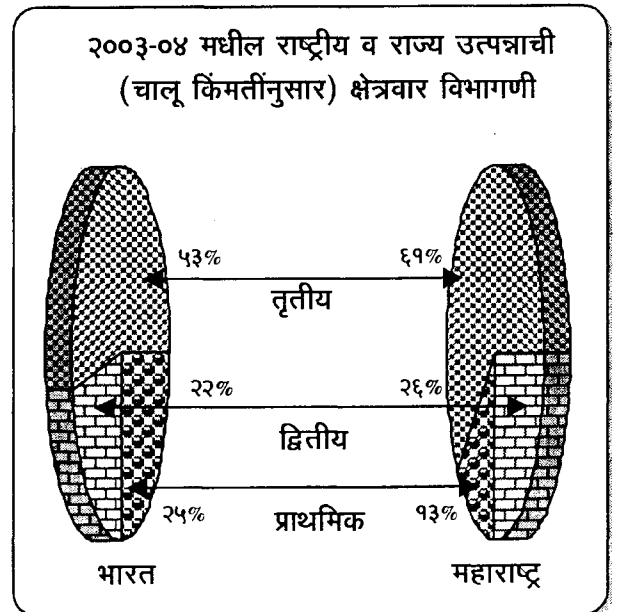
तक्ता क्र ५.४

प्रमुख राज्यांचे वृद्धिदर व दरडोई राज्य उत्पन्न

| राज्य | चालू किंमतीनुसार दरडोई राज्य उत्पन्न २००२-०३ (रु.) | * वार्षिक वृद्धिदर (टक्के) | |
|---------------|--|----------------------------|---------------------|
| | | राज्य उत्पन्न | दरडोई राज्य उत्पन्न |
| हरियाणा | २६,६३२ | ५.७ | ३.२ |
| महाराष्ट्र | २६,२९१ | ४.६ | २.६ |
| पंजाब | २५,८५५ | ४.२ | २.४ |
| हिमाचल प्रदेश | २२,५७६ | ६.४ | ४.६ |
| गुजरात | २२,०४७ | ५.० | २.९ |
| केरळ | २१,८५३ | ४.७ | ३.८ |
| तामिळनाडू | २१,४३३ | ५.२ | ४.१ |
| भारत | १९,०४० | ६.१ | ४.१ |
| पश्चिम बंगाल | १८,७५६ | ७.१ | ५.५ |
| आंध्र प्रदेश | १८,६६९ | ५.५ | ४.४ |
| कर्नाटक | १८,५२१ | ६.९ | ५.४ |
| मध्य प्रदेश | ११,४३८ | ३.७ | १.५ |
| ओरिसा | १०,३४० | ३.६ | २.२ |
| बिहार | ६,०१५ | ५.६ | ३.० |

*१९९३-९४ ते २००२-०३ या कालावधीतील स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार

५.११ चालू किंमतीनुसार २००३-०४ या वर्षातील राष्ट्रीय उत्पन्नात प्राथमिक, द्वितीय व तृतीय क्षेत्रांचा वाटा अनुक्रमे २६.३ टक्के, २१.५ टक्के व ५२.२ टक्के होता. याच कालावधीत राज्य उत्पन्नात तत्सम वाटा अनुक्रमे १३.४ टक्के, २५.८ टक्के व ६०.८ टक्के होता.



५.१२ चालू व स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न व राज्य उत्पन्न आणि राष्ट्रीय उत्पन्न यांच्याबाबतचा क्षेत्रनिहाय तपशील या प्रकाशनातील भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक १३ ते १८ मध्ये दर्शविला आहे.

जिल्हा उत्पन्न - महाराष्ट्र

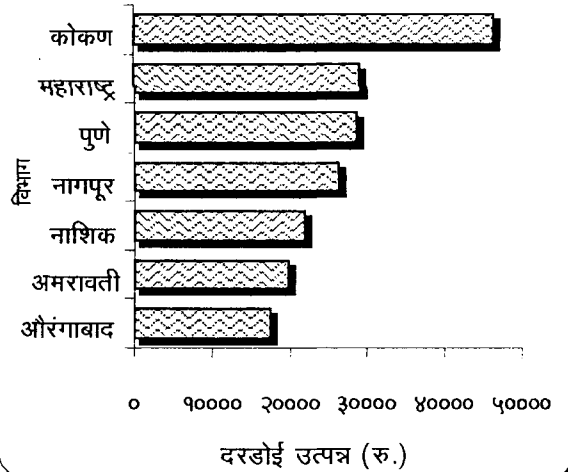
५.१३ राज्य उत्पन्नाचे अंदाज तयार करण्याकरिता वापरण्यात येणाऱ्या पध्दतीप्रमाणेच 'उत्पन्न स्रोत पध्दती' या संकल्पनेचा अवलंब करून जिल्हास्तरावरील उत्पन्नाचे अंदाज तयार करण्यात आले आहेत. जिल्हास्तरावरील उत्पन्नाचे अचूक अंदाज करण्यासाठी 'प्रदेशात संचयित होणारे उत्पन्न' ही संकल्पना वापरणे अधिक चांगले असले तरी जिल्हास्तरावरील आर्थिक उलाढालीचा परिणाम जिल्ह्यापुरताच मर्यादित रहात नसल्याने तसेच संबंधित जिल्ह्याला बाहेरून प्राप्त होणाऱ्या व संबंधित जिल्ह्यातून बाहेर जाणाऱ्या उत्पन्नाचे मोजमाप करणे शक्य नसल्याने सदर पध्दतीचा वापर करता येत नाही. त्यामुळे राज्य उत्पन्न अंदाजातील सर्व अंगभूत मर्यादा जिल्हा उत्पन्न अंदाजाबाबतही लागू पडतात. जिल्हा उत्पन्नाचे अंदाज तयार करण्याकरिता लागणारी जिल्हावार मूलभूत माहिती अजूनही समाधानकारकरीत्या उपलब्ध नाही. प्राथमिक तसेच वस्तुनिर्माण क्षेत्राकरिता बहुतांश आकडेवारी उपलब्ध आहे. मात्र इतर क्षेत्राकरिता आकडेवारी अतिशय अल्प प्रमाणात उपलब्ध आहे. त्यामुळे ज्या क्षेत्राकरिता जिल्हास्तरावरील आकडेवारी उपलब्ध आहे, त्या क्षेत्राकरिता जिल्हास्तरावरील उत्पन्नाचे अंदाज राज्य उत्पन्न अंदाज तयार करण्याची कार्यपध्दती अवलंबून तयार केले आहेत. अशी माहिती ज्या क्षेत्राकरिता उपलब्ध नाही, त्या क्षेत्राकरिता जिल्हावार अनुरूप असे निर्देशक वापरून त्याआधारे राज्यस्तरावरील उत्पन्नाची जिल्ह्यांमध्ये विभागणी करण्यात आली आहे. आकडेवारीच्या उपलब्धतेचा अभाव, अनुरूप निर्देशकांचा वापर तसेच पध्दतीमधील अंगभूत उणीवा या सर्वांमुळे जिल्हा उत्पन्नाचे अचूक अंदाज बांधण्यामध्ये मर्यादा येत असल्याने, हे अंदाज ढोबळ मानाने जिल्ह्यातील उत्पन्नाची पातळी अजमाविण्याकरिता वापरावेत. या प्रकाशनात प्रकाशित केलेले जिल्हा उत्पन्नाचे अंदाज (तक्ता क्र. १९, भाग-२) वापरताना वरील मर्यादा विचारात घ्याव्यात.

दरडोई जिल्हा उत्पन्न

५.१४ २००३-०४ मधील चालू किंमतीनुसार जिल्हावार दरडोई उत्पन्नाचा विचार करता बृहन्मुंबई जिल्ह्यांचे दरडोई उत्पन्न राज्यात सर्वाधिक म्हणजे ६२,४९५ रुपये इतके होते. त्या खालोखाल पुणे (३५,६७७ रुपये), नागपूर (३४,३८५ रुपये), रायगड (३३,६०९ रुपये) व ठाणे (३३,४६२ रुपये) या जिल्ह्यांचा क्रम लागतो. गडचिरोली जिल्ह्याचे दरडोई उत्पन्न सर्वात कमी (१३,१८६ रुपये) होते.

५.१५ विभागावार उत्पन्नाचा विचार करता असे दिसून येते की, २००३-०४ च्या एकूण राज्य उत्पन्नामध्ये कोकण विभागाचा वाटा सर्वाधिक म्हणजे ४१.४ टक्के इतका होता (बृहन्मुंबई वगळता २०.५ टक्के). त्या खालोखाल पुणे (२०.२ टक्के), नाशिक (१२.१ टक्के), नागपूर (९.८ टक्के) व औरंगाबाद (९.६ टक्के) या विभागांचा क्रम लागतो. अमरावती विभागाचा वाटा सर्वात कमी (६.९ टक्के) होता.

विभागनिहाय दरडोई उत्पन्न २००३-०४
(चालू किंमतीनुसार)



अनुसूचित बँका

६.१ जागतिक स्तरावर उदारीकरणाची प्रक्रिया सुरु झाल्यापासून भारतीय वित्तीय क्षेत्र आंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थेशी अधिकाधिक निगडीत होत आहे आणि त्यातील माहिती तंत्रज्ञान हे अर्थव्यवस्थेच्या नियमित कार्यप्रणालीचा एक अविभाज्य घटक बनले आहे. ठेवीचे संकलन करणे, तसेच अर्थव्यवस्थेतील विविध क्षेत्रासाठी पतपुरवठा करणे व त्याद्वारे आर्थिक विकास साधने यामध्ये देशातील वित्तीय संस्था महत्वाची भूमिका बजावत आहेत.

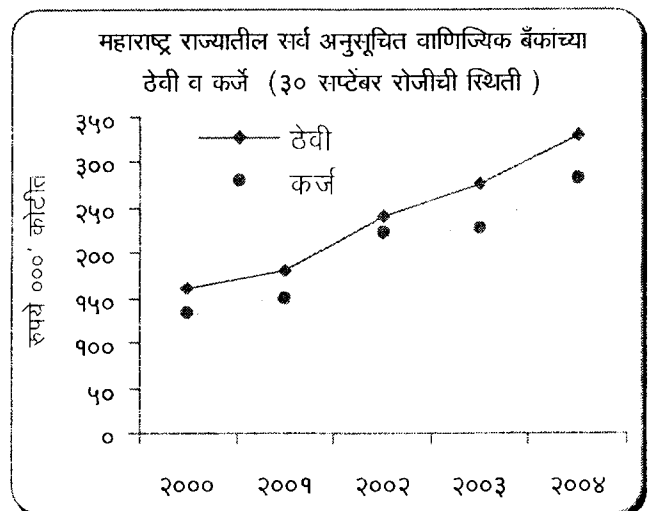
६.२ भारतातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांची विभागणी त्यांच्या मालकीचे स्वरूप आणि/किंवा कामाचे स्वरूप यावरून वेगवेगळ्या पाच गटात करण्यात आली आहे. त्यामध्ये १) स्टेट बँक ऑफ इंडिया आणि तिच्या संलग्न बँका, २) राष्ट्रीयकृत बँका, ३) विदेशी बँका, ४) ग्रामीण विभागीय बँका व ५) इतर अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांचा समावेश आहे. अर्थव्यवस्थेच्या विकासामध्ये ह्या संस्था महत्वपूर्ण भूमिका बजावित आहेत. वाणिज्यिक बँकांनी त्यांचे व्यवहार बळकट करण्यासाठी विविध योजनांचा अंगिकार केला आहे.

महाराष्ट्रातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँका

६.३ राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या कार्यालयांची (शाखा) एकूण संख्या ३० सप्टेंबर, २००४ रोजी ६,३३२ इतकी होती व ती देशातील एकूण अनुसूचित वाणिज्यिक बँक कार्यालयांच्या (६७,२२१) ९.४ टक्के इतकी होती. आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत राज्यातील बँक कार्यालयांच्या संख्येत नाममात्र ०.३ टक्के इतकी अल्पशी वाढ झाली. राज्यातील एकूण अनुसूचित वाणिज्यिक बँक कार्यालयांपैकी ३५ टक्के कार्यालये ग्रामीण भागात, १७ टक्के कार्यालये निमनागरी (लोकसंख्या १०,००० व त्यापेक्षा जास्त परंतु एक लाखापेक्षा कमी) भागात, तर ४८ टक्के कार्यालये नागरी भागात होती. राज्याच्या नागरी भागातील एकूण बँक कार्यालयांपैकी ४९ टक्के बँक कार्यालये केवळ बृहन्मुंबईमध्ये होती. भारतातील एकूण बँक कार्यालयांपैकी ग्रामीण, निमनागरी आणि नागरी भागात अनुक्रमे ४८, २२ आणि ३० टक्के बँक कार्यालये होती. राज्यात दर लाख लोकसंख्येमागे बँक कार्यालयांची संख्या ३० सप्टेंबर, २००४ रोजी ६.२ इतकी होती व ती अखिल भारतीय स्तरावरील तत्सम संख्येइतकीच (६.२) होती.

६.४ ३० सप्टेंबर, २००४ च्या स्थितीनुसार बँकांच्याकडील एकूण ठेवी आणि स्थूल पतपुरवठा या दोन्हीबाबत महाराष्ट्राचा भारतात पहिला क्रमांक लागतो. भारतातील एकूण बँक कार्यालयांच्या संख्येमध्ये राज्याचा हिस्सा जरी ९.४ टक्के इतका असला तरी एकूण ठेवींमध्ये व स्थूल पतपुरवठ्यामध्ये राज्याचा हिस्सा मोठा म्हणजे अनुक्रमे २१ टक्के व ३० टक्के इतका होता. ३० सप्टेंबर, २००४ अखेर राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या एकूण ठेवी ३,२९,३३० कोटी रुपये इतक्या होत्या व त्या आधीच्या वर्षापेक्षा १९ टक्क्यांनी जास्त होत्या. याच कालावधीत ह्या बँकांच्या स्थूल पतपुरवठ्यामध्ये २४ टक्क्यांनी वाढ होऊन तो २,८३,५९१ कोटी रुपये इतका झाला. अखिल भारतीय स्तरावरील बँकांच्या एकूण ठेवी व स्थूल पतपुरवठ्यामध्ये झालेली तत्सम वाढ अनुक्रमे १६ टक्के व २२ टक्के इतकी होती.

६.५ राज्याच्या ग्रामीण व निमनागरी भागातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या एकूण ठेवी व पतपुरवठा ३० सप्टेंबर, २००४ अखेर अनुक्रमे २४,३३५ कोटी रुपये व १४,३४२ कोटी रुपये इतका होता आणि मागील वर्षाच्या तुलनेत ठेवी व पतपुरवठ्यामध्ये अनुक्रमे १७ टक्के व १२ टक्के इतकी वाढ झालेली होती. देशातील ग्रामीण व निमनागरी भागातील एकूण ठेवी व पतपुरवठ्यामध्ये झालेली तत्सम वाढ अनुक्रमे १० टक्के व २३ टक्के इतकी होती. अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या राज्यातील एकूण शाखांपैकी ५३ टक्के शाखा जरी ग्रामीण व निमनागरी भागात असल्या तरी एकूण ठेवी व स्थूल पतपुरवठ्यामध्ये त्यांचा हिस्सा अनुक्रमे केवळ ७ टक्के आणि ५ टक्के इतकाच होता. राज्यात २००० ते २००४ या पाच वर्षांच्या कालावधीत या बँकांच्या ठेवी व पतपुरवठा या दोन्हीमध्ये दुपटीने वाढ झाली.



६.६ राज्यातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँक शाखांच्या मध्ये एकट्या बृहन्मुंबईचा हिस्सा २३.४ टक्के होता आणि ठेवी व पतपुरवठ्यातील बृहन्मुंबईचा हिस्सा अनुक्रमे ७७ टक्के व ८६ टक्के तसेच जास्त होता.

६.७ राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या ठेवी व पतपुरवठ्याचा विस्तार तपशील भाग-२ मधील तक्ता क्र.२० मध्ये दिला आहे.

६.८ राज्यातील ह्या बँकांची ३० सप्टेंबर, २००४ रोजी दरडोई वॉचो रक्कम ३२,२५६ रुपये इतकी होती व ती अखिल भारतीय स्तरावरील तत्सम रकमेच्या (१४,३८० रुपये) दुपटीपेक्षा जास्त होती. राज्यातील ह्या बँकांचा दरडोई पतपुरवठा २७,७७६ रुपये होता आणि अखिल भारतीय स्तरावरील अशा रकमेच्या (८,६१७ रुपये) तीन टप्प्यांपेक्षा अधिक होता. बृहन्मुंबई वगळता, राज्यातील दरडोई ठेव व पतपुरवठा अनुक्रमे केवळ ७,३०४ रुपये आणि ३,९०१ रुपये होता आणि अखिल भारतीय स्तरावरील तत्सम दरडोई रकमांच्या जवळ जवळ आणविलेले होते.

६.९ राज्यातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांमधील पतपुरवठ्याचे ठेवी प्रमाण सप्टेंबर, २००४ अखेर ८६ टक्के इतके होते, तर आधीच्या वर्षी ते ८२ टक्के होते. बृहन्मुंबईतील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांमधील पतपुरवठ्याचे ठेवी प्रमाण सप्टेंबर, २००४ अखेर ९६ टक्के इतके बरेच जास्त होते. ग्रामीण व निमनगरी भागातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांमधील एकत्रित पतपुरवठ्याचे ठेवी प्रमाण ५९ टक्के इतके होते, तर मागील वर्षी ते ६२ टक्के इतके होते. राज्यातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांमधील पतपुरवठ्याचे ठेवी असलेले प्रमाण (८६ टक्के) हे अखिल भारतीय स्तरावरील अशा प्रमाणापेक्षा ७० टक्के) बरेच जास्त होते.

६.१० राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांची विविध क्षेत्रांतील कर्जाबाबतची उपलब्ध असलेली अगदी अलिकडील माहिती तक्ता क्र. ६.१ मध्ये दिली आहे.

६.११ राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांची ३१ मार्च, २००३ रोजी एकूण यणे कर्ज १,९३,३४८ कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षीपेक्षा १२.१ टक्क्यांनी जास्त होती. देशातील एकूण यणे कर्जामध्ये ३१ मार्च, २००३ रोजी महाराष्ट्र राज्याचा हिस्सा २६ टक्के इतका होता जो इतर राज्यांच्या तुलनेत सर्वाधिक होता. मार्च, २००३ अखेर राज्यातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या एकूण यणे कर्जामध्ये वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा वाटा ३८.१ टक्के इतका मोठा होता, त्या खालोखाल पार क्षेत्राचा वाटा १७.२ टक्के होता. कृषि व संलग्न कार्ये या क्षेत्राचा वाटा फक्त ३.९ टक्के इतका होता. वस्तुनिर्माण क्षेत्रामध्ये समाविष्ट झालेल्या कुशल कारागीर, ग्रामोद्योग आणि इतर लघु उद्योग यांचा यणे कर्जामधील वाटा ४.३ टक्के होता.

तक्ता क्र. ६.१

महाराष्ट्रातील अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांची क्षेत्रवार यणे कर्ज

(रुपये कोटीत)

| अनु क्र. | क्षेत्र | ३१ मार्च, २००२ रोजी | | ३१ मार्च, २००३ रोजी | |
|-------------|---------------------------------|---------------------|------------------|---------------------|------------------|
| | | यणे कर्ज | एकूणशी टक्केवारी | यणे कर्ज | एकूणशी टक्केवारी |
| १. | कृषि व संलग्न कार्ये | ६,५२५ | ३.८ | ७,४६२ | ३.९ |
| २. | खाणकाम व दगड खाणकाम | ६,३४६ | ३.७ | ६,८४९ | ३.५ |
| ३. | वस्तुनिर्माण * | ६५,८१६ (६,९९२) | ३८.२ (४.१) | ७३,६५१ (८,२६२) | ३८.१ (४.३) |
| ४. | वीज निर्मिती, वायू व पाणीपुरवठा | ३,५२० | २.० | २,५८९ | १.३ |
| ५. | बांधकाम | ३,२८१ | १.९ | ५,२०४ | २.७ |
| ६. | परिवहन | ३,१३९ | १.८ | ३,२७५ | १.७ |
| ७. | व्यावसायिक सेवा व इतर सेवा | ७,४५१ | ४.३ | ८,१८९ | ४.२ |
| ८. | व्यापार | ३४,२५१ | १९.९ | ३३,१७४ | १७.२ |
| ९. | व्यक्तिगत कर्ज | १२,०७६ | ७.० | १६,५६२ | ८.६ |
| १०. | इतर | २३,१३८ | १३.४ | ३६,३९३ | १८.८ |
| एकूण | | १,७२,५३५ | १००.० | १,९३,३४८ | १००.० |

* कंसातील आकडे त्यापैकी कुशल कारागीर, ग्रामोद्योग व इतर लघु उद्योगाचे आहेत.

वार्षिक पतपुरवठा योजना

६.१२ वार्षिक ग्रामीण पतपुरवठा वितरण व्यवस्थेत सुधारणा करण्याच्या हेतूने भारतीय रिझर्व्ह बँकेने क्षेत्र सेवा पध्दती (सर्व्हिस एरिया अप्रोच) ही योजना कार्यान्वित केली आहे. ह्या क्षेत्र सेवा पध्दतीनुसार खेड्यांच्या एका समूहातील ग्रामीण जनतेच्या पतपुरवठ्याबाबतच्या सर्व गरजा पुरविण्याचे काम एकाच वित्तीय संस्थेकडे सोपविण्यात येते. या योजनेखाली पतपुरवठा वितरणाची वार्षिक लक्ष्ये वाणिज्यिक बँका, प्रादेशिक ग्रामीण बँका आणि सहकारी बँका यांनी एकत्रितपणे साध्य करणे अपेक्षित असते. प्रत्येक जिल्ह्यासाठी पतपुरवठा वितरणाचे लक्ष्य जिल्ह्याशी संबंधित अग्रणी बँकेकडून निश्चित करण्यात येते. राज्यामध्ये या योजनेचे सनियंत्रण करण्यासाठी महाराष्ट्र बँक ही निमंत्रक बँक म्हणून कार्यरत आहे. या योजनेअंतर्गत पतपुरवठा वितरणाबाबतची २००३-०४ आणि २००४-०५ या वर्षासाठीची लक्ष्ये व साध्ये तक्ता क्र. ६.२ मध्ये दर्शविली आहेत.

६.१३ वार्षिक पतपुरवठा योजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये राज्याच्या ग्रामीण भागात एकूण ७,२१५ कोटी रुपयांच्या पतपुरवठ्याचे वितरण ७ लाख लाभधारकांना करण्यात आले. यामध्ये, कृषि व संलग्न कार्ये यांचा हिस्सा ६२ टक्के होता. वार्षिक पतपुरवठा योजना २००४-०५ अंतर्गत सप्टेंबर, २००४ अखेरपर्यंत ४,५०२ कोटी रुपयांच्या पतपुरवठ्याचे वितरण ४.५६ लाख लाभधारकांना करण्यात आले. या लाभधारकांपैकी ३.७१ लाख (८२ टक्के) लाभधारक कृषि व संलग्न कार्ये ह्या क्षेत्रातील होते. वार्षिक पतपुरवठा योजना २००५-०६ अंतर्गत पतपुरवठा वितरणाचे प्रस्तावित लक्ष्य ११,१९७ कोटी रुपये इतके ठेवण्यात आले आहे.

तक्ता क्र. ६.२

वार्षिक पतपुरवठा योजनेअंतर्गत महाराष्ट्र राज्यातील पतपुरवठ्याचे वितरण

(रुपये कोटीत)

| क्षेत्र | २००३-०४ | | | २००४-०५ | | |
|--|---------|---------------|---------------------|---------|---------------|---------------------|
| | लक्ष्य | साध्य | लाभधारक (संख्या) | लक्ष्य | साध्य * | लाभधारक (संख्या) |
| कृषि व संलग्न कार्ये | ६,२५० | ४,४७१ (७२) | ४,८६,१९५ | ७,०८१ | ३,४५८ (४९) | ३,७१,८४३ |
| ग्रामीण कारागीर, ग्राम व कुटीर उद्योग आणि लघु उद्योग | ७०९ | ६३१ (८९) | ११,८९० | ८२४ | १९८ (२४) | ३,७११ |
| इतर क्षेत्रे | २,२३१ | २,११३ (९५) | २,०१,२१० | २,६६९ | ८४६ (३२) | ८०,५३७ |
| एकूण | ९,१९० | ७,२१५ (७९) | ७,००,०९५ | १०,५७४ | ४,५०२ (४३) | ४,५६,०९१ |

टीप : कंसांतील आकडे साध्याची टक्केवारी दर्शवितात. * सप्टेंबर २००४ अखेरपर्यंतची स्थिती

संयुक्त भांडवली संस्था

६.१४ महाराष्ट्र राज्यात ३१ मार्च, २००३ रोजी १,३४,३५२ संयुक्त भांडवली संस्था होत्या व त्या मागील वर्षापेक्षा ४.१ टक्क्यांनी जास्त होत्या. याच कालावधीत अखिल भारतीय स्तरावर संयुक्त भांडवली संस्थांच्या संख्येत ३.९ टक्क्यांनी वाढ झाली. मार्च, २००३ अखेर भारतात असलेल्या एकूण संयुक्त भांडवली संस्थांपैकी २१.९ टक्के संस्था महाराष्ट्रात होत्या. राज्यातील एकूण संयुक्त भांडवली संस्थांपैकी १,२२,२६० (९१ टक्के) खाजगी मर्यादित संस्था आणि १२,०९२ (९ टक्के) सार्वजनिक मर्यादित संस्था होत्या. वर्ष २००२-०३ ह्या कालावधीत राज्यातील खाजगी मर्यादित संस्थांच्या संख्येत आधीच्या वर्षापेक्षा ४.६ टक्क्यांना वाढ झाली, तथापि त्याच कालावधीत सार्वजनिक मर्यादित संस्थांच्या संख्येत ०.६ टक्के घट झाली. राज्यातील या संस्थांचे भरणा केलेले भांडवल मार्च, २००२ अखेर असलेल्या ७८,०३२ कोटी रुपयांवरून वाढून मार्च, २००३ अखेर ८६,१८६ कोटी रुपये इतके झाले. ही वाढ १०.५ टक्के होती व ती अखिल भारतीय स्तरावरील वाढीपेक्षा (७.३ टक्के) जास्त होती. अखिल भारतीय स्तरावर अशा संस्थांचे भरणा केलेले भांडवल मार्च, २००२ अखेर आणि मार्च, २००३ अखेर अनुक्रमे ४,०५,७५३ कोटी रुपये आणि ४,३५,३११ कोटी रुपये होते. मार्च, २००३ अखेर भारतातील संयुक्त भांडवली संस्थांच्या भरणा केलेल्या भांडवलामध्ये महाराष्ट्राचा वाटा १९.८ टक्के होता.

अल्पबचत

६.१५ वित्तीय वर्ष २००३-०४ मध्ये अल्पबचती अंतर्गत ७,७०४ कोटी रुपयांच्या इष्टांकाच्या तुलनेत प्रत्यक्षात निव्वळ ११,०३३ कोटी रुपये जमा करण्यात आले होते व ते अल्पबचतीच्या निर्धारित इष्टांकापेक्षा २,७७६ कोटी रुपयांनी (४३ टक्के) जास्त होते. वर्ष २००३-०४, डिसेंबर, २००३ पर्यंत राज्य शासनास अल्पबचत योजनेअंतर्गत

६,५६५ कोटी रुपये केंद्र शासनाकडून केंद्रिय कर्ज सहाय्य म्हणून प्राप्त झाले. वर्ष २००४-०५ मध्ये डिसेंबर, २००४ पर्यंत ११,६३६ कोटी रुपये केंद्रिय कर्ज सहाय्य मंजूर करण्यात आले. वित्तीय वर्ष २००४-०५ मध्ये अल्पबचतीचा ११,१७१ कोटी रुपये इष्टांक ठेवण्यात आला असून मार्च, २००५ अखेरपर्यंत १२,००० कोटी रुपये जमा होणे अपेक्षित आहे.

लॉटरी

६.१६ राज्य शासनाने सामाजिक व आर्थिक विकासासाठी निधी उभारण्याकरिता राज्यामध्ये १ मार्च, १९६९ पासून लॉटरी योजना सुरु केली. या योजनेखाली भव्यतम, मासिक, साप्ताहिक आणि २ अंकी सोडती काढण्यात येतात. २००३-०४ मध्ये लॉटरीपासून ९.२० कोटी रुपये निव्वळ नफा झाला होता, तर आधीच्या वर्षी हा नफा १०.४८ कोटी रुपये झाला होता. वर्ष २००४-०५ मध्ये नोव्हेंबर, २००४ पर्यंत लॉटरीपासून अंदाजित १५.७३ कोटी रुपये नफा झाला. त्या तुलनेत आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत १.८८ कोटी रुपये नफा झाला होता. वर्ष २००४-०५ मध्ये लॉटरीपासून १७.८४ कोटी रुपये निव्वळ नफा अपेक्षित आहे. वर्ष २००४-०५ पासून महाराष्ट्र शासनाने लॉटरी तिकीट विक्रीवर विक्रीकर सुरु केला आहे. लॉटरी तिकीट विक्रीवरील विक्रीद्वारे ३३.०६ कोटी रुपये विक्रीकर राज्यास अपेक्षित आहे. महाराष्ट्र राज्याची ऑन लाईन लॉटरी ह्या वित्तीय वर्षाअखेर सुरु होणे अपेक्षित आहे.

भांडवली बाजार

६.१७ अतिरिक्त बचत विविध उत्पादक कार्याकडे वळवून अर्थव्यवस्थेचा विकास करण्यामध्ये भांडवली बाजार महत्त्वाची भूमिका पार पाडतो. महाराष्ट्रामध्ये मुंबई शेअर बाजार (बीएसई), राष्ट्रीय शेअर बाजार (एनएसई) व पुणे शेअर बाजार (पीएसई) असे तीन प्रमुख शेअर

बाजार कार्यरत आहेत. त्याशिवाय, ओव्हर दि काऊंटर स्टॉक एक्सचेंज (ओटीसीईआय) व इंटर कनेक्टड स्टॉक एक्सचेंज (आयसीएसई) हे दोन शेअर बाजार सुध्दा कार्यरत आहेत. राज्याच्या अर्थव्यवस्थेमध्ये गेल्या दोन दशकांत उत्पादक स्वरूपाची उत्पादने निर्माण करण्यामध्ये, रोजगार निर्मितीत तसेच शासनास महसूल मिळवून देण्यामध्ये भांडवली बाजाराची भूमिका महत्त्वाची ठरली असल्याचे दिसून आले आहे.

बाजारातील भांडवली मूल्य

६.१८ भारतीय शेअर बाजारातील समभागाच्या भांडवली मूल्यामध्ये २००३-०४ वर्षांमध्ये भरीव वाढ झाल्याची दिसून येते. राष्ट्रीय शेअर बाजार व मुंबई शेअर बाजारातील भांडवली मूल्य २००३-०४ वर्षांच्या १२ महिन्यात दुप्पट झाले होते. राष्ट्रीय शेअर बाजार व मुंबई शेअर बाजारातील भांडवली मूल्य मार्च, २००४ अखेर अनुक्रमे ११,२०,९७६ कोटी रुपये व १२,०१,२०७ कोटी रुपये इतके होते. राष्ट्रीय शेअर बाजार (भांडवली बाजार वर्तुळात) व मुंबई शेअर बाजारामध्ये उपलब्ध रोखे व्यवहारातून आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत भांडवली रकमांमध्ये अनुक्रमे १०९ टक्के व ११० टक्के एवढी वाढ झाली. वर्ष २००३-०४ मध्ये भांडवलीकरणामध्ये राष्ट्रीय शेअर बाजार व मुंबई शेअर बाजार मूल्याचे प्रमाण ४८:५२ एवढे होते.

प्राथमिक रोखे बाजार

प्रारंभिक सार्वजनिक देकार

६.१९ सेबी ह्या संस्थेने पुरविलेल्या माहितीनुसार चालू वर्षी ३० नोव्हेंबर, २००४ पर्यंत संपूर्ण देशामध्ये प्रारंभिक सार्वजनिक देकाराद्वारे १७,०३४ कोटी रुपये भांडवली उभारणी केली. या रकमेत महाराष्ट्रातील वाटा (७,१८६ कोटी रुपये) ४२ टक्के इतका होता.

दुय्यम रोखे बाजार

उलाढालीची व्याप्ती

६.२० सर्व शेअर बाजारातील रोखे व्यवहारात गेल्या काही वर्षांत मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून येते. भारतातील सर्व २३ शेअर बाजारातील उलाढाल वर्ष १९९४-९५ मधील एकूण १,६४,०५७ कोटी रुपयांच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये १६,२०,४९७ कोटी रुपयांपर्यंत वाढलेली दिसून येते. वर्ष २००३-०४ मध्ये देशातील सर्व शेअर बाजारांच्या उलाढालीमध्ये महाराष्ट्रातील वाटा ९८.९ टक्के इतका होता. महाराष्ट्रातील शेअरबाजारनिहाय व देशातील उर्वरित शेअर बाजारांची एकत्रित उलाढाल तत्का क्र. ६.३ मध्ये दिली आहे.

राष्ट्रीय शेअर बाजार

६.२१ राष्ट्रीय शेअर बाजार एप्रिल, १९९३ पासून मान्यताप्राप्त शेअर बाजार म्हणून सुरू झाला. भारतातील रोखे बाजारातील सुधारणासंबंधी ही एक महत्त्वाची घटना होती. राष्ट्रीय शेअर बाजार

शेअर बाजारातील उलाढाल

| शेअर बाजार | उलाढाल (रुपये कोटी) | | टक्केवारी | |
|-------------------------|---------------------|------------------|--------------|--------------|
| | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४ |
| महाराष्ट्र | | | | |
| राष्ट्रीय | ६,१७,९८९ | १०,९९,५३४ | ६३.८ | ६७.९ |
| मुंबई | ३,१४,०७३ | ५,०२,६१८ | ३२.४ | ३१.० |
| पुणे | २ | - | - | - |
| आयसीएसई | ६५ | - | - | - |
| ओटीसीईआय | २ | १६ | - | - |
| भारतातील उर्वरित | ३६,७७९ | १८,३२९ | ३.८ | १.१ |
| एकूण | ९,६८,९०८ | १६,२०,४९७ | १००.० | १००.० |

आधार :- सेबी वार्षिक अहवाल २००३-०४

स्थापण्यामागील उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे होती. अ) सर्व प्रकारच्या रोखे व्यवहारांसाठी देशभर सुविधा निर्माण करणे, ब) संपर्क जाळे उभारून त्याद्वारे देशातील सर्व गुंतवणुकदारांसाठी व्यवहाराची समान संधी उपलब्ध करून देणे, क्र) इलेक्ट्रॉनिक व्यापार पद्धतीचा वापर करून चांगला सक्षम व पारदर्शी असा रोखे बाजार उपलब्ध करून देणे, ड) कमी वेळात व्यवहार पूर्ण करणे आणि हिशोबाच्या पुस्तकी नोंदी पूर्ण करणे व इ) शेअरबाजारास सद्यःस्थितीतील आंतरराष्ट्रीय दर्जा प्राप्त करून देणे.

६.२२ २००२-०३ मध्ये राष्ट्रीय शेअर बाजारात झालेल्या एकूण ६,१७,९८९ कोटी रुपयांच्या उलाढालीच्या तुलनेत वर्ष २००३-०४ मध्ये ७८ टक्के वाढ होऊन ती १०,९९,५३४ कोटी रुपये इतकी झाली.

व्हेरीस्मॉल अॅपरचर टर्मिनल्स

६.२३ एनएसईची ऑनलाइन व्यवहार करण्यासाठी ३१ ऑक्टोबर, २००४ रोजी देशातील ३५६ शहरांमध्ये २,८७३ व्हेरी स्मॉल अॅपरचर टर्मिनल्स (व्हीसेंट) चालू होती. त्यापैकी ६०९ व्हीसेंट (२१ टक्के) महाराष्ट्रातील १९ शहरात कार्यरत होती.

मुंबई शेअर बाजार

६.२४ शंभर वर्षांहून अधिक काळ कार्यरत असलेला मुंबई शेअर बाजार, हा देशातील भांडवली बाजारात फार महत्त्वाची भूमिका पार पाडीत आहे. इतर शेअर बाजारांप्रमाणे २००३-०४ मध्ये मुंबई शेअर बाजारातील उलाढालीतसुध्दा वाढीचा कल दिसून आला. मुंबई शेअर बाजारातील २००२-०३ मधील उलाढाल ३,१४,०७३ कोटी रुपये होती, ती ६० टक्क्यांनी वाढून २००३-०४ मध्ये ५,०२,६१८ कोटी रुपये झाली.

सिक्युरिटी अँड एक्स्चेंज बोर्ड ऑफ इंडिया

६.२५ गुंतवणूकदारांचे संरक्षण व बाजाराचा विकास या दुहेरी उद्दिष्टांची पूर्तता सेबी अधिनियम, १९९२ च्या तरतुदीनुसार करीत आहे. शेअर बाजारांचे कामकाज सक्षमतेने चालावे आणि गुंतवणूकदारांचे हितसंबंध सुरक्षित राखावेत यासाठी सेबी त्यांची विद्यमान धोरणे व कार्यक्रम यांचा सातत्याने आढावा घेऊन मूल्यमापन करते, व त्याप्रमाणे नवीन धोरणे व नवीन अधिनियम तयार करण्यामध्ये कार्यरत असते.

६.२६ गुंतवणूकदारांचे हित जपण्यासाठी सेबी त्यांची तपास यंत्रणा अलिकडच्या वर्षात अधिक बळकट करण्याची दक्ष राहत आहे. सेबीने वर्ष २००३-०४ अखेरपर्यंत प्राप्त झालेल्या एकूण तक्रारीपैकी ९४.५० टक्के प्रकरणांचे निवारण केले आहे. आधीच्या वर्षापर्यंत तक्रार निवारणाची टक्केवारी ९४.९९ एवढी होती. वर्ष २००३-०४ मध्ये सेबीकडे ३६,७४४ तक्रारी प्राप्त झाल्या होत्या आणि वर्ष अखेर १,५३,०२८ तक्रारी निवारणार्थ सेबीकडे प्रलंबित होत्या.

रोखे दलाल

६.२७ वर्ष २००३-०४ मध्ये १४१ नवीन दलालांनी नोंदणी केली तर जुन्या २९२ दलालांनी नुतनीकरण केले नाही. दि. ३१ मार्च, २००४ रोजी दलालांची संख्या ९,३६८ होती ती आधीच्या वर्षाच्या संख्येपेक्षा १५१ ने कमी होती.

अभौतिकीकरण

६.२८ रोखे किंमत व जोखीम पत्करण्याची क्षमता भांडवली बाजारात फार महत्त्वाचे दोन घटक आहेत. अभौतिकीकरणामुळे 'शेअर्सची मालकी' व 'त्यासंबंधीचे बरेचसे' व्यवहार पूर्ण होण्यास गती प्राप्त

होऊन त्यातील जोखीम जवळजवळ नाहीशी झाली आहे. अ) नॅशनल सिक्युरिटीज अँड डिपॉझिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) व ब) सेंट्रल डिपॉझिटरी सर्व्हिसेस लिमिटेड (सीडीएसएल) ह्या दोन संचयिका गुंतवणूकदारांना डिमेंट सेवा पुरवित आहेत. वर्ष २००३-०४ पर्यंत अभौतिकीकरणासाठी एनएसडीएलकडे ५,२१६ कंपन्यांनी तर सीडीएसएलकडे ४,८१० कंपन्यांनी करारनामा केला होता. रोख्यांच्या अभौतिकीकरणामध्ये वाढ झाली असून एनएसडीएल व सीडीएसएल मध्ये अनुक्रमे ८,३६९ कोटी व १,४०१ कोटीचे रोखे होते.

६.२९ एनएसडीएल डिपॉझिटरी पध्दत वापरणाऱ्यांच्या संख्येमध्ये सातत्याने वाढत आहे, ऑगस्ट, २००४ अखेरपर्यंत भारतामध्ये ४७ लाख गुंतवणूकदारांची खाती होती, त्यापैकी २६ टक्के अर्थात १२ लाख खातेदार हे महाराष्ट्रातील होते.

म्युच्युअल फंड

६.३० भारतामध्ये युनिट ट्रस्ट ऑफ इंडियाच्या स्थापनेपासून (१९६४) मध्ये म्युच्युअल फंड उद्योगाची सुरुवात झाली. वर्ष १९८७ पासून सार्वजनिक बँका व वित्तीय संस्थांनी म्युच्युअल फंड स्थापन करण्यास सुरुवात केली. १९९३ पासून खाजगी क्षेत्रातील बँकाना व विदेशी संस्थांना म्युच्युअल फंड स्थापन करण्यास परवानगी देण्यात आली. ह्या वेगाने वाढणाऱ्या उद्योगाचे सेबीकडून नियमन केले जाते. दि. ३१ डिसेंबर, २००४ पर्यंत एकूण २९ म्युच्युअल फंड असून त्यांच्या ४२९ योजनांमध्ये १,५०,५३७ कोटी रुपये मत्ता (संपत्ती) आहे. दि. ३१ डिसेंबर, २००४ पर्यंत भारतातील एकूण म्युच्युअल फंडांपैकी २६ (९० टक्के) म्युच्युअल फंडाची महाराष्ट्रात नोंदणी झालेली असून त्यांची संकलित निव्वळ मत्ता १,४८,४३४ कोटी रुपये (९९ टक्के) एवढी होती.



किंमती व वितरण

चलनवाढ

७.१ चलनवाढ हा आर्थिक स्थैर्य दर्शविणारा बृहद् पातळीवरील एक महत्त्वाचा निर्देशक आहे. उच्च पातळीवरील चलनवाढ कुटुंबाच्या जमाखर्चावर अनिष्ट परिणाम करते तसेच ती गरीबांकरिता अत्यंत जाचक ठरते व अर्थव्यवस्थेअंतर्गत विकासकामांवरही प्रतिकूल परिणाम करते. या उलट २ ते ५ टक्के इतका चलनवाढीचा सौम्य दर हा आर्थिक वृद्धीसाठी पोषक समजला जातो. चलनवाढीचा दर मोजण्यासाठी किंमती निर्देशांक ही सांख्यिकीय पध्दती अवलंबविण्यात येते.

७.२ राष्ट्रीय स्तरावर किरकोळ व घाऊक किंमतीतील बदल मोजण्यासाठी सध्या किंमती निर्देशांकाच्या पाच मालिका तयार करण्यात येतात. यापैकी औद्योगिक कामगार, शेतमजूर, ग्रामीण मजूर व नागरी श्रमिकेतर कर्मचारी या लोकसंख्येच्या विशिष्ट गटांसाठी तयार केलेले ग्राहक किंमती निर्देशांक (ग्राकिंनि) दैनंदिन उपभोग्य वस्तूंच्या किंमतीतील प्रासिक बदल मोजण्यासाठी वापरले जातात. तसेच अर्थव्यवस्थेमध्ये दर आठवड्यात होणाऱ्या सर्व वस्तूंच्या खरेदी विक्रीतील घाऊक किंमतीमधील थळउतार मोजण्यासाठी घाऊक किंमती निर्देशांकाचा वापर केला जातो. घाऊक किंमती निर्देशांक हा घाऊक व्यापार व देवाणघेवाण यांचे प्रतिनिधित्व करणारा व दर आठवड्याला उपलब्ध होणारा निर्देशांक असल्याने अर्थव्यवस्थेतील चलनवाढीचा दर मोजण्याकरिता सर्वमान्य निर्देशक म्हणून भारतात वापरला जातो.

भारतातील किंमतीविषयक स्थिती

घाऊक किंमती निर्देशांकावर आधारित चलनवाढ

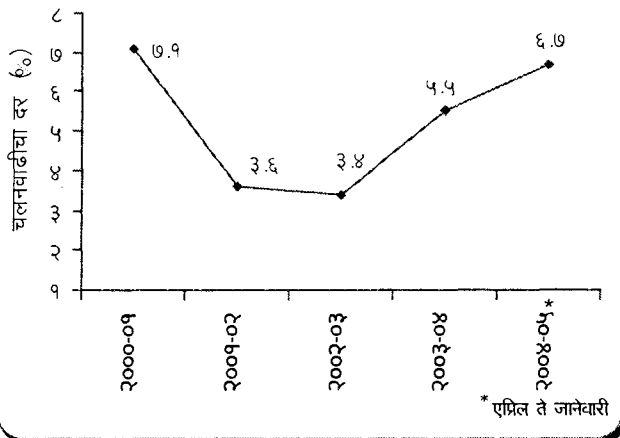
७.३ घाऊक किंमती निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचा दर (बिंदू ते बिंदू) ऑगस्ट, २००४ मध्ये ८.५ टक्के इतका झाला. यानंतर तो सौम्य होऊन जानेवारी, २००५ मध्ये ५.५ टक्के इतका झाला. हा दर मागील वर्षाच्या तत्सम महिन्याच्या (जानेवारी, २००४) ५.५ टक्के या चलनवाढीच्या दरापेक्षा कमी होता. जानेवारी, २००५ या महिन्यातील चलनवाढीचा दर कमी होण्याचे प्रमुख कारण खाद्यपदार्थ : इंधन यांच्या किंमतीत झालेली घट हे होते. तथापि, २००४-०५ मध्ये एप्रिल, २००४ ते जानेवारी, २००५ या कालावधीतील सरासरी चलनवाढीचा दर (६.७ टक्के) हा मागील वर्षातील तत्सम कालावधीतील चलनवाढीच्या दरापेक्षा (५.५ टक्के) जास्त होता.

भारतातील चलनवाढ : एक दृष्टिक्षेप

घाऊक किंमती निर्देशांकावर आधारित चलनवाढीचा दर १९७० च्या दशकाच्या मध्यापर्यंत तसाच तो १९९० च्या दशकाच्या पहिल्या चार वर्षांतही दोन अंकी होता. हा दोन अंकी असलेला चलनवाढीचा दर १९९१-९२ मध्ये १३.७ टक्के या उच्चतम पातळीवर पोहोचला. चलनवाढीचा वेग १९९५-९६ पासून सातत्याने कमी होत राहिला आणि १९९६-९७ ते २०००-०१ या कालावधीत चलनवाढीचा सरासरी दर ५ टक्के इतका माफक राहिला. २००१ - ०३ या दोन वर्षांत ३.५ टक्क्यांदरम्यान च्या आसपास कमी राहिलेला चलनवाढीचा सरासरी दर २००३-०४ मध्ये ५.५ टक्क्यांपर्यंत वाढला व पुढे २००४-०५ मध्ये (जानेवारी, २००५ पर्यंत) तो ६.७ टक्क्यांपर्यंत पोहोचला. घाऊक किंमतीचा निर्देशांक भारत सरकारचे आर्थिक सल्लागार, वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय, हे प्रकाशित करते.

७.४ २००१-०२ आणि २००२-०३ या वर्षांत चलनवाढीचा दर ३.५ टक्के इतका माफक राहिल्यानंतर त्याने २००३-०४ मध्ये ५ टक्क्यांची पातळी ओलांडली. सदर वर्षात चलनवाढीचा सरासरी दर जरी ५.५ टक्के इतका साधारण राहिला तरी ऑगस्ट, २००३ पासून (४.० टक्के)

घाऊक किंमती निर्देशांकावर आधारित अखिल भारतीय चलनवाढीचा दर



त्याच्यात वाढ होण्यास सुरुवात झाली व जानेवारी, २००४ मध्ये तो ६.५ टक्क्यांच्या जवळपास पोहोचला. त्यानंतर, एप्रिल-मे, २००४ मध्ये चलनवाढीचा दर कमी होऊन ४ टक्क्यांच्या आसपास राहिला आणि त्यानंतर हा दर वाढण्यास सुरुवात झाली. किंमती मधील वाढ ही मुख्यत्वे उशिरा सुरु झालेला पावसाळा, आंतरराष्ट्रीय बाजारात सातत्याने वाढलेल्या कच्च्या तेलाच्या किंमती व स्टीलच्या किंमतीतील वाढ यामुळे झालेली आहे. ऑगस्ट, २००४ मध्ये चलनवाढीचा दर ८.५ टक्के या उच्चतम पातळीवर पोहोचला. शासनाने राबविलेल्या वित्तीय आणि करविषयक धोरणामुळे तसेच आंतरराष्ट्रीय बाजारात कच्च्या तेलाच्या किंमतीत हळूहळू झालेली घट यामुळे त्यानंतरच्या महिन्यात चलनवाढीचा दर नियंत्रणात आला. चलनवाढीचा हा दर डिसेंबर, २००४ मध्ये ७ टक्के इतका खाली आला तर, जानेवारी, २००५ मध्ये तो ६ टक्क्यांपेक्षाही खाली गेला. अखिल भारतीय घाऊक किंमती निर्देशांकाचे प्रमुख गटानुसार अलिकडच्या काळाकरिता निर्देशांक आणि चलनवाढीचे दर तक्ता क्र.७.१ मध्ये दिले आहेत.

तक्ता क्रमांक. ७.१

अखिल भारतीय घाऊक किंमतीचे प्रमुख गटवार निर्देशांक
(पायाभूत वर्ष १९९३-९४=१००)

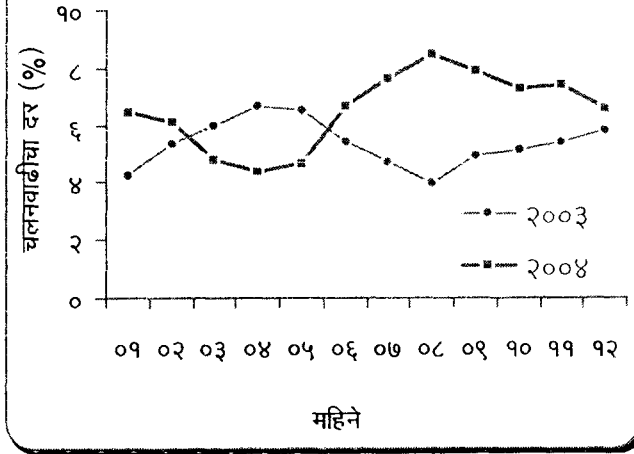
| वर्ष/महिना | अखिल भारतीय घाऊक किंमती निर्देशांक | | | | |
|--|------------------------------------|-------------------------------|-----------------------|------------|---------------|
| | प्राथमिक वस्तू | इंधन, शक्ती, दिवाबत्ती व वंगण | वस्तुनिर्माण उत्पादने | सर्व वस्तू | चलन वाढीचा दर |
| भार | २२.०२ | १४.२३ | ६३.७५ | १००.०० | - |
| २०००-०१ | १६२.५ | २०८.१ | १४१.७ | १५५.७ | ७.१ |
| २००१-०२ | १६८.४ | २२६.७ | १४४.३ | १६१.३ | ३.६ |
| २००२-०३ | १७४.० | २३९.२ | १४८.१ | १६६.८ | ३.४ |
| २००३-०४ | १८१.५ | २५४.६ | १५६.४ | १७५.९ | ५.५ |
| २००३-०४* | १८१.४ | २५२.९ | १५५.६ | १७५.९ | ५.५ |
| २००४-०५* | १८८.८ | २७८.४ | १६५.७ | १८६.८ | ६.७ |
| एप्रिल, ०४ | १८३.५ | २६३.६ | १६१.२ | १८०.७ | ४.४ |
| जाने., ०५(अ) | १८५.४ | २८७.९ | १६७.४ | १८८.५ | ५.५ |
| *१० महिन्यांची सरासरी (एप्रिल ते जानेवारी) | | | | | (अ) अस्थायी |

७.५ 'प्राथमिक वस्तू' या प्रमुख गटाच्या एप्रिल, २००४ ते जानेवारी, २००५ या कालावधीचा सरासरी निर्देशांक आधीच्या वर्षातील तत्सम कालावधीतील सरासरी निर्देशांकापेक्षा ४.१ टक्क्यांनी वाढला. ही वाढ 'खाद्य वस्तू' (२.७ टक्के) आणि 'खनिजे' (११७.६ टक्के) या उपगटांच्या सरासरी निर्देशांकात झालेल्या वाढीचा एकत्रित परिणाम होता.

७.६ 'इंधन, शक्ती, दिवाबत्ती व वंगण' या प्रमुख गटाच्या सरासरी निर्देशांकांत एप्रिल, २००४ ते जानेवारी, २००५ या कालावधीत १०.१ टक्के वाढ झाली. ही वाढ मुख्यत्वे 'कोळसा खनिज' आणि 'खनिज तेल' या उपगटांच्या सरासरी निर्देशांकात झालेल्या वाढीच्या परिणामी होती.

७.७ 'वस्तुनिर्माण उत्पादने' या प्रमुख गटाच्या सरासरी निर्देशांकात एप्रिल, २००४ ते जानेवारी, २००५ या कालावधीत ६.५ टक्के वाढ झाली. आधीच्या वर्षातील तत्सम कालावधीत ही वाढ ५.४ टक्के होती.

घाऊक किंमती निर्देशांकानुसार
चलनवाढीचा दर



७.८ २००४-०५ या वित्तीय वर्षातील मासिक अखिल भारतीय घाऊक किंमती निर्देशांक एप्रिल, २००४ मध्ये १८०.७ होता, तो ४.३ टक्क्यांनी वाढून जानेवारी, २००५ मध्ये १८८.५ झाला.

ग्राहक किंमतीच्या निर्देशांकांवर आधारित चलनवाढ

७.९ अर्थव्यवस्थेतील विविध सामाजिक व आर्थिक गटांकरिता ग्राहक किंमती निर्देशांकांच्या चार मालिका सध्या प्रचलित आहेत. या बाबतचे विवेचन पुढे करण्यात आलेले आहे.

औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक

७.१० या निर्देशांकाद्वारे देशातील औद्योगिक दृष्ट्या विकसित अशा ७० केंद्रांमधील जीवनावश्यक वस्तू व सेवा यांच्या किरकोळ मासिक किंमतीतील बदल मोजले जातात. ह्या ७० केंद्रांपैकी मुंबई, पुणे, नागपूर सोलापूर आणि नाशिक ही पाच केंद्रे महाराष्ट्रातील आहेत. सदर निर्देशांक (पायाभूत वर्ष - १९८२), श्रम केंद्र, सिमला या कार्यालयामार्फत प्रकाशित करण्यात येतो. सर्वात अलिकडच्या काळाकरिता प्रमुख गटानुसार औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक आणि चलनवाढीचा दर तक्ता क्रमांक ७.२ मध्ये दिले आहेत. या शिवाय जळगांव, नांदेड औरंगाबाद, कोल्हापूर व अकोला या पाच केंद्रासाठी सुध्दा औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमती निर्देशांक कामगार आयुक्त, महाराष्ट्र शासनांच्या कार्यालयामार्फत तयार केले जातात.

७.११ चलनवाढीचा दर ५ टक्क्यांपेक्षा कमी असलेले वित्तीय व २००४-०५ (एप्रिल ते डिसेंबर) हे सलग सहावे वर्ष आहे. वित्तीय वर्षाच्या सुरुवातीला चलनवाढीचा दर २.२ टक्के इतका होता, तो त्या पुढील महिन्यांत सातत्याने वाढून सप्टेंबर, २००४ मध्ये ४.८ टक्के इतका झाला त्यानंतर तो डिसेंबर मध्ये ३.८ टक्के इतका खाली आला. औद्योगिक

तक्ता क्रमांक. ७.२

औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचे प्रमुख गटवार निर्देशांक

(पायाभूत वर्ष १९८२=१००)

| वर्ष/महिना | खाद्यपदार्थ | पान,सुपारी,तंबाखू व मादक पदार्थ | इंधन व दिवाबत्ती | निवास | कापड, बिछाना व पादत्राणे | संकीर्ण | सर्व साधारण निर्देशांक | चलन वाढीचा दर |
|---------------|-------------|---------------------------------|------------------|-------|--------------------------|---------|------------------------|---------------|
| मार्च | ५७.०० | ३.१५ | ६.२८ | ८.६७ | ८.५४ | १६.३६ | १००.०० | - |
| २०००-०१ | ४५३ | ५९२ | ४५४ | ४६३ | ३१५ | ४४२ | ४४४.२ | ३.८ |
| २००१-०२ | ४६६ | ६२० | ४८३ | ५१४ | ३२५ | ४६३ | ४६३.३ | ४.३ |
| २००२-०३ | ४७७ | ६३३ | ५३४ | ५५६ | ३३२ | ४८९ | ४८१.८ | ४.० |
| २००३-०४ | ४९५ | ६५५ | ५६६ | ५८२ | ३३८ | ५०७ | ५००.३ | ३.९ |
| २००३-०४* | ४९५ | ६५१ | ५६१ | ५७९ | ३३८ | ५०५ | ४९९.१ | ३.८ |
| २००४-०५* | ५०७ | ६७३ | ६०९ | ६३१ | ३४५ | ५२२ | ५१७.६ | ३.७ |
| एप्रिल, २००४ | ४९४ | ६६९ | ५९२ | ५९२ | ३४४ | ५१५ | ५०४.० | २.२ |
| डिसेंबर, २००४ | ५०५ | ६८१ | ६२५ | ६५१ | ३४६ | ५२९ | ५२१.० | ३.८ |

* ९ महिन्यांची सरासरी (एप्रिल ते डिसेंबर)

कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचा एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीतील सरासरी निर्देशांक (५१७.६), हा आधीच्या वर्षाच्या याच कालावधीतील सरासरी निर्देशांकापेक्षा ३.७ टक्क्यांनी अधिक होता. २००४-०५ या वित्तीय वर्षात डिसेंबर, २००४ मध्ये औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचा निर्देशांक ५२१ होता. मार्च, २००४ मधील निर्देशांकापेक्षा (५०४) तो ३.४ टक्क्यांनी अधिक होता. सदर निर्देशांकातील बदलानुसार केंद्रीय कर्मचा-यांची वेतन भरपाई वर्षात दोन वेळा केली जाते.

नागरी श्रमिकेतर कर्मचा-यांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचा निर्देशांक

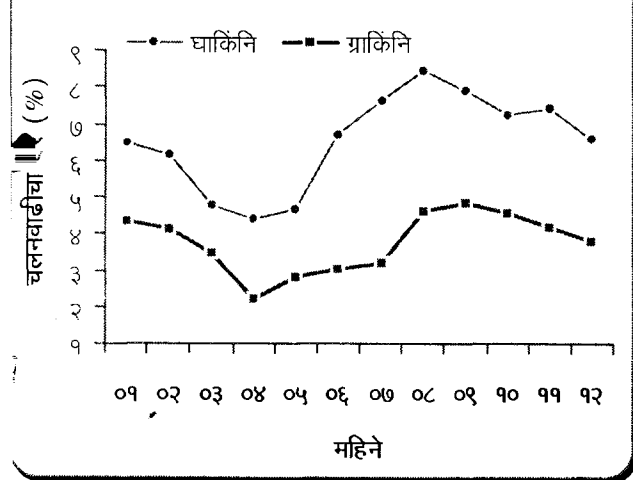
७.१३ नागरी श्रमिकेतर कर्मचा-यांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचा निर्देशांक (पायाभूत वर्ष १९८४-८५) देशातील ५९ शहरांकरिता केंद्रीय सांख्यिकीय संघटनेकडून दरमहा प्रकाशित केले जातात. या शहरांपैकी मुंबई, औरंगाबाद, नागपूर, पुणे आणि सोलापूर ही पाच शहरे महाराष्ट्रातील आहेत.

७.१४ हा निर्देशांक विविध शहरांतील जीवनावश्यक वस्तू आणि सेवा यांच्या किरकोळ किंमतींतील बदल दर्शवितो. बँका आणि परकीय राजदूतावास त्यांच्या कर्मचा-यांच्या वेतन भरपाईकरिता या निर्देशांकाचा उपयोग करतात. नागरी श्रमिकेतर कर्मचा-यांकरिताच्या ग्राहक किंमती निर्देशांकानुसार २००४-०५ या वर्षातील (एप्रिल ते डिसेंबर) चलनवाढीचा दर आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीच्या तुलनेत ३.६ टक्के होता, २००३-०४ या संपूर्ण वर्षासाठी तो ३.७ टक्के होता.

शेतमजूर आणि ग्रामीण मजूर यांच्याकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक

७.१५ श्रम केंद्र, सिमला हे देशासाठी व प्रत्येक राज्यासाठी शेतमजूर आणि ग्रामीण मजूर यांच्याकरिता स्वतंत्रपणे ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक (पायाभूत वर्ष-१९८६-८७) मासिक मालिकेच्या स्वरूपात प्रकाशित करते. २००४-०५ मध्ये (एप्रिल ते डिसेंबर) या कालावधीसाठी सरासरी ग्राहक किंमती निर्देशांकाचा चलनवाढीचा दर शेतमजूर व ग्रामीण मजूर या दोन्हीसाठी २.६ टक्क्यांच्या जवळपास राहिला. कृषि क्षेत्रातील किमान वेतन ठरविण्याकरिता आणि ते सुधारित करण्याकरिता शेतमजुरांकरिता असलेल्या ग्राहक किंमती निर्देशांकाचा वापर केला जातो.

घाऊक किमती निर्देशांक (घाकिनि) व औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किमती निर्देशांक (ग्राकिनि) यानुसार वर्ष २००४ मधील चलनवाढीचे दर



७.१२ राज्याच्या दहा केंद्रातील औद्योगिक कामगारांकरिता प्रमुख गटवार ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक या प्रकाशनाच्या भाग - २ मधील तक्ता क्रमांक २३ मध्ये देण्यात आले आहेत.

महाराष्ट्रातील नागरी व ग्रामीण भागाकरिता ग्राहक किंमतींचे गटवार निर्देशांक

(पायाभूत वर्ष १९८२=१००)

| नागरी | | | | | | | ग्रामीण | | | | | | | | | | | | |
|------------------|----------------------------|-----------------------------|--------------------------------|--------------------------|---------------------|------------|------------------|---------------------|-------------------------------|--------------------------|---------------------|------------|------------------|---------------------|-------------------------------|--------------------------|---------------------|-------|-----|
| खाद्य- पदार्थ | पान, सुपारी व तंबाखू | इंधन, वीज व दिवाबत्ती | कापड, बिछाना व पादत्राणे | सर्व संकीर्ण वस्तू | चलन वाढीचा दर | वर्ष/महिना | खाद्य- पदार्थ | इंधन व दिवाबत्ती | कापड बिछाना व पादत्राणे | सर्व संकीर्ण वस्तू | चलन वाढीचा दर | वर्ष/महिना | खाद्य- पदार्थ | इंधन व दिवाबत्ती | कापड बिछाना व पादत्राणे | सर्व संकीर्ण वस्तू | चलन वाढीचा दर | | |
| ५४.१२ | २.०२ | ६.६७ | ५.९५ | ३१.२४ | १००.०० | — | ६१.६६ | ७.९२ | ७.७८ | २२.६४ | १००.०० | — | ६१.६६ | ७.९२ | ७.७८ | २२.६४ | १००.०० | — | |
| ४२१ | ५९४ | ३८० | ५१८ | ४५४ | ४३७.८ | ३.३ | २०००-०१ | ४१५ | ४०५ | ३८० | ५०३ | ४३१.२ | (-)१.२ | ४१५ | ४०५ | ३८० | ५०३ | ४३७.७ | १.५ |
| ४३० | ६०८ | ४२० | ५३८ | ४८१ | ४५५.३ | ४.० | २००१-०२ | ४१५ | ४३६ | ३८३ | ५१८ | ४३७.७ | १.५ | ४२६ | ४५६ | ३९४ | ५२२ | ४४७.८ | २.३ |
| ४४१ | ६२६ | ४५८ | ५४४ | ४९६ | ४६८.९ | ३.० | २००२-०३ | ४२६ | ४५६ | ३९४ | ५२२ | ४४७.८ | २.३ | ४४२ | ४५९ | ४१३ | ५२३ | ४६१.४ | ३.० |
| ४५७ | ६४५ | ४६१ | ५५० | ५०२ | ४८०.८ | २.६ | २००३-०४ | ४४२ | ४५९ | ४१३ | ५२३ | ४६१.४ | ३.० | ४४२ | ४५९ | ४१३ | ५२३ | ४६१.४ | ३.० |
| ४५६ | ६४४ | ४६० | ५५१ | ५०१ | ४८०.० | २.४ | २००३-०४* | ४३८ | ४५७ | ४१० | ५२० | ४५८.४ | २.३ | ४३८ | ४५७ | ४१० | ५२० | ४५८.४ | २.३ |
| ४७२ | ६५७ | ४७० | ५५१ | ५११ | ४९२.३ | २.६ | २००४-०५* | ४६७ | ४६२ | ४१८ | ५४० | ४७९.३ | ४.६ | ४६७ | ४६२ | ४१८ | ५४० | ४७९.३ | ४.६ |
| ४५८ | ६५२ | ४६३ | ५४७ | ५०९ | ४८३.६ | २.० | एप्रिल, २००४ | ४४८ | ४५३ | ४१५ | ५३७ | ४६६.२ | ३.६ | ४४८ | ४५३ | ४१५ | ५३७ | ४६६.२ | ३.६ |
| ४७० | ६५५ | ४७९ | ५४८ | ५२१ | ४९५.० | २.७ | डिसें., २००४ | ४७३ | ४६५ | ४२३ | ५६८ | ४८९.८ | ४.६ | ४७३ | ४६५ | ४२३ | ५६८ | ४८९.८ | ४.६ |

* ९ महिन्यांची सरासरी (एप्रिल ते डिसेंबर)

ब. महाराष्ट्रातील किंमतीविषयक स्थिती

७.१६ खुल्या अर्थव्यवस्थेमुळे देशातील किंमतीविषयक स्थितीत होणा-या बदलाचा परिणाम राज्यातील किंमतीच्या स्थितीवरही होत असतो. राज्यातील किंमतीविषयक स्थितीचा आढावा घेण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाचे अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय नागरी आणि ग्रामीण भागातील निवडक केंद्रातून जीवनावश्यक वस्तूंच्या किरकोळ किंमती व ग्राहकांनी सेवांसाठी दिलेला मोबदला या बाबतची माहिती नियमितपणे गोळा करते. या किंमतींच्या आधारे राज्याच्या नागरी आणि ग्रामीण भागाकरिता वेगवेगळे ग्राहक किंमतीचे मासिक निर्देशांक (पायाभूत वर्ष-१९८२) तयार करण्यात येतात. अशा प्रकारे राज्यासाठी तयार केलेल्या निर्देशांकांनुसार २००४-०५ (डिसेंबर, २००४ पर्यंत) मध्ये राज्यातील नागरी व ग्रामीण भागातील चलनवाढीचा दर अखिल भारतीय पातळीवरील ग्राहक किंमती निर्देशांकांनुसार चलनवाढीच्या दराप्रमाणे ५ टक्क्याहून कमी राहिला असे दिसून येते.

राज्याच्या नागरी भागातील किंमतींतील कल

७.१७ २००४-०५ मधील एप्रिल ते डिसेंबर या कालावधीतील नागरी ग्राहक किंमतीचा सरासरी निर्देशांक आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील सरासरी निर्देशांकापेक्षा २.६ टक्क्यांनी जास्त होता. २००३-०४ मध्ये सुध्दा तत्सम वाढ २.६ टक्के होती.

७.१८ मार्च, २००४ (४८२.७) च्या तुलनेत डिसेंबर, २००४ चा नागरी ग्राहक किंमती निर्देशांक (४९५.०) २.५ टक्क्यांनी अधिक होता. या वाढीस प्रामुख्याने 'खाद्यपदार्थ' या गटातील ज्वारी, बटाटे, हळद, साखर इत्यादि वस्तूंच्या किंमतीतील वाढ कारणीभूत होती. अलिकडील काही वर्षांकरिता महाराष्ट्राच्या नागरी भागाकरिता असलेले ग्राहक किंमतीचे प्रमुख गटवार निर्देशांक आणि चलनवाढीचे दर तक्ता क्रमांक ७.३ मध्ये दिले आहेत.

राज्याच्या ग्रामीण भागातील किंमतींतील कल

७.१९ २००४-०५ मधील एप्रिल ते डिसेंबर या कालावधीतील ग्रामीण ग्राहक किंमतीचा सरासरी निर्देशांक आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील सरासरी निर्देशांकापेक्षा ४.६ टक्क्यांनी जास्त होता. २००३-०४ मधील तत्सम वाढ ३.० टक्के होती.

७.२० ग्रामीण ग्राहक किंमतीचा निर्देशांक मार्च, २००४ (४६७.३) च्या तुलनेत डिसेंबर, २००४ (४८९.८) मध्ये ४.८ टक्क्यांनी जास्त होता. ही वाढ मुख्यत्वे 'खाद्यपदार्थ' या गटातील ज्वारी, तांदूळ, बटाटे, गूळ, साखर इत्यादि वस्तूंच्या किंमतीत झालेल्या वाढीमुळे होती. अलिकडील काही वर्षांकरिता महाराष्ट्राच्या ग्रामीण भागाकरिता ग्राहक किंमतीचे प्रमुख गटवार निर्देशांक व चलनवाढीचे दर तक्ता क्रमांक ७.३ मध्ये दिले आहेत.

महाराष्ट्रातील शेतमजूर आणि ग्रामीण मजूर यांच्याकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक

७.२१ श्रम केंद्र, सिमला यांच्याकडून प्रकाशित करण्यात आलेल्या राज्यातील शेतमजूर आणि ग्रामीण मजूर यांच्याकरिता ग्राहक किंमती निर्देशांकांनुसार २००४-०५ मधील एप्रिल ते डिसेंबर या काळातील शेतमजूर व ग्रामीण मजुरांकरिता सरासरी ग्राहक किंमती निर्देशांकाची दोन्ही मालिकेतील वाढ आधीच्या वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील सरासरी निर्देशांकापेक्षा ४.५ टक्क्यांनी जास्त होती.

७.२२ प्रमुख गटवार घाऊक आणि ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक व चलनवाढीचे दर या प्रकाशनाच्या भाग - २ मधील तक्ता क्रमांक २१ ते २८ मध्ये देण्यात आले आहेत.

नागरी पुरवठा

सार्वजनिक वितरण व्यवस्था

७.२३ राज्यातील दारिद्र्य रेषेखालील आणि दुर्गम भागातील कुटुंबांना प्रामुख्याने निवडक जीवनावश्यक वस्तू पुरवठ्याच्या किंमतीत उपलब्ध करून देण्याचे 'सार्वजनिक वितरण व्यवस्था' हे प्रमुख माध्यम असून ते राज्य शासनाच्या दारिद्र्य निर्मूलन कार्यक्रमातील एक महत्त्वाचा घटक आहे.

७.२४ राज्य शासनाने १ मे, १९९९ पासून त्रिस्तरीय पुरवठापत्रिका योजना सुरू केली आहे, धान्य केवळ गरजू कुटुंबांनाच मिळावे या उद्देशाने कुटुंबाच्या वार्षिक उत्पन्नानुसार कुटुंबाला पुरवठापत्रिका पुरविण्यात येते. ज्या कुटुंबाचे वार्षिक उत्पन्न १५,००० रुपयापर्यंत आहे त्याला पिवळ्या रंगाची, ज्याचे उत्पन्न १५,००१ रुपये ते एक लाख रुपये आहे त्याला केशरी रंगाची तर ज्याचे वार्षिक उत्पन्न एक लाख रुपयांपेक्षा जास्त आहे अशा कुटुंबास पांढऱ्या रंगाची पुरवठापत्रिका देण्यात येते. सधन कुटुंबे सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेतून धान्य विकत घेत नाहीत, असा सर्वसाधारण अनुभव लक्षात घेऊन पांढऱ्या रंगाच्या पुरवठापत्रिका धारकांना धान्य, साखर व डाळीचा पुरवठा बंद करण्यात आला आहे.

वितरित केलेल्या पुरवठा पत्रिका

(फेब्रुवारी, २००४ पर्यंत)

| प्रकार | संख्या |
|--------|-------------|
| पिवळी | ७३,४०,६५० |
| केशरी | १,४७,२१,५९९ |
| पांढरी | ८,८५,६५५ |

७.२५ राज्यात सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेमाफत तांदूळ, गहू, साखर आणि केरोसिन यांचे वितरण २००४-०५ या वर्षामध्ये चालू राहिले. उपरोक्त वस्तू बरोबरच विशेष अनुदानित सार्वजनिक वितरण योजनेअंतर्गत आदिवासी आणि अवर्षण प्रवण क्षेत्रांत आयोडीनमुक्त मीठ, चहापावडर, स्नानाचा आणि धुण्याचा साबण यांचे वितरण करण्यात येते.

७.२६ राज्यात डिसेंबर, २००३ अखेर अधिकृत शिधावाटप/रास्त गाव दुकानांची संख्या ४९,९२१ होती, त्यात वाढ होऊन फेब्रुवारी, २००४ अखेर ती ५०,१६० इतकी झाली. एप्रिल, २००२ पासून सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेमाफत केशरी पुरवठा पत्रिका धारकांना धान्यवाटपाचे प्रमाण दरमहा प्रति पुरवठापत्रिका ३५ किलो करण्यात आलेले असून तांदूळ आणि गहू यांची विक्री किंमत सप्टेंबर, २००४ पासून अनुक्रमे १०.०० रुपयावरून ९.५० रुपये आणि ७.२५ रुपयावरून ७.०० रुपये प्रति किलो अशी कमी करण्यात आली आहे.

लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्था

७.२७ गरीब जनता केंद्रस्थानी मानून सर्वसाधारण किमान गरजा कार्यक्रमांतर्गत सार्वजनिक वितरण व्यवस्था कार्यक्षम करण्याचा निर्णय केंद्र शासनाने घेतला असून, त्यासाठी 'लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण (लसावि) व्यवस्था' लागू केली. ही व्यवस्था दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांसाठी असून ती जून, १९९७ पासून संपूर्ण राज्यात राबविण्यात येत

आहे. केंद्र शासनाने महाराष्ट्र राज्याकरिता या व्यवस्थेअंतर्गत दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांची संख्या ६५.३४ लाख इतकी निश्चित केली आहे. या व्यवस्थेअंतर्गत पिवळी पुरवठापत्रिका धारकास दरमहा ३५ किलो धान्य (गहू व/किंवा तांदूळ) मिळण्यास पात्र आहे. गहू व तांदूळ यांच्या किरकोळ किंमती ऑक्टोबर, २००१ पासून अनुक्रमे ५ रुपये व ६ रुपये प्रति किलो अशा निर्धारित करण्यात आल्या आहेत.

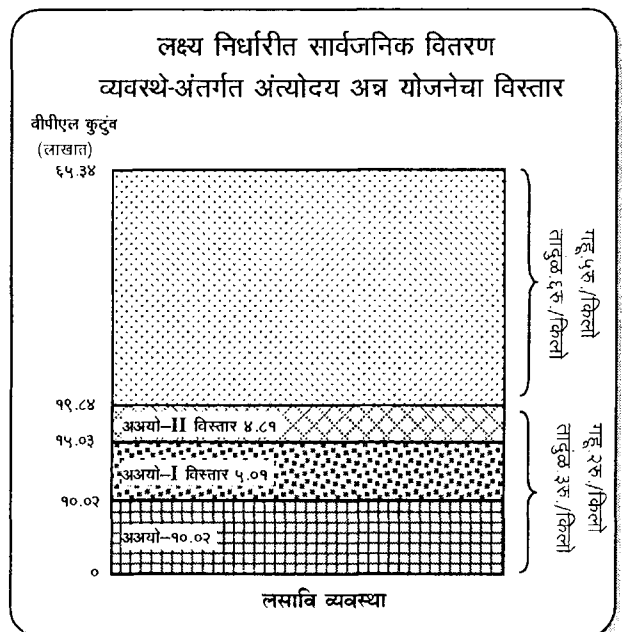
अंत्योदय अन्न योजना

७.२८ लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्था अधिक प्रभावशाली आणि गरिबांभिमूख करण्यासाठी डिसेंबर, २००० मध्ये केंद्र शासनाने अंत्योदय अन्न योजना (अंअयो) सुरू केली. या योजनेचा लाभ गरिबांतील अत्यंत गरीब कुटुंबांना द्यावयाचा असून केंद्र शासनाने या योजनेअंतर्गत महाराष्ट्र राज्याकरिता १०.०२ लाख लाभार्थींचा इष्टांक ठरवून दिला होता. त्यानुसार लाभार्थी निश्चित करण्यात आलेले असून त्यांना या योजनेअंतर्गत दरमहा ३५ किलो धान्य, गहू २ रुपये व तांदूळ ३ रुपये प्रति किलो अशा कमी दराने उपलब्ध करून देण्यात येत आहे.

विस्तारित अंत्योदय अन्न योजना

७.२९ केंद्र शासनाने अंत्योदय अन्न योजनेचा ऑक्टोबर, २००३ मध्ये विस्तार केला असून या योजनेअंतर्गत ५.०१ लाख लाभार्थी संख्या राज्यासाठी निर्धारित केली आहे. या योजनेचा लाभ कुटुंब प्रमुख विधवा असणाऱ्या, अपंग, दुर्धर रोगग्रस्त, ६० वर्षावरील वृद्ध तसेच आदिम आदिवासी अशा प्रकारच्या दुर्बल घटकाना द्यावयाचा आहे. केंद्र शासनाने अंत्योदय अन्न योजनेस परत दुसऱ्यांदा विस्तारित करून ४.८१ लाख लाभार्थींचा इष्टांक राज्यास दिलेला असून त्यानुसार लाभार्थी निवडीची कार्यवाही सुरू आहे.

पहिल्या व दुसऱ्या विस्तारित अंत्योदय योजना सह अंत्योदय अन्न योजनेत आतापर्यंत समाविष्ट करण्यात आलेले लाभार्थी लक्ष्य निर्धारित वितरण व्यवस्थेअंतर्गत असलेल्या एकूण लाभार्थ्या पैकी ३० टक्के इतके होतात.



अन्नधान्याचे नियतन आणि उचल

७.३० सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत राज्य शासनाला भारत सरकारने भारतीय अन्न महामंडळामार्फत तांदूळ व गव्हाचे नियतन करण्यात येते.

७.३०.१ २००३-०४ या वर्षात अंत्योदय अन्न योजनेअंतर्गत तांदूळ आणि गव्हाच्या उचलीचे शोकडा प्रमाण अनुक्रमे ९२ टक्के आणि ९१ टक्के इतके होते. चालू वर्षात डिसेंबर, २००४ पर्यंत तांदूळ आणि गव्हाच्या उचलीचे शोकडा प्रमाण अनुक्रमे ८५ टक्के आणि ९१ टक्के एवढे होते. नियतन आणि उचल यांची माहिती तक्ता क्रमांक ७.४ मध्ये दर्शविली आहे.

तक्ता क्रमांक..७.४

अंत्योदय अन्न योजनेअंतर्गत नियतन आणि उचल

(लाख टन)

| वर्ष | नियतन | | उचल | |
|----------|--------|------|--------------|--------------|
| | तांदूळ | गहू | तांदूळ | गहू |
| २००३-०४ | १.५८ | २.९३ | १.४५ (९२) | २.६८ (९१) |
| २००४-०५* | १.७८ | २.९० | १.५१ (८५) | २.६४ (९१) |

कंसातील आकडेवारी उचलीची नियतनाशी टक्केवारी दर्शवितात.

* डिसेंबर, ०४ पर्यंत

७.३०.२. २००३-०४ या वर्षात लक्ष्यनिर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत (दारिद्र्य रेषेखालील अंत्योदय अन्न योजना वगळून) तांदूळ आणि गव्हाच्या उचलीचे एकूण प्रमाण अनुक्रमे ७१ टक्के आणि ७० टक्के एवढे होते. चालू वर्षात डिसेंबर, २००४ पर्यंत, तांदूळ आणि गव्हाच्या उचलीचे एकूण प्रमाण अनुक्रमे ७६ टक्के आणि ८२ टक्के एवढे होते. नियतन व उचल यांची माहिती तक्ता क्रमांक ७.५ मध्ये दर्शविली आहे.

तक्ता क्रमांक ७.५

दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबासाठी (बीपीएल) अन्नधान्याचे नियतन आणि उचल

(लाख टन)

| वर्ष | नियतन | | उचल | |
|----------|--------|-------|--------------|---------------|
| | तांदूळ | गहू | तांदूळ | गहू |
| २००३-०४ | ८.०३ | १४.९० | ५.७१ (७१) | १०.३६ (७०) |
| २००४-०५* | ५.९५ | ९.९४ | ४.५५ (७६) | ८.२० (८२) |

कंसातील आकडेवारी उचलीची नियतनाशी टक्केवारी दर्शवितात.

* डिसेंबर, ०४ पर्यंत

७.३०.३ लक्ष्यनिर्धारित वितरण व्यवस्थेअंतर्गत करण्यात येणारा धान्य पुरवठा सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेच्या निम्त्या दराने करण्यात येत असूनही धान्य उचलीचे प्रमाण नियतनाच्या जवळपास २५ टक्क्याने कमी

होते, ह्याचे कारण रोजगार हमी योजना व इतर कल्याणकारी योजनांच्या अंतर्गत पुरविण्यात येणारे मुबलक अन्नधान्य हे एक असू शकेल.

७.३०.४. दारिद्र्य रेषेच्या वरील कुटुंबाची अन्नधान्यांची उचलीचे नियतनाशी प्रमाण नगण्य म्हणजेच एक टक्क्यापेक्षा कमी आहे. सार्वजनिक वितरण प्रणालीमधील आणि खुल्या बाजारातील अन्नधान्यांचे भाव यांच्यात असलेली कमी तफावत हे याचे एक कारण असू शकेल. यावरून असे दिसून येते की, दारिद्र्य रेषेवरील कुटुंबे सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेतून बाहेर पडलेली आहेत. नियतन आणि उचल यांची माहिती तक्ता क्रमांक ७.६ मध्ये दर्शविली आहे.

तक्ता क्रमांक.७.६

दारिद्र्य रेषेवरील कुटुंबासाठी (ए.पी.एल.)

अन्नधान्याचे नियतन आणि उचल

(लाख टन)

| वर्ष | नियतन | | उचल | |
|----------|--------|-------|---------------|---------------|
| | तांदूळ | गहू | तांदूळ | गहू |
| २००३-०४ | १६.५ | ३०.५१ | ०.०५ (०.३) | ०.३७ (१.२) |
| २००४-०५* | १२.३७ | २२.८८ | ०.०७ (०.६) | ०.२९ (१.३) |

कंसातील आकडेवारी उचलीची नियतनाशी टक्केवारी दर्शवितात.

* डिसेंबर, ०४ पर्यंत

विशेष अनुदानित सार्वजनिक वितरण योजना

७.३१ आदिवासी तसेच अवर्षण प्रवण क्षेत्रातील जनतेची अपुरी क्रयशक्ती विचारात घेऊन राज्य शासनाने आदिवासी तसेच अवर्षण प्रवण क्षेत्रासाठी दैनिक गरजेच्या काही अतिरिक्त वस्तू पुरविण्यासाठी 'विशेष अनुदानित सार्वजनिक वितरण योजना' नोव्हेंबर, १९९२ पासून सुरू केली आहे. ही योजना राज्याच्या आदिवासी क्षेत्रातील १५ जिल्ह्यांतील ६८ तालुक्यांमध्ये तसेच अवर्षण प्रवण क्षेत्रातील १२ जिल्ह्यांच्या ५६ तालुक्यांमध्ये राबविण्यात येते. तथापि, वर्ष २००४-०५ मध्ये अतिरिक्त वस्तूंची मागणी आदिवासी आणि अवर्षण प्रवण क्षेत्रांतून न आल्यामुळे वितरण करण्यात आले नाही. या योजनेअंतर्गत वितरित केल्या जाणा-या अतिरिक्त वस्तू, त्यांचे प्रति शिधापत्रकेवरील दरमहा प्रमाण आणि प्रति किलोग्रॅम किरकोळ विक्रीचे दर तक्ता क्र. ७.७ मध्ये दर्शविलेले आहेत.

तक्ता क्रमांक ७.७

विशेष अनुदानित सार्वजनिक वितरण योजनेअंतर्गत २००४-०५ मधील

वस्तूचे प्रमाण व विक्री किंमत

| वस्तू | प्रति पुरवठा पत्रिका दरमहा प्रमाण | प्रति एकक किरकोळ विक्रीची किंमत (रु.) |
|--------------------|--------------------------------------|--|
| १. आयोडिनयुक्त मीठ | १ कि.ग्रॅ. | १.६५ टी.एस.पी. २.९० डी.पी.ए.पी. |
| २. चहा पावडर | ३ पाकिटे @ | १०.५० |
| ३. स्नानाचा साबण | २ वड्या @ | ३.४० |
| ४. धुण्याचा साबण | २ वड्या \$ | २.४० |

@- प्रत्येकी १०० ग्रॅम, \$- प्रत्येकी १२५ ग्रॅम

टी.एस.पी. - आदिवासी उपयोजना

डी.पी.ए.पी. - अवर्षण प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम

द्वार वितरण योजना

७.३२ राज्यात आदिवासी व अवर्षण प्रवण क्षेत्रात अनुक्रमे आदिवासी विकास महामंडळ व महाराष्ट्र राज्य सहकारी पणन महासंघाद्वारे द्वार वितरण योजना राबविण्यात येत आहे. या योजनेअंतर्गत शासकीय गोदामापासून रास्तभाव दुकानापर्यंत धान्यांची वाहतूक शासकीय वाहनांद्वारे शासकीय खर्चाने केली जाते.

नियंत्रित (लेव्ही) साखर

७.३३ जानेवारी, २००३ पासून महाराष्ट्राला सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांना वाटपाकरिता दरमहा १३,९१८ टन इतके नियंत्रित साखरेचे नियतन मिळते. नियंत्रित साखरेच्या वितरणाचे प्रमाण दारिद्र्य रेषेखालील पुरवठापत्रिका धारकांना दरमहा दरडोई ५०० ग्रॅम इतके असून मार्च, २००२ पासून १३.५० रुपये प्रति किलो दराने साखर पुरविण्यात येते.

७.३३.१ केंद्र शासनाकडून नियंत्रित साखरेच्या नेहमीच्या मासिक नियतनाव्यतिरिक्त सणासुदीसाठी ऑगस्ट आणि नोव्हेंबर, २००४ या महिन्यात प्रत्येकी ४५०७ टन इतके अतिरिक्त नियतन प्राप्त झाले. हे अतिरिक्त नियतन नेहमीच्या परिमाणासह ऑगस्ट व नोव्हेंबर, २००४ या महिन्यात दरडोई ७०० ग्रॅम या प्रमाणे पात्र पुरवठा पत्रिकाधारकांना वाटप करण्यात आले.

केरोसीन

७.३४ केंद्र शासनाकडून राज्यास १९९९-२००० मध्ये जानेवारी, २००० अखेरपर्यंत दरमहा १,६८,९७२ किलोलिटर केरोसिनचे नियतन प्राप्त झाले. तथापि, केंद्र शासनाने राज्यांना वार्षिक नियमित गॅस कनेक्शनच्या व्यतिरिक्त, वितरित होणा-या अतिरिक्त गॅस कनेक्शनकरिता प्रति वर्ष प्रति गॅस कनेक्शन १४३ लिटर या दराने केरोसिनची कपात करण्याचा निर्णय घेतला. या निर्णयाच्या अनुषंगाने केंद्र शासनाने फेब्रुवारी, २००० ते एप्रिल, २००४ या कालावधीत राज्याच्या मासिक केरोसिन नियतनात एकूण ४४,३१५ किलोलिटरने कपात केली असून, एप्रिल, २००४ या महिन्यापासून दरमहा १,३४,२३० किलोलिटर केरोसिनचे नियतन प्राप्त होत आहे. मुंबई शिधावाटप क्षेत्रात केरोसिनचा किरकोळ विक्री दर ९.२६ रुपये प्रति लिटर दराने तर इतर जिल्ह्यांसाठी

वाहतूक अंतर लक्षात घेऊन ९.२२ रुपये ते १०.८० रुपये प्रतिलिटर या दराने करण्यात येते. ऑक्टोबर, २००२ पासून या किंमती लागू आहेत. राज्यात केरोसिनचे एकूण ६०,२५१ परवानाधारक असून त्यापैकी ८०१ घाउक परवानाधारक आहेत.

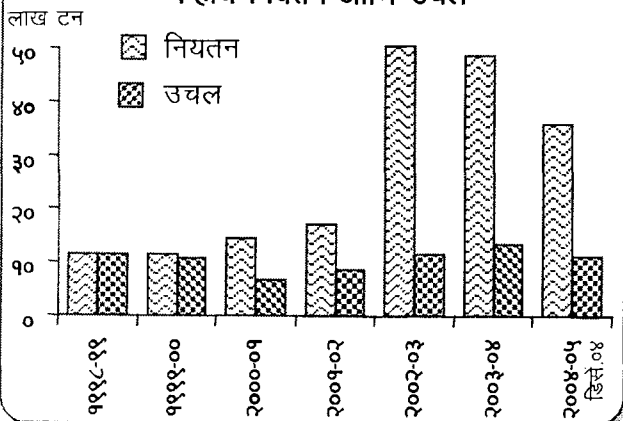
आधारभूत किंमत योजना

७.३५ राज्य शासनाने २००४-०५ मध्येही पूर्वीप्रमाणेच महाराष्ट्र राज्य सहकारी पणन महासंघ व महाराष्ट्र राज्य आदिवासी विकास महामंडळामार्फत आधारभूत किंमत योजनेअंतर्गत भात, सर्वसाधारण प्रतीची (एफ.ए.क्यू.)ज्वारी, बाजरी व मका खरेदी करण्याची व्यवस्था केली आहे. २००४-०५ च्या हंगामाकरिता भाताच्या श्रेणी 'अ' व साधारण प्रतीसाठी आधारभूत किंमती अनुक्रमे ५९० रुपये व ५६० रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित करण्यात आल्या आहेत. आधीच्या वर्षी ह्या किंमती अनुक्रमे ५८० रुपये व ५५० रुपये प्रती क्विंटल अशा होत्या. २००४-०५ या वर्षात सर्वसाधारण दर्जाच्या ज्वारी आणि बाजरीची आधारभूत किंमत ५१५ रुपये प्रती क्विंटल तर मक्यांसाठी ५२५ रुपये प्रती क्विंटल निर्धारित केली आहे. आधीच्या वर्षी ह्या किंमती तीनही बाबी साठी ५०५ रुपये होती. चालू वर्षाच्या पणन हंगामात जानेवारी, २००५ अखेर ६८,३५४ टन भात, १०,८०० टन ज्वारी, ४,३०० टन बाजरी आणि १३,८५० टन मका खरेदी करण्यात आला. तथापि, २००३-०४ मध्ये ह्यांचे प्रमाण अनुक्रमे १,८५,८३३ टन, ४९,९८१ टन, १९३ टन आणि १६,८३६ टन इतके होते.

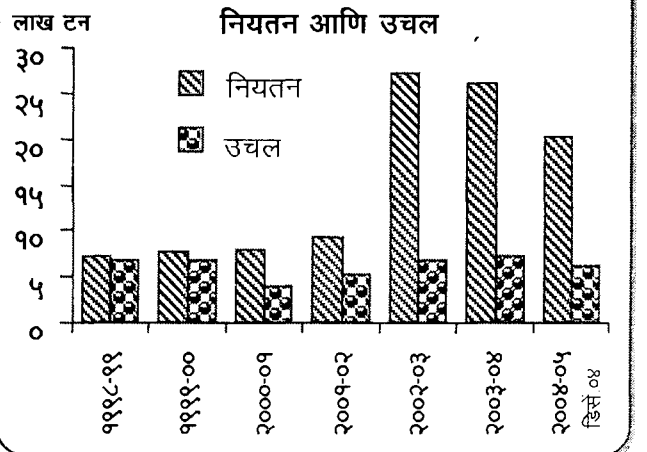
भात गिरणी धारकांकडून सक्तीची तांदूळ वसुली

७.३६ महाराष्ट्र राईस (लेव्ही ऑन राईस मिलर्स) आदेश, १९८९ (राज्य आदेश) हा आदेश अत्यावश्यक वस्तू अधिनियम, १९५५ अंतर्गत लागू करण्यात आला आहे. या आदेशान्वये राज्यातील भात गिरणी धारकांनी भरडाई केलेल्या एकूण तांदळाच्या ३० टक्के तांदूळ विहित केलेल्या किंमतीत शासनास देणे बंधनकारक केले आहे, यामधून हलर, काही प्रमाणात शेतकरी व शेतमजुरासाठी करण्यात येणारी तांदळाची खावटी भरड मुक्त आहे. २००३-०४ च्या हंगामात १,९६,९६४ टन लेव्ही तांदळाची वसुली झाली. चालू खरेदी हंगाम २००४-०५ साठी भातगिरणी मालकाकडून लेव्ही वसुली ऐच्छिक करण्याचे शासनाने ठरविले आहे.

सार्वजनिक वितरण व्यवस्थे अंतर्गत गव्हाचे नियतन आणि उचल



सार्वजनिक वितरण व्यवस्थे अंतर्गत तांदळाचे नियतन आणि उचल

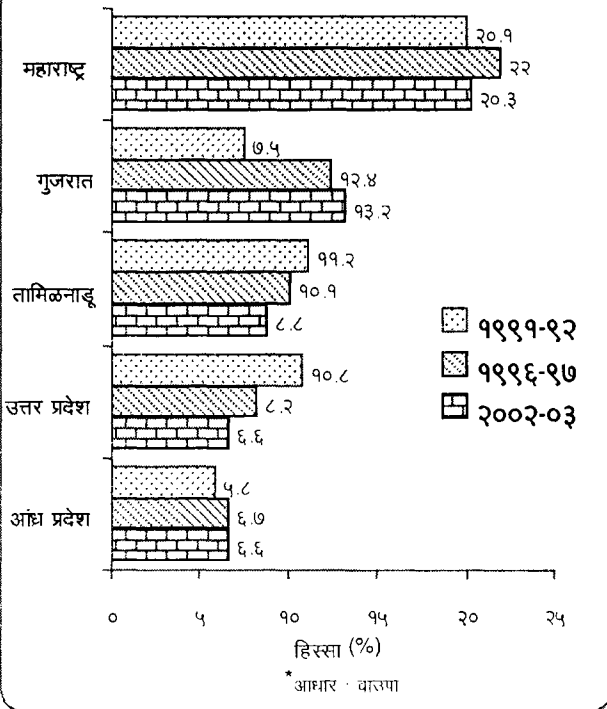




उद्योग

८.१ महाराष्ट्र राज्य हे देशाचे औद्योगिक बलस्थान म्हणून समजले जाते. देशातील संघटित वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील एकूण मूल्यवृद्धीत राज्याचा वाटा अतुलनीय म्हणजे सतत २० टक्क्यांपेक्षा जास्त राहिला असून राज्याने औद्योगिकीकरणाची उच्चपातळी गाठलेली असल्याचे यातून दिसून येते. स्थूल राज्य उत्पन्नात वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा वाटा जवळजवळ २० टक्के असून अखिल भारतीय स्तरावर तत्सम वाटा जवळपास १६ टक्के आहे. वार्षिक उद्योग पाहणी (वाउपा) ही उद्योगसंबंधी माहितीचा मुख्यस्त्रोत असून सदर पाहणीवरून संघटित वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील भांडवलाचे घटक, रोजगार, उत्पादनमूल्य, मूल्यवृद्धी इ. बाबतचे अंदाज उपलब्ध होतात. अगदी अलिकडील वाउपाच्या (२००२-०३) निष्कर्षानुसार देशातील संघटित वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील निव्वळ मूल्यवृद्धीतील राज्याचा वाटा २० टक्क्यांहून अधिक असून राज्याने औद्योगिक क्षेत्रामधील आपले आघाडीवरील स्थान कायम राखले आहे.

भारताच्या संघटित औद्योगिक क्षेत्राच्या निव्वळ मूल्यवृद्धीत प्रमुख वाटा असलेली राज्ये *



भारतातील औद्योगिक उत्पादनाचा (वस्तुनिर्माण) निर्देशांक

८.२ औद्योगिक उत्पादनाचा निर्देशांक या मध्ये खाणकाम, वस्तुनिर्माण व वीज या क्षेत्रांचा समावेश होत असून देशातील औद्योगिक वाढ मोजण्याचे हे एक साधन आहे. अखिल भारतासाठी असे निर्देशांक केंद्रीय सांख्यिकीय संघटनेकडून मासिक मालिकेच्या स्वरूपात प्रकाशित करण्यात येतात. २००४-०५ या वर्षाच्या एप्रिल ते डिसेंबर या काळात औद्योगिक उत्पादनाच्या निर्देशांकानुसार (पायाभूत वर्ष १९९३-९४) औद्योगिक वाढ ८.४ टक्के होती. औद्योगिक उत्पादनाच्या निर्देशांकामध्ये वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा भार ७९ टक्के आहे. या निर्देशांकानुसार २००३-०४ मध्ये वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील वाढ ७.२ टक्के होती. तर २००२-०३ मध्ये सदर वाढ ६ टक्के होती. २००४-०५ मध्ये एप्रिल ते डिसेंबर या कालावधीमधील वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील वाढ २००३-०४ मधील तत्सम कालावधीच्या तुलनेत ९ टक्के होती. डिसेंबर, २००४ या महिन्याचा औद्योगिक उत्पादनाचा निर्देशांक (वस्तुनिर्माण) २२९ (अस्थायी) होता. डिसेंबर, २००३ च्या निर्देशांकापेक्षा तो ८.८ टक्क्यांनी जास्त होता.

तक्ता क्रमांक.८.१

भारतातील औद्योगिक उत्पादनाचे निर्देशांक

(पायाभूत वर्ष १९९३-९४=१००)

| बाब | सरासरी निर्देशांक | | शंकडा वाढ | | |
|-----------------------|-------------------|---------|-----------|----------|-----|
| | भार | २००३-०४ | २००३-०४ | २००४-०५* | |
| सर्वसाधारण निर्देशांक | १००.०० | १८८.७ | १९९.४ | ६.८ | ८.४ |
| खाणकाम | १०.४७ | १४६.७ | १४९.० | ५.१ | ४.८ |
| वस्तुनिर्माण | ७९.३६ | १९६.३ | २०८.५ | ७.२ | ९.० |
| विद्युत | १०.१७ | १७२.५ | १८०.४ | ५.० | ६.४ |

* एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीकरिता (अस्थायी)

महाराष्ट्राचे औद्योगिक चित्र

८.३ अखिल भारतीय आणि राज्याच्या औद्योगिक उत्पादनामध्ये शुद्ध पेट्रोलियमची उत्पादने; रसायने व रासायनिक उत्पादने; खाद्य उत्पादने; यंत्रे व यंत्र सामग्री; मोटार वाहने, ट्रेलर्स; रबर, प्लास्टिक उत्पादने व विद्युत यंत्रे ह्या उद्योग गटांचा महत्त्वाचा वाटा असल्याचे दिसून येते. राज्यातील वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील एकूण निव्वळ मूल्यवृद्धीमध्ये या गटांचा एकत्रित वाटा २००२-०३ मध्ये ७९ टक्क्यांपेक्षा जास्त होता. अखिल भारतीय औद्योगिक

उत्पादनाचे निर्देशांक (एप्रिल ते डिसेंबर, २००४) व अलिकडील राज्य पातळीवरील वाउपाची आकडेवारी (२००२-०३) यांच्या आधारे २००४-०५ मध्ये राज्यातील औद्योगिक उत्पादन (वस्तुनिर्माण) ८.२ टक्क्याने वाढले असे अनुमान आहे. २००३-०४ यावर्षी सदर वाढ ७.८ टक्के होती.

८.४ वार्षिक उद्योग पाहणीच्या अगदी अलिकडील (२००२-०३) निष्कर्षानुसार देशातील संघटित औद्योगिक क्षेत्रातील राज्याचा वाटा स्थूल उत्पादन मूल्यात १९.२ टक्के आणि निव्वळ मूल्यवृद्धीत २०.३ टक्के होता, तर तो स्थिर भांडवलात १७.३ टक्के व उत्पादक भांडवलात १६.६ टक्के असा होता. वाउपा अंतर्गत समाविष्ट दोन अंकी संकेतांकांच्या स्तरावरील (राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण, १९९८) प्रमुख २५ उद्योग गटांपैकी १९ उद्योग गटांच्या उत्पादन मूल्याच्या बाबतीत महाराष्ट्र राज्य देशातील आघाडीवरील पहिल्या तीन राज्यांपैकी एक होते. या १९ उद्योग गटांपैकी पुढील १० उद्योग गटात महाराष्ट्राचे स्थान प्रथम क्रमांकावर होते. ते उद्योग गट (१) खाद्य व पेय (२) कागद व कागदाची उत्पादने (३) मुद्रण व प्रकाशन (४) रबर व प्लास्टिक (५) मूलभूत धातू (६) धातूची उत्पादने (७) यंत्रे (८) विद्युत यंत्रे (९) मोटार वाहाने (१०) फर्निचर हे होत. देशातील ६ उद्योग गटांच्या एकूण उत्पादन मूल्यात किंवा मूल्यवृद्धीत किंवा दोन्हीमध्ये राज्याचा वाटा एक-चतुर्थांशपेक्षा जास्त होता.

८.५ वाउपा २००२-०३ च्या निष्कर्षानुसार राज्यातील प्रति नोंदणीकृत कारखान्यामागे सरासरी स्थिर भांडवल गुंतवणूक ४२९ लाख रुपये होती. अखिल भारतीय पातळीवर सदर गुंतवणूक ३४६ लाख रुपये होती. सदर निष्कर्षानुसार राज्यातील प्रति कारखाना वस्तू व सेवा यांच्या उत्पादनाचे एक्स-फॅक्टरी मूल्य १,२२६ लाख रुपये होते आणि प्रति कारखाना निव्वळ मूल्यवृद्धी १९७ लाख रुपये होती. राज्यातील २००२-०३ मध्ये प्रति नोंदणीकृत कारखान्यामागे सरासरी स्थिर भांडवल गुंतवणूक आणि वस्तू व सेवा यांचे उत्पादन यातील वाढ मागील वर्षाच्या तुलनेत अनुक्रमे ११ आणि २० टक्के होती. त्याच प्रमाणे राज्यातील प्रति कारखाना रोजगार निर्मिती ६६ व्यक्ती इतकी होती. अखिल भारतीय

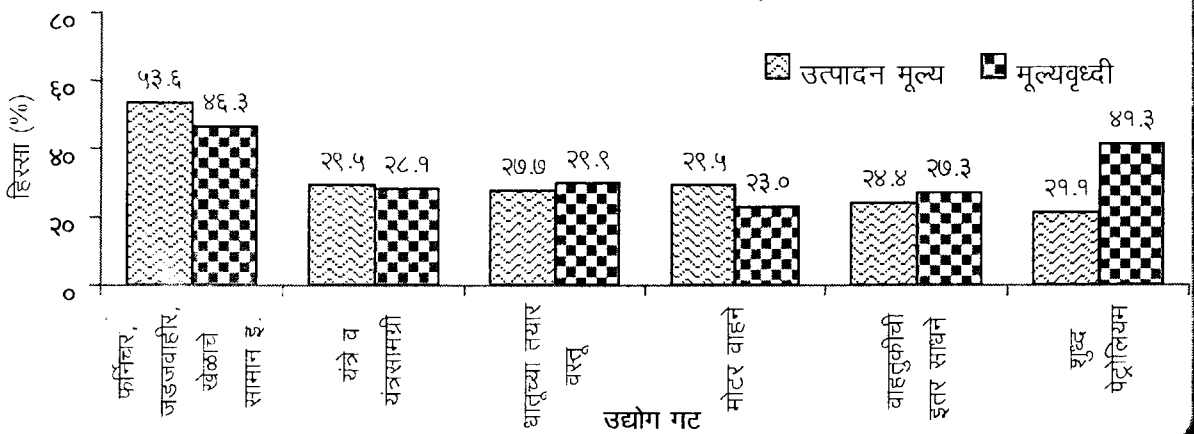
वार्षिक उद्योग पाहणी (वाउपा)

औद्योगिक आकडेवारीकरिता वार्षिक उद्योग पाहणी हा मुख्य स्रोत असून देशामध्ये सदर पाहणी केंद्र शासनाच्या राष्ट्रीय नमूना पाहणी संघटनेद्वारे केली जाते. या पाहणीत कारखाना अधिनियम, १९४८ च्या विभाग-२ एम् (एक) आणि २ एम् (दोन) खाली नोंद झालेल्या सर्व कारखान्यांचा आणि विडी व सिगार कामगार (रोजगाराच्या अटी) अधिनियम, १९६६ खाली नोंद झालेल्या विडी व सिगारट या आस्थापनांचा समावेश आहे. यात केंद्रीय वीज प्राधिकरणाखाली नोंद झालेले वीज उपक्रम, तसेच शीतगृहे, पाणीपुरवठा व मोटार वाहनांची दुरुस्ती इत्यादी सारख्या सेवांचा सुध्दा समावेश होतो. वार्षिक उद्योग पाहणीतील नमुन्याची रचना व व्याप्ती या मध्ये १९९७-९८ व पुन्हा १९९८-९९ मध्ये सुधारणा करण्यात आली आहे. सर्व विभागीय उपक्रम व वीज उपक्रम सध्या या पाहणीमधून वगळण्यात आले आहेत. १९९८-९९ पासून पाहणीसाठी राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण, १९९८ चा वापर सुरू करण्यात आला आहे.

पातळीवर प्रति कारखाना वस्तू व सेवा यांच्या उत्पादनाचे एक्स-फॅक्टरी मूल्य ८८४ लाख रुपये होते आणि प्रति कारखाना निव्वळ मूल्यवृद्धी १३४ लाख रुपये होती. अखिल भारतीय पातळीवर प्रति कारखाना रोजगार निर्मिती ६२ व्यक्ती इतकी होती.

८.६ वाउपा २००२-०३ नुसार राज्यातील औद्योगिक उत्पादनातील ७५ टक्क्यापेक्षा जास्त एकत्रित वाटा असलेले उद्योग गट म्हणजे (१) रसायने व रासायनिक उत्पादने (१५.४ टक्के), (२) खाद्य उत्पादने (१५.३ टक्के), (३) शुध्द पेट्रोलियमची उत्पादने (१४.३ टक्के), (४) मूलभूत धातू (८.२ टक्के), (५) मोटार वाहने, ट्रेलर्स (७.७ टक्के), (६) यंत्रे व यंत्रसामग्री (६.५ टक्के), (७) वस्त्रोद्योग (४.६ टक्के), आणि

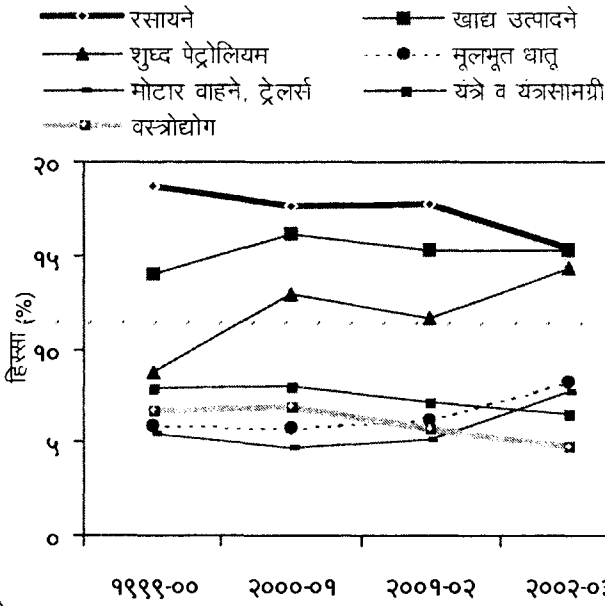
भारताच्या गटनिहाय उत्पादन मूल्यात किंवा मूल्यवृद्धीत किंवा दोन्हीत महाराष्ट्राचा २५ टक्क्यांपेक्षा जास्त हिस्सा असलेले उद्योग गट (वाउपा २००२-०३)



वार्षिक उद्योग पाहणी २००२-०३ च्या निष्कर्षानुसार, महाराष्ट्रातील दरडोई निव्वळ मूल्यवृद्धी (रुपये ३,५०७) संपूर्ण देशासाठीच्या दरडोई निव्वळ मूल्यवृद्धीच्या (रुपये १,५६३) २.२ पट होती.

(८) फर्निचर (४.५ टक्के) हे होत. त्याचप्रमाणे निविष्टीच्या बाबतीत राज्यातील वाउपा अंतर्गत सर्व उद्योगांतील निविष्टीच्या वापरामध्ये वरील प्रमुख उद्योग गटांचा वापराचा वाटा सुमारे ७८.२ टक्के होता. तसेच गुंतवणुकीच्या बाबतीत सुध्दा वरील उद्योग गटांचा एकूण स्थिर भांडवलामध्ये वाटा ७४.१ टक्के होता. या उद्योग गटांच्या एकूण उत्पादन मूल्यातील वाट्यामध्ये सतत बदल होत असल्याचे दिसून येते. रसायने, यंत्रे व यंत्रसामग्री आणि वस्त्रोद्योग या उद्योग गटांचा वाटा कमी होत जात असल्याचे दिसून येते परंतु शुध्द पेट्रोलियम उत्पादने, मुलभूत धातू व मोटार वाहने या उद्योगगटांच्या वाट्यामध्ये वाढता कल दिसून येतो.

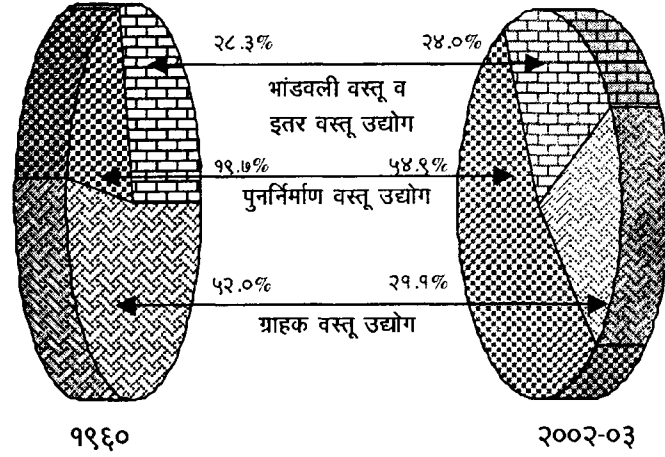
महाराष्ट्राचा स्थूल उत्पादन मूल्यातील प्रमुख उद्योग गटांच्या हिश्यांचा कल



८.७ महाराष्ट्रातील संघटित उद्योग क्षेत्रातील घटकांच्या रचनेत गेल्या काही दशकांत लक्षणीय बदल झाल्याचे वार्षिक उद्योग पाहणीच्या आकडेवारीवरून दिसून येते. १९६० मध्ये ग्राहक वस्तू उद्योगांचे स्थान महत्त्वाचे होते आणि सर्व उद्योगांच्या एकूण निव्वळ मूल्यवृद्धीत त्यांचा वाटा सुमारे ५२ टक्के होता. राज्यातील ग्राहक वस्तू उद्योगांचे सापेक्ष महत्त्व हळूहळू कमी होत जाऊन पुनर्निर्माण वस्तू उद्योगांचे महत्त्व वाढले आहे. २००२-०३ मध्ये ग्राहक वस्तू उद्योगांचा एकूण निव्वळ मूल्यवृद्धीतील हिस्सा केवळ २१.१ टक्के इतकाच होता.

८.८ वार्षिक उद्योग पाहणीमध्ये गोळा करण्यात आलेल्या माहितीवर आधारित राज्यातील औद्योगिक क्षेत्राची २००१-०२ व

मूल्यवृद्धीनुसार महाराष्ट्रातील उद्योगांची रचना



२००२-०३ मधील ठळक वैशिष्ट्ये या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ३२ मध्ये दिली आहेत. वार्षिक उद्योग पाहणी अंतर्गत समाविष्ट सर्व उद्योगांची राज्यातील निव्वळ मूल्यवृद्धी २००२-०३ मध्ये ३५,१४९ कोटी रुपये होती व ती २००१-०२ मधील निव्वळ मूल्यवृद्धीपेक्षा १७.६ टक्क्यांनी जास्त होती.

८.९ उद्योगांच्या एकंदर कामगारीची कल्पना येण्यासाठी काही आर्थिक निर्देशक तक्ता क्रमांक ८.२ मध्ये देण्यात आले आहेत. २००२-०३ मध्ये राज्यातील कामगार उत्पादकता व प्रति कामगार उत्पादन ही गुणोत्तरे अखिल भारतीय पातळीवरील गुणोत्तरापेक्षा जास्त होती. त्याचप्रमाणे राज्यातील वेतन दर सुध्दा अखिल भारतीय पातळीवरील दरापेक्षा जास्त असल्याचे दिसून आले.

तक्ता क्रमांक ८.२ उद्योगासंबंधी काही आर्थिक निर्देशक

| निर्देशक | २००१-०२ | २००२-०३ |
|---------------------------------------|---------|---------|
| १) कामगार उत्पादकता गुणोत्तर * | | |
| महाराष्ट्र | ५.३९ | ६.०८ |
| भारत | ४.९५ | ५.४९ |
| २) प्रति कामगार उत्पादन (रुपये लाखात) | | |
| महाराष्ट्र | २२.१६ | २६.४५ |
| भारत | १६.१५ | १८.३७ |
| ३) प्रति कामगार वार्षिक वेतन (रुपयात) | | |
| महाराष्ट्र | ६७,३६० | ७०,२३१ |
| भारत | ४८,६९१ | ५०,७९७ |

* कामगारांच्या प्रति एक रुपया वेतनामागे झालेली निव्वळ मूल्यवृद्धी

८.१० २००१-०२ ते २००२-०३ या वर्षासाठी ढोबळ उद्योग गटानुसार राज्यातील संघटित उद्योगाबाबत आर्थिक दृष्ट्या महत्त्वाची गुणोत्तरे भाग २ मधील तक्ता क्रमांक ३५ मध्ये दिली आहेत. एक रुपया निव्वळ मूल्यवृद्धी होण्यासाठी आवश्यक असणाऱ्या भांडवलाचे मोजमाप स्थिर भांडवल व मूल्यवृद्धी यांच्या गुणोत्तराने दर्शविले जाते. हे गुणोत्तर

२००१-०२ मध्ये २.३ होते तर २००२-०३ मध्ये ते २.२ झाले. निव्वळ मूल्यवृद्धीचे स्थूल उत्पादनाशी येणारे गुणोत्तर उद्योगांची कार्यक्षमता दर्शविते. हे गुणोत्तर २००२-०३ मध्ये सुद्धा अगोदरच्या वर्षातील गुणोत्तरा इतकेच म्हणजे ०.१६ होते.

औद्योगिक प्रदूषण

८.११ वार्षिक उद्योग पाहणी १९९७-९८ नुसार महाराष्ट्रातील एकूण कारखान्यांपैकी जवळजवळ ५० टक्के कारखाने प्रदूषणकारी होते. राज्यातील वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील उत्पादन व मूल्यवृद्धी यामध्ये सदर कारखान्यांचा वाटा अनुक्रमे सुमारे ५८ व ५० टक्के होता, तसेच सुमारे ५० टक्के कामगार प्रदूषणकारी कारखान्यांत कार्यरत होते. या तुलनेत देशातील वस्तुनिर्माण क्षेत्रातील उत्पादनात सदर कारखान्यांचा वाटा ६८ टक्के होता व ६० टक्के कामगार प्रदूषणकारी उद्योगांमध्ये कार्यरत होते. तथापि प्रदूषणाच्या कारणामुळे प्रदूषणकारी कारखाने बंद करणे अर्थ व्यवस्थेला परवडणारे नाही. त्याऐवजी प्रदूषण कमी करण्याच्या उपाययोजनांची प्रदूषणकारी उद्योगांमध्ये कठोरपणे अंमलबजावणी ही काळाची गरज आहे.

औद्योगिक धोरण

केंद्रीय धोरण

८.१२ भारत सरकारने जुलै, १९९१ मध्ये जाहीर केलेल्या औद्योगिक धोरणाची मुख्य उद्दिष्टे भारतीय अर्थव्यवस्थेचे जागतिक अर्थव्यवस्थेशी सुसूत्रिकरण करण्यासाठी उदारीकरणाचे धोरण अंगीकारणे, विदेशी थेट गुंतवणुकीवरील बंधने काढून टाकणे, तसेच स्थानिक उद्योजकांना एकाधिकार व प्रतिबंधक व्यवसाय पध्दती (एमआरटीपी) अधिनियमाच्या बंधनातून मुक्त करणे ही होती. त्यानुसार भारत सरकार त्या दिशेने विविध उपाय योजित आहे. उदारीकरणाची ही प्रक्रिया २००४-०५ मध्येही चालू होती.

राज्याचे धोरण

८.१३ औद्योगिक घटकांना उत्कृष्ट पायाभूत सुविधा व आर्थिक प्रगती पुरवून आणि निर्यातीस चालना देऊन राज्याने औद्योगिक सुधारणांच्या दुसऱ्या टप्प्यात २००१ मध्ये प्रवेश केला. त्यामुळे राज्याच्या औद्योगिक क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणावर गुंतवणूक होऊ शकली. औद्योगिक धोरण, २००१ ची उद्दिष्टे माहिती तंत्रज्ञान, उच्च तंत्रज्ञान, ज्ञानाधिष्ठित व जैव-तंत्रज्ञान क्षेत्रातील उद्योगांना उत्तेजन देऊन उद्योग व पायाभूत सुविधा याकडे गुंतवणुकीचा ओघ आणखी वाढविणे, राज्यातील औद्योगिक घटकांकडून होत असलेली निर्यात वाढविणे आणि रोजगाराच्या संधी मोठ्या प्रमाणावर निर्माण करणे ही असून विक्रीकरावर आधारित मोत्साहने रद्द करण्याबाबत राष्ट्रीय पातळीवर जनमत जागृत होत असताना संरचनात्मक बदल घडवून सातत्यपूर्ण औद्योगिक विकास साधणे, उच्च तंत्रज्ञानावर आधारित व इतर क्षेत्रांतील उद्योगांचा विकास करणे, राज्यात उद्योग क्षेत्रास पोषक असे औद्योगिक वातावरण निर्माण

करणे आणि राज्यातील उद्योग क्षेत्रास उच्चतम स्पर्धात्मक दर्जा प्राप्त करून देणे हा या धोरणाचा दृष्टिकोन आहे.

८.१४ औद्योगिक धोरण, २००१ ची प्रमुख वैशिष्ट्ये पुढील प्रमाणे आहेत: १) नवीन सामूहिक प्रोत्साहन योजनेखाली राज्याच्या मागास भागातील नवीन औद्योगिक घटकांना विद्युत शुल्क, मुद्रांक शुल्क व नोंदणी शुल्क माफी आणि जकात/प्रवेश कर परतावा, २) राज्याच्या मागास भागात नवीन लघु उद्योग घटक स्थापन करण्यासाठी अनुदानाच्या स्वरूपात विशेष भांडवली प्रोत्साहन आणि नवीन वस्त्रोद्योग, होजिअरी व निटवेअर लघु उद्योग घटकांना व्याज अनुदान, ३) खादी व ग्रामोद्योग यांना विक्रीकर भरण्यातून सूट, ४) माहिती तंत्रज्ञान उत्पादनांवर किमान विक्रीकर व उलाढाल करात पूर्ण सूट, ५) आजारी लघु उद्योग घटकांच्या थकबाकीची सुलभ हप्त्यात परतफेडीची सुविधा, ६) बृहन्मुंबईतील कापड

नियोजित विशेष आर्थिक क्षेत्रे -

- ★ बुटीबोरी (नागपूर)
- ★ सिन्नर (नाशिक)
- ★ गुहागर (रत्नागिरी)
- ★ कागल-हातकणगले (कोल्हापूर)
- ★ शेंद्रे (औरंगाबाद)
- ★ खोपटा (रायगड)

प्रस्तावित स्वयंशासित औद्योगिक वसाहती -

- ★ विळे भागाड (रायगड)
- ★ तळेगाव-दाभाडे (पुणे)
- ★ शेंद्रे (औरंगाबाद)
- ★ नांदगाव पेठ (अमरावती)
- ★ ताडळी (चंद्रपूर)
- ★ सिन्नर अतिरिक्त (नाशिक)
- ★ वाळूज (औरंगाबाद)
- ★ नांदेड
- ★ उस्मानाबाद
- ★ ऐरोली (नवी मुंबई)
- ★ हिंजवडी (पुणे)
- ★ लातूर अतिरिक्त
- ★ यवतमाळ अतिरिक्त
- ★ बुटीबोरी (नागपूर)
- ★ नरढाणा (धुळे)
- ★ पैठण (औरंगाबाद)
- ★ हिंगोली

प्रस्तावित निर्यात क्षेत्रे -

कृषि निर्यात क्षेत्र

- ★ नाशिक सातारा पुणे
- ★ सोलापूर सांगली अहमदनगर
- ★ ग्रेप वाईन पार्कस् - विंचूर (नाशिक)
- पळूस (सांगली)
- ★ फुड पार्क - अलकुड-मनेराजुरी (सांगली)
- ★ फ्लोरीकल्चर पार्क - तळेगाव (पुणे)
- ★ ऑरेंज सिटी पार्क - नागपूर
- ★ जैव-तंत्रज्ञान पार्कस् - हिंजवडी (पुणे)
- जालना

इतर निर्यात क्षेत्र

- ★ जेम्स अँड ज्वेलरी पार्कस् - अंधेरी (मुंबई)
- नवापूर (नंदूरबार)
- ★ टेक्सटाईल पार्कस् - बुटीबोरी (नागपूर)
- ऐरोली (नवी मुंबई)
- ★ सिल्वर पार्क - हुपरी (कोल्हापूर)

गिरण्यांच्या जमिनींवर माहिती तंत्रज्ञान/जैव-तंत्रज्ञान घटकांची उभारणी, ७) माहिती तंत्रज्ञान घटकांसाठी वाढीव चटई क्षेत्र, ८) राज्यात विविध ठिकाणी स्वयंशासित औद्योगिक वसाहतींची स्थापना, ९) अपारंपरिक उर्जा विकास, १०) विशेष आर्थिक क्षेत्रांची स्थापना, ११) औद्योगिक क्षेत्रे/वसाहतींमध्ये राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय दर्जाच्या शैक्षणिक व संशोधन संस्थांना सवलतीच्या दरात जागा उपलब्ध करून देणे आणि १२) खाजगी वापरासाठी/बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मितीस परवानगी.

८.१५ देशात विदेशी थेट गुंतवणूक वाढावी आणि देशातील निर्यातीस चालना मिळावी यासाठी भारत सरकारने विशेष आर्थिक क्षेत्रे विकसित करण्याची योजना आखली आहे. केंद्र शासनाने अंधेरी, मुंबई येथे सीझ या विशेष आर्थिक विकास क्षेत्राची यापूर्वीच स्थापना केली आहे. सदर योजनेखाली अशा प्रकारचे आर्थिक विकास क्षेत्र द्रोणागिरी, नवी मुंबई येथे उभारले जात आहे. विशेष आर्थिक क्षेत्र धोरणातर्गत राज्य शासन पुढील प्रकारच्या सवलती देते: १) विक्रीकर, उलाढाल कर, संपत्ती कर, राज्य उत्पादन शुल्क, मुद्रांक व नोंदणी शुल्क, इत्यादी कर/शुल्कांमध्ये पूर्ण सवलत, २) बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मितीस परवानगी आणि ३) शंभर टक्के निर्यातीभिमुख उद्योगांना सार्वजनिक उपयुक्त सेवेचा दर्जा देऊन कामगार कायद्यात शिथिलता. राज्यात विविध ठिकाणी विशेष आर्थिक क्षेत्रे, स्वयंशासित औद्योगिक वसाहती, कृषि व इतर निर्यात क्षेत्रे उभारण्याचे राज्य शासनाने नियोजिले आहे.

जैव-तंत्रज्ञान धोरण

८.१६ राज्य शासनाने डिसेंबर, २००१ मध्ये 'जैव-तंत्रज्ञान धोरण' घोषित केले आहे. या धोरणांतर्गत जैव-तंत्रज्ञान उद्योगांना मुद्रांक शुल्कात सूट, बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मितीस परवानगी, वीज शुल्क माफी, जकात परतावा, इत्यादी विशेष भांडवली प्रोत्साहने देण्यात येत आहेत.

माहिती तंत्रज्ञान धोरण

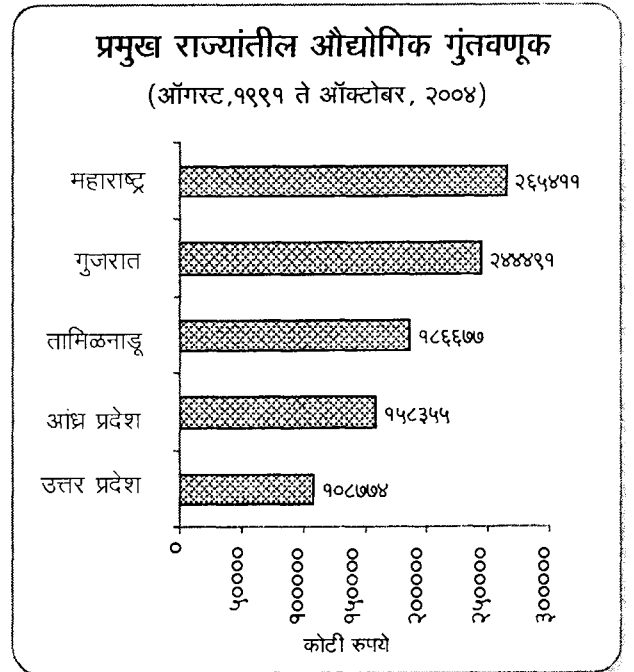
८.१७ राज्य शासनाने १९९८ मध्ये पहिले 'माहिती तंत्रज्ञान धोरण' जाहीर केले. या धोरणाचे घोषवाक्य 'संपर्क जाळ्याद्वारे अधिकार प्रदान' हे असून 'केव्हाही, कसाही व कुठेही' संपर्क साधण्याची क्षमता असणारी यंत्रणा राज्यात निर्माण करणे हे उद्दिष्ट आहे. राज्य शासनाने नवीन 'माहिती तंत्रज्ञान व माहिती तंत्रज्ञानाधारित सेवा धोरण' २००३ मध्ये जाहीर केले आहे. माहिती तंत्रज्ञान व माहिती तंत्रज्ञानाधारित सेवा उद्योगांमध्ये गुंतवणूक होण्याच्या दृष्टीने महाराष्ट्रास सर्वाधिक पसंतीस्थानाचा दर्जा प्राप्त करून देणे हे या धोरणाचे उद्दिष्ट आहे. या धोरणाची उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी: १) माहिती तंत्रज्ञान व माहिती तंत्रज्ञानाधारित सेवाक्षेत्राकरिता संस्थात्मक आराखडा तयार करणे, २) सर्वोत्तम पायाभूत सुविधा पुरविणे, ३) जागतिक स्तरावर रोजगार प्राप्त करण्याची क्षमता असलेले कुशल कामगार तयार करणे, ४) उद्योगास पोषक व सहाय्यभूत ठरणारे वातावरण निर्मित करणे, ५) आय टी पार्कसना आर्थिक सवलती पुरविणे

आणि ६) माहिती तंत्रज्ञान व माहिती तंत्रज्ञानाधारित सेवा उद्योगांना सहाय्य देण्यासाठी नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांना निर्देश देणे, यासाठी राज्य शासन बांधील आहे.

८.१८ शहर व औद्योगिक विकास महामंडळ (सिडको) आणि महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ (एमआयडीसी) यांच्या मदतीने राज्य शासन राज्याच्या विविध भागात आय टी पार्कस विकसित करीत आहे. त्यानुसार राज्यात २७ शासकीय / सार्वजनिक व ९० खाजगी आय टी पार्कस विकसित करण्यात येत आहेत. नागरिकांना उच्चतम सुविधा पुरविणे, सेवाक्षमतेत वाढ करणे, राज्याच्या महसुलात वाढ करणे आणि प्रशासनात पारदर्शकता आणणे ही उद्दिष्टे ठरवून राज्याचे ई-गव्हर्नन्स धोरण आखण्यात आले आहे. त्यानुसार २५ जिल्ह्यांच्या व २७३ तालुक्यांच्या ठिकाणी 'सेतू' या नावाने नागरी सुविधाकेंद्रांची स्थापना करण्यात आली आहे. या केंद्रात जनतेला त्यांच्या मागणीनुसार नियमित लागणारे ८३ विविध प्रकारचे दाखले दिले जातात. रेल्वे/बस आरक्षण, दूरध्वनी/वीज देयकांचा भरणा, महानगर पालिकेच्या विविध देयकांचा भरणा, जन्म-मृत्यूचे दाखले, इत्यादी सेवा पुरविण्यासाठी मोठ्या शहरात आय-सेतू सुविधाकेंद्रे स्थापन करण्याचे प्रस्तावित आहे.

औद्योगिक गुंतवणूक

८.१९ राज्यात उद्योगांना पुरविलेल्या उत्कृष्ट पायाभूत सुविधा व सवलतीमुळे मोठ्या प्रमाणावर औद्योगिक गुंतवणूक होत आहे. राज्यात उद्योगांच्या उभारणीसाठी ऑगस्ट, १९९१ मध्ये उदारीकरणाचे धोरण स्वीकारल्यापासून ऑक्टोबर, २००४ अखेर एकूण २,६५,४११ कोटी रुपये गुंतवणुकीचे ११,९६७ औद्योगिक प्रकल्प भारत सरकारकडे नोंदविण्यात आले आहेत. या प्रकल्पांमधून जवळपास २०.४७ लाख रोजगार निर्माण होण्याचे अपेक्षित आहे. एकूण गुंतवणुकीपैकी जवळपास ५३ टक्के



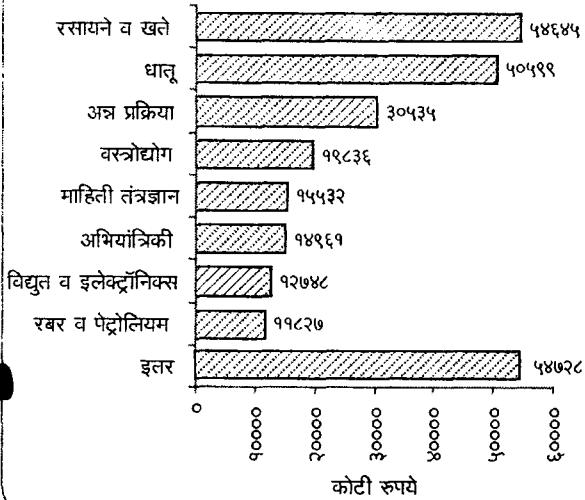
तक्का क्रमांक ८.३
महाराष्ट्रातील औद्योगिक गुंतवणुकीची प्रगती

| वर्ष | त्या वर्षात नोंदणी झालेले प्रकल्प | | | संबंधीत वर्षात नोंदणी झालेल्या एकूण प्रकल्पांपैकी ऑक्टोबर, २००४ अखेर कार्यान्वित झालेल्या प्रकल्पांची संख्या | | |
|-------------|-----------------------------------|-----------------------|--------------------------|--|-----------------------|--------------------------|
| | संख्या | गुंतवणूक (कोटी रुपये) | अपेक्षित रोजगार (हजारात) | संख्या | गुंतवणूक (कोटी रुपये) | रोजगार निर्मिती (हजारात) |
| १९९१-९२ * | ७७८ | २०,६७३ | १५१ | ४४३ | ११,७५० | ६९ |
| १९९२-९३ | ९९४ | २१,१७२ | १७८ | ५४८ | ८,४९६ | ६९ |
| १९९३-९४ | १,४८० | १८,०९२ | २३० | ८६९ | ९,८०७ | ९१ |
| १९९४-९५ | ९७९ | १९,६५४ | १६० | ५८० | १०,९८६ | ५७ |
| १९९५-९६ | १,०७७ | २०,७८० | २१० | ६२२ | १०,३७९ | ४६ |
| १९९६-९७ | ८१२ | १६,५६८ | १३० | ४७१ | ३,७८८ | ३४ |
| १९९७-९८ | ५७६ | ६,९४७ | ८५ | ३६६ | २,९२३ | २६ |
| १९९८-९९ | १,३०३ | ४२,४६८ | २९२ | ४५३ | ४,२२६ | ४६ |
| १९९९-२००० | ८४१ | ३७,७८९ | १५० | ३८२ | ३,०४३ | २३ |
| २०००-०१ | ७२४ | १५,११४ | १२० | ३१५ | १,७४७ | १८ |
| २००१-०२ | ७०३ | ९,९९७ | १०१ | २६१ | २,३२३ | ७८ |
| २००२-०३ | ६२६ | २१,५८३ | ७५ | १२९ | १२,५८६ | २६ |
| २००३-०४ | ६८५ | ८,८७८ | १२५ | ४८ | ७४५ | ६ |
| २००४-०५ ** | ३८९ | ५,६९६ | ४० | ४९ | ५,५३५ | ६ |
| एकूण | ११,९६७ | २,६५,४११ | २,०४७ | ५,५३६ | ८८,३३४ | ५९५ |

* ऑगस्ट, १९९१ पासून

** ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत

उद्योग गटनिहाय राज्यातील औद्योगिक गुंतवणूक



बृहन्मुंबईसह कोकण विभागात, २२ टक्के पुणे विभागात, १२ टक्के नाशिक विभागात आणि १० टक्के नागपूर विभागात गुंतवणूक असणार आहे. या ११,९६७ औद्योगिक प्रकल्पांपैकी ८८,३३४ कोटी रुपये (३३ टक्के) गुंतवणुकीच्या ५,५३६ प्रकल्पांनी (४६ टक्के) उत्पादन सुरु केले असून या प्रकल्पांमधून ५.९५ लाख (२९ टक्के) इतका रोजगार निर्माण झाला होता. प्रत्यक्षात कार्यान्वित असलेले १,४९२ प्रकल्प होते. उर्वरित ४,९३९ प्रकल्प अंमलबजावणीच्या विविध टप्प्यात होते. महाराष्ट्रातील औद्योगिक गुंतवणुकीची प्रगती तक्का क्र ८.३ मध्ये दिली आहे. राज्यातील एकूण गुंतवणुकीपैकी रसायने व खते (२१ टक्के), धातू उत्पादने (१९ टक्के), अन्न प्रक्रिया (१२ टक्के), वस्त्रोद्योग (८ टक्के), माहिती तंत्रज्ञान (६ टक्के), अभियांत्रिकी (६ टक्के), विद्युत व इलेक्ट्रॉनिक्स (५ टक्के) आणि रबर व पेट्रोलियम (५ टक्के) या प्रकल्पात प्रामुख्याने गुंतवणूक होती. ऑगस्ट, १९९१ ते ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत देशात झालेल्या एकूण औद्योगिक गुंतवणूक व रोजगार या दोन्ही बाबतीत १७ टक्के वाट्यासह महाराष्ट्र देशातील सर्व राज्यात अग्रेसर राज्य राहिले आहे.

८.२० राज्यात २००३ - २००४ मध्ये मध्यम व मोठे उद्योग स्थापन करण्यासाठी भारत सरकारने नऊ इरादा पत्रे व १४ औद्योगिक परवाने दिले असून ५३४ आवेदन पत्रे जारी केली आहेत. ही मुख्यतः पुणे, नाशिक आणि नागपूर जिल्ह्यातील होती. या उद्योगांमध्ये औषधी द्रव्ये व औषध निर्मिती, रसायने, वस्त्रोद्योग, माहिती तंत्रज्ञान, लोखंड व पोलाद आणि अभियांत्रिकी हे प्रमुख उद्योग होते. एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत भारत सरकारने महाराष्ट्रात उद्योग स्थापन करण्यासाठी दोन इरादा पत्रे, आठ औद्योगिक परवाने व ५२६ आवेदन पत्रे जारी केली आहेत.

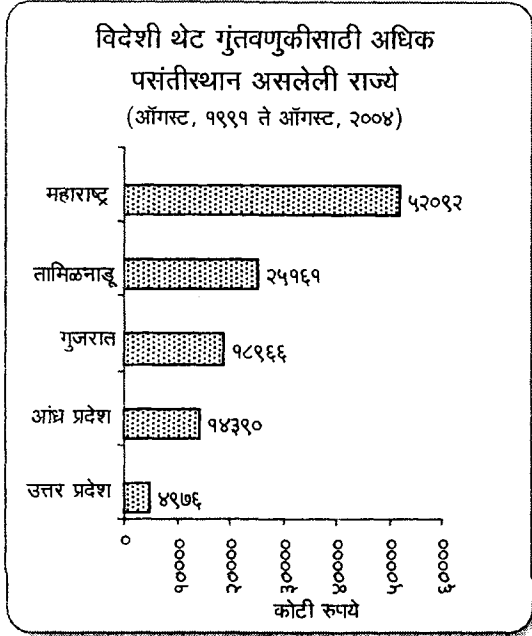
औद्योगिक गुंतवणूक

(ऑगस्ट, १९९१ पासून ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत)

| | | |
|------------------------------|---|----------|
| ★ नोंदणीकृत प्रकल्प (संख्या) | - | ११,९६७ |
| ★ गुंतवणूक (कोटी रुपये) | - | २,६५,४११ |
| ★ रोजगार निर्मिती (लाखात) | - | २० |

विदेशी थेट गुंतवणूक

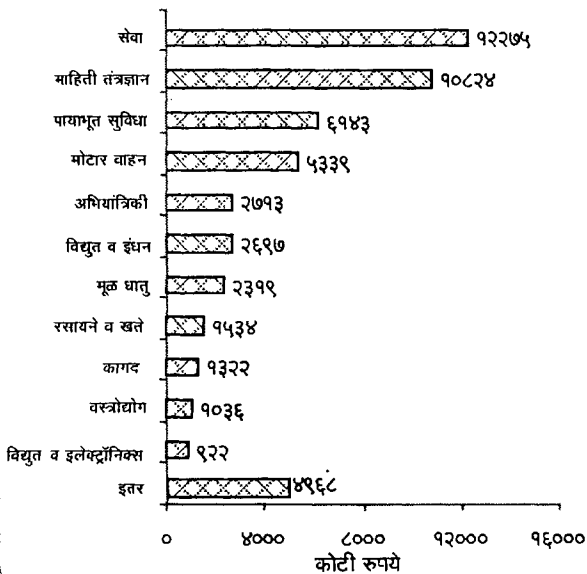
८.२१ ऑगस्ट, १९९१ मध्ये स्वीकारलेल्या उदारीकरणाच्या धोरणामुळे राज्यात विदेशी थेट गुंतवणूक आकर्षित झाली व त्यामुळे राज्याच्या औद्योगिक विकासात झपाट्याने वाढ झाली. विदेशी थेट गुंतवणुकी अंतर्गत ऑगस्ट, २००४ अखेर ५२,०९२ कोटी रुपये गुंतवणुकीचे



३,६५५ प्रकल्प राज्यात सुरु करण्यासाठी भारत सरकारने मंजूर केले आहेत. या प्रकल्पांपैकी ऑगस्ट, २००४ अखेर ३२,०२० कोटी रुपये (६१ टक्के) गुंतवणुकीच्या १,३०३ (३६ टक्के) प्रकल्पांनी उत्पादन सुरु केले होते. देशातील विदेशी थेट गुंतवणुकीमध्ये २१ टक्के वाढ ठेऊन महाराष्ट्राने त्याचे सर्वोच्च असलेले स्थान कायम राखले आहे. विदेशी

उद्योग गटनिहाय राज्यातील विदेशी थेट गुंतवणूक

(ऑगस्ट, १९९१ ते ऑगस्ट, २००४)



विदेशी थेट गुंतवणूक

(ऑगस्ट, १९९१ पासून ऑगस्ट, २००४ पर्यंत)

| | | |
|-------------------------|---|--------|
| ★मंजूर प्रकल्प (संख्या) | - | ३,६५५ |
| ★गुंतवणूक (कोटी रुपये) | - | ५२,०९२ |

थेट गुंतवणूक ही प्रामुख्याने सेवा (२४ टक्के), माहिती तंत्रज्ञान (२१ टक्के), पायाभूत सुविधा (१२ टक्के), मोटर वाहन (१० टक्के), अभियांत्रिकी (५ टक्के), विद्युत व इंधन (५ टक्के) आणि मूल धातु (५ टक्के) या क्षेत्रात होती.

महाराष्ट्रातून झालेली निर्यात

८.२२ राज्यातून प्रामुख्याने संगणक प्रणाली, हिरे व आभूषणे, तयार कपडे, सुती धागे, कृत्रिम धागे, यंत्र सामग्री व उपकरणे, धातु व धातु उत्पादने व कृषि उत्पादने, इत्यादीची निर्यात होते. २००२-०३ या कालावधीत राज्यातून झालेली एकूण निर्यात ९९,७७८ कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ३५ टक्क्याने अधिक होती. महाराष्ट्र व भारतातून झालेल्या निर्यातीचा तपशील तक्ता क्रमांक ८.४ मध्ये दिला आहे. भारताच्या एकूण निर्यातीपैकी महाराष्ट्रातील निर्यात एक-तृतीयांश इतकी होती.

तक्ता क्रमांक ८.४

महाराष्ट्र व भारतातून झालेली निर्यात

(कोटी रुपये)

| वर्ष | महाराष्ट्र | भारत |
|-----------|------------|----------|
| २०००-२००१ | ६९,४७४ | २,३०,८०९ |
| २००१-२००२ | ७३,८६५ | २,४४,२४५ |
| २००२-२००३ | ९९,७७८ | ३,००,२९० |

सामूहिक प्रोत्साहन योजना

८.२३ मुंबई-ठणे-पुणे पट्ट्यातील उद्योगांचा राज्यातील अविकसित व इतर विकासाभिमुख भागात प्रसार होण्यासाठी राज्य सरकारने १९६४ मध्ये सामूहिक प्रोत्साहन योजना सुरु केली आहे. या योजनेअंतर्गत जकात/प्रवेशकर परतावा, वीज शुल्कात माफी, विद्युत पुरवठ्यात सुलभता, इत्यादी प्रोत्साहने उद्योगांना देण्यात येतात. ही योजना मध्यम व मोठ्या उद्योगांसाठी उद्योग संचालनालय आणि लघु उद्योगांसाठी जिल्हा उद्योग केंद्रामार्फत राबविण्यात येते. नवीन सामूहिक प्रोत्साहन योजना १ एप्रिल, २००१ पासून अंमलात आली असून ती पाच वर्षे कार्यरत राहिल. 'सामूहिक प्रोत्साहन योजना, १९९३' अंतर्गत पात्र असलेले उद्योग नवीन योजने अंतर्गत सुद्धा पात्र असतील. त्याशिवाय माहिती तंत्रज्ञान, जैव-तंत्रज्ञान, अपारंपरिक उर्जा उद्योग तसेच बायो-गॅसपासून वीज निर्मिती करणारे नवीन उद्योग, नागरी विभागातील घनकचरा, इत्यादी आणि पारंपरिक नवीन उर्जा उद्योग सुद्धा या योजनेखाली पात्र आहेत. राज्याच्या औद्योगिकदृष्ट्या मागासलेल्या जिल्ह्यांमध्ये उद्योग जावेत यासाठी प्रोत्साहनांमध्ये वाढ करून 'सामूहिक प्रोत्साहन योजना, २००१' अंतर्गत औद्योगिकदृष्ट्या मागासलेल्या तालुक्यांचे पुनर्वर्गीकरण करण्यात आले असून ते तक्ता क्रमांक ८.५ मध्ये दर्शविले आहे. २००४-०५ या वर्षात डिसेंबर, २००४ पर्यंत राज्य शासनाकडून ८३६ लघु उद्योग

तक्का क्रमांक ८.५
'सामूहिक प्रोत्साहन योजना, २००१' अंतर्गत तालुक्यांचे पुनर्वर्गीकरण

| विभाग | तालुक्यांची संख्या | वर्गवारीनुसार तालुक्यांची संख्या | | | | | |
|-------------|--------------------|----------------------------------|----------|-----------|-----------|------------|------------|
| | | अ | ब | क | ड | ड+ | एकूण |
| कोंकण | ४७ | १४ | ३ | ७ | ३ | २० | ४७ |
| पुणे | ५८ | ५ | - | ७ | १७ | २९ | ५८ |
| नाशिक | ५४ | - | २ | ३ | १८ | ३१ | ५४ |
| औरंगाबाद * | ७६ | - | - | - | १ | ७० | ७१ |
| अमरावती | ५६ | - | - | - | - | ५६ | ५६ |
| नागपूर * | ६४ | - | - | - | १ | ५१ | ५२ |
| एकूण | ३५५ | १९ | ५ | १७ | ४० | २५७ | ३३८ |

* हिंगोली आणि गडचिरोली हे जिल्हे उद्योग विरहित जिल्हे म्हणून घोषित केले आहेत.

घटकांना वाटप करण्यासाठी अनुदान म्हणून २३ कोटी रुपये उपलब्ध करून देण्यात आले. २००३-०४ या वर्षात तत्सम आकडेवारी अनुक्रमे ७५ कोटी रुपये व ५६६ लघु उद्योग घटक अशी होती.

लघु उद्योग क्षेत्र

८.२४ उत्पादन, रोजगार व निर्यातीमधील लक्षणीय वाट्यामुळे लघु उद्योग क्षेत्र अर्थव्यवस्थेत एक महत्वाची भूमिका पार पाडते. राज्यात लघु उद्योग क्षेत्राची जलद गतीने वाढ होण्यासाठी शासनाने लघु उद्योगांच्या नोंदणी प्रक्रियेत या आधीच सुलभता आणली आहे. हस्त अवजारे (हँड टूल्स) व होजीअरी संबंधीत लघु उद्योग घटकांसाठी कमाल गुंतवणूक मर्यादा ५ कोटी रुपये तर इतर लघु उद्योग घटकांकरिता ही मर्यादा १ कोटी रुपये इतकी ठेवण्यात आली आहे. छोटे उद्योग, सेवा व व्यापार क्षेत्रातील लघु उद्योगांसाठी ही मर्यादा अनुक्रमे २५ लाख रुपये व १० लाख रुपये ठरविण्यात आली आहे. लघु उद्योगांकरिता मुदत कर्जांची एकत्रित कमाल मर्यादा ५ लाख रुपये इतकी आहे. लघु उद्योग घटकांची सुरुवातीला तात्पुरती नोंदणी करण्यात येते आणि उत्पादन सुरु केल्यानंतर त्यांची स्थायी नोंदणी करण्यात येते. सप्टेंबर, २००४ अखेर राज्यात एकूण ४.३२ लाख नोंदणीकृत लघु उद्योग (अस्थायी व स्थायी) घटक होते. त्यांची एकूण भांडवली गुंतवणूक ६१,२९० कोटी रुपये होती तर त्यातून निर्माण झालेला रोजगार २६.३१ लाख होता.

८.२५ २००१-०२ मध्ये घेण्यात आलेल्या लघु उद्योग घटकांच्या तिसऱ्या गणनेनुसार ३१ मार्च, २००१ रोजी राज्यात एकूण १,३७,३४१ लघु उद्योग होते. त्यापैकी अंदाजे ६१ टक्के लघु उद्योग प्रत्यक्षात कार्यान्वित होते.

८.२६ तिसऱ्या लघु उद्योग घटकांच्या गणनेसह नोंदणी न झालेल्या लघु उद्योग क्षेत्रातील घटकांची नमुना पाहणी सुध्दा घेण्यात आली होती. त्याप्रमाणे कार्यान्वित लघु उद्योगांची संख्या (नोंदणीकृत + अनोंदणीकृत) आणि त्यातील रोजगाराची माहिती तक्का क्रमांक ८.६ मध्ये दिली आहे.

तक्का क्रमांक ८.६

महाराष्ट्र व भारतातील कार्यान्वित लघु उद्योगांची संख्या व त्यातील रोजगार

(हजारात)

| बाब | महाराष्ट्र | | भारत | |
|------------|------------|------------|-----------|------------|
| | नोंदणीकृत | अनोंदणीकृत | नोंदणीकृत | अनोंदणीकृत |
| लघु उद्योग | ८३ | ७२० | १,३७५ | ९,९४६ |
| रोजगार | ६३१ | १,४२१ | ६,१६३ | १८,७६९ |

सहकारी औद्योगिक वसाहती

८.२७ राज्याच्या नागरी भागात केंद्रीत झालेल्या उद्योगांचे ग्रामीण भागात स्थलांतर व्हावे आणि त्याद्वारे ग्रामीण भागात रोजगाराच्या अधिक संधी निर्माण कराव्या हा सहकारी औद्योगिक वसाहती स्थापन करण्यामागचा मुख्य उद्देश आहे. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाच्या क्षेत्रांतर्गत इतर ठिकाणी सहकारी तत्वावर औद्योगिक वसाहतींचा विकास करण्याचा कार्यक्रम राज्य शासनाने हाती घेतला आहे. सहकारी औद्योगिक वसाहत स्थापन करण्यासाठी राज्य शासन एकूण प्रकल्प खर्चाच्या २० टक्के इतके भाग भांडवल देते व वित्तीय संस्थांकडून ६० टक्के कर्ज शासकीय हमीवर उपलब्ध करून देते आणि प्रकल्प खर्चाची उर्वरित २० टक्के रक्कम सहकारी औद्योगिक वसाहतीत उद्योग स्थापन करणाऱ्या सभासदांकडून भाग भांडवल म्हणून गोळा करावी लागते. ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत राज्यात १३९ नोंदणीकृत सहकारी औद्योगिक वसाहती होत्या. त्यापैकी, ९३ वसाहती कार्यान्वित असून ७ वसाहती अवसायनात गेल्या आहेत. उर्वरित ३९ वसाहती अजून कार्यान्वित व्हावयाच्या आहेत. आतापर्यंत अशा ९२ वसाहतींना अर्थसहाय्य देण्यात आले आहे. या वसाहतींमध्ये ऑक्टोबर, २००४ अखेर एकूण ८,४४३ गाळे बांधण्यात आले होते व ६,९५० घटक कार्यान्वित झाले होते. या औद्योगिक वसाहतींच्या एकूण भागभांडवलामध्ये राज्य शासनाचा १०.७० कोटी रुपयांचा वाटा होता. सहकारी औद्योगिक वसाहतींसाठी आवश्यक असलेले भूसंपादन महाराष्ट्र औद्योगिक विकास अधिनियमाद्वारे करण्यात येते. छोट्या औद्योगिक क्षेत्रांच्या विकासाचा कार्यक्रमही सहकारी औद्योगिक चळवळीद्वारे राबविण्याचे प्रस्तावित आहे. या अंतर्गत सहकारी औद्योगिक वसाहतींना योजनाबद्ध आखणी व पाण्याच्या स्रोतांबाबत सल्ला, इत्यादी तांत्रिक बाबींसंबंधी महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाकडून सहाय्य अपेक्षित आहे.

आजारी उद्योगांचे पुनर्वसन

मध्यम आणि मोठे उद्योग

८.२८ मध्यम व मोठ्या उद्योगांच्या पुनर्वसनासाठी भारत सरकारने आजारी उद्योग कंपनी कायदा (खास तरतूद), १९८५ अंतर्गत औद्योगिक वित्तीय पुनर्बांधणी मंडळाची स्थापना केली आहे. ज्या उद्योगांची निव्वळ मत्ता संपुष्टात आली आहे अशा उद्योगांनी आजारी उद्योगासंबंधीच्या सवलती मिळण्यासाठी औद्योगिक वित्तीय पुनर्बांधणी मंडळाकडे संपर्क साधणे आवश्यक आहे. आजारी उद्योगांना खालील प्रकारच्या सवलती दिल्या जातात : १) वीज कपात/वीज वापरावरील प्रतिबंधात विशेष सवलत, २) कामगारांशी वाटाघाटी करण्यासाठी शासकीय यंत्रणेमार्फत

मदत ३) विक्रीकर, खरेदी कर, जमीन महसूल, इत्यादी शासकीय शुल्क भरण्यासाठी हप्त्यांची पुनर्बांधणी आणि ४) महाराष्ट्र राज्य विद्युत महामंडळाची थकीत रक्कम भरण्यासाठी दिलेली मुदत व बोर्डाकडे केलेल्या अर्जांचा दिनांक या दरम्यानचा विलंब आकार पूर्णतः माफ करणे. मंडळाच्या स्थापनेपासून ऑक्टोबर, २००४ पर्यंत मंडळाकडे ७९४ आजारी उद्योगांची प्रकरणे प्राप्त झाली असून पुनर्वसनासाठी १२९ प्रकरणे मंजूर करण्यात आली, ९५ उद्योग गुंडाळण्याची शिफारस करण्यात आली, १०७ उद्योगांची प्रकरणे फेटाळण्यात आली आहेत, कर्मचाऱ्यांच्या सहकारी योजनेअंतर्गत पाच उद्योगांचे पुनर्वसन करण्यात आले व उर्वरित ४५८ प्रकरणे अद्याप प्रलंबित आहेत.

आजारी लघु उद्योग घटक

८.२९ लघु उद्योग आजारी असल्याबाबतचे प्रमाणपत्र राज्य शासनाने दिल्यानंतर अंशा आजारी घटकांकडील थकीत विक्रीकर व वीज शुल्क रकमांच्या हप्त्यांची पुनर्बांधणी करण्यात येते. डिसेंबर, २००४ अखेर एकूण ५,०७० आजारी लघु उद्योग घटकांपैकी उद्योग आजारी असल्याबाबतची प्रमाणपत्रे ५०९ लघु उद्योग घटकांना प्राप्त झाली असून तीन लघु उद्योग घटक विचाराधीन होते.

उद्योगांना सहाय्य

८.३० राज्याचा औद्योगिक विकास होण्यासाठी आणि राज्याच्या अविक्सित भागात उद्योग सुरु करण्यासाठी उद्योगांना आवश्यक त्या पायाभूत सुविधा निर्माण करण्याचे व आर्थिक प्रोत्साहने देण्याचे धोरण राज्य शासनाने पुढे चालू ठेवले आहे. तांत्रिक व वित्तीय सहाय्य पुरवून महाराष्ट्र राज्य वित्तीय महामंडळ (महावित्त), महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ, महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास महामंडळ, इत्यादी संस्थांमार्फत राज्य शासन ही उद्दिष्टे साध्य करित असते. वरील राज्यस्तरीय संस्थांव्यतिरिक्त भारतीय औद्योगिक विकास बँक (आयडीबीआय), भारतीय औद्योगिक वित्त महामंडळ मर्यादित, इत्यादी सारख्या देश पातळीवरील वित्तीय संस्थासुद्धा राज्यातील उद्योगांना वित्तीय सहाय्य पुरवितात. या सर्व संस्थांकडून राज्यातील उद्योगांना पुरविण्यात आलेल्या सहाय्याचा तपशील पुढील परिच्छेदांत थोडक्यात दिला आहे.

(अ) राज्यस्तरीय औद्योगिक विकास संस्था

(i) महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ

८.३१ राज्याचा सुनियोजित आणि सुव्यवस्थित औद्योगिक विकास होण्यासाठी औद्योगिक क्षेत्राची उभारणी करण्याच्या उद्देशाने १९६२ मध्ये महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाची स्थापना करण्यात आली. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ उद्योजकांना औद्योगिक क्षेत्रांतर्गत रस्ते, पाणी, वीज व इतर अंतर्गत सेवा यासारख्या आवश्यक त्या पायाभूत सुविधांसह विकसित भूखंड उपलब्ध करून देते. राज्य शासन पुढील महत्वाच्या कार्यक्रमांची अंमलबजावणी महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाद्वारे करित आहे: (१) राज्यभरात ६१ विकास केंद्रांची स्थापना, (२) केंद्र शासन सहाय्यित पाच विकास केंद्रांची स्थापना, (३) राज्यातील सर्व तालुक्यात लहान औद्योगिक क्षेत्रांची स्थापना आणि (४) राज्याच्या उद्योग, व्यापार व वाणिज्य विषयक धोरण, १९९५ मध्ये घोषित करण्यात आलेल्या नऊ ठिकाणी 'पंचताराकित' औद्योगिक क्षेत्रांची उभारणी.

८.३२ महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाने निवडक औद्योगिक क्षेत्रात गाळे बांधले आहेत. मार्च, २००४ अखेर महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाकडे २४९ औद्योगिक क्षेत्रांच्या विकासाचे काम सोपविण्यात आले होते. यामध्ये ९१ मोठी क्षेत्रे, ५७ विकास केंद्रे

(५२ राज्य सहाय्यित व पाच केंद्र सहाय्यित) व १०१ लहान औद्योगिक क्षेत्रे होती. एकूण २४९ औद्योगिक वसाहतीपैकी २२६ औद्योगिक वसाहती (९१ टक्के) कार्यान्वित होत्या. ३१ मार्च, २००४ अखेर महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाचे एकूण नियोजित क्षेत्र ६५,४३९ हेक्टर इतके असून त्यापैकी ५३,१४९ हेक्टर (८१ टक्के) क्षेत्र महामंडळाच्या ताब्यात होते. वाटप करण्यात आलेल्या भूखंडाचे एकूण क्षेत्र १८,८७३ हेक्टर होते. महामंडळाची एकूण प्रतिदिन पाणीपुरवठा क्षमता १,९४१ दशलक्ष लिटर होती. महामंडळाने २००२-०३ व २००३-०४ या वर्षात केलेल्या कार्याची प्रगती तक्ता क्रमांक ८.७ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक ८.७

महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाची प्रगती

| बाब | २००२-०३ | २००३-०४ | २००३-०४ * |
|-------------------------|---------|---------|-----------|
| आखणी केलेले भूखंड | २,४४७ | १,३५० | ५५,६५३ |
| वाटप केलेले भूखंड | १,५५० | १,६६३ | ४६,२६१ |
| बांधलेले गाळे/शेड्स | ८ | २११ | ६,२४२ |
| वाटप केलेले गाळे/शेड्स | ४० | ३६ | ५,०४६ |
| उत्पादन सुरु असलेले घटक | ५८६ | २,१३१ | २६,००७ |
| उभारणी चालू असलेले घटक | - | ७० | ३,०१६ |
| एकूण भांडवल # | १,९७८ | ६१९ | २४,७५२ |

* : १९६२ पासूनची संचित संख्या, # : कोटी रुपये

(ii) महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास महामंडळ

८.३३ लघु उद्योगांच्या विकासास सहाय्य करण्याच्या उद्देशाने राज्यात महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास महामंडळाची १९६२ साली स्थापना करण्यात आली. महामंडळाची प्रमुख कार्ये: १) लघु उद्योग घटकांना लागणाऱ्या कच्च्या मालाची प्राप्ती करणे व त्याचे वितरण करणे, २) तयार मालाच्या विक्रीसाठी मदत पुरविणे आणि मालाच्या साठवणुकीकरिता गोदामाची व मालाच्या चढ-उतारणीची सुविधा उपलब्ध करून देणे, ३) लघु उद्योग घटकांना आयात आणि निर्यातीसाठी सहाय्य करणे, ४) हस्तकला कारागिरांना मदत करणे आणि ५) प्रदर्शने आयोजित करणे ही आहेत. २००३-०४ मध्ये महामंडळाची एकूण उलाढाल १२४.६१ कोटी रुपये असून आधीच्या वर्षापेक्षा ती १८.३ टक्क्यांनी अधिक होती. एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत एकूण उलाढाल १६४.२४ कोटी रुपये होती. त्यापैकी १०४.५३ कोटी रुपये कच्च्या मालाच्या खरेदी व विक्री संबंधीची आणि ५९.७६ कोटी रुपये लघु उद्योग घटकांच्या तयार मालाच्या विक्री संबंधी होती.

(३) महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळ

८.३४ महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळाची स्थापना १९६२ मध्ये करण्यात आली. राज्यातील खादी व ग्रामोद्योगातील उपक्रमांचे संघटन, विकास आणि विस्तार करणे ही मंडळाची मुख्य कार्ये आहेत व्यक्ती, नोंदणीकृत संस्था व सहकारी संस्थांना मंडळ आर्थिक सहाय्य पुरविते. तसेच लाभार्थी व्यक्तींना तांत्रिक मार्गदर्शन व प्रशिक्षण आणि ग्रामोद्योगातील उत्पादनांच्या विक्रीची व्यवस्था, इत्यादी कामे मंडळाकडून केली जातात.

८.३५ राज्यातील खादी व ग्रामोद्योग क्षेत्राला विविध वित्तीय संस्था
राज्य शासन यांनी उपलब्ध करून दिलेल्या वित्तीय सहाय्याचा तपशील
तक्ता क्रमांक ८.८ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ८.८

| खादी व ग्रामोद्योग क्षेत्रास पुरविलेले वित्तीय सहाय्य (लाख रुपये) | | | |
|--|---------|---------|-----------------------|
| तपशील | २००२-०३ | २००३-०४ | २००४-०५ (अपेक्षित) |

| अ) अनुदान : | | | |
|------------------------------|-------|-------|-----|
| खादी व ग्रामोद्योग आयोगाकडून | २६३ | २४१ | ६२२ |
| राज्य शासनाकडून | १,३९३ | १,४११ | - |
| ब) कर्ज : | | | |
| * बँकांकडून | ३,०१७ | १,५५९ | - |

यामध्ये राष्ट्रीयीकृत बँका, सहकारी बँका व इतर वित्तीय संस्थांचा समावेश आहे.

८.३६ खादी व ग्रामोद्योग क्षेत्राच्या कक्षेत सध्या ११६ प्रकारचे उद्योग
तात. कारागीर रोजगार हमी योजनेअंतर्गत आधीच्या वर्षाच्या
६७ लाख कारागिरांना पुरविण्यात आलेल्या रोजगार संधीच्या तुलनेत
००३-०४ मध्ये ३.९६ लाख कारागिरांना रोजगाराच्या संधी उपलब्ध
करून देण्यात आल्या. २००४-०५ मध्ये ४.०२ लाख कारागिरांना
रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देण्यात येतील असे अपेक्षित आहे.

८.३७ राज्याच्या पश्चिम घाट विभागात मधुमक्षिका पालनाची
शेष योजनासुद्धा मंडळ राबवीत आहे. २००३-०४ या वर्षात मंडळाने
२२ मधुमक्षिका पेट्यांचे वाटप केले. सध्या ५,६७३ मधुमक्षिका पेट्या
पर्यंत असून या पेट्यांपासून ९.७५ लाख रुपये किंमतीच्या १०,८३०
लो ग्रॅम मधाचे उत्पादन झाले.

८.३८ महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळाने सहाय्यित
लेल्या घटकांचे उत्पादन मूल्य आणि निर्माण झालेला रोजगार या
बाबची माहिती तक्ता क्रमांक ८.९ मध्ये दिली आहे.

(ब) राज्य व केंद्रस्तरीय वित्तीय संस्था

८.३९ केंद्र तसेच राज्यस्तरीय विविध वित्तीय संस्था महाराष्ट्रातील
उद्योगांना वित्तीय सहाय्याचा पुरवठा करतात. भारतीय औद्योगिक वित्त
मंडळ मर्यादित, भारतीय औद्योगिक विकास बँक, भारतीय लघु उद्योग

तक्ता क्रमांक ८.९

खादी व ग्रामोद्योग घटकांचे उत्पादन मूल्य आणि रोजगार निर्मिती

| वर्ष | सहाय्यित घटक | उत्पादन मूल्य (कोटी रुपये) | रोजगार (लाखात) |
|----------|--------------|-------------------------------|-------------------|
| २००२-०३ | २,४३,३९२ | १,१०९ | ४.९८ |
| २००३-०४ | २,४८,०८९ | १,१३२ | ५.१८ |
| २००४-०५* | २,४८,०८९ | १,१८८ | ५.४३ |

* अंदाजित

विकास बँक, भारतीय उद्योग गुंतवणूक बँक मर्यादित, भारतीय जीवन
विमा निगम व सर्वसाधारण जीवन विमा निगम या केंद्रस्तरीय, तर
महाराष्ट्र राज्य वित्तीय महामंडळ व सिकॉम मर्यादित या राज्यस्तरीय
वित्तीय संस्था आहेत. महाराष्ट्रातील उद्योगांना मंजूर व वितरीत केलेल्या
वित्तीय सहाय्याचा तपशील तक्ता क्रमांक ८.१० मध्ये दर्शविला आहे.
२००३-०४ मध्ये महाराष्ट्रातील उद्योग घटकांसाठी या सर्व संस्थांनी मिळून
एकूण ६,७५१.१९ कोटी रुपयांचे वित्तीय सहाय्य मंजूर केले आहे तर
८,७६७.९८ कोटी रुपयांचे वाटप केले. वित्तीय संस्थांनी महाराष्ट्रातील
उद्योगांना मंजूर केलेल्या व वाटप केलेल्या वित्तीय सहाय्याचा तपशील
भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ३६ मध्ये दिला आहे.

खनिज संपत्ती

८.४० महाराष्ट्रामध्ये कोळसा, चुनखडी, कच्चे मँगनीझ, बॉक्साईट,
कच्चे लोखंड, डोलोमाईट, लॅटेराईट, कायनाईट, फ्लोराईट (ग्रेडेड),
क्रोमाईट, इत्यादी खनिजे सापडतात. ही खनिजे प्रामुख्याने भंडारा, चंद्रपूर,
गडचिरोली, नागपूर, यवतमाळ, कोल्हापूर, सातारा, रायगड, रत्नागिरी,
सिंधुदुर्ग व ठाणे या जिल्ह्यांत सापडतात. राज्यात उत्पादनक्षम खनिज साठे
असणारे सुमारे ५८ हजार चौरस कि.मी. इतके क्षेत्र असून ते एकूण
भौगोलिक क्षेत्राच्या १९ टक्के आहे. राज्यातील महत्वाच्या खनिजांचे
उत्पादन व मूल्य भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ३७ मध्ये दिले आहे.

८.४१ २००३-०४ मध्ये राज्यातील खनिजांच्या उत्पादनाचे एकूण
मूल्य ३,१३२ कोटी रुपये असून ते आधीच्या वर्षाच्या एकूण मूल्यापेक्षा
५ टक्क्याने जास्त होते. २००३-०४ मध्ये उत्खनन केलेल्या कोळशाचे
मूल्य (२,६०८ कोटी रुपये) राज्यातील सर्व खनिजांच्या एकूण मूल्याच्या
८३ टक्के होते.

तक्ता क्रमांक ८.१०

महाराष्ट्रातील उद्योगांना मंजूर आणि वितरीत केलेल्या वित्तीय सहाय्याचा तपशील

(कोटी रुपये)

| वित्तीय संस्था | संस्था (संख्या) | २००२-०३ | | २००३-०४ | |
|----------------|--------------------|----------|----------|----------|----------|
| | | मंजूर | वितरीत | मंजूर | वितरीत |
| केंद्रीय | ४ | ८,७१२.९७ | ७,१८०.५६ | ६,५२४.७० | ८,५३४.४२ |
| राज्य | २ | ३८१.२० | ३५९.२३ | २२६.४९ | २३३.५६ |



कृषि व संलग्न कार्ये

महाराष्ट्रातील स्थिती

१.१ अर्थव्यवस्थेमध्ये कृषि क्षेत्र हे महत्त्वाची भूमिका बजावते. जनगणना २००१ नुसार महाराष्ट्रातील काम करणाऱ्यांची एकूण संख्या (मुख्यतः व सीमांतिक काम करणारे मिळून) ४.२१ कोटी इतकी होती आणि त्यामध्ये शेतकरी व शेतमजूर अनुक्रमे २८.५६ टक्के व २६.८५ टक्के होते. म्हणजेच राज्यातील कामगारांपैकी ५५ टक्क्यांपेक्षा जास्त कामगार हे स्वतःच्या उपजीविकेसाठी शेतीवर प्रत्यक्षपणे अवलंबून आहेत. तथापि, २००३-०४ मधील स्थूल राज्य उत्पन्नामध्ये कृषि व पशुसंवर्धन यांचा वाटा तुलनेने कमी, म्हणजे जवळपास ११.४ टक्के इतका राहिला. याचे कारण म्हणजे महाराष्ट्रातील जमीन, भौगोलिक रचना आणि हवामान हे शेतीच्या दृष्टीने फारसे अनुकूल नाही. राज्यातील जवळपास एक-तृतीयांश क्षेत्र हे पर्जन्यछायेच्या भागात मोडते. परिणामी, राज्यातील शेती ही देशपातळीवरील शेतीइतकी उत्पादक नाही. राज्यातील शेतीखालील क्षेत्राचे ५७.२ टक्के हे प्रमाण देशपातळीवरील तत्सम प्रमाणापेक्षा (४६.१ टक्के) तुलनेने जास्त असले तरी, सिंचनाखालील स्थूल क्षेत्राचे प्रमाण महाराष्ट्रात जवळपास १७ टक्के इतके आहे, तर देशपातळीवर ते जवळपास ४१ टक्के इतके आहे. परिणामी, महाराष्ट्रातील सरासरी प्रतिहेक्टर पीक उत्पादन हे देशपातळीवरील सरासरीपेक्षा बरेच कमी आहे.

मान्सून २००४

१.२ राज्यात नैऋत्य मोसमी पावसाचे आगमन १० जून, २००४ च्या सुमारास, म्हणजे तीन दिवस उशीराने झाले. राज्याच्या जवळपास सर्वच भागांत पावसाची तीव्रता व फैलाव १९ जून, २००४ पर्यंत चांगला होता. त्यानंतर बहुतांश जिल्ह्यात ७ ते १२ दिवस, तर विदर्भ व मराठवाड्यातील आणि कोकण वगळता, उर्वरित महाराष्ट्रातील काही जिल्ह्यांत त्यापेक्षाही जास्त दिवस पावसाने दडी मारली. बिनपावसाचा हा कालावधी विदर्भ व उत्तर महाराष्ट्रात लांबला. परिणामी कापूस, भुईमूग, ज्वारी, बाजरी व मका या सारख्या काही खरीप पिकांची दुबार पेरणी करावी लागली. त्याचप्रमाणे सोयाबिन ह्या तेलबिया पिकाच्या व उडीद, मूग या कडधान्य पिकांच्या वाढीवर प्रतिकूल परिणाम झाल्याने त्यांच्या उत्पादनात घट होण्याचा संभव आहे. मात्र २१ जुलै नंतर संपूर्ण राज्यात विस्तृतपणे पाऊस पडल्याने भात पिकांच्या लावण्यांसह खरीप पिकांच्या पेरण्यांना वेग आला. खरीप पिकांच्या पेरण्या जून, २००४ पर्यंत ६२ टक्के पूर्ण झालेल्या होत्या, त्या

ऑगस्ट, २००४ अखेर पर्यंत १०० टक्के पूर्ण झाल्या. सप्टेंबर-ऑक्टोबर २००४ मध्ये राज्यभर पाऊस चांगला पडला. त्यामुळे राज्यात रब्बी पिकांच्या पेरण्या ९८ टक्के प्रमाणात पूर्ण झाल्या. ह्या तुलनेत गतवर्षी हे प्रमाण ८६ टक्के होते. राज्यातील रब्बी पिकांची एकंदरीत परिस्थिती समाधानकारक आहे. राज्याच्या बहुतेक सर्व भागांत जानेवारी, २००५ मध्ये (२३ ते ३१ जानेवारी) बिगरमोसमी पाऊस पडला आणि विदर्भ व मराठवाड विभागांतील काही भागांत मुसळधार व वादळासह गारांचा पाऊस पडल्यामुळे रब्बी व फळ पिकांवर परिणाम झाला. जून महिन्यात दीर्घकालीन सरासरीच्या ९९ टक्के इतक्या प्रमाणात पाऊस पडला, तर हे प्रमाण जुलैमध्ये ७१ टक्के ऑगस्टमध्ये ११२ टक्के, सप्टेंबरमध्ये ७५ टक्के आणि ऑक्टोबरमध्ये ५६ टक्के इतके होते. राज्यामध्ये १० जून ते ३१ ऑक्टोबर, २००४ य कालावधीत पडलेला पाऊस हा दीर्घकालीन सरासरीच्या ८६.१ टक्के इतक्या प्रमाणात होता. पडलेल्या पावसाच्या असमतोल फैलावामुळे विदर्भ, मराठवाड आणि अंशतः पश्चिम महाराष्ट्रामधील काही जिल्ह्यांत समाधानकारक पाऊस झाला नाही. राज्यातील ३३ जिल्ह्यांपैकी (मुंबई शहर व मुंबई उपनगर जिल्हे वगळता) १५ जिल्ह्यांमध्ये भारतीय हवामानशास्त्र विभागाच्या निकषानुसार अपुरा, म्हणजे सरासरीच्या ४१ ते ८० टक्के इतक्या पाऊस पडला. १ जिल्ह्यांमध्ये सरासरीच्या ८१ ते १०० टक्के आणि ८ जिल्ह्यांमध्ये सरासरीपेक्षा जास्त प्रमाणात पाऊस पडला. पडलेल्या पावसाच्या प्रमाणानुसार जिल्ह्यां वर्गीकरण तक्ता क्र. १.१ मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्रमांक १.१

मान्सून २००४ मध्ये पडलेल्या पावसाच्या टक्केवारीनुसार जिल्ह्यांचे वर्गीकरण

| पडलेल्या पावसाची सरासरीशी टक्केवारी | जिल्ह्यांची संख्या * |
|-------------------------------------|----------------------|
| ४० पर्यंत | - (०.०%) |
| ४१ - ८० | १५ (४५.५%) |
| ८१ - १०० | १० (३०.३%) |
| १०१ - ११९ | ५ (१५.१%) |
| १२० व अधिक | ३ (९.१%) |
| एकूण | ३३ (१००.०%) |

* मुंबई शहर व मुंबई उपनगर जिल्हे वगळून

१.३ पर्जन्यमानाबाबतच्या तालुकावार आकडेवारीवरून असे दिसून येते की राज्यातील एकूण ३५३ तालुक्यांपैकी ९ तालुक्यांत भारतीय वामानशास्त्र विभागाच्या निकषानुसार अत्यंत अपुरा (म्हणजे सरासरीच्या ६० टक्क्यांपर्यंत) पाऊस पडला, १५९ तालुक्यांमध्ये अपुरा (४१ ते ८० टक्के), तर ४४ तालुक्यांमध्ये अतिरिक्त प्रमाणात (सरासरीपेक्षा २० टक्क्यांनी अथवा त्यापेक्षा जास्त) पाऊस पडला. याबाबतचा तपशील तक्ता क्र. १.२ मध्ये दिला आहे.

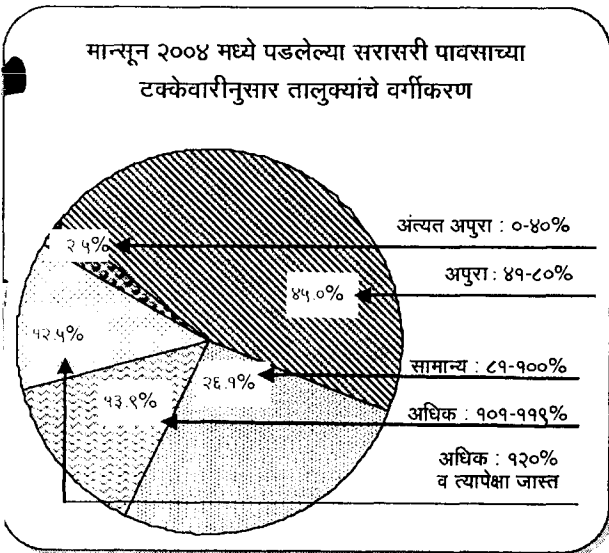
तक्ता क्रमांक १.२

मान्सून २००४ मध्ये पडलेल्या पावसाच्या टक्केवारीनुसार तालुक्यांचे वर्गीकरण

| सरासरी पर्जन्यमान टक्केवारी वर्ग | तालुक्यांची संख्या | | | | | एकूण | |
|----------------------------------|--------------------|------|------------------|--------|----|------|--------------|
| | कोकण नाशिक | पुणे | अमरावती औरंगाबाद | नागपूर | | | |
| ०-४० | - | - | - | २ | ५ | २ | ९ (२.५%) |
| ४१-८० | ८ | ७ | ७ | ४५ | ४० | ५२ | १५९ (४५.०%) |
| ८१-१०० | २६ | १२ | १६ | २२ | ८ | ८ | ९२ (२६.१%) |
| १०१-११९ | ७ | १३ | १९ | ६ | ३ | १ | ४९ (१३.९%) |
| १२० व अधिक | ६ | २२ | १५ | १ | - | - | ४४ (१२.५%) |
| एकूण | ४७ | ५४ | ५७ | ७६ | ५६ | ६३ | ३५३ (१००.०%) |

१.४ अत्यंत कमी व अपुरा पाऊस पडलेल्या १६८ तालुक्यांपैकी ९ (५८.९ टक्के) तालुके विदर्भ विभागातील, ४७ (२८.० टक्के) जलाशयांतील, १४ (८.३ टक्के) मध्य महाराष्ट्रातील, (नाशिक व पुणे भाग) आणि ८ (४.८ टक्के) तालुके कोकण विभागातील होते. अशाचप्रकारे मान्सून, २००४ मध्ये राज्यात पडलेल्या पावसाबाबतचे एकंदरीत निष्पत्ती समाधानकारक नव्हते. याचा परिणाम खरीप व रब्बी ह्या दोन्ही काऱ्या कृषि उत्पादनात घट होण्यामध्ये झाला आहे.

मान्सून २००४ मध्ये पडलेल्या सरासरी पावसाच्या टक्केवारीनुसार तालुक्यांचे वर्गीकरण



१.५ राज्यातील ३५३ तालुक्यांचे पावसाच्या टक्केवारीतील प्रमाणानुसार वर्गीकरण तक्ता क्र. १.३ मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्रमांक १.३

प्रत्यक्ष पडलेल्या पावसाच्या टक्केवारीनुसार तालुक्यांचे वर्गीकरण

| पावसाच्या मात्रेनुसार गट (मि.मी.) | टक्केवारीनुसार तालुक्यांचे वर्गीकरण | |
|-----------------------------------|-------------------------------------|------------------------|
| | मान्सून २००४ | दीर्घकालीन सरासरीनुसार |
| २५० पर्यंत | - | - |
| २५१ - ५०० | १९.० | ८.८ |
| ५०१ - ७५० | ४३.६ | २८.६ |
| ७५१ - १,००० | १४.२ | २४.९ |
| १,००१ - २,००० | ७.९ | २२.९ |
| २,००१ - ५,००० | १४.४ | १४.२ |
| ५,००० पेक्षा जास्त | ०.९ | ०.६ |
| एकूण | १००.० (३५३) | १००.० (३५३) |

१.६ वर नमूद केल्यानुसार महाराष्ट्रातील २००४ मधील मान्सून हंगाम हा प्रतिकूल राहिल्यामुळे सलग चौथ्या वर्षी कृषि उत्पादनावर परिणाम झाला आहे. राज्य शासनाने अंतिम पैसेवारीच्या आधारे २५ जिल्ह्यांतील १२,०३४ खेड्यांमध्ये टंचाईग्रस्त स्थिती जाहीर केली असून शासनाच्या निकषानुसार बाधित शेतकऱ्यांना तातडीने मदत देण्याचे आदेश दिले आहेत.

जलाशयांतील जलसाठ्याची स्थिती

१.७ राज्यातील सर्व मोठ्या, मध्यम व लघु पाटबंधारे (राज्य क्षेत्र) जलाशयांमध्ये दिनांक १५ ऑक्टोबर, २००४ रोजी एकूण उपयुक्त जलसाठा २१,९५४ दशलक्ष घनमीटर (दलघमी) इतका होता आणि तो प्रकल्पीय क्षमतेच्या जवळपास ७१ टक्के इतका होता. ही टक्केवारी २००३ मधील तत्सम दिनांकास ६५ आणि २००२ मधील तत्सम दिनांकास ७० इतकी होती. तक्ता क्र. १.४ मध्ये दिलेल्या विभागवार माहितीवरून असे दिसून येते की, उपयुक्त जलसाठ्याची दिनांक १५ ऑक्टोबर, २००४ ची टक्केवारी कोकण (९५), नाशिक (९४) व पुणे (८९) ह्या विभागांत तुलनेने जास्त आणि औरंगाबाद (४६), अमरावती (३४) व नागपूर (२८) ह्या विभागांत ती तुलनेने कमी होती.

तक्ता क्रमांक १.४

जलाशयांतील उपयुक्त जलसाठ्याची १५ ऑक्टोबर रोजीची स्थिती

| विभाग | प्रकल्प/जलाशयांची संख्या | उपयुक्त जलसाठा (दलघमी) | | १५ ऑक्टोबर रोजी उपयुक्त जलसाठ्याची टक्केवारी | | |
|----------|--------------------------|------------------------|---------------|--|------|------|
| | | प्रकल्पीय | १५.१०.०४ रोजी | २००४ | २००३ | २००२ |
| कोकण | १०३ | ४८७ | ४६५ | ९५ | ९४ | ९२ |
| नाशिक | ३२० | ३,७८६ | ३,५४७ | ९४ | ७७ | ८१ |
| पुणे | ४८८ | ९,२४५ | ८,२२६ | ८९ | ५७ | ६८ |
| औरंगाबाद | ४७१ | ६,२२८ | २,८४७ | ४६ | ३६ | ५२ |
| अमरावती | ३१९ | २,३८१ | ८०९ | ३४ | ७१ | ८५ |
| नागपूर | ३५८ | ३,४४७ | ९५१ | २८ | ८१ | ५८ |
| इतर* | १४ | ५,३९५ | ५,१०९ | ९५ | ८८ | ८३ |
| एकूण | २,०७३ | ३०,९५९ | २१,९५४ | ७१ | ६५ | ७० |

* पिण्याच्या पाण्यासाठीचे जलसाठे व जलविद्युत् प्रकल्प

२००४-०५ मधील कृषि उत्पादन

१.८ प्रारंभिक पूर्वानुमानानुसार २००४-०५ मधील अन्नधान्यांचे राज्यातील एकूण उत्पादन १०७.५ लाख टन, म्हणजे आधीच्या वर्षातील १०२.४ लाख टन उत्पादनाच्या तुलनेत ४.९९ टक्क्यांनी जास्त होईल, असा अंदाज आहे. अन्नधान्यांच्या उत्पादनाबाबतचा ढोबळ तपशील तक्ता क्र. ९.५ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ९.५

महाराष्ट्रातील अन्नधान्यांचे उत्पादन

(लाख टनांत)

| पीक | २००४-०५ (तात्पुरते) | २००३-०४ (अंतिम अंदाज) | वाढ (+)/घट (-) (टक्के) |
|-----------------|------------------------|--------------------------|---------------------------|
| खरीप + रब्बी | | | |
| (i) तृणधान्ये | ९३.२९ | ८२.८४ | १२.५२ |
| (ii) कडधान्ये | १४.२९ | १९.५५ | (-२६.९१) |
| एकूण अन्नधान्ये | १०७.५० | १०२.३९ | ४.९९ |
| तेलबिया | २९.१० | २८.३७ | २.५७ |

खरीप पिके

९.९ २००४-०५ मध्ये राज्यातील खरीप पिकांखालील क्षेत्र आणि त्या पिकांचे उत्पादन यांबाबतीतील स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

खरीप तृणधान्ये

९.९.१ २००४-०५ मध्ये खरीप तृणधान्यांच्या पिकांखालील क्षेत्र ५१.५ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षातील क्षेत्रापेक्षा ४.३ टक्क्यांनी जास्त होते. मात्र २००४-०५ मध्ये खरीप तृणधान्यांचे उत्पादन आधीच्या वर्षातील ६६.६ लाख टनांपेक्षा ६.३ टक्क्यांनी कमी म्हणजे ६२.४ लाख टन इतके होईल, असा अंदाज आहे. २००४-०५ मध्ये भात पिकाखालील क्षेत्र १४.५ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षातील क्षेत्रापेक्षा ३.१ टक्क्यांनी कमी आहे, तर त्याचे उत्पादन २३.९ लाख टन इतके, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा १३.५ टक्क्यांनी कमी होईल, असे अपेक्षित आहे. खरीप ज्वारीखालील क्षेत्र १४.४ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षातील क्षेत्रापेक्षा ९.४ टक्क्यांनी कमी होते आणि उत्पादन आधीच्या वर्षापेक्षा २४.३ टक्क्यांनी कमी म्हणजे १६.० लाख टन होईल, असा अंदाज आहे. बाजरीखालील क्षेत्र (१६.९ लाख हेक्टर) हे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत २१.४ टक्क्यांनी जास्त होते आणि बाजरीचे उत्पादन १३.० लाख टन म्हणजे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत बरेच जास्त (४४.८ टक्के) होईल, असा अंदाज आहे.

खरीप कडधान्ये

९.९.२ राज्यातील २००४-०५ मधील खरीप कडधान्यांखालील क्षेत्र २२.७ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा ९.५ टक्क्यांनी कमी होते, आणि त्यांचे उत्पादन ९.२ लाख टन इतके बरेच कमी, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा ३८.१ टक्क्यांनी कमी होईल, असा अंदाज आहे. प्रारंभिक अंदाजानुसार २००४-०५ मध्ये तुरीखालील क्षेत्र ११.१ लाख हेक्टर म्हणजे

६.४ टक्क्यांनी जास्त इतके अंदाजण्यात आले आहे. मात्र उत्पादन केवळ ५.६८ लाख टन, म्हणजे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत १८.० टक्क्यांनी कमी होईल, असा अंदाज आहे.

खरीप तेलबिया

९.९.३ २००४-०५ मध्ये खरीप तेलबियांखालील क्षेत्र २९.१ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा ३२.४ टक्क्यांनी जास्त होते, आणि उत्पादन २७.० लाख टन, म्हणजे १.३ टक्क्यांनी जास्त होईल, अशी अपेक्षा आहे. खरीप तेलबियांपैकी सोयाबीन हे प्रमुख पीक असून त्याखालील क्षेत्र ७७.६ टक्के होते. सोयाबीन पिकाखालील हे क्षेत्र ४२.१ टक्क्यांनी जास्त होते आणि तरीही त्याचे २००४-०५ मधील उत्पादन २१.८ लाख टन म्हणजे १.९ टक्क्यांनी कमी असेल असा अंदाज आहे. खरीप भुईमुगाचे २००४-०५ मधील क्षेत्र ३.३८ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा ४.३ टक्क्यांनी जास्त होते व त्याचे उत्पादन ४.१ लाख टन, म्हणजे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत १५.२ टक्क्यांनी जास्त असेल, अशी अपेक्षा आहे.

कापूस

९.९.४ राज्यातील २००४-०५ मधील कापसाखालील क्षेत्र ३०.४ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा १०.१ टक्क्यांनी जास्त होते, मात्र कापसाचे (रुई) उत्पादन ५.१ लाख टन, म्हणजे आधीच्या वर्षापेक्षा ३.१ टक्क्यांनी कमी होईल, असा अंदाज आहे.

ऊस

९.९.५ २००४-०५ मध्ये उसाखालील क्षेत्र बरेचसे कमी होऊन ३.२ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ३८.४ टक्क्यांनी कमी झाले. गतवर्षाच्या दुष्काळी परिस्थितीमुळे हे क्षेत्र कमी झाले. उसाचे उत्पादन देखील २०४ लाख टन इतके कमी, म्हणजे आधीच्या वर्षातील उत्पादनापेक्षा २४.५ टक्क्यांनी कमी असेल, असा अंदाज आहे. लोकर मावा ह्या किडीच्या फैलावामुळे उसाच्या उत्पादनावर मोठ्या प्रमाणावर परिणाम झाला आहे.

९.९.६ राज्यातील प्रमुख खरीप पिकांचे क्षेत्र व उत्पादन तक्ता क्रमांक ९.६ मध्ये दिले आहे.

रब्बी पिके

९.१० रब्बी अन्नधान्यांखालील क्षेत्र (उन्हाळी पिके वगळता २००४-०५ मध्ये ४८.५ लाख हेक्टर, म्हणजे आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ७.६ टक्क्यांनी जास्त होते. २००४-०५ मध्ये रब्बी ज्वारीखालील क्षेत्र आधीच्या वर्षातील क्षेत्रापेक्षा १२.१ टक्क्यांनी जास्त असेल, तर गव्हाखालील क्षेत्र ६.८ टक्क्यांनी जास्त असेल असा अंदाज आहे. रब्बी कडधान्यांच्या बाबतीत त्या पिकांखालील क्षेत्र आधीच्या वर्षातील क्षेत्रापेक्षा ६.१ टक्क्यांनी कमी असेल, असा अंदाज आहे. ढोबळ अनुमानानुसार २००४-०५ मध्ये रब्बी अन्नधान्यांचे उत्पादन (उन्हाळी तृणधान्ये वगळता जवळपास ३५.९६ लाख टन, म्हणजे २००३-०४ मधील २१.० लाख ट

तक्का क्रमांक ९.६
महाराष्ट्र राज्यातील प्रमुख खरीप पिकांचे क्षेत्र व उत्पादन

(क्षेत्र हजार हेक्टरांत)
(उत्पादन हजार टनांत)

| पीक | क्षेत्र | | | उत्पादन | | |
|----------------------|---------------|-------------|----------|---------------|-------------|----------|
| | २००३-०४ | २००४-०५ | वाढ/घट | २००३-०४ | २००४-०५ | वाढ/घट |
| | (अंतिम अंदाज) | (तात्पुरते) | | (अंतिम अंदाज) | (तात्पुरते) | |
| तांदूळ | १,५०० | १,४५३ | (-) ३.१ | २,७६९ | २,३९४ | (-) १३.५ |
| बाजरी | १,३२५ | १,६०९ | २१.४ | ८९६ | १,२९७ | ४४.८ |
| खरीप ज्वारी | १,५८६ | १,४३७ | (-) ९.४ | २,१११ | १,५९८ | (-) २४.३ |
| इतर खरीप तृणधान्ये | ५२८ | ६५२ | २३.५ | ८७९ | ९४७ | ७.७ |
| एकूण खरीप तृणधान्ये | ४,९३९ | ५,१५१ | ४.३ | ६,६६५ | ६,२३६ | (-) ६.३ |
| तूर | १,०४६ | १,११३ | ६.४ | ६९३ | ५६८ | (-) १८.० |
| इतर खरीप कडधान्ये | १,४६६ | १,१६१ | (-) २०.८ | ७९१ | ३५० | (-) ५५.८ |
| एकूण खरीप कडधान्ये | २,५१२ | २,२७४ | (-) ९.५ | १,४८४ | ९१८ | (-) ३८.१ |
| एकूण खरीप अन्नधान्ये | ७,४५१ | ७,४२५ | (-) ०.३ | ८,१३९ | ७,१५४ | (-) १२.१ |
| सोयाबीन | १,५८९ | २,२५८ | ४२.१ | २,२१९ | २,१७६ | (-) १.९ |
| भुईमूग (शिंगा) | ३२४ | ३३८ | ४.३ | ३५५ | ४०९ | १५.२ |
| इतर तेलबिया | २८५ | ३१५ | १०.५ | ९२ | ११५ | २५.० |
| एकूण खरीप तेलबिया | २,१९८ | २,९११ | ३२.४ | २,६६६ | २,७०० | १.३ |
| कापूस (रुई) | २,७६२ | ३,०४१ | १०.१ | ५२४ | ५०८ | (-) ३.१ |
| ऊस | ५२६* | ३२४* | (-) ३८.४ | २६,९८२ | २०,३६० | (-) २४.५ |
| एकूण | १२,९३७ | १३,७०१ | ५.९ | - | - | - |

* = तोडणीक्षेत्र

उत्पादनापेक्षा ७१.२ टक्क्यांनी जास्त असेल असा अंदाज आहे. २००४-०५ मध्ये ढोबळ अंदाजानुसार रब्बी ज्वारी, रब्बी गहू आणि रब्बी तेलबिया यांचे उत्पादन अनुक्रमे १६७.३ टक्के, १८.९ टक्के आणि २२.८

टक्के इतके जास्त होण्याची शक्यता आहे. राज्यातील प्रमुख रब्बी पिकांखालील क्षेत्र व त्यांचे उत्पादन याबाबत माहिती तक्का क्र. ९.७ मध्ये दिली आहे.

तक्का क्रमांक ९.७
महाराष्ट्र राज्यातील प्रमुख रब्बी पिकांचे क्षेत्र व उत्पादन

(क्षेत्र हजार हेक्टरांत)
(उत्पादन हजार टनांत)

| पीक | क्षेत्र | | | उत्पादन | | |
|-----------------------|---------------|-------------|----------|---------------|-------------|----------|
| | २००३-०४ | २००४-०५ | वाढ/घट | २००३-०४ | २००४-०५ | वाढ/घट |
| | (अंतिम अंदाज) | (तात्पुरते) | | (अंतिम अंदाज) | (तात्पुरते) | |
| रब्बी ज्वारी | २,८५४ | ३,१९८ | १२.१ | ७७७ | २,०७७ | १६७.३ |
| गहू | ६६५ | ७१० | ६.८ | ७७८ | ९२५ | १८.९ |
| इतर रब्बी तृणधान्ये | ६६ | ७६ | १५.२ | ७४ | ८३ | १२.२ |
| एकूण रब्बी तृणधान्ये | ३,५८५ | ३,९८४ | ११.१ | १,६२९ | ३,०८५ | ८९.४ |
| हरभरा | ७९५ | ७९१ | (-) ०.५ | ४२१ | ४९४ | १७.३ |
| इतर रब्बी कडधान्ये | १३० | ७८ | (-) ४०.० | ५० | १७ | (-) ६६.० |
| एकूण रब्बी कडधान्ये | ९२५ | ८६९ | (-) ६.१ | ४७१ | ५११ | ८.५ |
| एकूण रब्बी अन्नधान्ये | ४,५१० | ४,८५३ | ७.६ | २,९०० | ३,५९६ | ७१.२ |
| तेलबिया (रब्बी) | ५०५ | ५१९ | २.८ | १७१ | २१० | २२.८ |
| एकूण | ५,०१५ | ५,३७२ | ७.१ | - | - | - |

कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक

१.११ महाराष्ट्रातील कृषि उत्पादनाचा २००३-०४ चा निर्देशांक (पाया : त्रैवार्षिक सरासरी १९७९-८२ = १००) ११५.८ होता आणि तो २००२-०३ मधील निर्देशांकापेक्षा ११.१ टक्क्यांनी कमी होता. निर्देशांकातील ही घट जवळपास सर्व पीकगटांमध्ये दिसून येते. १९८२-८३ ते २००३-०४ ह्या कालावधीकरिता राज्यातील कृषि उत्पादनाचा दीर्घकालीन वार्षिक वृद्धिदर १.० टक्क्यापेक्षा कमी होता. तक्ता क्र. ९.८ मध्ये पिकांच्या विविध गटांसाठी कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक दिले आहेत. राज्यातील प्रमुख पिकांच्या कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक भाग-२ मधील तक्ता क्र. ४२ मध्ये दिले आहेत. राज्यातील कृषि उत्पादनाचा वार्षिक वृद्धिदर अखिल भारतीय पातळीवरील वृद्धिदरापेक्षा सर्वसाधारणपणे कमी आहे. निर्देशांकातील मोठे चढउतार महाराष्ट्रातील कृषि उत्पादन हे बरेचसे अनिश्चित स्वरूपाचे आहे, असे सूचित करतात.

फलोत्पादन विकास

१.१२ फळपिकांचे प्रति हेक्टर उत्पादन हे पारंपरिक अन्नधान्यांच्या तुलनेत बरेच जास्त असते. १९९०-९१ पर्यंत राज्यातील फळपिकांखालील एकूण क्षेत्र २.४२ लाख हेक्टर इतके होते. राज्य शासन विविध फळपिकांची चांगल्या प्रतीची रोपे निर्माण करून ती शेतकऱ्यांना पुरविण्यासाठी फळरोपवाटिकांची स्थापना करणे आणि शेतकऱ्यांना निवडक फळझाडे वाढविण्यासाठी अनुदान देणे यांद्वारे फलोत्पादन विकासास चालना देण्यासाठी कार्यक्रम राबवित आहे. १९९०-९१ पासून फलोत्पादन विकासाची सांगड रोजगार हमी योजनेशी (रोहयो) घालण्यात आली आहे. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर, २००४ अखेर ०.३९ लाख हेक्टर जमीन फळपिकांखाली आणण्यात आली असून त्याचा लाभ ०.५६ लाख शेतकऱ्यांना देण्यात आला. ह्या कार्यक्रमाखाली डिसेंबर, २००४ अखेर एकूण संचयी ११.२० लाख हेक्टर क्षेत्र फळपिकांखाली आणण्यात आले असून त्याचा लाभ १५.०८ लाख शेतकऱ्यांना देण्यात आला आहे.

१.१३ मार्च, २००४ अखेर राज्यातील रोहयो निगडित योजनेखालील क्षेत्र धरून एकूण १३.२३ लाख हेक्टर क्षेत्र फळपिकांखाली होते आणि त्यामध्ये प्रमुख फळपिकांचा वाटा पुढीलप्रमाणे होता. आंबा : ४.२५ लाख हेक्टर, काजू : १.६२ लाख हेक्टर, संत्रा : १.३० लाख हेक्टर, डाळिंब : ०.८५ लाख हेक्टर, मोसंबी : ०.८४ लाख हेक्टर, केळी : ०.५७ लाख हेक्टर आणि द्राक्षे : ०.३९ लाख हेक्टर.

१.१४ पारंपरिक अन्नधान्यांच्या पिकांचे प्रति हेक्टर उत्पादनमूल्य केवळ ४ हजार ते १२ हजार रुपये इतके असते. या तुलनेत २००३-०४ मधील आकडेवारीवर आधारित प्रमुख फळपिकांची प्रतिहेक्टर उत्पादनमूल्ये पुढीलप्रमाणे होती. द्राक्षे : ४.१६ लाख रुपये, मोसंबी : २.५६ लाख रुपये, केळी : १.९० लाख रुपये आणि आंबा : १.२८ लाख रुपये. फळपिकांखाली आणलेल्या अतिरिक्त क्षेत्रामुळे राज्यातील कृषि उत्पादनाच्या स्थूल मूल्यात भरवी वाढ होईल, अशी अपेक्षा आहे. राज्यातील प्रमुख फळपिकांखालील क्षेत्र व त्यांचे उत्पादन याबाबतची माहिती तक्ता क्र. ९.९ मध्ये दिली आहे.

सिंचन

१.१५ २००२-०३ मध्ये राज्यातील सिंचनाखालील निव्वळ क्षेत्र २९.७ लाख हेक्टर होते आणि ते जवळपास आधीच्या वर्षातील सिंचनाखालील निव्वळ क्षेत्राइतकेच होते. सिंचनाखालील निव्वळ क्षेत्रापैकी विहिरीच्या पाण्याने सिंचित क्षेत्र १९.३ लाख हेक्टर होते. २००२-०३ मध्ये सिंचनाखालील स्थूल क्षेत्र ३६.७ लाख हेक्टर होते व ते आधीच्या वर्षातील क्षेत्राइतकेच होते. २००२-०३ मध्ये सिंचनाखालील स्थूल क्षेत्राची पिकांखालील स्थूल क्षेत्राशी टक्केवारी १६.४ होती. ही टक्केवारी १९९०-९१ पासून सर्वसाधारणपणे १५ ते १६ टक्के इतकी कायम राहिली आणि सिंचनाखालील स्थूल क्षेत्राचे पिकांखालील स्थूल क्षेत्राशी असलेल्या प्रमाणामध्ये जमेस धरण्याजोगी वाढ झाली नाही. विविध स्रोतांनुसार राज्यातील सिंचित क्षेत्र भाग-२ मधील तक्ता क्र.४१ मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्रमांक ९.८
पिकांच्या गटांनुसार कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक

(पाया : त्रैवार्षिक सरासरी १९७९-८२ = १००)

| पिकांचा गट | वर्ष | | | | | | | |
|-------------------|--------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| | भार | १९८२-८३ | १९८७-८८ | १९९२-९३ | १९९७-९८ | २००१-०२ | २००२-०३ | २००३-०४ |
| तृणधान्ये | ४२.२२ | ८८.५ | १०३.३ | १३१.३ | ९२.८ | १००.४ | ९४.५ | ९४.८ |
| कडधान्ये | १०.४४ | ९९.२ | १३९.३ | १८०.३ | ११७.५ | १९२.९ | २०६.८ | १८५.९ |
| एकूण अन्नधान्ये | ५२.६६ | ९०.६ | ११०.४ | १४१.१ | ९७.७ | ११८.८ | ११६.८ | ११२.८ |
| तेलबिया | ९.१६ | ७३.३ | १३३.४ | १२१.० | ९५.६ | ९०.० | ८४.६ | ८३.४ |
| तंतू पिके | ९.९३ | ११०.१ | १०२.७ | १२९.३ | ११५.८ | १८३.८ | १७७.४ | २१०.४ |
| संकीर्ण | २८.२५ | ११३.३ | १०२.८ | १२७.४ | १४२.८ | १६३.३ | १५४.३ | ९८.६ |
| एकूण अन्नधान्येतर | ४७.३४ | १०४.९ | १०८.७ | १२६.६ | १२८.० | १५३.४ | १४५.६ | ११९.१ |
| सर्व गट | १००.०० | ९७.४ | १०९.६ | १३४.२ | ११२.० | १३५.२ | १३०.४ | ११५.८ |

तक्ता क्रमांक ९.९
राज्यातील प्रमुख फळपिकांखालील क्षेत्र व त्यांचे उत्पादन

(क्षेत्र ००' हेक्टरांत, उत्पादन ००' मॅट्रिक टनांत)

| फळपिकाचे नाव | बाब | १९९०-९१ | १९९५-९६ | १९९८-९९ | १९९९-२००० | २०००-०१ | २००१-०२ | २००२-०३ | २००३-०४ |
|--------------|---------|---------|---------|---------|-----------|---------|---------|---------|---------|
| केळी | क्षेत्र | २९० | ३८५ | ५८७ | ६१३ | ७२१ | ७२१ | ५७४ | ५७४ |
| | उत्पादन | १६,०४० | २२,१६८ | ३४,३८० | ३६,७८० | ४३,३०५ | ४३,३१३ | ३६,०७५ | ३५,५८८ |
| संत्रा | क्षेत्र | ३०० | ५३४ | १,२२९ | १,४११ | १,३२२ | १,४८४ | १,५०८ | १,३०३ |
| | उत्पादन | २,२९० | ५,५७८ | १२,९५३ | १३,२३३ | १०,७७६ | ८,३३१ | ८,८१५ | ८,७५४ |
| द्राक्षे | क्षेत्र | १५० | २७५ | २६२ | २९८ | २९८ | २९८ | ३५२ | ३९० |
| | उत्पादन | २,४५० | ६,७८४ | ६,६३५ | ७,७९२ | ७,७९० | ७,७९० | ९,८८७ | ८,९६० |
| आंबा | क्षेत्र | ७७६ | २,६५९ | ३,५०७ | ३,७६४ | ४,०३५ | ४,०९५ | ४,१९८ | ४,२५४ |
| | उत्पादन | २,४४४ | ३,५१० | ४,६६४ | ५,००५ | ५,००५ | ५,५९० | ६,१५९ | ६,८४७ |
| काजू | क्षेत्र | १५० | १९९ | ६७७ | १,३०५ | १,३८४ | १,५३३ | १,५९१ | १,६१५ |
| | उत्पादन | ११२ | १६१ | ७५६ | ९५५ | १,०१५ | १,२५२ | १३४५ | १,५७६ |

सिंचन प्रकल्प

९.१६ महाराष्ट्र जल व सिंचन आयोगाने (१९९९) राज्यातील नदीखोऱ्यांतील पाण्याची उपलब्धता, लागवडीयोग्य जमीन, भूजलाची वाढ, पाणलोट क्षेत्र विकासाद्वारे पडणारी भर, आधुनिक सिंचनतंत्रांचा वापर व शेतीला पाणीदेण्याच्या पध्दतीतील सुधारणा ह्या बाबी विचारात घेता राज्याची सिंचन क्षमता कमाल १२६ लाख हेक्टरपर्यंत वाढविता येईल, असे अनुमान काढले. शिवाय आयोगाने असेही अनुमानित केले आहे

की, लाभक्षेत्रामध्ये भूपृष्ठावरील जलसाठ्यांचा आणि विहिरींचा वाटा जवळपास ८५ लाख हेक्टर इतका असेल. राज्यातील सिंचन क्षमतेचा जास्तीत जास्त वापर करण्यासाठी राज्य शासनाने अनेक मोठे, मध्यम व लघु पाटबंधारे प्रकल्प हाती घेतले आहेत. राज्यातील विविध पाटबंधारे प्रकल्प आणि त्यांपासून निर्माण करण्यात आलेली सिंचनक्षमता याबाबतचा तपशील तक्ता क्र. ९.१० मध्ये दिला आहे.

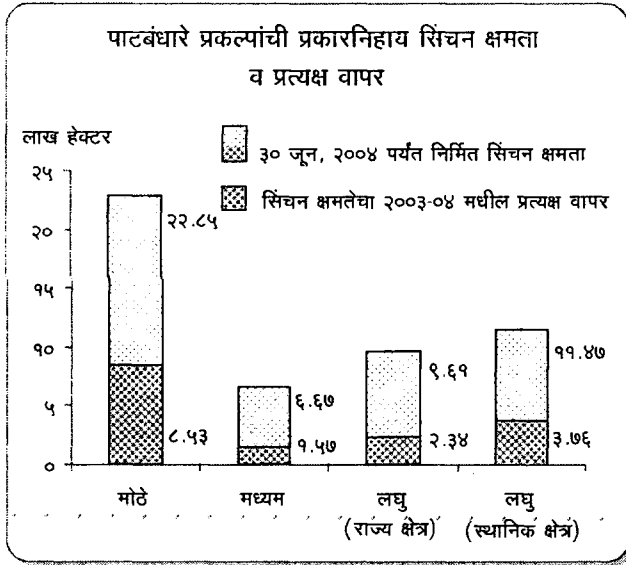
तक्ता क्र. ९.१०

राज्यातील पाटबंधारे प्रकल्पांची संख्या व त्यापासून निर्माण झालेली सिंचनक्षमता

| अनु. क्र. | बाब | मोठे | मध्यम | लघु | लघु (स्थानिक क्षेत्र) | | | | | एकूण लघु | एकूण |
|-----------|--|-------|-------|-------|-----------------------|-----------|--------------|------------|--------|----------|-------|
| | | | | | को.प. बांधारे | पाझर तलाव | उपसा जलसिंचन | ल.पा. तलाव | इतर | | |
| १. | ३०.६.२००४ पर्यंत पूर्ण झालेल्या प्रकल्पांची संख्या * | ३२ | १७८ | २,२३९ | ८,६८१ | १६,६२३ | २,९२५ | १,९२० | १६,५५१ | ४८,९३९ | - |
| २. | ३०.६.२००४ पर्यंत बांधकामाधीन प्रकल्पांची संख्या ** | २१ | ३४ | २१८ | १,७३८ | ३,०४० | १३१ | ३७० | २,०७७ | ७,५७४ | - |
| ३. | निर्मित सिंचनक्षमता (लाख हेक्टर) | | | | | | | | | | |
| | अ) ३०.६.२००४ पर्यंत | २२.८५ | ६.६७ | ९.६१ | २.६४ | ५.३० | ०.३६ | १.९६ | १.२१ | २१.०८ | ५०.६० |
| | ब) ३०.६.२००३ पर्यंत | २२.६७ | ६.४० | ९.५६ | २.६४ | ५.१४ | ०.३६ | १.९४ | १.१९ | २०.८३ | ४९.९० |
| ४. | सिंचनक्षमतेचा २००३-०४ मधील प्रत्यक्ष वापर (लाख हेक्टर) | ८.५३ | १.५७ | २.३४ | ०.९२ | १.२९ | ०.१४ | ०.५८ | ०.८३ | ६.१० | १६.२० |
| ५. | अनु.क्र. ४ व्यतिरिक्त लाभक्षेत्रातील विहिरीखालील सिंचनक्षेत्र (लाख हेक्टर) | ३.१३ | ०.७५ | ०.५३ | - | - | - | - | - | ०.५३ | ४.४१ |

* सिंचनक्षमता पूर्णतः निर्मित ** सिंचनक्षमता अंशतः निर्मित

१.१७ राज्यातील मोठे, मध्यम व लघु पाटबंधारे प्रकल्पांद्वारे जून, २००४ अखेर निर्माण करण्यात आलेली एकत्रित सिंचनक्षमता ५०.६० लाख हेक्टर इतकी होती. निर्माण करण्यात आलेल्या एकूण सिंचनक्षमतेमध्ये मोठे, मध्यम, लघु (राज्य क्षेत्र) आणि लघु (स्थानिक क्षेत्र) पाटबंधारे प्रकल्पांचा वाटा अनुक्रमे ४५.२ टक्के, १३.२ टक्के, १९.० टक्के आणि २२.६ टक्के इतका होता. २००३-०४ मध्ये निर्माण करण्यात आलेली अतिरिक्त सिंचनक्षमता ०.७० लाख हेक्टर इतकी होती आणि त्यामुळे जून, २००३ अखेर साध्य करण्यात आलेल्या संचयी सिंचनक्षमतेमध्ये १.४ टक्क्यांनी वाढ झाली होती. जून, २००३ अखेर निर्माण करण्यात आलेल्या ४९.९ लाख हेक्टर इतक्या सिंचनक्षमतेच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये सिंचनक्षमतेचा प्रत्यक्ष वापर १६.२ लाख हेक्टर (३२.५ टक्के) इतका होता.



पाटबंधारे क्षेत्रातील सुधारणा

१.१८ पाटबंधारे क्षेत्रात सुधारणा करण्याच्या दृष्टीने महाराष्ट्र शासनाने खालील काही उपाययोजना हाती घेतल्या आहेत.

१.१८.१ राज्य जलनिती :- महाराष्ट्र शासनाने जुलै, २००३ मध्ये राज्य जलनिती प्रस्तुत केली आहे. त्यामध्ये जनतेला सामाजिक व आर्थिक लाभ देण्यासाठी टिकावू स्वरूपाचा विकास, सक्षम व्यवस्थापन आणि भोवतालची सजीवसृष्टी व पर्यावरण विषयक मूल्यांचे महत्व कायम राखून नद्या व लगतच्या जमिनींवरील अपुऱ्या जलस्रोतांचा इष्टतम वापर यांची हमी देण्यात आली आहे.

१.१८.२ महाराष्ट्र जलसंपत्ती नियमन प्राधिकरण अधिनियम, २००३ :- महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र जलसंपत्ती नियमन प्राधिकरण अधिनियम, २००३ या नावाचे विधेयक विधिमंडळास मान्यतेसाठी सादर केले आहे. जलसंपत्तीचे नियमन करून समन्यायी वाटप आणि वापर सुकर करणे हा या अधिनियमाचा उद्देश आहे. त्याचप्रमाणे या अधिनियमामध्ये जलसंपत्तीचे टिकाऊ व्यवस्थापन आणि कृषि, औद्योगिक, घरगुती व इतर प्रयोजनांसाठी वापरावयाच्या पाण्याचे दर निश्चित करणे, यांची हमी देण्यात आली आहे.

१.१८.३ महाराष्ट्र सिंचन पध्दतीचे शेतक-यांकडून व्यवस्थापन अधिनियम, २००४ :- निर्मित सिंचनक्षमता आणि तिचा प्रत्यक्ष वापर यांतील तफावत भरून काढण्यासाठी, तसेच सिंचन व्यवस्थेतील वितरण, वाटप, वापर आणि निःसारण यांचा वाढीव कार्यक्षमतेने वापर करून त्याद्वारे भूपृष्ठावरील व भूगर्भातील पाण्याचा यथोचित वापर करून जास्तीत जास्त फायदा होण्यासाठी पाणीवापर संस्थांची रचना आणि कार्यचलन यांना संविधानिक मान्यता देण्याचा धोरणात्मक निर्णय राज्य शासनाने घेतला आहे. त्यानुसार महाराष्ट्र सिंचन पध्दतीचे शेतक-यांकडून व्यवस्थापन अधिनियम, २००४ हे विधेयक तयार करण्यात आले असून विधिमंडळास मान्यतेसाठी सादर करण्यात आले आहे.

१.१८.४ पाणी वापर संस्था :- राज्य शासनाने पाणी वापर संस्था स्थापन करण्याचा आणि सर्व पाटबंधारे प्रकल्पांमधील सिंचन व्यवस्थापन ह्या संस्थांकडे हस्तांतरित करण्याचा धोरणात्मक निर्णय जुलै, २००१ मध्ये घेतला आहे. ह्या धोरणामागील उद्देश पुढीलप्रमाणे आहेत. १) निर्माण करण्यात आलेली सिंचनक्षमता आणि प्रत्यक्ष सिंचन केलेले क्षेत्र यांतील तफावत कमी करणे, २) पाणी वापरासाठी सिंचन व्यवस्थापनाची कार्यक्षमता वाढविणे, ३) सिंचन प्रणालीच्या देखभाल व दुरुस्तीवरील खर्च मर्यादित करणे, ४) हस्तांतरापूर्वी सिंचनप्रणाली दुरुस्त करणे, ५) पाण्याचा वापर अधिक कार्यक्षमतेने करणे आणि ६) पाणीपट्टीची प्रभावीपणे वसुली करणे.

सिंचन विकास महामंडळे

१.१९ राज्यातील सिंचन प्रकल्प जलद गतीने पूर्ण करण्यासाठी शासनाने जानेवारी, १९९६ ते ऑगस्ट, १९९८ या कालवधीत पुढील पाच सिंचन विकास महामंडळांची स्थापना केली आहे. १) महाराष्ट्र कृष्णा खोरे विकास महामंडळ, २) विदर्भ पाटबंधारे विकास महामंडळ, ३) तापी पाटबंधारे विकास महामंडळ, ४) कोकण पाटबंधारे विकास महामंडळ आणि ५) गोदावरी-मराठवाडा पाटबंधारे विकास महामंडळ. या महामंडळांनी मिळून मार्च, २००४ पर्यंत खुल्या बाजारातून एकूण ११,५४८ कोटी रुपयांचा निधी उभारला. या महामंडळामध्ये मार्च, २००४ पर्यंत शासनाचे भागभांडवल ३,८६९ कोटी रुपये होते. रोख्यांवरील व्याजापोटी मार्च, २००४ अखेर राज्य शासनाने ५,०४५ कोटी रुपये इतकी रक्कम प्रदान केली. या महामंडळांचा तपशील तक्ता क्र. १.११ मध्ये दिला आहे.

एकात्मिक पाणलोटक्षेत्र विकास कार्यक्रम

१.२० राज्यातील शेती प्रामुख्याने पावसावर अवलंबून असल्याने राज्यात मृदुसंधारणाची कामे मोठ्या प्रमाणावर करण्यात येत आहेत. कोरडवाहू शेतीतील उत्पादन वाढविणे, त्यातील सातत्य टिकविणे व नैसर्गिक साधनसंपत्तीचा न्हास थांबविणे यांसाठी राज्यामध्ये पाणलोटक्षेत्र आधारित मृदू व जलसंधारणाची कामे १९८३ पासून राबविण्यात येत आहेत. विविध कार्यक्रमांची पुनर्आखणी करून ते एकात्मिक पाणलोटक्षेत्र विकास कार्यक्रमाखाली राबविण्यात येत आहेत. ठरवून देण्यात आलेल्या निकषांनुसार राज्यात एकूण १५,७३९ गावांची निवड करण्यात आली असून त्यापैकी १२,०७९ गावांमध्ये २५,७१८ पाणलोटक्षेत्रांत कामे प्रत्यक्षात

तक्ता क्रमांक ९.११

राज्य शासनाने स्थापन केलेल्या पाटबंधारे विकास महामंडळांचा तपशील

| अनु. क्र. | महामंडळाचे नाव व स्थापनेचा महिना | सिंचन क्षमतेचे लक्ष्य (लाख हे.) | समाविष्ट पाटबंधारे प्रकल्पांची संख्या | एकूण आवश्यक निधी (कोटी रु.) (१.४.०४ रोजी बाकी असलेला खर्च) | शासनाचे भागभांडवल १) एकूण २) २००३-०४ पर्यंत \$ ३) २००३-०४ पर्यंत कर्जरोख्यां-वरील व्याज\$\$ (कोटी रु.) | २००३-०४ पर्यंत कर्जरोख्यांद्वारे उभारलेला निधी (कोटी रु.) | २००४-०५ मध्ये उभारावयाचा निधी (कोटी रु.) |
|-----------|--|---------------------------------|---------------------------------------|--|--|---|--|
| १. | महाराष्ट्र कृष्णा खोरे विकास महामंडळ (जानेवारी, १९९६) | १०.८५ | २० * ४१** २६०@ १९+ | ११,६३२ | ३,५०० २,०९७ ३,०७५ | ६,२४९ | १८४ |
| २. | विदर्भ पाटबंधारे विकास महामंडळ (मार्च, १९९७) | ११.०० | १४ * २७** ५५@ | १०,६०९ | ३,३३५ ७५५ ८४१ | १,८३९ | १,४६८ |
| ३. | तापी पाटबंधारे विकास महामंडळ (मार्च, १९९७) | ५.२३ | ५ * २६** १०७@ १०+ | ४,६६८ | २,३३७ २१३ ४१६ | १,३३१ | ८३ |
| ४. | कोकण पाटबंधारे विकास महामंडळ (डिसेंबर, १९९७) | ०.८० | १* ४** ३३@ | ९५८ | ४२८ १०५ १८१ | ६०५ | ९६ |
| ५. | गोदावरी-मराठवाडा पाटबंधारे विकास महामंडळ (ऑगस्ट, १९९८) | ५.६१ | १२ * १७** २५८@ ९+ | ४,०१४ | १,९५० ६९९ ५३२ | १,७३७ | ८१९ |

* मोठे, ** मध्यम, @ लघु, + उपसा सिंचन योजना, \$ २००३-०४ अखेरपर्यंत अदा केलेले भागभांडवल

\$\$ ही रक्कम शासनाने संबंधित महामंडळांना दिली आहे.

हाती घेण्यात आली. ह्या कार्यक्रमावर २००३-०४ मध्ये ६८८ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले आणि २००४-०५ ह्या वर्षात सप्टेंबर अखेर ३९८ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले होते. मागील वर्षाच्या तत्सम कालावधीत २६६ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले होते. हा कार्यक्रम १९९२ मध्ये कार्यान्वित केल्यापासून सप्टेंबर, २००४ अखेर त्यावर करण्यात आलेला एकूण संचयी खर्च ३,६८७ कोटी रुपये इतका होता.

सुधारित बियाणे

९.११ राज्यातील कृषि उत्पादन वाढविण्यासाठी करण्यात येत असलेल्या विविध उपाययोजनांमध्ये विविध पिकांच्या संकरित व सुधारित चाणांच्या प्रमाणित/दजंदार बियाण्यांचे वितरण ही एक अत्यंत महत्त्वाची

उपाययोजना आहे. अशा बियाण्यांच्या वितरणामध्ये सार्वजनिक व खाजगी ही दोन्ही क्षेत्रे लक्षणीय भूमिका बजावतात. महाराष्ट्रात बियाणे बदलाचा कार्यक्रम बहुतांश पिकांच्या बाबतीत मोठ्या प्रमाणावर राबविण्यात येतो. खरीप २००३ हंगामात एकूण १०.१८ लाख किंवल व रब्बी २००३ हंगामात एकूण ३.४८ लाख किंवल बियाणे वितरित करण्यात आले. खरीप २००४ हंगामात सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रामार्फत अनुक्रमे ५.९० लाख किंवल व ५.०४ लाख किंवल प्रमाणित/दजंदार बियाणे वितरित करण्यात आले, असा अंदाज आहे. २००४-०५ मध्ये २५ पिकांच्या निरनिराळ्या जातींचे बियाणे शेतकऱ्यांना उपलब्ध करून देण्यात आले. काही प्रमुख पिकांच्या बियाणे वितरणाबाबतची माहिती तक्ता क्र. ९.१२ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १.१२

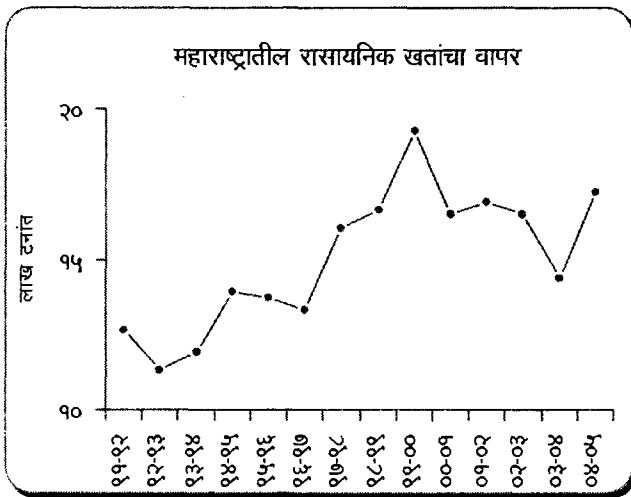
**महाराष्ट्रात सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रांमार्फत करण्यात आलेले
बियाण्यांचे वितरण**

(क्विंटलमध्ये)

| पिकाचे नाव | १९९०-९१ | २०००-०१ | २००२-०३ | २००३-०४ |
|---------------|----------|----------|----------|----------|
| खरीप | | | | |
| सोयाबीन | ५,२८१ | २,८२,०१२ | ४,३८,९६७ | ५,९८,९२७ |
| संकरित ज्वारी | १,४८,४४६ | १,२९,०१० | १,१३,६६२ | १,१०,१६० |
| भात | १४,०१२ | ७५,४७४ | १,०८,१६८ | ८५,९५६ |
| संकरित कापूस | १८,९७३ | ४५,३५० | ४०,५९९ | ४४,२७३ |
| संकरित बाजरी | ८,४३२ | ३३,६८२ | ३३,३६१ | २५,००५ |
| रब्बी | | | | |
| गहू | ८३,७६४ | २,०५,८६१ | २,३१,३१९ | २,७१,३८४ |
| हरभरा | २३,३१६ | २६,७८८ | ३१,४६७ | ४५,७७६ |
| ज्वारी | १६,८८० | २४,२६९ | २२,९४४ | २३,७५४ |

रासायनिक खते व कीटकनाशके यांचा वापर

१.२२ राज्यातील २००४-०५ मधील खतांचा वापर १७.२ लाख टन, म्हणजे आधीच्या वर्षातील १४.४ लाख टन खतांच्या वापरापेक्षा १९.६ टक्क्यांनी जास्त असेल असा अंदाज आहे. राज्यात २००३-०४ मध्ये शेतकऱ्यांना खतांचे वितरण ३३,९७० खत वितरण केंद्रांमार्फत करण्यात आले. त्यापैकी ४,२९८ केंद्रे सहकारी क्षेत्रात, २२८ सार्वजनिक क्षेत्रात, तर २९,४४४ केंद्रे खाजगी क्षेत्रात होती. २००३-०४ मध्ये राज्यात तांत्रिक दर्जाच्या ३,३८५ टन कीटकनाशकांचा वापर करण्यात आला, जो आधीच्या वर्षातील वापरापेक्षा १२ टक्क्यांनी जास्त होता. खरीप २००३ मध्ये कीटकनाशकांचा वापर २,२८५ टन झाला. खरीप २००४ मध्ये तो २,१४२ टन, म्हणजे खरीप २००३ मधील वापरापेक्षा ९ टक्क्यांनी कमी असेल असा अंदाज आहे.



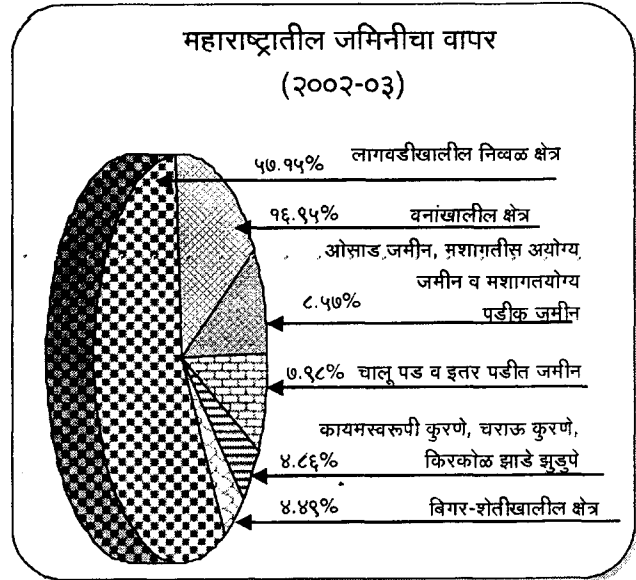
तुषार व ठिबक सिंचन

१.२३ तुषार व ठिबक सिंचन पद्धतींचा अवलंब केल्याने सिंचनासाठी वापरल्या जाणाऱ्या पाण्याच्या मात्रेमध्ये २८ ते ५६ टक्क्यांची

बचत होते आणि त्यामुळे २५ ते ४० टक्के अतिरिक्त क्षेत्र सिंचनाखाली आणणे शक्य होते. शिवाय त्यामुळे जमिनीची धूप होण्याचे प्रमाण कमी होते, मशागतीची कामे सुलभ होतात, खतांची कार्यक्षमता वाढते, किडीमुळे होणारे नुकसान घटते आणि परिणामी प्रीक उत्पादनात पिकाच्या प्रकारानुसार १२ ते ३१ टक्के इतकी वाढ होते. शेतकऱ्यांनी ह्या सिंचनपद्धतींचा अवलंब करावा यासाठी राज्य शासन त्यांना तुषार/ठिबक सिंचन संच खरेदी करण्यासाठी आखलेल्या योजनांमधून अनुदान देऊन उत्तेजन देते. मार्च, २००४ अखेरपर्यंत राज्यामध्ये तुषार व ठिबक सिंचनाखाली आणलेले एकूण क्षेत्र अनुक्रमे १,१४,०९४ हेक्टर व २,८२,६६७ हेक्टर इतके होते आणि त्यासाठी शासनाने शेतकऱ्यांना दिलेल्या अनुदानाची रक्कम अनुक्रमे १२४ कोटी रुपये व ४०९ कोटी रुपये होती.

जमिनीचा वापर

१.२४ २००२-०३ मधील जमीनवापराबाबतच्या आकडेवारीनुसार राज्याच्या एकूण भौगोलिक क्षेत्रामध्ये लागवडीखालील निव्वळ क्षेत्र (१७५.८ लाख हेक्टर) ५७.१५ टक्के होते. महाराष्ट्र राज्यातील जमीनवापराबाबतची आकडेवारी भाग-२ मधील तक्ता क्र. ३९ मध्ये दिली आहे.



राष्ट्रीय कृषि विमा योजना

१.२५ भारत सरकारने ठरवून दिलेल्या मार्गदर्शक तत्वांनुसार महाराष्ट्रात सर्वकष पीक विमा योजना १९८५-८६ पासून राबविण्यात येत होती. भारत सरकारने 'राष्ट्रीय कृषि विमा योजना' ह्या नावाने नवीन पीक विमा योजना सुरू केली असून ही योजना राज्यामध्ये रब्बी हंगाम १९९९-२००० पासून राबविण्यात येत आहे.

१.२६ नवीन योजनेमध्ये मूळ योजनेमधील भात, ज्वारी, बाजरी, तूर, भुईमूग, सूर्यफूल, कारळे, तीळ, सोयाबीन व नाचणी ही दहा खरीप पिके आणि ज्वारी, गहू, हरभरा, करडई, सूर्यफूल, उन्हाळी भुईमूग व उन्हाळी भात ही सात रब्बी पिके, ह्या पिकांव्यतिरिक्त ऊस, कांदा, मका,

तक्ता क्र. १.१४

महाराष्ट्रातील कृषिगणना १९९५-९६ चे तपशील

| आकारवर्ग (हेक्टर) | वहिली खातेदारांची संख्या (शंभरात) | वहिलीचे एकूण क्षेत्र (शंभर हेक्टरसमर्थे) | वहिलीचे सरासरी क्षेत्र (हेक्टर) |
|----------------------|--|---|--|
| ०.० - १.० | ४२,६६१ | २०,८६६ | ०.४९ |
| १.० - २.० | ३१,७५५ | ४६,०५९ | १.४५ |
| २.० - ५.० | २५,३९३ | ७५,९३३ | २.९९ |
| ५.० - १०.० | ५,५५८ | ३७,१५० | ६.६८ |
| १०.० - २०.० | १,०२९ | १३,५१४ | १३.१३ |
| २०.० व अधिक | १३२ | ५,२७४ | ३९.९५ |
| एकूण | १,०६,५२८ | १,९८,७९६ | १.८७ |

तक्ता क्रमांक १.१३

राज्यातील राष्ट्रीय कृषि विमा योजनेची प्रगती

| हंगाम | लाभ दिलेल्या शेतकऱ्यांची संख्या (लाखात) | विम्याची एकूण रक्कम (कोटी रु.) | जमा केलेल्या हप्त्यांची रक्कम (कोटी रु.) | दिलेली भरपाई (कोटी रु.) |
|---------------|--|---|--|-------------------------------|
| खरीप २००१-०२ | २६.०६ | १,७०२ | ७७.६३ | ९२.५० |
| रब्बी २००१-०२ | ०.८५ | २० | ०.५० | २.१२ |
| खरीप २००२-०३ | १७.९३ | १,०१३ | ५२.०५ | २५.०९ |
| रब्बी २००२-०३ | २.४८ | ८४ | ३.१३ | १६.३३ |
| खरीप २००३-०४ | १७.२६ | ९२१ | ३५.८४ | ९८.५८ |
| रब्बी २००३-०४ | १०.३४ | ३४९ | १०.१७ | १९३.६५ |

वहिली खातेदार

१.२७ महाराष्ट्रात १९९५-९६ मध्ये घेण्यात आलेल्या कृषिगणनेच्या निष्कर्षानुसार राज्यातील वहिली खातेदारांची संख्या १०६.५३ लाख इतकी होती आणि ती त्याआधीच्या १९९०-९१ मध्ये घेण्यात आलेल्या गणनेनंतरच्या पाच वर्षांच्या कालावधीत १२.५ टक्क्यांनी वाढलेली होती. तथापि, वहिलीचे एकूण क्षेत्र १९९०-९१ मधील एकूण २०९.३ लाख हेक्टर क्षेत्राच्या तुलनेत १९९५-९६ मध्ये ५.० टक्क्यांनी कमी म्हणजे १९८.८ लाख हेक्टर होते. वहिली खातेदारांकडील सरासरी क्षेत्र १९९०-९१ मध्ये २.२१ हेक्टर होते, ते कमी होऊन १९९५-९६ मध्ये १.८७ हेक्टर इतके झाले आणि ते १९७०-७१ च्या गणनेतील प्रति वहिली खातेदार सरासरी ४.२८ हेक्टर) निम्म्यापेक्षाही कमी होते. कृषि गणना १९९५-९६ मधील काही महत्त्वाची माहिती तक्ता क्र. १.१४ आणि भाग-२ मधील तक्ता क्र. ३८ मध्ये दिली आहे.

कृषि वित्तपुरवठा

१.२८ राज्यात प्रत्यक्ष कृषि वित्तपुरवठा करण्याशी संबंधित अशा वित्तीय संस्था म्हणजे स्वतःच्या शेतकरी सभासदांना अल्प मुदतीची पीक कर्ज देणाऱ्या प्राथमिक कृषि सहकारी पतपुरवठा संस्था होत. प्राथमिक कृषि सहकारी पतसंस्थामार्फत शेतकरी सभासदांना पतपुरवठा करण्यासाठी राज्याची शिखर बँक व मध्यवर्ती सहकारी वित्तीय संस्थांना (महाराष्ट्र राज्य सहकारी कृषि बँक, ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास बँक व प्रादेशिक ग्रामीण बँका) राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बँक (नाबार्ड) पुनर्वित्तीय सहाय्य देते.

१.२९ २००३-०४ अखेर राज्यातील प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांची संख्या २०,९५२ होती आणि त्यांच्या सभासदांची एकूण संख्या १०४.७९ लाख होती. ह्या संस्थांनी २००३-०४ मध्ये शेतकऱ्यांना ३,७६९ कोटी रुपयांची कर्जे दिली. त्यापैकी १,४९७ कोटी रुपयांची म्हणजे ४० टक्के रकमेची कर्जे अल्पभूधारक व सीमांतिक शेतकऱ्यांना देण्यात आली होती.

१.३० सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांनी राज्यात कृषि व संलग्न व्यवसायांसाठी २००३-०४ मध्ये केलेला प्रत्यक्ष वित्तपुरवठा १,७३१ कोटी रुपये होता. तो २००२-०३ मध्ये केलेल्या २,००४ कोटी रुपये वित्तपुरवठ्यापेक्षा १३.६२ टक्क्यांनी कमी होता. राज्यातील तीव्र दुष्काळामुळे २००३-०४ मध्ये शेती क्षेत्रातील पतपुरवठ्याच्या वितरणावर प्रतिकूल परिणाम झाला. २००३-०४ मध्ये केलेल्या एकूण वित्तपुरवठ्यापैकी १,५५० कोटी रुपये (९० टक्के) वित्तपुरवठा केवळ कृषीसाठी होता. उर्वरित वित्तपुरवठा (१८१ कोटी रुपये) दुग्धव्यवसाय, कुक्कुटपालन, मत्स्यव्यवसाय, इत्यादींसारख्या कृषिसंलग्न व्यवसायांसाठी केला होता. कृषि क्षेत्रासाठी दिलेल्या ६७७ कोटी रुपये मध्यम/दीर्घ मुदतीच्या कर्जांपैकी १६.३ टक्के वाटा ट्रॅक्टर्स, कृषि अवजारे व यंत्रसामग्री यांच्या खरेदीसाठी होता, १५.५ टक्के वाटा रोप लागवड व फलोत्पादन आणि १४.८ टक्के वाटा सिंचन योजनांसाठी होता. ह्या बँकांची राज्यात कृषि व संलग्न व्यवसायांसाठी दिलेल्या कर्जांबाबतची ३१ मार्च, २००४ रोजी एकूण येणे बाकी ४,५८३ कोटी रुपये इतकी होती व ती १३.९८ लाख कर्जदारांकडून येणे होती. कर्जांच्या एकूण येणे रकमेपैकी केवळ कृषिसंबंधीचा वाटा ३,४९८ कोटी रुपये (७६.३ टक्के) होता. ह्या येणे रकमेपैकी जवळपास ४२ टक्के रक्कम मुदतीच्या कर्जांची होती. केवळ कृषिसंबंधीच्या एकूण ४,५८३ कोटी रुपये येणे रकमेपैकी १,२५२ कोटी रुपये (२७.३ टक्के) येणे एक हेक्टरपर्यंत जमीन धारण करणाऱ्या ४.३९ लाख खातेदारांकडील होते व १,१०५ कोटी रुपये (२४.१ टक्के) येणे एक ते दोन हेक्टर जमीन धारण करणाऱ्या ४.६९ लाख खातेदारांकडील होते.

१.३१ खाजगी क्षेत्रातील बँकांनी देखील २००३-०४ मध्ये कृषि व संलग्न व्यवसायांसाठी राज्यात १८८ कोटी रुपयांची कर्जे दिली. ह्या बँकांची कृषि व संलग्न व्यवसायांसाठी दिलेल्या कर्जांबाबतची मार्च, २००४ अखेर येणे रक्कम २९६ कोटी रुपये होती.

नाबार्ड

१.३२ राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बँक (नाबार्ड) ही शेतीच्या व ग्रामीण विकासास हातभार लावून उत्तेजन देणारी देशातील शिखर बँक आहे. ह्या बँकेने राज्यात २००३-०४ मध्ये पुढील महत्त्वाची भूमिका बजावली.

पतमर्यादा

१.३२.१ नाबार्डने २००३-०४ मध्ये राज्यातील सहकारी बँका व प्रादेशिक ग्रामीण बँका यांच्यामार्फत शेतीच्या हंगामी कामांना आधार पुरविण्यासाठी एकूण ३३६.६ कोटी रुपयांची अल्पमुदतीची पतमर्यादा मंजूर केली. या तुलनेत २००२-०३ मध्ये मंजूर केलेली पतमर्यादा २८५.० कोटी रुपये इतकी होती. येणे कर्जाची उच्चतम पातळी ७७.५ कोटी रुपयांपर्यंत पोहोचली होती, म्हणजे ही रक्कम, मंजूर करण्यात आलेल्या पतमर्यादेच्या २३ टक्के इतकी होती. याशिवाय नाबार्डने राज्यातील शेतीच्या हंगामी कामांव्यतिरिक्त इतर उपक्रमांसाठी प्रादेशिक ग्रामीण बँकांना ५.९१ कोटी रुपये मंजूर केले होते व त्या संदर्भातील येणे रक्कम अधिकतम ३.६४ कोटी रुपयांपर्यंत पोहोचली. याशिवाय नाबार्डच्या नवीन पतपुरवठा लेख्या अंतर्गत जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकांना शेतीच्या हंगामी कामांव्यतिरिक्त इतर उपक्रमांसाठी ८.१४ कोटी रुपये इतका निधी मंजूर केला होता, जो पूर्णपणे वापरण्यात आला.

गुंतवणूक पतपुरवठा

१.३२.२ नाबार्डने राज्यात २००३-०४ मध्ये गुंतवणूक पतपुरवठ्यांतर्गत विविध पतपुरवठा अभिकरणांना ४५८ कोटी रुपयांचे पुनर्वितीय सहाय्य वितरित केले व ते आधीच्या वर्षात वितरित केलेल्या सहाय्यापेक्षा २९ टक्क्यांनी कमी होते. नाबार्डकडून २००३-०४ मध्ये पुनर्वितीय सहाय्य मिळालेल्या, देशातील प्राप्तकर्त्या राज्यांमध्ये महाराष्ट्र राज्य आठव्या क्रमांकावर होते आणि देशातील एकूण सहाय्यामध्ये महाराष्ट्राचा वाटा ६.० टक्के होता, जो आधीच्या वर्षातील ७.९ टक्के वाट्याच्या तुलनेत घटलेला होता.

ग्रामीण पायाभूत सुविधा विकास निधी

१.३२.३ नाबार्डने ग्रामीण पायाभूत सुविधा विकास निधीसाठी (आर.आय.डी.एफ.) महाराष्ट्र शासनास ३१ डिसेंबर, २००४ पर्यंत २,९६७ कोटी रुपये मंजूर केलेले होते. ह्या रकमेपैकी १,९३४ कोटी रुपये वितरित करण्यात आले. आतापर्यंत मंजूर करण्यात आलेल्या ७,०५८ प्रकल्पापैकी ५,४६५ प्रकल्प पूर्ण करण्यात आले होते. ह्या ७,०५८ प्रकल्पामध्ये ४०८ पाटबंधारे प्रकल्प, ५,१८० रस्ते, १,२४२ पूल आणि २२८ ग्रामीण पाणी पुरवठा योजना होत्या. पूर्ण झालेल्या ५,४६५ प्रकल्पामध्ये १५० पाटबंधारे प्रकल्प, ५,२५४ ग्रामीण रस्ते व पूल आणि ६१ ग्रामीण पाणी पुरवठा योजना होत्या. वितरित केलेल्या एकूण १,९३४ कोटी रुपये इतक्या रकमेपैकी २००३-०४ मध्ये वितरित करण्यात आलेली रक्कम ३१४ कोटी रुपये इतकी होती.

महाराष्ट्रातील जमीन सुधारणा

१.३३ राज्यामध्ये शेतजमीनविषयक पध्दतीत सुधारणा करण्याचे धोरण पुढे चालू आहे. महाराष्ट्रात १९५७ ते १९६५ या कालावधीत जारी करण्यात

आलेल्या कूळकायद्यांच्या अंमलबजावणीच्या परिणामी मार्च, २००४ अखेरपर्यंत जवळपास १४.९२ लाख कुळांना १७.३६ लाख हेक्टर जमिनीची मालकी प्रदान करण्यात आली.

१.३४ राज्यातील प्रत्येक भूधारकास खातेपुस्तिका पुरविण्यात आली असून, त्या पुस्तिकेमध्ये दरवर्षी त्याच्या जमिनीचे अभिलेख अद्यावत करण्यात येतात. ३१ मार्च, १९९८ पर्यंत ९२.५९ लाख भूधारकांपैकी ७३.११ लाख भूधारकांना खातेपुस्तिका पुरविण्यात आल्या आहेत. राज्य शासनाने भूधारकांना दरवर्षी अद्यावत गाव नमुना क्र. ७/१२ वितरित करण्याची योजना मे, १९९९ पासून सुरू केली आहे. शिवाय शासनाने गाव नमुना क्र. ७/१२ पोस्टाने वितरित करण्याची योजना २००२ पासून सुरू केली आहे. अशा प्रकारे राज्य शासनाने भूधारकांना त्यांच्या जमिनीबाबतचे अद्यावत अभिलेख उपलब्ध करून देण्यासाठी पुरेशी उपाययोजना केली आहे.

१.३५ भूमि अभिलेखाचे संगणीकीकरण या १०० टक्के केंद्र पुरस्कृत योजनेतर्गत राज्यात गाव नमुना क्रमांक ७/१२ चे संगणकीकरण करण्यात येत आहे. राज्यामध्ये एकूण २,१०,९३,८५१ इतके ७/१२ उतारे असून या सर्व उताऱ्यांची संगणकावर माहिती नोंदणी करण्याचे काम जवळपास पूर्ण झाले आहे. संगणकावर नोंदविलेल्या माहितीचे वैधतीकरण व पडताळणी करण्याचे काम प्रगतिपथावर आहे. केंद्र शासनाने ठरवून दिलेल्या मार्गदर्शक तत्वानुसार संगणकीकृत ७/१२ उतारे तालुका स्तरावरून वितरित करायचे आहेत.

जागतिक व्यापार परिषद

१.३६ जागतिक व्यापार संघटनेशी करण्यात आलेल्या शेतीविषयक आंतरराष्ट्रीय करारामुळे कृषि उत्पादनाच्या आंतरराष्ट्रीय व्यापारावरील बंधने मोठ्या प्रमाणावर शिथिल करण्यात आली आहेत. ह्या कराराचा उद्देश असा आहे की खुल्या व्यापारामध्ये सर्वांना समान संधी असावी आणि कोणत्याही देशाने अवाजवी आयातशुल्क आकारून किंवा निर्यातीसाठी अनुदाने देऊन आंतरराष्ट्रीय व्यापारातील संतुलन बिघडवू नये. यामुळे देशांना स्वतःच्या नैसर्गिक साधनसंपत्तीचा कार्यक्षमतेने वापर करून कृषि उत्पादने कमी उत्पादन खर्चात घेणे आणि स्वतःची उत्पादने आंतरराष्ट्रीय बाजारात कोठेही निव्वंधपणे विकणे शक्य होते. ह्या पार्श्वभूमीवर राज्य शासनाने लोकशिक्षण, उत्पादकतेत वाढ, काढणीपश्चात् तंत्रज्ञानास प्रोत्साहन यासारखी कार्यवाही सुरू केली आहे.

जैवतंत्रज्ञान क्षेत्रातील कार्यवाही

१.३७.१ वाढत्या लोकसंख्येच्या गरजा भागविण्यासाठी कृषि उत्पादन वाढविण्याकरिता कृषि क्षेत्रामध्ये जैवतंत्रज्ञानाचा अवलंब करणे गरजेचे झाले आहे. त्यानुसार राज्य शासनाने जैविक व्याप्ती व विकास समितीची स्थापना केली. महाराष्ट्र शासनाने जानेवारी, २००२ मध्ये जैवतंत्रज्ञान धोरण जाहीर केले असून मा. मुख्यमंत्री यांच्या अध्यक्षतेखाली महाराष्ट्र जैवतंत्रज्ञान मंडळाची स्थापना केली आहे. ह्या मंडळास व्यापारविषयक धोरणाशी संबंधित विविध बाबींबाबत सल्ला देण्यासाठी प्रमुख सल्लागार म्हणून महाराष्ट्र जैवतंत्रज्ञान आयोग काम पाहते.

१.३७.२ शासनाने कृषि जैवतंत्रज्ञान उद्योगांना कृषि क्षेत्रातील दराने वीज पुरवठा करण्याच्या तसेच संशोधन व विकासासाठी केंद्र स्थापन करण्याचा निर्णय घेतला आहे. याशिवाय राज्य शासनाने पुणे (हिंजवडी) येथे औषधी जैवतंत्रज्ञान केंद्र आणि शेंद्रे (जालना) व अकोला येथे कृषि जैवतंत्रज्ञान केंद्रे उभारली आहेत. जैवतंत्रज्ञान केंद्रांना उद्योग विभागाच्या 'ड' व 'ड+' गटात अंतर्भूत होणाऱ्या उद्योगांना मिळणाऱ्या सर्व लाभांसाठी पात्र ठरविण्यात आले आहे.

वने

१.३८ राज्यातील वनांखालील क्षेत्र २००३-०४ अखेरीस ६१.९ हजार चौ.कि.मी. इतके होते. ते राज्याच्या भौगोलिक क्षेत्रफळाच्या २०.१३ टक्के होते, जे ३३ टक्के अपेक्षित जंगल व्याप्तीच्या प्रमाणापेक्षा खूपच कमी आहे. यापैकी ५५.९ हजार चौ.कि.मी. क्षेत्र वन विभागाच्या, २.४ हजार चौ.कि.मी. क्षेत्र महसूल विभागाच्या आणि ३.६ हजार चौ.कि.मी. क्षेत्र महाराष्ट्र वन विकास महामंडळाच्या व्यवस्थापनांतर्गत होते. ६१.९ हजार चौ.कि.मी. वन क्षेत्रापैकी, ४९.२ हजार चौ.कि.मी. राखीव वनक्षेत्र, ८.२ हजार चौ.कि.मी. संरक्षित वनक्षेत्र आणि ४.५ हजार चौ.कि.मी. अवगीकृत वनक्षेत्र होते. जंगल स्थिती अहवाल २००१, नुसार राज्यातील एकूण ६१.९ हजार चौ.कि.मी. अधिसूचित वनक्षेत्रापैकी ४७.५ हजार चौ.कि.मी. वनव्याप्त होते. या वनव्याप्तीपैकी ६५.१ टक्के क्षेत्र घनदाट जंगलाखाली होते आणि उर्वरित खुले जंगल होते. २००३-०४ मध्ये वन विभाग व महाराष्ट्र वन विकास महामंडळ यांच्याकडून सुमारे २४.२ हजार हेक्टर जमिनीवर विविध वनीकरण कार्यक्रम राबविण्यात आले.

वन उत्पादने

१.३९ पर्यावरणाचे संतुलन राखण्यासाठी शासनाने वनक्षेत्रातील वृक्षतोडीवर निर्बंध घातले आहेत. त्यामुळे वृक्षतोड मर्यादित प्रमाणातच करण्यात येते. २००४-०५ मध्ये इमारती लाकडाचे अपेक्षित उत्पादन सुमारे १.५० लाख घन मीटर व त्याचे मूल्य ९० कोटी रुपये असे अंदाजित करण्यात आले आहे. २००३-०४ मध्ये हे उत्पादन १.२८ लाख मीटर होते व त्याचे मूल्य ९५ कोटी रुपये होते. २००४-०५ मध्ये जळाऊ लाकडाचे २.५९ लाख घन मीटर उत्पादन अपेक्षित असून त्याचे अंदाजित मूल्य ३२ कोटी रुपये आहे. तर, २००३-०४ या वर्षी हे उत्पादन ८.०२ लाख घन मीटर होते व त्याचे मूल्य २२ कोटी रुपये होते.

१.४० २००४-०५ मध्ये गौण वन उत्पादनांचे अपेक्षित मूल्य ५८.८३ कोटी रुपये आहे. त्यात तेंदूची पाने व बांबू यांचे मूल्य अनुक्रमे ११.३७ कोटी रुपये व ३६.६० कोटी रुपये आहे. २००३-०४ मध्ये गौण वन उत्पादनांचे मूल्य ६८ कोटी रुपये होते आणि त्यामध्ये तेंदूची पाने व बांबू यांचे मूल्य अनुक्रमे ३५.१५ कोटी रुपये व ३०.४९ कोटी रुपये होते. २००३-०४ आणि २००४-०५ या वर्षांकरिता गौण वन उत्पादनांचे मूल्य याबाबतची माहिती तक्ता क्र. ९.१५ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक ९.१५

गौण वन उत्पादनांची किंमत

(रु. कोटी)

| वन उत्पादने | २००३-०४ | २००४-०५* |
|-------------|---------|----------|
| बांबू | ३०.४९ | ३६.६० |
| तेंदू | ३५.१५ | २९.३७ |
| गवत चराई | ०.३३ | ०.१६ |
| गोंद | ०.२४ | ०.१९ |
| इतर | १.८५ | ०.५१ |
| | ६८.०६ | ५८.८३ |

* अपेक्षित

सामाजिक वनीकरण

१.४१ सार्वजनिक जमिनीवर वृक्षारोपण करणे आणि खाजगी जमिनीवर वृक्षारोपणास प्रोत्साहन देऊन त्याद्वारे पर्यावरणाचे संतुलन राखणे यासाठी राज्यात विविध वृक्षारोपण कार्यक्रम हाती घेण्यात आले आहेत. २००३-०४ मध्ये वन विभागाने केलेल्या वृक्षारोपणाव्यतिरिक्त सामाजिक वनीकरण विभागाकडून सामूहिक जमिनीवर सुमारे २.७१ हजार हेक्टर क्षेत्रावर वृक्षारोपण करण्यात आले आणि खाजगी जमिनीवरील वृक्षारोपणासाठी २० कलमी कार्यक्रमांतर्गत सुमारे ३.२८ कोटी रोपे पुरविण्यात आली. २००४-०५ ह्या वर्षात फेब्रुवारी, २००५ पर्यंत सामूहिक जमिनीवरील सुमारे २.६५ हजार हेक्टर क्षेत्रावर वृक्षारोपण करण्यात आले आणि खाजगी जमिनीवरील वृक्षारोपणाकरिता २० कलमी कार्यक्रमांतर्गत ३.३७ कोटी रोपे पुरविण्यात आली.

रेशीम उत्पादन

१.४२ रेशीम उद्योग हा एक शेतीवर आधारित कुटीरोद्योग असून त्यामध्ये ग्रामीण भागात रोजगारनिर्मिती करण्याची मोठी क्षमता आहे. तसेच तो शेतकऱ्यांची आर्थिक उन्नती करण्यासाठी देखील उपयोगी ठरतो. रेशीम उद्योगात तुती व ऐन या वृक्षांची लागवड, रेशीम किड्यांची जोपासना, कोष उत्पादन आणि रेशीम उत्पादन यांचा समावेश होतो. सध्या, महाराष्ट्रातील २० जिल्ह्यांमध्ये तुती रेशीम विकास कार्यक्रम राबविला जात असून विदर्भातील गडचिरोली, चंद्रपूर, भंडारा आणि गोंदिया या ४ जिल्ह्यांमध्ये टसर रेशीम विकास कार्यक्रम राबविला जात आहे. राज्य शासनाच्या रेशीम उद्योग विकास कार्यक्रमांतर्गत लागवडीखालील क्षेत्र, रेशीम उत्पादन आणि रोजगार निर्मिती याबाबतची माहिती तक्ता क्र. ९.१६ मध्ये दिली आहे.

पशुसंवर्धन

१.४३ कृषिसंलग्न व्यवसायांमध्ये पशुसंवर्धन हे एक महत्त्वाचे क्षेत्र आहे. १९९७ च्या पशुगणनेनुसार महाराष्ट्रात सुमारे ३.९६ कोटी पशुधन होते. राज्यातील पशुधन आणि कोंबड्या-बदके यांच्या संख्येबाबतची पशुगणनेनुसार माहिती या प्रकाशनातील भाग-२ मधील तक्ता क्र. ४३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ९.१६
रेशीम उत्पादन उपक्रमांतर्गत प्रगती

| बाब | मलबेरी | | तुती | |
|--|---------|----------|---------|----------|
| | २००३-०४ | २००४-०५* | २००३-०४ | २००४-०५* |
| मातृवृक्ष लागवडीखालील क्षेत्र (हेक्टर) | २,१६४ | १,५०० | १,१०० | १,१०० |
| रेशीम सूत उत्पादन (किलो) | ११,६०० | २,५५६ | १,११२ | ४६० |
| निर्मित रोजगार (सख्या) | ३६,००० | १८,७५० | ११,००० | ११,००० |

* सप्टेंबर, २००४ अखेर

९.४४ १९९७ च्या पशुगणनेनुसार भारतात ४८.५ कोटी पशुधन आणि ३४.८ कोटी कुक्कुट संख्या होती, त्यामध्ये महाराष्ट्राचा वाटा अनुक्रमे ८.२ टक्के आणि १०.२ टक्के इतका होता. पशुधनाच्या प्रकारानुसार पशुधनाच्या संख्येबाबतचा तपशील तक्ता क्र. ९.१७ मध्ये दर्शविला आहे.

तक्ता क्र.९.१७
पशुगणना १९९७ नुसार पशुधन

(हजारात)

| प्रकार | पशुधन | | महाराष्ट्राचा शेकडा हिस्सा |
|---------------------|-----------------|---------------|----------------------------|
| | भारत | महाराष्ट्र | |
| गाई-बैल | १,९८,८८२ | १८,०७१ | ९.१ |
| म्हशी-रेडे | ८९,९१८ | ६,०७३ | ६.७ |
| मेंढ्या आणि शेळ्या | १,८०,२१५ | १४,८०२ | ८.२ |
| इतर पशुधन | १६,३६९ | ६९२ | ४.२ |
| एकूण पशुधन | ४,८५,३८५ | ३९,६३८ | ८.२ |
| एकूण कॉबड्या व बदके | ३,४७,६११ | ३५,३९२ | १०.२ |

पशुगणना १९९७ नुसार, महाराष्ट्र राज्यात पशुधनाची घनता दर चौ.कि.मी.मागे १२९ इतकी होती आणि दर हजार लोकसंख्येमागे पशुधन ५०२ इतके होते. प्रति लाख पशुधनामागे ११ पशुचिकित्सालये होती.

९.४५ दूध, अंडी, मांस व लोकर ही पशुधनापासून मिळणारी मुख्य उत्पादने आहेत. राज्यात २००३-०४ मध्ये दुधाची दरडोई दैनिक उपलब्धता १७३ ग्रॅम्स होती, ती राष्ट्रीय पातळीवरील (२३१ ग्रॅम्स) आणि आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील (२५६ ग्रॅम्स) दुधाच्या दैनिक उपलब्धतेपेक्षा खूपच कमी होती. कृत्रिम रेतनाद्वारे संकरित गोपैदास कार्यक्रम महाराष्ट्र राज्यात मोठ्या प्रमाणावर राबविण्यात आला असून त्याच्या परिणामी गेल्या तीन दशकांत गाईपासून मिळणाऱ्या दूध उत्पादनात वाढ झालेली आहे. दूध, अंडी, मांस व लोकर यांच्या उत्पादनाबाबतचा तपशील तक्ता क्र.९.१८ मध्ये देण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. ९.१८
पशुधनाची मुख्य उत्पादने

| बाब | २००२-०३ | २००३-०४ | शेकडा बदल |
|---------------------|---------|---------|-----------|
| एकूण दूध (A) | ६,२५१ | ६,३७७ | २.० |
| त्यापेकी, गाईचे (A) | ३,०९७ | ३,१६१ | २.० |
| अंडी \$ | ३२९ | ३३६ | २.१ |
| मांस A | २१८ | २२५ | ३.२ |
| लोकर # | १६.५९ | १६.७४ | ०.९ |

(A) हजार टन, \$ कोटी, # लाख किलो

महाराष्ट्रात दुधाची दरडोई दैनिक उपलब्धता

| वर्ष | दूध (ग्रॅम्स) |
|---------|---------------|
| १९९४-९५ | १५४ |
| २००३-०४ | १७३ |

पंजाब राज्यात दुधाची दरडोई दैनिक उपलब्धता ८४५ ग्रॅम्स असून ती भारतात सर्वाधिक आहे.

९.४६ प्रारंभिक पूर्वानुमानानुसार, २००४-०५ मध्ये ६,५६५ हजार टन दूध, ३४६ कोटी अंडी, २३० हजार टन मांस व १६.९२ लाख किलो लोकर यांचे उत्पादन होईल, असा अंदाज आहे.

९.४७ राज्यातील पशुवैद्यकीय सेवा केंद्रांच्या संख्येत २००३-०४ मध्ये ४१८ ने लक्षणीय वाढ झाली आहे. राज्यामध्ये ३१ मार्च, २००४ अखेर एकूण ३१ पशुवैद्यकीय बहुचिकित्सालये, १२ राज्य पातळीवरील आणि १,५२३ स्थानिक पातळीवरील पशुवैद्यकीय दवाखाने, २,३९२ प्राथमिक पशुवैद्यकीय उपचार केंद्रे आणि ६१ फिरती पशुवैद्यकीय चिकित्सालये होती. कृत्रिम रेतन कार्यक्रमाखाली २९ जिल्हा कृत्रिम रेतन केंद्रे, ४९ विभागीय कृत्रिम रेतन केंद्रे व त्याखालील ६७० उपकेंद्रे आणि ४८ आधारभूत ग्रामकेंद्रे व त्याखालील ४६८ उपकेंद्रे कार्यरत होती. राज्य आणि स्थानिक पातळीवर कृत्रिम रेतन केंद्रे असलेल्या ४,५६५ संस्थ कार्यरत होत्या. गोठित वीर्याच्या उत्पादनासाठी राज्यामध्ये ती-प्रयोगशाळा होत्या. २००३-०४ मध्ये गायवर्गात एकूण विदेशी जातींचे ३.११ लाख व संकरित जातीची ९.१२ लाख कृत्रिम रेतने (प्रथम) करण्यात आली, तर आधीच्या वर्षातील ह्या संख्या अनुक्रमे ३.३३ लाख व ९.३३ लाख इतक्या होत्या. २००३-०४ मध्ये जन्मलेल्या संकरित वासरांची संख्या ४.४५ लाख होती, तर २००२-०३ मध्ये ती ४.६४ लाख इतकी होती

कुक्कुट विकास

९.४८ कुक्कुट विकासाचा कार्यक्रम प्रामुख्याने चार मध्यवर्ती अंड उबवणी केंद्रे, १६ सघन कुक्कुट विकास गट आणि दोन कुक्कुट विस्तार केंद्रे यांद्वारे राबविला जातो. सुधारित जातींच्या कुक्कुटवर्गीय पक्ष्यांच्या संख्येत २००३-०४ या वर्षात लक्षणीय घट झालेली आहे. ह्या केंद्रांन २००३-०४ मध्ये पुरवठा केलेल्या पक्ष्यांची संख्या ८.६७ लाख इतक होती, तर २००२-०३ मध्ये ती १३.०२ लाख होती. सहकारी तत्वावर

कुक्कुटपालन संस्था स्थापन करण्याच्या योजनेतर्गत १९८५-८६ ते २००२-०३ ह्या कालावधीत शासनाने अशा एकूण ७३ सहकारी कुक्कुटपालन संस्थांच्या प्रकल्पांना मंजुरी दिली आणि सध्या त्यापैकी ३५ प्रकल्प कार्यरत आहेत.

पशुगणना १९९७ नुसार, महाराष्ट्र राज्यात एकूण ३.५४ कोटी कुक्कुट पक्षी होते. त्यापैकी ७१ टक्के देशी आणि २९ टक्के सुधारित जातीचे होते. तर, पशुगणना १९६१ नुसार, ९८ टक्के देशी आणि २ टक्के सुधारित जातीचे कुक्कुट पक्षी होते.

शासकीय व सहकारी दुग्धसंस्था यांद्वारे दूध संकलन

१.४९ २००४-०५ मध्ये राज्यात एकूण ६४ प्रक्रिया दुग्धशाळा कार्यरत होत्या. ह्या सर्व प्रक्रिया दुग्धशाळांची एकत्रित प्रक्रिया क्षमता ७२.१५ लाख लिटर प्रतिदिन इतकी होती. ह्या प्रक्रिया दुग्धशाळांव्यतिरिक्त राज्यात २००४-०५ मध्ये १२२ शासकीय/सहकारी दूधशीतकरण केंद्रे कार्यरत होती आणि त्यांची एकत्रित क्षमता २२.२४ लाख लिटर प्रतिदिन इतकी होती.

१.५० राज्यातील शासकीय व सहकारी दुग्धशाळांचे एकत्रित आरसरी दैनिक दूधसंकलन (बृहन्मुंबई वगळून) २००४-०५ मध्ये ३८.८८ लाख लिटर इतके होईल असा अंदाज असून ते २००३-०४ मधील आरसरी दैनिक ३७.८६ लाख लिटर दूध संकलनाच्या तुलनेत २.७ टक्क्यांनी जास्त असेल.

मत्स्यव्यवसाय

१.५१ महाराष्ट्र राज्याला सुमारे ७२० कि.मी. लांबीचा समुद्रकिनारा लाभला आहे. राज्यातील नद्यांची लांबी सुमारे ३.२ हजार कि.मी. असून नालव्यांची लांबी सुमारे १२.८ हजार कि.मी. आहे. राज्यात १.१२ लाख चौ.कि.मी. क्षेत्र सागरी मच्छीमारीसाठी, ३.२० हजार चौ.कि.मी. क्षेत्र गोड्या पाण्यातील मच्छीमारीसाठी आणि १८.६ हजार हेक्टर क्षेत्र मत्स्यव्यवसायापाण्यातील (१० हजार हेक्टर शासकीय खाजण जमीन व ८.६ हजार हेक्टर खाजगी खाजण जमीन) मच्छीमारीसाठी योग्य असे आहे. महाराष्ट्र राज्याचे सागरी प्रादेशिक जलक्षेत्र जरी १.३२ लाख चौ.कि.मी. असले तरी त्यातील १८० मीटर खोलीपर्यंतचा केवळ १.१२ लाख चौ.कि.मी. क्षेत्रफळाचा पट्टा खंडातर उताराचे क्षेत्र (कॉन्टिनेन्टल शेल्फ) आहे. यापैकी केवळ ७२ मीटर म्हणजेच ३० ते ४० वाव (फॅदम)

खोलीपर्यंत मच्छीमारी होते. सागरी क्षेत्राची वार्षिक मत्स्योत्पादन क्षमता ६.३ लाख टन इतकी अंदाजित करण्यात आली आहे. त्या तुलनेत २००३-०४ मधील मत्स्योत्पादन ४.२० लाख टन इतके होते. मत्स्योत्पादनाची पूर्ण क्षमता (६.३ लाख टन) साध्य करण्याकरिता शासनाने सागरी आर्थिक क्षेत्रातील २०० मीटर खोलीपर्यंतच्या क्षेत्रातील मत्स्यसंपत्ती मिळविण्यासाठी मध्यम आकाराच्या मच्छीमार नौकांचा वापर सुरू करण्याचे नियोजित केले आहे. त्यासाठी, आतापर्यंत मध्यम आकाराच्या ६१ मच्छीमार नौकांना अर्थसहाय्य देण्यात आले.

१.५२ राज्यात सागरी मच्छीमारीसाठी वापरलेल्या नौकांची संख्या २००२-०३ मध्ये २१,८६८ इतकी होती. ती वाढून २००३-०४ मध्ये २२,३२२ इतकी झाली. एकूण मच्छीमारी नौकांपैकी ११,६२४ यांत्रिकी नौका (५२ टक्के) होत्या. राज्याच्या सागरी किनाऱ्यावर मासळी उतरविण्याची १८४ केंद्रे होती. २००३-०४ मध्ये मिळविलेले सागरी मत्स्योत्पादन अंदाजे ४.२० लाख टन होते व ते २००२-०३ मधील उत्पादनापेक्षा ८.५ टक्क्यांनी जास्त होते. त्यापैकी २.९० लाख टन मासे ताज्या स्वरूपात वापरण्यात आले, ०.१२ लाख टन मासे खारविण्यासाठी पाठविण्यात आले आणि ०.८९ लाख टन मासे सुकविण्यात आले. २००३-०४ मध्ये ८८४ कोटी रुपये किंमतीचे ९७ हजार टन मासे निर्यात करण्यात आले. सागरी क्षेत्रात कोकण विकास कार्यक्रमांतर्गत प्रस्तावित करण्यात आलेल्या १३ बंदरे आणि ३८ जेट्टीच्या कामांपैकी ११ जेट्टीची कामे पूर्ण झाली असून ३ बंदरे आणि १० जेट्टीची कामे प्रगतिपथावर आहेत. २००४-०५ ह्या वर्षात सप्टेंबर अखेर अंदाजे १.२३ लाख टन सागरी मत्स्योत्पादन मिळाले.

१.५३ २००३-०४ मधील गोड्या पाण्यातील मत्स्योत्पादन अंदाजे १.२५ लाख टन होते आणि ते २००२-०३ मधील उत्पादनापेक्षा १.६ टक्क्यांनी कमी होते. गोड्या पाण्यातील मत्स्योत्पादन शक्य तितक्या प्रमाणात वाढविण्यासाठी प्रयत्न करण्यात येत आहेत. २००३-०४ मध्ये राज्यातील सागरी व गोड्या पाण्यातील मत्स्योत्पादनाचे एकत्रित स्थूल मूल्य १,५५३ कोटी रुपये होते. २००४-०५ ह्या वर्षात ऑक्टोबर अखेर अंदाजे ०.७० लाख टन गोड्या पाण्यातील मत्स्योत्पादन मिळाले.

१.५४ राज्यात मत्स्यबीज उत्पादन कार्यक्रमाखाली २००३-०४ मध्ये ७० मत्स्यबीज उत्पादन/संगोपन केंद्रे होती व राज्यातील मत्स्यबीजाचे उत्पादन २१.६५ कोटी इतके होते. तर, २००२-०३ मध्ये तितक्याच केंद्रामधून मत्स्यबीजाचे उत्पादन २२.३४ कोटी इतके झाले होते.



सहकार

१०.१ वेगवेगळ्या आर्थिक कार्यांमध्ये कार्यरत असलेल्या दुबळ्या व असंघटीत लोकांना संरक्षण देण्यामध्ये सहकाराची भूमिका महत्त्वाची ठरते. लहान शेतकरी, ग्रामीण कारागीर, भूमिहीन शेतमजूर इत्यादि, यांचे भांडवलदारापासून होणाऱ्या शोषनास प्रतिबंध करण्यामध्ये व त्यांचा आर्थिक दर्जा उंचावण्यामध्ये सहकारी चळवळीने मोलाची मदत केली आहे. नवीन रोजगाराच्या संधी निर्माण करण्यात, उत्पादन क्षमता वाढविण्यात व समाजातील दुबळ्या वर्गामध्ये स्पर्धात्मक क्षमता रुजविण्याच्या कामीसुद्धा सहकाराने मदत केली आहे. तथापि, जागतिक उदारीकरणानंतरच्या काळात असलेली तीव्र स्पर्धा व दर्जेदार उत्पादने आणि तत्पर सेवा अशा आव्हानांना सहकारी चळवळीस सामोरे जावे लागत आहे.

महाराष्ट्रातील सहकारी चळवळ

१०.२ सुरुवातीच्या काळात सहकारी चळवळ ही प्रामुख्याने कृषि पतपुरवठ्याच्या क्षेत्रापुरती मर्यादित होती. नंतरच्या काळात या चळवळीचा कृषि माल प्रक्रिया, कृषि पणन, ग्रामीण उद्योग, ग्राहक भांडारे, सामाजिक सेवा इत्यादि क्षेत्रांत झपाट्याने विस्तार होत गेला. याचा

परिणाम म्हणून ग्रामीण जनतेच्या राहणीमानात उल्लेखनीय अशी सुधारणा झाली. तथापि, उदारीकरणामुळे निर्माण होत असलेल्या समस्यांची सोडवणूक करण्याच्या दृष्टीने बदलती अर्थव्यवस्था व बाजाराचा ओघ लक्षात घेऊन सहकारी चळवळ स्पर्धात्मक बनण्यासाठी तीला योग्य दिशा देण्याची गरज आहे.

१०.३ राज्यातील निरनिराळ्या प्रकारच्या सहकारी संस्थांची १९६१ पासूनची प्रगती तक्ता क्र. १०.१ मध्ये दर्शविली आहे.

१०.४ राज्यातील सहकारी संस्थांच्या संख्येमध्ये झालेली भरीव वाढ ही प्रामुख्याने सहकारी गृहनिर्माण संस्था, बिगर-कृषि पतपुरवठा व उत्पादक उपक्रम या प्रकारातील संस्थांच्या संख्येमध्ये झालेल्या भरीव वाढीमुळे दिसून येते. ३० जून, १९६१ रोजी राज्यातील सहकारी संस्थांमधील सभासद संख्या ४१.९ लाख इतकी होती, ती ३१ मार्च, २००४ पर्यंत ११.५ पटीने वाढून ४८३ लाख इतकी झाली. या संस्थांचे एकूण खेळते भांडवल जून, १९६१ अखेर २९१ कोटी रुपये होते. त्यामध्ये अनेक पटींनी वाढ होऊन ते, ३१ मार्च, २००४ रोजी १,८३,२०१ कोटी रुपये

तक्ता क्रमांक १०.१

महाराष्ट्रातील सहकारी संस्थांची वाढ

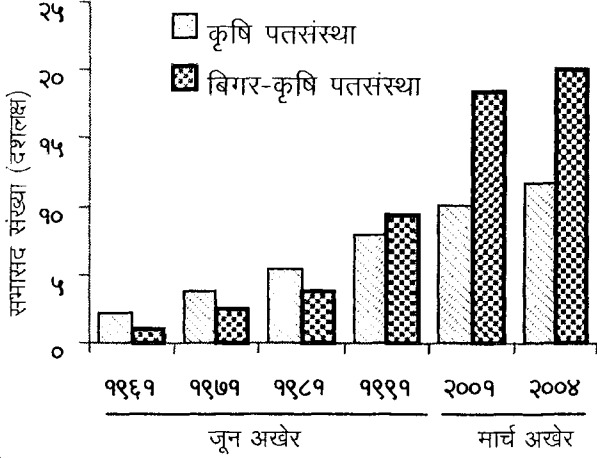
| अ.क्र. | सहकारी संस्थेचा प्रकार | ३० जून रोजी | | ३१ मार्च रोजी | | |
|--------|--------------------------------|---------------|---------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| | | १९६१ | १९८१ | २००१ | २००३ | २००४ |
| १ | शिखर व मध्यवर्ती-पत संस्था | | | | | |
| | i) कृषि | ३७ | २८ | ३२ | ३२ | ३२ |
| | ii) बिगर-कृषि | २ | ३ | २ | २ | २ |
| २ | प्राथमिक कृषि पत संस्था | २१,४०० | १८,५७७ | २०,५५१ | २०,८३९ | २१,००० |
| ३ | बिगर-कृषि पत संस्था | १,६३० | ५,४७४ | २२,०१४ | २५,१०७ | २५,६६४ |
| ४ | पणन संस्था | ३४४ | ४२३ | १,११५ | १,२५२ | १,२२२ |
| ५ | उत्पादक उपक्रम* | ४,३०६ | १४,३२७ | ३९,०७० | ४०,१७१ | ४०,८८५ |
| ६ | समाजसंघी व इतर सहकारी संस्था** | ३,८४६ | २१,९१५ | ७५,२३२ | ८५,९९९ | ९०,०४९ |
| | एकूण संस्था | ३१,५६५ | ६०,७४७ | १,५८,०९६ | १,७३,४०२ | १,७८,८५४ |

* साखर कारखाने, भात गिरण्या, दुग्ध संस्था इत्यादि

** ग्राहक भांडारे, गृहनिर्माण इत्यादि

इतके झाले. या सर्व संस्थांचे एकूण येणे कर्ज ३० जून, १९६१ रोजी १७० कोटी रुपये इतके होते, ते वाढून मार्च, २००४ अखेर ८६,८२९ कोटी रुपये इतके झाले.

सभासद संख्या



१०.५ महाराष्ट्र राज्यातील सहकारी संस्थांची सभासद संख्या, खेळते भांडवल, कर्जपुरवठा, येणे कर्ज व उलाढाली याबाबतचा तपशील या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्र.४४ मध्ये दिला आहे.

१०.६ राज्यातील सर्व प्रकारच्या सहकारी संस्थांच्या काही महत्त्वाच्या बाबीसंबंधीची एकत्रित माहिती तक्ता क्रमांक १०.२ मध्ये दिली आहे.

१०.७ राज्यातील सहकारी संस्थांचे २००३-०४ या वर्षात एकूण कर्ज वाटप तसेच निव्वळ कर्ज वाटप कमी झाले. सहकारी संस्थांचे एकूण कर्ज वाटप मागील वर्षापेक्षा १९ टक्क्याने कमी झाले. एकूण भरणा केलेल्या भाग भांडवलामध्ये ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्य शासनाचा वाटा २,०५७ कोटी रुपये (१५.४ टक्के) इतका होता. एकूण १,७८,८५४ संस्थांपैकी ३६ टक्के संस्था नफ्यामध्ये, २६ टक्के संस्था नफ्यामध्ये व ४ टक्के संस्था ना नफा ना तोटा स्थितीमध्ये होत्या, तर ३४ टक्के संस्थांची नफा किंवा तोटा याबाबतची स्थिती उपलब्ध झाली नाही.

शिखर व मध्यवर्ती पतसंस्था

१०.८ राज्यातील शिखर व मध्यवर्ती पतसंस्थांमध्ये महाराष्ट्र राज्य सहकारी बँक, महाराष्ट्र राज्य सहकारी कृषि ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास बँक, सोलापूर जिल्हा औद्योगिक सहकारी बँक, महाराष्ट्र राज्य गृहनिर्माण वित्त महामंडळ व ३१ जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँका यांचा समावेश आहे. या सर्व शिखर व मध्यवर्ती पतसंस्थांचे एकत्रित खेळते भांडवल

तक्ता क्रमांक १०.२

राज्यातील सहकारी संस्थांसंबंधी महत्त्वाच्या बाबी

(रुपये कोटीत)

| बाब | मार्च अखेर | | शेकडा बदल |
|--------------------------------------|------------|----------|-----------|
| | २००३ | २००४* | |
| १. संस्थांची संख्या | १,७३,४०२ | १,७८,८५४ | ३.१ |
| २. सभासदांची संख्या (लाखात) | ४७६ | ४८३ | १.५ |
| ३. i) भरणा भाग भांडवल | १२,८६५ | १३,३७८ | ४.० |
| ii) पैकी शासनाचे | २,०३७ | २,०५७ | १.० |
| ४. ठेवी | ९६,१९६ | १,०६,६२२ | १०.८ |
| ५. खेळते भांडवल | १,७२,८६४ | १,८३,२०९ | ६.० |
| ६. कर्ज वाटप (एकूण) | ८१,९२१ | ६६,३२७ | (-१९.०) |
| ७. कर्ज वाटप (निव्वळ) | ५५,१३३ | ४७,८६४ | (-१३.२) |
| ८. नफ्यातील संस्था | | | |
| i) संख्या | ६२,५७३ | ६४,३७४ | २.९ |
| ii) नफा | १,८२० | १,५६३ | (-१४.१) |
| ९. तोट्यातील संस्था | | | |
| i) संख्या | ४४,४३२ | ४५,८१५ | ३.१ |
| ii) तोटा | २,४०९ | १,४६२ | (-३९.३) |
| १०. नफा किंवा तोटा न झालेल्या संस्था | ६,४३७ | ६,५६९ | २.१ |
| ११. नफा/तोटा न कळविलेल्या संस्था | ५९,९६० | ६२,०९६ | ३.६ |

* अस्थायी

३१ मार्च, २००४ रोजी ५२,३२६ कोटी रुपये होते व ते आधीच्या वर्षापेक्षा १२ टक्क्यांनी जास्त होते आणि सर्व सहकारी संस्थांच्या एकत्रित खेळत्या भांडवलामध्ये ते २९ टक्के इतके होते. या ३४ संस्थांनी २००३-०४ मध्ये केलेल्या कर्जवाटपाची एकत्रित रक्कम १८,४८३ कोटी रुपये होती. शिखर व मध्यवर्ती पतसंस्थांनी केलेले कर्जवाटप सर्व प्रकारच्या सहकारी संस्थांनी केलेल्या एकूण कर्जवाटपाच्या २८ टक्के होते. ३१ मार्च, २००४ रोजी या संस्थांची येणे कर्जांची रक्कम २६,०६४ कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षाच्या अशा रकमेपेक्षा ०.४ टक्क्यांनी कमी होती. या संस्थांमधील एकूण रोजगार मार्च, २००३ अखेरीस ३३,६९८ इतका होता.

१०.८.१ राज्यातील शिखर व मध्यवर्ती, कृषि व बिगर कृषि सहकारी पतसंस्थांच्या काही महत्त्वाच्या बाबींची मार्च २००३ व २००४ अखेरची माहिती तक्ता क्र. १०.३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १०.३
राज्यातील शिखर व मध्यवर्ती कृषि, बिगर कृषि सहकारी पतसंस्थांच्या
काही महत्त्वाच्या बाबी

(रुपये कोटीत)

| बाब | मार्च अखेर | | शेकडा बदल |
|---|------------|----------|--------------|
| | २००३ | २००४* | |
| कृषि पतपुरवठा | | | |
| महाराष्ट्र राज्य सहकारी बँक | | | |
| सभासद | ४१,५५२ | ४३,२५९ | ४.१ |
| ठेवी | ११,२३८ | १३,३०० | १८.३ |
| खेळते भांडवल | १५,२०७ | १७,६९४ | १६.४ |
| स्थूल कर्ज वाटप | १२,८३१ | ६,९४६ | (-)४५.९ |
| येणे कर्ज | ८,९०८ | ८,४३२ | (-)५.३ |
| थकबाकी | १,२७८ | १,५०८ | १८.० |
| जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक (३१) | | | |
| सभासद | १,२१,०९३ | १,२८,६१६ | ६.२ |
| ठेवी | २१,४२० | २३,८८७ | ११.५ |
| खेळते भांडवल | २९,९०५ | ३२,९०३ | १०.० |
| स्थूल कर्ज वाटप | १३,९५७ | ११,५१७ | (-)१७.५ |
| येणे कर्ज | १५,९९० | १६,३५८ | २.३ |
| थकबाकी | ४,४९५ | ५,३३२ | १८.६ |
| महाराष्ट्र राज्य सहकारी कृषि ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास बँक | | | |
| सभासद | ८२८ | ८२८ | ०.० |
| ठेवी | - | - | - |
| खेळते भांडवल | १,२४८ | १,३१८ | ५.६ |
| स्थूल कर्ज वाटप | - | - | - |
| येणे कर्ज | १,०१९ | १,०४६ | २.६ |
| थकबाकी | २७९ | २७३ | (-)२.२ |
| बिगर कृषि पतपुरवठा | | | |
| सोलापूर जिल्हा औद्योगिक सहकारी बँक | | | |
| सभासद | १,९७१ | १,९७१ | ०.० |
| ठेवी | ३६ | ३३ | (-) ८.३ |
| खेळते भांडवल | ४१ | ४९ | १९.५ |
| स्थूल कर्ज वाटप | १३ | १२ | (-) ७.७ |
| येणे कर्ज | ३१ | २८ | (-) ९.७ |
| थकबाकी | १८ | २८ | ५५.६ |
| महाराष्ट्र राज्य सहकारी गृहनिर्माण वित्तीय महामंडळ | | | |
| सभासद | ११,७२७ | ११,८०९ | ०.७ |
| ठेवी | ०.४६ | ०.७३ | ५८.७ |
| खेळते भांडवल | ३८१ | ३६२ | (-) ५.० |
| स्थूल कर्ज वाटप | ५.३१ | ८.४३ | ५८.८ |
| येणे कर्ज | २२२ | २०० | (-) ९.९ |
| थकबाकी | १२८ | १२९ | ०.८ |

* अस्थायी

कृषि पतपुरवठा

१०.८.२ महाराष्ट्र राज्य सहकारी बँकेच्या बाबतीत ३१ मार्च २००४ रोजीची थकबाकी ३१ मार्च, २००३ रोजीच्या थकबाकीपेक्षा १८ टक्क्यांनी अधिक होती. जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकांच्या बाबतीत त्यांची थकबाकी आधीच्या वर्षापेक्षा १८.६ टक्क्यांनी अधिक होती महाराष्ट्र राज्य सहकारी कृषि व ग्रामीण विकास बँकेची दिनांक ३ ऑक्टोबर, २००१ पासून संघीय पध्दतीने पुनर्रचना करण्यात आली आणि मुंबई येथे महाराष्ट्र राज्य सहकारी कृषि ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास बँक या शिखर बँकेसह २९ जिल्हा सहकारी कृषि ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास बँका (प्राथमिक) निर्माण करण्यात आल्या.

बिगर-कृषि पतपुरवठा

१०.८.३ सोलापूर जिल्हा औद्योगिक सहकारी बँकेने २००३-०४ मध्ये १२ कोटी रूपये स्थूल कर्ज वाटप केले होते. ७.२.२००४ पासून ही बँक अवसायनात निघाल्यामुळे त्या तारखेपासून नवीन कर्ज देण्यास सक्षम नाही. तसेच तिच्या थकबाकीत मोठी वाढ झाली व ती आधीच्या वर्षापेक्षा ५५.६ टक्क्यांनी जास्त होती. महाराष्ट्र राज्य सहकारी गृहनिर्माण वित्तीय महामंडळाच्या बाबतीत २००३-०४ मध्ये स्थूल कर्ज वाटप ८.४३ कोटी रूपये होते व ते आधीच्या वर्षाच्या रकमेपेक्षा ५८.८ टक्क्यांनी अधिक होते.

प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था

१०.९ प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था ह्या निम्नतम स्तरावरील सहकारी पतपुरवठा संस्था असून शेतकऱ्यांना अल्प मुदतीच्या कृषिविषयक कर्जांचे वितरण प्रभावीपणे करण्यामध्ये त्यांची भूमिका महत्त्वाची आहे. मोठ्या प्रमाणावर असलेली थकबाकी, शेतकऱ्यांना कर्ज देण्याकरिता अपुऱ्या व अनियमित निधीची उपलब्धता तसेच साधनसामग्री संघटित करण्यामधील अभाव ही प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था कमकुवत राहण्यामधील प्रमुख कारणे राहिली आहेत.

१०.९.१ राज्यात ३१ मार्च, २००४ रोजी २१,००० प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था होत्या आणि त्यांची सभासद संख्या ११७ लाख होती. या संस्थांमध्ये प्राथमिक कृषि पत संस्था (१९,९९०), कृषक सेवा संस्था (२१), आदिवासी सहकारी संस्था (९४१) व धान्य बँका (२४) यांचा समावेश आहे. या संस्थांचे खेळते भांडवल मार्च, २००४ अखेरीस आधीच्या वर्षातील ९,७१७ कोटी रूपये खेळत्या भांडवलापेक्षा २ टक्क्या वाढून ९,८८६ कोटी रूपये झाले. धान्य बँका व्यतिरिक्त विविध कार्यका सेवा संस्थांनी २००३-०४ या वर्षी ३,७६९ कोटी रूपयांचा कर्जपुरवठा केला, तो २००२-०३ मधील ३,८२५ कोटी रूपये कर्ज पुरवठ्याचे तुलनेत १.५ टक्क्याने कमी होता. ह्या कर्जांचे वाटप ३४.६२ ला सभासदांना करण्यात आले, त्यापैकी ८.४५ लाख अल्पभूधारक जवळपास ९.३० लाख अत्यल्प भूधारक होते. प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांच्या एकूण कर्जदार सभासदांपैकी ५१ टक्के सभासद अल्प

अत्यल्प भूधारक होते. तथापि, प्रति अत्यल्प व अल्प भूधारक सभासदांना केलेला सरासरी कर्ज पुरवठा अनुक्रमे ७,७४८ रुपये व १,१८४ रुपये होता व तो प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांच्या प्रति सभासद टप केलेल्या एकंदरीत सरासरी कर्ज पुरवठ्याच्या १०,८८१ रुपये या कमेपेक्षा बराच कमी होता.

१०.९.२ प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांची येणे कर्जाची रक्कम १ मार्च, २००४ रोजी ६,७५० कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षाच्या अखेरीस असलेल्या ६,४१२ कोटी रुपयांपेक्षा ५ टक्क्यांनी जास्त होती. प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांची वसुलीयोग्य कर्जाची रक्कम ३१ मार्च, २००४ रोजी ५,९९० कोटी रुपये इतकी होती, तर ३१ मार्च, २००३ रोजी ती रक्कम ५,९३१ कोटी रुपये इतकी होती. प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांनी २००३-०४ मध्ये ३,४२९ कोटी रुपयांची कर्ज वसुली केली, ती कर्ज वसुलीची रक्कम २००२-०३ मधील ३,३९५ कोटी रुपये कर्ज वसुलीच्या रकमेपेक्षा १ टक्क्यांनी जास्त होती. प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांच्या कर्जवसुलीची वसुलीयोग्य कर्जाशी असलेली टक्केवारी ५७ होती व ती आधीच्या वर्षा पेक्षा कमी होती. कर्जाच्या थकबाकीची रक्कम ३१ मार्च, २००४ रोजी २,५६१ कोटी रुपये होती. थकबाकीचे वीरकमेशी प्रमाण ३१ मार्च, २००४ रोजी ३८ टक्के इतके होते. हे प्रमाण आधीच्या वर्षापेक्षा २ टक्क्यांने कमी होते. ३१ मार्च, २००४ रोजी असलेल्या एकूण थकबाकीपैकी, ५४ टक्के थकबाकी ही दोन वर्षांपेक्षा कमी कालावधीमधील होती. प्राथमिक कृषि पत पुरवठा संस्थांमधील रोजगार मार्च, २००३ अखेरीस २७,११४ इतका होता. प्राथमिक कृषि पत पुरवठा संस्थांनी २००३-०४ या वर्षात केलेल्या कर्ज पुरवठ्याचा बहिर्धारक वर्गनिहाय तपशील तक्ता क्र. १०.४ खे दिले आहे.

तक्ता क्र.१०.४

बहिर्धारक वर्गनिहाय प्राथमिक कृषि पत पुरवठा संस्थांनी केलेला कर्जपुरवठा (धान्य बँका वगळून)

| आकारमान वर्ग (हेक्टर) | सभासद (लाखात) | कर्जदार सभासद (लाखात) | कर्जदार सभासदांची एकूण सभासदांशी टक्केवारी | प्रति कर्जदार सभासद कर्ज पुरवठा (रुपये) |
|-----------------------|---------------|-----------------------|--|---|
| < १ | २६.७१ | ९.३० | ३४.८ | ७,७४८ |
| १ - २ | २६.९१ | ८.४५ | ३१.४ | ९,१८४ |
| २ - ४ | १८.७२ | ६.८९ | ३६.८ | ११,४०० |
| ४ - ८ | १२.२३ | ५.८४ | ४७.७ | १२,४६३ |
| > ८ | ५.७४ | ४.०९ | ७१.३ | १८,४९८ |
| इतर | १६.०५ | ०.०६ | ०.४ | ३,५२५ |
| एकूण | १०६.३६ | ३४.६३ | ३२.६ | १०,८८१ |

१०.९.३ प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांनी २००३-०४ मध्ये अल्प अत्यल्प भूधारकांना केलेल्या कर्जवाटपाचा तपशील तक्ता क्रमांक १०.५ खे दिले आहे.

तक्ता क्रमांक १०.५

प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्थांनी २००३-०४ मध्ये केलेल्या कर्जवाटपाचा तपशील

| बाब | अत्यल्प भूधारक | अल्प भूधारक | एकूण सभासद |
|---------------------------------------|----------------|-------------|------------|
| कर्जपुरवठा (कोटी रुपये) | ७२०.६७ | ७७५.८९ | ३,७६७.२३ |
| कर्जपुरवठ्यामधील शेकडा हिस्सा | १९.१ | २०.६ | १००.० |
| येणे कर्ज (कोटी रुपये) | १,२५०.४३ | १,३२९.१३ | ६,७५०.५० |
| येणे कर्जामधील शेकडा हिस्सा | १८.५ | १९.७ | १००.० |
| प्रति कर्जदार सभासद येणे कर्ज (रुपये) | १३,४४३ | १५,७३३ | १९,४९७ |

बिगर-कृषि पतपुरवठा संस्था

१०.१० ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यातील प्राथमिक बिगर-कृषि पतपुरवठा संस्थांची संख्या २५,६६४ होती. या सर्व संस्थांची सभासद संख्या २००.५९ लाख होती व ती आधीच्या वर्षातील सभासद संख्येपेक्षा १.२ टक्क्यांनी जास्त होती. सर्व सहकारी संस्थांच्या एकूण सभासदांपैकी ४१ टक्के सभासद हे बिगर-कृषि पतपुरवठा संस्थांतील होते. या संस्थांच्या ठेवी ३१ मार्च, २००४ रोजी ६७,३१३ कोटी रुपये होत्या व त्या आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ९.५ टक्क्यांनी जास्त होत्या. सर्व प्रकारच्या सहकारी संस्थांच्या एकूण खेळत्या भांडवलामधील जवळपास अर्धे खेळते भांडवल बिगर-कृषि पतपुरवठा संस्थांचे होते. ३१ मार्च, २००४ रोजी या संस्थांचे खेळते भांडवल ८९,५८६ कोटी रुपये होते व ते सर्व प्रकारच्या सहकारी संस्थांच्या एकूण खेळत्या भांडवलाच्या ४९ टक्के इतके होते. सर्व प्रकारच्या सहकारी संस्थांनी २००३-०४ मध्ये केलेल्या एकूण कर्जपुरवठ्यामध्ये बिगर-कृषि पतपुरवठा संस्थांचा वाटा ६६ टक्के इतका होता. ह्या पतपुरवठा संस्थांनी २००३-०४ मध्ये ४३,७६७ कोटी रुपयांची कर्ज दिली व आधीच्या वर्षाच्या कर्जपुरवठ्याच्या तुलनेत ती १४ टक्क्यांने कमी होती. या संस्थांची येणे कर्जाची रक्कम ३१ मार्च, २००४ रोजी ५२,४४१ कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षाच्या अखेरीस असलेल्या ४९,५२२ कोटी रुपयांपेक्षा ६ टक्क्यांनी जास्त होती. या संस्थांच्या कर्जाच्या थकबाकीची रक्कम ३१ मार्च, २००४ रोजी ३,८६१ कोटी रुपये होती, तर आधीच्या वर्षाच्या अखेरीस ती ३,६७७ कोटी रुपये होती.

सहकारी पणन

१०.११ सहकारी पणनाचे मूळ उद्दिष्ट म्हणजे शेतकऱ्यांचे व्यापार्यांकडून होणारे शोषण टाळणे आणि शेती उत्पादनाच्या खरेदी व विक्रीची व्यवस्था करून शेतकऱ्यांस वाजवी भाव मिळवून देणे, त्याचबरोबर ग्राहकास वाजवी किंमतीमध्ये चांगल्या प्रतीचा माल उपलब्ध करून देणे हे आहे. ही उद्दिष्टे लक्षात घेऊन सहकारी पणन संस्थांना त्यांच्या कार्याचा विस्तार करण्यासाठी राज्य शासनाकडून भागभांडवल व कर्ज या स्वरूपात अर्थसहाय्य दिले जाते.

१०.११.१ महाराष्ट्र राज्य सहकारी पणन महासंघाचे खेळते भांडवल ३१ मार्च, २००४ रोजी २४.९९ कोटी रुपये होते. या महासंघाचे एकूण भरणा केलेले भाग भांडवल १३.०४ कोटी रुपये होते व त्यामध्ये राज्य शासनाचे १२.३५ कोटी रुपये होते. भरणा केलेल्या एकूण भाग भांडवलामध्ये राज्य शासनाचा वाटा ९५ टक्के इतका होता. या महासंघाची २००३-०४ मधील एकूण उलाढाल ३७८.१६ कोटी रुपये होती व त्यामध्ये शेतीविषयक साधनांच्या उलाढालीचा वाटा ४४ टक्के होता.

१०.११.२ महाराष्ट्र राज्य सहकारी कापूस उत्पादक पणन महासंघाचे खेळते भांडवल ३१ मार्च, २००४ रोजी ७.८८ कोटी रुपये होते. या महासंघाची २००३-०४ मधील चालू हंगामातील एकूण उलाढाल ९६ लाख रुपयांपर्यंत लक्षणीयरीत्या खाली आली. २००२-०३ च्या हंगामात ती ५९७.९५ कोटी रुपये होती.

१०.११.३ जिल्हा/मध्यवर्ती पणन संस्था आणि पणन महासंघ धरून सहकारी पणन संस्थांची एकूण संख्या मार्च, २००४ अखेर १,२२२ होती. या संस्थांची सभासद संख्या ९.१२ लाख आणि खेळते भांडवल १,२१९ कोटी रुपये होते. या संस्थांच्या २००२-०३ मधील १,८२६ कोटी रुपये उलाढालीच्या तुलनेत २००३-०४ या वर्षामधील उलाढाल १,९०३ कोटी रुपये होती.

एकाधिकार कापूस खरेदी

१०.१२ महाराष्ट्र कच्चा कापूस (प्रापण, संस्करण व पणन) अधिनियम, १९७१ अंतर्गत एकाधिकार कापूस खरेदी योजनेची मुदत ३० जून, २००६ पर्यंत वाढविण्यात आली आहे. २००४-०५ हंगामातील कापूस खरेदी महाराष्ट्र राज्य सहकारी कापूस उत्पादक पणन महासंघामार्फत करण्याचा तसेच कापसाच्या प्रत्येक वाणाची प्रतवारी आधीच्या हंगामाप्रमाणे एफ.ए.क्यू. (फेअर अॅव्हरेज क्वालिटी), फेअर, फडतर व कवडी अशा चार ग्रेड्समध्ये करण्याचा निर्णय राज्य शासनाने घेतला आहे. २००४-०५ च्या हंगामाकरिता राज्य शासनाने जाहीर केलेल्या कापसाच्या (सरकीसह) जातवार व प्रतवार प्रति क्विंटल खरेदी किंमती एफ.ए.क्यू. ग्रेडसाठी २,२०० रुपये ते २,५०० रुपये, फेअर ग्रेडसाठी १,८७५ रुपये ते २,१७५ रुपये, फडतर ग्रेडसाठी १,५५० रुपये ते १,७४० रुपये आणि कवडी ग्रेडसाठी १,००० रुपये अशा आहेत. २००४-०५ या हंगामातील कापूस खरेदीस ८ नोव्हेंबर, २००४ पासून विदर्भ, मराठवाडा व खानदेश ह्या मुख्य कापूस उत्पादक पट्ट्यात सुरुवात करण्यात आली. २००४-०५ या हंगामात २४ फेब्रुवारी, २००५ पर्यंत ४,५८५.८७ कोटी रुपये किंमतीचा २००.४३ लाख क्विंटल कापूस खरेदी करण्यात आला.

१०.१२.१ ह्या योजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये ७३.०० लाख रुपयांचा आतापर्यंत सर्वात कमी ३,२०० क्विंटल कापूस खरेदी करण्यात आला, तर २००२-०३ मध्ये ४८१ कोटी रुपयांचा २३.५८ लाख क्विंटल कापूस खरेदी करण्यात आला होता. २००३-०४ मध्ये खरेदी केलेल्या

कापसावर प्रक्रिया करून त्यापासून ६६२ गासड्या तयार करण्यात आल्या व २,०४६ क्विंटल सरकी मिळाली. तयार करण्यात आलेल्या सर्व ६६२ गासड्या अंदाजे ६३ लाख रुपये किंमतीच्या असून त्यांच्या विक्रीचे करार २४ फेब्रुवारी, २००५ पर्यंत करण्यात आले. २,०४६ क्विंटल सरकी २० लाख रुपयांना विकण्यात आली. २००३-०४ मध्ये गासड्यांच्या विक्रीची सरासरी किंमत प्रति गासडी ९,५७२ रुपये आणि सरकीच्या विक्रीची सरासरी किंमत प्रति क्विंटल ९८७ रुपये होती.

१०.१२.२ कापूस एकाधिकार खरेदी योजनेचे २००२-०३ च्या हंगामामधील अंतिम लेखे पूर्ण झाले असून हमी किंमतीनुसार ७४.५६ कोटी आधिक्य निर्माण झाले आहे.

उत्पादक उपक्रम

१०.१३ कृषि उत्पादनावर प्रक्रिया करण्यास ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत महत्त्वपूर्ण स्थान आहे. सहकारी तत्त्वावर कृषि मालावर केलेल्या प्रक्रियेमुळे शेतकऱ्यांना चांगला मोबदला मिळतो व ग्रामीण कृषि उद्योगामध्ये शोषणरहित औद्योगिक वातावरण निर्माण होण्यास मदत होते.

१०.१३.१ उत्पादक उपक्रमांत गुंतलेल्या सहकारी संस्थांची संख्या ३१ मार्च, २००४ रोजी ४०,८८५ आणि त्यांची सभासद संख्या ८८.०२ लाख व खेळते भांडवल २६,१२१ कोटी रुपये होते. त्यापैकी ८५४ संस्था स्वतंत्र प्रक्रिया करणाऱ्या होत्या. या ८५४ संस्थांपैकी, ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यात २०२ नोंदणीकृत साखर कारखाने होते व त्यापैकी १२० सहकारी साखर कारखाने २००३-०४ मध्ये कार्यरत होते. २००३-०४ या वर्षात १२० सहकारी व १६ खाजगी साखर कारखान्यांनी एकूण २९१ लाख मे.टन उसाचे गाळप केले आणि ३२ लाख मे.टन साखर उत्पादन केले. हंगामपूर्व अंदाजानुसार २००४-०५ या हंगामात अंदाजे १९२ लाख मे.टन उसाचे गाळप होऊन अंदाजे २१.७५ लाख मे.टन साखर उत्पादन होईल असे अपेक्षित आहे. हा हंगाम १५ मार्च, २००५ पर्यंत बंद होईल. या हंगामातील साखरेचे उत्पादन मागील वर्षापेक्षा खूपच कमी आहे.

१०.१३.२ साखर कारखान्यांशिवाय स्वतंत्ररीत्या प्रक्रिया करणाऱ्या नोंदणीकृत सहकारी संस्थांची संख्या ३१ मार्च २००४ रोजी ६५२ होती. त्यापैकी ५९० सहकारी संस्था उत्पादन करीत होत्या. या संस्थांची एकत्रित सदस्य संख्या ५.२४ लाख होती व भरणा केलेले भागभांडवल ५२ कोटी रुपये होते. त्यामध्ये शासनाचा वाटा १० कोटी रुपये (१९ टक्के) इतका होता. या संस्थांचे एकत्रित खेळते भांडवल २६१ कोटी रुपये इतके होते. या संस्थांची येणे कर्जे ३९ कोटी रुपये इतकी होती.

१०.१३.३ कापूस पिंजणी करणाऱ्या व कापसाच्या गासड्या बांधणाऱ्या २२१ संस्थांनी २००३-०४ मध्ये ४ लाख टन कापसावर प्रक्रिया केली आणि ही राशी आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत १३ टक्क्यांनी कमी होती. ८८ भात गिरण्यांनी १.१५ लाख टन भातावर प्रक्रिया केली आणि ही राशी आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ०.८ टक्क्यांनी अधिक होती.

१०.१३.४ स्वतंत्र उत्पादक उपक्रमांमध्ये गुंतलेल्या सहकारी संस्थांबाबतचा तपशील तक्ता क्रमांक १०.६ मध्ये दिला आहे.

१०.१४ राज्यामध्ये ३१ मार्च, २००३ अखेर एकूण २०१ सहकारी सून गिरण्या होत्या. या सहकारी सून गिरण्यांची सदस्य संख्या ५.५९ लाख इतकी होती. त्यांचे भरणा केलेले भाग भांडवल ७४७ कोटी रुपये होते, त्यापैकी ६३२ कोटी रुपये भाग भांडवल राज्य शासनाचे होते. एकूण भाग भांडवलामध्ये राज्य शासनाचा वाटा ८४.६० टक्के इतका होता. या गिरण्यांचे खेळते भांडवल १,३३८ कोटी रुपये होते. ३१ मार्च, २००३ रोजी सून गिरण्यांचे येणे कर्ज ६४५ कोटी रुपये होते. राज्यातील २०१ सहकारी सून गिरण्यांपैकी फक्त ४३ सून गिरण्या उत्पादन करित होत्या व त्यांच्याकडील चात्यांची संख्या १५ लाख होती. या गिरण्यांनी २००२-०३ या वर्षामध्ये ५९० कोटी रुपये किंमतीच्या सुताचे उत्पादन केले. उर्वरित १५८ सून गिरण्यांपैकी ११ गिरण्या रुपांतरित/नॉंदणी रद्द अवस्थेत होत्या, १७ गिरण्यांनी उत्पादन बंद केले होते, ४१ गिरण्यांची उभारणी सुरु होती तर ८९ गिरण्यांची नॉंदणी नंतर पुढे नोणतीच प्रगती झाली नाही.

१०.१५ सहकारी सूनगिरण्यांच्या उभारणीमागचा मुख्य उद्देश काळाळातील लोकांना रोजगार पुरविणे आणि विणकर सहकारी संस्थांना संपल्या प्रकारचे सून पुरविणे हा होता. परंतु अलिकडच्या काळातील सहकारी सून गिरण्यांच्या अहवालावरून विदारक परिस्थिती दिसून येते. यापैकी बहुतेक सूनगिरण्या आजारी आणि पुनर्जिवित करण्यापलिकडे आहेत. राज्यात २००२-०३ अखेर ६८९ सहकारी हातमाग संस्था व १,०८७ सहकारी यंत्रमाग संस्था होत्या. या संस्थांकडे असलेल्या चालू स्थितीतील हातमागांची संख्या ३२.५ हजार असून त्यांनी २००१-०२ मधील १०५ कोटी रुपये किंमतीच्या तुलनेत २००२-०३ मध्ये ८४.५३

कोटी रुपये किंमतीचे कापड उत्पादित केले. यंत्रमागांची संख्या २९.९ हजार असून त्यांनी आधीच्या वर्षाच्या ३५ कोटी रुपये किंमतीच्या तुलनेत २००२-०३ मध्ये ३६.७८ कोटी रुपये किंमतीचे कापड उत्पादित केले.

१०.१६ राज्यात २००३-०४ मध्ये २६,२५९ प्राथमिक सहकारी दुग्ध संस्था व ७८ दुग्ध संघ होते आणि त्यांची सदस्यसंख्या अनुक्रमे २३.३३ लाख व ३.८७ लाख होती. ह्या दुग्ध संस्था व दुग्ध संघ यांचे खेळते भांडवल अनुक्रमे २४८.१६ कोटी रुपये आणि ७७२.३२ कोटी रुपये होते. २००३-०४ मध्ये दुग्ध संस्थांनी विक्री केलेल्या दूध आणि दुग्धजन्य पदार्थांच्या विक्रीची एकत्रित किंमत १,६८५.०६ कोटी रुपये आणि दुग्धसंघाची ती १,९६६.८९ कोटी रुपये होती. २००२-०३ मध्ये या किंमती अनुक्रमे १,६८९ कोटी रुपये आणि १,५७९ कोटी रुपये होत्या.

१०.१७ राज्यात २००३-०४ मध्ये २,५५९ प्राथमिक मत्स्यव्यवसाय सहकारी संस्था, ३० मत्स्यव्यवसाय संघ आणि २ मत्स्यव्यवसाय महासंघ कार्यरत होते. या सर्व संस्थांची सदस्यसंख्या २.०८ लाख होती. या संस्थांचे खेळते भांडवल ९८.२५ कोटी रुपये होते. त्यांनी मासळी व मासळीपासूनची उत्पादने यांच्या केलेल्या विक्रीची किंमत १२०.८ कोटी रुपये होती. २००२-०३ मध्ये अशा विक्रीची किंमत ११२ कोटी रुपये होती.

समाजसेवी आणि इतर सहकारी संस्था

१०.१८ राज्यात मार्च, २००४ अखेर शिखर ग्राहक महासंघाव्यतिरिक्त १४७ घाऊक ग्राहक भांडारे व ३,३०२ प्राथमिक ग्राहक भांडारे होती. शिखर महासंघाची २००३-०४ मधील एकूण विक्री ३७ कोटी रुपये होती. तर २००२-०३ मध्ये ३६ कोटी रुपये होती. शिखर ग्राहक भांडाराचा तोटा मार्च, २००४ अखेर पूर्वीच्या वर्षाइतकाच रु. ५२ लाख होता. या ग्राहक भांडारांनी मागील वर्षाच्या तुलनेत अधिक मालाची विक्री केली

तक्ता क्रमांक १०.६

स्वतंत्ररित्या कृषि मालावर प्रक्रिया करणाऱ्या सहकारी संस्था

| संस्थेचा प्रकार | एकूण संस्थांची संख्या | | उत्पादन चालू असणाऱ्या संस्थांची संख्या | | प्रक्रिया केलेला माल † (हजार टनांत) | |
|---|-----------------------|---------|--|----------|-------------------------------------|----------|
| | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४* | २००२-०३ | २००३-०४* |
| साखर कारखाने | २०१ | २०२ | १४४ | १२० | ५०,५५७ | २७,१९७ |
| कापूस पिंजणी करणाऱ्या व कापसाच्या गासड्या बांधणाऱ्या संस्था | २७० | २४८ | २५९ | २२१ | ४६१ | ४०० |
| भात गिरण्या | ८९ | ८९ | ८८ | ८८ | ११४ | ११५ |
| तेल गिरण्या | १४ | १३ | १२ | १२ | ३० | ३२ |
| इतर | २८४ | ३०२ | २६५ | २६९ | २२ | २३ |
| एकूण | ८५८ | ८५४ | ७६८ | ७१० | ... | ... |

प्रक्रिया केलेल्या मालाचे स्वरूप, ऊस, कच्चा कापूस, भात, तेलबिया अस्थायी

असली तरी त्यांना मागिल वर्षाच्या तुलनेत या वर्षी झालेला तोटा अधिक होता. सर्व ग्राहक भांडारांची २००३-०४ मधील एकूण विक्री ९५४ कोटी रुपये होती, तर मागिल वर्षी ती ९३५ कोटी रुपये होती.

१०.१९ मार्च, २००४ अखेर राज्यात ६१,५०६ सहकारी गृहनिर्माण संस्था होत्या आणि त्यांची सदस्य संख्या १६.७८ लाख होती. या संस्थांमधील रोजगार मार्च, २००३ अखेरीस ३८,५१० इतका होता. घरबांधणीसाठी महाराष्ट्र राज्य सहकारी गृहनिर्माण वित्तपुरवठा महामंडळाकडून कर्ज मंजूर करण्यात आलेल्या सदनिकांची एकूण संख्या ३१ मार्च, २००४ रोजी २.१९ लाख होती. ३१ डिसेंबर, २००४ पर्यंत त्यापैकी बहुतांश सदनिकांचे बांधकाम पूर्ण झाले होते.

१०.२० राज्यात २००३-०४ च्या अखेरीस कंत्राटी पद्धतीवर काम घेणाऱ्या मजुरांच्या सहकारी संस्थांची संख्या १०,०५६ होती व त्यांच्या सभासदांची संख्या ७.०३ लाख होती. २००३-०४ ह्या वर्षामध्ये ह्या सहकारी संस्थांनी ५३७ कोटी रुपयांची कामे केली तर आधीच्या वर्षामध्ये ५६२ कोटी रुपयांची कामे करण्यात आली होती. या संस्थांमध्ये मार्च, २००३ अखेरीस ८८,१०७ इतका रोजगार निर्माण झाला होता.

१०.२१ मार्च, २००४ अखेर राज्यामध्ये २६५ वन श्रमिक संस्था होत्या व त्यांच्या सभासदांची संख्या ६८ हजार होती. २००३-०४ मध्ये ह्या संस्थांनी लाकूड व इतर वन उत्पादनांची केलेली विक्री ५८ कोटी रुपये इतकी होती.

११.१ पायाभूत सुविधांसाठी नियोजनपूर्वक केलेली गुंतवणूक केवळ आर्थिक विकासाला चालना देते असे नाही, तर ती दिर्घकालीन टिकाऊ आर्थिक वृद्धीची हमी देते. पायाभूत सुविधांमध्ये ढोबळमनाने, ऊर्जा, रेल्वे, रस्ते, हवाई व जल याद्वारे वाहतूक, पाटबंधारे, दळणवळण आणि नागरी पायाभूत सुविधा यांचा समावेश होतो.

११.२ आर्थिक विकासाच्या वृद्धीसाठी पायाभूत सुविधांच्या वृद्धीमध्ये तितक्याच क्षमतेने वाढ होणे आवश्यक आहे. विकसनशील देशांमध्ये सर्वसाधारणतः ऊर्जा मागणीतील वाढ ही देशांतर्गत स्थूल राष्ट्रीय उत्पन्नातील वाढीपेक्षा जास्त असते. यास्तव देशांतर्गत स्थूल राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या ७ टक्के वृद्धीदराने सहाय्यभूत ठरण्याकरीता ऊर्जा पुरवण्याचा वार्षिक दर १० टक्के पेक्षा अधिक असणे आवश्यक आहे. आतापर्यंत ऊर्जा क्षेत्रासाठी आवश्यक असलेल्या निधीची तरतूद मुख्यत्वे अर्थसंकल्पीय तरतूद आणि बाह्य कर्ज या द्वारे करण्यात येत असे. परंतु अर्थसंकल्पीय तरतूदीच्या मर्यादा विचारात घेता आता ऊर्जा क्षेत्रातील खाजगी गुंतवणूकीचे शासनास महत्त्व पटले आहे.

११.३ उच्च दर्जाच्या पायाभूत सुविधा तत्परतेने व किमान दरात ग्राहकांना व संस्थाना पुरविणे हे पायाभूत सुविधांच्या धोरणाचे अंतिम ध्येय आहे. आंतरराष्ट्रीय माणकांच्या तुलनेत ग्राहकास पुरविलेल्या पायाभूत सेवेची गुणवत्ता, प्रमाण व आकारलेली किंमत या तीन बाबींवर पायाभूत सुविधांच्या धोरणाचे यशापयश मोजले जाते. जनेतेचे कल्याण व विकास या करीता पायाभूत सेवा सुविधा ग्राहकांविमुख ठेवून आणि त्यास योग्य नियामावलीची जोड देऊन पायाभूत सुविधांच्या धोरणामध्ये सुधारणा करणे आवश्यक आहे.

ऊर्जा

वीज

११.४ वीज क्षेत्राची वाढ गतीशील करणे आणि सर्व क्षेत्रांना वीज पुरवठा करणे ही राष्ट्रीय वीज धोरणाची उद्दीष्ट आहे. यामध्ये उपलब्ध ऊर्जा संसाधनाचा कमाल वापर, विविध स्रोतातील वीज निर्मितीचे अर्थशास्त्र, उपलब्ध तंत्रज्ञानाचा वीज निर्मितीसाठी वापर आणि ऊर्जा सुरक्षितता यासह ग्राहक आणि इतर भागधारकांच्या हितांचे रक्षण यांचा अंतर्भाव होतो. २०१२ पर्यंत विजेचे दरडोई उपलब्धता १,००० युनिटच्या वर वाढविणे या धोरणा अंतर्गत अपेक्षित आहे. स्पॅर्धला चालना देऊन ग्राहकांचे हित सांभाळणे व सर्वाना वीज पुरवठा करणे यावर ऊर्जा कायदा २००३ मध्ये भर दिला आहे.

११.५ राज्य वीज नियामक मंडळाची स्थापना, वीज दर आकारण्या बाबतचे नियम, वीज चोरी प्रतिबंधक कायदा यासह राज्य शासनाने केंद्र शासना बरोबर सांमजस्य करार केला असून या कायद्याची अंमलबजावणी राज्यात या पूर्वीच सुरु केली आहे. राज्यात विद्युत निर्मिती व वितरणामध्ये महाराष्ट्र विद्युत

मंडळ सर्वात महत्वाची भूमिका बजावते. महाराष्ट्र राज्य हे देशातील औद्योगिकरण व शहरीकरण झालेले सर्वात मोठे राज्य असल्याने राज्यात विजेची मागणी जास्त आहे व महाराष्ट्र विद्युत मंडळाची निर्मिती क्षमता मागणीची पूर्तता करण्यास अपुरी आहे व राज्यातील विजेची अतिरिक्त मागणी काही प्रमाणात केंद्र शासनाच्या वीज प्रकल्पाद्वारे भागविली जाते. या शिवाय, टाटा इलेक्ट्रीक कंपनी, रिलायन्स एनर्जी व मेडा ही राष्ट्रीय ऊर्जा पारेषण जाळ्यास जोडले आहे.

स्थापित क्षमता

११.६ महाराष्ट्रातील विद्युत निर्मितीची स्थापित क्षमता ३१ मार्च, २००४ रोजी १२,९०३ मेगॅवॅट इतकी होती, ती आधीच्या वर्षाच्या स्थापित क्षमतेपेक्षा ६० मेगॅवॅटने कमी होती. राज्याच्या एकूण १२,९०३ मेगॅवॅट इतक्या स्थापित क्षमतेत मराविमंचा वाटा ७५ टक्के, टाटाचा १४ टक्के, रिलायन्स एनर्जीचा ४ टक्के, दाभोळ वीज प्रकल्पाचा (डीपीसी) ६ टक्के आणि तारापूरचा १ टक्का असा होता. परंतु डीपीसीची स्थापित क्षमता मे, २००१ पासून वापरात नाही, परंतु शासन तो प्रकल्प पुनःश्च चालू करण्याच्या प्रयत्नात आहे.

११.६.१ वरील स्थापित क्षमतेव्यतिरिक्त, राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ आणि अणुशक्ती महामंडळ यांच्या स्थापित क्षमतेत राज्याचा वाटा २,१८९ मेगॅवॅट इतका आहे. अशा प्रकारे ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यासाठी उपलब्ध असलेली विद्युत निर्मितीची एकूण स्थापित क्षमता १५,०९२ मेगॅवॅट होती. उरण नैसर्गिक वायु प्रकल्पातील एक युनिट जुलै, २००३ मध्ये बंद केल्यामुळे, २००३ च्या तुलनेत २००४ मध्ये नैसर्गिक वायुजन्य विद्युत निर्मितीच्या स्थापित क्षमतेत ६० मेगॅवॅट इतकी घट झाली. विद्युत निर्मितीच्या प्रकारानुसार राज्यासाठी उपलब्ध असलेल्या स्थापित क्षमतेचा तपशील तक्ता क्रमांक ११.१ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ११.१

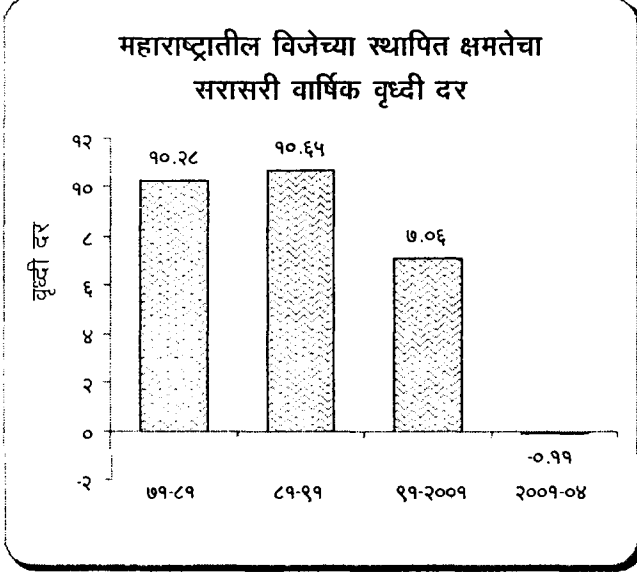
स्थापित क्षमता

(मेगॅवॅट)

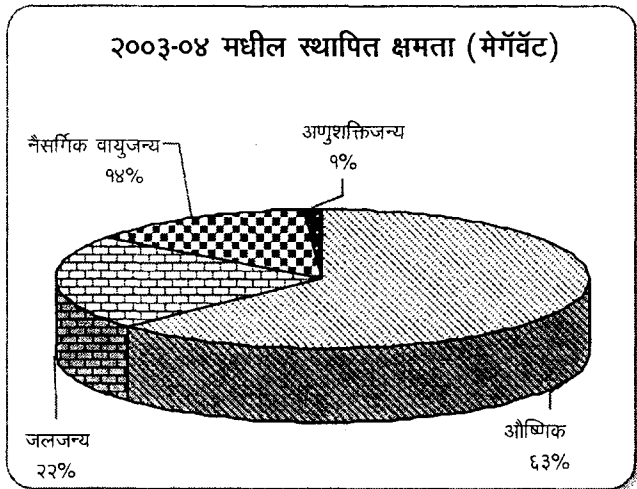
| निर्मितीचा प्रकार | ३१ मार्च रोजी | |
|------------------------------|---------------|---------------|
| | २००३ | २००४ |
| (अ) राज्यातील | | |
| औष्णिक | ८,०७५ | ८,०७५ |
| जलजन्य | २,८७८ | २,८७८ |
| नैसर्गिक वायुजन्य | १,८२० | १,७६० |
| अणुशक्तिजन्य (राज्याचा वाटा) | १९० | १९० |
| एकूण (अ) | १२,९६३ | १२,९०३ |
| (ब) राज्याचा वाटा * | २,१८९ | २,१८९ |
| एकूण (अ + ब) | १५,१५२ | १५,०९२ |

* राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ/अणुशक्ती महामंडळातील वाटा

११.६.२ राज्यातील विद्युत निर्मितीच्या स्थापित क्षमतेत १९६०-६१ ते २००३-०४ या कालावधीत ७.४ टक्के वार्षिक चक्रवाढ दराने वाढ झाली. १९६१-७१ या दशकात राज्याच्या स्थापित क्षमतेत दरवर्षी १०.६ टक्के चक्रवाढ दराने वाढ झाली होती. तथापि, १९९४-२००४ या कालावधीत राज्याच्या स्थापित क्षमतेत ५.१ टक्के इतक्या कमी वार्षिक चक्रवाढ दराने वाढ झाली. ती १९६१-७१ या दशकातील वाढीच्या दराच्या जवळजवळ निम्म्या होती. राज्यात विजेच्या मागणीत मोठ्या प्रमाणावर वाढ झाली आहे. त्या तुलनेत अलीकडील कालावधीत राज्याच्या स्थापित क्षमतेत वाढ झाली नाही ही गंभीर बाब असून हे एक चिंतेचे कारण आहे.



११.६.३ ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यातील एकूण १२,९०३ मेगॅवॅट स्थापित क्षमतेत औष्णिक विद्युत निर्मितीचा वाटा ६२.६ टक्के होता. त्या खालोखाल, जलजन्य २२.३ टक्के, नैसर्गिक वायुजन्य १३.६ टक्के आणि अणुशक्तिजन्यचा वाटा (महाराष्ट्र राज्याकरीता) १.५ टक्के असा होता. राज्यातील सर्व विद्युत निर्मिती संयंत्रांची दिनांक ३१ मार्च, २००४ रोजीची अवनिर्धारित क्षमता १२,८१५ मेगॅवॅट होती. २००४-०५ या वर्षात नोव्हेंबर, २००४ अखेर राज्याच्या विद्युत निर्मितीच्या स्थापित क्षमतेत वाढ झालेली नाही.



विद्युत निर्मिती

११.७ २००३-०४ मध्ये एकूण विद्युत निर्मिती (अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतांमधून प्राप्त वीज निर्मिती धरून) ६६,९९१ दशलक्ष किलोवॅट तास होती व ती आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ३.४७ टक्क्यांनी जास्त होती राज्यातील एकूण विद्युत निर्मितीत औष्णिक विद्युत निर्मितीचा वाटा ८०.५ टक्के होता. एकूण विद्युत निर्मितीत टाटा पॉवर व रिलायन्स एनर्जीचा वाटा अनुक्रमे १५.५ टक्के व ६ टक्के होता. २००२-०३ व २००३-०४ या वर्षातील विद्युत निर्मितीचा तपशील तक्ता क्रमांक ११.२ मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्रमांक ११.२
राज्यातील विद्युत निर्मिती

| (दशलक्ष किलोवॅट तास) | | | |
|------------------------|---------------|---------------|---------------|
| प्रकार | २००२-०३ | २००३-०४ | शेकडा बदल |
| औष्णिक | ५२,२०४ | ५४,०७१ | (+)३.६ |
| जलजन्य | ५,५३४ | ५,४२५ | (-)२.० |
| नैसर्गिक वायुजन्य | ५,०४३ | ५,४३२ | (+)७.२ |
| अणुशक्तिजन्य * | १,१५८ | १,१३१ | (-)२.३ |
| इतर | ८०१ | ९३२ | (+)१६.४ |
| एकूण | ६४,७४० | ६६,९९१ | (+)३.५ |

* राज्याचा वाटा

११.७.१ विजेची वाढती मागणी पूर्ण करण्यासाठी मराविमने वेगवेगळ्या उपाय योजले आहेत.

अ) राज्याच्या विद्युत निर्मिती क्षमतेत वाढ करण्याच्या हेतूने परत औष्णिक प्रकल्प (२५० मेगॅवॅट), पारस औष्णिक केंद्र (२५० मेगॅवॅट) आणि उरण गॅस टर्बाइन प्रकल्प (१०४० मेगॅवॅट) यांचा विस्तार करण्यात येत आहे. परळी व पारस येथील औष्णिक वीज प्रकल्पांची कामे सुरु झाली असून ते २००६-०७ अखेर कार्यान्वित होणे अपेक्षित आहे.

ब) दहाव्या पंचवार्षिक योजना काळात १,०२० मेगॅवॅट विजेची क्षमता वाढविण्याचे योजले आहे. त्यामध्ये १) घाटघर (२५० मेगॅवॅट), २) शासनालघूजल विद्युत प्रकल्प (९० मेगॅवॅट) ३) सरदार सरोवर प्रकल्प (३९१ मेगॅवॅट) व ४) अपारंपरिक उर्जा प्रकल्प (२८९ मेगॅवॅट) यांचा समावेश आहे.

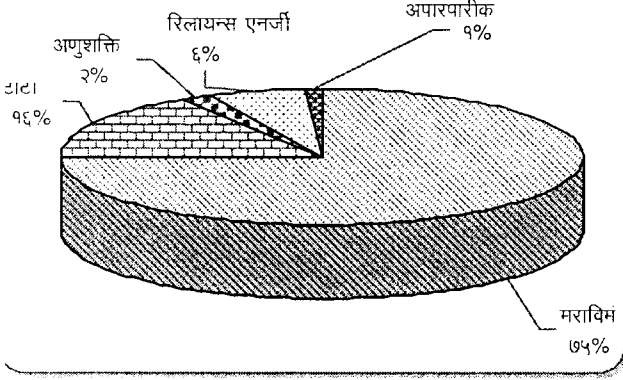
क) मराविमने केंद्रीय औष्णिक विद्युत प्राधिकरणाच्या १) विद्याचल स्टेज (३२६ मेगॅवॅट), २) सिपात स्टेज-२ (३१९ मेगॅवॅट) ३) कहलगांव स्टेज (१०० मेगॅवॅट) प्रकल्पातून वीज खरेदी करण्यासाठी वीज खरेदी करार केले आहे.

ड) केंद्रीय न्युक्लीअर पॉवर कॉर्पोरेशनकडे मराविमने तारापूर न्युक्लीअर पॉवर प्रोजेक्ट युनिट ३ व ४ मधून ४६८ मेगॅवॅट विजेची मागणी नोंदविली आहे.

इ) औष्णिक विद्युत केंद्राचे नुतनीकरण व आधुनिकीकरण करून त्यात १९ मेगॅवॅट व उरण प्रकल्पाला वायु पुरवठा वाढवून घेऊन ३०० मेगॅवॅट क्षमता वाढविण्याची योजना मंडळाने आखली आहे.

११.७.२ २००४-०५ या वर्षात डिसेंबर अखेर, राज्यात ५०,६९

२००३-०४ मधील विद्युत निर्मिती (दशलक्ष किलोवॅट तास)



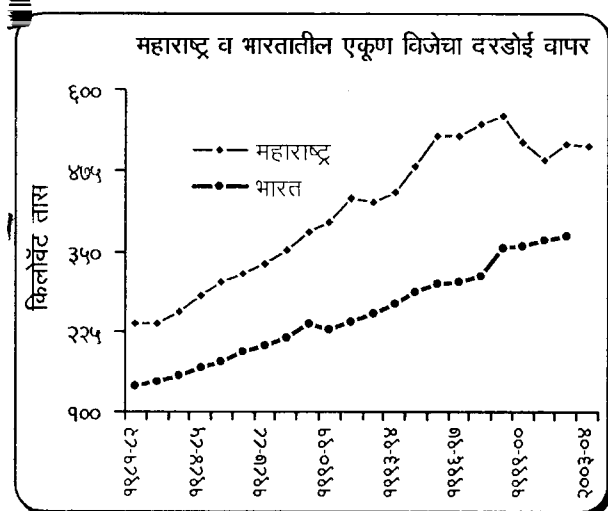
दशलक्ष किलोवॅट तास विद्युत निर्मिती झाली. ती २००३-०४ वर्षातील तिसऱ्या कालावधीतील वीज निर्मितीपेक्षा ३.५ टक्क्यांनी अधिक होती.

विजेची खरेदी

११.७.३ याशिवाय, २००३-०४ मध्ये राज्याला राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ व अणुशक्ती महामंडळ (काक्रापार अणुजन्य वीज) यांच्याकडून ६,९९१ दशलक्ष किलोवॅट तास व भंडारदरा जलजन्य विद्युत प्रकल्पाकडून बीएचईपी) ४०.२२ दशलक्ष किलोवॅट तास इतकी वीज मिळाली. केंद्रीय पारेषण जाळ्यातून घेतलेली वीज २.०० रुपये प्रति युनिट दराने तर बीएचईपी कडून घेतलेली वीज २.८० रुपये प्रति युनिट या दराने पडली. राज्यास २००४-०५ मध्ये डिसेंबर, अखेर राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ व अणुशक्ती महामंडळ यांचेकडून १२,९०४ दशलक्ष किलोवॅट तास व बीएचईपीकडून २४ दशलक्ष किलोवॅट तास इतकी वीज मिळाली.

विजेचा वापर

११.८ इतर राज्यांना केलेली वीज विक्री वागळून, २००३-०४ मध्ये राज्यात विजेचा वापर ५२,२३३ दशलक्ष किलोवॅट तास होता. तो २००२-०३ मधील एकूण ४९,९४५ दशलक्ष किलोवॅट तास वीज वापराच्या तुलनेत ४.६ टक्क्यांनी अधिक होता. राज्यातील



विजेचा वापर औद्योगिक क्षेत्रात सर्वात मोठ्या प्रमाणात (३७.९ टक्के), त्या खालोखाल घरगुती (२४.२ टक्के) व कृषि (२०.२ टक्के) या क्षेत्रात झाल्याचे दिसून येते. राज्यातील एकूण वीज वापरामध्ये या तीन क्षेत्रांचा एकत्रित वाटा ८२.३ टक्के होता. महाराष्ट्रातील विजेच्या वापराची माहिती तक्ता क्रमांक ११.३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.३ राज्यातील विजेचा वापर

(दशलक्ष किलोवॅट तास)

| प्रकार | २००२-०३ | २००३-०४ | शेकडा बदल |
|----------------------|---------------|---------------|------------|
| घरगुती | १२,२६७ | १२,६१७ | २.९ |
| वाणिज्यिक | ४,६६९ | ५,०१५ | ७.४ |
| औद्योगिक | १८,१५६ | १९,८०६ | ९.१ |
| कृषि | १०,६४२ | १०,५७२ | (-)०.७ |
| सार्वजनिक दिवाबत्ती | ६६६ | ६३२ | (-)५.१ |
| रेल्वे | १,७४८ | १,७४९ | ०.१ |
| सार्वजनिक पाणीपुरवठा | १,४१६ | १,४९३ | ५.५ |
| संकोर्ण | ३८१ | ३४९ | (-)८.३ |
| एकूण | ४९,९४५ | ५२,२३३ | ४.६ |

टीप : तक्त्यात दर्शविलेल्या विजेच्या वापरात इतर राज्यांना केलेल्या वीज विक्रीचा समावेश नाही.

११.८.१ २००३-०४ मध्ये विजेच्या वापरात गेल्या वर्षीच्या तुलनेत ४.६ टक्क्यांनी वाढ झाली आहे. मागच्या दशकात राज्यात विजेच्या वापरात २.३ टक्के वार्षिक चक्रवाढ दराने वाढ झाली.

११.८.२ २००३-०४ या वर्षात महाराष्ट्रातील विजेचा दरडोई एकूण, औद्योगिक आणि घरगुती प्रकारातील वापर अनुक्रमे ५११.६ किलोवॅट तास, १९४ किलोवॅट तास व १२३.६ किलोवॅट तास होता. अगदी अलिकडील उपलब्ध आकडेवारीनुसार, २००२-०३ या वर्षात अखिल भारतातील विजेचा दरडोई एकूण, औद्योगिक आणि घरगुती वापर अनुक्रमे ३७३.० किलोवॅट तास, १०८.९६ किलोवॅट तास आणि ७९.० किलोवॅट तास इतका होता.

वीज विक्री

११.८.३ २००३-०४ या वर्षात महाराष्ट्राने इतर राज्यांना ८.६४ दशलक्ष किलोवॅट तास इतकी वीज विकली, तर २००२-०३ या वर्षात १६.८ दशलक्ष किलोवॅट तास इतकी वीज विकली होती.

महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळ

११.९ राज्यातील विजेची वाढती गरज विचारात घेऊन वीज क्षेत्रातील पायाभूत सुविधा विकसित करण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने १९६० मध्ये महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची स्थापना केली. मंडळाने हे काम पूर्ण करण्याचे गेल्या ४३ वर्षात प्रयत्न केले आहेत. विद्युत निर्मितीच्या १३५ मेगॅवॅट स्थापित क्षमतेपासून मंडळाने सुरुवात करून मराविम आज इतर राज्य विद्युत मंडळांच्या तुलनेत उच्चतम स्थापित क्षमता आणि सर्वात मोठे पारेषण व वितरण जाळे उभारून ऊर्जा विकासाच्या बाबतीत देशात अग्रस्थानी आहे.

मराविमंडळाच्या वीज जोडणीतील प्रगती

| माचे अखेर | विद्युतीकरण केलेली शहरे व खेडी | वीजपुरवठा केलेल्या कृषी पंपाची संख्या | वीजपुरवठा केलेल्या ग्राहकांची संख्या |
|-----------|--------------------------------|---------------------------------------|--------------------------------------|
| १९६२ | १,१९१ | ८,४४५ | १,४१,०४३ |
| १९७५ | १९,०८५ | ३,८०,८४४ | १८,३५,२४५ |
| १९९० | ३९,४१३ | १४,७४,५३७ | ७७,०३,७०६ |
| २००० | ३९,४१३ | २२,२३,४१४ | १,२९,८२,७७९ |
| २००४ | ४०,६८७ | २२,७४,१४६ | १,३५,३२,३९८ |

११.९.१. राज्यात ३१ मार्च, २००४ रोजी असलेल्या एकूण स्थापित क्षमतेत (१२,९०३ मेगॅवॅट) मंडळाचा वाटा ७५ टक्के इतका होता. २००३-०४ मध्ये मंडळाने ५०,२७६ दशलक्ष किलोवॅट तास इतकी वीज निर्मिती केली व ती राज्याच्या एकूण वीज निर्मितीच्या सुमारे ७५ टक्के इतकी होती.

११.९.२ मराविमंने २००३-०४ मध्ये वीज वापराच्या प्रकारानुसार विकलेल्या विजेचा शेकडा हिस्सा व त्यापासून मिळालेल्या महसुली जमेचा शेकडा हिस्सा तक्ता क्रमांक ११.४ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक ११.४

२००३-०४ मधील मराविमंन्च्या विजेचा वापर व महसुली जमा

| प्रकार | शेकडा हिस्सा | |
|----------------------|--------------------------------|--------------------------|
| | वीज वापर | महसुली जमा |
| घरगुती | १८.७ | १५.९ |
| वाणिज्यिक | ४.४ | ६.६ |
| औद्योगिक | ४२.३ | ४८.० |
| रेल्वे | २.६ | ३.१ |
| सार्वजनिक दिवाबत्ती | १.३ | १.१ |
| कृषि | २४.८ | १०.७ |
| सार्वजनिक पाणीपुरवठा | ३.६ | २.८ |
| संकीर्ण | २.३ | ११.८ |
| एकूण * | १००.० | १००.० |
| | (४०,७३६ द.ल. कि.वॅ.ता.) | (रु. १३,३३२ कोटी) |

* आंतरराज्यीय वीज विक्री वगळून

११.९.३ मराविमंने २००३-०४ मध्ये एकूण वितरित केलेल्या विजेचा वापरपैकी औद्योगिक क्षेत्राचा वाटा ४२.३ टक्के असून त्याचा वीज विक्रीपासून मिळालेल्या एकूण महसुली जमेमध्ये ४८ टक्के इतका वाटा आहे. कृषि क्षेत्राचा विजेचा वापरातील वाटा जरी २४.८ टक्के असला तरी मराविमंन्च्या एकूण महसुली जमेमध्ये त्या क्षेत्राचा वाटा केवळ १०.७ टक्के इतका आहे. २००३-०४ मध्ये एकूण वापरपैकी फक्त ७६ टक्के युनिटस् मीटरद्वारे मोजण्यात आली. वीज मीटर नसलेले ग्राहक बहुतांशी कृषी, यंत्रमाग व काही सार्वजनिक पाणी पुरवठा क्षेत्रातील होते. महाराष्ट्र वीज नियामक आयोगाच्या दिनांक १० मार्च, २००४ च्या आदेशानुसार प्रति युनिट वीज पुरविण्याचा सरासरी खर्च २.८३ रु. येतो. तथापि सर्वच ग्राहकांना समान दराने वीज बिलाची आकारणी केली जात

नाही. विविध प्रकारच्या ग्राहकांना आकारले जाणारे प्रति युनिट शुल्क आणि प्रति युनिट सरासरी दराचे प्रति युनिट वीज पुरवठ्याच्या खर्चाशी प्रमाण याचा तपशील तक्ता क्र. ११.५ मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्रमांक. ११.५

मराविमंडळाने आकारलेले प्रति युनिट सरासरी शुल्क व त्याचे प्रति युनिट पुरवठा खर्चाशी प्रमाण (१० मार्च, २००४)

| ग्राहकाचा प्रकार | आकारलेले सरासरी शुल्क (रु.प्रति युनिट) | आकारलेल्या सरासरी शुल्काचे प्रति युनिट पुरवठ्याच्या खर्चाशी प्रमाण (%) |
|-------------------------------|--|--|
| घरगुती | २.७९ | ९९ |
| अनिवासी | ३.९४ | १३८ |
| सर्वसाधारण प्रेरक शक्ती | २.८३ | १०० |
| सार्वजनिक पाणीपुरवठा | | |
| अ) नागरी | २.८२ | १०० |
| ब) ग्रामीण | १.५४ | ५५ |
| शेती | १.९४ | ६९ |
| सार्वजनिक दिवाबत्ती | २.४१ | ८५ |
| उच्च दाबाने वीज पुरवठा | ३.२० | ११३ |

कमी दाबाने वीज पुरवठा

| | | |
|-------------------------------|-------------|------------|
| घरगुती | २.७९ | ९९ |
| अनिवासी | ३.९४ | १३८ |
| सर्वसाधारण प्रेरक शक्ती | २.८३ | १०० |
| सार्वजनिक पाणीपुरवठा | | |
| अ) नागरी | २.८२ | १०० |
| ब) ग्रामीण | १.५४ | ५५ |
| शेती | १.९४ | ६९ |
| सार्वजनिक दिवाबत्ती | २.४१ | ८५ |
| उच्च दाबाने वीज पुरवठा | ३.२० | ११३ |

टीप : प्रति युनिट वीज पुरवठ्याचा सरासरी खर्च रु.२.८३

संयंत्र उपलब्धता आणि भार अंक

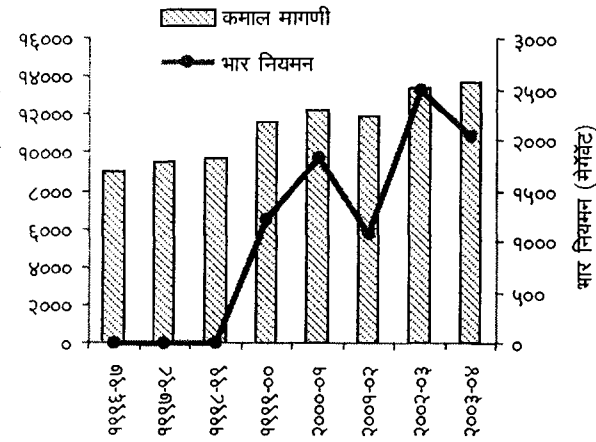
११.९.४ २००३-०४ मध्ये मराविमंन्च्या औष्णिक विद्युत केंद्राचा तसेच टाटा विद्युत कंपनीचा सरासरी संयंत्र उपलब्धता अंक अनुक्रमे ८४.६२ टक्के आणि ९४ टक्के असा होता. तसेच, मराविमंन्चा संयंत्रभार अंक ७५.०७ टक्के आणि टाटा विद्युत कंपनीचा संयंत्रभार अंक ७७.४ टक्के इतका होता. राष्ट्रीय स्तरावर २००२-०३ मध्ये सरासरी संयंत्रभार अंक ७४.९ टक्के होता. संयंत्र उपलब्धता अंक व संयंत्रभार अंक यामधील तफावत मराविमं आणि टाटा विद्युत मंडळाकरिता अनुक्रमे ९.५७ टक्के अंक आणि १६.६ टक्के अंक होती. तत्त्वतः संयंत्र उपलब्धता अंक आणि संयंत्र भार अंक हे जवळपास सारखेच असणे आवश्यक आहे कोळशाचा दर्जा, देखभालीचा दर्जा तसेच संयंत्राचा कार्य कालावधी अशा अनेक घटकांचा संयंत्र उपलब्धता अंकावर परिणाम होतो, तर संयंत्र भार अंक हा भार व्यवस्थापनाच्या दर्जावर अवलंबून असतो.

कमाल मागणी

११.९.५ २००३-०४ मध्ये विजेची १३,६९२ मेगॅवॅटची कमाल मागणी दिनांक २३ मार्च, २००४ रोजी होती व ती २,०४२ मेगॅवॅटचे भार नियम करून भागविण्यात आली. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर मध्ये विजेची कमाल मागणी १४,५०६ मेगॅवॅट होती व ती ३,०३९ मेगॅवॅटचे भार नियमन करून भागविण्यात आली.

११.९.६ २००३-०४ मध्ये मराविमंची वीज निर्मितीची उपलब्ध स्थापित क्षमता १२,९०३ मेगॅवॅट होती. संध्याकाळी विजेची कमाल मागणी या वर्षामध्ये ९,१०० मेगॅवॅट ते १३,७०० मेगॅवॅट दरम्यान होती व ती २,०५० मेगॅवॅटचे भार नियमन करून भागविण्यात आली. सकाळी कमाल मागणी १,४५०-१२४०० मेगॅवॅट दरम्यान होती, ती १,९९० मेगॅवॅट भार नियमन करून भागविण्यात आली.

कमाल मागणी व भार नियमन



पारेषण व वितरणातील हानी

११.९.७ महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळांतर्गत पारेषण आणि वितरणातील हानीचे प्रमाण २००३-०४ मध्ये एकूण विजेच्या ३८.२ टक्के होते. २००१-०२ व २००२-०३ मध्ये पारेषण आणि वितरण हानीचे प्रमाण अनुक्रमे ३९.१७ व ३८.५९ टक्के होते. म.रा.वि.मंडळाने सवोष मीटर्स, मी दाबाच्या परिपत्रांची विभागणी करणे, अत्याधिक भार असलेल्या वाहिन्या फेडर्स वरील भार दुसरीकडे वळविणे, वीज चोरी आणि अनधिकृत वीज पुरवठा यांचा तपास लावणे असे उपाय अंमलात आणले आहेत. पारेषण व वितरणातील हानी कमी करण्याकरिता अंतर्गत सुधारणा कार्यक्रमांमुळे ही हानी २००३-०४ मध्ये ३८.५९ टक्के वरून ३८.२ टक्के अशी खाली आली आहे. जननिमंत्र योजना, डीटीसी मीटरींग आणि ऊर्जा लेखांकन कार्यक्रम हे असे कार्यक्रमही मंडळाकडून राबविले जात आहेत.

११.९.८ मराविमंने स्वतःच्या कामगिरीत सुधारणा करण्याच्या उद्देशाने त्यात सातत्य राखण्याच्या दृष्टीने अनेक जुन्या वीजनिर्मिती प्रकल्पांचे पुनरीकरण, आधुनिकीकरण आणि वाढ करण्यासाठी कार्यक्रम हाती घेतला आहे. पारेषण प्रणाली ही विद्युत केंद्रे आणि भार केंद्रे यामधील दुवा असून विद्युत जाळ्यात ती महत्त्वाची भूमिका बजावते. पारेषण यंत्रणा सुधारित करण्यासाठी २००३-०४ या वर्षात मराविमंने ७०४ परिपथ कि.मी. अत्युच्च वोल्टेज जाळे उभारले असून त्याची एकूण लांबी ३४,०७० परिपथ कि.मी. होती आहे. २००३-०४ या वर्षात, २,५७३ एमव्हीए एवढी परिवर्तन क्षमता अतिरिक्त येऊन एकूण परिवर्तन क्षमता ४८,८६७ एमव्हीए झाली. २००३-०४ या वर्षात ५,८७९ वितरण ट्रान्सफॉर्मर्स स्थापित केले असून त्यांची

एकूण संख्या १,९७,८९९ झाली आहे.

११.९.९ विजेच्या चोऱ्या शोधून काढण्यासाठी व चोऱ्यांना प्रतिबंध करण्यासाठी राज्याच्या निरनिराळ्या भागांत ३२ भरारी पथके कार्यरत आहेत. सदर फिरत्या पथकांना २००३-०४ मध्ये ६,७५१ विद्युत संच नियमबाह्य/ अनधिकृत आढळून आले व त्यापैकी ९२० वीज चोरीची प्रकरणे होती.

११.९.१० महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची २००२-०३ व २००३-०४ या वर्षाची वित्तीय आकडेवारी तक्ता क्रमांक ११.६ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.६

महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची वित्तीय आकडेवारी

(कोटी रुपये)

| बाब | २००२-०३ | २००३-०४ |
|----------------------------|-----------------|-----------------|
| १.अ.महसुली जमा | १३,४४७.१ | १४,४५३.७ |
| ब. राज्य शासनाकडून अनुदान | - | - |
| एकूण जमा (अ+ब) | १३,४४७.१ | १४,४५३.७ |
| २.अ. खर्च | १३,६७३.१ | १४,३५२.२ |
| ब. वजा : भांडवली खर्च | | |
| (१) व्याज आणि वित्तीय सेवा | ९७.८ | ८६.१ |
| (२) इतर खर्च | १५३.१ | १६३.९ |
| एकूण (१+२) | २५०.९ | २५०.० |
| क. इतर खर्च | २४०.१ | ३९८.७ |
| एकूण खर्च (अ-ब+क) | १३,६६२.३ | १४,५०१.० |
| ३.अ. करपूर्व नफा | (-)२१५.२ | (-)४७.३ |
| ब. पूर्वकालीन खर्च | (-)३९.५ | (-)५०१.७ |
| तूट (-) | (-)२५४.७ | (-)५४९.० |

११.९.११ मराविमंला २००३-०४ यावर्षी १४,४५४ कोटी रुपये इतका एकूण महसूल (शासकीय अनुदान वगळून) प्राप्त झाला. हा महसूल आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ७.४८ टक्क्यांनी अधिक होता. २००३-०४ मध्ये मंडळाचा एकूण खर्च १५,००३ कोटी रुपये इतका झाला व तो आधीच्या वर्षापेक्षा ९.४९ टक्क्यांनी अधिक होता. कमी महसुली वसुली व सतत सवलती दरारत वीज पुरवठा केल्यामुळे मराविमंच्या वित्तीय स्थितीवर प्रतिकूल परिणाम झाला आहे.

शेतीकरिता मोफत वीज

११.९.१२ १ जुलै, २००४ पासून राज्य शासन कृषी पंपाना मोफत वीज पुरवित आहे. मोफत विजेपोटी १ जुलै ते ३१ डिसेंबर, २००४ कालावधी मधील आलेली महसुली तूट भरून काढण्यासाठी शासनाने म.रा.वि.मंडळाला ८१० कोटी रुपये व मुळा प्रवरा वीज सहकारी सोसायटी संस्थेला २०.५० कोटी रुपये इतकी रक्कम अदा केली आहे.

ग्रामीण विद्युतीकरण

११.९.१३ लघुउद्योगांच्या वाढीस उत्तेजन देण्यासाठी, तसेच संतुलित व बदलत्या अर्थव्यवस्थेस उत्तेजन देण्यासाठी ग्रामीण विद्युतीकरण तातडीने

करणे गरजेचे होते व त्यासाठी राज्यस्तरावर जोमाने पाठपुरावा करण्यात आला. महाराष्ट्र राज्याने मार्च, १९८९ अखेर १०० टक्के गावांचे विद्युतीकरण साध्य केले आहे. ३१ मार्च, १९९८ अखेर राज्यातील विद्युतीकरण शक्य असलेल्या सर्व हरिजन वस्त्यांचे (३३,७११) विद्युतीकरण पूर्ण करण्यात आले. २००३-०४ मध्ये ११० वाड्यांचे विद्युतीकरण करण्यात आले असून विद्युतीकरण झालेल्या वाड्यांची एकूण संख्या आता ३७,७३७ झाली आहे.

११.९.१४ २००३-०४ मध्ये ७४,०२१ कृषीपंपांना वीज पुरवठा करण्यात आला होता. त्यामुळे राज्यात वीज पुरविण्यात आलेल्या कृषीपंपांची एकूण संख्या मार्च, २००४ अखेर २२.७४ लाख इतकी झाली. ३१ मार्च, २००४ रोजी कृषीपंपासाठी वीज मागणीसंबंधी प्रलंबित अर्जांची संख्या ४.०३ लाख होती, तर ३१ मार्च, २००३ रोजी ती २.०४ लाख इतकी होती.

महाराष्ट्र वीज नियामक आयोग

११.९.१० उर्जा क्षेत्रातील वित्तीय व्यवस्थापनेसाठी व वीजेच्या दरात सुसुत्रिकरण आणण्यासाठी शासनाने वीज नियामक आयोग अधिनियम, १९९८ अंतर्गत महाराष्ट्र वीज नियामक आयोगाची स्थापना केली आहे. या आयोगाकडे प्रामुख्याने तर्कशुद्धरित्या व पारदर्शकतेने वीजदर ठरविण्याचे काम सोपविण्यात आले आहे.

महाराष्ट्रातील ऊर्जा क्षेत्र सुधारणा

११.९.११ महाराष्ट्र शासनाने ऑगस्ट, २००२ मध्ये महाराष्ट्रातील ऊर्जा क्षेत्रातील सुधारणांवर "श्वेत पत्रिका" प्रकाशित केली आहे. विविध क्षेत्रांच्या/ संस्थांच्या सूचना व अभिप्राय विचारात घेऊन "महाराष्ट्र वीज सुधारणा विधेयक" अद्ययावत करण्यात आले आहे. शासनाने यापूर्वीच मराठमंड्या सरकारी कर्जभाराचे समभागात रूपांतर करण्यासाठी पाउल उचलली आहेत. महाराष्ट्र वीज सुधारणा विधेयक मंजूर झालेले आहे. सदर विधेयकामधील ठळक बाबी पुढीलप्रमाणे आहेत. अ) कार्यक्षमता, स्वायत्तता व निर्णयक्षमता वाढविण्याच्या दृष्टीने, मराठमंड्याची पुनर्रचना करणे, ब) वीज चोरी विरुद्ध कायदा, क) कृषि ग्राहकांसाठी विजेचे मीटर बसविणे आणि ड) विजेची तांत्रिक व वाणिज्यिक हानी कमी करणे.

महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाची पुनर्रचना

केंद्र सरकारच्या वीज अधिनियम कायदा २००३ अन्वये शासनास म.रा.वि.मंडळाची पुनर्रचना १० जून, २००५ अखेर करणे आवश्यक आहे. या पुनर्रचनेअंतर्गत म.रा.वि.मंड्याची विभागणी चार संस्थामध्ये करण्याचे शासनाने प्रस्तावित केले आहे. त्यामध्ये १) व्यवस्थापन २) निर्मिती ३) वहन व ४) वितरण अशा चार संस्थांचा समावेश आहे.

विद्युत निर्मितीचे खाजगीकरण

११.९.२ पायाभूत सुविधांच्या विकासाच्या संदर्भात भारत सरकारने घेतलेल्या धोरणात्मक निर्णयास सुसंगत राहून राज्य शासनाने वीज निर्मिती

क्षेत्रामध्ये खाजगी क्षेत्राला सहभागी करून घेण्यासाठी सक्रिय पुढाकार घेतला आहे.

बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मिती

११.९.३ औद्योगिक घटकाने प्रामुख्याने स्वतःच्या वापरासाठी वीज निर्मितीकरिता उभारलेल्या विद्युत संचास बंदिस्त विद्युत निर्मिती संच असे म्हणतात. या योजने अंतर्गत उद्योगाने उभारलेल्या बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मिती घटकाच्या स्वतःच्या वीज वापरासाठी मर्यादा पातळी विहित करण्यात आली असून अतिरिक्त वीज विकण्याची अनुमती त्यांना देण्यात आली आहे. या धोरणाला अनुसरून डिसेंबर, २००४ अखेर मंडळाकडे एकूण १,७५७ मेगॅवॅट क्षमतेच्या १६३ प्रकल्पांना पारंपरिक ऊर्जाव्यवस्थापन आधारित बंदिस्त (कॅप्टिव्ह) विद्युत निर्मितीस अनुमती देऊन ना-हरकत प्रमाणपत्रे दिली आहेत. आतापर्यंत अशा प्रकल्पांपैकी ७९ प्रकल्पांनी ८९ मेगॅवॅट विद्युत निर्मिती चालू केली आहे.

अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत

११.९.४ गेल्या दोन दशकात पुनर्वापरायोग्य ऊर्जा क्षेत्रात विकास परिक्षण व तन्हेत-हेच्या ऊर्जा तंत्रज्ञानाचा विकास, प्रायोगिक वापर व प्रसायांच्याशी संबंधित उपक्रमांचा मोठ्या प्रमाणात पाठपुरावा करण्यात आला आहे. भारत सरकारच्या अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालयातर्फे प्रकल्प योजना यांच्या स्वरूपानुसार अर्थसहाय्य दिले जाते. महाराष्ट्रात अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत विकासांतर्गत कार्यक्रम महाराष्ट्र ऊर्जा विकास अभिकरण (मेडा) या संस्थेतर्फे राबविण्यात येतात.

११.९.४.१ मेडाने त्यांच्या गेल्या दहा वर्षात पुनर्वापरायोग्य ऊर्जा क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात काम केले आहे आणि ग्रामीण भागावर व स्वयंपूर्ण उपकरणे तयार करण्यावर लक्ष केंद्रित केले आहे. तसेच राज्यातील ३८ औद्योगिक कारखान्यांत ऊर्जा संवर्धनाचे काम देखील घेण्यात आले आहे.

११.९.४.२ २००३-०४ मध्ये खाजगी क्षेत्राच्या उत्कृष्ट सहभागामु, महाराष्ट्रातील अकरा वेगवेगळ्या ठिकाणी सुमारे ६९५ मेगॅवॅट स्थापित क्षमतेच्या पवन ऊर्जा निर्मिती प्रकल्पांची स्थापना सुलभपणे करणे मेडा शक्य झाले आहे. गेल्या दोन वर्षात मेडाने इतर पुनर्निर्मितीक्षम ऊर्जास्रोत असलेले विद्युतनिर्मितीचे प्रकल्प उभारण्यासही सुरुवात केली आहे. ऊसाच्या चिपाडापासून सहनिर्मिती, भाताच्या तुसासारख्या शेतीतील इतर टाकाऊ पदार्थांवर आधारित ऊर्जा प्रकल्प, औद्योगिक व शहरी कचऱ्यापासून ऊर्जा निर्मिती इत्यादी अशी इतर क्षेत्रे आहेत ज्यामध्ये लक्षणीय प्रगती साधण्यात आली आहे.

११.९.४.३ पुनर्निर्मितीक्षम ऊर्जा स्रोतांपासून वीजनिर्मिती करण्यात महाराष्ट्र राज्य देशात दुसऱ्या क्रमांकावर असून राज्यात जवळपास ६५ मेगॅवॅट स्थापित क्षमतेचे (लघु जल विद्युत प्रकल्पांसहित) प्रकल्प आहेत व ही क्षमता राज्याच्या विद्युत निर्मितीच्या एकूण स्थापित क्षमतेच्या ४ टक्के एवढी आहे.

सहकारी साखर कारखान्यांकडून विजेची सहनिर्मिती

११.९.४.४ महाराष्ट्रातील १० सहकारी साखर कारखाने, (त्यापैकी

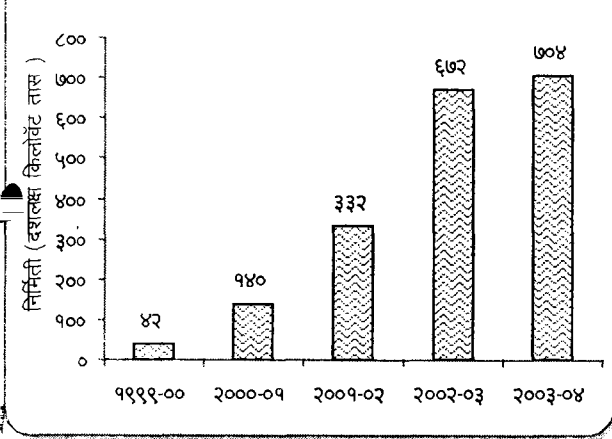
नऊ कारखाने उसाच्या चिपाडावर, व एक जैविक वायूवर आधारित) व एक कागद कारखान्याने विजेची सहनिर्मिती सुरू केली असून महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाच्या पारेषण जाळ्यात डिसेंबर, २००४ अखेर २०२.७ दशलक्ष किलोवॅट तास वीज पुरविली आहे. महाराष्ट्रात १३५ साखर कारखाने असून त्यांची विद्युत निर्मितीची क्षमता सुमारे १,००० मेगॅवॅट आहे. सध्या ऊसाच्या चिपाडावर आधारित सतरा व दोन जैविक वायूवर आधारित अनुक्रमे २४८.५ मेगॅवॅट व १४.६ मेगॅवॅट क्षमतेच्या प्रकल्पांची कामे चालू आहे.

११.१४.५ महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळाने एकूण ८५.८६ मेगॅवॅट क्षमतेच्या ११ साखर/ कागद कारखान्यांकडून वीज खरेदी करण्यासाठी करार केले आहेत.

पवन ऊर्जा

११.१४.६ महाराष्ट्राची पवन ऊर्जेची क्षमता ३,६५० मेगॅवॅट इतकी आहे. वार्षिक सरासरी पवन ऊर्जा घनता २०० वॅट प्रति चौरस मिटरपेक्षा जास्त असलेली स्थाने पवन ऊर्जा निर्मितीसाठी सक्षम स्थाने समजली जातात. महाराष्ट्रात अशी २८ स्थाने आहेत. पथदशी प्रकल्पांमुळे दिसून आलेली तांत्रिक व्यवहार्यता तसेच महाराष्ट्र शासनाने घोषित केलेले आकर्षक गुंतवणूक धोरण यामुळे पवन ऊर्जा क्षेत्रात २,००० रु. कोटीपेक्षा जास्त खाजगी गुंतवणूक झाली आहे. राज्यात अकरा ठिकाणी जवळपास ३९९ मेगॅवॅटचे खाजगी पवन ऊर्जा प्रकल्प उभारण्यात आले आहेत. २००३-०४ मध्ये या प्रकल्पाद्वारे ७०४ दशलक्ष किलोवॅट तास वीज निर्मिती झाली. महाराष्ट्र शासनाने पवन ऊर्जेकरीता फेब्रुवारी, २००४ मध्ये नवीन धोरण जाहीर केले आहे. नवीन धोरणा प्रमाणे उभारण्यात येणाऱ्या प्रकल्पांपासून २००७ पर्यंत ७५० मेगॅवॅट ऊर्जा निर्मिती होईल.

महाराष्ट्रातील पवन उर्जा निर्मिती



जैविक (बायोमास) ऊर्जा

११.१४.७ राज्यात अतिरिक्त असलेल्या कृषिजन्य टाकाऊ जैविक पदार्थांपासून पारेषण जाळ्याच्या दर्जाची वीजनिर्मिती करण्याची ७८१ मेगॅवॅट इतकी क्षमता आहे. महाराष्ट्रातील आकर्षक धोरणामुळे खाजगी क्षेत्राच्या सहभागाबाबत गुंतवणूकदारांचा उत्साहवर्धक कल दिसून येत

आहे. याचा परिणाम म्हणून के पल्प अँड पॉवर लिमिटेड सातारा येथे ६ मेगॅवॅटचा प्रकल्प उभारण्यात आला असून तो सुरु झाला आहे. गोंदिया जिल्ह्यातील तुमखेडा गावात ६.६ मेगॅवॅट क्षमतेच्या टाकाऊ कृषिजन्य पदार्थांपासून ऊर्जा निर्मितीचा प्रकल्प कार्यान्वित झाला आहे. तसेच २३१.८ मेगॅवॅट क्षमतेच्या आणखी काही प्रकल्पांची कामे सुरु आहेत.

ऊर्जा संधारण कार्यक्रम

११.१४.८ औद्योगिक आस्थापनातील ऊर्जेचा अकार्यक्षमपणे होणारा वापर शोधून काढण्यासाठी या कार्यक्रमांतर्गत विविध औद्योगिक आस्थापनांची ऊर्जा तपासणी केली जाते व ऊर्जेची बचत करण्यासाठी मार्ग व उपाय सुचविण्यात येतात. २००३-०४ ह्या वर्षात तज्ज्ञांच्या सहाय्याने अशा आठ ऊर्जा तपासण्या यशस्वीरित्या पूर्ण करण्यात आल्या. या तपासणी अहवालांतील सूचनांची अंमलबजावणी केल्याने तपासणीनंतरच्या कालावधीत ऊर्जेची बचत झाली.

११.१४.९ मेडातर्फे राबविल्या जाणा-या इतर महत्वाच्या योजनांची प्रगती तक्ता क्रमांक ११.७ मध्ये दर्शविली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.७

मेडातर्फे राबविल्या जाणाऱ्या योजनांची प्रगती

| बाब | २००३-०४ मध्ये | संचित मार्च, ०४ अखेर |
|---|---------------|----------------------|
| (१) अपारंपरिक ऊर्जा निर्मितीची स्थापित क्षमता (मेगॅवॅट) | | |
| (अ) पवन ऊर्जा प्रकल्प | ८.२ | ४०७.६ |
| (ब) बायोमास ऊर्जा प्रकल्प | ०.० | ३.५ |
| (क) बॅंगस सहनिर्मिती विद्युत प्रकल्प | ०.० | ३२.५ |
| (ड) औद्योगिक घन कचऱ्यापासून वीज निर्मिती | ०.० | ६.१ |
| (२) सौर औष्णिक कार्यक्रम | | |
| (अ) विकलेले सौर कुकर्स (संख्या) | ९७० | ४७,२५७ |
| (ब) पाणी गरम करण्याच्या सौर संयंत्रांची एकूण क्षमता (लाख लिटर प्रतिदिन) | ७.७ | ५८.२ |
| (क) पाणी क्षारविरहित करण्यासाठी स्थापन केलेली सौर संयंत्रे (संख्या) | ०.० | ९५४ |
| (ड) स्थापित केलेले फोटोव्होल्टेक पद्धतीचे सौर कंदील (संख्या) | ३०० | ८,९७७ |
| (इ) वितरित केलेले फोटोव्होल्टेक सौर बॅटरी चार्जर्स (संख्या) | ०.० | ३१० |
| (फ) पुरविलेले सौर फोटोव्होल्टेक स्प्रेअर्स (संख्या) | ०.० | १७९ |
| (३) बायोगॅस कार्यक्रम | | |
| (अ) सामूहिक बायोगॅस संयंत्रे (संख्या) | ०.० | ७२ |
| (ब) संस्थाकडील बायोगॅस संयंत्रे (संख्या) | ०.० | ३५ |
| (क) मानवी विष्टेवर आधारित बायोगॅस संयंत्रे (संख्या) | ०.० | ३५२ |
| (४) बायोमास गॅसिफायर कार्यक्रम | | |
| (अ) सुधारीत दहन संयंत्रे (संख्या) | २० | ९५२ |

परिवहन व दळणवळण

परिवहन

११.१५ परिवहन क्षेत्र हे पायाभूत सुविधांचे एक महत्वाचे अंग असून त्यामध्ये रस्ते, मोटार वाहने, रेल्वे, जलवाहतूक, नागरी विमान वाहतूक व दळणवळण यांचा समावेश होतो. सध्याच्या जागतिकीकरणाच्या स्पर्धात्मक युगात, अर्थव्यवस्थेच्या विकासासाठी गतिमान चालना देण्याच्या हेतूने सुयोग्य पायाभूत सुविधा उपलब्ध करून देण्यास सर्वोच्च प्राधान्य देणे आवश्यक ठरते. पायाभूत सुविधांची निर्मिती व अर्थव्यवस्थेचे बळकटीकरण यांच्यामध्ये असलेल्या संबंधांचे महत्त्व ओळखून पायाभूत सुविधांचा विस्तार करण्यास महाराष्ट्र शासनाने सर्वोच्च प्राधान्य दिले आहे.

११.१६ परिवहन क्षेत्रातील पायाभूत सुविधांच्या अभावामुळे अर्थव्यवस्थेच्या वाढीवर निर्बंध येण्याबरोबरच त्याचा परिणाम पर्यावरणाची हानी, अनारोग्यात वाढ आणि सामाजिक स्वास्थ्याचा न्हास होण्यामध्ये होतो. वाहनांच्या संख्येत सतत प्रचंड वाढ होत असल्याने राज्यातील मोठ्या शहरांमध्ये वाहतूकीची कोंडी होणे ही नित्याचीच बाब झाली आहे. वाहतूक वाढीच्या तुलनेत रस्त्यांचा विकास करण्यात आलेले अपयश, यामुळे शहरांमध्ये वाहतूकीची कोंडी होत आहे.

रस्ते

११.१७ राज्यामध्ये रस्त्यांच्या पायाभूत सुविधांचा विकास प्रामुख्याने महाराष्ट्र शासनाच्या सार्वजनिक बांधकाम विभाग, जिल्हा परिषदा, नगर परिषदा व महानगरपालिका यांच्यामार्फत करण्यात येतो. मार्च, २००४ अखेर सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदांच्या देखभाली खालील रस्त्यांची एकत्रित लांबी (स्थानिक संस्थाकडील अंतर्गत रस्त्यांची लांबी वगळून) २.२७ लाख कि.मी. होती. रस्त्यांच्या प्रकारानुसार रस्त्यांची लांबी तक्ता क्र. ११.८ मध्ये दर्शविण्यात आली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.८

सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदांच्या देखभालीखालील रस्त्यांची लांबी

(कि.मी. मध्ये)

| रस्त्याचा प्रकार | मार्च, अखेर | | टक्के वाढ |
|---------------------|-------------|----------|-----------|
| | २००३ | २००४ | |
| राष्ट्रीय महामार्ग | ३,७१० | ४,२२५ | १३.९ |
| राज्य महामार्ग | ३३,७०५ | ३३,६३३ | (-)०.२ |
| प्रमुख जिल्हा रस्ते | ४८,१९२ | ४८,२२० | ०.१ |
| इतर जिल्हा रस्ते | ४४,१८३ | ४४,३२१ | ०.३ |
| ग्रामीण रस्ते | ९५,१५० | ९६,५९३ | १.५ |
| एकूण | २,२४,९४० | २,२६,९९२ | ०.९ |

११.१८ रस्त्यांच्या लांबीच्या माहितीवरून दिसून येते की, मार्च २००४ अखेर सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदा यांनी

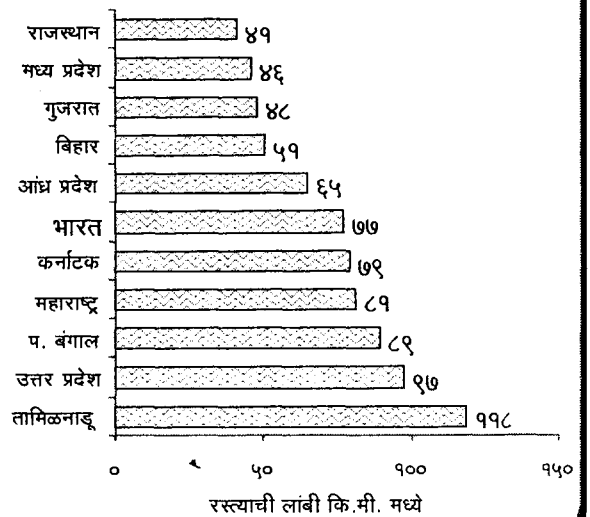
देखभाल केलेल्या रस्त्यांच्या लांबीत आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ०.९ टक्क्यांनी वाढ झाली. मार्च २००४ अखेर राष्ट्रीय महामार्गाची लांबी १३.९ टक्क्यांनी वाढली आणि प्रमुख जिल्हा रस्ते, इतर जिल्हा रस्ते आणि ग्रामीण रस्ते यामध्ये अनुक्रमे ०.१ टक्के, ०.३ टक्के व १.५ टक्के इतकी अल्पशी वाढ झाली. राज्य महामार्गाच्या काही भागाचे राष्ट्रीय महामार्गात रुपांतर झाल्याने राज्य महामार्गाच्या लांबीत ०.२ टक्के इतकी अल्पशी घट झालेली आहे.

११.१९ मार्च, २००४ अखेर सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदांनी देखभाल केलेल्या रस्त्यांच्या एकत्रित लांबीमध्ये पृष्ठांकित (१,९८,४५९ कि.मी.) आणि अपृष्ठांकित (२८,५३३ कि.मी.) रस्त्यांच्या लांबीचे प्रमाण अनुक्रमे ८७.४ टक्के व १२.६ टक्के होते.

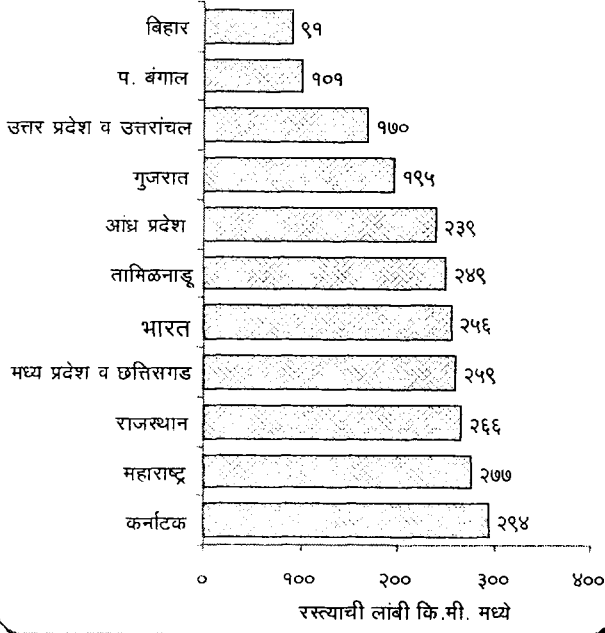
११.२० रस्त्यांचा विस्तार मोजण्यासाठी प्रति १०० चौ.कि.मी. भौगोलिक क्षेत्रामागे रस्त्यांची लांबी व प्रति लाख लोकसंख्येमागे रस्त्यांची लांबी हे निर्देशांक सर्वसाधारणतः वापरले जातात. मार्च, २००४ अखेर राज्यात प्रति १०० चौरस कि.मी. भौगोलिक क्षेत्रामागे सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदांच्या देखभाली खालील रस्त्यांची लांबी ७४ कि.मी. होती. तसेच प्रति लाख लोकसंख्येमागे रस्त्यांची लांबी २२१ कि.मी. होती.

११.२१ मार्च, २००४ अखेर जनगणना १९९१ नुसार राज्यातील वस्ती असलेल्या एकूण ४०,४१२ गावांपैकी ३७,९३२ गावे (९३.९ टक्के) बारमाही रस्त्यांनी, तर १,७१५ गावे (४.२ टक्के) हंगामी रस्त्यांनी जोडलेली होती. उर्वरित ७६५ वस्ती असलेली गावे बारमाही किंवा हंगामी रस्त्यांनी जोडलेली नव्हती. या गावांपैकी २५५ गावे (त्यातील डोंगरी भागात १०८) आदिवासी क्षेत्रात होती तर ५१० गावे (त्यातील डोंगरी भागात १५८) बिगर-आदिवासी क्षेत्रात होती. या ७६५ गावांपैकी ६६१ गावांची लोकसंख्या ५०० पेक्षा कमी होती.

प्रमुख राज्यांकरिता प्रति १०० चौ.कि.मी. क्षेत्रामागे रस्त्यांची लांबी (३१ मार्च १९९९)



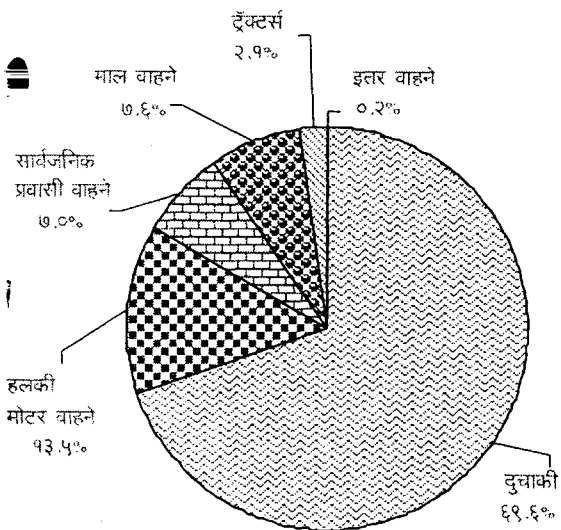
प्रमुख राज्यांकरिता प्रति लाख लोकसंख्यामागे
रस्त्यांची लांबी (३१ मार्च १९९९)



महाराष्ट्र राज्य रस्ते विकास महामंडळ

११.२२ खाजगी क्षेत्राचा सहभाग वाढवून रस्ते विकासाचा कार्यक्रम राबविण्यासाठी १९९६ मध्ये महाराष्ट्र राज्य रस्ते विकास महामंडळाची स्थापना करण्यात आली. महामंडळामार्फत 'बांधा, वापरा व हस्तांतरण' या मूलभूत तत्वावर हाती घेण्यात आलेल्या विविध प्रकल्पांची व त्यावर डिसेंबर, २००४ अखेर झालेल्या खर्चाची माहिती तक्ता क्र. ११.९ मध्ये देण्यात आली आहे.

महाराष्ट्रातील मोटर वाहनांची टक्केवारी
(१ जानेवारी २००५)



तक्ता क्रमांक ११.९
महाराष्ट्र राज्य रस्ते विकास महामंडळाने हाती घेतलेले
प्रमुख प्रकल्प

| प्रकल्पाचे नांव | (रुपये कोटीत) | |
|---|---------------|-----------------------|
| | एकूण किंमत | डिसेंबर, ०४ अखेर खर्च |
| अ) पूर्ण झालेले प्रकल्प | | |
| १ मुंबई-पुणे द्रुतगती मार्ग | २,१३६ | २,०९८.७६ |
| २ उड्डाणपुले - (मुंबई - ५०, अंधेरी - १) | १,६१७ | १,१७०.१६ |
| ३ महाराष्ट्रातील रेल्वे उड्डाणपुले | १९५ | १८५.९५ |
| ४ कल्याण-दुर्गाडी पुल | ४ | ३.९५ |
| ५ ठाणे-घोडबंदर रस्ता | ८१ | ७३.१० |
| ६ वर्धा-नाकोडा | उ.ना. | ७.६९ |
| ७ सार्वजनिक बांधकाम प्रकल्प | ४० | ४३.०७ |
| ८ लातूर शहरातील रस्ते | २० | ३२.५० |
| एकूण (अ) | ४,०९३ | ३,६१५.१८ |

ब) चालू स्थितीतील प्रकल्प

| | | |
|--|-------|----------|
| १ वांद्रे-वरळी सागरीपूल प्रकल्प | १,३०६ | ३४७.६० |
| २ नागपूर-औरंगाबाद-सित्रर-घोटी रस्ता | ७०० | ३३१.४७ |
| ३ सातारा-कोल्हापूर ते महाराष्ट्र राज्य सीमेपर्यंत रस्त्यांचे चौपदरीकरण | ७२५ | ५४८.०४ |
| ४ नागपूर शहरातील रस्ते | ४५० | २४६.४४ |
| ५ पुणे शहरातील रस्ते | २८० | ७३.६१ |
| ६ औरंगाबाद शहरातील रस्ते | १४२ | ३३.३२ |
| ७ सोलापूर शहरातील रस्ते | ९२ | १९.९९ |
| ८ नंदूरबार शहरातील रस्ते | २१ | ३.६३ |
| ९ अमरावती शहरातील रस्ते | ११४ | २०.९३ |
| १० कोल्हापूर शहरातील रस्ते | १४३ | ०.५१ |
| ११ नांदेड शहरातील रस्ते | ६७ | ०.७८ |
| १२ बारामती शहरातील रस्ते | २५ | ९.२४ |
| १३ नागपूर सर्कल येथील सा.बां.वि. नियंत्रणाखालील रस्त्यांची सुधारणा | १६ | ७.७३ |
| १४ सातारा-चाळकेवाडी प्रकल्प | १५ | २५.०५ |
| १५ संकीर्ण प्रकल्प | उ.ना. | २१.९३ |
| १६ कंपनी मालमत्ता | उ.ना. | १७२.११ |
| एकूण (ब) | ४,०९६ | १,८६२.३८ |
| एकूण (अ+ब) | ८,१८९ | ५,४७७.५६ |
| उ.ना.- उपलब्ध नाही | | |

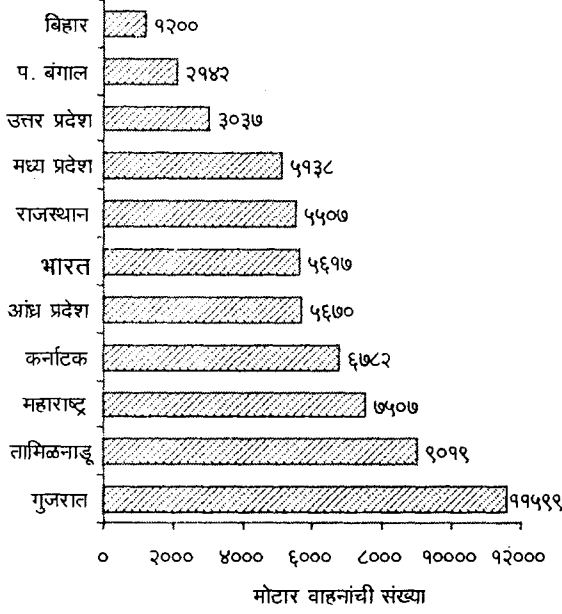
मोटर वाहने

११.२३ १ जानेवारी, २००५ रोजी राज्यात ९६.५६ लाख मोटर वाहने होती व ती मागील वर्षांच्या तुलनेत १०.६७ टक्क्यांनी जास्त होती. एकूण वाहनांपैकी १३.२ टक्के वाहने एकट्या बृहन्मुंबईत होती. निवडक वर्षांकरिता १ जानेवारी रोजी राज्यात असलेल्या मोटर वाहनांचा तपशील या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ४७ मध्ये दिला आहे.

११.२४ ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यातील वाहनांची संख्या ८९.६९ लाख होती व प्रति लाख लोकसंख्येमागे मोटर वाहनांची संख्या ८,७८५ होती.

११.२५ मार्च, २००४ अखेर राज्यात मोटर वाहने चालविण्यासाठी वैध अनुज्ञप्तीची संख्या १३५.४० लाख होती, तर ती मार्च, २००३ अखेर १२६.७७ लाख होती. मार्च, २००४ अखेर १,३२७ मान्यताप्राप्त प्रदूषण नियंत्रण तपासणी केंद्रे होती.

प्रमुख राज्यांकरिता प्रति लाख लोकसंख्यामागे
मोटर वाहनांची संख्या (३१ मार्च २००२)



११.२६ २००३-०४ मध्ये कर आणि फी द्वारे महसुली उत्पन्नांत आधीच्या वर्षांच्या ६.३ टक्के वाढीच्या तुलनेत ३६.४ टक्क्यांनी झालेली वाढ ही गेल्या ५ वर्षांतील सर्वाधिक असून, एकूण महसूल १४४३.५७ कोटी रुपये झाला.

११.२७ २००३-०४ मध्ये प्राप्त झालेल्या एकूण महसुलापैकी मुंबई मोटर वाहन कर व प्रवासी कर यांची टक्केवारी अनुक्रमे ६३ व २७ होती. सीमा तपासणी नाके, भ्रारी पथके, अवैध मार्गांनी केलेली वाहतूक, प्रदूषण नियंत्रण तपासणी केंद्रे व अतिभार मालवाहतूक यापासून २००२-०३ मधील १२४.३६ कोटी रुपयांच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये १३२.१३ कोटी रुपये वसूल करण्यात आले.

महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळ

११.२८ महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाच्या वाहतुकीपोटी झालेल्या आधीच्या वर्षांच्या एकूण जमेत अल्पशी ०.४ टक्के वाढ होऊन ती २००३-०४ मध्ये २,६८५ कोटी रुपये झाली. आधीच्या वर्षांच्या १७.२४ लाख रुपयांच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये प्रत्येक बसमागे वाहतुकीपोटी १७.६९ लाख रुपये प्राप्ती झाली. २००३-०४ मध्ये मार्गस्थ गाड्यांच्या आसन क्षमतेचा सरासरी वापर आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत कमी होऊन ५६ टक्के झाला. या महामंडळाने २००३-०४ मध्ये वाहतूक केलेल्या प्रवाशांची प्रतिदिन सरासरी संख्या ५६.४२ लाख होती, ती आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत ७.९६ टक्क्यांनी कमी होती. महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाची वाहतूक विषयक आकडेवारी २००२-०३ व २००३-०४ करिता तक्ता क्रमांक ११.१० मध्ये दिली आहे.

११.२९ मार्च, २००४ अखेर राज्यातील सुमारे १,४५७ गावांमधील जनतेला जवळच्या महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाच्या बसथांब्यावर पोहोचण्यासाठी सरासरी ५ कि.मी. पेक्षा जास्त अंतर चालावे लागत होते. महामंडळाच्या बसमध्ये प्रवासासाठी विद्यार्थी, ज्येष्ठ नागरिक (६५ वर्षांवरील), कर्करोग रुग्ण, स्वातंत्र्यसैनिक इत्यादींना बस भाड्यामध्ये सवलती दिल्या जातात. दुर्गम भागातील जनतेला सेवा पुरविण्यासाठी कमी उत्पन्न देणाऱ्या फेऱ्या चालविल्यामुळे महामंडळाला २००३-०४ मध्ये १६६.९३ कोटी रुपयांचे नुकसान सोसावे लागले. हे नुकसान आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत २३.२५ कोटी रुपयांनी कमी होते.

११.३० २००३-०४ मध्ये महामंडळाला २,७४७.०७ कोटी रुपये महसूल प्राप्त झाला. तो आधीच्या वर्षापेक्षा ०.७१ टक्क्यांनी जास्त होता. तथापि, चालन खर्चात आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत ४.८ टक्क्यांनी वाढ झाली. परिणामी, करपूर्व नफ्यात २००२-०३ मधील ३२०.५७ कोटी रुपये रकमेत २००३-०४ मध्ये घट होऊन तो २२२.८६ कोटी रुपये झाला. कर भरल्यानंतर आणि पूर्वकालीन समायोजन वगळून मागील वर्षी महामंडळाला ७१.९१ कोटी रुपये तोटा झाला होता. हा तोटा वाढून

तक्ता क्रमांक ११.१०

महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाची वाहतूक विषयक आकडेवारी

| वाव | परिमाण | वर्ष | | शेकडा बदल |
|---|------------|----------|----------|-----------|
| | | २००२-०३ | २००३-०४ | |
| १. वर्ष अखेरीस वाहतूक करण्यात येत असलेले मार्ग | संख्या | १८,८६८ | १७,८३५ | (-) ५.४७ |
| २. वर्ष अखेरीस मार्गांची लांबी | लाख कि.मी. | १३.०८ | १२.८१ | (-) २.०६ |
| ३. वाहतूक केलेले प्रतिदिन सरासरी सार्थ कि.मी. | लाख | ४८.३७ | ४८.२३ | (-) ०.२९ |
| ४. वाहतूक केलेल्या प्रवाशांची प्रतिदिन सरासरी | लाख | ६१.३० | ५६.४२ | (-) ७.९६ |
| ५. महामंडळाच्या मालकीच्या गाड्यांची सरासरी संख्या | संख्या | १६,५१० | १६,१२० | (-) २.३६ |
| ६. मार्गस्थ असणाऱ्या गाड्यांची प्रतिदिन सरासरी | संख्या | १५,५१२ | १५,१७९ | (-) २.१५ |
| ७. बस ताफ्याचा सरासरी वापर | टक्के | ९३.९६ | ९४.१६ | ०.२० |
| ८. मार्गस्थ गाड्यांच्या आसन क्षमतेचा सरासरी वापर | टक्के | ५८.९९ | ५५.९८ | (-) ३.०१ |
| ९. वाहतूकपासून वर्षातील एकूण जमा | कोटी रुपये | २,६७३.७८ | २,६८५.२४ | ०.४३ |

००३-०४ मध्ये २०५.०७ कोटी रुपये झाला. राज्यात मार्ग परिवहन महामंडळाची वित्तीय आकडेवारी तक्ता क्रमांक ११.११ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.११

राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाची वित्तीय आकडेवारी

(रुपये कोटीत)

| क्र. | बाब | २००२-०३ | २००३-०४ |
|------|-------------------------------|----------|-----------|
| १ | एकूण जमा | २,७२७.५१ | २,७४७.०७ |
| २ | एकूण खर्च (कर वगळून) | २,४०६.९४ | २,५२४.२१ |
| | पंकी | | |
| | (अ) चालन खर्च | २,३५९.४१ | २,४७३.२० |
| | (ब) चालनेतर खर्च | ४७.५३ | ५१.०१ |
| ३ | करपूर्व नफा (१ - २) | ३२०.५७ | २२२.८६ |
| ४ | एकूण कर | ४०१.८७ | ४०२.९० |
| | (अ) प्रवासी कर | ३९२.०७ | ३९३.१७ |
| | (ब) मोटार वाहन व इतर कर | ९.८० | ९.७३ |
| ५ | एकूण खर्च (२ + ४) | २,८०८.८१ | २,९२७.११ |
| ६ | निव्वळ नफा/तोटा (१ - ५) | (-)८१.३० | (-)१८०.०४ |
| ७ | पूर्वकालीन समायोजन (नफा/तोटा) | ९.३९ | (-)२५.०३ |
| ८ | एकूण नफा/तोटा (६ + ७) | (-)७१.९१ | (-)२०५.०७ |

शहरांतर्गत वाहतूक

११.३१ राज्यातील ३४ शहरांत सार्वजनिक वाहतूक व्यवस्था उपलब्ध आहे. या ३४ शहरांपैकी २१ शहरांत राज्य मार्ग परिवहन महामंडळ व उर्वरित १३ शहरांत संबंधित महानगरपालिका / नगरपाषिषदा सार्वजनिक वाहतूक सेवा पुरवित आहेत. महानगरपालिका / नगरपाषिषदांची ००३-०४ मधील एकत्रित सरासरी बस संख्या ४,८५४ होती, त्यापैकी ३,३८२ बसगाड्या (७० टक्के) मुंबईतील बेस्ट उपक्रमाच्या मालकीच्या होत्या.

११.३२ ३१ मार्च, २००४ अखेर महाराष्ट्रातील लोहमार्गांची एकूण लांबी ५,४९७ कि.मी. होती. तसेच ती देशातील एकूण लोहमार्गांच्या लांबीच्या (६३,२२१ कि.मी.) ८.६९ टक्के एवढी होती. रेल्वे मार्गांचे त्यांच्या न रुळांमधील अंतर मीटरमध्ये विचारात घेऊन ब्रॉड गेज (१.६७६ मी.), मीटर गेज (१ मी.) व नॅरो गेज (०.७६२ मी. व ०.६१० मी.) असे वर्गीकरण केले जाते. राज्यातील एकूण लोहमार्गांपैकी ७८.२ टक्के ब्रॉडगेज, ८.१ टक्के मीटरगेज आणि उर्वरित १३.७ टक्के नॅरोगेज लोहमार्ग होते. अखिल भारतीय सरासरी तत्सम टक्केवारी अनुक्रमे ७४.१, २१.० आणि ४.९ होती. १ मार्च, २००४ अखेर प्रति १,००० चौरस कि.मी. भौगोलिक क्षेत्रामागे लोहमार्गांची लांबी राज्यात १७.९ कि.मी. तर देशात ती १९.२ कि.मी. होती. १ मार्च, २००४ अखेर राज्यातील लोहमार्गांच्या एकूण लांबीपैकी ३४.२ टक्के लोहमार्गांचे विद्युतीकरण झाले होते तर अखिल भारतीय पातळीवर हे

प्रमाण २८.० टक्के होते. राज्यात दुपदरीकरण झालेल्या रेल्वे मार्गांचे प्रमाण २७.८ टक्के होते.

११.३३ राज्यात रेल्वेच्या चालू असलेल्या कामांच्या प्रगतीबाबत नोव्हेंबर, २००४ अखेरची स्थिती पुढील प्रमाणे आहे.

११.३३.१ अमरावती ते नारखेड (१३८ कि.मी.) या नवीन ब्रॉडगेज लोहमार्गाचे काम प्रगतिपथावर आहे. या कामाच्या प्रथम टप्प्यात अमरावतीपासून ४४ कि.मी. लांबी या कामाचे नियोजन करण्यात आले असून मार्च, २००५ अखेर पूर्ण करण्याचे निश्चित केले आहे तर उर्वरित भागाचे काम मार्च, २००७ अखेर पूर्ण होणे अपेक्षित आहे. या लोहमार्गाचा अंदाजित खर्च २८४.२७ कोटी रुपये एवढा आहे.

११.३३.२ अहमदनगर-बीड-परळी वेंजनाथ या २६१.२५ कि.मी. लांबीच्या नवीन ब्रॉडगेज लोहमार्गाचे काम प्रगतिपथावर आहे. त्यापैकी, २०९ कि.मी. लोहमार्गाचे काम (८० टक्के) पूर्ण झाले. या लोहमार्गाचा एकूण अंदाजित खर्च १५.७९ कोटी रुपये मात्र आहे.

११.३३.३ बारामती-लोणंद या ५४ कि.मी. लांबीच्या नवीन ब्रॉडगेज लोहमार्गाचे काम प्रगतिपथावर असून त्याचा एकूण खर्च १३८.४८ कोटी रुपये आहे.

११.३३.४ पुणतांबा-शिर्डी या १७.८ कि.मी. लांबीच्या नवीन ब्रॉडगेज लोहमार्गाचे काम प्रगतिपथावर आहे. या प्रकल्पाचा एकूण खर्च ४८.७८ कोटी रुपये इतका आहे. या लोहमार्गाचे काम डिसेंबर, २००५ अखेर पूर्ण होणे अपेक्षित आहे.

११.३३.५ मिरज-लातूर नॅरोगेज लोहमार्गाचे ब्रॉडगेज मध्ये रूपांतरण करण्याचे काम टप्प्याटप्प्याने करण्यात येत आहे. प्रथम टप्प्यातील कुर्डुवाडी ते पंढरपूर (५२ कि.मी.) गेज रूपांतरणाचे काम पूर्ण झाले असून मार्च, २००१ मध्ये हा मार्ग सुरू करण्यात आला. दुसऱ्या टप्प्यातील लातूर ते लातूर रोड (४२ कि.मी.) व तिसऱ्या टप्प्यातील कुर्डुवाडी ते लातूर (१५२ कि.मी.) या टप्प्याची कामे पूर्ण झाली आहेत. या लोहमार्गावरील ४३ लहान आणि ३ मोठ्या पुलांची कामे पूर्ण झाली आहेत. शेवटच्या व चौथ्या टप्प्यातील मिरज-पंढरपूर (१३७ कि.मी.) या लोहमार्गाचे काम प्रगतिपथावर आहे.

११.३३.६ नवीन पनवेल-कर्जत या २८.०५ कि.मी. नवीन ब्रॉडगेज लोहमार्गाचे ९५ टक्के काम पूर्ण झाले. १३७.४४ कोटी रुपये अंदाजित खर्च असलेल्या या प्रकल्पाचे काम फेब्रुवारी, २००५ पर्यंत पूर्ण करण्याचे लक्ष्य निर्धारित केले आहे.

११.३३.७ पनवेल-जसई-जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, उरण (२८.५ कि.मी.) या लोहमार्गाच्या दुपदरीकरणाचे १५ टक्के काम पूर्ण झाले. तसेच दिवा-कल्याण (१०.७३ कि.मी.) या लोहमार्गाच्या ५व्या / ६व्या मार्गाकांच्या दुपदरीकरणाचे ४५ टक्के काम पूर्ण झाले. या खेरीज पनवेल-रोहा (७५.४४ कि.मी.) आणि पाकणी-सोलापूर (१६.२८ कि.मी.) या लोहमार्गांच्या दुपदरीकरणाची कामे प्रगतिपथावर आहेत.

११.३३.८ मुंबईतील गर्दी कमी करण्यासाठी आणि नवी मुंबई विकसित

करण्यासाठी पुढील कामे प्रगतिपथावर आहेत.

(१) ठाणे-तुर्भे-वाशी (२२.६ कि.मी.) या ४०३ कोटी रुपये खर्चाच्या लोहमार्गाचे काम पूर्ण झाले आणि हा लोहमार्ग ९ नोव्हेंबर, २००४ पासून कार्यान्वित झाला आहे. सध्या १८ कि.मी. मार्ग वापरात असून त्यावर ७ रेल्वे स्थानके कार्यान्वित आहेत. (२) बेलापूर-सिवूड-उरण (२७ कि.मी.) या ४९५ कोटी रुपये खर्चाच्या नवीन ब्रॉडगेज मार्गाचे काम प्रगतीपथावर आहे. त्याचे १२ टक्के काम पूर्ण झाले. (३) कल्याण येथील रेल्वे यार्डाचे नूतनीकरण (किंमत १४.५० कोटी रुपये), कल्याण येथील स्टेबलिंग लाईन (किंमत ३३.७० कोटी रुपये) आणि कुर्ला-ठाणे या १७ कि.मी. अतिरिक्त ५ व्या व ६ व्या नवीन ब्रॉडगेज मार्ग (किंमत १०२.९ कोटी रुपये) हे प्रकल्प मंजूरीच्या टप्प्यात आहेत.

बंदरे

११.३४ राज्याच्या ७२० कि.मी. लांबीच्या किनारपट्टीवर मुंबई पोर्ट ट्रस्ट व न्हावा शेवा येथील जवाहर नेहरू पोर्ट ट्रस्ट ही दोन मोठी बंदरे कार्यान्वित आहेत. याखेरीज बंदरे विकासाच्या राज्य शासनाच्या धोरणानुसार 'बांधा, मालक व्हा, चालवा व हस्तांतरण' या मूलभूत तत्वावर खाजगी क्षेत्राच्या सहभागाद्वारे ४८ अधिसूचित लहान बंदरे प्रवासी व माल वाहतूक करतात. त्याकरिता १९९६ मध्ये महाराष्ट्र मेरीटाईम बोर्डाची स्थापना करण्यात आलेली आहे. अवजड माल, पेट्रोलियम व रसायन कंटेनर्स या सारख्या सर्व प्रकारच्या जहाजी मालवाहतूकीची क्षमता असलेल्या बहुउपयोगी बंदर सुविधांचा विकास करण्याचे शासनाचे धोरण आहे.

११.३५ २००३-०४ मध्ये मुंबई पोर्ट ट्रस्टने २६५.५१ लाख टन मालाची वाहतूक केली. त्यातील ८८.९२ लाख टन किनारी मालाची व १७६.५९ लाख टन समुद्रपार मालाची वाहतूक होती. त्या तुलनेत आधीच्या वर्षी केलेल्या २४३.०४ लाख टन माल वाहतूकीपैकी ८५.५१

लाख टन किनारी मालाची व १५७.५३ लाख टन समुद्रपार मालाची वाहतूक होती. २००३-०४ मध्ये केलेल्या एकूण मालवाहतूकीपैकी आयात १६०.५५ लाख टन व निर्यात १०४.९६ लाख टन होती. २००३-०४ मध्ये मुंबई बंदरातून एकूण ५.१४ हजार पूर्णतः समुद्रपार प्रवासी वाहतूक झाली. २००४-०५ मध्ये ऑक्टोबर अखेर १२९.९७ लाख टन आयात व ६२.२७ लाख टन निर्यात मालाची वाहतूक करण्यात आली. तसेच या कालावधीत २.०३ हजार समुद्रपार प्रवासी वाहतूक झाली. तथापि किनारी प्रवासी वाहतूक अजिबात झाली नाही.

११.३६ २००३-०४ मध्ये जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्टने ३१२ लाख टन मालाची वाहतूक केली होती. त्या आधीच्या वर्षी ही वाहतूक २६८ लाख टन इतकी होती. २००४-०५ सप्टेंबर अखेरपर्यंत १६४ लाख टन मालाची वाहतूक करण्यात आली. ही वाहतूक आधीच्या वर्षाच्या त्याच कालावधीत केलेल्या वाहतूकीपेक्षा ७.२० टक्क्यांनी जास्त होती. जवाहर नेहरू पोर्ट ट्रस्ट यांनी 'बांधा, वापरा व हस्तांतरण' या तत्वावर मे.मर्क्स कॉन्कोर या खाजगी कंपनीशी तीस वर्ष मुदतीचा मालवाहतूकीचा करार केला आहे. या प्रकल्पांतर्गत जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्टच्या कन्टेनर्सचं माल वाहतूकीच्या क्षमतेत वाढ करून ती ऑगस्ट, २००६ अखेर १५६ लाख टन असे करण्याचे प्रस्तावित आहे.

११.३७ २००३-०४ मध्ये ४८ लहान बंदरांनी मिळून १२८.४ लाख प्रवाशांची वाहतूक केली. त्यापैकी यांत्रिक बोटीतून १०८.६ लाख बिगर-यांत्रिक बोटीतून १९.८ लाख प्रवाशांची वाहतूक झाली.

११.३८ २००३-०४ मध्ये ४८ लहान बंदरांनी मिळून १०३.३ लाख टन माल वाहतूक केली, तर २००२-०३ मध्ये ८७.५ लाख टन माल वाहतूक केली होती. २००३-०४ वर्षातील १०३.३ लाख टन मालवाहतूकीपैकी आयात ८९ टक्के व निर्यात ११ टक्के होती. २००४-०५ मध्ये सप्टेंबर अखेर ४९.८ लाख टन मालवाहतूक या लहान बंदरातून करण्यात आली

तक्ता क्रमांक ११.१२

महाराष्ट्रातील विमानतळावरून विमान उड्डाणे आणि प्रवासी व माल वाहतूक

| विमानतळ | विमान उड्डाणे | | प्रवासी (संख्या) | | | | माल वाहतूक (टनांत) | | | |
|----------------------|---------------|----------|------------------|-----------|----------------|-----------|--------------------|----------|---------|---------|
| | २००२-०३ | २००३-०४ | विमानाने गेलेले | | विमानाने आलेले | | पाठविलेला | | आलेला | |
| | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४ | २००२-०३ | २००३-०४ |
| देशांतर्गत | | | | | | | | | | |
| मुंबई | ९०,४५१ | ९९,६५२ | ३५,८५,६२३ | ३९,८१,२१० | ३५,८६,७५६ | ३९,६७,०८३ | ३७,७९३ | ४१,९७६ | ४५,७४४ | ५०,५२१ |
| पुणे | ६,७७८ | ७,४६२ | २,०६,४६१ | २,३३,३०६ | २,०३,६७५ | २,३२,९६९ | २,४४९ | ३,३६८ | २,८७७ | ४,०११ |
| नागपूर | ३,९६७ | ४,२७१ | १,१७,३८३ | १,१६,९९६ | १,११,८२२ | १,१३,८१० | ३३१ | ७८९ | १,०७९ | १,३१० |
| औरंगाबाद | २,४१५ | २,६६८ | ५३,३१४ | ५६,७५९ | ५१,५८२ | ५३,६२४ | ४०० | ४७९ | ३३३ | ४०१ |
| कोल्हापूर | १८४ | ९० | ५१० | २२२ | ५१० | २२२ | - | - | - | - |
| एकूण | १,०३,७९५ | १,१४,१४३ | ३९,६३,२९१ | ४३,८८,४९३ | ३९,५४,३४५ | ४३,६७,७०८ | ४१,०५३ | ४६,६१२ | ५०,०३३ | ५६,२४३ |
| आंतरराष्ट्रीय | | | | | | | | | | |
| मुंबई | ३५,१०० | ३७,५६० | २३,९६,६९८ | २५,३१,९६१ | २१,६२,७८४ | २२,८४,९०५ | १,४६,५९८ | १,४९,६२५ | ७७,४७० | ८४,३५५ |

शहरी विमान वाहतूक

११.३९ महाराष्ट्र राज्यात मुंबई येथे छत्रपती शिवाजी महाराज आंतरराष्ट्रीय विमानतळ हा एकच आंतरराष्ट्रीय विमानतळ आहे. महाराष्ट्रातील आंतरराष्ट्रीय विमान तळ व देशांतर्गत पाच विमानतळांवरून करण्यात आलेल्या विमान वाहतुकीची प्रवासी व माल वाहतुकीबाबतची माहिती तक्ता क्रमांक ११.१२ मध्ये देण्यात आली आहे. या आकडेवारीवरून असे दिसून येते की आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत २००३-०४ मध्ये आंतरराष्ट्रीय विमान उड्डाणात ७ टक्क्यांनी वाढ झाली तर देशांतर्गत विमान उड्डाणात १० टक्क्यांनी वाढ झाली. देशांतर्गत विमानतळांवरून राज्यात झालेल्या एकूण विमान उड्डाणांपैकी ८७ टक्के उड्डाणे मुंबई विमानतळावरून झाली. तसेच देशातील या विमानतळावरून विमानाने प्रवाशांच्या व येणाऱ्या प्रवाश्यांचे प्रमाण अनुक्रमे ९१ व ९०.८ टक्के होते.

दळणवळण

११.४० टपाल, तार व दूरसंचार या खात्याचा दळणवळण प्रणालीत समावेश होतो. राज्यातील दूरसंपर्क प्रणाली खाजगी आणि सार्वजनिक उपक्रमाद्वारे चालविली जाते. आधुनिक दळणवळण प्रणाली, विकास क्रियेचे अविभाज्य अंग असून १९९० च्या दशकात अंमलात आणलेल्या सुविधा व खाजगीकरणाने धोरणामुळे वेगाने प्रगती करित आहे.

११.४१ मार्च, २००४ अखेर राज्याच्या ग्रामीण भागात ११,३०९ व शहरी भागात १,३२९ टपाल कार्यालये होती. मार्च, २००४ अखेर टपाल कार्यालयांची संख्या ग्रामीण भागात ३९,०६३ तर शहरी भागात १०,३४७ होती. तसेच मार्च, २००४ अखेर ग्रामीण भागात ५१७ व शहरी भागात ५,५९४ बटवडा पोस्टमन होते.

११.४२ 'भारत संचार निगम लिमिटेड' ही सार्वजनिक क्षेत्रातील कंपनी ऑक्टोबर, २००० मध्ये दूरसंचार सेवा पुरविण्यासाठी स्थापन करण्यात आली. ३१ मार्च, २००४ रोजी राज्यात ६३.५४ लाख दूरध्वनी तळे. ते आधीच्या वर्षापेक्षा १.९ टक्क्यांनी अधिक होते. या ६३.५४ लाख दूरध्वनीपैकी केवळ २१.४ टक्के ग्रामीण भागात व ७८.६ टक्के शहरी भागात होते. राज्यात दर लाख लोकसंख्येमागे मार्च, २००४ अखेर २७५ दूरध्वनी होते. राज्यातील एकूण ६३.५४ लाख दूरध्वनीपैकी ४.०८ लाख (३७.९ टक्के) दूरध्वनी महानगर टेलिफोन निगम

लिमिटेड, मुंबई यांच्या व्यवस्थेअंतर्गत होते. मागील वर्षाच्या तुलनेत महानगर टेलिफोन निगम लिमिटेडच्या दूरध्वनीच्या संख्येत १.५ टक्के घट झाली. मार्च, २००४ अखेर महानगर टेलिफोन निगम लिमिटेड व भारत संचार निगम लिमिटेडच्या सार्वजनिक दूरध्वनीची संख्या अनुक्रमे १.३९ लाख व १.४१ लाख इतकी होती. त्यापैकी एसटीडी आणि आयएसडी सुविधा असलेल्या सार्वजनिक दूरध्वनी केंद्राची संख्या अनुक्रमे ३४,४२० आणि ८२,३२४ इतकी होती.

११.४३ मार्च, २००४ अखेर महानगर टेलिफोन निगम व विदेश संचार निगमकडे नोंदणी करण्यात आलेल्या इंटरनेट खात्याची संख्या अनुक्रमे २.११ लाख व ७.५० लाख होती.

११.४४ सेल्युलर तंत्रज्ञान हे अलीकडील काळात प्रगत झालेले व जलद संपर्काचे जागतिक पातळीवरील आधुनिक तंत्रज्ञान असून त्याची वाढ झपाट्याने होत आहे. सेल्युलर सेवा खाजगी व सार्वजनिक उपक्रमांतील कंपन्या पुरवित आहेत. डिसेंबर, २००४ अखेर भारतात ३.७४ कोटी सेल्युलर धारक होते. त्यापैकी ६६.१६ लाख (१७.७ टक्के) महाराष्ट्रातील होते (मुंबई सर्कल सह). महाराष्ट्र व मुंबई सर्कल साठी सेल्युलर सेवा पुरवणाऱ्या कंपन्यांची आकडेवारी तक्ता क्र. ११.१३ मध्ये देण्यात आली आहे.

तक्ता क्रमांक ११.१३

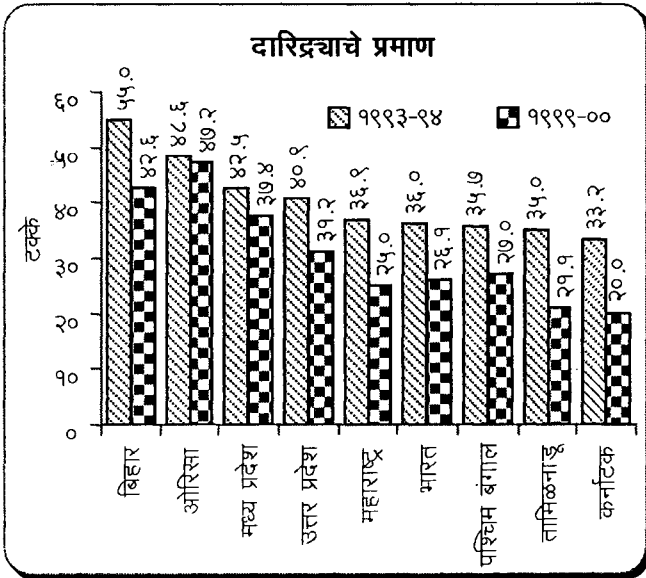
विभाग/सेल्युलर सुविधा पुरविणाऱ्या कंपनीनिहाय माहिती (डिसेंबर, २००४ अखेर)

| मुंबई | | |
|------------|-----------------|-----------|
| | बीपीएल सेल्युलर | ११,८९,७५० |
| | हचिसन मॅक्स | १४,३९,५६८ |
| | एमटीएनएल | ३,२१,२९२ |
| | भारती सेल्युलर | ६,४६,५२८ |
| महाराष्ट्र | बीपीएल सेल्युलर | ५,१८,२४४ |
| | आयडिया सेल्युलर | १२,१३,४५९ |
| | भारती सेल्युलर | ५,९७,३२२ |
| | बीएसएनएल | ६,९०,२७७ |

आधार : सेल्युलर ऑपरेटर्स असोसिएशन ऑफ इंडिया.

दारिद्र्य

१२.१ दारिद्र्य हे निकृष्ट राहणीमान, मूलभूत गरजांचा अभाव, कुपोषण व निरक्षरता यांचे कारण असून त्याचा अंतिम परिणाम मानव विकास निम्नस्तरावर राहण्यात होतो. राष्ट्रीय नमुना पाहणी (रानपा) संघटनेने उपभोक्ता खर्चाबाबत केलेल्या मोठ्या नमुना पाहणीतील आकडेवारीच्या आधारे राष्ट्रीय आणि राज्य पातळीवरील दारिद्र्याचे प्रमाण योजना आयोगाद्वारे नियमितपणे अंदाजित केले जाते. रानपाच्या अशा पाहणीच्या (५५व्या फेरी) निष्कर्षांच्या आधारे योजना आयोगाने १९९९-२००० या वर्षाकरिता तयार करण्यात आलेल्या अलिकडील अंदाजानुसार, राज्यातील दारिद्र्याच्या प्रमाणात १९७३-७४ मधील ५३.२ टक्क्यांवरून १९९३-९४ मध्ये ३६.९ टक्क्यांपर्यंत आणि पुढे १९९९-२००० मधील २५.० टक्क्यांपर्यंत मोठ्या प्रमाणात घट झाल्याचे दिसून येते. १९९९-२००० मधील राज्याचे सदर प्रमाण (२५.० टक्के) अखिल भारतीय पातळीवरील २६.१ टक्के या प्रमाणापेक्षा कमी आहे. याचा अर्थ राज्यात अजून २.५ कोटीपेक्षा जास्त लोकांकडे, ज्यांच्या आधारे दारिद्र्य रेषा ठरविली जाते, अशा ठराविक उपभोग्य वस्तूंच्या खरेदीसाठी पुरेसे उत्पन्न नाही. दारिद्र्य रेषेखाली असलेल्या २.५ कोटी लोकसंख्येपैकी १.४ कोटी लोकसंख्या ग्रामीण भागातील आहे. योजना आयोगाने दहाव्या पंचवार्षिक योजनेअखेर (२००६-०७) दारिद्र्य रेषेखाली राहणारी लोकसंख्या



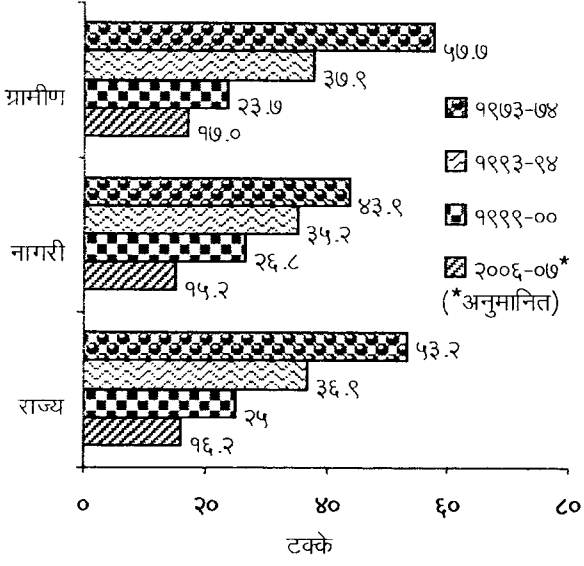
अनुमानित केली आहे. सदर अनुमानानुसार २००६-०७ अखेर राज्या १.७ कोटी लोकसंख्या दारिद्र्य रेषेखालील राहणार असून, त्यापैकी १ कोटी ग्रामीण भागातील असेल.

१२.२ कुटूंबाच्या वार्षिक उपभोक्ता खर्चाबाबत रानपा संघटनेने नमुना पाहणीच्या (५७ वी फेरी) २००१-०२ या वर्षाच्या पाहणीचे निष्कर्ष सध्या उपलब्ध झालेले आहेत. सदर निष्कर्षानुसार सतत उपोषण ग्रह राहिलेल्या (वर्षातील एकाही महिन्यात पुरेसे अन्न उपलब्ध नसलेले) राज्यातील कुटूंबाचे प्रमाण ग्रामीण भागाकरिता शून्य टक्के तर नागरी भागाकरिता ०.१ टक्के इतके कमी झाले आहे. अखिल भारतीय पातळीवर सतत उपोषणग्रस्त राहिलेल्या कुटूंबाचे प्रमाण ग्रामीण भागाकरिता ०.५ टक्के व नागरी भागाकरिता ०.१ टक्के असल्याचे दिसून येते. हंगामी उपोषण ग्रस्त (वर्षातील केवळ काही महिन्यांकरिता पुरेसे अन्न उपलब्ध असलेले) असलेल्या कुटूंबाचे प्रती हजार कुटूंबांमध्ये प्रमाण राज्यातील ग्रामीण भागात ७ तर नागरी भागात २ असल्याचे दिसून येते. अखिल भारतीय पातळीवर सदर प्रमाण ग्रामीण भागाकरिता १६ तर नागरी भागाकरिता ३ असे आहे.

१२.३ १९९३-९४ व १९९९-२००० या कालावधीमध्ये महाराष्ट्र बहुतांश राज्यामध्ये दारिद्र्याचे प्रमाणात झालेली घट नागरी भागात तुलनेत ग्रामीण भागामध्ये जास्त वेगाने झाली असल्याचे निर्देशनास येते. राज्यातील ग्रामीण भागामध्ये दारिद्र्याचे प्रमाण १९७३-७४ मधील ५७ टक्क्यांवरून कमी होऊन १९९९-२००० मध्ये ते २३.७ टक्के इतके झाले. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेच्या अखेर (२००६-०७) हे प्रमाण १७ टक्के पर्यंत कमी होण्याचे अपेक्षित आहे. सदर कालावधीमध्ये नागरी भागात दारिद्र्याचे प्रमाण ४३.९ टक्क्यांवरून २६.८ टक्क्यांपर्यंत कमी होऊन २००६-०७ पर्यंत १५.२ टक्के इतके कमी होण्याचे अपेक्षित आहे. सदर दारिद्र्याचे प्रमाण राज्यातील ग्रामीण भागाच्या तुलनेत नागरी भागामध्ये जास्त आहे.

१२.४ दहाव्या पंचवार्षिक योजनेकरिता स्थूल राज्य उत्पन्न, वृत्त उत्पादकता व योजनेवरील दरडोई खर्च इत्यादी करिता निर्धारित केलेल्या लक्ष्य विचारात घेऊन योजना आयोगाने सदर पंचवार्षिक योजनेअखेरीस (२००६-०७) दारिद्र्याचे प्रमाण अनुमानित केले असून क

महाराष्ट्रातील दारिद्र्याचे प्रमाण



प्रमुख राज्य व भारत या करिता माहिती तक्ता क्रमांक १२.१ मध्ये दिली आहे. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेमध्ये अपेक्षित लक्ष्य साध्य झाल्यास भारतामधील दारिद्र्याचे प्रमाण १९९३-९४ मधील ३६ टक्क्यांवरून २००६-०७ अखेरिस १९.३ टक्के इतके कमी होईल तर, महाराष्ट्रामधील दारिद्र्याचे प्रमाण १९९३-९४ मधील ३६.९ टक्क्यांवरून १६.२ टक्के असे कमी होईल अशी अपेक्षा आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१

काही प्रमुख राज्यांकरिता दारिद्र्याचे अनुमान २००६-०७

(टक्केवारी)

| राज्ये | ग्रामीण | नागरी | एकूण |
|--------------|---------|-------|------|
| बिहार | ४४.८ | ३२.७ | ४३.२ |
| मध्य प्रदेश | २८.७ | ३१.८ | २९.५ |
| ओरिसा | ४१.७ | ३७.५ | ४१.० |
| उत्तर प्रदेश | २४.२ | २६.२ | २४.७ |
| पश्चिम बंगाल | २१.९ | ९.० | १८.३ |
| आंध्रप्रदेश | ४.६ | १९.० | ८.५ |
| कर्नाटक | ७.८ | ८.० | ७.९ |
| महाराष्ट्र | १७.० | १५.२ | १६.२ |
| राजस्थान | ११.१ | १५.४ | १२.१ |
| तामिळनाडू | ३.७ | ९.६ | ६.६ |
| भारत | २१.१ | १५.० | १९.३ |

आधार: दहावी पंचवार्षिक योजना

१२.५ गरीबी निर्मूलन हे नियोजन प्रक्रियेतील एक मार्गदर्शक तत्व राहिले आहे. अतिरिक्त रोजगार निर्माण करणे, उत्पादित भांडवल तयार करणे, तांत्रिक व उद्योजकतेसंबंधित प्रशिक्षण देणे आणि गरिबांची उत्पन्न पातळी वाढविणे या उद्देशाने काही वर्षांपासून दारिद्र्य निर्मूलन योजनांचे बळकटीकरण करण्यात आले आहे. रोजगार निर्मितीमधील वाढच दारिद्र्याचे प्रमाण सतत कमी करण्याकरिता उपयुक्त ठरेल, अशी पूर्वीपासूनच राज्याची धारणा होती व राज्यात रोजगार हमी योजनेची अंमलबजावणी हे त्याचे फलित आहे. राज्याच्या रोजगार हमी योजनेचा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना कायद्यासाठी केलेला स्वीकार ही राज्य धोरणास मिळालेली पुष्टी होय. रोजगार हमी योजने व्यतिरिक्त राज्यात राबविण्यात येणा-या मुख्य दारिद्र्य निर्मूलन योजना म्हणजे संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, पंतप्रधान रोजगार योजना इत्यादि होत.

रोजगार

१२.६ देशातील अगदी अलिकडील दशवर्षीय जनगणना २००१ नुसार काम करणाऱ्यांचे प्रमाण आणि त्यांचे वर्गीकरण या संबंधी माहिती उपलब्ध आहे. काम करणाऱ्यांचे प्रमाण याची व्याख्या एकूण काम करणाऱ्यांची (मुख्यतः व सीमांतिक) एकूण लोक संख्येशी टक्केवारी अशी करण्यात येते. जनगणनेनुसार काम करणाऱ्यांचे मुख्यतः दोन प्रकारात वर्गीकरण करण्यात आले आहे. १) मुख्यतः काम करणारे म्हणजे वर्षभरात जास्त काळ (६ महिने वा त्यापेक्षा अधिक) काम केलेले व २) सीमांतिक काम करणारे, म्हणजे ज्याने वर्षभरात ६ महिन्यांपेक्षा कमी काळ काम केलेले. काम करणाऱ्यांचे प्रमाण अगदी अलिकडील दोन जनगणनेनुसार तक्ता क्रमांक १२.२ मध्ये दर्शविण्यात आले आहे.

तक्ता क्रमांक १२.२

राज्यातील काम करणाऱ्यांचे प्रमाण

| अनु- क्रमांक | बाब | महाराष्ट्र | | भारत | |
|-------------------------------|---|------------|------|------|------|
| | | १९९१ | २००१ | १९९१ | २००१ |
| काम करणाऱ्यांचे प्रमाण | | | | | |
| १) | एकूण | ४३.० | ४२.५ | ३७.७ | ३९.३ |
| | अ) ग्रामीण | ४९.७ | ४८.९ | ४०.२ | ४२.० |
| | ब) नागरी | ३२.३ | ३३.८ | ३०.५ | ३२.२ |
| २) | पुरुष | ५२.२ | ५३.३ | ५१.५ | ५१.९ |
| | अ) ग्रामीण | ५३.२ | ५३.९ | ५२.४ | ५२.४ |
| | ब) नागरी | ५०.६ | ५२.४ | ४९.० | ५०.९ |
| ३) | स्त्रिया | ३३.१ | ३०.८ | २२.७ | २५.७ |
| | अ) ग्रामीण | ४६.० | ४३.६ | २७.१ | ३१.० |
| | ब) नागरी | ११.४ | १२.६ | ९.७ | ११.६ |
| ४) | एकूण काम करणा-या मध्ये काम करणा-या पुरुषांचे प्रमाण | ६२.८ | ६५.२ | ७१.० | ६८.४ |
| ५) | एकूण काम करणा-या मध्ये काम करणा-या स्त्रियांचे प्रमाण | ३७.२ | ३४.८ | २९.० | ३१.६ |

काम करणाऱ्यांचे वर्गीकरण

१२.७ २००१ मधील काम करणाऱ्यांच्या वर्गीकरणावरून असे दिसून येते की राज्यातील मुख्यतः काम करणाऱ्यांचे एकूण लोकसंख्येशी प्रमाण १९९१ मधील ३९.३ टक्क्यांवरून कमी होऊन २००१ मध्ये ते ३५.९ टक्के झाले. तथापि, सीमांतिक काम करणाऱ्यांचे एकूण लोकसंख्येशी प्रमाण १९९१ मधील ३.७ टक्क्यांवरून मोठ्या प्रमाणात वाढून २००१ मध्ये ते ६.६ टक्के इतके झाले. एकूण काम करणाऱ्यांमध्ये मुख्यतः काम करणाऱ्यांचे प्रमाण १९९१ मधील ९१.४ टक्क्यांवरून कमी होऊन २००१ मध्ये ते ८४.४ टक्के झाले. परंतु, १९८१ व १९९१ या दोन्ही जनगणनांमध्ये सीमांतिक काम करणाऱ्यांचे हे प्रमाण जवळपास ९ टक्क्यांवर स्थिर होते, ते वाढून २००१ मध्ये १५.६ टक्के इतके झाले.

१२.८ सीमांतिक काम करणाऱ्यांचे पुरुषांमधील प्रमाण स्त्रियांमधील प्रमाणापेक्षा बरेच कमी असल्याचे जनगणना २००१ वरून दिसून येते. राज्यातील पुरुषांमधील सीमांतिक काम करणाऱ्यांचे प्रमाण केवळ ५.९ टक्के होते. तर स्त्रियांमधील सदर प्रमाण ९.७ टक्के होते. सीमांतिक काम करणाऱ्यांचे प्रमाण नागरी भागाच्या (२.५ टक्के) तुलनेत ग्रामीण भागात (९.७ टक्के) बरेच जास्त आढळते. यावरून ग्रामीण भागात काम करणाऱ्यांमध्ये साधारणपणे हंगामी काम करणारे जास्त असल्याचे दिसते.

१२.९ १९९१ व २००१ च्या जनगणनेनुसार (मुख्यतः व सीमांतिक) काम करणाऱ्यांची ढोबळ आर्थिक वर्गीकरणानुसार (४ गटानुसार) टक्केवारी तक्ता क्रमांक १२.३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.३

जनगणना १९९१ व २००१ नुसार काम करणाऱ्यांची (मुख्यतः व सीमांतिक) ढोबळ आर्थिक वर्गीकरणानुसार टक्केवारी

| काम करणाऱ्यांचा वर्ग | ग्रामीण | | नागरी | | एकूण | |
|-----------------------|----------|----------|---------|----------|----------|----------|
| | १९९१ | २००१ | १९९१ | २००१ | १९९१ | २००१ |
| १. शेतकरी | ४६.७ | ४२.४ | ३.२ | १.८ | ३४.० | २८.७ |
| २. शेतमजूर | ३७.४ | ३७.८ | ५.५ | ३.६ | २८.१ | २६.३ |
| ३. घरगुती उद्योग* | १.५ | २.३ | २.१ | ३.४ | १.७ | २.६ |
| ४. इतर वर्ग | १४.४ | १७.५ | ८९.२ | ९१.२ | ३६.२ | ४२.४ |
| एकूण | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| एकूण काम करणारे (०००) | (२४,०३३) | (२७,२६१) | (९,८७७) | (१३,९१२) | (३३,९१०) | (४१,१७३) |

* घरगुती उद्योगातील उत्पादन, प्रक्रिया, सेवा, दुरुस्ती किंवा वस्तू तयार करणे आणि विकणे यांच्याशी संबंधित.

१२.१० राज्यातील शेतकऱ्यांचे प्रमाण १९९१ मधील ३४.० टक्क्यांवरून कमी होऊन २००१ मध्ये ते २८.७ टक्के इतके झाले. याच कालावधीत राज्यातील शेतमजुरांचे प्रमाण सुद्धा २८.१ टक्क्यांवरून कमी होऊन २६.३ टक्के इतके झाले. राज्यात ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांचे प्रमाण १९९१ मधील ४६.७ टक्क्यांवरून कमी होऊन २००१ मध्ये ४२.४ टक्के झाले असले तरी शेतमजुरांच्या संदर्भात हे प्रमाण १९९१ मध्ये ३७.४ टक्के होते, त्यात २००१ मध्ये (३७.८ टक्के) अल्पप्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसते. घरगुती उद्योगातील काम करणाऱ्यांच्या प्रमाणात १९९१ मधील १.७ टक्क्यांवरून वाढ होऊन ते २००१ मध्ये २.६ टक्के झाल्याचे दिसून येते. २००१ मधील काम करणाऱ्यांच्या वर्गीकरणानुसार गेल्या दशकात काम करणाऱ्यांचा ओघ कृषि क्षेत्राकडून इतर क्षेत्राकडे वळल्याचे दिसते. यावरून रोजगाराबाबत गेल्या दशकाच्या तुलनेत अर्थव्यवस्थेचे कृषि क्षेत्रावरील अवलंबित्व कमी झाल्याचे दिसून येते. तथापि, अजून ५५ टक्के काम करणारे कृषि क्षेत्रावर अवलंबून आहेत.

कारखान्यांतील रोजगार

१२.११ कारखान्यातील रोजगारामध्ये कारखाना अधिनियम १९४८ च्या विभाग २ एम. (i), २ एम. (ii) व विभाग ८५ खालील नोंद झालेल्या कारखान्यांतील रोजगारांचा समावेश आहे. अखिल भारतीय स्तरावर कारखान्यांतील रोजगारासंबंधी उपलब्ध असलेली अगदी अलिकडची आकडेवारी २००१ या वर्षाची असून त्यानुसार कारखान्यातील सरासरी दैनिक रोजगाराच्या बाबतीत महाराष्ट्र राज्याने देशातील सर्व राज्यांमध्ये प्रथम क्रमांक कायम राखला आहे.

१२.१२ मागील काही वर्षांच्या आकडेवारीनुसार राज्यातील कारखान्यातील सरासरी दैनिक रोजगार कमी होत असल्याचे दिसून येते. कारखाने बंद होणे किंवा कारखान्यांचे नुतनीकरण या कारणास्तव कामगारांची संख्या कमी होण्याची शक्यता आहे. राज्यातील कारखान्यांतील रोजगाराबाबत अगदी अलिकडील (२००३) उपलब्ध माहिती नुसार महाराष्ट्रात कारखान्यांतील सरासरी दैनिक रोजगार ११.७ लाख होता, तो २००२ मधील सरासरी दैनिक रोजगारापेक्षा (११.८ लाख) ०.८ टक्क्यांनी कमी झाला. तसेच गेल्या दशकात कारखान्यांतील एकूण रोजगारामधील स्त्रियांचे प्रमाण ६ ते ७ टक्के इतके स्थिर राहिल्याचे आढळले. कारखान्यांतील एकूण रोजगारांमध्ये वस्तुनिर्माण क्षेत्राचा वाटा ९२ टक्के असून त्या अंतर्गत ग्राहक वस्तु उद्योग, पुनर्निर्माण वस्तु उद्योग व भांडवली वस्तु उद्योग यांचा समावेश होतो. प्रमुख उद्योग गटानुसार कारखान्यातील रोजगार या प्रकाशनाच्या भाग २ मधील तक्ता क्रमांक ४८ मध्ये दर्शविला आहे.

१२.१३ कारखान्यांतील रोजगार विचारात घेता, ग्राहक वस्तु उद्योग, पुनर्निर्माण वस्तु उद्योग व भांडवली वस्तु उद्योग यांच्या सापेक्ष महत्त्वात १९६१ ते २००३ या कालावधीत लक्षणीय बदल झाला आहे. १९६१ मध्ये ग्राहक वस्तु उद्योगांचे एकूण कारखान्यांतील रोजगारात प्राबल्य होते व त्यांचा हिस्सा ६५ टक्के इतका होता. त्यांचा हा हिस्सा कमी होऊन तो २००३ मध्ये ३६ टक्के इतका झाला. कारखान्यांतील रोजगाराचा हिस्सा कमी होण्याचे प्रमुख कारण वस्त्रोद्योग गटातील रोजगारात झालेली मोठ्या प्रमाणावरील घट हे आहे. वस्त्रोद्योग गटातील रोजगार १९६१ मधील ३.७ लाखावरून निम्न्यापेक्षा कमी होऊन २००३ मध्ये १.८ लाख इतका झाला. याउलट, याच कालावधीत पुनर्निर्माण वस्तु व भांडवली वस्तु उद्योगात भरीव वाढ दिसून आली कारण त्यांचा रोजगारातील एकत्रित हिस्सा जो १९६१ मध्ये ३२ टक्के होता तो वाढून २००३ मध्ये ५६ टक्के इतका झाला.

१२.१४ पुनर्निर्माण वस्तु उद्योगांतील (रसायने, पेट्रोलियम, रबर, प्लास्टिक आणि मूलभूत धातू) रोजगार १९६१ मधील १.३ लाखावरून वाढून २००३ मध्ये तो ३.६ लाख इतका झाला. याच कालावधीत भांडवली वस्तु उद्योगांमधील (यंत्रे व यंत्रसामग्री आणि परिवहन सामग्री) रोजगार १.२ लाखावरून वाढून तो ३ लाख इतका झाला.

वैश्विक कालीन वृद्धिदर

१२.१५ १९६१ ते २००३ या कालावधीत कारखान्यांतील रोजगाराचा वार्षिक वृद्धिदर एक टक्के इतका होता. परंतु याच कालावधी

करिता पुनर्निर्माण वस्तु उद्योग आणि भांडवली वस्तु उद्योग यांच्या एकत्रित रोजगाराचा वार्षिक वृद्धिदर जास्त असून तो १.९ टक्के इतका होता. कारखान्यातील रोजगाराचा १९६१ ते १९९० या कालावधीतील वार्षिक वृद्धिदर १.३ टक्के इतका होता तर १९९१ ते २००३ या कालावधीत कारखान्यातील रोजगारात अत्यल्प वृद्धीची नोंद झाली. कातडी कमावणे व चामड्याची उत्पादने (३.२ टक्के), पेट्रोलियम, रबर, प्लास्टिक (३.२ टक्के), रसायने व रासायनिक उत्पादने (३.० टक्के), खाद्य उत्पादने आणि पेये इत्यादी (३.० टक्के) आणि मूलभूत धातू व धातूची उत्पादने (२.१ टक्के) या उद्योग गटांबाबत १९६१ ते २००३ या कालावधीतील कारखान्यातील रोजगाराचा वार्षिक वृद्धिदर, सर्व उद्योगांसाठी मिळून असलेल्या वृद्धिदरांपेक्षा (१ टक्के) दुप्पटीहून जास्त होता. त्याच कालावधीत कारखान्यांच्या संख्येचा वार्षिक वृद्धिदर बराच जास्त म्हणजे ३.६ टक्के होता.

नवीन नोंदणी झालेले कारखाने

१२.१६ कारखाने अधिनियम, १९४८ अंतर्गत राज्यात २००३ मध्ये १,३७० नवीन कारखाने नोंदविले गेले. या कारखान्यातील रोजगार ४८ हजार इतका होता. नवीन नोंदलेल्या कारखान्यांपैकी ७९ टक्के कारखाने प्रत्येकी ५० पेक्षा कमी कामगार असणारे होते. या नवीन नोंदणी झालेल्या कारखान्यांत रोजगारामध्ये जास्त प्रमाण (१) वस्त्रोद्योग (२२.७ टक्के), (२) खाद्य उत्पादने आणि पेये (१०.२ टक्के), (३) यंत्रे व यंत्रसामग्री (८.० टक्के), (४) धातूच्या तयार वस्तु (७.९ टक्के), (५) रसायने (५.७ टक्के), (६) मूलभूत धातू व धातूची उत्पादने (५.० टक्के) या उद्योग गटांचे होते.

१२.१७ मुंबई शहर, मुंबई उपनगर, ठाणे व पुणे या औद्योगिक दृष्ट्या प्रगत जिल्हयांव्यतिरिक्त इतर भागात उद्योग स्थापन करण्यास प्रोत्साहन देण्याचे शासकीय धोरण आहे. या धोरणाच्या परिणामी राज्यातील कारखान्यांतील एकूण रोजगारात वरील चार जिल्हे वगळता इतर जिल्हयांचा वाटा १९७५ मध्ये असलेल्या २३ टक्क्यांवरून २००३ मध्ये ४४ टक्क्यांपर्यंत वाढला.

१२.१८ महाराष्ट्र राज्याची स्थापन झाल्यानंतरच्या सुरुवातीच्या दोन दशकात कोकण विभागातील कारखान्यांतील दैनिक रोजगाराच्या संख्येत वाढ दिसून आली व नंतरच्या काळात मात्र त्यात घट दिसून आली. त्याचबरोबर मराठवाडा व विदर्भ या दोन विभागात १९८१ नंतर कारखान्यांतील रोजगाराची स्थिती सुधारलेली आहे असे दिसून आले. पश्चिम महाराष्ट्रात मात्र कारखान्यांतील दैनिक सरासरी रोजगारात सातत्याने वाढ दिसून आली.

रोजगार विषयक स्थिती

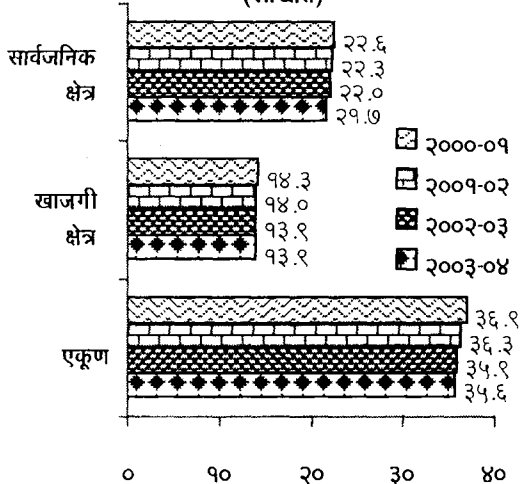
१२.१९ 'रोजगार क्षेत्र माहिती' कार्यक्रमांतर्गत सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रातील आस्थापनांमध्ये ३१ मार्च, २००४ रोजी एकूण ३५.६ लाख रोजगार होता व तो ३१ मार्च, २००३ रोजीच्या ३५.९ लाख रोजगाराच्या तुलनेत ०.८ टक्क्यांनी कमी होता. या कार्यक्रमांतर्गत आकडेवारीनुसार मागील काही वर्षांपासून सार्वजनिक व खाजगी या दोन्ही क्षेत्रांमधील रोजगारात होणारी घट कमी प्रमाणात असली तरी, ती सतत होत आहे. सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रांत २०००-०१ मध्ये एकूण रोजगार ३७ लाख होता. तो ३.८ टक्क्यांनी कमी होऊन २००३-०४ मध्ये ३५.६ लाख इतका झाला. मार्च, २००४ अखेरीस सार्वजनिक क्षेत्रात २१.७ लाख व खाजगी क्षेत्रात १३.९ लाख इतका रोजगार होता आणि तो मार्च, २००१ अखेरीस सार्वजनिक क्षेत्रातील २२.६ लाख व खाजगी क्षेत्रातील १४.३ लाख रोजगाराच्या तुलनेत अनुक्रमे ४ टक्के व २.८ टक्क्यांनी कमी होता.

रोजगार क्षेत्र माहिती

सेवायोजन कार्यालये (रिक्त पदे अधिसूचित करण्याची सक्ती) अधिनियम, १९५९ मध्ये केलेल्या तरतुदीनुसार या कार्यक्रमांमध्ये सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रातील आस्थापनांची संख्या व त्यातील रोजगार याबाबत दर तिमाहीस आकडेवारी गोळा केली जाते. रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमांतर्गत, सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रातील बृहन्मुंबईत ज्या आस्थापनांमध्ये २५ किंवा अधिक कर्मचारी कार्यरत आहेत आणि राज्यातील उर्वरित भागांत ज्या आस्थापनांमध्ये १० किंवा अधिक कर्मचारी आहेत, अशा आस्थापनांकडून आकडेवारी गोळा करण्यात येते.

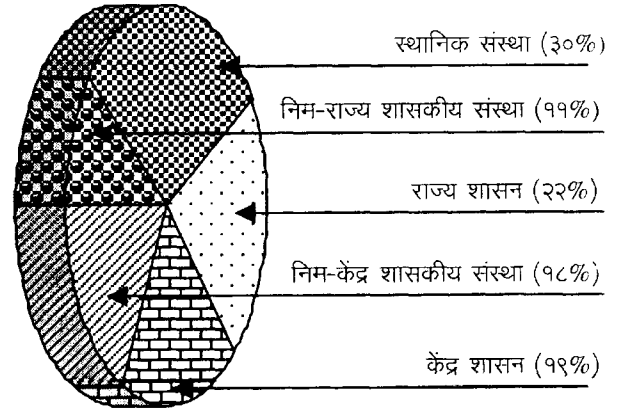
१२.२०. रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमांतर्गत माहितीवरून राज्यात मार्च, २००४ अखेरीस एकूण ३५.६ लाख रोजगारापैकी २१.७ लाख रोजगार हा सार्वजनिक क्षेत्रात होता. या तुलनेत ३१ मार्च, २००३ रोजी तो २२ लाख इतका होता. सार्वजनिक क्षेत्रातील एकूण रोजगारांमध्ये स्थानिक संस्था (३० टक्के), राज्य शासन (२२ टक्के), केंद्र शासन

रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमांतर्गत रोजगार उपलब्धी (लाखात)



(१९ टक्के) यांचा एकत्रित वाटा ७१ टक्के इतका होता. तर निम-केंद्र शासकीय संस्था आणि निम-राज्य शासकीय संस्था यांचा वाटा अनुक्रमे १८ टक्के आणि ११ टक्के असा होता. खाजगी क्षेत्रातील रोजगार मार्च, २००४ अखेरीस १३.९२ लाख होता, तो आधीच्या वर्षी मार्च, २००३ अखेरीस १३.८८ लाख होता. रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमांतर्गत मार्च, २००४ अखेरीस नोंद झालेल्या एकूण रोजगारापैकी १४.७ टक्के स्त्रिया होत्या.

रोजगार क्षेत्र माहिती कार्यक्रमाखाली मार्च, २००४ अखेरीस असलेल्या सार्वजनिक क्षेत्रातील रोजगाराची विभागणी



राज्य शासन व स्थानिक स्वराज्य संस्थांमधील रोजगार

१२.२१ शासकीय कर्मचारी गणना, २००३ अनुसार राज्य शासन व स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये काम करीत असलेल्या नियमित व इतर कर्मचाऱ्यांची एकूण संख्या १२ लाख होती. त्यापैकी ५.८ लाख कर्मचारी राज्य शासनाचे, ४.४ लाख कर्मचारी जिल्हा परिषदांचे, ०.६ लाख कर्मचारी नगरपरिषदांचे तर १.२ लाख कर्मचारी महानगरपालिकांचे (बृहन्मुंबई वगळून) होते. राज्य शासन व स्थानिक स्वराज्य संस्थांमधील (बृहन्मुंबई महानगरपालिका वगळून) १ जुलै, २००३ रोजीची कर्मचाऱ्यांची संख्या तत्का क्रमांक १२.४ मध्ये देण्यात आली आहे.

तत्का क्रमांक १२.४

राज्य शासन व स्थानिक स्वराज्य संस्थांमधील कर्मचारी - १ जुलै, २००३ रोजी

| प्रकार | नियमित | इतर @ | एकूण | पैकी, स्त्रिया |
|------------------------|--------|-------|-------|----------------|
| १. राज्य शासन | ५.११ | ०.७१ | ५.८२ | ०.९३ |
| २. जिल्हा परिषदा (३३) | ३.१२ | १.२७ | ४.३९ | १.९७ |
| ३. नगरपरिषदा (२२८) | ०.५४ | ०.०५ | ०.५९ | ०.१६ |
| ४. महानगरपालिका** (२१) | १.२४ | - | १.२४* | ०.३६ |
| एकूण | १०.०१ | २.०३ | १२.०४ | ३.४२ |

@ यात रोजंदारीवरील/कार्यव्ययी कर्मचाऱ्यांचा समावेश आहे.

* नियमित व इतर कर्मचारी अशी विंगतवारी उपलब्ध नाही.

** बृहन्मुंबई वगळून

रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रे

१२.२२ महाराष्ट्र राज्यातील रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांत २००३-०४ मध्ये नवीन नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या ८.५ लाख होती, ती २००२-०३ मध्ये नोंदणी झालेल्या ६.९ लाख व्यक्तींच्या संख्येपेक्षा २३.२ टक्क्यांनी जास्त होती. २००३-०४ या वर्षी अधिसूचित केलेल्या रिक्त पदांची संख्या आणि भरलेल्या पदांची संख्या ही अनुक्रमे ५१.६ हजार व १७.६ हजार इतकी होती, तर ती पूर्वीच्या वर्षी अनुक्रमे ४४.४ हजार व १०.१ हजार इतकी होती. २००३-०४ मध्ये प्रत्यक्ष भरलेली १७.६ हजार पदे ही पूर्वीच्या वर्षापेक्षा ७४.३ टक्क्यांनी जास्त होती. २००४-०५ या वर्षामध्ये (डिसेंबर अखेरपर्यंत) केंद्रांमध्ये नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या ६.६ लाख होती व ती २००३-०४ च्या तत्सम कालावधीत नोंदणी झालेल्या (६.४ लाख) व्यक्तींपेक्षा ३.१ टक्क्यांनी जास्त होती. २००४-०५ (डिसेंबर अखेरपर्यंत) मध्ये अधिसूचित केलेल्या रिक्त पदांची संख्या आणि प्रत्यक्ष भरलेली पदे ही अनुक्रमे ३१.७ हजार व ११ हजार इतकी होती. २००३-०४ च्या त्याच कालावधीत ती ४०.१ हजार व १३.५ हजार इतकी होती. नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या, अधिसूचित केलेली रिक्त पदे व भरलेली पदे ह्याबाबतचा तपशील भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ५१ मध्ये दिला आहे.

१२.२३ रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांच्या चालू नोंदवहीत डिसेंबर, २००४ अखेरीस असलेल्या व्यक्तींची संख्या ४१.१ लाख होती व त्यापैकी ८.५ लाख (२०.७ टक्के) स्त्रिया होत्या. चालू नोंदवहीत डिसेंबर, २००४ अखेरीस नोंद झालेल्या व्यक्तींपैकी सुमारे १७.१ टक्के व्यक्ती निरक्षर धरून माध्यमिक शालांत परीक्षेपेक्षा कमी शिक्षण झालेल्या होत्या. सुमारे ५०.१ टक्के व्यक्ती माध्यमिक शालांत परीक्षा उत्तीर्ण झालेल्या आणि ८.७ टक्के व्यक्ती विविध शाखांतील पदवीधर होत्या. बहुतांश पदवीधर हे अभियांत्रिकी/तंत्रज्ञान व वैद्यकीय शाखा वगळता इतर शाखांतील होते. चालू नोंदवहीत पदव्युत्तर पदवीधरांचे प्रमाण एक टक्क्यापेक्षा कमी (०.९४ टक्के) होते व त्यापैकी बहुतेक सर्व पदव्युत्तर पदवीधर हे अभियांत्रिकी/तंत्रज्ञान व वैद्यकीय शाखा वगळता इतर शाखांतील होते. रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांच्या चालू नोंदवहीत डिसेंबर, २००४ अखेर असलेल्या व्यक्तींची संख्या भाग-२ मधील तक्ता क्र.५२ मध्ये दिली आहे.

राज्य पुरस्कृत रोजगार योजना/कार्यक्रम

(१) रोजगार हमी योजना

१२.२४ राज्यात १९७२ पासून रोजगार हमी योजना राबविण्यात येत आहे. राज्यातील ग्रामीण भागात व 'क' वर्ग नगरपरिषदांच्या क्षेत्रात ज्यांना रोजगाराची जरूरी आहे व जे शारीरिक श्रमाचे अकुशल काम करण्यास तयार आहेत त्यांना 'मागेल त्याला काम' या तत्त्वानुसार लाभदायक व उत्पादक रोजगार पुरविणे हा या योजनेचा मूलभूत उद्देश आहे. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत फलोत्पादन विकास कार्यक्रम, जवाहर विहिरी योजना, नापीक जमिनीवर वृक्ष लागवड व रेशीम उद्योग या उपयोजनांची सुध्दा अंमलबजावणी करण्यात येते. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत घेतलेल्या कामांची संख्या, मनुष्यदिवस आणि झालेला खर्च या संबंधीची अलिकडील आकडेवारी तक्ता क्रमांक १२.५ मध्ये देण्यात

तक्ता क्रमांक १२.५

रोजगार हमी योजनेअंतर्गत कामांची संख्या, मनुष्य दिवस आणि खर्च

| वर्ष | पूर्ण केलेल्या कामांची संख्या (मार्च अखेर) | पुरविलेले मनुष्यदिवस (कोटी) | झालेला खर्च (कोटी रुपये) |
|--------------------------------|--|-----------------------------|--------------------------|
| २०००-०१ | ३२,८५६ | ११.१ | ५७७.९ |
| २००१-०२ | ३०,५७९ | १६.२ | ९१३.५ |
| २००२-०३ | ४२,५०० | १५.५ | ८८९.० |
| २००३-०४ | ६८,७८२ | १८.५ | १,०५०.७ |
| २००४-०५(अ) (डिसेंबर पर्यंत) | ६८,१०९ | १९.४ | १,०८०.१ |

(अ) अस्थायी

आली आहे. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये १८.५ कोटी मनुष्यदिवसांचे काम पुरविण्यात आले होते, तर २००२-०३ मध्ये ते १५.५ कोटी इतके होते. रोजगार हमी योजनेखाली २००४-०५ (डिसेंबर, २००४ अखेर) या वर्षात १९.४ कोटी मनुष्यदिवसांचे काम पुरविण्यात आले. रोजगार हमी योजनेअंतर्गत २००४-०५ (डिसेंबर, २००४ अखेर) या वर्षी मजुरांची प्रतिदिन सरासरी उपस्थिती ४.८ लाख, तर २००३-०४ या वर्षी ती ५.८ लाख होती. रोजगार हमी योजनेच्या आरंभापासून मार्च, २००४ अखेरपर्यंत विविध प्रकारची ५ लाख कामे घेण्यात आली व त्यापैकी ४.८ लाख कामे पूर्ण करण्यात आली. पूर्ण झालेल्या कामांपैकी ६२ टक्के कामे ही मृदूसंधारण व भू-विकासाची आणि १० टक्के कामे सिंचनाची होती. रोजगार हमी योजनेखाली महाराष्ट्र राज्यात घेण्यात आलेली प्रकारानुसार कामे व त्यांवरील खर्च भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ५३ मध्ये देण्यात आला आहे.

(२) रोजगार प्रोत्साहन कार्यक्रम

१२.२५ या कार्यक्रमाखाली सुशिक्षित बेरोजगारांना नोकरी मिळविण्यासाठी उपयोगी होईल असे कौशल्य संपादन करण्याकरिता किंवा कौशल्याचा दर्जा वाढविण्याकरिता प्रशिक्षण दिले जाते. २००३-०४ मध्ये प्रशिक्षणाख्यांची संख्या ४,३९५ होती, तर २००२-०३ मध्ये ती ३,६१७ होती. २००३-०४ मध्ये प्रशिक्षण पूर्ण केलेल्या प्रशिक्षणाख्यांची संख्या ३,०४९ होती, ती २००२-०३ मध्ये २,४३६ होती. प्रशिक्षण घेतलेल्यांपैकी विविध नोकऱ्यांमध्ये सामावून घेतल्या गेलेल्या उमेदवारांची संख्या २००३-०४ मध्ये ७९६ होती, तर आधीच्या वर्षी ती ७०० होती. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर, २००४ अखेरपर्यंत प्रशिक्षण घेतलेल्या ४,३५७ उमेदवारांपैकी ६३६ उमेदवार (१४.६ टक्के) स्त्रिया होत्या, या तुलनेत आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत (डिसेंबर, २००३ अखेर) ३,०३१ उमेदवारांपैकी ६११ उमेदवार (२०.२ टक्के) स्त्रिया होत्या.

(३) बीज भांडवल अर्थसहाय्य योजना

१२.२६ या योजनेद्वारे महाराष्ट्रातील स्थायी रहिवासी असलेल्या आणि सातवी परीक्षा उत्तीर्ण झालेल्या किंवा औद्योगिक प्रशिक्षण

संस्थांतून प्रशिक्षण पूर्ण केलेल्या सुशिक्षित बेरोजगारांना त्यांच्या प्रकल्पाच्या खर्चाच्या १५ ते २२.५ टक्क्यांपर्यंत व जास्तीत जास्त १.५ लाख रुपये मर्यादेपर्यंत 'बीज भांडवल अर्थसहाय्य' म्हणून देण्यात येते. या कार्यक्रमांतर्गत २००३-०४ या वर्षात ६२५ लाभाध्यांना २.५ कोटी रुपयांचे आर्थिक सहाय्य करण्यात आले. वर्ष २००४-०५ मध्ये (डिसेंबर, २००४ अखेर) ४६७ लाभाध्यांना २.२ कोटी रुपये आर्थिक सहाय्य देण्यात आले.

(४) शिकाऊ उमेदवारी प्रशिक्षण कार्यक्रम

१२.२७ शैक्षणिक वर्ष २००४-०५ मध्ये (जुलै ते जून) विविध व्यवसाय शाखांत प्रशिक्षण घेत असलेल्या शिकाऊ उमेदवारांची संख्या ४६.३ हजार असून ती पूर्वीच्या शैक्षणिक वर्षांत शिक्षण घेतलेल्या ३९.३ हजार उमेदवारांपेक्षा १७.८ टक्क्यांनी जास्त आहे.

(५) उद्योजकता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

१२.२८ सुशिक्षित बेरोजगार तरुणांना स्वयंरोजगारासाठी प्रवृत्त करणे व प्रशिक्षण देणे हा या कार्यक्रमाचा उद्देश आहे. पध्दतशीर प्रशिक्षणाद्वारे उद्योजकतेचा विकास घडवून आणण्यासाठी महाराष्ट्र उद्योजकता विकास केंद्राकडून या कार्यक्रमाखाली एक ते तीन आठवड्यांचे प्रशिक्षणाचे कार्यक्रम राबविले जातात. ह्या कार्यक्रमांतर्गत प्रशिक्षण दिलेल्या तरुणांची संख्या २००३-०४ मध्ये ६,२२७ होती. तर २००४-०५ या वर्षात (डिसेंबर, २००४ अखेर) ती २,३१६ होती.

केंद्र पुरस्कृत रोजगार कार्यक्रम

(१) संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

१२.२९ भारत सरकारने 'आश्वासित रोजगार योजना' व 'जवाहर ग्राम समृद्धी योजना' या दोन योजनांचे विलीनीकरण करून 'संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना' ही नवीन योजना देशात सप्टेंबर, २००९ पासून सुरू केली. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेत संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना ही दारिद्र्य निर्मूलनासाठी आयोजित महत्त्वाच्या योजनांपैकी एक आहे. महाराष्ट्र राज्यात ही योजना जानेवारी, २००२ पासून राबविण्यात येत आहे. ह्या योजनेची सांगड धान्याच्या हमीशी घालण्यात आली आहे. ग्रामीण भागात अतिरिक्त रोजगार पुरविणे व त्यासोबत गरीब जनतेला धान्याची हमी देऊन त्या जनतेचा पोषण स्तर सुधारणे असा या योजनेचा प्राथमिक उद्देश आहे. या योजनेचा दुसरा उद्देश ग्रामीण भागात सामूहिक, सामाजिक व आर्थिक टिकाऊ मालमत्ता निर्माण करणे व पायाभूत सोयींचा विकास करणे असा आहे. ही केंद्र पुरस्कृत योजना असून, केंद्र व राज्य शासनाचा योजनेवरील रोखीच्या खर्चाचे प्रमाण ७५:२५ असे आहे. तथापि, वस्तु स्वरूपात दिल्या जाणाऱ्या अन्नधान्याचा १०० टक्के खर्च केंद्र शासन भागवित असून केंद्राकडून राज्यास मोफत धान्य पुरविले जाते. या योजनेअंतर्गत मजुरांना प्रति मनुष्यदिवस ५ कि.ग्रॅ. या प्रमाणात गहू प्रति कि.ग्रॅ. ५ रुपये व तांदूळ प्रति कि.ग्रॅ. ६ रुपये या दराने उपलब्ध करून देण्यात येतो. एकूण मजुरीतून अन्नधान्याची किंमत वजा करून उर्वरित मजुरी रोखीने देण्यात येते.

१२.३० संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना ही २००३-०४ पर्यंत दोन स्रोतांमध्ये राबविण्यात येत होती. केंद्र शासनाने २००४-०५ पासून सदर योजनेचे दोन्ही स्रोत एकत्र केले. तथापि, अंमलबजावणीचे टप्पे

पूर्वीप्रमाणेच म्हणजेच जिल्हा परिषद, पंचायत समिती व ग्रामपंचायत असे असून उपलब्ध निधी त्यांना अनुक्रमे २० टक्के, ३० टक्के व ५० टक्के असा वाटला जातो.

१२.३१ जिल्हा परिषद व पंचायत समित्यांना मिळणाऱ्या एकूण निधी व अन्नधान्यापैकी २२.५ टक्के हिस्सा दारिद्र्यरेषेखालील अनुसूचित जाती/अनुसूचित जमातींच्या कुटुंबांसाठीच्या वैयक्तिक लाभधारक योजनांकरिता पुरवावयाचा असतो. तसेच ग्रामपंचायत स्तरावरील निधी व अन्नधान्यापैकी ५० टक्के हिस्सा अनुसूचित जाती/अनुसूचित जमातींच्या वस्त्यांमध्ये गरजेच्या पायाभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी पुरवावयाचा असतो.

१२.३२ या योजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये पहिल्या आणि दुसऱ्या स्रोतात मिळून ६.३ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार पुरविण्यात आला होता. तर २००२-०३ मध्ये ५.३ कोटी मनुष्यदिवस पुरविण्यात आला होता. २००४-०५ या वर्षात डिसेंबर, २००४ अखेर ३७० कोटी रुपये (मागील वर्षाचा अखर्चित निधी ३३ कोटी रुपये जमेस धरून) उपलब्ध करून देण्यात आला व त्यापैकी २८० कोटी रुपये खर्च झाले असून सदर कालावधीत ३.९ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला.

(२) स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना

१२.३३ 'एकात्मिक ग्रामीण विकास कार्यक्रम' व इतर स्वयंरोजगार कार्यक्रमांची पुनर्रचना करून केंद्र सरकारने 'स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना' एप्रिल, १९९९ पासून सुरू केली आहे. बँकेचे कर्ज व शासकीय अनुदान याद्वारे योजनेअंतर्गत लाभधारक गरीब कुटुंबांना कायमस्वरूपी उत्पन्न निर्माण करणारी मत्ता पुरवून तीन वर्षे कालावधीत दारिद्र्यरेषेच्या वर आणणे हा स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेचा उद्देश आहे. या योजनेसाठी वित्त पुरवठ्याचे स्वरूप केंद्र व राज्य शासन यांमध्ये ७५:२५ या प्रमाणात आहे. ह्या कार्यक्रमाखाली एका व्यक्तीला किंवा अनेक व्यक्ती मिळून बनलेल्या स्वसहाय्य गटांना सहाय्य केले जाते. ग्रामीण भागातील गरिबांना स्वसहाय्य गटांमध्ये संघटित करून या कार्यक्रमाद्वारे गट पध्दतीने सहाय्य देण्यावर भर दिला जातो. या कार्यक्रमाखालील लाभधारकांना स्वरोजगारी म्हणून ओळखले जाते. २००३-०४ मध्ये स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेअंतर्गत ६०,६५९ स्वरोजगारींना (वैयक्तिक व स्वसहाय्य गट) ६० कोटी रुपयांचे अनुदान व १०० कोटी रुपयांचे कर्ज वाटप करण्यात आले. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर अखेरपर्यंत २८,८०३ स्वरोजगारींना २८.९ कोटी रुपयांचे अनुदान व ४८.१ कोटी रुपयांचे कर्ज वाटप करण्यात आले, तर आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत २५,०७४ स्वरोजगारींना २५ कोटी रुपयांचे अनुदान व ४१.८ कोटी रुपयांचे कर्ज वाटप करण्यात आले होते. २००३-०४ मध्ये ६०,६५९ स्वरोजगारींपैकी ४०,०१९ स्वरोजगारी (६६ टक्के) स्त्रिया होत्या. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर अखेर पर्यंत एकूण स्वरोजगारींमध्ये स्त्री स्वरोजगारींचे प्रमाण ७० टक्के इतके जास्त होते.

१२.३४ २००३-०४ मधील एकूण ६०,६५९ स्वरोजगारींपैकी ४५,४९४ स्वसहाय्य गट स्वरोजगारी हे ४,३०९ स्वसहाय्य गटांतील होते. स्वसहाय्य गट स्वरोजगारींमध्ये स्त्री स्वरोजगारींचे प्रमाण २००३-०४ मध्ये ७६ टक्के होते. २००४-०५ मध्ये (डिसेंबर अखेर पर्यंत) हे प्रमाण ७८ टक्के आहे. स्वसहाय्य गट स्वयंरोजगारींना दिलेले अनुदान व कर्जाचा तपशील तक्ता क्रमांक १२.६ मध्ये देण्यात आला आहे.

तक्ता क्रमांक १२.६
स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेअंतर्गत स्वसहाय्यित गट
स्वरोजगारींना दिलेले अनुदान व कर्ज

| वर्ष | सहाय्यित स्वसहाय्यित गट (संख्या) | स्वसहाय्यित गट स्वरोजगारी (संख्या) | अनुदान (कोटी रुपये) | कर्ज (कोटी रुपये) |
|----------|--|--|---------------------------|-------------------------|
| २००१-०२ | २,३५० | २५,३५७ | २८.९० | ३९.९३ |
| २००२-०३ | ३,२२७ | ३४,१२९ | ३६.२० | ५१.४२ |
| २००३-०४ | ४,३०९ | ४५,४९४ | ४४.६९ | ६७.४७ |
| २००४-०५* | २,२३० | २३,२२१ | २२.८८ | ३६.०१ |

*डिसेंबर,२००४ अखेरपर्यंत

(३) स्वर्णजयंती शहरी रोजगार योजना

१२.३५ केंद्र शासनाने 'नेहरू रोजगार योजना', 'नागरी भागातील गरिबांसाठी असलेली मूलभूत सेवा योजना' आणि 'पंतप्रधानांचा एकात्मिक नागरी दारिद्र्य निर्मूलन कार्यक्रम' या तीन योजनांऐवजी 'स्वर्णजयंती शहरी रोजगार योजना' डिसेंबर, १९९७ मध्ये सुरू केली आहे. या योजनेसाठी केंद्र व राज्य शासनांकडून ७५:२५ या प्रमाणात निधी उपलब्ध करून दिली जाते. ही योजना दारिद्र्यरेषेखालील इयत्ता नववीपर्यंत शिकलेल्या शहरी बेरोजगारांना किंवा अर्धरोजगारांना स्वयंरोजगार उपक्रम उभारण्यासाठी प्रोत्साहित करून किंवा वेतनी रोजगार पुरवून रोजगारासाठी सहाय्य करते. या योजनेत 'शहरी स्वयंरोजगार कार्यक्रम' आणि 'शहरी वेतनी रोजगार कार्यक्रम' या दोन उपयोजनांचा समावेश आहे.

१२.३६ शहरी स्वयंरोजगार कार्यक्रमाखाली २००३-०४ मध्ये २.८ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व लाभधारकांची संख्या ८,३३२ होती. चालू वर्षी डिसेंबर, २००४ अखेरपर्यंत १.५ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व लाभार्थ्यांची संख्या ४,०३७ होती, तर आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत १.८ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व लाभार्थ्यांची संख्या ५,४५९ होती. २००३-०४ मध्ये २१,७५८ लाभार्थ्यांना स्वयंरोजगाराचे प्रशिक्षण देण्यासाठी ३.७ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. २००४-०५ मध्ये (डिसेंबर अखेर) ७,५५७ लाभार्थ्यांना स्वयंरोजगाराचे प्रशिक्षण देण्यासाठी १.१ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. या तुलनेत आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत १०,३३७ लाभार्थ्यांना स्वयंरोजगाराचे प्रशिक्षण देण्यासाठी १.४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले होते. शहरी वेतनी रोजगार कार्यक्रमांतर्गत २००३-०४ मध्ये ५.९ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व ३.२ लाख मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर पर्यंत १.८ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व ७६ हजार मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला. या तुलनेत आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत ४.४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले व १.९ लाख मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला.

(४) पंतप्रधान रोजगार योजना

१२.३७ पंतप्रधान रोजगार योजना राज्याच्या ग्रामीण व नागरी विभागातील सुशिक्षित बेरोजगार युवकांना स्वयंरोजगार उपलब्ध करून देण्यासाठी राबविण्यात येत आहे. या योजनेअंतर्गत १८ ते ३५ वयोगटातील (अनुसूचित जाती/अनुसूचित जमाती, माषी सैनिक, शारीरिक दृष्ट्या

अपंग आणि स्त्रिया यांना १० वर्षे शिथिल) किमान इयत्ता ८ वी उत्तीर्ण किंवा आयटीआय उत्तीर्ण किंवा सरकारमान्य संस्थेतून कमीत कमी ६ महिन्यांचा त्रिचिक शिक्षण कोर्स घेतलेले व ज्यांच्या कुटुंबाचे वार्षिक उत्पन्न ४० हजार रुपयांपेक्षा जास्त नाही अशा व्यक्ती योजनेचा लाभ घेण्यास पात्र आहेत. या योजनेखाली व्यापार क्षेत्रासाठी १ लाख रुपयांचे व इतर (उद्योग व सेवा) क्षेत्रासाठी २ लाख रुपयांच्या प्रकल्पांना आर्थिक सहाय्य दिले जाते. उद्योजकास ५ ते १६.२५ टक्के नगदी भांडवल उभारणे आवश्यक आहे. उर्वरित रक्कम कर्जाच्या स्वरूपात बँक देते. या योजनेखाली २००३-०४ वर्षात १२,७३४ लाभार्थ्यांना ७४.१ कोटी रुपयांचे कर्ज बँकेने मंजूर केले व २००४-०५ मध्ये (डिसेंबर अखेर पर्यंत) १२,८४८ लाभार्थ्यांना ७५.८ कोटी रुपयांचे कर्ज मंजूर करण्यात आले.

निर्माण झालेला एकूण रोजगार

१२.३८ वर नमूद केलेल्या सर्व केंद्र पुरस्कृत रोजगार कार्यक्रमांतर्गत २००३-०४ मध्ये एकूण ६.३ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला. या तुलनेत २००२-०३ मध्ये ५.४ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला होता. २००४-०५ मध्ये एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीत ३.९ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला, तर आधीच्या वर्षी तत्सम कालावधीत ३.४ कोटी मनुष्यदिवस रोजगार निर्माण करण्यात आला होता. महाराष्ट्र राज्यात राबविण्यात येणाऱ्या केंद्रपुरस्कृत रोजगार कार्यक्रमांची प्रगती भाग-२ मधील तक्ता क्र.५४ मध्ये देण्यात आली आहे.

औद्योगिक संबंध

१२.३९ कारखान्यातील संप व टाळेबंदीमुळे राज्यात काम थांबलेल्या प्रकरणांची २००३ या वर्षातील संख्या २७ होती. त्यात घट होऊन २००४ मध्ये ती २३ झाली. काम थांबविल्याच्या प्रकरणामुळे २००४ मध्ये त्यात सहभागी असलेल्या कामगारांची संख्या (६,३१७) ही २००३ मधील सहभागी असलेल्या कामगारांच्या संख्येपेक्षा २.१ टक्क्यांनी कमी झाली. तसेच मागील वर्षापासून चालू असलेले व २००४ या वर्षातील संप व टाळेबंदी यामुळे वाया गेलेल्या श्रमदिनांची २७.८ लाख ही संख्या २००३ मधील तत्सम संख्येपेक्षा (४३.५ लाख) ३६.१ टक्क्यांनी कमी होती. महाराष्ट्र राज्यातील औद्योगिक विवादांची आकडेवारी भाग-२ मधील तक्ता क्र. ५५ मध्ये दिली आहे.

बंद पडलेले उद्योग

१२.४० राज्यातील बंद पडलेले लघु, मध्यम व मोठे उद्योग आणि बाधित कामगारांची संख्या तक्ता क्रमांक १२.७ मध्ये देण्यात आली आहे.

तक्ता क्र. १२.७

बंद झालेले उद्योग व बाधित कामगार

| वर्ष | लघु उद्योग | | मध्यम व मोठे उद्योग | |
|----------|-----------------|--------------------------|---------------------|--------------------------|
| | बंद (संख्या) | बाधित कामगार (संख्या) | बंद (संख्या) | बाधित कामगार (संख्या) |
| २०००-०१ | ४,९५२ | २५,२०९ | ३३३ | ५२,९०७ |
| २००१-०२ | ५,७२६ | ३०,७६९ | २०३ | २७,८०७ |
| २००२-०३ | ६,२४९ | २८,९९६ | ३३९ | ४५,५०९ |
| २००३-०४ | ४,६८६ | २९,३७९ | २१३ | ५१,८०४ |
| २००४-०५* | २,५६६ | १२,८३० | ५३६ | ८१,४६८ |

* डिसेंबर, २००४ अखेरपर्यंत

शिक्षण

१२.४१ राष्ट्रीय तसेच वैयक्तिक विकास साधण्याकरिता 'शिक्षण' हे एक महत्वाचे सर्वमान्य असे साधन आहे. सध्याच्या जागतिक अर्थव्यवस्थेच्या संदर्भात पायाभूत शिक्षण घेण्याची संधी प्राप्त होणे हा मूलभूत मानवी हक्क आहे. सुयोग्य ज्ञानार्जनाद्वारे जनतेस सक्षम करून त्यांच्यातील कौशल्ये, गुणवत्ता आणि विचारधारा यात वाढ करून त्यांचे जीवनमान वृद्धीगत करणे, उत्पादन क्षमता वाढविणे तसेच त्यांना विकास प्रक्रियेमध्ये परिणामकारकरित्या सामावून घेवून मनुष्यबळ विकास प्रक्रियेस चालना देण्यासाठी शिक्षण क्षेत्रामध्ये अधिक गुंतवणूक करण्याची आवश्यकता आहे.

१२.४२ राज्याच्या शैक्षणिक धोरणामध्ये प्राथमिक शिक्षणाच्या सार्वत्रिकीकरणावर मुख्य भर देण्यात आलेला आहे. महाराष्ट्रामध्ये राज्य शासन आणि स्थानिक स्वराज्य संस्था यांच्या संयुक्त प्रयत्नाद्वारे शैक्षणिक सेवांचे, विशेषतः प्राथमिक शिक्षणाचे सनियंत्रण केले जाते. मूलभूत शिक्षणाची अधिकांश जबाबदारी जरी राज्य शासनाची असली तरी शैक्षणिक व्यवस्थापन स्थानिक गरजांशी पूरक ठरून त्यामध्ये सामाजिक सहभागास अधिकाधिक वाव मिळावा या हेतूने ग्रामीण भागामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि नागरी भागामध्ये नगरपरिषदा यासुद्धा शांलेय शिक्षणामध्ये सहभागी झाल्या आहेत.

शिक्षणाची वाढ

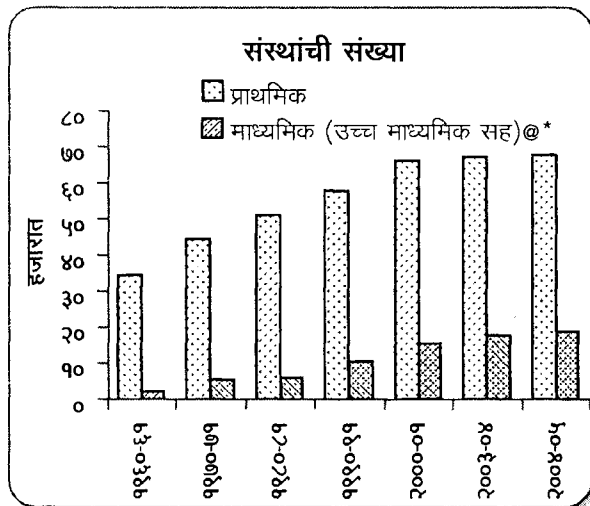
१२.४३ प्राथमिक शिक्षणाचे सार्वत्रिकीकरण झाल्याने माध्यमिक शिक्षणाची गरज मोठ्या प्रमाणात वाढली आहे. महाराष्ट्र राज्यात माध्यमिक शिक्षणाचे महत्त्वाचे कार्य प्रामुख्याने खाजगी संस्थांकडून केले जाते. महाराष्ट्रातील बहुतांश शाळा खाजगी संस्थांकडून चालविल्या जातात व शासन त्यांना अनुदानाच्या स्वरूपात सहाय्य करते. या बरोबरच महानगरपालिका, नगरपालिका या सारख्या स्थानिक स्वराज्य संस्था

आपआपल्या कार्यक्षेत्रात माध्यमिक शाळा चालवित असल्याने पटावरील विद्यार्थ्यांच्या एकदरीत संख्येत मोठी वाढ झाली आहे. १९६०-६१ च्या तुलनेत २००४-०५ मध्ये प्राथमिक शाळांतील विद्यार्थ्यांची पटावरील संख्या तिप्पट झाली, तर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक संस्थांतील विद्यार्थ्यांच्या पटावरील संख्येत बारा पटींनी वाढ झाली. १९६०-६१ ते २०००-०१ या कालावधीत प्राथमिक शाळेतील प्रति शिक्षक विद्यार्थ्यांचे प्रमाण ३३ ते ३९ दरम्यान बदलत राहिले आणि त्यानंतर ते जवळपास ३६ ते ३७ असे इतके राहिले. तथापि, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शाळांसाठी एकत्रितरित्या या प्रमाणात १९६०-६१ मधील २५ विद्यार्थ्यांवरून २००४-०५ मध्ये ३८ विद्यार्थी अशी वाढ झाली. राज्यातील प्राथमिक शाळांची संख्या २००३-०४ मधील ६७,२९१ वरून २००४-०५ मध्ये ६७,९६४ अशी वाढली. तथापि, पटावरील विद्यार्थ्यांच्या संख्येत अल्पशी वाढ झाली. त्या तुलनेत माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शाळांची एकत्रित संख्या २००३-०४ मधील १७,९८५ वरून २००४-०५ मध्ये १८,७१७ एवढी झाली. त्याचबरोबर पटावरील विद्यार्थ्यांच्या संख्येतही वाढ झाली. राज्यातील शैक्षणिक वाढीसंबंधीची १९६०-६१ पासूनची आकडेवारी या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्र. ५६ मध्ये दिली आहे.

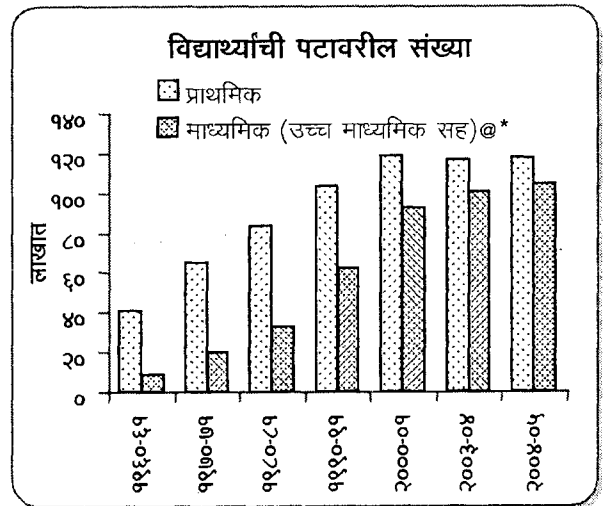
१२.४४ राज्यातील २००३-०४ व २००४-०५ या वर्षांसाठी प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शाळांची संख्या व पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या तक्ता क्र. १२.८ मध्ये दिली आहे.

१२.४५ आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत २००४-०५ मध्ये प्राथमिक, माध्यमिक आणि उच्च माध्यमिक या तीनही स्तरावर पटावरील मुलांच्या संख्येतील शेकडा वाढ मुलांच्या संख्येतील शेकडा वाढीपेक्षा जास्त होती. ही वाढ मुलांच्या शिक्षणाबाबत राज्यात झालेल्या वाढत्या जाणिवेमुळे झाली असावी. २००४-०५ मध्ये राज्यात प्रति शिक्षक विद्यार्थ्यांची संख्या प्राथमिक शाळांकरिता ३६, माध्यमिक शाळांकरिता ३५, उच्च माध्यमिक शाळांकरिता ४० आणि कनिष्ठ महाविद्यालयासाठी ५४ होती.

राज्यातील शिक्षणाची वाढ



* शांलेय पाटावरील व्यवसाय शिक्षण संस्थामधील विद्यार्थी वगळून



@ १९९४-९५ पासून कनिष्ठ महाविद्यालये व त्यातील विद्यार्थी धरून

तक्ता क्रमांक १२.८

महाराष्ट्र राज्यातील प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शाळांची व पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या (शिक्षक व पटावरील विद्यार्थी यांची संख्या हजारात)

| वर्षातील संस्थेचा प्रकार | २००३-०४* | २००४-०५* | शेकडा बदल |
|---------------------------|----------|----------|-----------|
| प्राथमिक | | | |
| १) शाळा (१ ली ते ७ वी) | ६७,२९१ | ६७,९६४ | १.० |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | ११,६८९ | ११,७४७ | ०.५ |
| (ब) त्यापैकी मुली | ५,६०५ | ५,६३३ | ०.५ |
| ३) शिक्षक | ३२२ | ३३० | २.५ |
| माध्यमिक | | | |
| १) शाळा (१ ली ते १० वी) | १३,७७३ | १४,३९१ | ४.५ |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | ५,३३९ | ५,४६६ | २.४ |
| (ब) त्यापैकी मुली | २,४९३ | २,५६८ | ३.० |
| ३) शिक्षक | १५५ | १५८ | १.९ |
| उच्च माध्यमिक | | | |
| १) शाळा (१ ली ते १२ वी) | ३,५८५ | ३,६९३ | ३.० |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | ४,१२९ | ४,३३१ | ४.९ |
| (ब) त्यापैकी मुली | १,८५४ | १,९७१ | ६.३ |
| ३) शिक्षक | १०४ | १०७ | २.९ |
| कनिष्ठ महाविद्यालय | | | |
| १) संस्था (११ वी व १२ वी) | ६२७ | ६३३ | १.० |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | ६५४ | ७०२ | ७.३ |
| (ब) त्यापैकी मुली | २६७ | २८८ | ७.९ |
| ३) शिक्षक | १३ | १३ | - |

अंदाजित

शालेय पातळीवरील व्यवसाय शिक्षण संस्था वगळून

१२.४६ राज्याच्या ग्रामीण व नागरी भागातील शाळांमधील इयत्ता निहाय पटावरील संख्या २००३-०४ व २००४-०५ या वर्षाकरिता तक्ता १२.९ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.९

इयत्ता गटानुसार पटावरील एकूण विद्यार्थी संख्या

(आकडे हजारात)

| इयत्ता गट | २००३-०४* | २००४-०५* |
|-----------|----------|----------|
| १ ते ४ | | |
| ग्रामीण | ५,३६६ | ५,४७३ |
| नागरी | ३,५७७ | ३,६४८ |
| ५ ते ८ | | |
| ग्रामीण | ४,९७३ | ५,०७२ |
| नागरी | ३,३१५ | ३,३८१ |
| ९ व १० | | |
| ग्रामीण | १,७०१ | १,७३५ |
| नागरी | १,१३४ | १,१५७ |
| ११ व १२ | | |
| ग्रामीण | ६९८ | ७१२ |
| नागरी | १०४७ | १०६८ |

अंदाजित

१२.४७ ग्रामीण व नागरी या भागातील सर्व इयत्ता गटाकरिता पटावरील विद्यार्थ्यांच्या संख्येत २००३-०४ च्या तुलनेत २००४-०५ या वर्षामध्ये सुमारे दोन टक्के वाढ झाली.

वस्तीशाळा

१२.४८ शिक्षणाच्या सार्वत्रिकीकरणाच्या मोहिमेचा भाग म्हणून किमान २०० लोकसंख्या असलेल्या वस्तीसाठी १.५ कि.मी. च्या परिसरात प्राथमिक शाळा उघडण्याचे प्रमाणक शासनाने निश्चित केले आहे. आदिवासी क्षेत्रासाठी हे प्रमाणक १०० लोकसंख्या व १.० कि.मी. परिसर असे आहे, परंतु काही वस्त्यांच्या बाबतीत वरील निकषांची पूर्तता होत नाही. अशा वस्त्यांसाठी शासनाने १.० कि. मी. च्या परिसरात किमान १५ मुले उपलब्ध असतील अशा ठिकाणी पर्यायी शिक्षण म्हणून वस्तीशाळा सुरू केल्या आहेत. या योजनेअंतर्गत राज्यात एकूण ८,२५६ वस्तीशाळा सुरू असून त्यातील ८७७ वस्तीशाळा २००४-०५ मध्ये सुरू केल्या आहेत. या योजनेखाली २००४-०५ मध्ये ८६३.७६ लाख रुपये आर्थिक तरतूद केली असून, त्याचा लाभ जवळपास ३.९३ लाख विद्यार्थ्यांना मिळणे अपेक्षित आहे. या सर्व शाळा एक शिक्षकी आहेत.

महात्मा फुले शिक्षण हमी योजना

१२.४९ नागरी व ग्रामीण भागात मुख्यतः शेती, पशुपालन या क्षेत्रात बाल कामगार म्हणून काम करणारी मुले आणि/किंवा हलाखीच्या आर्थिक स्थितीमुळे प्राथमिक शिक्षणापासून वंचित राहिलेले निराधार मुले यांच्याकरिता 'महात्मा फुले शिक्षण हमी योजना' राबविली जात आहे. या योजनेअंतर्गत आतापर्यंत राज्यात एकूण २०,१८४ केंद्रांमधून ३.९२ लाख विद्यार्थ्यांनी शिक्षणाचा लाभ घेतला.

स्त्री शिक्षण

१२.५० राज्यात २००३-०४ मध्ये केवळ मुलींसाठी १,९६१ प्राथमिक शाळा, ८४७ माध्यमिक शाळा व २६९ उच्च माध्यमिक संस्था कार्यरत होत्या. राज्यात २००३-०४ मध्ये प्राथमिक शाळा, माध्यमिक शाळा व उच्च माध्यमिक संस्थांमधील एकूण विद्यार्थ्यांमध्ये मुलींचे शेकडा प्रमाण अनुक्रमे ४८, ४७ व ४५ होते. १९८५-८६ मध्ये जेव्हा मुलींसाठी १० वी पर्यंतचे शिक्षण मोफत करण्यात आले तेव्हा हे शेकडा प्रमाण अनुक्रमे ४४, ३६ आणि ३२ होते. लोकसंख्येतील त्या त्या वयोगटातील स्त्री-पुरुष प्रमाण विचारात घेता प्राथमिक शाळांतील मुलींची पटसंख्या ही स्त्री पुरुष प्रमाणाशी मिळतीजुळती दिसून येते तर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शाळांतील स्त्री-पुरुष प्रमाणात अलिकडच्या काळात तफावत कमी कमी होत आहे.

१२.५१ राज्यभर दर्जेदार शिक्षणाचा सतत प्रसार करण्यासाठी बऱ्याच मोठ्या निधीची आवश्यकता आहे. २००३-०४ या वर्षात राज्य शासनाचा प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षणावरील एकूण खर्च ७,९५४ कोटी रुपये होता व तो स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या २.४ टक्के

होता. २००३-०४ मध्ये प्रति विद्यार्थी सरासरी शासकीय खर्च प्राथमिक शाळांकरिता २,६७२ रुपये (इयत्ता १ ते ७), माध्यमिक शाळांकरिता ७,१३० रुपये आणि उच्च माध्यमिक शाळांकरिता २,९८५ रुपये होता.

शालेय शिक्षणासंबंधित माहिती तंत्रज्ञान धोरण

१२.५२ माहिती तंत्रज्ञानाचे विकास प्रक्रियेतील महत्त्व ओळखून राज्य शासनाने १९९८ मध्ये माहिती तंत्रज्ञान धोरण जाहीर केले. या धोरणास अनुसरून राज्य शासनाने शालेय अभ्यासक्रमामध्ये माहिती तंत्रज्ञान या वैकल्पिक विषयाचा जून, १९९९ पासून इयत्ता ८ ते १० वी च्या अभ्यासक्रमात आणि जून, २००० पासून इयत्ता ११ वी व १२ वी च्या अभ्यासक्रमात समावेश केला आहे. राज्य शासनाने या विषयाच्या अध्यापनासाठी शाळांमध्ये संगणक प्रयोगशाळेची स्थापना करण्यासाठी विविध पर्याय सुचविले आहेत. अशा पर्यायांतर्गत शाळा व्यवस्थापनाचा स्वतःचा निधी तसेच खाजगी औद्योगिक संस्था, स्थानिक सहकारी संस्था, व्यापारी संस्था यांच्या मदतीने शाळांकरिता संगणक प्रयोगशाळा स्थापन करू शकतात. त्याशिवाय खाजगी संगणक संस्थांच्या चालकांना शाळेमध्ये जागा उपलब्ध करून देवून त्यांच्याकडून स्थापिल्या जाणाऱ्या संगणक प्रयोगशाळेचा शाळेच्या वेळेव्यतिरिक्त व्यापारी तत्वावर वापर करण्यास आणि त्या मोबदल्यात शाळेतील विद्यार्थ्यांना विनामूल्य संगणक प्रशिक्षण देण्याच्या अटीवर परवानगी देण्यात आली आहे. राज्यातील १५,००० माध्यमिक शाळांपैकी सुमारे ७,००० शाळांमध्ये संगणकाचा वापर सुरु आहे. त्यापैकी ३,०६० शाळांना स्थानिक विकास कार्यक्रमाच्या निधीतून ५,३०२ संगणक पुरविण्यात आले आहेत.

महाराष्ट्र छात्र सेना

१२.५३ या योजनेचा मुख्य उद्देश विद्यार्थ्यांत नेतृत्व, बंधुत्व, खिलाडूवृत्ती, राष्ट्रीय ऐक्य, समाजसेवा इत्यादी सारख्या गुणांचे संवर्धन करणे हा आहे. या योजनेची वर्ष २००० मध्ये पुनर्रचना करण्यात आली असून ही योजना सर्व शाळांमध्ये आठवी व नववीमधील विद्यार्थ्यांसाठी राबविण्यात येत आहे. तथापि, ही योजना विद्यार्थ्यांसाठी ऐच्छिक ठेवण्यात आली आहे. शाळेत कमीत कमी एक छात्र सेना तुकडी असावी. प्रत्येक छात्र सेना तुकडीत कमीत कमी १०० विद्यार्थी नागरी भागासाठी, ५० विद्यार्थी ग्रामीण भागासाठी व ३० विद्यार्थी आदिवासी व डोंगराळ भागासाठी समाविष्ट असावेत. मुलामुलींचे प्रमाण शक्यतो ५०:५० असे असावे. २००३-०४ मध्ये या योजनेखाली २५.५० लाख विद्यार्थ्यांचा सहभाग होता व २००४-०५ मध्ये या योजनेखाली तितक्याच विद्यार्थ्यांचा सहभाग अपेक्षित आहे.

गळतीचे प्रमाण

१२.५४ १९८०-८१ मध्ये राज्यातील शाळांमधील मुलांचे आणि मुलींचे इयत्ता पाचवीसाठी गळतीचे प्रमाण अनुक्रमे ५३ टक्के व ६३ टक्के इतके होते. २००२-०३ मध्ये मुलांचे आणि मुलींचे गळतीचे प्रमाण कमी

होऊन अनुक्रमे १३ टक्के व १४ टक्के झाले. १९८०-८१ मध्ये मुलां व मुलींचे इयत्ता आठवीसाठी गळतीचे प्रमाण अनुक्रमे ६५ टक्के व ७० टक्के होते त्या तुलनेने ते कमी होवून २००२-०३ मध्ये ३१ टक्के ३६ टक्के झाले.

गळतीचे दर

$DOR_{(i,j)}$ = इयत्ता 'i' मधील विद्यार्थ्यांचा 'j' ह्या वर्षाशी संबंधित गळतीचा दर

$$= 100 \times \left[1 - \frac{B_{(i,j)}}{A_{(1,j-i+1)}} \right],$$

जिथे, $B_{(i,j)}$ = 'j' वर्षाकरिता इयत्ता 'i' मधील पटावरील विद्यार्थी संख्या

$A_{(1,j-i+1)}$ = (j-i+1) वर्षातील इयत्ता पहिली मधील पटावरील विद्यार्थी संख्या

गेल्या २० वर्षांत इयत्ता १० वी मधील मुलांचे व मुलींचे गळतीचे प्रमाण जरी कमी झाले असले तरी मुलांच्या बाबतीत ते ५० टक्के व मुलींच्या बाबतीत ५५ टक्के आहे. मुलांचे व मुलींचे इयत्ता ८ वी व १० वी पर्यंतचे गळतीचे प्रमाण जास्त असण्याचे कारण कुटुंबाच्या आर्थिक व घरगुती कार्यांमध्ये त्या विद्यार्थ्यांच्या सहभागाची गरज हे असू शकते. २००२-०३ या वर्षाच्या गळतीच्या आकडेवारीवरून असे दिसून येते की एकूण मुलामुलींपैकी सुमारे ८७ टक्के मुला-मुलींनी प्राथमिक शिक्षण पूर्ण केले, ६७ टक्के मुला-मुलींनी ८ वी पर्यंतचे व ४८ टक्के मुला-मुलींनी माध्यमिक शिक्षण पूर्ण केले. विद्यार्थ्यांच्या गळतीचे प्रमाण तक्. क्र. १२.१० मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१०

विद्यार्थ्यांचे गळतीचे प्रमाण

(टक्केवारी)

| इयत्ता | १९८०-८१ | १९९०-९१ | २०००-०१ | २००२-०३ |
|------------|---------|---------|---------|---------|
| ५ वी मुले | ५३ | २९ | १५ | १३ |
| मुली | ६३ | ३९ | १९ | १४ |
| ८ वी मुले | ६५ | ४७ | ३५ | ३१ |
| मुली | ७८ | ६२ | ४१ | ३६ |
| १० वी मुले | ७४ | ६४ | ५२ | ५० |
| मुली | ८६ | ७६ | ५७ | ५५ |

प्राथमिक शाळांतील विद्यार्थ्यांसाठी पोषण आहार

१२.५५ विद्यार्थ्यांची शाळांतील उपस्थिती वाढविण्याच्या दृष्टी विद्यार्थ्यांना पोषण आहार पुरविण्याची ही योजना राज्यातील प्राथमिक शाळांतील विद्यार्थ्यांसाठी राबविण्यात येत आहे. ही योजना पूर्णतः बें

स्कृत असून राज्यामध्ये ती १९९५-९६ पासून राबविण्यात येत आहे. योजनेखाली राज्यातील शासकीय व शासकीय अनुदानित शाळांतील यत्ना १ ते ५ मधील दरमहा किमान ८० टक्के उपस्थिती असणा-या विद्यार्थ्यांस दरमहा तीन किलो तांदूळ पोषण आहार म्हणून दिला जातो. यापि, सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्णयानुसार विद्यार्थ्यांना डाळभात, ज्वारीभात, दहीभात, दूधभात, खिचडी इत्यादी ३०० कॅलरीज आणि ८१२ ग्रॅम प्रोटीनयुक्त शिजवलेले अन्न द्यावयाचे आहे. ही योजना राज्यात वृत्र राबविली जाते. २००२-०३ पासून या योजनेत वस्तीशाळा, अपंग मूकबधीर शाळा, अंधशाळा, महात्मा फुले शिक्षण हमी योजनेअंतर्गत शैक्षणिक केंद्रे यांचा समावेश करण्यात आला आहे. या योजनेखाली २००३-०४ मध्ये ७७.८२ लाख विद्यार्थ्यांना लाभ देण्यात आला. २००४-०५ मध्ये या योजनेसाठी ९०.३७ कोटी रुपयांची आर्थिक तरतूद करण्यात आली आहे.

शैक्षणिक विद्यार्थ्यांना क्रमिक पुस्तकांचे मोफत वाटप

१२.५६ ज्या पंचायत समिती क्षेत्रात स्त्री साक्षरतेचे प्रमाण राष्ट्रीय साक्षरतेच्या प्रमाणापेक्षा (जनगणना १९९१ नुसार ३९.३ टक्के) कमी आहे, राज्यातील अशा १०३ पंचायत समिती क्षेत्रात साक्षरतेच्या प्रमाणात वाढ होण्यास उत्तेजन देण्यासाठी राज्य शासन १९९६-९७ पासून शैक्षणिक शाळांतील इयत्ता १ ते ४ च्या सर्व विद्यार्थ्यांना मोफत शैक्षणिक पुस्तके पुरवित आहे. या योजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये ४.०५ लाख विद्यार्थ्यांना क्रमिक पुस्तकांचे वाटप करण्यात आले. तर २००४-०५ मध्ये ९३ लाख विद्यार्थ्यांना क्रमिक पुस्तकांचे वाटप करणे अपेक्षित आहे.

सैनिकी शाळा

१२.५७ विद्यार्थ्यांमध्ये राष्ट्रप्रेम, सांघिकवृत्ती, शिस्त, नेतृत्वगुण, आत्मविश्वास, शौर्य आणि देशभक्ती इत्यादी गुणांचा विकास व्हावा हा योजनेचा प्रमुख उद्देश आहे. १९९६-९७ मध्ये राज्य शासनाने प्रत्येक जिल्ह्यात सैनिकी शाळा सुरू करण्यासाठी अशासकीय संस्थांना परवानगी देण्याचा निर्णय घेतला. या योजनेखाली नोव्हेंबर, २००४ अखेरीस ३३ जिल्ह्यांत ४१ सैनिकी शाळा (पूर्वीच्या ३ सैनिकी शाळा धरून) स्थापन करण्यात आल्या आहेत. यापैकी सहा शाळा केवळ मुलींसाठी आहेत. शाळांतील इयत्ता पाचवी ते बारावीच्या प्रत्येक तुकडीसाठी प्रवेश क्षमता इतकी निर्धारित करण्यात आली आहे. या सर्व सैनिकी शाळांमध्ये इयत्ता ८, ५४४ विद्यार्थी शिक्षण घेत आहेत.

अहिल्याबाई होळकर योजना

१२.५८ मुलींच्या शिक्षणाला प्रोत्साहन देण्यासाठी राज्य शासनाने १९६९-७० मध्ये अहिल्याबाई होळकर योजनेअंतर्गत मुलींना मोफत पुस्तकांची सवलत सुरू केली. या योजनेखाली ग्रामीण भागातील इयत्ता

५ वी ते १० वी मधील मुलींना त्यांच्या गावात माध्यमिक शाळा उपलब्ध नसेल तर शाळेत जाण्यासाठी महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाच्या बसमधून मोफत प्रवास करण्याची सवलत देण्यात आली आहे. या योजनेखाली २००३-०४ मध्ये सुमारे १३.९२ लाख मुलींना लाभ घेतला आणि २००४-०५ मध्ये साधारणपणे तितक्याच मुली लाभ घेतली असे अपेक्षित आहे. या योजनेखालील एकूण खर्चापैकी एक-तृतीयांश खर्च राज्य शासनाकडून महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळास देण्यात येतो. या योजनेवर २००३-०४ मध्ये झालेल्या खर्चाचा राज्य शासनाचा हिस्सा ५७.४९ कोटी रुपये होता व ही रक्कम राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाकडून शासनास देय असलेल्या प्रवासी करातून समायोजित करण्यात आली.

प्राथमिक शाळेतील मुलींना उपस्थिती भत्ता

१२.५९ शाळेत जाणा-या मुलींच्या उपस्थितीचे प्रमाण वाढविण्यासाठी व त्यांच्या गळतीचे प्रमाण कमी करण्यासाठी आदिवासी उपयोजना क्षेत्रातील दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांतील सर्व मुलींना व उर्वरित क्षेत्रांतील अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, विमुक्त जाती व भटक्या जमातींतील दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांतील मुलींकरिता ही योजना राज्यात १९९२ पासून राबविली जात आहे. या योजनेअंतर्गत इयत्ता १ ली ते ४ थी मधील लाभधारक मुलींना प्रतिदिन एक रुपया दराने उपस्थिती भत्ता देण्यात येतो. २००३-०४ मध्ये या योजनेअंतर्गत ४.०५ लाख मुलींना लाभ देण्यात आला आणि २००४-०५ मध्ये अंदाजित ३.९३ लाख मुलींना लाभ देण्यात येईल असे अपेक्षित आहे.

पुस्तक पेढी योजना

१२.६० या योजनेअंतर्गत अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, विमुक्त जाती व भटक्या जमाती या समाजातील आणि इतर दुर्बल समाज घटकांतील विद्यार्थ्यांना क्रमिक पुस्तकांचे संच पुरविले जातात. जिल्हा परिषदा, नगरपरिषदा आणि महानगरपालिकांकडून संचलित प्राथमिक व माध्यमिक शाळा आणि मान्यता प्राप्त/अनुदानित माध्यमिक शाळांतील मुलांकरिता शासनाने पुस्तक पेढ्या स्थापन केल्या आहेत. पुस्तक पेढीद्वारे वितरित केलेले संच शैक्षणिक वर्षाच्या अखेरीस पुस्तक पेढीस परत करावयाचे असतात. या योजनेत इयत्ता १० वी पर्यंतच्या विद्यार्थ्यांचा समावेश आहे. २००३-०४ मध्ये या योजनेअंतर्गत २.३५ लाख विद्यार्थ्यांनी लाभ घेतला. २००४-०५ या शैक्षणिक वर्षाकरिता शासकीय मान्यता प्राप्त अनुदानित खाजगी शाळा व स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या सर्व शाळांमधील (इंग्रजी माध्यमाच्या शाळा वगळून) इयत्ता १ ते १० वी पर्यंतच्या सर्व विद्यार्थ्यांना मोफत पाठ्यपुस्तके पुरविण्याचा निर्णय शासनाने घेतला आहे.

शिक्षण सेवक योजना

१२.६१ शिक्षणाचा विस्तार आणि गुणात्मक वाढ होण्यासाठी राज्य शासनाने विविध प्रकारच्या योजना सुरू केलेल्या आहेत. त्यामुळे शैक्षणिक खर्चात मोठ्या प्रमाणात वाढ झालेली आहे. राज्यात मोठ्या प्रमाणात रिक्त असलेली शिक्षकांची पदे भरता यावीत यासाठी शासनाने वर्ष २००० पासून शिक्षण सेवक योजनेअंतर्गत शिक्षकांची रिक्त पदे भरण्याचा निर्णय घेतला आहे. शासनाने सर्व मान्यताप्राप्त/अनुदानित प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शाळा व कनिष्ठ महाविद्यालये इत्यादींमध्ये शिक्षण सेवक नियुक्त करण्यास परवानगी दिली आहे. या शिक्षण सेवकांना त्यांच्या शैक्षणिक पात्रतेनुसार दरमहा ३००० रुपये ते ५००० रुपये पर्यंत मानधन देण्यात येते. शिक्षण सेवक पदावरील नियुक्ती प्रथमतः तीन शैक्षणिक वर्षांसाठी करण्यात येते. या पदावर तीन वर्षे समाधानकारक काम केल्यानंतर संबंधित उमेदवारांना शिक्षकाच्या पदावर नियमित वेतनश्रेणीत नियुक्ती दिली जाते.

प्रौढ शिक्षण

१२.६२ १५ ते ३५ वर्षे वयोगटातील प्रौढांच्या निरक्षरतेच्या निर्मूलनाबाबतचे नवीन धोरण यशस्वीपणे राबविण्यासाठी केंद्र शासनाने १९८८ मध्ये 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' (रा.सा.मि.) स्थापन केले. रा.सा.मि. ने जिल्ह्यांत संपूर्ण साक्षरता अभियान राबविण्यासाठी सविस्तर मार्गदर्शक सूचना विहित केल्या आहेत. त्यानुसार राज्याच्या सर्व जिल्ह्यांत 'संपूर्ण साक्षरता अभियान' टप्प्याटप्प्याने राबविण्याचा धोरणात्मक निर्णय राज्य शासनाने घेतला असून त्यासाठी जिल्हा साक्षरता प्रसार समित्या गठित करण्यात आल्या आहेत.

१२.६३ राज्यातील सर्व जिल्ह्यांत 'संपूर्ण साक्षरता अभियान' राबविण्यात आले आहे. या कार्यक्रमांतर्गत ६७.२२ लाख प्रौढ निरक्षरांना साक्षर करण्याचे लक्ष्य निर्धारित करण्यात आले होते. या तुलनेत ६४.४५ लाख प्रौढ निरक्षरांची नोंदणी करण्यात आली व त्यापैकी ५३.७० लाख प्रौढ निरक्षरांनी 'संपूर्ण साक्षरता अभियान' अंतर्गत विहित केलेल्या प्रायमर अभ्यासक्रमाचे सर्व तीनही भाग पूर्ण केले.

१२.६४ 'संपूर्ण साक्षरता अभियान' पूर्ण झालेल्या जिल्ह्यात साक्षरोत्तर कार्यक्रम राबविण्यात येतो. साक्षरोत्तर कार्यक्रम राबविण्यामागचा दृष्टिकोन व दिशा लोकशिक्षण केंद्रामार्फत नवसाक्षरांपर्यंत शिक्षण पोहोचविणे असा आहे. २७ जिल्ह्यांत साक्षरोत्तर कार्यक्रम पूर्ण झालेला असून इतर २ जिल्ह्यांत तो प्रगतिपथावर आहे.

उच्च शिक्षण

१२.६५ सर्वांगीण आर्थिक विकासासाठी आवश्यक असलेले तांत्रिक व कुशल मनुष्यबळ उच्च शिक्षणामुळे उपलब्ध होते. प्रकाशनामध्ये उच्च शिक्षण या प्रकारात सर्वसाधारण उच्च शिक्षणाबरोबर कृषि, पशुवैद्यकीय, वैद्यकीय/औषध निर्माण विद्याशास्त्र, अभियांत्रिकी, व्यावसायिक शिक्षण, इत्यादींचा समावेश करण्यात आला आहे.

१२.६६ राज्यात एकूण चार कृषि विद्यापीठे, आरोग्य विज्ञान अभ्यासक्रमाकरिता एक विद्यापीठ, एक पशुवैद्यक विद्यापीठ आणि बिगर-कृषि विद्यापीठे असून त्यामध्ये केवळ महिलांसाठी असलेले एस्एन्डीटी विद्यापीठ, अनौपचारिक शिक्षणासाठी असलेले यशवंतचव्हाण मुक्त विद्यापीठ आणि संस्कृत भाषेचा अभ्यास,संशोधन, विचार व प्रसार करण्यासाठी स्थापन केलेले कवि कुलगुरू कालीदास विद्यापीठांचा समावेश आहे. याशिवाय राज्यात सात अभिमत विद्यापीठे आहेत.

सर्वसाधारण उच्च शिक्षण

१२.६७ राज्यात २००४-०५ मध्ये सर्वसाधारण महाविद्यालये उच्च शिक्षणाच्या इतर शैक्षणिक संस्था अशा एकूण १,९३४ संस्था (वैद्यकीय, अभियांत्रिकी व कृषि महाविद्यालये आणि त्यांच्या संलग्न वगळून) असून आधीच्या वर्षांपेक्षा त्या ३.० टक्क्यांनी जास्त आख्यायामध्ये १,३०४ विज्ञान, कला व वाणिज्य महाविद्यालये आणि इतर संस्था

तक्ता क्रमांक १२.११

सर्वसाधारण शिक्षणाची महाविद्यालये आणि उच्च शिक्षणाच्या इतर संस्था यांची संख्या व पटावरील विद्यार्थी (शिक्षक व पटावरील विद्यार्थी संख्या हजारत)

| शैक्षणिक संस्थेचा प्रकार | २००३-०४* | २००४-०५# | शेकडा वाढ |
|--------------------------------------|----------|----------|-----------|
| १. सर्वसाधारण शिक्षणाची महाविद्यालये | | | |
| १) संख्या | १,२६६ | १,३०४ | ३.० |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | ९६० | ९८९ | ३.० |
| (ब) त्यापैकी मुली | ४२८ | ४४१ | ३.० |
| ३) शिक्षक | २३.५ | २४ | २.१ |
| २. उच्च शिक्षणाच्या इतर संस्था | | | |
| १) संख्या @ | ६१२ | ६३० | २.९ |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | १५१ | १५६ | ३.३ |
| (ब) त्यापैकी मुली | ६० | ६२ | ३.३ |
| ३) शिक्षक | १३ | १३ | - |
| ३. एकूण | | | |
| १) संख्या @ | १,८७८ | १,९३४ | ३.० |
| २) (अ) पटावरील विद्यार्थी | १,१११ | १,१४५ | ३.१ |
| (ब) त्यापैकी मुली | ४८८ | ५०३ | ३.१ |
| ३) शिक्षक | ३६.५ | ३७ | १.४ |

* अस्थायी # अंदाजित

@ कनिष्ठ, वैद्यकीय, अभियांत्रिकी व कृषि महाविद्यालये आणि पदवीपूर्व व्यवसाय शिक्षण संस्था वगळून

शिक्षणाच्या ६३० संस्था असून त्यामध्ये ७६ विधि महाविद्यालये, २०६ ए.एड. व ३४८ इतर उच्च शिक्षणाची महाविद्यालये/संस्थांचा समावेश आहे. या सर्व १,९३४ महाविद्यालयांतील व इतर संस्थांमधील पटावरील विद्यार्थ्यांची एकत्रित संख्या ११.४५ लाख असून ती २००३-०४ च्या तुलनेत ३.१ टक्क्यांनी जास्त आहे. २००४-०५ मध्ये या महाविद्यालये/संस्थांतील मुलींच्या संख्येत आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ३.१ टक्क्यांनी वाढ झाली. सर्वसाधारण महाविद्यालये व उच्च शिक्षणाच्या इतर संस्था यांची आणि पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या तक्ता क्रमांक १२.११ मध्ये दिली आहे.

विश्व शिक्षण

१२.६८ राज्यातील चार कृषि विद्यापीठांशी संलग्न असलेल्या शासकीय अनुदानित व विनाअनुदानित महाविद्यालयांची संख्या तक्ता क्रमांक १२.१२ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१२

कृषि महाविद्यालयांची २००४-०५ मधील संख्या व प्रवेश क्षमता

| महाविद्यालयाचा प्रकार | अनुदानित | | विनाअनुदानित | |
|--------------------------|-----------|---------------|--------------|---------------|
| | संख्या | प्रवेश क्षमता | संख्या | प्रवेश क्षमता |
| १. कृषि | १३ | १,६०३ | २० | १,७२८ |
| २. उद्यानविद्या | ४ | १३८ | ६ | ५७६ |
| ३. वनशास्त्र | २ | ६४ | - | - |
| ४. मत्स्य | १ | ४० | - | - |
| ५. कृषि अभियांत्रिकी | ४ | १८६ | ६ | ५७६ |
| ६. अन्न तंत्रज्ञान | १ | ७० | ५ | ४८० |
| ७. गृहविज्ञान | १ | ३५ | - | - |
| ८. जैव तंत्रज्ञान | - | - | ५ | ४८० |
| ९. कृषि-पणन व व्यवस्थापन | - | - | ३ | २८८ |
| एकूण | २६ | २,१३६ | ४५ | ४,१२८ |

१२.६८.१ २००४-०५ या वर्षात अनुदानित व विनाअनुदानित महाविद्यालयांतील प्रवेशक्षमता अनुक्रमे २,१३६ आणि ४,१२८ विद्यार्थी होती. एकूण प्रवेश क्षमतेच्या ३० टक्के जागा विद्यार्थिनींसाठी आरक्षित आहेत. या चारही कृषि विद्यापीठांत पदव्युत्तर आणि पीएच्.डी. ची शिक्षण उपलब्ध आहे. पदव्युत्तर व पीएच्.डी. अभ्यासक्रमाकरिता सल्लेली प्रवेश क्षमता तक्ता क्र.१२.१३ व १२.१४ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१३

पदव्युत्तर अभ्यासक्रम व त्यातील प्रवेश क्षमता २००४-०५

| अभ्यासक्रम | प्रवेश क्षमता |
|-------------------------------|---------------|
| १. एम.एस्सी. (कृषि) | ६१७ |
| २. एम.टेक (कृषि अभियांत्रिकी) | ४६ |
| ३. एम.टेक (अन्नविज्ञान) | ६ |
| ४. एम.एस्सी. (गृह विज्ञान) | १२ |
| ५. एम.एफ.एस्सी. | १८ |
| एकूण | ६९९ |

तक्ता क्रमांक १२.१४

पीएच्.डी. अभ्यासक्रम व त्यातील प्रवेश क्षमता २००४-०५

| अभ्यासक्रम | प्रवेश क्षमता |
|----------------|---------------|
| १. कृषि | ९९ |
| २. गृह विज्ञान | २ |
| ३. मत्स्य | ३ |
| एकूण | १०४ |

पशुवैद्यक शिक्षण

१२.६९ महाराष्ट्र पशु व मत्स्यविज्ञान विद्यापीठाची स्थापना २००० साली झाली. या विद्यापीठांतर्गत ६ पशुवैद्यक महाविद्यालये आणि एक दुग्ध व्यवसाय महाविद्यालय आहेत. या सर्व सहा पशुवैद्यक महाविद्यालयांमध्ये पदव्युत्तर शिक्षणाची सोय उपलब्ध आहे. २००४-०५ वर्षामध्ये सहा महाविद्यालयांची पदवीपूर्व अभ्यासक्रमासाठी प्रवेश क्षमता ३२३ विद्यार्थी इतकी होती तर पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या २९५ होती. या महाविद्यालयातील प्रवेश क्षमता व पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या तक्ता क्र.१२.१५ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१५

पशुवैद्यक व दुग्धव्यवसाय महाविद्यालयांतील २००४-०५ मधील प्रवेश क्षमता व पटावरील विद्यार्थ्यांची संख्या

| विद्याशाखा | प्रवेश क्षमता | विद्यार्थी संख्या | अभ्यासक्रमाचा कालावधी (वर्ष) |
|---|---------------|-------------------|------------------------------|
| १. पशुवैद्यक महाविद्यालये | | | |
| १. पदवीपूर्व (बी.व्ही.एस्सी. आणि ए.एच.) | २८७ | २६२ | ५ |
| २. पदव्युत्तर (एमव्हीएस्सी) | १८६ | १५३ | २ |
| ३. पीएच्.डी. | ५४ | उ.ना. | - |
| २. दुग्धव्यवसाय महाविद्यालय | | | |
| पदवीपूर्व डी.टी. (बी.टेक) | ३६ | ३३ | ४ |
| उ.ना. - उपलब्ध नाही | | | |

वैद्यकीय शिक्षण

१२.७० राज्य शासनाने सर्व आरोग्य शास्त्रविषयक अभ्यासक्रमांचे एकत्रीकरण करण्याच्या उद्देशाने १९९८ मध्ये नाशिक येथे महाराष्ट्र आरोग्य विज्ञान विद्यापीठाची स्थापना केली. राज्यात २००४-०५ मध्ये ३५ अ‍ॅलोपॅथिक, ५३ आयुर्वेदिक, ४७ होमिओपॅथिक, ५ युनानी व २१ दंत पदवी महाविद्यालये/संस्था आहेत. संस्थेच्या प्रकारानुसार वरील महाविद्यालयांची (शासकीय, शासन अनुदानित व विनाअनुदानित) प्रवेशक्षमता या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ५७ मध्ये दिली आहे.

इतर वैद्यकीय अभ्यासक्रम

१२.७१ आरोग्य विज्ञान अभ्यासक्रमाचा भाग म्हणून गणले जाणारे डी.एम.एल.टी., फिजिओथेरेपी, ऑक्युपेशनल थेरपी, ऑडिऑलॉजी अँड स्पीच लॅंग्वेज पॅथॉलॉजी, प्रोस्थेटिक्स व ऑर्थोटिक्स असे बरेच अभ्यासक्रम आहेत. राज्यातील अशा इतर वैद्यकीय अभ्यासक्रमांच्या २००४-०५ मधील संस्थांची संख्या व प्रवेशक्षमता तक्ता क्र. १२.१६ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१६

| इतर वैद्यकीय अभ्यासक्रमांच्या २००४-०५ मधील संस्थांची संख्या व प्रवेशक्षमता | | |
|--|------------------|---------------|
| विद्याशाखा | संस्थांची संख्या | प्रवेश क्षमता |
| १. डी.एम.एल.टी. | १० | १७६ |
| २. फिजिओथेरेपी | १४ | ४७० |
| ३. ऑक्युपेशनल थेरपी | ६ | १२० |
| ४. ऑडिऑलॉजी अँड स्पीच लॅंग्वेज पॅथॉलॉजी | २ | २५ |
| ५. प्रोस्थेटिक्स व ऑर्थोटिक्स | १ | ५ |

परिचर्या शिक्षण

१२.७२ राज्यात २००४-०५ मध्ये मूलभूत परिचर्या पदवीच्या ११ संस्था, मूलभूत परिचर्येनंतरच्या पदवीच्या ६ संस्था आणि परिचर्या पदविका शिक्षणाच्या १२२ संस्था आहेत (सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविकाच्या ७३ संस्था, सहाय्यकारी परिचर्या व प्रसविकाच्या ३८ संस्था, सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविका आणि सहाय्यकारी परिचर्या व प्रसविकाच्या ११ संस्था). तसेच सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविका प्रशिक्षण प्रमाणोत्तर शिक्षणाच्या ५ संस्था आहेत. संस्थेच्या प्रकारानुसार (शासकीय, शासन अनुदानित व विनाअनुदानित) त्यांची प्रवेशक्षमता या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ५७ मध्ये दिली आहे.

तंत्र व व्यावसायिक शिक्षण

१२.७३ राज्यात २००४-०५ या वर्षात १५१ अभियांत्रिकी पदवी, ३१ वास्तुचर्याशास्त्र पदवी व १०२ व्यवस्थापन शास्त्राची महाविद्यालये/संस्था आहेत. याशिवाय १० हॉटेल व्यवस्थापन व खाद्यपेय व्यवस्था तंत्रज्ञान पदवी, ७२ औषधिनिर्माण शास्त्र पदवी, १६५ अभियांत्रिकी पदविका, एक वास्तुचर्याशास्त्र पदविका, १६ हॉटेल व्यवस्थापन व खाद्यपेय व्यवस्था तंत्रज्ञान पदविका, १०६ औषधि निर्माण शास्त्र पदविका, ५९ एम.सी.ए. अभ्यासक्रमाच्या संस्था आणि ५९८ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था आहेत. संस्थेच्या प्रकारानुसार (शासकीय, शासन अनुदानित व विनाअनुदानित) त्यांची प्रवेशक्षमता या प्रकाशनाच्या भाग-२ मधील तक्ता क्रमांक ५८ मध्ये दिली आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर तंत्रज्ञान विद्यापीठ, लोणेरे, तालुका माणगाव, जि. रायगड या संस्थेचा अभियांत्रिकी पदवी संस्थांमध्ये समावेश आहे.

१२.७४ २००४-०५ या वर्षासाठी विद्यापीठनिहाय अभियांत्रिकी पदवी महाविद्यालये/संस्थांची संख्या व त्यांची प्रवेशक्षमता याबाबत माहिती तक्ता क्रमांक १२.१७ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्रमांक १२.१७

विद्यापीठनिहाय २००४-०५ मधील अभियांत्रिकी पदवी महाविद्यालये/संस्थांची संख्या व प्रवेशक्षमता

| विद्यापीठ | संस्थांची संख्या | प्रवेश क्षमता |
|--|------------------|---------------|
| १. मुंबई विद्यापीठ | ४३ | १२,७२८ |
| २. पुणे विद्यापीठ | ३४ | ११,२४० |
| ३. उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव | १३ | ३,३७५ |
| ४. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद | १३ | ३,५९४ |
| ५. स्वामी रामानंद तीर्थ विद्यापीठ, नांदेड | ५ | १,६२० |
| ६. शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर | १४ | ५,००० |
| ७. अमरावती विद्यापीठ | १० | ३,१६० |
| ८. नागपूर विद्यापीठ | १७ | ५,५८२ |
| ९. एस.एन.डी.टी.विद्यापीठ,मुंबई | १ | १८० |
| १०. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विद्यापीठ, लोणेरे (रायगड) | १ | ३९० |
| एकूण | १५१ | ४६,८६९ |

१२.७५ अभियांत्रिकी पदवी महाविद्यालयात शैक्षणिक २००४-०५ मध्ये प्रवेश दिलेल्या ३८,९७२ विद्यार्थ्यांपैकी ८,३ (२१ टक्के) मुली होत्या तर ७,८९७ (१७ टक्के) जागा रिक्त राहिल्या.

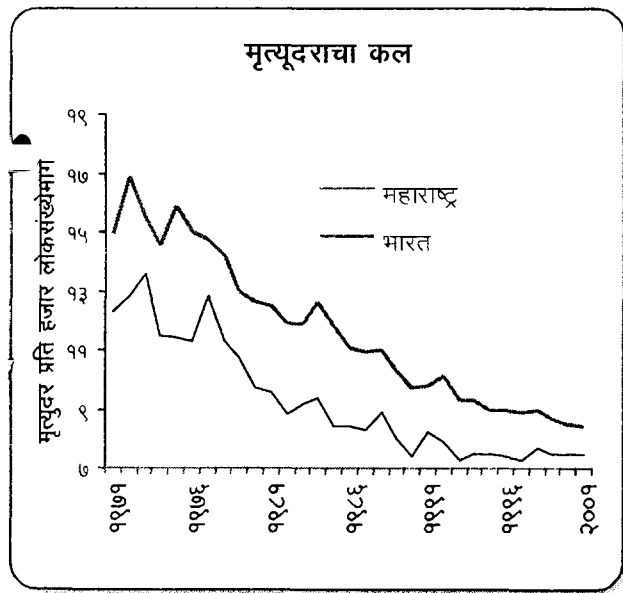
क्रीडा प्रबोधिनी

१२.७६ ८ ते १४ वर्षे वयोगटातील विद्यार्थ्यांची निवड ५ ८ ते १० वर्षांच्या प्रशिक्षणाद्वारे त्यांच्यामधून राष्ट्रीय व आंतरराज्य दर्जाचे खेळाडू तयार करण्याच्या उद्देशाने राज्यात पुणे येथे मध्यवर्ती केंद्र आणि राज्यात विविध ठिकाणी क्रीडा प्रबोधिनी स्थापन करण्यात आल्या. त्यानुसार राज्यात ११ ठिकाणी क्रीडा प्रबोधिनी सुरू करण्यात आल्या. १९९७-९८ ते २००३-०४ वर्षांमध्ये या ११ क्रीडा प्रबोधिनीतून अथलेटिक्स, जलतरण, डायव्हिंग, हॉर्न फुटबॉल, हॅण्डबॉल, कुस्ती, ज्युडो, हॉकी, सायकलिंग, ट्रायथलॉन, धनुर्विद्या, रोइंग, शूटिंग, जिम्नॅस्टिक्स या खेळांचे प्रशिक्षण दर वर्षी ४७० प्रशिक्षणार्थींना देण्यात आले. २००३-०४ या वर्षात एकूण प्रशिक्षणार्थींनी राज्यस्तरावर, १०६ प्रशिक्षणार्थींनी राष्ट्रीय स्तरावर प्रशिक्षणार्थींनी आंतरराष्ट्रीय स्तरावर नैपुण्य संपादन केले. प्रबोधिनी सुरू झाल्यापासून २२ खेळाडूंनी भारतीय संघात स्थान मिळवून देशाचे प्रतिनिधित्व केले. २००४-०५ मध्ये या क्रीडा प्रबोधिनी ३ ४७० प्रशिक्षणार्थ्यांची निवड झाली व त्यामध्ये ७२ (१५ टक्के) मुली

सार्वजनिक आरोग्य

१२.७७ “राष्ट्रीय आरोग्य धोरण-२००२” चे मुख्य उद्दीष्ट वर्सामान्य जनतेच्या आरोग्याचा दर्जा अपेक्षित स्तरापर्यंत गाठणे हा आहे. या धोरणांतर्गत समाजातील गरजू आणि दुर्बल घटकातील जनतेस द्रव्यांनी ठेवून, जनतेच्या आरोग्याचा दर्जा उंचावण्याचे ध्येय साध्य रावण्याचे आहे. आरोग्य विषयक अलिकडील सातत्य टिकवून घ्यासाठी आरोग्य क्षेत्रात मोठ्या गुंतवणूकीची गरज आहे. उपचाराला न देणारे आणि असंसर्गजन्य रोग या वरील उपचारासाठीचे आवश्यक असलेले तंत्रज्ञान महागडे असल्यामुळे आरोग्यावरील खर्चात मोठ्या प्रमाणात वाढ होत आहे. “राष्ट्रीय आरोग्य धोरण-२००२” मार, २०१० अखेर आरोग्यसेवेतील गुंतवणूक स्थूल राज्य उत्पन्नाच्या टक्के इतकी होणे अपेक्षित आहे.

१२.७८ आरोग्याच्या सुविधा पुरविण्यासाठी जरी दवाखान्यांची संख्या मोठ्या प्रमाणावर वाढून गोंधळ सद्दृश्य स्थिती निर्माण झाली असली तरी, येथे मृत्यूदराचे प्रमाण मोठे आहे अशा ठिकाणी मात्र कमी दवाखाने उपलब्ध आहेत. तथापि, सार्वजनिक क्षेत्र, स्वयंसेवी व खाजगी क्षेत्रातील रचसे दवाखाने सुयोग्य मनुष्य बळाचा अभाव, अपुरी पायाभूत सुविधा, मचार सेवेतील कमतरता आणि अपुरा औषध पुरवठा अशा स्थितीत पर्यंत आहेत. आरोग्याची सुविधा आणि त्याचा वापर यामध्ये ग्रामीण क्षेत्र जिल्ह्या-जिल्ह्यांमध्ये मोठ्या प्रमाणावर तफावत जाणवते. राज्यातील म, डॉंगरी, ग्रामीण आणि आदिवासी भागात अशा सुविधांचा मोठा अभाव आहे. राज्यातील द्वितीय आणि तृतीय स्तरावरील आरोग्य स्थानांत चांगल्या सुविधांबरोबरच कुशल कर्मचारीवृंद उपलब्ध असला ही, आरोग्यसेवेतील बदलत्या गरजा, सतत अद्ययावत होत असलेले त्रज्ञान, आरोग्य विषयक उपकरणांचा अभाव व कायम टिकून न वणारे कर्मचारी यामुळे त्यांना हे दवाखाने चालविणे कठीण जात आहे.



१२.७९ राज्यात २००४ अखेर, ९४५ सार्वजनिक व शासन अनुदानित रुग्णालये, २,०१९ दवाखाने, १,८०७ प्राथमिक आरोग्य केंद्रे आणि ९,७३१ उपकेंद्रे आरोग्य सेवा पुरविण्यात कार्यरत होती. ह्या सर्व आरोग्य सेवांमुळे राज्यातील जनतेचा आरोग्याचा दर्जा उल्लेखनीयरीत्या सुधारण्यास मदत होत असल्याचे महाराष्ट्र राज्यातील भारताच्या तुलनेत कमी असणारे २००२ मधील मृत्यू दर (७.३) व बालमृत्यू दर (४५) यावरून दिसून येते. हे दर अखिल भारतासाठी अनुक्रमे ८.१ आणि ६३ इतके होते. जन्माच्या वेळच्या आयुर्मर्यादेबाबतच्या आकडेवारीतही महाराष्ट्र राज्याने सातत्याने सुधारणा दाखविली आहे. १९७०-७५ मध्ये पुरुषांची व महिलांची जन्माच्या वेळी आयुर्मर्यादा अनुक्रमे ५३.३ व ५४.५ वर्षे होती, ती २००१-०६ च्या प्रक्षेपित अनुमानानुसार पुरुषांसाठी ६६.८ वर्षे व स्त्रियांसाठी ६९.८ वर्षे अशी आहे. राज्यातील जीवनविषयक सांख्यिकी आणि उपलब्ध वैद्यकीय सुविधा यांबाबतची सविस्तर माहिती भाग-दोन मधील अनुक्रमे तक्ता क्र. ३ व ५९ मध्ये दिली आहे.

कुटुंब कल्याण

१२.८० कुटुंब कल्याण कार्यक्रमाचा मुख्य उद्देश लोकसंख्येमध्ये स्थिरता आणणे व लोकांच्या जीवनाचा दर्जा वाढविणे हा आहे. लोकसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम राज्यात प्रभावीपणे राबविल्यामुळे २००२ ह्या वर्षाकरिता राज्यातील २०.३ हा जन्मदर अखिल भारताच्या २५.० इतक्या जन्मदराच्या तुलनेत, कमी असल्याचे दिसून येते. राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य पाहणी-१९९८ (राकुआपा-२) नुसार राज्यात कुटुंब कल्याण कार्यक्रमांतर्गत कुटुंब नियोजनाच्या विविध पध्दतींनी संरक्षित जननक्षम जोडप्यांचे प्रमाण ६०.९ टक्के होते, तर अखिल भारताकरिता हे प्रमाण ४८.२ टक्के इतके होते. राज्यातील एकूण जननक्षम जोडप्यांपैकी ५२.२ टक्के जोडप्यां नसबंदी पध्दतीने संरक्षित होती. राज्यात २००३-०४ वर्षात ६.८९ लाख नसबंदी शस्त्रक्रिया करण्यात आल्या, तर २००२-०३ या वर्षात त्या ६.८२ लाख करण्यात आल्या होत्या. राज्यात २००४-०५ मध्ये ऑक्टोबर अखेर, २.९५ लाख नसबंदी शस्त्रक्रिया करण्यात आल्या. ही संख्या २००३-०४ मधील तत्सम कालावधीतील शस्त्रक्रियांच्या संख्येपेक्षा २ टक्क्यांनी कमी आहे.

१२.८१ पूर्वी कुटुंबकल्याण कार्यक्रमात मुख्य भर नसबंदी शस्त्रक्रियांवर होता, तरी अपत्यांच्या जन्मात योग्य अंतर ठेवणे ही बाब तितकीच महत्त्वाची झालेली आहे. म्हणून तांबी, इन्ट्रायुटेरिन साधने (आय.यू.डी.), पारंपरिक संतती प्रतिबंधक साधने, इत्यादी पध्दतींच्या प्रसारावर शासन जास्त भर देत आहे. याचा परिणाम म्हणून एकूण जोडप्यांपैकी, नसबंदी शस्त्रक्रियांव्यतिरिक्त इतर कुटुंब नियोजन पध्दतींनी संरक्षित असलेल्या जोडप्यांची टक्केवारी ८.७ आहे (राकुआपा-२). २००४-०५ मध्ये डिसेंबर अखेर, तांबी स्वीकारणाऱ्यांची संख्या ३.१५ लाख इतकी होती व ती २००३-०४ च्या तत्सम कालावधीतील संख्येपेक्षा ५ टक्क्यांनी जास्त होती.

१२.८२ जननक्षमतेचा दर कमी करण्याचा प्रभावी मार्ग म्हणजे ज्यांना एक किंवा दोन हयात मुले आहेत, अशा तरुण जोडप्यांकडून कुटुंबकल्याण कार्यक्रमाचा स्वीकार होणे होय. पुरुष नसबंदी केलेल्यांच्या बाबतीत, त्यांच्या हयात मुलांची सरासरी संख्या १९७९-७२ मध्ये ४.३ होती, तर २००३-०४ मध्ये ती २.६१ इतकी कमी झाली आणि स्त्री नसबंदी केलेल्यांच्या बाबतीत, ती ४.५ वरून २.४९ इतकी कमी झाली. आय.यू.डी. स्वीकारणाऱ्यांच्या बाबतीत मुलांची सरासरी संख्या १९७९-८० मधील २.३ वरून २००२-०३ मध्ये १.४९ अशी कमी झाली. त्याचप्रमाणे, त्याच कालावधीत, कुटुंब नियोजन पद्धती स्वीकारल्या वेळीचे सरासरी वय, पुरुष नसबंदी केलेल्यांच्या बाबतीत ३९.५ वरून २८.८ वर्षे असे कमी झाले, तर स्त्री नसबंदी केलेल्यांच्या बाबतीत ते ३२.४ वरून २७.० वर्षे असे कमी झाले, आणि आय.यू.डी. स्वीकारणाऱ्यांच्या बाबतीत ते २७.४ वरून २४.८ वर्षे असे झाले, हे सुचिन्ह आहे. पुरुष नसबंदीसाठी महाराष्ट्र शासनाचे रुपये ३५१/- व केंद्र शासनाचे रुपये १५०/- असा प्रोत्साहनपर मोबदला लाभार्थींना दिला जातो.

प्रजनन व बाल आरोग्य कार्यक्रम

१२.८३ बालमृत्यु व मातामृत्यु यांचे प्रमाण कमी करणे हा या कार्यक्रमाचा उद्देश आहे. ह्या कार्यक्रमाखाली तीन उपक्रम घेण्यात येतात. ह्या उपक्रमांचा तपशील आणि कार्यक्रमांची प्रगती तक्ता क्र. १२.१८ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १२.१८

प्रजनन व बाल आरोग्य कार्यक्रमाखालील महाराष्ट्रातील लाभधारकांची संख्या

| अ.क्र. | योजनेचे नाव | (लाखात) | |
|--|--|---------|----------|
| | | २००३-०४ | २००४-०५* |
| (अ) फॉलिक अॅसिड व फेरस सल्फेट गोळ्यांचे वितरण | | | |
| १. | गरोदर स्त्रियांसाठी - | | |
| | (अ) प्रतिबंधात्मक | १२.४ | ९.५४ |
| | (ब) उपचारात्मक | ७.२ | ५.५८ |
| २. | १-५ वर्षे वयोगटातील मुलांसाठी | २३.९ | २२.०९ |
| (ब) लसीकरण | | | |
| १. | त्रिगुणी-तिसरा डोस | २१.१ | १४.२० |
| २. | पोलिओ-तिसरा डोस | २०.८ | १४.२७ |
| ३. | क्षय प्रतिबंधक | २१.७ | १५.९० |
| ४. | गोवर प्रतिबंधक | १९.५ | १४.३२ |
| ५. | धनुर्वात प्रतिबंधक (गरोदर स्त्रियांना) | २१.४ | १४.४४ |
| (क) इतर प्रतिबंधक लस/मात्रा - | | | |
| १. | धनुर्वात प्रतिबंधक (१ ते १० वर्षे) | २०.६ | १३.१६ |
| २. | धनुर्वात प्रतिबंधक (१० ते १६ वर्षे) | १८.२ | १२.०१ |
| ३. | मुखाद्वारे 'अ' जीवनसत्व (९ महिने ते ३ वर्षे) | ५२.० | ६४.७१ |

* डिसेंबर, २००४ अखेर

पल्स पोलिओ कार्यक्रम

१२.८४ जागतिक आरोग्य संघटनेने जग 'पोलिओमुक्त' करण्याच्या निश्चित केले आहे. त्याचा एक भाग म्हणून भारत सरकारच्या आरोग्य विभागाने पोलिओ लसीकरण कार्यक्रम संपूर्ण देशात राबविण्याचा निर्णय घेतला. पोलिओचे देशातून निर्मूलन करण्यासाठी १९९५-९६, २००२-०३ या कालावधीत पोलिओच्या नियमित लसीकरण कार्यक्रमाव्यतिरिक्त, ०-५ वर्षे वयोगटातील मुलांना, आधी दिलेला डोस विचारात न घेता, प्रत्येक वर्षी पोलिओचे दोन अतिरिक्त मौखिक डोस (१९९९-२००० मधील चार डोस हा अपवाद वगळता) देण्यात आले. २००३-०४ या वर्षात राज्यातील सुमारे ११६ लाख मुलांना पोलिओचे दोन अतिरिक्त डोस देण्यात आले. २००४-०५ मध्ये ४ एप्रिल व १ ऑक्टोबर रोजी अनुक्रमे ११४.९ लाख व ११२.२ लाख मुलांना हे दोन अतिरिक्त डोस देण्यात आले.

विशेष शालेय आरोग्य कार्यक्रम

१२.८५ या कार्यक्रमाखाली दरवर्षी इयत्ता पहिली ते चौथी मधील विद्यार्थ्यांची आरोग्य तपासणी करण्यात येते. २००३-०४ या वर्षात असा कार्यक्रम १० व २५ जानेवारी, २००४ मध्ये घेण्यात आला आणि राज्यातील ६४,१६८ शाळांमधील सुमारे ६०.२३ लाख विद्यार्थ्यांचा आरोग्याची तपासणी करण्यात आली आणि किरकोळ आजारपणासारखे प्राथमिक स्वरूपाचे औषधोपचार करण्यात आले व गंभीर स्वरूपाचे आजारबाबत संदर्भसेवा पुरविण्यात आल्या. या योजनेखाली २००४-०५ मध्ये १.३५ कोटी रुपये खर्च होतिल अशी अपेक्षा आहे.

सावित्रीबाई फुले कन्या कल्याण योजना

१२.८६ राज्याच्या नविन लोकसंख्या विषयक धोरणानुसार सावित्रीबाई फुले कन्या कल्याण योजनेत १ एप्रिल, २००० पासून बदल करण्यात आला आहे. एक किंवा दोन मुली असताना व मुलगा नसलेल्या आणि नसबंदी शस्त्रक्रिया करून घेणाऱ्या दारिद्र्य रेषेखालील जोडप्यांना सदर योजना लागू करण्यात आली आहे. दुसऱ्या भागात प्रत्येक लाभार्थी मुलीस किंवा १० वी पर्यंतचे शिक्षण पूर्ण केल्यास व वयाची २० वर्षे पूर्ण होण्याअगोस्येपर्यंत मुलगा नसल्यास अतिरिक्त लाभ ५,००० रुपये पाच वर्षांच्या मुदत ठेवीच्या स्वरूपात देण्यात येतो. या योजनेंतर्गत २००२-०३ व २००३-०४ या वर्षांत अनुक्रमे ४७५ व ३८४ लाभार्थी होते आणि त्यावर अनुक्रमे ४७.५ लाख व ३८.४ लाख रुपये इतका खर्च झाला. या योजनेमधील एक किंवा दोन मुली असताना व मुलगा नसताना आणि नसबंदी शस्त्रक्रिया करून घेणाऱ्या जोडप्यांच्या मुलीच्या नावे १०,०००/- रुपये पाच वर्षांच्या मुदत ठेवीच्या स्वरूपात देण्यात येतात. जर दोन मुली असल्यास, प्रत्येक मुलीस ५,०००/- रुपये प्रमाणे १८ वर्षांच्या मुदत ठेवीच्या स्वरूपात देण्यात येतात. सुरुवातीपासून या योजनेवर डिसेंबर २००४ अखेर एकूण २.४८ कोटी रुपये इतका खर्च झाला असून त्याअंतर्गत एकूण २,४८१ लाभार्थ्यांना लाभ दिला गेला.

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम

१२.८७ राष्ट्रीय एड्स (अक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियन्सी सिन्ड्रोम) नियंत्रण प्रकल्प ही १०० टक्के केंद्र पुरस्कृत योजना असून ती देशभरात जागतिक बँकेच्या सहाय्याने राबविण्यात येत आहे. पहिल्या टप्प्यात सदर प्रकल्पास सप्टेंबर, १९९२ ते मार्च, १९९९ या कालावधीसाठी मान्यता मिळाली होती. प्रकल्पाचा दुसरा टप्पा राज्यात (बृहन्मुंबई व्यतिरिक्त) एप्रिल, १९९९ पासून महाराष्ट्र एड्स नियंत्रण संस्थेमार्फत राबविण्यात येत आहे. प्रकल्पाचा दुसरा टप्पा देखील जागतिक बँकेच्या सहाय्याने १९९९-२००४ या कालावधीसाठी नियोजित करण्यात आला आहे. २००२-०३, २००३-०४ व २००४-०५ या वर्षांमध्ये महाराष्ट्र राज्य एड्स नियंत्रण संस्थेला अनुक्रमे १०.५० कोटी रुपये, १०.०० कोटी रुपये व ७.५० कोटी रुपये एवढा निधी प्राप्त झाला. सदर संस्थेने अनुक्रमे २००२-०३ मध्ये ८.९३ कोटी रुपये, २००३-०४ मध्ये १०.७७ कोटी रुपये आणि २००४-०५ मध्ये ९.४८ कोटी रुपये खर्च केले. महाराष्ट्र राज्यातील एड्स नियंत्रण कार्यक्रम विषयक आकडेवारी तक्ता क्र.१२.१९ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १२.१९

महाराष्ट्र राज्यातील एड्स विषयक आकडेवारी

(संख्या)

| अ क्र. | बाब | २००४-०५ मध्ये डिसेंबर अखेर | डिसेंबर, २००४ अखेर संचित |
|--------|---|----------------------------|--------------------------|
| १. | अतिजोखीम गटातील तपासणी केलेल्या व्यक्ती | ३,३३,५८० | १३,३५,३०० |
| | अ) दोन चाचण्यांवरून एचआयव्ही बाधित | २५,८८२ | १,५३,४६३ |
| | ब) एचआयव्ही बाधित प्रमाण (टक्के) | ७.८ | ११.५ |
| २. | एड्स रुग्ण | ५,२९६ | २५,८८४ |
| ३. | एड्सने मृत्यु | ४२६ | २,२५७ |
| ४. | तपासलेले रक्त नमुने | ५७,८०,६०१ | ७८,३७,५६४ |
| ५. | एलिसा रिअॅक्टिव्ह रक्त नमुने | ५,७४५ | ९४,३७१ |
| ६. | एलिसा रिअॅक्टिव्हिटी प्रमाण (टक्के) | ०.६ | १.२ |

एच.आय.व्ही.- ह्युमन इम्युनो डेफिशियन्सी व्हायरस

१२.८८ रक्तनमुना गोळा करताना रक्तातील एचआयव्हीचा प्रादुर्भाव घेण्यासाठी प्रत्येक नमुन्याची एचआयव्ही/गुप्तरोग, रक्तातील कावीळ व हिंवाताप जंतूंची तपासणी केली जाते. यासाठी राज्यात २६९ रक्तपेढ्यांची नोंदणी झालेली असून, त्यांपैकी २५० रक्तपेढ्या कार्यरत आहेत. तसेच, राज्यात एकूण ५७ ऐच्छिक सल्ला व रक्त तपासणी केंद्रे असून त्यांपैकी, २५ जिल्हा रुग्णालये, ११ शासकीय/वैद्यकीय महाविद्यालये, ११ उप जिल्हा रुग्णालये व १० महानगरपालिका रुग्णालये यामध्ये आहेत. गुप्तरोग नियंत्रण कार्यक्रमांतर्गत राज्यात ६१ ठिकाणी गुप्तरोग चिकित्सा केंद्रांची उभारणी करण्यात आली आहे. एच.आय.व्ही. बाधित मातेकडून तिच्या अर्भकास एचआयव्ही संसर्ग प्रतिबंधक व उपचार करण्यासाठी राज्यात ५५ केंद्रे शासकीय, खाजगी रुग्णालये, जिल्हा रुग्णालये व जिल्हास्तरीय रुग्णालये यामध्ये स्थापन करण्यात आली आहेत. २००४-०५ मध्ये अशी १६ नवीन केंद्रे स्थापन करण्यास मंजूरी देण्यात आली आहे.

प्रहरी सर्वेक्षण

१२.८९ राज्यात एच.आय.व्ही.च्या लागणीचे प्रमाण तपासण्यासाठी १ जुलै ते ३० सप्टेंबर, २००४ दरम्यान प्रहरी सर्वेक्षण घेण्यात आले. सदरच्या काळात राज्यात एकूण ८० केंद्रांमध्ये रक्तनमुने घेण्यात आले. त्यामध्ये ९ गुप्तरोग चिकित्सा केंद्रे, ३३ जिल्हातील रुग्णालयात गरोदर माता काळजी विभाग, ३३ प्राथमिक आरोग्य केंद्रातील गरोदर माता काळजी विभाग, एक विशेष वयोगटातील गरोदर माता काळजी विभाग यांचा समावेश होता. हे रक्तनमुने एच.आय.व्ही. व गुप्तरोग यांच्या बाधेसंदर्भात जिल्हा तपासणी प्रयोगशाळांमध्ये तपासण्यात आले. सदरचा अभ्यास रोगाच्या फैलावाबाबतची स्थिती अजमावण्यासाठी प्रत्येक वर्षी घेतला जातो. त्यानुसार एच.आय.व्ही. बाधेसंबंधीचे प्रमाण गरोदर माता काळजी विभागात ०.७५ टक्के असून, गुप्तरोग चिकित्सा केंद्रात ते १०.४ टक्के इतके आहे.

माहिती, शिक्षण व संपर्क

१२.९० एच.आय.व्ही./एड्स रोगाबाबत जागृती निर्माण करण्यासाठी जागतिक एड्स दिनानिमित्त आंतरराष्ट्रीय मॅरेथॉन.गणेशोत्सवात जन-जागृती तसेच पंढरपूर आणि कोल्हापूर येथे जन-जागृती मोहीमेचे आयोजन करण्यात आले होते. त्याचप्रमाणे, जागतिक एड्स दिन/सप्ताहाच्या निमित्त शाळा व महाविद्यालयांमधील किशोरवयीन मुली, ट्रक ड्रायव्हर व क्लिनर यांच्यासाठी तालुका पातळीवर मेळावे आयोजन करण्यात आले.

शालेय एड्स प्रतिबंधक शैक्षणिक कार्यक्रम

१२.९१ युनिसेफच्या तांत्रिक व आर्थिक पाठबळावर राज्यात सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक कार्य व विशेष सहाय्य विभाग आणि आदिवासी विभाग यांच्यामार्फत १९९४ पासून शालेय एड्स प्रतिबंधक शैक्षणिक कार्यक्रम राबविण्यात येतो. माध्यमिक शाळेतील ९ वी, ११ वी तसेच आश्रम शाळेतील ७ वी, ८ वी व ९ वी च्या विद्यार्थ्यांना त्याच शाळेतील शिक्षकांच्या द्वारे स्वास्थ्य जीवनकौशल्य बाबतची माहिती व शिक्षण देण्यात येत आहे. त्याचबरोबर शासकीय संस्था, स्वयंसेवी संस्थांचाही त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणावर सहभाग आहे. आतापर्यंत राज्यातील १५,५१० उच्च माध्यमिक शाळांपैकी, १४,५०० शाळांमध्ये हा कार्यक्रम राबविण्यात आला आहे.

१२.९१.१ युनिसेफ व राज्याच्या शिक्षण विभागाच्या सहाय्याने व समन्वयाने झालेल्या किशोरवयीन विद्यार्थ्यांसाठी जीवन कौशल्य प्रशिक्षण कार्यक्रम २००४-०५ मध्ये हाती घेण्यात आला आहे. एन.सी.ई.आर.टी. च्या मार्गदर्शक सूचानुसार एस.सी.ई.आर.टी. ने किशोरवयीन विद्यार्थ्यांकरिता सदर कार्यक्रम आयोजित केला असून एड्स नियंत्रण कार्यक्रमांतर्गत सदर प्रशिक्षणातील विषय व एड्स संदर्भात जाणीव, जागृती व त्यासाठी आवश्यक जीवन कौशल्यांचा एकत्रिक समावेश करून प्रशिक्षणाचे नियोजन करण्यात आले आहे.

बृहन्मुंबईसाठी “एड्स नियंत्रण कार्यक्रम”

१२.९२ बृहन्मुंबई महानगरपालिकेने १९९८ मध्ये स्थापन केलेल्या मुंबई जिल्हे एड्स नियंत्रण सोसायटी मार्फत महानगरामध्ये “राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम” राबविण्यात येतो. बृहन्मुंबईतील सतत वाढती लोकसंख्या, कामधंद्यासाठी एकाकी पुरुषाचे शहरात होणारे मोठ्या प्रमाणावरील स्थलांतर यामुळे शहरातील एच.आय.व्ही./एड्स चा प्रश्न गंभीर बनला आहे.

१२.९२.१ जुलै ते ऑक्टोबर २००४ मध्ये केलेल्या केंद्रिय सर्वेक्षणानुसार एच.आय.व्ही संसर्गाचे प्रमाण गर्भवती स्त्रीयांमध्ये १.१३ टक्के, व्यवसायिक देह विक्रय करणाऱ्यांमध्ये ४४.७६ टक्के, गुप्तरोग बाधितांत १४.७८ टक्के, शिरेतील इंजेक्शन द्वारे नशिले पदार्थग्रहण करणाऱ्यात २८ टक्के तर समलिंगी संभोग करणाऱ्या पुरुषात ९.६ टक्के इतके आढळले. २००४-०५ मध्ये क्षयरोगी व हिजडे ह्या दोन नवीन गटांत तपासणी करण्यात आली व त्यामध्ये एच.आय.व्ही संसर्गाचे प्रमाण अनुक्रमे ११ टक्के व ४९ टक्के इतके आढळले. रक्तदान करणाऱ्यांमध्ये हे प्रमाण ०.६५ इतके होते.

१२.९२.२ बृहन्मुंबई महानगरात २००३ मध्ये २,९१३ एड्सचे रुग्ण व २३३ एड्समुळे झालेले मृत्यु नोंदले गेल, तर २००४ मध्ये सप्टेंबर महिन्यापर्यंत एड्स रुग्णाची व एड्समुळे मृत्युची संख्या अनुक्रमे २,२९७ व १८० इतकी होती. राज्यातील एड्स बाधित रुग्णांमध्ये तसेच एड्सने मृत्यू पावलेल्यांमध्ये पुरुषांचे प्रमाण ७० टक्के होते.

१२.९२.३ मुंबई जिल्हे एड्स नियंत्रण संस्थेस २००३-०४ मध्ये ५.२० कोटी रुपये इतका निधी प्राप्त झाला व संस्थेने ७.०१ कोटी रुपये खर्च केले. चालू वर्षात १५ नोव्हेंबर, २००४ पर्यंत संस्थेला ४.०० कोटी रुपये इतका निधी प्राप्त झाला असून २.९४ कोटी रुपये खर्च झाले.

१२.९२.४ मुंबई जिल्हे एड्स नियंत्रण संस्थेमार्फत संपूर्ण बृहन्मुंबईत विविध माध्यमाद्वारे जनजागृती मोहिम सुरु केली आहे. बृहन्मुंबईत आतापर्यंत ८५ टक्के शाळांमध्ये विद्यार्थी व शिक्षकांसाठी एड्स व लैंगिक शिक्षण कार्यक्रम घेण्यात आले. तसेच, मुंबई जिल्हे एड्स जागृती नियंत्रण संस्थेच्या तांत्रिक व आर्थिक सहकार्याने विविध रुग्णालयातील डॉक्टर्स, परिचारिका, निम्नवर्गाकिय कर्मचारी व इतर कर्मचारी यांच्यासाठी एच.आय.व्ही/एड्स विषयी प्रशिक्षण आयोजित केले जाते. ही संस्था २१ स्वयंसेवी संस्थांमार्फत, बृहन्मुंबईत १८ ठिकाणी एड्स नियंत्रण कार्यक्रम राबवित आहे.

सामाजिक न्यायासाठीच्या योजना

राष्ट्रीय सामाजिक सहाय्य कार्यक्रम

१२.९३ राष्ट्रीय सामाजिक सहाय्य कार्यक्रमांतर्गत दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांना सामाजिक सहाय्य पुरविण्याचे धोरण प्रस्तुत करण्यात आले आहे. याबाबतची राज्य व केंद्र शासनाच्या समवर्ती जबाबदारीची जाणीव ठेवून, घटनेच्या कलम ४१ व ४२ मधील मार्गदर्शक तत्वांची परिपूर्ती करण्याच्या दृष्टीने हा कार्यक्रम एक महत्त्वाचा टप्पा आहे. राष्ट्रीय सामाजिक सहाय्य कार्यक्रमांमध्ये खालील दोन योजनांचा समावेश आहे.

१) राष्ट्रीय वृद्धापकाळ निवृत्तीवेतन योजना :- या योजनेअंतर्गत ६५ वर्षे व त्यापेक्षा जास्त वयाच्या प्रत्येक निराधार व्यक्तीस दरमहा ७५ रुपये केंद्र शासनाकडून निवृत्तीवेतन व त्याशिवाय राज्य शासनाकडून श्रावणवाळ सेवा योजनेअंतर्गत प्रत्येक लाभार्थ्यांस दरमहा १७५ रुपये देण्यात येतात.

२) राष्ट्रीय कुटुंब लाभ योजना :- दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबातील १८ ते ६४ वर्षे वयोगटातील कमावत्या व्यक्तीचा अपघाती अथवा नैसर्गिक मृत्यू झाल्यास त्याच्या बाधित कुटुंबास एक रक्कमी रुपये १०,००० चे अर्थसहाय्य देण्यात येते.

१२.९३.१ राष्ट्रीय वृद्धापकाळ निवृत्तीवेतन या योजनेखाली २००३-०४ मध्ये २०.९३ कोटी रुपये राज्य शासनाने व ४१.३४ कोटी रुपये केंद्र शासनाने अर्थसहाय्य दिले आणि या योजनेखाली राज्यातील ४,४६,८४४ लाभधारकांना लाभ देण्यात आला. राष्ट्रीय कुटुंब लाभ योजनेखाली २२,८७० लाभधारकांना २२.८७ कोटी रुपये अर्थसहाय्य केंद्र शासनाने दिले.

संजय गांधी निराधार/आर्थिक दुर्बलांसाठी अनुदान योजना

१२.९४ सदर योजना ६५ वर्षांखालील निराधार स्त्री पुरुष, निराधार विधवा आणि अंध, अपंग, प्रमस्तिष्कघात, पक्षाघात, कर्करोग, क्षयरोग व एड्स यासारख्या दुर्धर शारीरिक व मानसिक आजारांमुळे स्वतःची उपजीविका चालवू न शकणारे यांना लागू आहे. सदर योजनेचा लाभ मिळविण्यासाठी पात्रतेच्या इतर अटी पुढीलप्रमाणे आहेत :- १) व्यक्त किमान १५ वर्षे महाराष्ट्र राज्याची रहिवासी असावी, २) ती व्यक्ती धर्मादाय संस्थेने चालविलेल्या कोणत्याही संस्थेची सदस्य नसावी. सदर योजनेअंतर्गत निराधार व्यक्तीस दरमहा २५० रुपये सहाय्य देण्यात येते एका कुटुंबात दोन लाभार्थी असल्यास, दरमहा ५०० रुपये आणि दो-पेक्षा जास्त लाभार्थी असल्यास, दरमहा ६२५ रुपये एवढे अर्थसहाय्य त्या कुटुंबास देण्यात येते. २००३-०४ मध्ये या योजनेचे राज्यात एकूण ४,६६,१६६ लाभार्थी होते व त्यांना १३९.८५ कोटी रुपये अर्थसहाय्य देण्यात आले.

इंदिरा गांधी निराधार आणि भूमिहीन शेतमजूर महिला अनुदान योजना

१२.१५ सदर योजनेअंतर्गत ६५ वर्षांखालील महिला, ज्या निराधार भूमिहीन शेतमजूर, निराधार विधवा, परित्यक्त्या, घटस्फोट प्रक्रियेतील, अत्याचारित, कुटुंबप्रमुख पती तुरुंगात शिक्षा भोगत आहेत अशा, वेश्या व्यवसायातून मुक्त केलेल्या स्त्रिया, अनाथ मुली यांना अर्थसहाय्य पुरविले जाते. पात्रतेच्या इतर अटी व अर्थसहाय्याचे स्वरूप संजय गांधी निराधार/आर्थिक दुर्बलांसाठी अनुदान योजनेप्रमाणेच आहेत. सदर याजनेअंतर्गत २००३-०४ मध्ये ३,२२,८३३ लाभार्थी महिला/मुलींना १६.८५ कोटी रुपयाचा लाभ देण्यात आला.

महिला धोरण

१२.१६ महिलांबाबत होणारे सर्व प्रकारचे भेदभाव दूर करण्यासंबंधी संयुक्त राष्ट्र संघटनेच्या आमसभेने १९७९ मध्ये ठराव संमत केला होता. महिलांबाबतचे सर्व प्रकारचे भेदभाव दूर करणे हे या ठरावावर स्वाक्षरी करणाऱ्या सर्व देशांना बंधनकारक आहे. १९९४ मध्ये महिला धोरण तयार करणारे महाराष्ट्र हे भारतातील पहिले राज्य ठरले. भारत सरकारने ७३ वी व ७४ वी घटना दुरुस्ती करून महिलांसाठी १/३ आरक्षण ठेवण्याचा ऐतिहासिक निर्णय घेतला. महाराष्ट्र शासनाच्या १९९४ च्या महिलाविषयक धोरणाचा दर तीन वर्षांनी आढावा घेण्याची तरतूद आहे. त्यानुसार महिला धोरण २००१ मध्ये शिफारशी/उपाययोजनांची तरतूद करण्यात आली आहे. महिलांचा सहभाग, त्यांना संरक्षण, त्यांची आर्थिक उन्नती, त्यांच्या क्षमतेचे संवर्धन आणि या सर्वांसाठी अनुकूल वातावरण निर्मिती या सर्वांचा समावेश ह्या महिला धोरणात केला आहे.

बाल विकास धोरण

१२.१७ राष्ट्रसंघाच्या बाल हक्क परिषदेने सर्व राष्ट्रांना मुलांवर विशेष लक्ष्य केंद्रीत करण्यासाठी आवाहन केले आहे. भारतानेही या करारास संमती कळविली आहे. भारताच्या घटनेत मुलांना जगण्याचा अधिकार, त्यांची वाढ, विकास आणि सुरक्षा या हक्कांचा या अगोदरच अंतर्भाव करण्यात आलेला आहे. याशिवाय, राष्ट्रीय आणि राज्य स्तरांवरील विविध कायद्यांमध्ये बालकांच्या सुरक्षिततेची व मुलांच्या हक्कांची अवहेलना करणाऱ्यांविरुद्ध शिक्षेची तरतूद करण्यात आलेली आहे. भारतामध्ये बालकांशी संबंधित अनेक कायदे अस्तित्वात असले तरी, त्यापैकी बरेच कायदे आंतरराष्ट्रीय बाल हक्क परिषदेच्या दर्जापर्यंत पोहचण्यास पूर्तता करण्यास तोकडे पडतात. १९७४ मध्ये 'राष्ट्रीय बाल धोरण' जाहीर करण्यात आले होते. त्यामुळे महाराष्ट्रात बालकांचे हक्क अबाधित राखण्यासाठी 'बाल विकास धोरण' निश्चित करणे ही काळाची गरज आहे. केंद्र शासनाने आंतरराष्ट्रीय आरोग्य संस्थेशी केलेल्या वचन पूर्तानुसार महाराष्ट्र शासनाने प्रथमतः २००२ मध्ये 'बाल

विकास धोरण' जाहीर केले. या धोरणानुसार मुलांच्या हक्कांचे संरक्षण व त्यांचेमध्ये खेळीमेळीचे वातावरण तयार व्हावे, यासाठी राज्यात बाल हक्क आयोगाची स्थापना करावयाची आहे.

महिला व बाल विकास

१२.१८ शासनाचा महिला व बालकल्याण विकास विभाग राज्यात महिला व बालकांचा विकास वेगाने व परिणामकारकपणे साधण्यासाठी कार्यरत आहे. राज्यातील महिलांच्या व बालकांच्या उन्नतीसाठी महत्त्वाच्या योजनांखाली केलेले कार्य तक्ता क्र. १२.२० मध्ये दिले आहे.

तक्ता क्र. १२.२०

महिलांच्या व बालकांच्या उन्नतीसाठी राज्यातील महत्त्वाच्या योजनांतर्गत प्रगती : २००३-०४

| अ.क्र. | योजनेचे नाव | लाभधारकांची संख्या | खर्च (लाख रुपये) |
|--------|---|--------------------|------------------|
| १. | निराधार महिलाकरिता शासकीय महिला वसतिगृहे | ५१३ | २६५.८२ |
| २. | स्वयंसेवी आधारगृहे | २६३ | २२.३५ |
| ३. | महिला बहुउद्देशिय सामाजिक केंद्रे | ६४५ | ४.०९ |
| ४. | देवदासी मुला मुलीसाठी वसतिगृहे | १५० | ११.१३ |
| ५. | देवदासी मुला मुलीसाठी शालेय मदत | १३० | ०.४९ |
| ६. | देवदासीना निर्वाह अनुदान | ४,४५० | १५५.२४ |
| ७. | देवदासी प्रथा निर्मूलन, समाज प्रबोधनासाठी स्वयंसेवीसंस्थांना आर्थिक मदत | ४ * | ०.४० |
| ८. | हुंडा पद्धतीचे निर्मूलन | ३५ @ | १.४० |
| ९. | शासकीय संस्थांतील मुलींच्या विवाहासाठी आर्थिक मदत | ६ | ०.९० |
| १०. | विधवांच्या मुलींच्या लग्नासाठी आर्थिक मदत | ५८७ | ११.७४ |
| ११. | देवदासी अथवा तिच्या मुलींच्या विवाहासाठी आर्थिक मदत | ८ | ०.८० |
| १२. | स्वयंरोजगारासाठी स्त्रियांना व्यक्तीगत आर्थिक मदत | ४,५३६ | २२.६८ |
| १३. | व्यावसायिक प्रशिक्षणासाठी मुलींना विद्यावेतन | ५,७७० | ३४.६२ |
| १४. | महिला मंडळांच्या प्रशिक्षण केंद्रास आर्थिक मदत | ८,४२६ | ६०.५४ |
| १५. | जिल्हा परिषदेच्या महिला व बाल कल्याण समितीच्या योजना (२४ योजना) | ३३# | १८०.६० |

* संस्था, @ जिल्हे, # जि.प.,

१२.१९ राज्यात बाल कल्याण कार्यक्रमांतर्गत विविध शासकीय/स्वयंसेवी संस्था कार्यरत आहेत. बाल कल्याण योजनांची प्रगती तक्ता क्र. १२.२१ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १२.२१

**राज्यात बालकांच्या विकासासाठी महत्त्वाच्या योजनांखाली
२००३-०४ मध्ये केलेले कार्य**

| योजनेचे नाव | लाभधारकांची संख्या | खर्च (लाख रुपये) |
|---------------------------------|--------------------|------------------|
| शासकीय व स्वयंसेवी निरीक्षणगृहे | ३,७५० | ४२६.२६ |
| शासकीय व स्वयंसेवी बालगृहे | १२,५४० | १२४३.९७ |
| बालसदन व निराधारगृहे | ९,८१० | ८४८.०६ |
| अनाथालये | १,००२ | ८८.०० |
| स्वयंसेवी अनुरक्षण गृहे | ३० | ११.१८ |
| बाल संगोपन | ८६५ | ३६.११ |
| बाल मार्गदर्शन/चिकित्सा केंद्रे | १५० | १.०६ |

पोषण कार्यक्रम

१२.१०० लहान मुले, गरोदर स्त्रिया व स्तनदा माता यांच्या पोषणाच्या किमान गरजा भागविण्यासाठी व त्यांना आरोग्य सुविधा पुरविण्याच्या दृष्टीने राज्य शासन पोषण कार्यक्रमांतर्गत विविध योजना राबविते. या योजनांखाली केलेले कार्य खालीलप्रमाणे आहे.

एकात्मिक बालविकास सेवा योजना

ग्रामीण क्षेत्राकरिता पूरक पोषण आहार योजना

१२.१००.१ एकात्मिक बालविकास सेवा योजनेअंतर्गत पूरक पोषण आहार योजना राबविण्यात येत आहे. या योजनेची मुख्य उद्दीष्टे म्हणजे ६ वर्षाखालील बालकांना पोष्टीक आहार देऊन त्यांच्या आरोग्याचा दर्जा उंचावणे, समाजातील दुर्लक्षित गरोदर महिला आणि स्तनदा माता यांच्या कुटुंबियांना आहार देणे, दुर्गम आणि अति संवेदनशील क्षेत्रातील कुपोषणावर लक्ष केंद्रित करून ते नियंत्रणात आणणे आणि बालमृत्यूचे प्रमाण कमी करणे ही आहेत. हा कार्यक्रम अंगणवाडी केंद्रामार्फत संपूर्ण जिल्हापरिषद कार्यक्षेत्रात राबविला जातो. अंगणवाडी केंद्र स्थापन करण्यास बिगर आदिवासी क्षेत्रात १,००० लोकसंख्या, तर आदिवासी क्षेत्रात ७०० लोकसंख्या आवश्यक आहे. जिल्हा स्तरावर जिल्हापरिषदेत उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी (बालकल्याण), प्रकल्प स्तरावर बालविकास प्रकल्प अधिकारी आणि गावपातळीवर अंगणवाडी केंद्रात अंगणवाडी

सेविकेच्या पदाचा समावेश असून, केंद्र शासनाची मंजूरी दिलेल्या या पदांच्या आराखड्याचा राज्य शासनाने स्विकार केला आहे. राज्यात अशी ५२,८९९ लाख अंगणवाडी केंद्रे, एकूण ३०५ प्रकल्पात स्थापित केली आहेत.

१२.१००.२ बालकांमधील ३०० कॅलरीज उष्मांकाची आणि १० ते १२ ग्रॅम प्रथिनांची कमतरता भरून काढण्याकरिता प्रतिदिन प्रति लाभार्थी रुपये १.५० इतकी तरतूद करून अंगणवाडी केंद्राद्वारे त्यांना 'उसळ' व 'खिचडी' पुरविण्यात येते. आहारावरील खर्च राज्य शासन भागविते, तर आहाराव्यतिरिक्त खर्चाची प्रतिपूर्ती केंद्र शासनाद्वारे केली जाते. या योजनेखाली सन २००३-०४ मधील गरोदर स्त्रिया आणि स्तनदा माता या लाभार्थ्यांची संख्या ४६.६५ लाख असून, योजनेंतर्गत त्यावर १७३.६३ कोटी रुपये खर्च करण्यात आला. चालू वर्षात नोव्हेंबर, २००४ पर्यंत ४१.८६ लाख लाभार्थ्यांवर ५२.७३ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले.

नागरी भागाकरिता पूरक पोषण आहार योजना

१२.१००.३ राज्यातील नागरी भागात ३०० कॅलरीज उष्मांकाची आणि १० ते १२ ग्रॅम प्रथिनांची कमतरता भरून काढण्यासाठी प्रतिदिन प्रति लाभार्थी रुपये १.५० इतकी तरतूद असून त्यांना 'शिरा' व 'उसळ' या सारखे 'ग्रहण करण्यास सोयीस्कर असलेले' अन्न पुरविले जाते. या योजनेखाली २००३-०४ मधील गरोदर स्त्रिया आणि स्तनदा माता या लाभार्थ्यांची संख्या २.२६ लाख असून योजनेंतर्गत त्यावर १०.८२ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. चालू वर्षातील नोव्हेंबर, २००४ अखेर, ६.०७ लाख लाभार्थ्यांवर ५.८४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले.

प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना

१२.१०१ गाव पातळीवरील लोकांचा सतत विकास घडावा या हेतूने 'प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना' ही नवीन योजना सुरु करण्यात आली आहे. या योजनेखाली कुपोषित श्रेणी १ ते ४ मधील ६ महिने ते ३ वर्षे वयोगटातील बालकांचा समावेश केला आहे. प्रतिदिन प्रति लाभार्थी एक रुपया या प्रमाणे ३०० कॅलरीज उष्मांकाची आणि १० ते १२ ग्रॅम प्रथिनांची कमतरता भरून काढण्यासाठी लाभार्थ्यांला पोष्टीक आहार म्हणजे भुकटी स्वरूपातील उपचार शास्त्रभूत आहार देण्यात येतो. एप्रिल २००३ पासून या योजनेंतर्गत सुधारणा करण्यात आली असून, आता केवळ दारिद्र्यरेषेखालील कुटुंबातील मुलांना योजनेंतर्गत लाभ देण्यात येतो. या योजनेवर २००३-०४ मध्ये ४.५१ लाख लाभार्थ्यांवर ९.९० लाख रुपये खर्च करण्यात आले.

गृहनिर्माण

१२.१०२ सार्वजनिक व खाजगी सहभागाच्या माध्यमातून गृहनिर्माण क्षेत्रातील पायाभूत सुविधांचा विकास व समतोल ठेवताना येणाऱ्या अडचणींचे निरसन करण्यासाठी राष्ट्रीय आवास निवास योजना १९९८ मध्ये गठीत करण्यात आली. पायाभूत सुविधा क्षेत्रास ज्याप्रमाणे प्राधान्य क्षेत्र मानण्यात येते, तत्त्वतः पुरक सेवासह गृहनिर्माण क्षेत्रास प्राधान्य क्षेत्राचा दर्जा मिळणे अपेक्षित आहे. गृहनिर्मितीसाठी पोषक वातावरण तयार व्हावे याकरिता आर्थिक सवलती देणे आणि कायद्यात व नियमामध्ये सुधारणा करणे आवश्यक असल्याची राज्य शासनास जाणीव आहे. निवासाच्या समस्या सोडविण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र गृहनिर्माण व क्षेत्र विकास प्राधिकरण (म्हाडा) आणि शहर व औद्योगिक विकास महामंडळ (सिडको) मर्यादित यांची स्थापना केली आहे.

नागरी गृहनिर्माण

महाराष्ट्र गृहनिर्माण व क्षेत्रविकास प्राधिकरण

१२.१०३ महाराष्ट्र गृहनिर्माण व क्षेत्रविकास प्राधिकरणाचे (म्हाडा) प्रमुख उद्दिष्ट राज्यातील नागरी भागातील निवासाची गरज भागविणे हे आहे. म्हाडा त्यांच्या गृहनिर्माण उपक्रमांसाठी लागणारा निधी गृहनिर्माण व नागरी विकास महामंडळ (हुडको), भारतीय आयुर्विमा महामंडळ आणि राज्य शासन यांच्याकडून मिळविते.

१२.१०४ म्हाडाने सुरुवातीपासून मार्च, २००४ अखेर एकूण ३,९६,७२५ सदनिका बांधल्या. म्हाडाने मागील पाच वर्षात प्रवर्गनिहाय बांधलेल्या सदनिकांची संख्या व खर्च तक्ता क्र. १२.२२ मध्ये दर्शविण्यात आला आहे.

शहर व औद्योगिक विकास महामंडळ मर्यादित

१२.१०५ महाराष्ट्र प्रादेशिक आणि नगर अधिनियम, १९६६ अन्वये राज्यातील शहरी भागाचा विकास करण्यासाठी शहर व औद्योगिक

विकास महामंडळ (महाराष्ट्र) मर्यादित (सिडको) ची स्थापना मार्च, १९७० मध्ये करण्यात आली. समाजाच्या सर्व थरांतील जनतेस शाळा, रुग्णालये, समाज केंद्रे, खेळाची मैदाने, करमणुकीची ठिकाणे, सार्वजनिक सुविधा, रमणीय भूप्रदेश इत्यादी सर्व संरचनेसह घरे देण्याचा महत्त्वाकांक्षी विकास कार्यक्रम सिडकोने तयार केला आहे. ओरस येथील जिल्हा मुख्यालयाचे बांधकाम, वसई विरार उपविभागाचा विकास आणि नागपूरजवळ बुटीबोरी भागात 'मेघदूतनगर' या कामासाठी महाराष्ट्र शासनाने सिडकोस प्राधिकृत केले आहे.

१२.१०६ स्थापनेपासून मार्च, २००४ पर्यंत सिडकोने नवी मुंबईमध्ये निरनिराळ्या भागात एकूण १,१४,१०२ सदनिका (जागा व सेवा धरून) बांधल्या आहेत व त्यासाठी १,०८४ कोटी रुपये खर्च झाले आहेत. २००४-०५ मध्ये डिसेंबर अखेर ५५.६० कोटी रुपये या योजनेवर खर्च करण्यात आले. २००४-०५ मध्ये सिडकोने खालील बांधकाम प्रकल्प हाती घेतले आहेत.

१) 'मिलेनियम टॉवर' योजनेतर्गत उच्च उत्पन्न गटासाठी सानपाडा प्रभागामध्ये क्लब हाऊस तसेच तरण तलावासह फेज-२ मध्ये ४५६ आणि फेज-३ अंतर्गत १५६ सदनिकांचे काम चालू असून त्यावर २००३-०४ मध्ये २२.६० कोटी रुपये खर्च करण्यात आले.

२) 'स्पॅगोटी' योजने अंतर्गत अल्प व मध्यम उत्पन्न गटासाठी १४५६ सदनिका बांधण्याचे काम प्रगतीपथावर असून त्यावर २००३-०४ मध्ये २५ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले.

३) 'घरोंदा' या योजने अंतर्गत घनसोली प्रभागातील सेक्टर-९ येथे अल्प व मध्यम उत्पन्न गटासाठी ३,२३६ सदनिकांचे काम.

१२.१०७ सिडकोने मार्च, २००४ अखेर औरंगाबाद येथे २१,०८८ सदनिका, नाशिक येथे २४,५४४ सदनिका, नांदेड येथे ७,८८४ सदनिका आणि वाळुंज (औरंगाबाद) येथे ९७२ सदनिका बांधल्या असून त्यासाठी १०७ कोटी रुपये खर्च झाले आहेत. या योजनेसाठी २००४-०५ करिता ३५ लाख रुपयांची तरतूद करण्यात आली आहे. सिडकोने राज्यातील विविध ठिकाणी बांधलेल्या प्रवर्गनिहाय सदनिका व त्यावरील खर्चाचा तपशील तक्ता क्र. १२.२३ मध्ये देण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. १२.२२

म्हाडाकडून बांधण्यात आलेल्या सदनिकांची संख्या

| वर्ष | प्रवर्ग | | | | | एकूण सदनिका | खर्च (रुपये लाखात) |
|----------|------------------|-----------------|------------------|-----------------|-------|-------------|--------------------|
| | आर्थिक दुर्बल गट | अल्प उत्पन्न गट | मध्यम उत्पन्न गट | उच्च उत्पन्न गट | इतर | | |
| | | | | | | | |
| १९९९-०० | १,५९५ | ९,८९० | ५२३ | १६५ | ५० | १२,२२३ | १५,२८५ |
| २०००-०१ | १,०४४ | २,४६२ | २७९ | २९० | ७९ | ४,१५४ | ९,८५६ |
| २००१-०२ | १,०१३ | ३,५४९ | ४१८ | २२३ | ५७ | ५,२६० | १५,२३५ |
| २००२-०३ | ९३ | १,७९६ | १,२३५ | ५१६ | ६९८ | ४,३३८ | २४,५४६ |
| २००३-०४ | १,३६१ | ३,८६२ | ९७५ | ६४२ | १,३०१ | ८,१४१ | २०,६१९ |
| २००४-०५* | १६० | ५७१ | ६० | ७२ | - | ८६३ | १३,६७२ |

* ऑक्टोबर, २००४ अखेर

तक्का क्र. १२.२३

सिडकोने मार्च, २००४ अखेर बांधलेल्या सदनिका

| टिकाण | प्रवर्ग | | | एकूण सदनिका | खर्च (रुपये कोटीत) |
|-------------------|--------------------------------------|------------------|-----------------|-------------|--------------------|
| | आर्थिक दुर्बल गट/ अल्प उत्पन्न गट | मध्यम उत्पन्न गट | उच्च उत्पन्न गट | | |
| नवी मुंबई | ५७,००३ | ३२,४९२ | २३,०७१ | १,५३६ | १,१४,१०२ |
| औरंगाबाद | १८,७५९ | १,८९७ | ४३२ | ० | २१,०८८ |
| नाशिक | २१,३४३ | २,६१९ | ५८२ | ० | २४,५४४ |
| नांदेड | ७,७५८ | १२६ | ० | ० | ७,८८४ |
| वाळुंज (औरंगाबाद) | ७४२ | २३० | ० | ० | ९७२ |

झोपडपट्टी पुनर्वसन योजना

१२.१०८ बृहन्मुंबईतील ४० लाख झोपडपट्टीवासियांना मोफत घरे पूर्णविण्यासाठी शासनाने झोपडपट्टी पुनर्वसन योजना जाहीर केली होती. या योजने अंतर्गत झोपडपट्टीवासियांस २२५ चौ. फुटाची सदनिका घिनानामूल्य देण्यात यावयाची आहे.

१२.१०९ झोपडपट्टी पुनर्वसन योजने अंतर्गत फेब्रुवारी, २००५ अखेर प्राधिकरणाकडे एकूण १,२७३ पुनर्वसन प्रस्ताव प्राप्त झाले, त्यापैकी ७०४ प्रस्तावांना मंजूरी देण्यात आली. या योजने अंतर्गत फेब्रुवारी, २००५ अखेर ३३,५०५ पुनर्वसन सदनिकांद्वारे झोपडपट्टीवासीयांच्या कुटुंबियांचे पुनर्वसन करण्यात आले.

शिवशाही पुनर्वसन प्रकल्प लि.

१२.११० शिवशाही पुनर्वसन प्रकल्पांतर्गत आतापर्यंत ५६ इमारतींमधील ४,७५१ सदनिकांचे काम पूर्ण झाले आहे व ५५ इमारतींमधील ५,९३० सदनिकांचे काम प्रगतिपथावर आहे.

लोक आवास योजना

१२.१११ भारत सरकारने राष्ट्रीय झोपडपट्टी सुधार कार्यक्रम (रा.झो.सु.का.) ऑक्टोबर, १९९९ पासून केला आहे. या कार्यक्रमांतर्गत उपलब्ध होणाऱ्या निर्धीत १० टक्के रक्कम घरबांधणी व निवास सुधार याकरिता खर्च करण्यात येते. सदर योजनेत राज्य शासन ऑगस्ट, २००० मध्ये सहभागी झाले असून या योजने अंतर्गत राज्यातील अल्प उत्पन्न गटातील कुटुंबांसाठी मुंबई व्यतिरिक्त ६१ शहरांमध्ये ५०,००० सदनिका बांधण्याचा निर्णय शासनाने घेतला आहे. सदर योजनेस लोक आवास योजना समजण्यात येते व ती योजना म्हाडा मार्फत राबविली जाते. या योजनेखाली नोव्हेंबर, २००४ अखेर ६,९५९ सदनिका बांधण्यात आल्या असून त्यासाठी सप्टेंबर, २००४ पर्यंत १८५८ लाख रुपये इतका खर्च झाला.

लोक आवास योजनेअंतर्गत निधी स्रोत

(किंमत प्रति सदनिका ३०,०००/-रुपये)

| ३० हजार सदनिका मागासवर्गीयांसाठी | २० हजार सदनिका बिगर-मागासवर्गीयांसाठी |
|--|--|
| १) रा.झो.सु.का. ११,००० रुपये प्रति सदनिका | रा.झो.सु.का. १०,००० रुपये प्रति सदनिका |
| २) समाज कल्याण विभाग ९,००० रुपये प्रति सदनिका | ----- |
| ३) लाभधारकाचा स्वतःचा सहभाग ५,००० रुपये प्रति सदनिका | लाभधारकाचा स्वतःचा सहभाग ५,००० रुपये प्रति सदनिका |
| ४) हुडको/रा.गृ.मं. अशा वित्तीय संस्थांकडून कर्ज ५,००० रुपये प्रति सदनिका | हुडको/रा.गृ.मं. अशा वित्तीय संस्थांकडून कर्ज १५,००० रुपये प्रति सदनिका |

वाल्मिकी आंबेडकर आवास योजना

१२.११२ राज्यातील शहरी/नागरी संकुल भागातील झोपडपट्टीमध्ये आरोग्यास घातक परिस्थितीत राहणा-या झोपडपट्टीवासियांचे जीवनमान उंचविण्यासाठी आणि दारिद्र्य रेषेखालील व आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल घटकातील लोकांसाठी राज्य शासनाने वाल्मिकी आंबेडकर आवास योजना राज्यात राबविण्याचा निर्णय सप्टेंबर, २००२ मध्ये घेतला आहे. ही योजना राज्यातील ८० शहरांत राबविण्याचे ठरविण्यात आले आहे. या योजनेअंतर्गत प्रत्येक लाभधारकास देण्यात यावयाचा प्रतिघरकुल बांधकामाचा खर्च मेगा सिटीसाठी ६०,००० रुपये, मेट्रोसिटीसाठी ५०,००० रुपये आणि उर्वरित शहरांसाठी ४०,००० रुपये एवढा आहे या योजनेसाठी एकूण खर्चापैकी केंद्र व राज्य शासनाने प्रत्येकी ५० टक्के वाटा उचलावयाचा आहे. या योजनेमध्ये पुढील बाबीचा समावेश करण्यात आला आहे.

- १) लाभधारकांनी स्वतःच नवीन घराचे बांधकाम करणे
- २) सध्या अस्तित्वात असलेल्या झोपड्यांची श्रेणीवाढ/दुरुस्ती

३) निर्मल भारत अभियान विकास कार्यक्रमांतर्गत शौचालय गटांचे बांधकाम.

या योजनेच्या अंमलबजावणीसाठी म्हाडास नोडल एजन्सी म्हणून जाहीर करण्यात आलेले आहे. या योजने अंतर्गत सप्टेंबर-२००४ पर्यंत ९,६९३.३२ लक्ष रुपये खर्च करण्यात आला आहे.

१२.११३ २००३-०४ वित्तीय वर्षामध्ये या योजनेतर्गत राज्यात सुमारे १७,१७१ घरकुलांचे बांधकाम, १४१ घरांची श्रेणीवाढ व निर्मल भारत अभियान अंतर्गत ३,९०० शौचालये बांधकामासाठी म्हाडास केंद्र शासनाने मान्यता दिली. मार्च-२००४ अखेर ३९०८ घरकुले व २,५७२ शौचालयांचे बांधकाम पूर्ण करण्यात आले असून त्यासाठी ३,७५६ लाख रुपये खर्च करण्यात आला.

विडी घरकुल योजना

१२.११४ आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल घटकातील विडी कामगारांचे जीवनमान उंचावण्याकरिता महाराष्ट्र शासनाने राज्यात विडी घरकुल योजना राबविण्याचे जुलै, २००१ मध्ये ठरविले आहे. या योजनेअंतर्गत राज्य शासन व केंद्र शासन यांचेकडून प्रत्येकी २०,००० रुपये प्रति घरकुल अर्थसहाय्य दिले जाते. या योजनेअंतर्गत मार्च, २००४ पर्यंत १,३२१ लक्ष रुपये वितरित करण्यात आले आहेत. या योजने अंतर्गत सोलापूर मधील विडी कामगारांच्या दोन सहकारी गृहनिर्माण संस्थांना वित्त सहाय्य देण्यात आले. या दोन सहकारी संस्थांमध्ये १०,३०९ घरे बांधण्याचे प्रस्तावित असून त्यापैकी नोव्हेंबर, २००४ अखेर ६,२७५ घरांचे बांधकाम पूर्ण झाले आहे.

ग्रामीण गृहनिर्माण

इंदिरा आवास योजना

१२.११५ ग्रामीण भागातील दारिद्र्यरेषेखालील कुटुंबांना घरकुले मोफत पुरविणे हे इंदिरा आवास योजनेचे उद्दिष्ट आहे. टिकाऊ दर्जाची घरे बांधण्यासाठी राज्य शासनाने प्रति घरकुल ३०,००० रुपये इतका खर्च निश्चित केला आहे. एप्रिल, २००४ पासून घर बांधण्यासाठी निधी पुरवठ्याचा आकृतीबंध खालीलप्रमाणे आहे.

| | | |
|----------------------------------|-------|---------------------|
| अ) केंद्र शासन हिस्सा (७५ टक्के) | रुपये | १८,७५० |
| ब) राज्य शासन हिस्सा (२५ टक्के) | रुपये | ६,२५० |
| उप - एकूण | | रुपये २५,००० |
| क) राज्य शासनाचा अतिरिक्त हिस्सा | रुपये | ३,५०० |
| ड) लाभार्थ्यांचा हिस्सा | रुपये | १,५०० |
| एकूण | | रुपये ३०,००० |

१२.११६ इंदिरा आवास योजनेच्या सध्याच्या स्वरूपानुसार नवीन घरे बांधण्यास मर्यादित वाव आहे आणि ग्रामीण भागामधील वापरयोग्य नसलेल्या कच्च्या घरांची श्रेणीवाढ करणे गरजेचे झाले आहे. त्यामुळे

अस्तित्वात असलेल्या व वापरयोग्य नसलेल्या कच्च्या घरांची श्रेणीवाढ करण्यासाठी अंशतः वित्त पुरवठा करणे सर्वाधिक परिणामकारक ठरेल असे वाटल्याने शासनाने इंदिरा आवास योजनेमध्ये योग्य तं बदल करण्याचे ठरविले आहे. या सुधारित योजनेनुसार इंदिरा आवास योजनेखालील ८० टक्के निधी नवीन घरे बांधण्यासाठी, तर २० टक्के निधी अस्तित्वात असलेल्या परंतु वापरयोग्य नसलेल्या कच्च्या घरांची सुधारणा करण्यासाठी वापरयोग्य आहे. वापरयोग्य नसलेल्या कच्च्या घरांची श्रेणीवाढ करण्यासाठी प्रति घटक १२,५०० रुपये निश्चित करण्यात आले आहेत. हा २० टक्के निधी घराना जोडलेली सांडपाणी व्यवस्था, शौचालय व निर्धुर चुली यापैकी ज्यामध्ये सुधारणा करावयाची आहे त्यासाठीसुध्दा वापरता येवू शकतो.

१२.११७ नवीन घरे बांधण्यासाठी २००३-०४ मध्ये मागील वर्षातील अर्खचित निधीसह २०५ कोटी रुपये निधी उपलब्ध करून देण्यात आला होता व त्यापैकी १९४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. २००३-०४ मध्ये ६६,९१० नवीन घरकुले बांधण्याचे लक्ष निश्चित करण्यात आले होते. त्यापैकी ३६,९४२ नवीन घरकुले बांधण्यात आली व २९,९६८ नवीन घरकुलांची कामे प्रगतिपथावर होती. याशिवाय मागील वर्षाच्या लक्षातील २,७५३ घरांचे बांधकाम पूर्ण करण्यात आले. २००४-०५ मध्ये जानेवारी अखेर मागील वर्षातील अर्खचित निधीसह १४५ कोटी रुपये एवढा निधी उपलब्ध करून देण्यात आला आणि त्यापैकी ११७ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. २००४-०५ मध्ये ७०,४१५ नवीन घरकुले बांधण्याचे लक्ष्य निश्चित करण्यात आले असून जानेवारी, २००५ अखेर ४१,०४६ नवीन घरकुले बांधण्यात आली आणि ४७,९९७ घरकुलांचे बांधकाम प्रगतिपथावर होते.

१२.११८ इंदिरा आवास योजनेखाली वापरयोग्य नसलेल्या कच्च्या घरांची श्रेणीवाढ करण्यासाठी २००३-०४ मध्ये ३८ कोटी रुपयांचा निधी उपलब्ध करून देण्यात आला होता, त्यापैकी ३४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. २००३-०४ मध्ये वापरयोग्य नसलेल्या ३३,४५५ घरांची श्रेणीवाढ करण्याचे लक्ष्य निश्चित करण्यात आले होते. त्यापैकी ३२,६७८ घरांची श्रेणीवाढ करण्यात आली आणि १४,४८५ घरांची श्रेणीवाढ करण्याचे काम प्रगतिपथावर आहे. २००४-०५ मध्ये जानेवारी, २००५ अखेर ३३ कोटी रुपये इतका निधी उपलब्ध करून देण्यात आला आणि २४ कोटी रुपये खर्च करण्यात आले. २००४-०५ ह्या वर्षासाठी ३५,२०७ कच्च्या घरांच्या श्रेणीवाढीचे लक्ष ठरविण्यात आले आहे. या तुलनेत जानेवारी, २००५ अखेर १९,९९१ घरांची श्रेणीवाढ पूर्ण करण्यात आली आणि २१,२०३ घरांच्या श्रेणीवाढीचे काम प्रगतिपथावर होते.

प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना

१२.११९ महाराष्ट्र शासनाने राज्यातील ग्रामीण भागातील आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल घटक, बेघर आणि अल्प भूधारक यांच्यासाठी असलेल्या केंद्र पुरस्कृत प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजनेमध्ये ऑक्टोबर, २००१ पासून सहभागी होण्याचे ठरविले आहे. या योजनेअंतर्गत मैदानी क्षेत्रातील

लाभधारकांना एप्रिल, २००४ पासून प्रति घरकुल २५,००० रुपये एवढे सहाय्य देण्यात येते, तर डॉंगरी/दुर्गम क्षेत्रात प्रति घरकुल २७,५०० रुपये एवढे सहाय्य देण्यात येते. याशिवाय घराच्या दुरुस्तीसाठी १२,५०० रुपये एवढे सहाय्य देण्यात येते. या योजनेअंतर्गत २००२-०३ मध्ये २४.७५ कोटी रुपये वितरित करण्यात आले आहेत. २००३-०४ वर्षासाठी प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजनेखाली केंद्र शासनाकडून फक्त ६० लाख रुपये एवढा निधी प्राप्त झालेला आहे.

पाणी पुरवठा

१२.१२० निरोगी आरोग्यासाठी सुरक्षित पिण्याचे पाणी व सांडपाण्याच्या निःसारणाची व्यवस्था या दोन किमान आवश्यक गरजा आहेत. या सुविधा नागरी वस्तीस पुरविण्याची जबाबदारी राज्य शासन व स्थानिक नागरी संस्थांवर आहे. पिण्याच्या पाण्याचा तुटवडा आणि पिण्याच्या पाण्याचे नवीन स्रोत शोधण्यामधील नागरी प्रशासनास येत असलेले अपयश यामुळे पिण्याच्या पाणी पुरवठ्यासंबंधी गंभीर समस्या निर्माण होत आहे याची जाणीव झाली आहे. उन्हाळ्यामध्ये होणाऱ्या पिण्याच्या पाण्याची टंचाई ही नित्याची बाब झाली आहे. त्यासाठी नागरी भागातील जनतेने पिण्याच्या पाण्याचा खर्चाचा काही भाग सोसण्याची आवश्यकता आहे. तद्वतच महत्वाचे म्हणजे भविष्याचा विचार करून नागरी भागात वाढणारी लोकसंख्या तसेच त्यामध्ये स्थलांतराने होणारी आणखी वाढ या बाबी विचारात घेऊन पाणी पुरवठा योजनांचा विस्तार आणि त्यानंतरची त्यांची देखभाल याबाबत सुनियोजन करणे आवश्यक आहे. आठव्या पंचवार्षिक योजनेच्या अखेर राज्यातील २४० शहरांत/नगरांत नळ पाणीपुरवठ्याची सुविधा उपलब्ध करून देण्यात आली होती. नवव्या पंचवार्षिक योजनेत दोन नगरांसाठी पाणी पुरवठ्यांच्या नवीन योजनांची कामे, २४३ नगरांसाठी विस्तार योजनांची कामे, १४ नगरांसाठी मलनिःसारण योजनांची कामे हाती घेण्यात आली. २००३-०४ पर्यंत यापैकी ११३ योजना पूर्ण झाल्या होत्या. २००४-०५ या वित्तीय वर्षात नागरी पाणीपुरवठा व स्वच्छता कार्यक्रम यासाठी ८७.७६ कोटी रुपये एवढी तरतूद करण्यात आली आहे.

१२.१२१ केंद्र व राज्य शासनाने पिण्याच्या पाणीपुरवठा कार्यक्रमास अत्युच्च प्राधान्य दिले आहे. ग्रामीण भागातील पिण्याच्या पाणीपुरवठा योजना ह्या उपलब्ध पाण्याचे स्रोत, भूप्रदेश व लोकसंख्या या बाबी विचारात घेऊन नळ पाणीपुरवठा, विंधण विहिरी अथवा विहिरी याद्वारे राबविण्यात येतात. राज्यात केंद्र शासनाच्या सहाय्याने आवर्धित ग्रामीण पाणीपुरवठा कार्यक्रम, क्षेत्र सुधारणा, स्वजलधारा व जलस्वराज योजना याद्वारे जागतिक बँक व के.एफ.डब्ल्यु (जर्मन) यांच्या सहाय्याने पाणीपुरवठा कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे.

१२.१२२ नवव्या पंचवार्षिक योजनेच्या कालावधीत (१९९७-२००२) पाणीपुरवठा कार्यक्रमा अंतर्गत ३०,७४१ गावे/वाड्यांतील पाण्याच्या समस्या हाताळण्यात आल्या. नवीन सर्वेक्षणानुसार, राज्यात १ एप्रिल, २००४ रोजी पिण्याच्या पाण्याची समस्या असलेली ३९२ गावे/

वाड्या होत्या. २००४-०५ च्या वार्षिक योजनेत ग्रामीण पाणीपुरवठा कार्यक्रमासाठी २९७ कोटी रुपयांची तरतूद करण्यात आली आहे. २००४-०५ मध्ये जानेवारी अखेर ४१४ गावे/वाड्यांतील पाण्याच्या समस्या हाताळण्यात आल्या आणि त्याकरिता २११.२ कोटी रुपये खर्च करण्यात आला.

१२.१२३ राज्यामध्ये अपुऱ्या पावसामुळे व नियमित योजनांमधील पाण्याच्या स्रोतात कमतरता निर्माण झाल्यामुळे दरवर्षी बऱ्याच गावांत पिण्याच्या पाण्याची तीव्र टंचाई निर्माण होते. अशा गावांत राज्य शासनाला तातडीच्या पाणीपुरवठा योजना हाती घ्याव्या लागतात. हा कार्यक्रम राबविण्याचे व संनियंत्रणाचे पुरेसे अधिकार शासनाने जिल्हाधिकारी आणि विभागीय आयुक्तांना दिलेले आहेत. दरवर्षी हा कार्यक्रम ऑक्टोबर ते जून ह्या कालावधीत राबविला जातो. ऑक्टोबर, २००३ ते सप्टेंबर, २००४ या कालावधीत राबविण्यात आलेल्या गावे/वाड्यांची योजनानिहाय संख्या तक्ता क्र. १२.२४ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १२.२४

ऑक्टोबर, २००३ ते सप्टेंबर, २००४ या कालावधीत तातडीच्या पाणीपुरवठा योजना राबविण्यात आलेल्या गावे/वाड्यांची योजनानिहाय संख्या

| योजनेचे नाव | गावे | वाड्या |
|---|-------|--------|
| नवीन विंधण विहिरी बांधणे | १,५३३ | ४७१ |
| नळ पाणी पुरवठा योजनांबाबत विशेष दुरुस्त्या | १,५३४ | १,६४ |
| विंधण विहिरीच्या विशेष दुरुस्त्या | ३,४८८ | ७३० |
| तांतपुरत्या पूरक नळपाणी पुरवठा योजना | ५९८ | ५९ |
| टँकर/बैलगाडीने पाणीपुरवठा | ५,०४० | ९,३०० |
| खाजगी विहिरींचे अधिग्रहण | ५,२९५ | २,६२६ |
| अस्तित्वात असलेल्या खाजगी विहिरी खोल/दुरुस्त करणे | ५१७ | ५७ |
| बुडक्या विहिरी बांधणे | ९५ | ०० |

१२.१२४ राज्यात पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजनांवर १९९९-२००० पासून २००३-०४ पर्यंत झालेला खर्च तक्ता क्र. १२.२५ मध्ये दर्शविण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. १२.२५

पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजनांवरील खर्च

| वर्ष | खर्च (रु. कोटीत) |
|---------|------------------|
| १९९९-०० | १,४७४.५७ |
| २०००-०१ | ९८१.१८ |
| २००१-०२ | ५७२.४१ |
| २००२-०३ | ६९२.१० |
| २००३-०४ | ५०२.५७ |

पर्यावरण (हवा व जल प्रदूषण प्रतिबंध)

१२.१२५ चांगले वातावरणाच्या निर्मितीसाठी सामाजिक, जैविक, रासायनिक आणि रासायनिक असे सर्व प्रकारचे घटक पोषक असावे लागतात. त्यामुळे चांगल्या दर्जाचे जीवन जगणे शक्य होते. नागरीकीकरणातील प्रगतीने होणारी वाढ आणि योग्य औद्योगिकीकरणामधील रासायनिक यंत्रणांचा योग्य व शास्त्रीय पध्दतीने विल्हेवाट लावण्यातील अपयश ही वातावरणाचा सतत न्हास होण्याची महत्त्वाची कारणे आहेत. बाहेर उष्णारा कार्बन मोनॉक्साईड, सल्फर डायऑक्साईड, विषारी घन पदार्थ, नायट्रोजन ऑक्साईड, अस्थिर हायड्रोकार्बन, ओझोन वायू आणि हवा, पाणी व जमीन यातील जस्त या सर्वांमुळे पर्यावरणावर विपरीत परिणाम होत आहेत. राज्यात पाणी व हवा यांच्या संबंधीच्या प्रदूषण प्रतिबंध व नियंत्रण कायद्याची अंमलबजावणी योग्य व कठोरतेने होण्यासाठी राज्य सरकारने कायदा करून योग्य ती खबरदारी घेतली जात आहे. राज्यातील महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडळ हे जागतिक पर्यावरण सनियंत्रण यंत्रणा (जेम्स) भारतीय राष्ट्रीय जलस्रोत सनियंत्रण (मिनार्स) प्रकल्पांखाली राज्यातील १८ नद्यांच्या पाण्याच्या पर्यावरणीय दर्जाचे सनियंत्रण दरमहा ३८ ठिकाणी नियमितपणे करते. २००३-०४ मध्ये ह्या ३८ ठिकाणांपैकी १९ ठिकाणी बायोऑक्सिजन मागणीचे प्रमाण मर्यादेबाहेर असल्यामुळे पाणी स्तरीत जास्त प्रमाणात दूषित झालेले आढळले. त्याचे प्रमुख कारण गुती सांडपाणी प्रक्रिया न करता पावसाळ्यानंतर नदीत सोडणे हे आहे.

१२.१२६ बृहन्मुंबईतील हवेची प्रदूषणाच्या दृष्टीने गुणवत्ता बृहन्मुंबई नगरपालिकेकडून ६ ठिकाणी तपासण्यात येते. राज्यात १९ ठिकाणी राष्ट्रीय दूषित हवा गुणवत्ता सनियंत्रण (नाकाम) प्रकल्पांतर्गत महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडळ व निरनिराळ्या शैक्षणिक संस्थांद्वारे सनियंत्रण प्रकल्पांचे ठरविण्यात आले आहे. यापैकी ४ ठिकाणी महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडळाकडून हवेची गुणवत्ता तपासली जाते व उर्वरित १५ ठिकाणी हवेची गुणवत्ता शैक्षणिक संस्थांकडून तपासली जाते. २००३-०४ मध्ये मंडळाने १७ ठिकाणी हवेतील सल्फर डायऑक्साईड व नायट्रोजन ऑक्साईडचे प्रमाण विहित मर्यादेत आढळून आले, तर १३ ठिकाणी धूलिकणांचे प्रमाण विहित मर्यादेपेक्षा अधिक आढळून आले. नाकाम प्रकल्पांतर्गत २००३-०४ मध्ये घेतलेल्या हवेच्या गुणवत्तेबाबतची तक्ता क्र. १२.२६ मध्ये दर्शविली आहे.

१२.१२७ भारत सरकारने अलिकडेच जैविक वैद्यकीय (व्यवस्थापन हाताळणी) नियम, १९९८ तयार केले असून अंमलबजावणी करणारे यंत्रणेकडून महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडळाची सूची केली आहे. मंडळाने जैविक वैद्यकीय कचरा निर्माण करणारी संस्थांमध्ये/वैद्यकीय संस्थांची सूची तयार करण्याच्या कामास आधीच वाट केली आहे. मंडळाने डिसेंबर, २००५ अखेर ५,६४० वैद्यकीय संस्थांना अधिकार पत्रे दिली आहेत.

१२.१२८ सदर मंडळ राज्यातील सर्व प्रमुख आस्थापनांकडून जल व हवा प्रदूषणाबाबत विविध बाबींवर माहिती गोळा करते आणि त्याबाबत नियमितपणे सनियंत्रण करते. मंडळाने जल व वायू प्रदूषण अधिनियमाखाली २०३-०४ मध्ये ९,०३८ विविध उद्योगांना स्थापना किंवा विस्ताराबाबत

| राष्ट्रीय हवा प्रदूषण गुणवत्ता प्रमाण | | | | |
|---------------------------------------|-----------------|-------------------------------------|-----------------------------------|--------------------------------------|
| प्रदूषण घटक | कालभारित सरासरी | औद्योगिक क्षेत्र मायको.ग्रा./घनमीटर | निवासी क्षेत्र मायको.ग्रा./घनमीटर | संवेदनशील क्षेत्र मायको.ग्रा./घनमीटर |
| सल्फर | वार्षिक | ८० | ६० | १५ |
| डायऑक्साईड | २४ तास | १२० | ८० | ३० |
| नायट्रोजन | वार्षिक | ८० | ६० | १५ |
| ऑक्साईड | २४ तास | १२० | ८० | ३० |
| धूलिकण | वार्षिक | ३६० | १४० | ७० |
| | २४ तास | ५०० | २०० | १०० |

तक्ता क्र. १२.२६

नाकाम प्रकल्पांतर्गत २००३-०४ मध्ये घेतलेल्या हवेच्या गुणवत्तेबाबतच्या नोंदी

| क्षेत्र | प्रकार | ठिकाण | सडाओं | नाओं | धूलिकण |
|----------|--------|-----------------------------|-------|------|--------|
| ठाणे | नि | धोबीघाट, कोपरी | ०८.२ | १४.८ | - |
| | नि | शाहू मार्केट, नौपाडा | ०९.९ | १८.४ | - |
| | औ | बाळकूम आणि कोलशेत | १०.६ | १८.४ | १०९.२ |
| नाशिक | औ | आरटीओ | २९.० | २३.२ | १४७.८ |
| | नि | व्हीआयपी | २६.५ | २२.९ | १४४.२ |
| | नि | एनएमसी | ३१.२ | २५.८ | १९९.९ |
| नागपूर | नि | शासकीय तंत्रनिकेतन | १०.० | १८.८ | १९६.९ |
| | औ | आयओई अंबाझरी रोड | ०९.३ | १६.८ | २०५.९ |
| | नि | हिंणगा रोड | ०९.६ | १६.८ | २०८.४ |
| सोलापूर | औ | डब्ल्यूआयटी कॅम्पस अशोक चौक | १९.३ | ४३.७ | ३८७.८ |
| | नि | सात रस्ता | १९.३ | ४४.३ | ३८६.७ |
| मुंबई | नि | काळबादेवी | ०८.६ | २२.० | २१९.० |
| | नि | परळ | ०८.५ | २२.५ | २२७.३ |
| | नि | वरळी | ०८.२ | १९.० | २०८.७ |
| चंद्रपूर | नि | एसआरओ ऑफिस | १७.२ | ३४.२ | २०४.३ |
| | औ | म.औ.वि.म., चंद्रपूर | २१.१ | ३८.३ | २७७.५ |
| पुणे | औ | भोसरी | ३७.७ | ३६.९ | १६०.३ |
| | नि | नलस्टॉप | ३६.३ | ७१.९ | ४५३.९ |
| | नि | स्वारगेट | ३४.२ | ६५.० | ३८४.६ |

नि : निवासी औ : औद्योगिक

सडाओं : सल्फर डाय ऑक्साईड नाओं : नायट्रोजन ऑक्साईड

अनुमती दिली. त्या तुलनेत २००२-०३ मध्ये ९,२६४ उद्योगांना अनुमती देण्यात आली होती. २००४-०५ मध्ये सप्टेंबर अखेर मंडळाने ५,०३७ विविध उद्योगांना अनुमती दिली आहे. अधिनियमातील तरतुदीनुसार मंडळ विशिष्ट उद्योगांकडून व स्थानिक स्वराज्य संस्थांकडून वापरलेल्या पाण्याकरिता पाणीपट्टी वसूल करते. २००३-०४ मध्ये मंडळाने पाणीपट्टी पोटी १२.०२ कोटी रुपये गोळा केले.

१२.१२९ प्रदूषणकारक उद्योगांच्या प्रदूषण नियंत्रणाबाबत मंडळाकडून सनियंत्रण केले जाते आणि दोषी आढळलेल्याविरुद्ध कारवाई करण्यात येते. दोषी उद्योगांविरुद्ध करण्यात आलेल्या कायदेशीर कारवाईचा तपशील तक्ता क्र. १२.२७ मध्ये दर्शविण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. १२.२७

(अ) जल व वायु प्रदूषण अधिनियमाखाली डिसेंबर, २००४ अखेर

नोंदविलेल्या तक्रारी

| खटल्यांचा तपशील | खटल्यांची संख्या | |
|----------------------------------|------------------------|-------------|
| | ४३/४४ कलम * | ३७/३९ कलम @ |
| दाखल करण्यात आलेले | ३०० | १४६ |
| मंडळाविरुद्ध निकाली निघालेले | ५६ | १४४ |
| मंडळाच्या बाजूने निकाली निघालेले | १०७ | ३० |
| प्रलंबित | १३७ | २ |
| *जल (प्रप्रवनि) १९७४ | @वायु (प्रप्रवनि) १९८१ | |

(ब) जल व वायु प्रदूषण अधिनियमाखाली डिसेंबर, २००४ अखेर

नोंदविलेल्या तक्रारी

| खटल्यांचा तपशील | खटल्यांची संख्या | |
|-----------------------------------|------------------------|-------------|
| | ३३ कलम * | २२ अ खाली @ |
| दाखल करण्यात आलेले अर्ज | १४० | ३ |
| मंडळाच्या बाजूने अंतरीम आदेश | ८७ | १ |
| मंडळाविरुद्ध निकाली निघालेले अर्ज | ५२ | २ |
| प्रलंबित अर्ज | १ | - |
| *जल (प्रप्रवनि) १९७४ | @वायु (प्रप्रवनि) १९८१ | |

राष्ट्रीय नदी कृती योजना

१२.१३० राष्ट्रीय नदी कृती योजनेंतर्गत देशातील मुख्य नद्यांच्या प्रदूषित भागाची स्वच्छता करण्याचे केंद्र शासनाने निश्चित केले. राष्ट्रीय नदी कृती योजना महाराष्ट्र राज्यात १९९५ मध्ये सुरू करण्यात आली. ही योजना एप्रिल, १९९७ पर्यंत १०० टक्के केंद्र पुरस्कृत होती. दहाव्या पंचवार्षिक योजनेत भारत सरकारने त्यात बदल केला असून त्यानुसार खर्चाचा ७० टक्के हिस्सा केंद्र शासनाचा व ३० टक्के हिस्सा संबंधित महानगरपालिका/नगरपरिषदेचा राहिल. या योजनेचा मुख्य उद्देश नागरी घरगुती सांडपाण्यामुळे होणा-या नदीच्या पाण्याच्या प्रदूषणाचे प्रमाण कमी करणे हा आहे. या योजनेत सुरुवातीस गोदावरी नदीवरील नाशिक व नांदेड आणि कृष्णा नदीवरील सांगली व कराड या शहरांचा समावेश करण्यात आला आणि दहाव्या पंचवार्षिक योजनेत त्यात त्र्यंबकेश्वर शहराचा अंतर्भाव करण्यात आला आहे. या योजनेंतर्गत सांडपाणी प्रक्रिया केंद्र उभारणे, सांडपाणी अडविणे व वळविणे, नदी घाटाचा विकास करणे, कमी खर्चाची स्वच्छतागृहे बांधणे, शवदाहिन्याचा विकास व वर्नाकरण यासारख्या उपयोजना घेण्यात

येतात. सदर योजनेचा संचयी खर्च तक्ता क्र. १२.२८ मध्ये दर्शविण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. १२.२८

राष्ट्रीय नदी कृती योजनेंतर्गत खर्च

| शहराचे नाव | संचयी खर्च * (रुपये लाखात) |
|---------------|-------------------------------|
| त्र्यंबकेश्वर | ९८७.३३ |
| नाशिक | ४८००.९८ |
| नांदेड | ११६४.५० |
| कराड | २४३.१७ |
| सांगली | ३९६.६४ |

*सुरुवातीपासून नोव्हेंबर, २००४ अखेर

राष्ट्रीय सरोवर संवर्धन योजना

१२.१३१ केंद्र शासनाने देशातील महत्त्वाच्या सरोवरांचे संरक्षण करण्यासाठी राष्ट्रीय सरोवर संवर्धन योजना हाती घेतली अ योजनेच्या सुरुवातीस शहरी भागात असणा-या सरोवरांचा समावेश करण्याचे प्रस्तावित आहे. केंद्र शासनाने या योजनेंतर्गत देशात २० महत्त्वाच्या तलावांचा समावेश केला आहे. योजनेच्या पहिल्या टप्प्यात ११ तलावांची निवड करण्यात आली असून, त्यात मुंबई पवई तलावाचा समावेश करण्यात आला आहे. ही योजना १०० टक्के केंद्र पुरस्कृत आहे. पवई तलावाच्या संवर्धन योजनेसाठी केंद्र शासनाने ६.६२ कोटी रुपये अनुदान मंजूर केले असून त्यापैकी ४.७० कोटी रुपये एवढी रक्कम मुंबई महानगरपालिकेस दिली आहे. योजनेखाली ऑगस्ट, २००३ अखेरपर्यंत ४.०२ कोटी रुपयांचे काम करण्यात आले आहे.

१२.१३२ राष्ट्रीय सरोवर संवर्धन योजनेंतर्गत डिसेंबर, २००३ पासून ठाणे जिल्ह्यातील ९ तलावांचा समावेश करण्यात आला आहे. तलावाचे पर्यावरणीय संतुलन राखण्यासाठी ह्या योजनेखालील कामात पूरक म्हणून बायोरेमिडिएशन ह्या प्रक्रियेची जोड देण्यात येत आहे. तलावाचे पाणी बायोरेमिडिएशन प्रक्रियेद्वारे शुद्ध करण्याच्या कामाचा समावेश आहे. बायोरेमिडिएशन प्रक्रियेद्वारे तलावाचे पाणी स्वच्छ करण्यासाठी केंद्र शासनाने २.२२ कोटी रुपये एवढे अर्थसहाय्य मंजूर केले आहे. त्यापैकी १ कोटी रुपये इतकी रक्कम केंद्र शासनाने ठाणे महानगरपालिकेला प्राप्त झाली आहे. सदर कामे तीन टप्प्यांत पूर्ण करावयाची आहेत.

१२.१३३ ठाणे परीसरातील पवई तलावाच्या लेक फ्रंट व इतर तलावाच्या विकासासाठी ३० टक्के खर्च ठाणे महानगरपालिकेकडून व ७० टक्के केंद्र शासनाकडून करण्यात येणार आहे.

१३.१ अर्थव्यवस्थेच्या विविध क्षेत्रांबाबत सामाजिक व आर्थिक संबंधी माहिती गोळा करण्यासाठी भारत सरकार राष्ट्रीय नमुना पाहणी (एनएसए) संघटनेमार्फत नियमितपणे राष्ट्रव्यापी नमुना पाहण्या घेत असते. राष्ट्र शासन या पाहण्यांमध्ये अनुरूप नमुना तत्वावर सहभागी होऊन नमुन्यावरील आकडेवारी गोळा करून तिचे विश्लेषण करते. ११पर्यंत अशा ६० पाहण्या घेण्यात आल्या असून ६१ व्या फेरीचे पाहणी काम प्रगतिपथावर आहे. रानपाच्या ६० व्या फेरीमध्ये (जानेवारी - २००४) 'आजारपण व आरोग्याची निगा' यासंबंधी सविस्तर माहिती घेण्यात आली असून 'रोजगार व बेरोजगार' आणि 'कुटुंबाचा भोग्य बाबींवरील खर्च' यासंबंधी माहिती अल्प नमुन्यामध्ये गोळा करण्यात आली आहे. 'आजारपण व आरोग्याची निगा' यावर आधारित काही निष्कर्ष या प्रकरणाच्या 'भाग-अ' मध्ये सादर केले आहेत.

१३.२ 'रोजगार व बेरोजगार' आणि 'कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील खर्च' या विषयांवर पंचवार्षिक पाहण्यांद्वारे नियमितपणे आकडेवारी गोळा करण्यात येते आणि अशा प्रकारची सातवी पाहणी राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या ६१ व्या फेरीमध्ये (जुलै, २००४ - जून, २००५) घेण्यात येते. ११ चालू फेरीच्या पहिल्या दोन उपफेऱ्यांमध्ये (जुलै - डिसेंबर, २००४) घेण्यात आलेल्या वरील विषयांवरील निवडक आकडेवारीच्या शोषितकर्ताकरणावर आधारित काही महत्वाचे निष्कर्ष या प्रकरणाच्या 'भाग-ब' मध्ये सादर केले आहेत. हे निष्कर्ष राज्य नमुन्यावर आधारित आहेत. ते अस्थायी नमुना त्यात बदल होण्याची शक्यता आहे.

अ

आजारपण व आरोग्याची निगा

१३.३ या पाहणीत आजारपण, वृद्धांच्या समस्या, गरोदर स्त्रियांची तपपूर्व व प्रसूतिपश्चात निगा, सार्वजनिक व खाजगी क्षेत्रांकडून घेण्यात येणाऱ्या आरोग्यविषयक सुविधा व त्याबरोबरच या सेवा घेण्यासाठी कुटुंबाला आलेला खर्च या बाबतची माहिती गोळा करण्यात आली. सदर आकडेवारी २७२ गावातील २,६६६ कुटुंबे व २८ नागरी गटातील ४,०७३ कुटुंबांकडून गोळा करण्यात आली.

१३.४ पाहणीच्या निष्कर्षांवरून असे दिसून येते की, पाहणीच्या सुरुवातीच्या मागील ३६५ दिवसांमध्ये, ग्रामीण लोकसंख्येच्या २.८ टक्के नागरी लोकसंख्येच्या ३.२ टक्के लोक इस्पितळात दाखल होते.

इस्पितळात दाखल झालेल्या ग्रामीण व नागरी भागातील एकूण रुग्णांपैकी एक-चतुर्थांश रुग्ण सार्वजनिक इस्पितळ/दवाखान्यात दाखल होते. ग्रामीण भागातील जवळपास १४ टक्के आणि नागरी भागातील ११ टक्के रुग्णांनी मोफत इस्पितळ सुविधा उपभोगल्या. तक्ता क्र. १३.१ मध्ये पाहणीच्या दिवसाच्या मागील ३६५ दिवसांमध्ये इस्पितळात दाखल झालेल्या रुग्णांची टक्केवारी देण्यात आली आहे.

तक्ता क्र. १३.१

मागील ३६५ दिवसांमध्ये इस्पितळात दाखल झालेल्या रुग्णांची टक्केवारी

| तपशील | इस्पितळात दाखल झालेले रुग्ण | |
|----------------------------------|-----------------------------|---------------|
| | ग्रामीण भागातील | नागरी भागातील |
| इस्पितळाच्या प्रकारानुसार | १००.० | १००.० |
| सार्वजनिक इस्पितळ | २१.४ | २०.९ |
| सार्वजनिक दवाखाना | ३.० | ३.३ |
| खाजगी इस्पितळ | ७५.६ | ७५.८ |
| वॉर्ड प्रकारानुसार | १००.० | १००.० |
| मोफत | १४.४ | ११.४ |
| सर्वसाधारण आकारणी | ७२.६ | ७०.३ |
| विशेष आकारणी | १३.० | १८.३ |

१३.५ गेल्या ३६५ दिवसात इस्पितळात दाखल झाल्यावर प्रति रुग्णास आलेला सरासरी खर्च ग्रामीण भागात ६,९१६ रुपये तर नागरी भागात ९,६५६ रुपये इतका होता. ग्रामीण भागातील रुग्णांना त्यांच्या निवासाच्या जागेपासून दूरच्या ठिकाणी इस्पितळात भरती व्हावे लागत असल्याने वाहतूक आणि रुग्णासोबतच्या व्यक्तीच्या राहण्या व खाण्यापिण्यावरील खर्चामुळे त्यांचा सरासरी खर्च अधिक दिसतो. या संबंधीची सविस्तर माहिती तक्ता क्र. १३.२ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १३.२

इस्पितळात भरती झालेल्या रुग्णांचा वॉर्ड प्रकारानुसार सरासरी खर्च (रुपये)

| रुग्णाच्या वास्तव्याचे ठिकाण | प्रतिरुग्ण सरासरी खर्च | | | |
|------------------------------|------------------------|-------------------|--------------|-------|
| | मोफत | सर्वसाधारण आकारणी | विशेष आकारणी | एकूण |
| ग्रामीण | १,९५७ | ६,६९७ | १३,२५६ | ६,९१६ |
| नागरी | १,४२८ | ८,८१२ | १८,१०६ | ९,६५६ |

१३.६ इस्पितळात भरती झालेल्या एकूण रुग्णांपैकी, ग्रामीण

भागातील ४६ टक्के व नागरी भागातील ५७ टक्के रुग्णांनी इस्पितळात भरती होण्यापूर्वी उपचार घेतले होते. सार्वजनिक इस्पितळ/दवाखाना यामधून असे उपचार घेणाऱ्या ग्रामीण व नागरी भागातील रुग्णांची टक्केवारी प्रत्येकी जवळपास १५ होती. उपचार घेतलेल्या रुग्णांची उपचाराच्या ठिकाणानुसार टक्केवारी तक्ता क्र. १३.३ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १३.३

इस्पितळात भरती होण्यापूर्वी उपचार घेतलेल्या रुग्णांची उपचाराच्या ठिकाणानुसार टक्केवारी

| उपचाराचे ठिकाण | ग्रामीण रुग्ण | नागरी रुग्ण |
|---------------------------|---------------|-------------|
| सार्वजनिक इस्पितळ/दवाखाना | १४ | १५ |
| खाजगी इस्पितळ | २८ | २१ |
| खाजगी डॉक्टर | ५८ | ६४ |
| सर्व रुग्ण | १०० | १०० |

१३.७ इस्पितळात भरती होण्यापूर्वी उपचार घेऊ न शकणाऱ्या रुग्णांची उपचार न घेऊ शकल्याच्या कारणानुसार टक्केवारी तक्ता क्र. १३.४ मध्ये दिली आहे. ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागातील जवळपास नऊ टक्के रुग्णांनी इस्पितळात भरती होण्यापूर्वी कोणतेही उपचार घेतले नव्हते. ग्रामीण भागात आर्थिक अडचण (३३ टक्के) हे उपचार न घेण्यामागील प्रमुख कारण होते. नागरी भागातील एकूण रुग्णांपैकी दोन-तृतीयांश रुग्णांनी त्यांना कोणताही गंभीर स्वरूपाचा आजार नसल्याचे समजून उपचार घेतले नव्हते. ग्रामीण भागातील ४.१ टक्के रुग्णांनी वैद्यकीय सुविधा त्यांच्या वास्तव्याच्या जवळपास उपलब्ध नसल्याचे सांगितले.

तक्ता क्र. १३.४

इस्पितळात भरती होण्यापूर्वी उपचार घेऊ न शकलेल्या रुग्णांची टक्केवारी

| उपचार न घेण्यामागील कारण | ग्रामीण रुग्ण | नागरी रुग्ण |
|-------------------------------|---------------|--------------|
| जवळपास अनुपलब्ध | | |
| वैद्यकीय सुविधा | ४.१ | ०.० |
| वैद्यकीय सुविधा उपलब्ध परंतु, | | |
| अविश्वास | ७.५ | ०.१ |
| दीर्घ प्रतीक्षा | ११.६ | १.२ |
| आर्थिक कारणे | ३२.६ | ३.२ |
| आजार गंभीर | | |
| नाही असे समजून | १६.३ | ६८.८ |
| इतर कारणे | २७.९ | २६.७ |
| सर्व रुग्ण | १००.० | १००.० |

१३.८ पाहणीच्या दिवसाच्या आधी १५ दिवस उपचार घेतलेल्या रुग्णास त्यांच्या सामाजिक गटानुसार आलेला सरासरी प्रतिरुग्ण खर्च तक्ता क्र. १३.५ मध्ये दिला आहे. हा खर्च ग्रामीण व नागरी भागाकरिता अनुक्रमे ११६ रुपये व १६४ रुपये इतका होता. ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागातील विविध सामाजिक गटातील रुग्णास आलेल्या सरासरी खर्चात लक्षात घेण्याजोगी तफावत आढळत नाही.

तक्ता क्र. १३.५

मागील १५ दिवसात उपचारासाठी प्रति रुग्णास आलेला सरासरी खर्च (रुप)

| सामाजिक गट | ग्रामीण रुग्ण | नागरी रुग्ण |
|-------------------|---------------|-------------|
| अज | ९४ | १२९ |
| अजा | १०३ | १५४ |
| इमाव | १२० | १४५ |
| इतर | १२४ | १७३ |
| सर्व रुग्ण | ११६ | १६४ |

१३.९ पाहणीपूर्वीच्या ३६५ दिवसात प्रसूत झालेल्या जन्म मातांकडून बाळंतपणावर झालेल्या खर्चाबाबतची माहिती गोळा करण्यात आली. ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागात मातांनी बाळास जन्म देण्यासाठी सरकारी इस्पितळास पसंती दिल्याचे दिसून आले. तथापि ग्रामीण भागात दर १० बाळंतपणांपैकी तीन बाळंतपणे व नागरी भागात एक बाळंतपण अद्यापही घरीच होत असल्याचे आढळून येते. या संबंधी माहिती तक्ता क्र. १३.६ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १३.६

प्रसूतिच्या ठिकाणानुसार जन्मदा मातांची टक्केवारी व प्रसूतिवरील सरासरी खर्च

| प्रसूतिचे ठिकाण | टक्केवारी | | सरासरी खर्च (रुप) | |
|-----------------|------------|------------|-------------------|----------|
| | ग्रामीण | नागरी | ग्रामीण | नागरी |
| सरकारी इस्पितळ | ३५ | ४० | १८६ | ४१३ |
| खाजगी इस्पितळ | ३१ | ५१ | २,८५५ | ४,४५३ |
| घरी | ३४ | ९ | २०० | १०३ |
| एकूण | १०० | १०० | - | - |

१३.१० या पाहणीमध्ये मृत्यूपूर्व वैद्यकीय उपचार घेतलेल्या व्यक्तींस सुद्धा माहिती गोळा करण्यात आली. मृत्यूपूर्व वैद्यकीय उपचार घेतलेले पुरुष व स्त्रियांचे शेकडा प्रमाण तक्ता क्र. १३.७ मध्ये दिले आहे. मृत्यूपूर्व वैद्यकीय उपचार घेण्याचे प्रमाण ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागात स्त्रियां पुरुषांमध्ये अधिक होते. तथापि, हा फरक ग्रामीण भागात जास्त होतो.

तक्ता क्र. १३.७

मृत्यूपूर्व उपचार घेतलेल्या पुरुष व स्त्रियांचे शेकडा प्रमाण

| क्षेत्र | पुरुष | स्त्रिया |
|---------|-------|----------|
| ग्रामीण | ६९.७ | ४०.५ |
| नागरी | ६५.६ | ५९.७ |

१३.११ पाहणीमध्ये ६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींच्या अपंगांविषयी माहिती गोळा करण्यात आलेल्या आकडेवारीवरून असे आढळून आले. एकूण ६० व अधिक वर्षे वयाच्या वृद्धांपैकी, ग्रामीण भागात जवळपास सात टक्के आणि नागरी भागात १० टक्के वृद्ध अपंग होते. एकूण ३ असलेल्या वृद्ध व्यक्तींपैकी ग्रामीण भागात श्रवणदोष तर नागरी भागात दृष्टीदोष प्रामुख्याने दिसून आला. यासंबंधी विस्तृत माहिती तक्ता क्र. १३.८ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. १३.८

६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींची अपंगत्वाच्या प्रकारानुसार टक्केवारी

| अपंगत्व | ग्रामीण | नागरी |
|-----------|---------|-------|
| श्रवणदोष | ३२.१ | १२.१ |
| पंगुत्व | १४.५ | ६.४ |
| दृष्टीदोष | ११.६ | १४.४ |
| वाचादोष | ४.७ | ०.४ |
| इतर | ३७.१ | ६६.७ |
| एकूण | १००.० | १००.० |

१३.१२ पाहणीमध्ये ६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींच्या आर्थिक अवलंबनाबाबत माहिती गोळा करण्यात आली. सर्वसाधारण जीवनण्यासाठी त्याला/तिला जर इतरांकडून आर्थिक मदत घ्यावी लागली असेल तर, त्या व्यक्तीस इतरांवर आर्थिकदृष्ट्या अवलंबित असल्याचे म्हणण्यात आले. ६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींची आर्थिक अवलंबित्वाच्या प्रकारानुसार टक्केवारी तक्ता क्र. १३.९ मध्ये दिली आहे. ग्रामीण व नागरी दोन्ही भागात ६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींच्या एकूण कसंख्येपैकी जवळपास दोन-तृतीयांश व्यक्ती इतरांवर अंशतः अथवा पूर्णतः अवलंबून होत्या. ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागात अंशतः अथवा पूर्णतः अवलंबून असलेल्यांचे प्रमाण स्त्रियांमध्ये सर्वाधिक होते.

तक्ता क्र. १३.९

६० व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींची आर्थिक स्वावलंबित्वाच्या प्रकारानुसार टक्केवारी

| व्यक्ति | ग्रामीण | | नागरी | |
|----------------|---------|--------|-------|--------|
| | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |
| स्वावलंबित्व | | | | |
| स्वावलंबी | ५२ | १५ | ५१ | १५ |
| अंशतः | | | | |
| अवलंबून असलेले | १७ | १४ | १४ | ११ |
| पूर्णतः | | | | |
| अवलंबून असलेले | ३१ | ७१ | ३५ | ७४ |
| एकूण | १०० | १०० | १०० | १०० |

१३-ब

कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील खर्च

१३.१३ ग्रामीण भागातील २५२ खेड्यातील २,५२० कुटुंबे आणि ४८ नागरी गटातील ३,७६४ कुटुंबांकडून गोळा करण्यात आलेल्या आकडेवारीचा अंदाज तयार करण्यासाठी वापर करण्यात आला.

१३.१४ कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील खर्च म्हणजे कुटुंबाने फक्त मुली प्रयोजनासाठी वापरलेल्या वस्तू व सेवांवरील खर्च होय. निवडलेल्या कुटुंबाने पाहणीच्या दिवसाआधी ३० दिवसात वस्तू व सेवा यावर केलेल्या खर्चाची व परिमाणाची आकडेवारी गोळा करण्यात आली. शीघ्र अंदाजावरून से दिवसात येते की, ग्रामीण भागात उपभोग्य बाबींवरील सरासरी दरडोई मासिक खर्च (दमाख) ६०८ रुपये व नागरी भागात १,२३९ रुपये होता. उपभोग्य बाबींवरील दमाख वर्गानुसार लोकसंख्येची टक्केवारी तक्ता क्र.

१३.१० मध्ये दिली आहे. ग्रामीण भागातील लोकसंख्येपैकी जवळपास ६४ टक्के आणि नागरी भागातील लोकसंख्येपैकी जवळपास ६५ टक्के लोकसंख्येचा उपभोग्य बाबींवरील दमाख त्या त्या भागाच्या सरासरी दमाखपेक्षा कमी असल्याचे आढळून आले.

तक्ता क्र. १३.१०

उपभोग्य बाबींवरील दमाख वर्गानुसार लोकसंख्येची टक्केवारी

| दमाख वर्ग (रुपयात) | ग्रामीण | नागरी |
|--------------------|---------|-------|
| ० - ३०० | ६.६ | १.० |
| ३०० - ४०० | २१.६ | ५.३ |
| ४०० - ५०० | २२.३ | ७.० |
| ५०० - ६०० | १३.९ | ७.३ |
| ६०० - ८०० | १८.२ | १७.३ |
| ८०० - १००० | ८.२ | १६.१ |
| १००० आणि अधिक | ९.२ | ४६.० |
| सर्व | १००.० | १००.० |

१३.१५ कापड, इंधन व दिवाबत्ती या जीवनावश्यक बाबींवरील खर्च वगळता इतर सर्व अत्रेतर बाबींवरील खर्चाची टक्केवारी कुटुंबाच्या राहणीमानाचा दर्जा ठोबळमानाने दर्शविणारा निर्देशक आहे. तक्ता क्र. १३.११ मध्ये ही टक्केवारी उपभोग्य बाबींवरील दरडोई मासिक खर्च वर्गाप्रमाणे दिली आहे. कापड, इंधन आणि दिवाबत्ती या बाबी वगळून अत्रेतर बाबींवरील खर्चाची टक्केवारी ग्रामीण भागात एकूण खर्चाच्या ३४ टक्के आणि नागरी भागात ४७ टक्के होती.

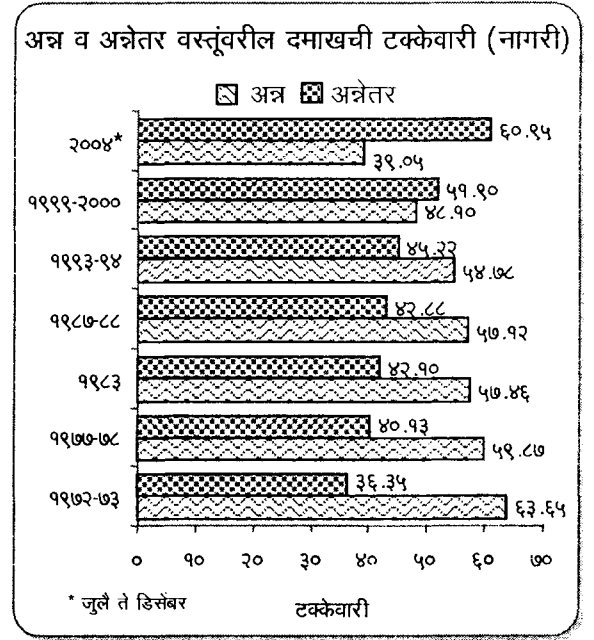
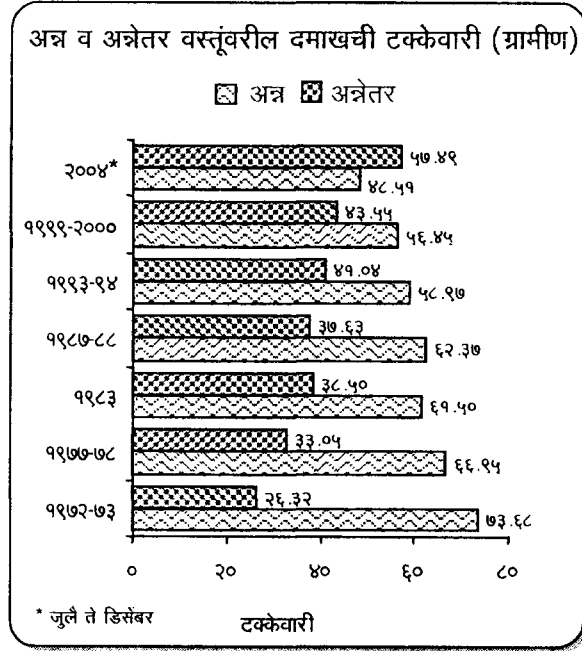
तक्ता क्र. १३.११

उपभोग्य बाबींवरील दमाख वर्गानुसार कापड, इंधन व दिवाबत्ती या बाबी वगळून अत्रेतर बाबींवरील खर्चाची टक्केवारी

| दमाख वर्ग (रुपयात) | ग्रामीण | नागरी |
|--------------------|---------|-------|
| ० - ३०० | २३.८ | २६.९ |
| ३०० - ४०० | २४.४ | २५.४ |
| ४०० - ५०० | २६.६ | २७.४ |
| ५०० - ६०० | २८.२ | २९.० |
| ६०० - ८०० | ३१.६ | ३३.८ |
| ८०० - १००० | ३६.५ | ३७.४ |
| १००० आणि अधिक | ५०.२ | ५४.० |
| सर्व | ३४.१ | ४७.३ |

१३.१६ 'कुटुंबाचा उपभोग्य बाबींवरील खर्च' यावर याआधी घेतलेल्या राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या पंचवार्षिक पाहण्यांवरील आकडेवारी असे दर्शविते की, राज्याच्या ग्रामीण व नागरी या दोन्ही भागात अत्रेतर वस्तूंवरील खर्चाचा वाटा वाढत आहे.

१३.१७ कुटुंबप्रकारानुसार (पाहणीच्या दिवसाआधी ३६५ दिवसांमध्ये उदरनिर्वाहाचे प्रमुख साधन) कुटुंबांची टक्केवारी आणि त्यांचा सरासरी दरडोई मासिक खर्च तक्ता क्र. १३.१२ मध्ये दिला आहे. नागरी भागाचा दमाख ग्रामीण भागाच्या दमाखच्या जवळपास दुप्पट होता.



तक्ता क्र. १३.१२

कुटुंबप्रकारानुसार कुटुंबांची टक्केवारी आणि त्यांचा सरासरी दमाख

| कुटुंबाचा प्रकार | कुटुंबांची टक्केवारी | सरासरी दमाख (रुपयात) |
|-----------------------------|----------------------|----------------------|
| ग्रामीण | | |
| बिगर शेतकी क्षेत्रात | | |
| स्वयंरोजगार | १२.२ | ६८२ |
| शेतमजूर | ३५.६ | ४७९ |
| इतर मजूर | ५.९ | ५०५ |
| शेतकी क्षेत्रात स्वयंरोजगार | ३३.८ | ६१६ |
| इतर | १२.५ | ९६५ |
| सर्व | १००.० | ६०८ |
| नागरी | | |
| स्वयंरोजगार | | |
| नियमित मजुरी/ | ३३.४ | १,२१३ |
| वेतनावरील | ५०.३ | १,२९७ |
| नैमित्तिक मजूर | ८.२ | ५९८ |
| इतर | ८.१ | २,११८ |
| सर्व | १००.० | १,२३९ |

१३.१८ अन्न आणि अन्नेतर वस्तूवरील सरासरी दमाख तक्ता क्र. १३.१३ मध्ये दिला आहे. अन्नपदार्थावरील खर्चाची एकूण खर्चाशी टक्केवारी ग्रामीण भागात ४९ व नागरी भागात ३९ होती. नागरी भागात अन्नेतर वस्तूवरील सरासरी दमाख ग्रामीण भागाच्या २.४ पट होता. उपभोग्य बाबींच्या प्रमुख गटानुसार दरडोई मासिक खर्च भाग-२ मधील तक्ता क्र. ६० मध्ये दिला आहे.

तक्ता क्र. १३.१३

अन्न व अन्नेतर वस्तूवरील सरासरी दमाख

| बाब | ग्रामीण | | नागरी | |
|---------|---------|-----------|-------|-----------|
| | दमाख | टक्केवारी | दमाख | टक्केवारी |
| अन्न | २९५ | ४९ | ४८४ | ३९ |
| अन्नेतर | ३१३ | ५१ | ७५५ | ६१ |
| एकूण | ६०८ | १०० | १,२३९ | १०० |

रोजगार व बेरोजगार

१३.१९ निवडलेल्या कुटुंबातील प्रत्येक व्यक्तीसाठी पाहणी दिवसापूर्वीच्या आठवड्यात रोजगार व बेरोजगार स्थितीची माहिती करण्यात आली. जर एखाद्या व्यक्तीने कोणतेही आर्थिक कार्य आठवड्यात किमान एका दिवशी, किमान एक तास केले असल्याच्या व्यक्तीची कार्यस्थिती 'रोजगार धारक' अशी वर्गीकृत करण्यात आले आहे. तसेच एखाद्या व्यक्तीकडून संदर्भ आठवड्यात आर्थिक कार्य नसल्यास, परंतु ती व्यक्ती कामाच्या शोधात आणि/किंवा कामात उपलब्ध असल्यास त्या व्यक्तीस 'बेरोजगार' म्हणून वर्गीकृत करण्यात आले आहे. त्यामुळे पाहणीच्या आठवड्यात चालू आठवड्यात कार्यस्थितीनुसार व्यक्तींच्या टक्केवारीचे अंदाज देणे शक्य आहे.

१३.२० 'रोजगार धारक' आणि 'रोजगाराच्या शोधात असलेल्या व्यक्ती' रोजगारासाठी उपलब्ध असलेल्या व्यक्तींचा श्रमशक्तीमध्ये समावेश १५-५९ वयोगटातील व्यक्तींची चालू आठवड्याच्या कार्यस्थितीनुसार टक्केवारी तक्ता क्र. १३.१४ मध्ये दिली आहे. ग्रामीण भागात जवळपास ८० टक्के आणि नागरी भागात ७७ टक्के पुरुष रोजगार धारक असल्याचे आढळते.

१. ग्रामीण भागात जवळपास ४७ टक्के स्त्रिया श्रमशक्ती वर्गाच्या बाहेर
२. नागरी भागात हे प्रमाण खूप जास्त होते (८१ टक्के).

तक्ता क्र. १३.१४

१५-५९ वर्षे वयोगटातील व्यक्तींची चालू आठवड्याच्या कार्यस्थितीनुसार टक्केवारी

| आठवड्याची स्थिती | ग्रामीण | | नागरी | |
|------------------|---------|--------|-------|--------|
| | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |
| रक्षक | ८० | ५२ | ७७ | १८ |
| रक्षक | ४ | १ | ४ | १ |
| रक्षक | ८४ | ५३ | ८१ | १९ |
| रक्षक | १६ | ४७ | १९ | ८१ |
| रक्षक | १०० | १०० | १०० | १०० |

- १३.२१ चालू आठवड्याच्या कार्यस्थितीनुसार १५-५९ वर्षे वयोगटातील रक्षकांची टक्केवारी तक्ता क्र. १३.१५ मध्ये दिली आहे. ग्रामीण जवळपास तीन-चतुर्थांश पुरुष शेतकी क्षेत्रामध्ये स्वयंरोजगारीत नैमित्तिक मजूर म्हणून कार्यरत होते. शेतकी क्षेत्रात नैमित्तिक मजूर काम करणाऱ्या स्त्रियांचे प्रमाण ४७ टक्के होते व ते नैमित्तिक म्हणून काम करणाऱ्या पुरुषांच्या प्रमाणापेक्षा बरेच जास्त होते. नागरी भागात १५-५९ वर्षे वयोगटातील एकूण रोजगार धारक स्त्रियांपैकी, ५१ स्त्रिया नियमित वेतनावर/मजुरीवर कार्यरत होत्या.

तक्ता क्र. १३.१५

१५-५९ वर्षे वयोगटातील रोजगार धारकांची टक्केवारी

| आठवड्याची स्थिती | ग्रामीण | | नागरी | |
|------------------|---------|--------|-------|--------|
| | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |
| रोजगार/ | ७४ | ९० | ४ | १२ |
| रक्षक/ | ४० | ४३ | ३ | ६ |
| रक्षक/ | ० | ० | ० | ० |
| रक्षक/ | ३४ | ४७ | १ | ६ |
| रक्षक/ | २६ | १० | ९६ | ८८ |
| रक्षक/ | ११ | ६ | ३६ | २८ |
| रक्षक/ | ११ | २ | ५१ | ४९ |
| रक्षक/ | ४ | २ | ९ | ११ |
| रक्षक/ | १०० | १०० | १०० | १०० |

- १३.२२ केवळ घरकामात गुंतलेल्या ग्रामीण व नागरी भागातील व्यक्तींची टक्केवारी अनुक्रमे १४ व २२ असल्याचे आढळून आले. ग्रामीण घरकामात गुंतलेल्या एकूण व्यक्तींपैकी २७ टक्के व्यक्ती स्वतःच्या काम उपलब्ध करून दिल्यास काम करण्यास उत्सुक होत्या. नागरी भागात हीच टक्केवारी २४ होती. ग्रामीण भागात घरकामात गुंतलेल्या व्यक्तींपैकी ४६ टक्के व्यक्तींना घराच्या परिसराबाहेरून पाणी आणावे

लागत होते. नागरी भागासाठी ही टक्केवारी १३ होती.

१३.२३ चालू पाहणीच्या आकडेवारीवर आधारित १ ऑक्टोबर, २००४ रोजी सात व अधिक वर्षे वयाकरिता साक्षरतेचे अंदाजित प्रमाण तक्ता क्र. १३.१६ मध्ये दिले आहे. यावरून राज्यातील साक्षरतेचे अंदाजित प्रमाण जवळपास ८० टक्के इतके आहे. पुरुष आणि स्त्रियांकरिता हे अंदाजित प्रमाण अनुक्रमे ८८ व ७१ आहे.

तक्ता क्र. १३.१६

२००४ करिता साक्षरतेचे अंदाज

| क्षेत्र | पुरुष | स्त्री | व्यक्ती (टक्के) |
|---------|-------|--------|-----------------|
| ग्रामीण | ८३ | ६३ | ७३ |
| नागरी | ९५ | ८४ | ९० |
| राज्य | ८८ | ७१ | ८० |

१३.२४ १५ व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींची चालू आठवड्यातील कार्यस्थिती आणि सर्वसामान्य शैक्षणिक स्तरानुसार टक्केवारी तक्ता क्र. १३.१७ मध्ये दिली आहे. यावरून ग्रामीण भागातील दोन टक्के व नागरी भागातील तीन टक्के व्यक्ती आठवड्यातील सर्व दिवस बेरोजगार होत्या. पदवी व त्यापेक्षा जास्त शैक्षणिक स्तर संपादित केलेल्या बेरोजगारांची टक्केवारी ग्रामीण भागात पाच आणि नागरी भागात चार होती.

तक्ता क्र. १३.१७

१५ व अधिक वर्षे वयाच्या व्यक्तींची चालू आठवड्याची कार्यस्थिती आणि शैक्षणिक स्तरानुसार टक्केवारी

| शैक्षणिक स्तर | ग्रामीण | | नागरी | |
|---------------|-------------|----------|-------------|----------|
| | रोजगार धारक | बेरोजगार | रोजगार धारक | बेरोजगार |
| माध्यमिक | ४७ | २ | ५१ | ३ |
| उच्च माध्य. | ५० | २ | ४८ | २ |
| पदविका/ | ८९ | ८ | ६२ | ५ |
| पदवी | ८८ | ५ | ७ | ४ |
| आणि अधिक | ६४ | २ | ३४ | ३ |
| सर्व | ४७ | २ | ५१ | ३ |

१३.२५ ६ ते १४ वर्षे वयोगटातील शाळेतील उपस्थितीनुसार मुलांची टक्केवारी तक्ता क्र. १३.१८ मध्ये दिली आहे. 'सर्व शिक्षा अभियान' हा कार्यक्रम राबवून सुद्धा ६ ते १४ वयोगटातील ग्रामीण भागातील सात टक्के व नागरी भागातील चार टक्के मुले कोणत्याही शाळेत जात नव्हती.

तक्ता क्र. १३.१८

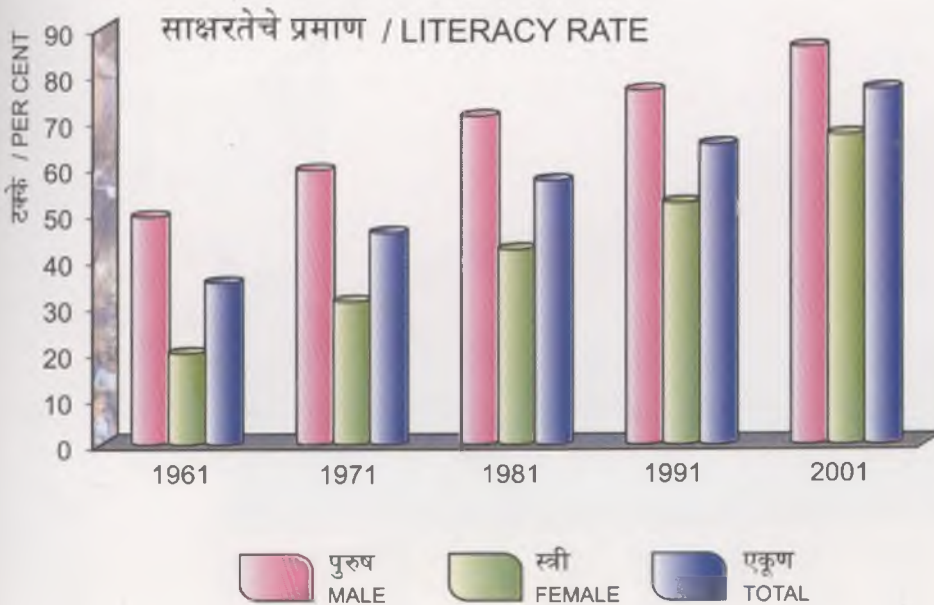
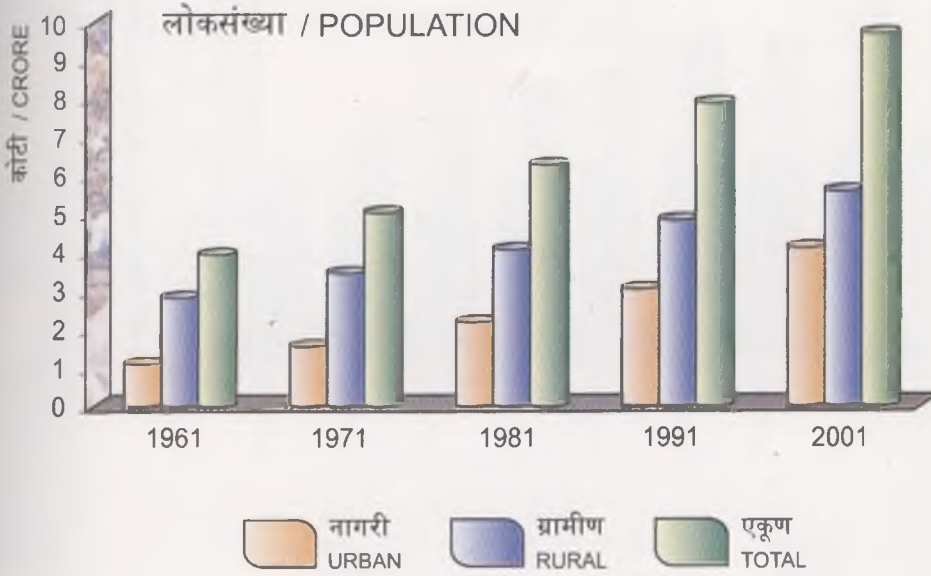
६ ते १४ वर्षे वयोगटातील शाळेतील मुलांची उपस्थितीनुसार टक्केवारी

| उपस्थिती स्तर | ग्रामीण | नागरी |
|--------------------------------------|---------|-------|
| सद्या अनुपस्थिती | ३.७ | २.२ |
| पूर्वी उपस्थित परंतु सद्या अनुपस्थित | ३.३ | १.७ |
| सद्या उपस्थित | ९३.० | ९६.१ |
| सर्व | १००.० | १००.० |

लोकसंख्या व साक्षरतेचे प्रमाण

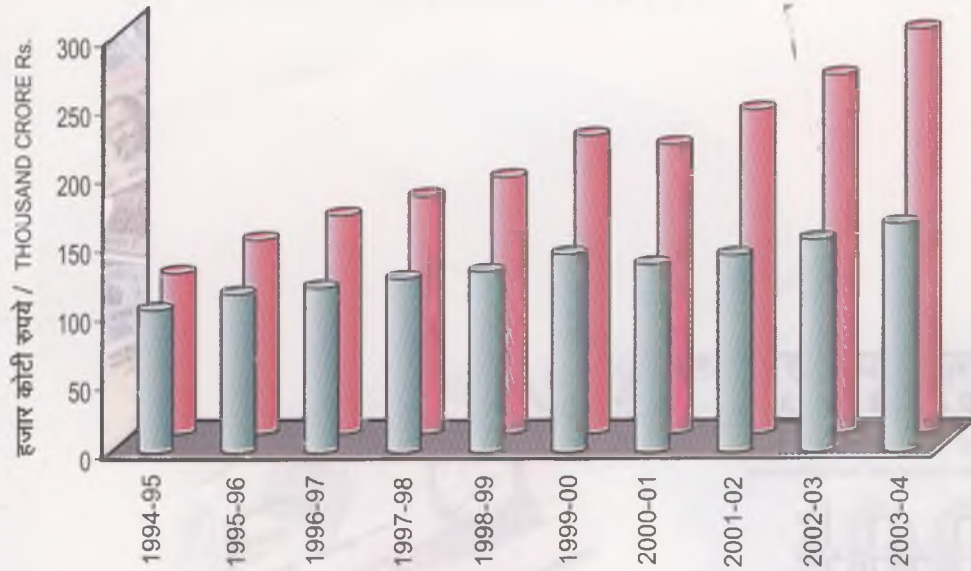
(जनगणनेनुसार)

POPULATION AND LITERACY RATE (As per population Census)



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

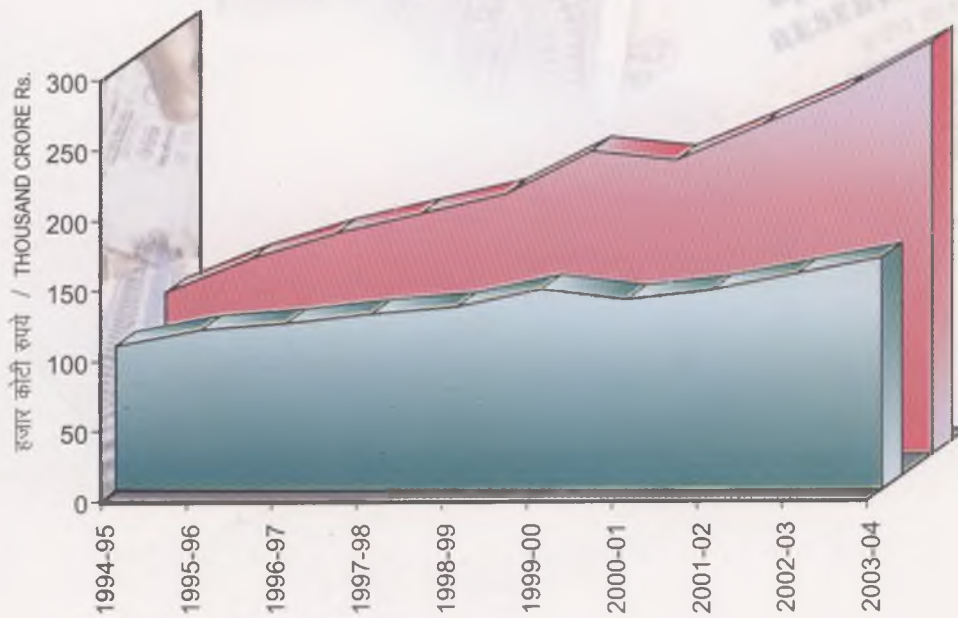
राज्य उत्पन्न STATE INCOME



स्थिर (१९९३-९४) किमतीनुसार
AT CONSTANT (1993-94) PRICES



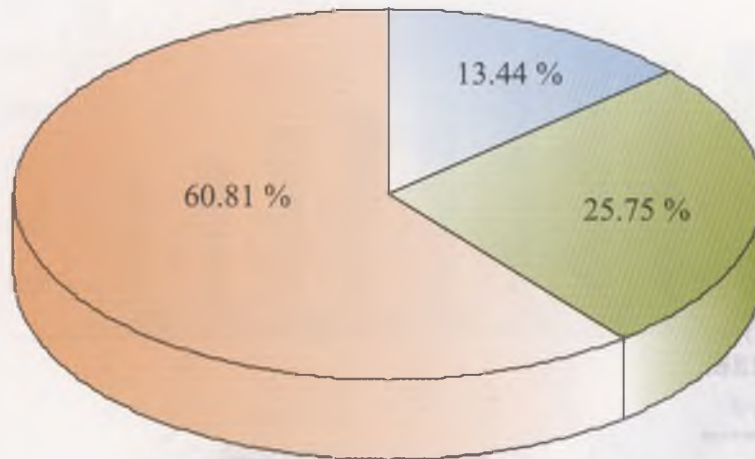
चालू किमतीनुसार
AT CURRENT PRICES



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

राज्य उत्पन्नाची क्षेत्रवार विभागणी SECTORAL COMPOSITION OF STATE INCOME

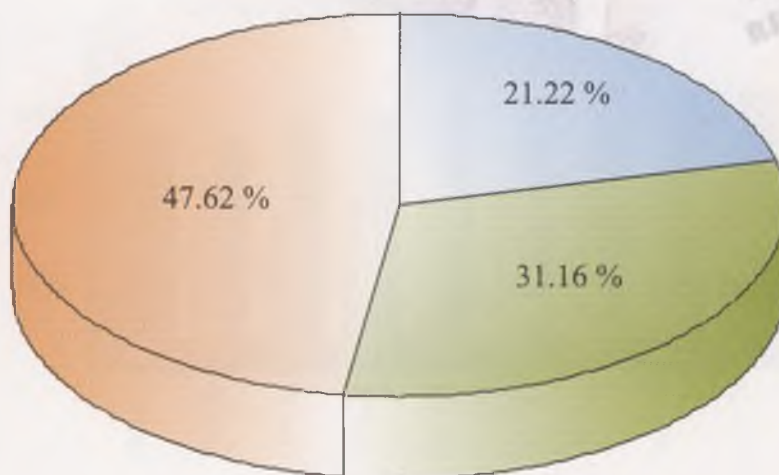
चालू किंमतीनुसार / AT CURRENT PRICES



2003-04

2,94,001 कोटी रुपये / Rs. CRORE

प्राथमिक
PRIMARY
 द्वितीय
SECONDARY
 तृतीय
TERTIARY

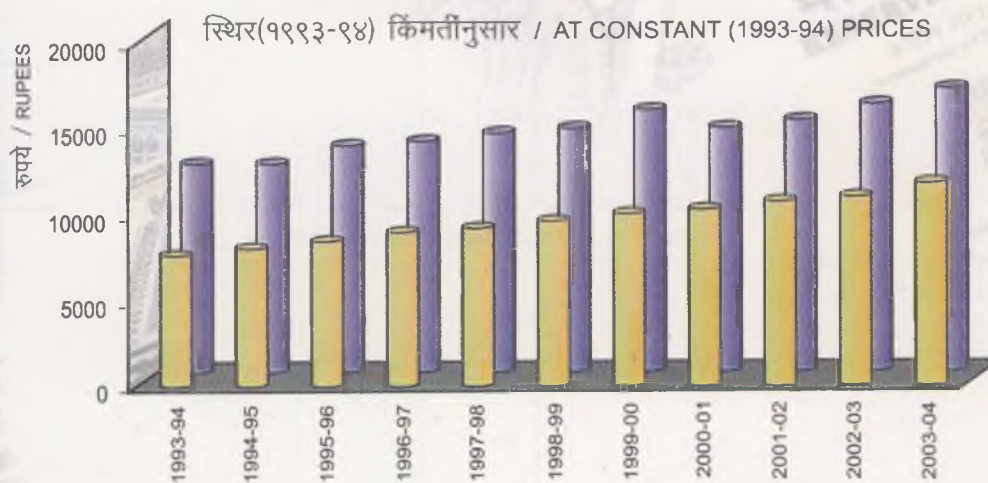
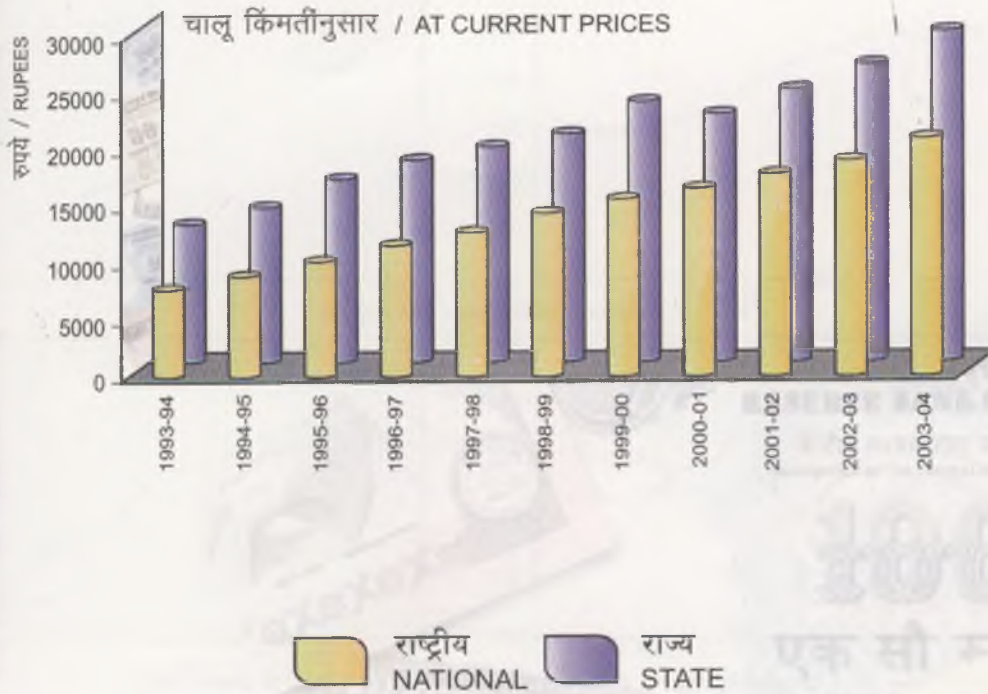


1993-94

1,01,767 कोटी रुपये / Rs. CRORE

महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

दरडोई राज्य व राष्ट्रीय उत्पन्न PER CAPITA STATE AND NATIONAL INCOME



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

अखिल भारतीय घाऊक किंमतींचे निर्देशांक

ALL INDIA WHOLESALE PRICE INDEX NUMBERS

पायाभूत वर्ष / BASE YEAR 1993-94 = 100

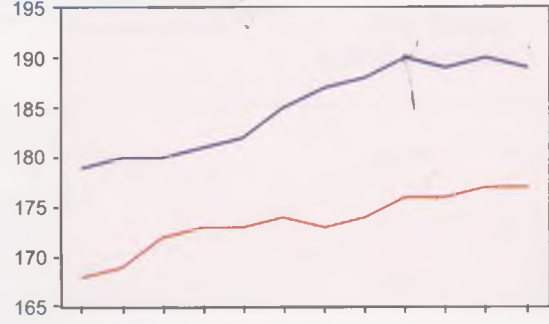
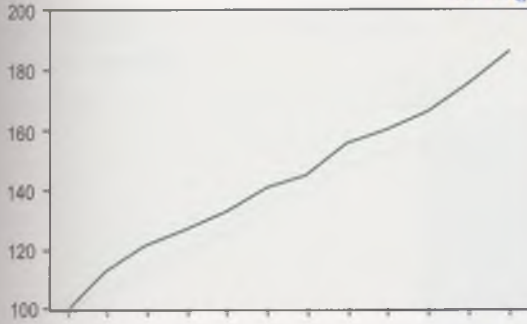
वार्षिक निर्देशांक / ANNUAL INDICES

मासिक निर्देशांक / MONTHLY INDICES

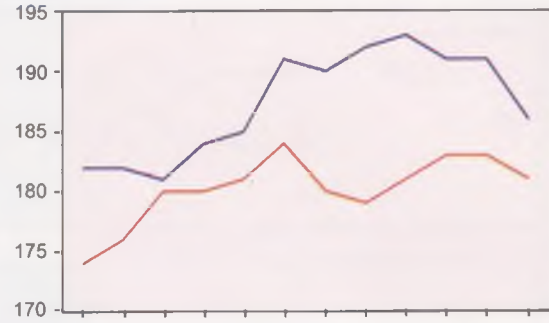
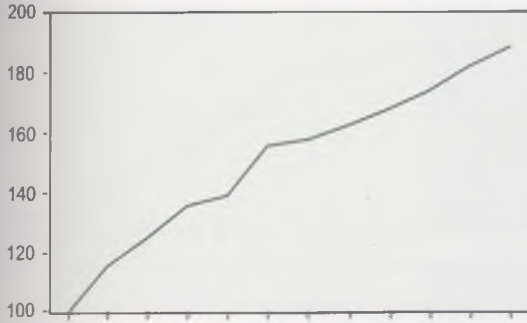
— 2004

— 2003

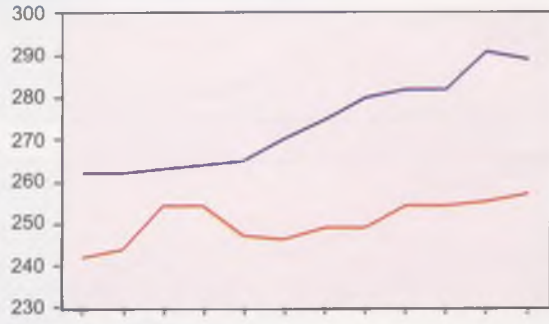
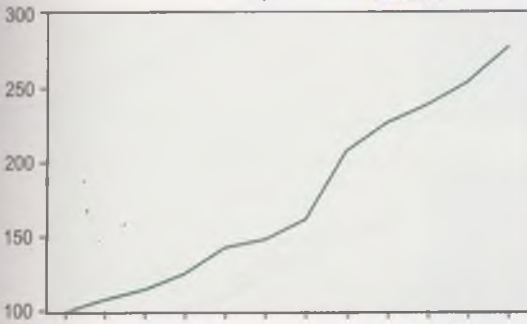
सर्व वस्तु / ALL COMMODITIES



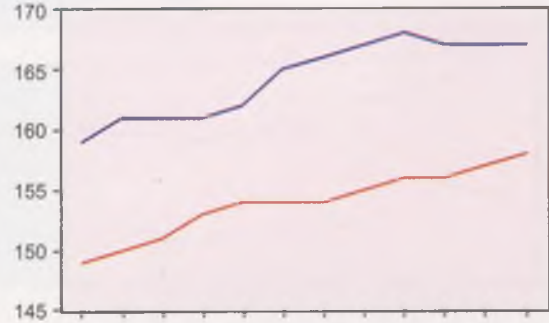
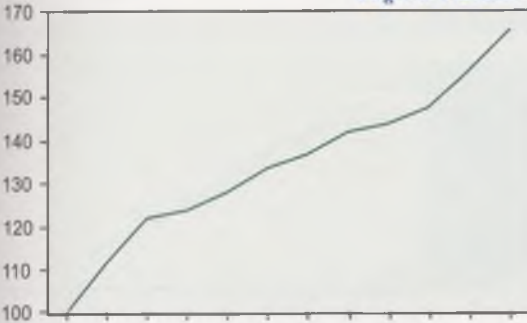
प्राथमिक वस्तु / PRIMARY ARTICLES



इंधन, शक्ती, दिवाबत्ती व वंगण / FUEL, POWER, LIGHT AND LUBRICANTS



वस्तुनिर्माण उत्पादने / MANUFACTURED PRODUCTS



1993-94 1994-95 1995-96 1996-97 1997-98 1998-99 1999-00 2000-01 2001-02 2002-03 2003-04 2004-05

जा. फे. मा. ए. मे. जू. जु. ऑ. स. ऑ. नो. डि.
J F M A M J J A S O N D

* दहा महिन्यांची सरासरी / AVERAGE FOR TEN MONTHS

महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक

CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR INDUSTRIAL WORKERS

पायाभूत वर्ष / BASE YEAR 1982=100

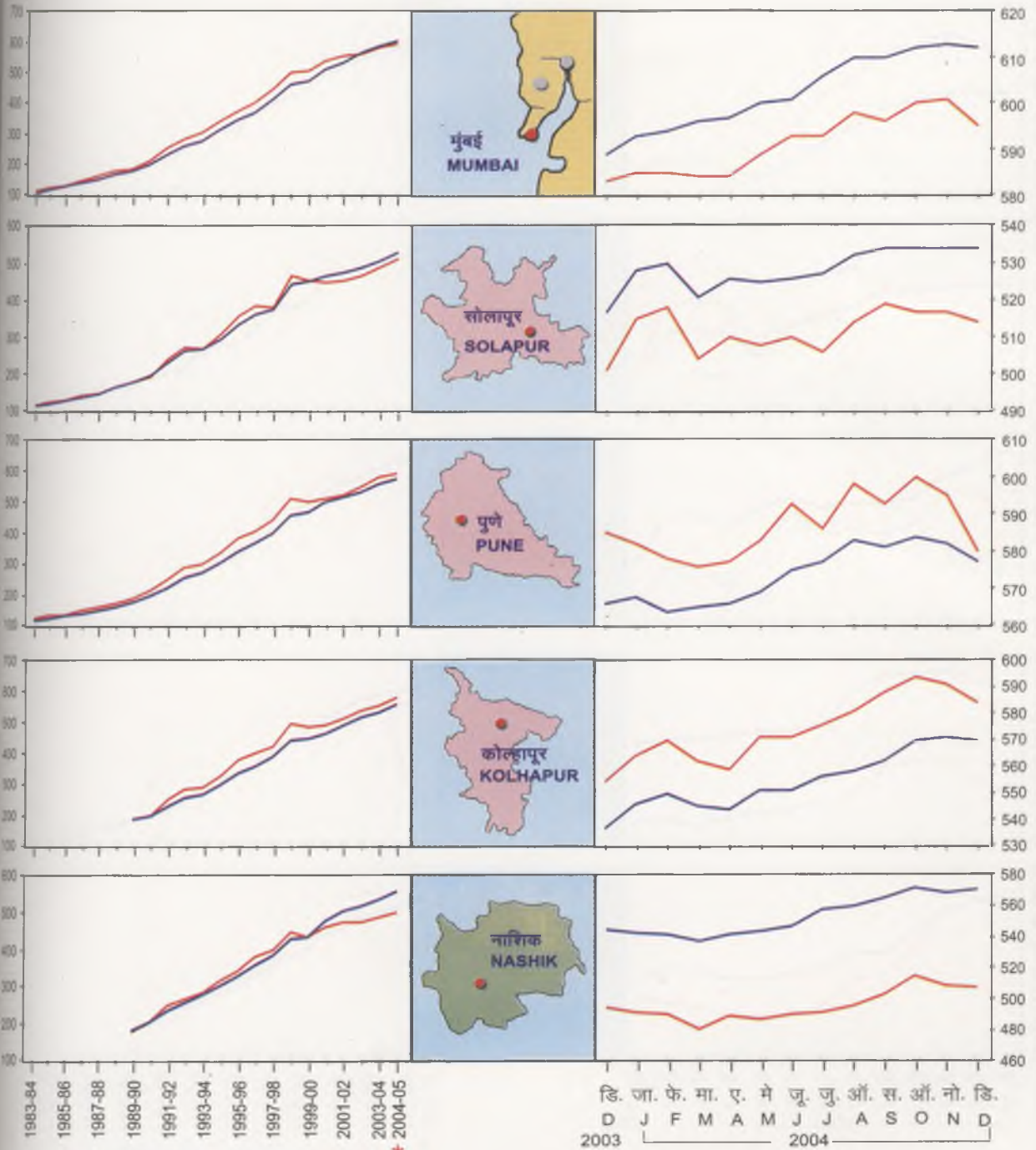
वार्षिक निर्देशांक
ANNUAL INDICES

खाद्यपदार्थ गट
FOOD GROUP



सर्वसाधारण निर्देशांक
GENERAL INDEX

मासिक निर्देशांक
MONTHLY INDICES



* नऊ महिन्यांची सरासरी / AVERAGE FOR NINE MONTHS

कोल्हापूर केंद्राचे निर्देशांक मे, १९८९ पासून आणि नाशिक केंद्राचे निर्देशांक ऑक्टोबर, १९८८ पासून प्रसारीत करण्यात येत आहेत.
THE INDEX NUMBERS FOR KOLHAPUR AND NASHIK CENTRES ARE RELEASED FROM MAY, 1989 & OCTOBER, 1988 RESPECTIVELY.

पुढे चालू / CONTINUED

महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR INDUSTRIAL WORKERS

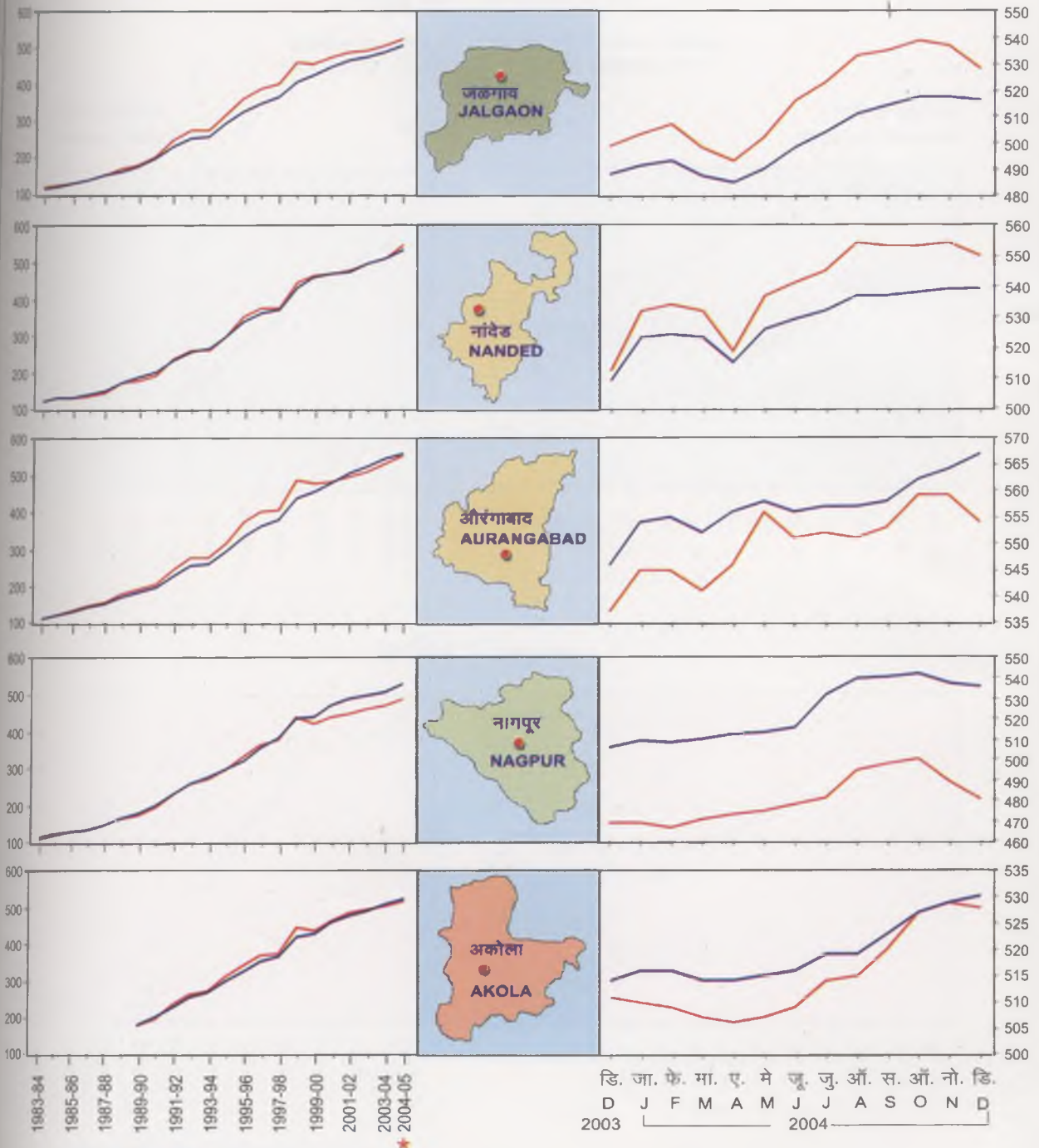
पायाभूत वर्ष / BASE YEAR 1982=100

वार्षिक निर्देशांक
ANNUAL INDICES

खाद्यपदार्थ गट
FOOD GROUP

सर्वसाधारण निर्देशांक
GENERAL INDEX

मासिक निर्देशांक
MONTHLY INDICES



* नऊ महिन्यांची सरासरी / AVERAGE FOR NINE MONTHS

अकोला केंद्राचे निर्देशांक मे, १९८९ पासून प्रसारीत करण्यात येत आहेत.
THE INDEX NUMBERS FOR AKOLA CENTRE ARE RELEASED FROM MAY, 1989.

समाप्त / CONCLUDED

महाराष्ट्रातील नागरी व ग्रामीण भागाकरिता ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक

CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR URBAN AND RURAL MAHARASHTRA

पायाभूत वर्ष / BASE YEAR 1982=100

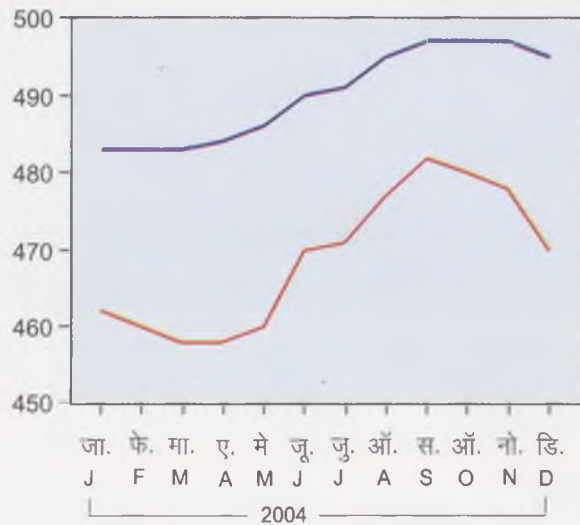
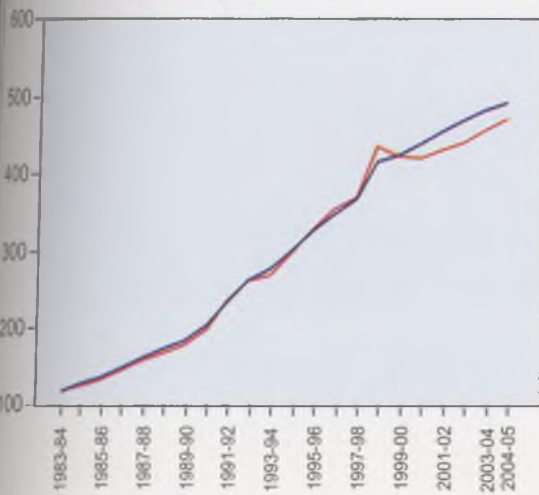
साद्यपदार्थ गट
FOOD GROUP

सर्वसाधारण निर्देशांक
GENERAL INDEX

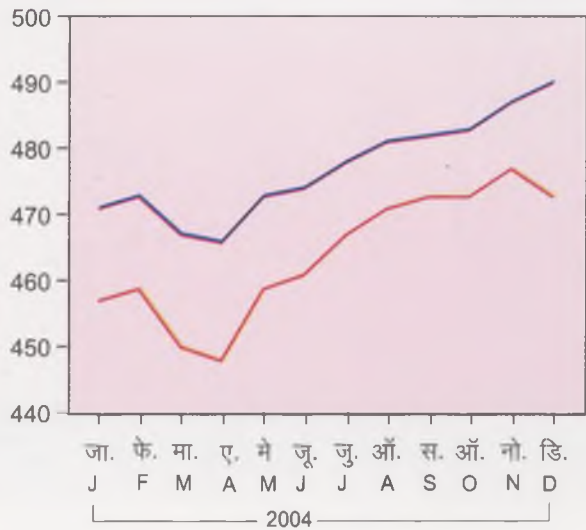
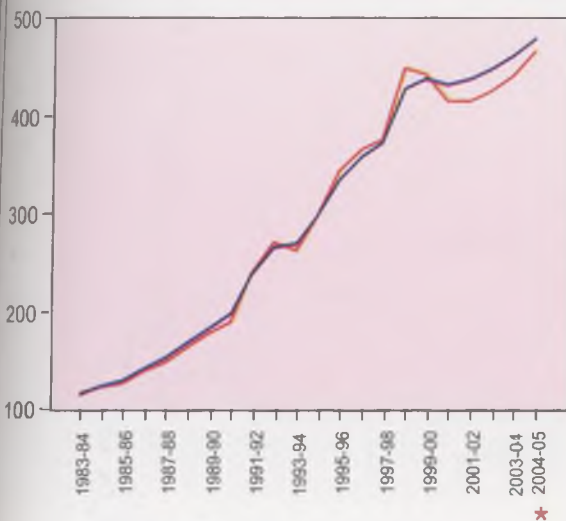
वार्षिक निर्देशांक
ANNUAL INDICES

नागरी / URBAN

मासिक निर्देशांक
MONTHLY INDICES



ग्रामीण / RURAL

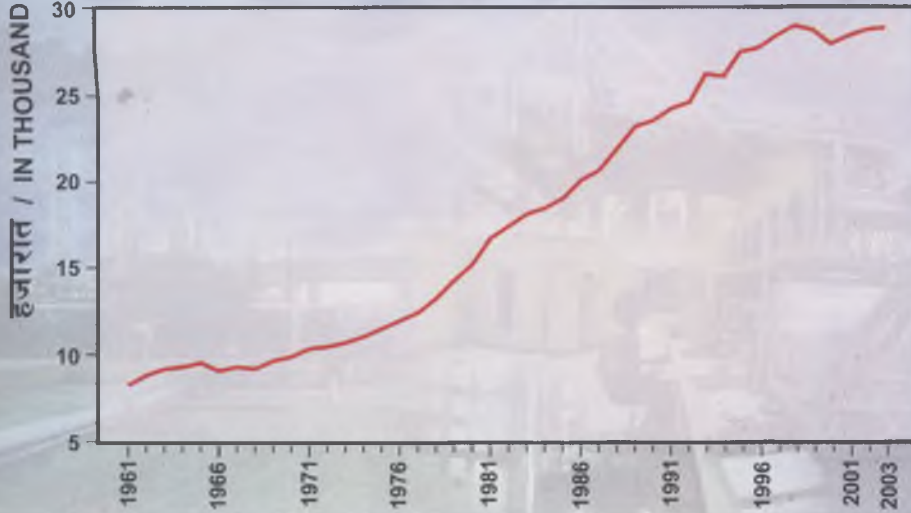


* नऊ: महिन्यांची सरासरी / AVERAGE FOR NINE MONTHS

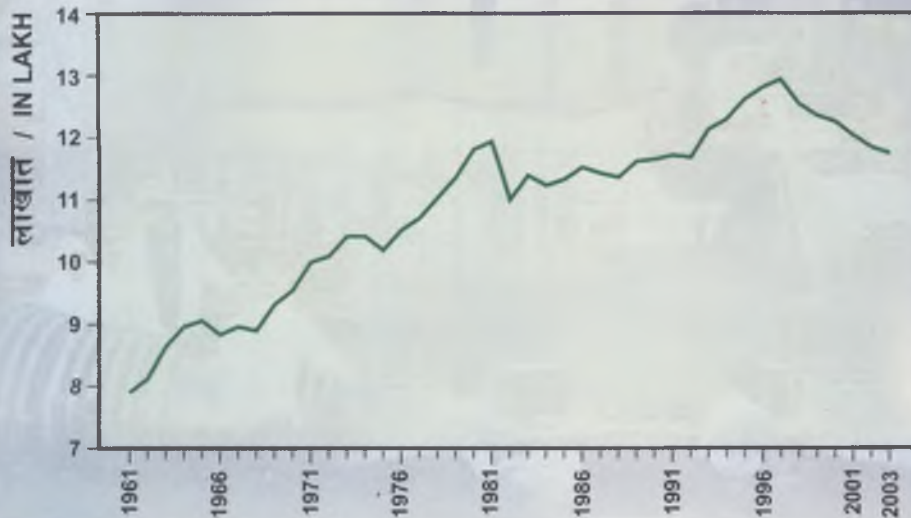
महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

कारखाने आणि कारखान्यांतील रोजगार FACTORIES AND FACTORY EMPLOYMENT

कारखान्यांची संख्या
NUMBER OF FACTORIES



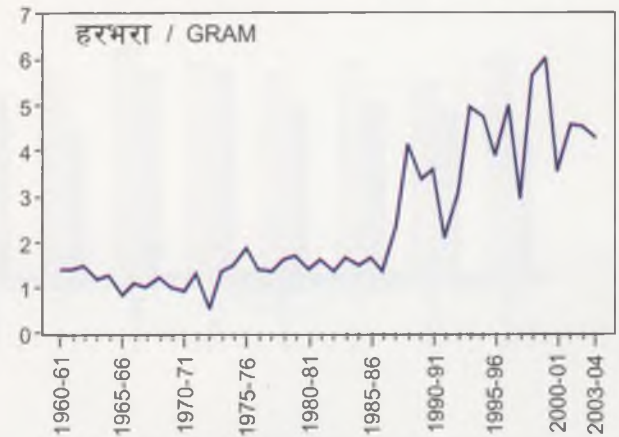
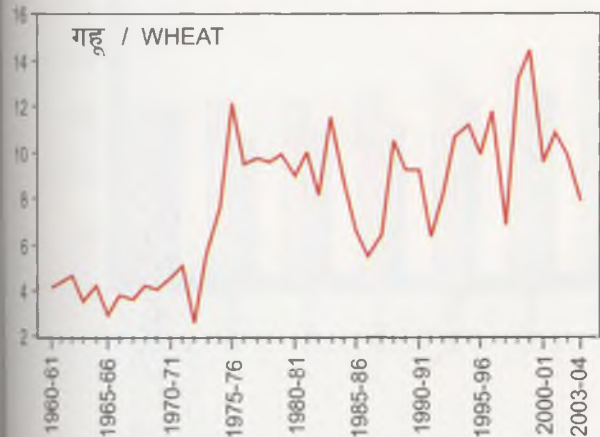
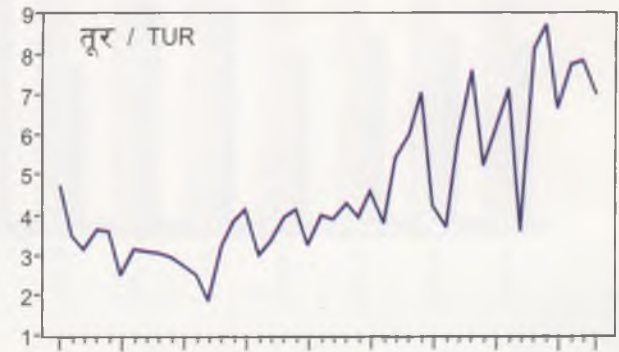
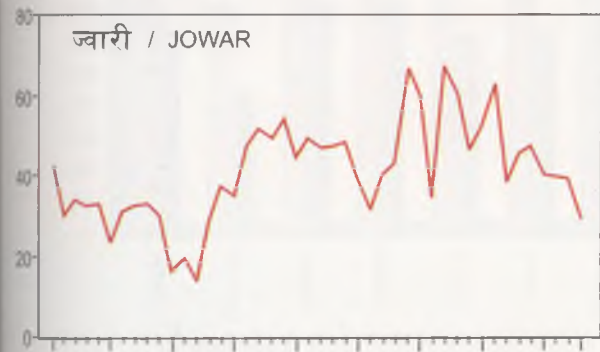
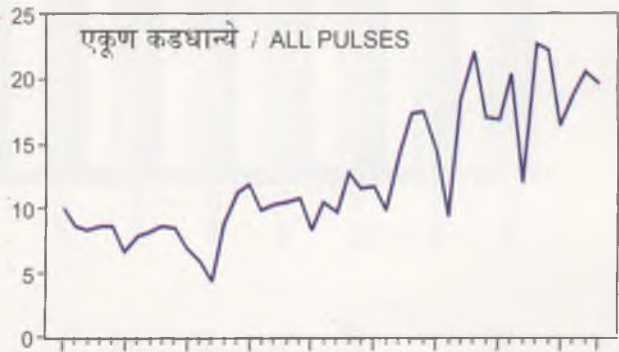
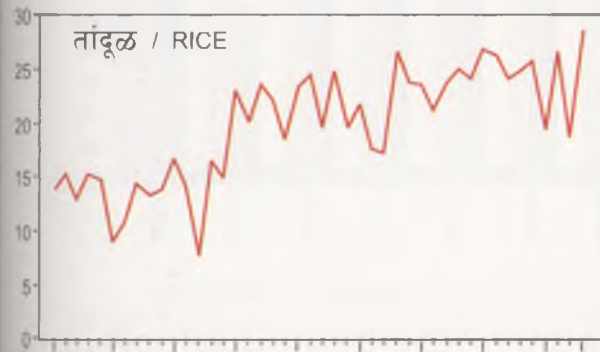
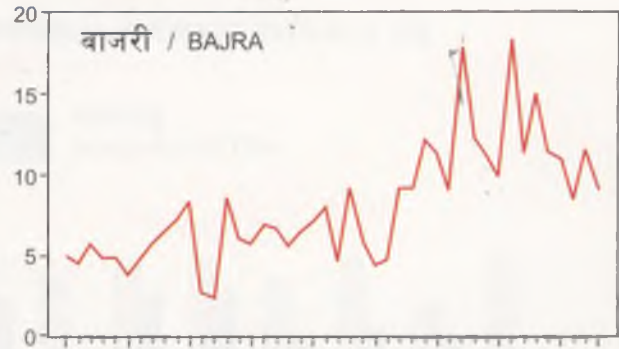
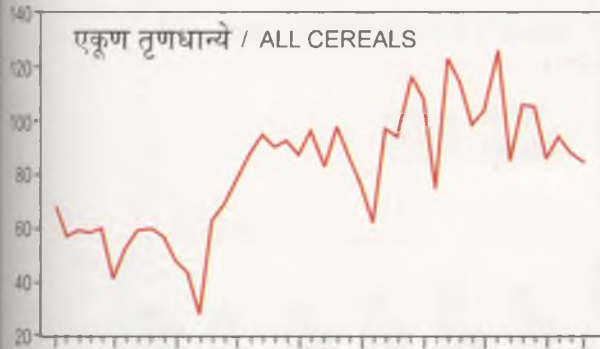
कारखान्यांतील सरासरी दैनिक रोजगार
AVERAGE DAILY FACTORY EMPLOYMENT



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

अन्नधान्य उत्पादन FOODGRAINS PRODUCTION

लाख टन / LAKH TONNES



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

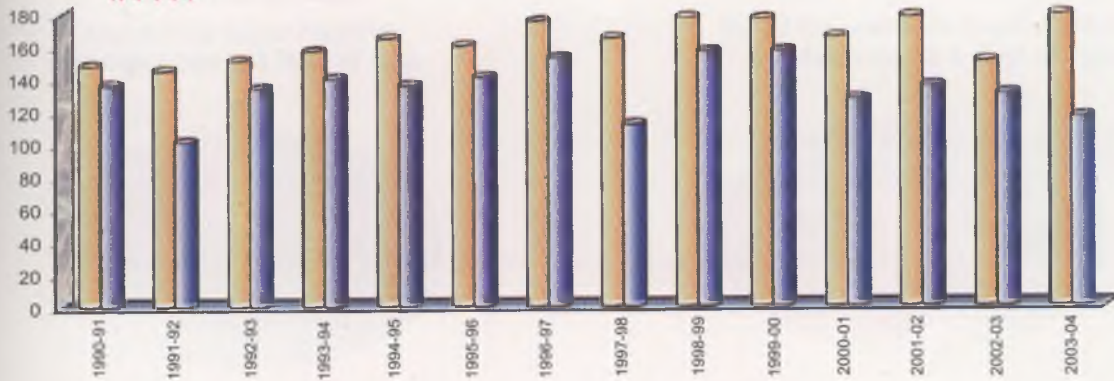
कृषि उत्पादनाचे निर्देशांक

INDEX NUMBERS OF AGRICULTURAL PRODUCTION

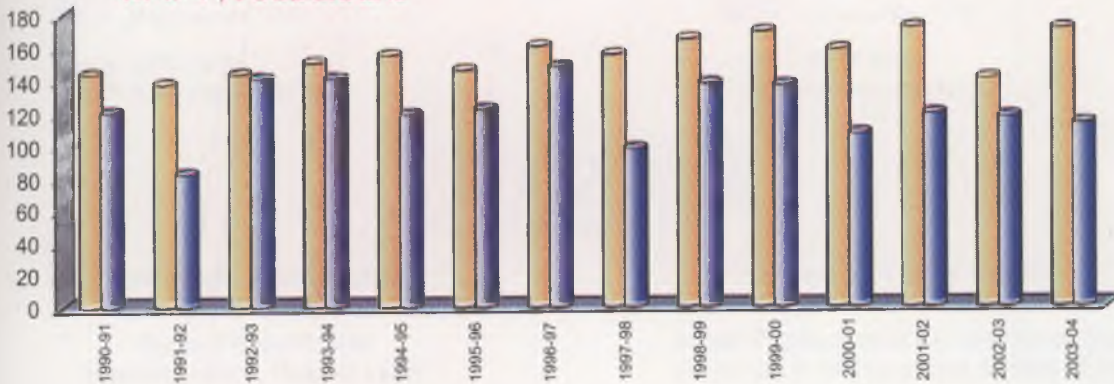
पाया : त्रैवर्षीय सरासरी / BASE : TRIENNIAL AVERAGE 1979-82 = 100

भारत INDIA महाराष्ट्र MAHARASHTRA

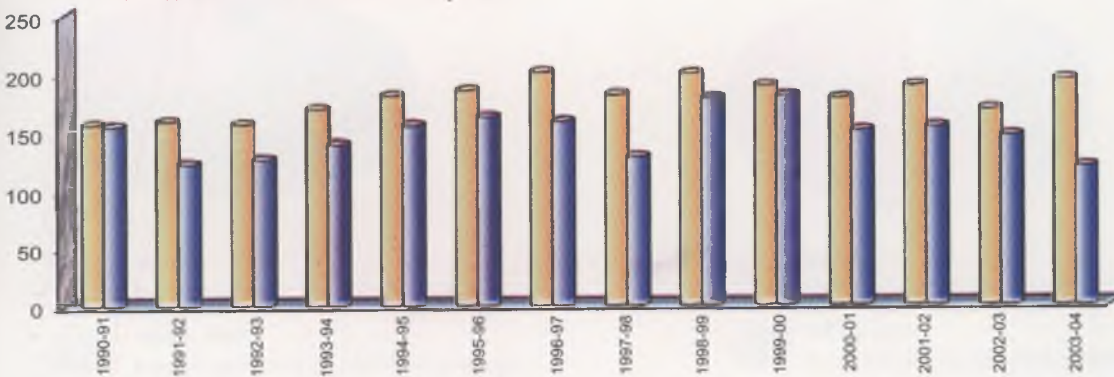
सर्व पिके / ALL CROPS



अन्नधान्ये / FOODGRAINS



अन्नधान्येतर / NON-FOODGRAINS

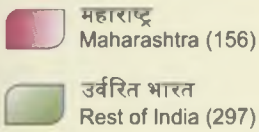
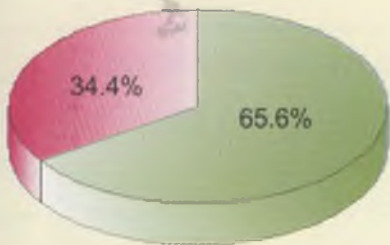


महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील साखर कारखान्यांची संख्या व साखर उत्पादन

NO. OF SUGAR FACTORIES & SUGAR PRODUCTION IN MAHARASHTRA & REST OF INDIA

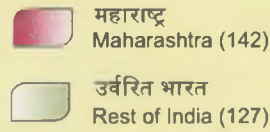
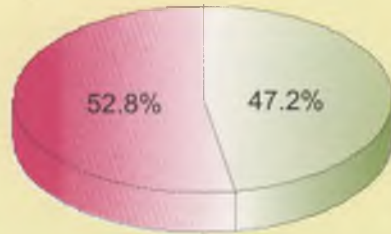
महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील साखर कारखान्यांची एकूण संख्या

No. of Total Sugar Factories in Maharashtra & Rest of India



महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील सहकारी साखर कारखान्यांची संख्या

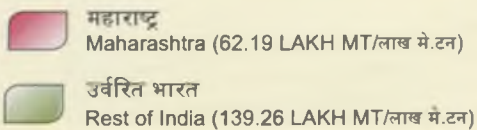
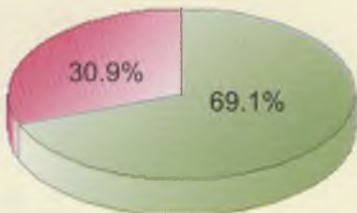
No. of Co-operative Sugar Factories in Maharashtra & Rest of India



2002-03

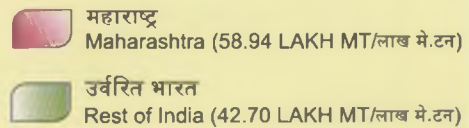
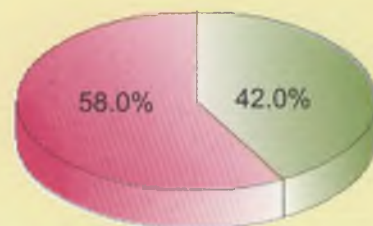
महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील साखर उत्पादन

Sugar Production in Maharashtra & Rest of India



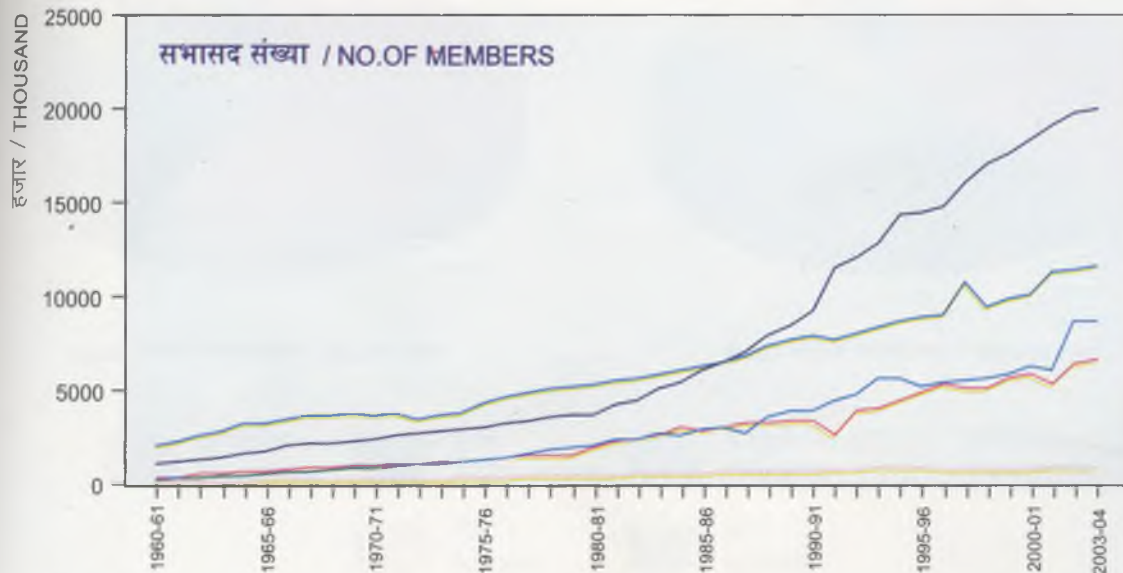
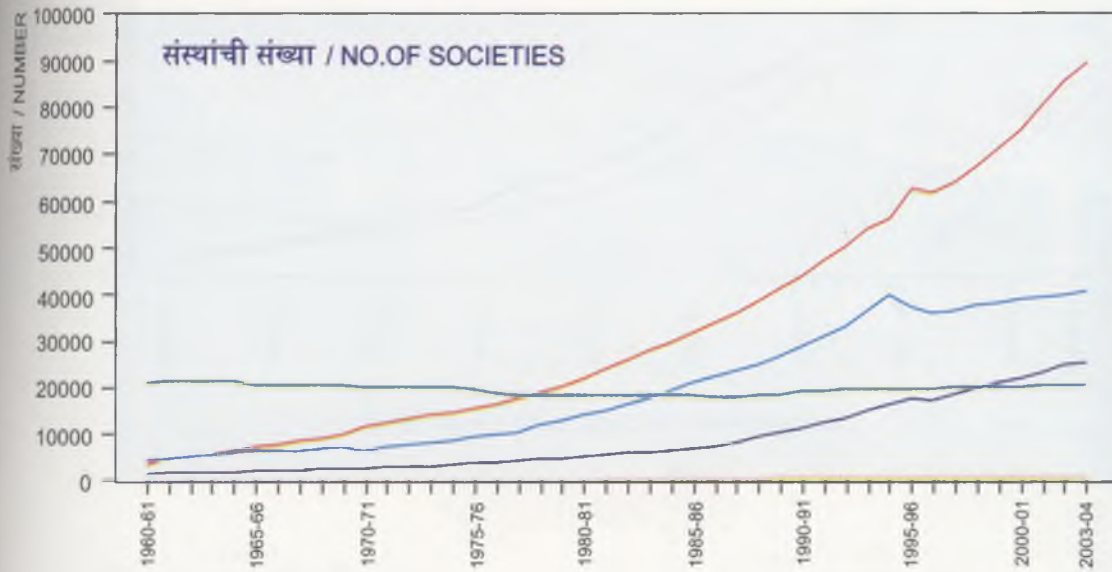
महाराष्ट्र आणि उर्वरित भारतातील सहकारी साखर कारखान्यातील साखर उत्पादन

Sugar Production in Co-operative Sugar Factories in Maharashtra & Rest of India



सहकारी संस्थांची वाढ GROWTH OF CO-OPERATIVE SOCIETIES

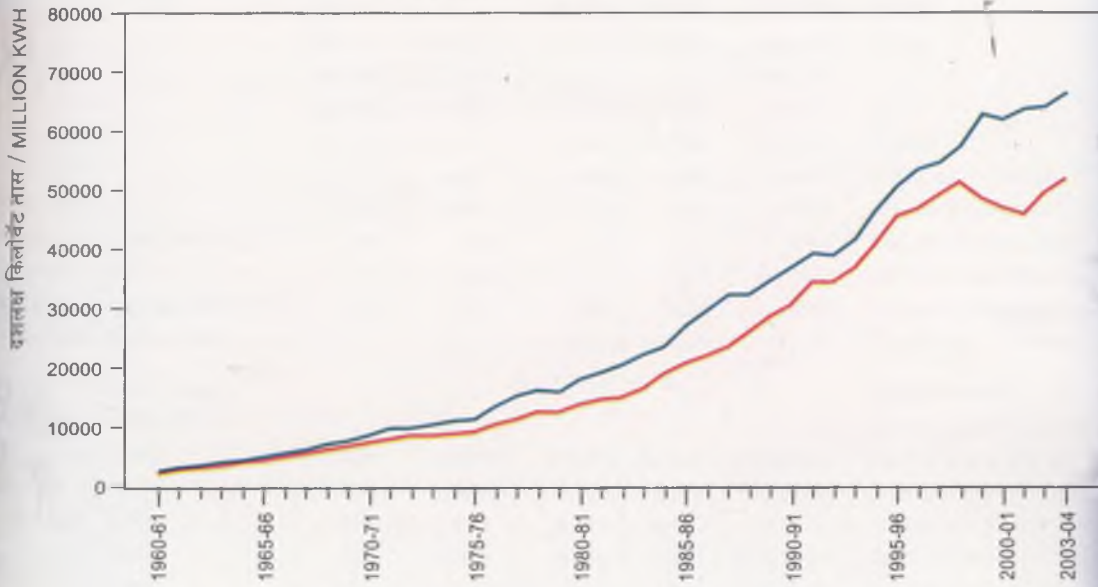
- गृहनिर्माण संस्था व ग्राहक भांडारे  Housing Societies & Consumer Stores
- प्राथमिक कृषि पतपुरवठा संस्था  Primary Agricultural Credit Societies
- बिगर कृषि पतपुरवठा संस्था  Non-Agricultural Credit Societies
- पणन संस्था  Marketing Societies
- उत्पादक उपकम  Productive Enterprises



महाराष्ट्र राज्य MAHARASHTRA STATE

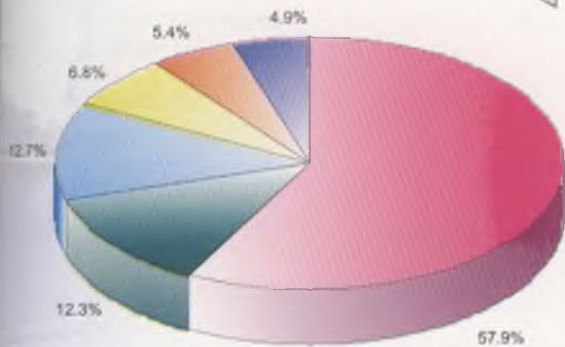
विजेची एकूण निर्मिती आणि वापर TOTAL ELECTRICITY GENERATION AND CONSUMPTION

निर्मिती GENERATION वापर CONSUMPTION

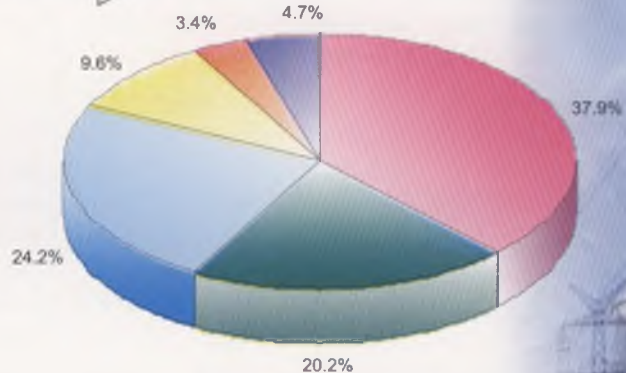


विजेचा वापर / ELECTRICITY CONSUMPTION

1980-81 2003-04



14,034 दशलक्ष किलोवॅट तास / MILLION KWH



52,233 दशलक्ष किलोवॅट तास / MILLION KWH

- | | | | |
|------------------------|---------------------|--------------------|-------------------------|
| औद्योगिक INDUSTRIAL | कृषि AGRICULTURE | घरगुती DOMESTIC | वाणिज्यिक COMMERCIAL |
| रेल्वे RAILWAY | इतर OTHERS | | |

दृष्टिक्षेपात महाराष्ट्र / MAHARASHTRA AT A GLANCE

| क्रमांक (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1980-81 (4) | 1990-91 (5) | 2003-04* (6) | Item (1) |
|--|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|--|
| भौगोलिक क्षेत्र - (हजार चौ.कि.मी.) | 306 | 308 | 308 | 308 | 308 | Geographical Area- (Thousand Sq.Km.) |
| प्रशासकीय रचना - | | | | | | Administrative Setup - |
| महसुली विभाग | 4 | 4 | 6 | 6 | 6 | Revenue Divisions |
| जिल्हे | 26 | 26 | 28 | 31 | 35 | Districts |
| तहसील | 229 | 235 | 301 | 303 | 353 | Tahsils |
| वस्ती असलेली गावे | 35,851 | 35,778 | 39,354 | 40,412 | 43,711 | Inhabited villages |
| वस्ती नसलेली गावे | 3,016 | 2,883 | 2,479 | 2,613 | 41,095 | Un-Inhabited villages |
| शहरे # | 266 | 289 | 307 | 336 | 378 | Towns # |
| जनगणनेनुसार लोकसंख्या - (हजारात) | (1961) | (1971) | (1981) | (1991) | (2001) | Population as per Census- (In thousand) |
| एकूण | 39,554 | 50,412 | 62,784 | 78,937 | 96,879 | Total |
| पुरुष | 20,429 | 26,116 | 32,415 | 40,826 | 50,401 | Males |
| स्त्रिया | 19,125 | 24,296 | 30,369 | 38,111 | 46,478 | Females |
| ग्रामीण | 28,391 | 34,701 | 40,791 | 48,395 | 55,778 | Rural |
| नागरी | 11,163 | 15,711 | 21,993 | 30,542 | 41,101 | Urban |
| अनुसूचित जाती | 2,227 | 3,177 | 4,480 | 8,758 | 9,882 | Scheduled Castes |
| अनुसूचित जमाती | 2,397 | 3,841 | 5,772 | 7,318 | 8,577 | Scheduled Tribes |
| लोकसंख्येची घनता (प्रति चौ.कि.मी.) | 129 | 164 | 204 | 257 | 315 | Density of population (per Sq. Km.) |
| साक्षरता प्रमाण (टक्के) | 35.1 | 45.8 | 57.1 | 64.9 | 76.9 | Literacy rate (Percentage) |
| स्त्री-पुरुष प्रमाण (स्त्रिया प्रति हजार पुरुष) | 936 | 930 | 937 | 934 | 922 | Sex ratio (Females per thousand males) |
| नागरी लोकसंख्येचे प्रमाण (टक्के) | 28.22 | 31.17 | 35.03 | 38.69 | 42.43 | Percentage of urban population |
| राज्य उत्पन्न - (चालू किमतीनुसार) (१९९३-९४ च्या मालिकेप्रमाणे) | | | | | | State Income - (At current prices) (As per 1993-94 series) |
| राज्य उत्पन्न (कोटी रुपये) | 1,889 | 4,738 | 16,480 | 60,143 | 2,94,001+ | State Income (Crore Rs.) |
| प्राथमिक क्षेत्र (कोटी रुपये) | 649 | 1,137 | 4,104 | 13,191 | 39,516+ | Primary Sector (Crore Rs.) |
| द्वितीय क्षेत्र (कोटी रुपये) | 486 | 1,526 | 5,531 | 19,875 | 75,701+ | Secondary Sector (Crore Rs.) |
| तृतीय क्षेत्र (कोटी रुपये) | 754 | 2,075 | 6,845 | 27,077 | 1,78,784+ | Tertiary Sector (Crore Rs.) |
| दरडोई राज्य उत्पन्न (रुपये) | 484 | 957 | 2,647 | 7,696 | 29,204+ | Per capita State income (Rs.) |
| कृषि - (क्षेत्र हजार हेक्टरमध्ये) | | | | | (2002-03) | Agriculture - (Area in thousand hectares) |
| निव्वळ पेरणी क्षेत्र | 17,878 | 17,668 | 18,299 | 18,565 | 17,579 | Net area sown |
| पिकांखालील स्थूल क्षेत्र | 18,823 | 18,737 | 19,642 | 21,859 | 22,368 | Gross cropped area |
| स्थूल सिंचित क्षेत्र | 1,220 | 1,570 | 2,415 | 3,319 | 3,812 | Gross irrigated area |
| स्थूल सिंचित क्षेत्राचे पिकांखालील एकूण स्थूल क्षेत्राशी प्रमाण (टक्के) | 6.5 | 8.4 | 12.3 | 15.2 | 17.2 | Percentage of gross irrigated area to gross cropped area |
| प्रमुख पिकांखालील क्षेत्र - (हजार हेक्टरमध्ये) | | | | | (2003-04) | Area under principal crops- (In thousand hectares) |
| तांदूळ | 1,300 | 1,352 | 1,459 | 1,597 | 1,535 | Rice |
| गहू | 907 | 812 | 1,063 | 867 | 665 | Wheat |
| ज्वारी | 6,284 | 5,703 | 6,469 | 6,300 | 4,440 | Jowar |
| बाजरी | 1,635 | 2,039 | 1,534 | 1,940 | 1,325 | Bajri |
| सर्व तृणधान्ये | 10,606 | 10,320 | 19,976 | 11,136 | 8,568 | All cereals |
| सर्व कडधान्ये | 2,349 | 2,566 | 2,715 | 3,257 | 3,436 | All pulses |
| सर्व अन्नधान्ये | 12,955 | 12,886 | 13,691 | 14,393 | 12,004 | All foodgrains |

अस्थायी / Provisional + प्रारंभिक अंदाज / Preliminary estimates

गणना शहरासह / Including census towns.

दृष्टिक्षेपात महाराष्ट्र / MAHARASHTRA AT A GLANCE

| बाब (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1980-81 (4) | 1990-91 (5) | 2003-04* (6) | Item (7) |
|---|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|---|
| ऊस क्षेत्र | 155 | 204 | 319 | 536 | N.A. | Sugarcane Area |
| ऊस तोडणी क्षेत्र | 155 | 167 | 258 | 442 | 526 | Sugarcane Harvested area |
| कापूस | 2,500 | 2,750 | 2,550 | 2,721 | 2,762 | Cotton |
| भुईमूग | 1,083 | 904 | 665 | 864 | 390 | Groundnut |
| 7. प्रमुख पिकांचे उत्पादन - (हजार टनात) | | | | | | Production of principal crops- (In thousand tonnes) |
| तांदूळ | 1,369 | 1,662 | 2,315 | 2,344 | 2,839 | Rice |
| गहू | 401 | 440 | 886 | 909 | 778 | Wheat |
| ज्वारी | 4,224 | 1,557 | 4,409 | 5,929 | 2,888 | Jowar |
| बाजरी | 489 | 824 | 697 | 1,115 | 896 | Bajri |
| सर्व ताणधान्ये | 6,755 | 4,737 | 8,647 | 10,740 | 8,367 | All cereals |
| सर्व कडधान्ये | 989 | 677 | 825 | 1,441 | 1,955 | All pulses |
| सर्व अन्नधान्ये | 7,744 | 5,414 | 9,472 | 12,181 | 10,322 | All foodgrains |
| ऊस | 10,404 | 14,433 | 23,706 | 38,154 | 26,982 | Sugarcane |
| कापूस (रई) | 284 | 82 | 208 | 319 | 524 | Cotton (lint) |
| भुईमूग | 800 | 586 | 451 | 979 | 453 | Groundnut |
| 8. कृषि उत्पादनाचा निर्देशांक @ - | | | | 136.5 | 115.8 | Index number of agricultural production @ - |
| 9. कृषि गणना - | | (1970-71) | (1980-81) | (1990-91) | (1995-96) | Agricultural Census - |
| वाहत खातेदारांची संख्या (हजारात) | | 4,951 | 6,863 | 9,470 | 10,653 | Number of operational holdings (In thousand) |
| वाहितांचे क्षेत्र (हजार हेक्टरसंमध्ये) | | 21,179 | 21,362 | 20,925 | 19,880 | Area of operational holdings (In thousand hectares) |
| वाहितांचे सरासरी क्षेत्र (हेक्टर) | | 4.28 | 3.11 | 2.21 | 1.87 | Average size of operational holdings (He) |
| 10. पशुधन गणना - | (1961) | (1966) | (1978) | (1987) | (1997) | Livestock Census - |
| एकूण पशुधन (हजारात) | 26,048 | 25,449 | 29,642 | 34,255 | 39,638 | Total livestock (In thousand) |
| एकूण कांबड्या-बदके (हजारात) | 10,577 | 9,902 | 18,791 | 24,839 | 35,392 | Total poultry (In thousand) |
| ट्रॅक्टर | 1,427 | 3,274 | 12,917 | 34,529 | 79,893 | Tractor |
| 11. वन क्षेत्र (चौ.कि.मी.) | 63,544 | 62,311 | 64,222 | 63,798 | 61,939 | Forest Area (Sq.Km.) |
| 12. कारखाने - @@ | (1960) | (1970) | (1980) | (1990) | (2003) | Factories - @@ |
| चालू कारखाने | 8,010 | 9,803 | 15,170 | 23,410 | 28,816 | Working Factories |
| सरासरी दैनिक रोजगार (हजारात) | 746 | 952 | 1,177 | 1,163 | 1,172 | Average daily employment (In thousand) |
| दर लाख लोकसंख्येमागे रोजगार | 1,886 | 2,031 | 1,958 | 1,483 | 1,168 | Employment per lakh of population |
| 13. वीज- (दशलक्ष कि.घं.तास) | | | | | | Electricity - (Million KWII) |
| एकूण उत्पादन | 3,268 | 9,134 | 18,751 | 37,311 | 66,991 | Total generation |
| एकूण वापर | 2,720 | 7,650 | 14,034 | 30,775 | 52,233 | Total consumption |
| औद्योगिक वापर | 1,853 | 5,312 | 8,130 | 14,706 | 19,806 | Industrial consumption |
| कृषि वापर | 15 | 356 | 1,723 | 6,604 | 10,572 | Agricultural consumption |
| घरगुती वापर | 260 | 732 | 1,779 | 5,065 | 12,617 | Domestic Consumption |

* अस्थायी / Provisional

@ पाया :- त्रैवर्षीय सरासरी १९७९-८२ = १००/ Base :- Triennial Average 1979-82=100

@@ कारखाना अधिनियम, १९४८ खालील / Covered under Factories Act, 1948

दृष्टिक्षेपात महाराष्ट्र / MAHARASHTRA AT A GLANCE

| क्र.सं. (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1980-81 (4) | 1990-91 (5) | 2003-04* (6) | Item (1) |
|------------------------------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|--|
| बँका (अनुसूचित वार्षिक) | | (June 1971) | (June 1981) | (June 1991) | (Sept. 2004) | Banking - (Scheduled Commercial) |
| बँक कार्यालये | N.A. | 1,471 | 3,627 | 5,591 | 6,332 | Banking offices |
| बँक कार्यालये असलेली गावे | N.A. | 450 | 1,355 | 2,749 | 2,300 | Villages having banking offices |
| शिक्षण - | | | | | (2004-05 @ 90) | Education - |
| प्रथमिक शाळा | 34,594 | 44,535 | 51,045 | 57,744 | 67,964 | Primary schools |
| विद्यार्थी (हजारतः) | 4,178 | 6,539 | 8,392 | 10,424 | 11,747 | Enrolment (In thousand) |
| माध्यमिक शाळा (उच्च माध्यमिक सह) | 2,468 | 5,313 | 6,119 | 10,519 | 18,717 | Secondary schools (incl. Higher Secondary) |
| विद्यार्थी (हजारतः) | 858 | 1,985 | 3,309 | 6,260 | 10,499 | Enrolment (In thousand) |
| आरोग्य - | | (1971) | (1981) | (1991) | (2003) | Health - |
| रुग्णालये | N.A. | 299 | 530 | 768 | 945 | Hospitals |
| दवाखाने | N.A. | 1,372 | 1,776 | 1,896 | 2,019 | Dispensaries |
| दर लाख लोकसंख्येमागे खाटा @ | N.A. | 88 | 114 | 144 | 92 | Beds per lakh of population |
| | | | | | (2002) | |
| जन्मदर @ (***) | 34.7 | 32.2 | 28.5 | 26.2 | 20.3 | Birth rate @ (***) |
| मृत्युदर @ (***) | 13.8 | 12.3 | 9.6 | 8.2 | 7.3 | Death rate @ (***) |
| बाल मृत्युदर @ (††) | 86 | 105 | 79 | 60 | 45 | Infant mortality rate @ (††) |
| वाहतूक - | | | | | | Transport - |
| रेल्वे मार्गांची लांबी (किलोमीटर) | 5,056 | 5,226 | 5,233 | 5,434 | 5,497 | Railway route length (Kilometer) |
| एकूण रस्त्यांची लांबी (किलोमीटर) † | 39,241 | 65,364 | 1,41,131 | 1,72,965 | 2,26,992 | Total Road length (Kilometer) † |
| त्यापंकी पृष्ठांकित | 24,852 | 35,853 | 66,616 | 1,32,048 | 1,98,459 | Of which Surfaced |
| मोटर वाहने (हजारतः) | 100 | 312 | 805 | 2,641 | 8,969 | Motor vehicles (In thousand) |
| सहकार - | | | | | | Co-operation - |
| प्रथमिक कृषि पतसंस्था | 21,400 | 20,420 | 18,577 | 19,565 | 21,000 | Primary agricultural credit societies |
| सभासद (हजारतः) | 2,170 | 3,794 | 5,416 | 7,942 | 11,692 | Membership (In thousand) |
| एकूण सहकारी संस्थांची संख्या | 31,565 | 42,597 | 60,747 | 1,04,620 | 1,78,854 | Total No. of Co-op. societies |
| एकूण सभासद (हजारतः) | 4,191 | 8,581 | 14,783 | 26,903 | 48,289 | Total membership (In thousand) |
| कार्ये चालविलेले (कोटी रु.) | 291 | 1,490 | 5,210 | 24,283 | 1,83,201 | Working capital (Rs. In crore) |
| स्थानिक स्वराज्य संस्था | | | | | | Local bodies - |
| जिल्हा परिषदा | 25 | 25 | 25 | 29 | 33 | Zilla Parishads |
| ग्रामपंचायता | 21,636 | 22,300 | 24,281 | 25,827 | 27,946 | Gram Panchayats |
| पंचायत समित्या | 295 | 296 | 296 | 298 | 349 | Panchayat Samitis |
| नगर परिषदा | 219 | 221 | 220 | 228 | 222 | Municipal Councils |
| महानगरपालिका | 3 | 4 | 5 | 11 | 22 | Municipal Corporations |
| नगर पंचायत | - | - | - | - | 3 | Nagar Panchayat |
| कटकमंडळे | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | Cantonment Boards |

अस्थायी / Provisional

N.A. - उपलब्ध नाही / Not available

नमुना नोंदणी पाहणीनुसार / As per Sample Registration Scheme

अंदाजित / Estimated

प्रति हजार लोकसंख्येमागे / Per thousand population

प्रति हजार जीवित जन्मांमागे / Per thousand live births

सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषदांच्या देखभालीखालील रस्ते / Roads maintained by P.W.D. and Z.P.

महाराष्ट्राची आणि भारताची तुलनात्मक माहिती
MAHARASHTRA'S COMPARISON WITH INDIA

| बाब (1) | परिमाण (2) | महाराष्ट्र Maharashtra (3) | भारत India (4) | भारताशी तुलना (टक्केवारी) Comparison with India (Percentage) (5) | Unit (2) | Item (1) |
|--|--|----------------------------------|----------------------|--|----------------------------|---|
| | | | | | | Population (2001)* |
| 1. लोकसंख्या (२००१)* | | | | | | |
| 1.1 एकूण लोकसंख्या | हजारात | 96,879 | 10,28,610 | 9.4 | In Thousand | Total population |
| (१) पुरुष | .. | 50,401 | 5,32,157 | 9.5 | .. | (i) Males |
| (२) स्त्रिया | .. | 46,478 | 4,96,453 | 9.4 | .. | (ii) Females |
| 1.2 (अ) ग्रामीण लोकसंख्या | हजारात | 55,778 | 7,42,491 | 7.5 | In Thousand | (a) Rural population |
| (ब) ग्रामीण लोकसंख्येची एकूण लोकसंख्येशी टक्केवारी | टक्के | 57.57 | 72.18 | ... | Per cent | (b) Percentage of rural population to total population |
| 1.3 (अ) नागरी लोकसंख्या | हजारात | 41,101 | 2,86,120 | 14.4 | In Thousand | (a) Urban population |
| (ब) नागरी लोकसंख्येची एकूण लोकसंख्येशी टक्केवारी | टक्के | 42.43 | 27.82 | ... | Per cent | (b) Percentage of urban population to total population |
| 1.4 स्त्री-पुरुष प्रमाण | दर हजार पुरुषांमागे स्त्रियांची संख्या | 922 | 933 | ... | Females per thousand males | Sex Ratio |
| 1.5 लोकसंख्येतील शेकडा वाढ (१९९१-२००१) | टक्के | 22.73 | 21.54 | ... | Per cent | Percentage growth of population during 1991-2001 |
| 1.6 साक्षरता प्रमाण | टक्के | 76.88 | 64.84 | ... | Per cent | Literacy rate |
| 1.7 (अ) अनुसूचित जाती व अनुसूचित जमातीची लोकसंख्या (२००१) | हजारात | 18,459 | 2,50,962 | 7.8 | In Thousand | population of scheduled castes and scheduled tribes (2001) |
| 1.8 (अ) एकूण काम करणारे (२००१) | हजारात | 41,173 | 4,02,235 | 10.8 | In Thousand | Total workers (2001) |
| 1.9 भौगोलिक क्षेत्र (२००१) | लाख चौ.कि.मी. | 3.08 | 32.87 | 9.4 | Lakh Sq Km | Geographical area (2001) |
| | | | | | | Agriculture † (1999-00) |
| 2.1 निव्वळ पेरणी क्षेत्र | हजार हेक्टर | 17,691 | 1,41,231 | 12.5 | In Thousand hectares | Net area sown |
| 2.2 पिकाखालील स्थूल क्षेत्र | .. | 22,351 | 1,89,740 | 11.8 | .. | Gross cropped area |
| 2.3 स्थूल सिंचित क्षेत्र | .. | 3,769 | 77,992 | 4.8 | .. | Gross irrigated area |
| 2.4 स्थूल सिंचित क्षेत्राची एकूण पिका-खालील स्थूल क्षेत्राशी टक्केवारी | टक्के | 16.9 | 41.1 | ... | Per cent | Percentage of gross irrigated area to gross cropped area |
| 2.5 प्रमुख पिकांखालील क्षेत्र (२०००-०१ ते २००२-०३ या वर्षाची सरासरी) | | | | | | Area under principal crops (average for years 2000-01 to 2002-03) |
| (१) तांदूळ | हजार हेक्टर | 1,516 | 43,247 | 3.5 | In Thousand hectares | (i) Rice |
| (२) गहू | .. | 763 | 25,630 | 3.0 | .. | (ii) Wheat |
| (३) ज्वारी | .. | 5,012 | 9,663 | 51.9 | .. | (iii) Jowar |
| (४) बाजरी | .. | 1,582 | 8,990 | 17.6 | .. | (iv) Bajri |
| (५) एकूण तृणधान्ये | .. | 9,489 | 97,653 | 9.71 | .. | (v) All cereals |
| (६) एकूण अन्नधान्ये (तृणधान्ये व कडधान्ये) | .. | 12,986 | 1,18,697 | 10.9 | .. | (vi) All foodgrains (cereals and pulse) |
| (७) ऊस क्षेत्र | .. | 609 | 4,317 | 14.1 | .. | (vii) Sugarcane Area |
| तोडणी क्षेत्र | .. | N.A. | N.A. | N.A. | .. | Harvested Area |
| (८) कापूस | .. | 2,994 | 8,370 | 35.8 | .. | (viii) Cotton |
| (९) भुईमूग | .. | 446 | 6,457 | 6.9 | .. | (ix) Groundnut |

† अस्थायी /Provisional

* मणिपूर राज्यातील सेनापती जिल्ह्यांतील माओ-मारम, पाओमाटा आणि पुरुल हे उपविभाग वगळून.

* Excludes Mao-Maram, Paomata and Purul sub divisions of Senapati district of Manipur.

महाराष्ट्राची आणि भारताची तुलनात्मक माहिती—चालू
MAHARASHTRA'S COMPARISON WITH INDIA--- contd.

| बाब (1) | परिमाण (2) | महाराष्ट्र Maharashtra (3) | भारत India (4) | भारताशी तुलना (टक्केवारी) Comparison with India (Percentage) (5) | Unit (2) | Item (1) |
|--|------------------|----------------------------------|----------------------|---|--------------|---|
| पशुधन गणना | | | | | | Livestock census |
| 3.1 एकूण पशुधन (१९९७) | हजारात | 39,638 | 4,85,385 | 8.2 | In Thousand | Total livestock (1997) |
| 3.2 ट्रॅक्टर्स (१९९२) | --- | 46 | 1,222 | 3.8 | In Thousand | Tractors (1992) |
| 3.3 सिंचनाकरिता वापरलेली इंजिने व पंप (१९९२) | --- | 1,189 | 11,393 | 10.4 | In Thousand | Oil engines with pumps for irrigation purposes (1992) |
| 4. वने | | | | | | Forests |
| 4.1 एकूण वन क्षेत्र * (२००१) | चौ.कि.मीटर | 61,939 | 7,68,436 | 8.1 | Sq.km. | Total forest area* (2001) |
| उद्योग* | | | | | | Industry* |
| 5.1 कारखाने- (२००१) | | | | | | Factories— (2001) |
| (अ) चालू कारखाने | संख्या | 28,399 | 2,39,627 | 11.9 | Number | (a) Working factories |
| (ब) दैनिक सरासरी रोजगार | हजारात | 1,249 | 10,885 | 11.5 | In Thousand | (b) Average daily employment |
| वीज (२००२-०३) | | | | | | Electricity (2002-03) |
| 6.1 एकूण उत्पादन | दशलक्ष कि.वॅ.तास | 64,740 | 5,32,693 | 12.1 | Million kwh. | Total generation |
| 6.2 एकूण वापर | दशलक्ष कि.वॅ.तास | 49,945 | 3,39,598 | 14.7 | Million kwh. | Total consumption |
| 6.3 (अ) औद्योगिक वापर | दशलक्ष कि.वॅ.तास | 18,156 | 1,14,959 | 15.8 | Million kwh. | (a) Industrial consumption |
| (ब) औद्योगिक वापराची एकूण वापराशी टक्केवारी | टक्के | 36.6 | 33.8 | ... | Per cent | (b)Percentage of industrial consumption to total consumption |
| बँका | | | | | | Banking |
| 7.1 बँक कार्यालये (अनुसूचित वाणिज्यिक) (सप्टें. २००४) | संख्या | 6,332 | 66,667 | 9.4 | Number | Banking offices(Scheduled commercial) (Sept. 2004) |
| 7.2 बँक कार्यालये (अनुसूचित वाणिज्यिक) असलेली शहरे व गावे (मार्च, २००२) | संख्या | 2,612 | 35,502 | 7.3 | Number | Towns and Villages having banking offices (Scheduled commercial) (March,2002) |
| राज्य / राष्ट्रीय उत्पन्न (२००३-०४) | | | | | | State / National Income (2003-04) |
| 8.1 चालू किमतीनुसार उत्पन्न | कोटी रुपये | 2,94,001 † | 22,52,070** | 13.1 | Crore Rs. | Income at current prices |
| 8.2 चालू किमतीनुसार दरडोई उत्पन्न | रुपये | 29,204 † | 20,989** | ... | Rs. | Per capita income at current prices |
| 8.3 घटक उत्पादन मूल्यानुसार स्थूल उत्पन्न | कोटी रुपये | 3,33,145 † | 25,19,785** | 13.2 | Crore Rs. | Gross Domestic Product (GDP) at factor cost |
| 8.4 दरडोई स्थूल उत्पन्न | रुपये | 33,093 † | 23,484** | ... | Rs. | Per Capita GDP |

* अस्थायी /Provisional

† प्रारंभिक अंदाज /Preliminary estimates

** शीघ्र अंदाज /Quick estimates

भारतातील राज्यांचे निवडक सामाजिक व आर्थिक निर्देशक/

| राज्य | भौगोलिक क्षेत्र (लाख चौ. कि. मी.) Geo-graphical area (lakhs sq. km.) | लोकसंख्या (लाखात) Population (In lakh) | लोकसंख्येची घनता Density of population | नागरी लोकसंख्येची एकूण टक्केवारी Percentage of urban population to total population | राज्याच्या भारताच्या लोकसंख्येची टक्केवारी Percentage of State population to All-India population | लोकसंख्येतील दशवर्षीय वाढ (टक्के) Decennial growth rate of population (per cent) | स्त्री-पुरुष प्रमाण Sex ratio | अनुसूचित जाती आणि अनुसूचित जमाती यांची एकूण लोकसंख्येचा टक्केवारी Percentage of scheduled castes and scheduled tribes to total population | मुख्यतः कृषि करणाऱ्यांची एकूण लोकसंख्येची टक्केवारी Percentage of main workers to total population | कृषि विषयक काम करणाऱ्यांची एकूण काम करणाऱ्यांची टक्केवारी Percentage of agricultural workers to total workers |
|---------------------------------|---|---|---|--|--|---|----------------------------------|--|---|--|
| संदर्भ वर्ष किंवा दिनांक (1) | (2001) (2) | (2001) (3) | (2001) (4) | (2001) (5) | (2001) (6) | (1991-01) (7) | (2001) (8) | (2001) (9) | (2001) (10) | (2001) (11) |
| 1 आंध्र प्रदेश | 2.75 | 762.10 | 277 | 27.30 | 7.41 | 14.59 | 978 | 22.78 | 38.11 | 62.16 |
| 2 अरुणाचल प्रदेश | 0.84 | 10.98 | 13 | 20.75 | 0.11 | 27.00 | 893 | 64.79 | 37.80 | 61.74 |
| 3 आसाम | 0.78 | 266.56 | 340 | 12.90 | 2.59 | 18.92 | 935 | 19.26 | 26.69 | 52.36 |
| 4 बिहार | 0.94 | 829.99 | 881 | 10.46 | 8.07 | 28.62 | 919 | 16.64 | 25.37 | 77.25 |
| 5 झारखंड | 0.80 | 269.46 | 338 | 22.24 | 2.62 | 23.36 | 941 | 38.14 | 23.92 | 66.68 |
| 6 दिल्ली | 0.01 | 138.50 | 9,340 | 93.18 | 1.35 | 47.02 | 821 | 16.92 | 31.17 | 1.17 |
| 7 गोवा | 0.04 | 13.48 | 364 | 49.76 | 0.13 | 15.21 | 961 | 1.81 | 31.56 | 16.49 |
| 8 गुजरात | 1.96 | 506.71 | 258 | 37.36 | 4.93 | 22.66 | 920 | 21.85 | 33.60 | 51.58 |
| 9 हरियाणा | 0.44 | 211.45 | 478 | 28.92 | 2.06 | 28.43 | 861 | 19.35 | 29.52 | 51.29 |
| 10 हिमाचल प्रदेश | 0.56 | 60.78 | 109 | 9.80 | 0.59 | 17.54 | 968 | 28.74 | 32.31 | 68.47 |
| 11 जम्मू व काश्मीर | 2.22 | 101.44 | 100 | 24.81 | 0.99 | 31.42 | 892 | 18.50 | 25.72 | 48.96 |
| 12 कर्नाटक | 1.92 | 528.50 | 276 | 33.99 | 5.14 | 17.51 | 965 | 22.76 | 36.64 | 55.71 |
| 13 केरळ | 0.39 | 318.41 | 819 | 25.96 | 3.10 | 9.43 | 1,058 | 10.95 | 25.87 | 22.80 |
| 14 मध्य प्रदेश | 3.08 | 603.48 | 196 | 26.46 | 5.87 | 24.26 | 919 | 35.44 | 31.65 | 71.49 |
| 15 छत्तीसगड | 1.35 | 208.34 | 154 | 20.09 | 2.03 | 18.27 | 989 | 43.37 | 33.86 | 76.47 |
| 16 महाराष्ट्र | 3.08 | 968.79 | 315 | 42.43 | 9.42 | 22.73 | 922 | 19.05 | 35.87 | 54.96 |
| 17 मणिपूर | 0.22 | 21.67 [#] | 97 | 26.58 | 0.21 | 17.94 | 978 | 36.98 | 30.43 | 52.19 |
| 18 मेघालय | 0.22 | 23.19 | 103 | 19.58 | 0.23 | 30.65 | 972 | 86.42 | 32.65 | 65.84 |
| 19 मिझोराम | 0.21 | 8.89 | 42 | 49.63 | 0.09 | 28.82 | 935 | 94.49 | 40.79 | 60.60 |
| 20 नागालँड | 0.17 | 19.90 | 120 | 17.23 | 0.19 | 64.53 | 900 | 89.15 | 35.38 | 68.38 |
| 21 ओरिसा | 1.56 | 368.05 | 236 | 14.99 | 3.58 | 16.25 | 972 | 38.66 | 26.05 | 64.77 |
| 22 पंजाब | 0.50 | 243.59 | 484 | 33.92 | 2.37 | 20.10 | 876 | 28.85 | 32.17 | 38.95 |
| 23 राजस्थान | 3.42 | 565.07 | 165 | 23.39 | 5.49 | 28.41 | 921 | 29.72 | 30.86 | 65.91 |
| 24 सिक्कीम | 0.07 | 5.41 | 76 | 11.07 | 0.05 | 33.06 | 875 | 25.62 | 39.36 | 56.36 |
| 25 तामिळनाडू | 1.30 | 624.06 | 480 | 44.04 | 6.07 | 11.72 | 987 | 20.04 | 38.07 | 49.33 |
| 26 त्रिपुरा | 0.10 | 31.99 | 305 | 17.06 | 0.31 | 16.03 | 948 | 48.42 | 28.52 | 50.83 |
| 27 उत्तर प्रदेश | 2.41 | 1,661.98 | 690 | 20.78 | 16.16 | 25.85 | 898 | 21.21 | 23.67 | 65.89 |
| 28 उत्तरांचल | 0.53 | 84.89 | 159 | 25.67 | 0.83 | 20.39 | 962 | 20.89 | 27.36 | 58.38 |
| 29 पश्चिम बंगाल | 0.89 | 801.76 | 903 | 27.97 | 7.79 | 17.77 | 934 | 28.51 | 28.72 | 44.15 |
| भारत* | 32.87 | 10,286.10 | 325 | 27.82 | 100.00 | 21.54 | 933 | 24.40 | 30.43 | 58.20 |

* केंद्रशासित प्रदेश धरून /Includes Union Territories

N.A. - उपलब्ध नाही /Not available

मणिपूर राज्यातील सेनापती जिल्ह्यातील माओ-मारम, पाओमाटा आणि पुरूल हे उपविभाग वगळून /Excludes Mao-Maram, Paomata and Purul sub divisions of Senapati district of Manipur.

SELECTED SOCIO-ECONOMIC INDICATORS OF STATES IN INDIA

| काम करणाऱ्या स्त्रियांचा सहभाग दर Female worker participa- tion rate | मानव विकासाबाबतचे मूलभूत निर्देशक Basic Indicators of Human Development | | | | | | | | | दर हजार लोकसंख्येमागे | State |
|---|--|---------------------|---------------|---|-----------------------------|-------------------------------|---|---|---|--------------------------|----------------------------------|
| | साक्षरतेची टक्केवारी†† Literacy percentage | | | जन्माच्या वेळची आयुर्मर्यादा (वर्षे) Life expectancy at birth (years) | जन्म दर Birth rate | मृत्यू दर Death rate | बालमृत्यू दर Infant morta- lity rate @@ | चालू किमतीनुसार दरडीई उत्पन्न (रुपये) Per capita income at current prices (Rs.) (P) | प्राथमिक व माध्यमिक शाळांमधील विद्यार्थ्यांची संख्या Number of students in primary and secondary schools per thousand population | | |
| | पुरुष Males | स्त्रिया Females | एकूण Total | पुरुष Males | स्त्रिया Females | | | | | | |
| | (2001) | (2001) | (2001) | (2001-06) | (2001-06) | (2002) | (2002) | (2002) | (2002-03) | (30.9.2002) | |
| (12) | (13) | (14) | (15) | (16) | (17) | (18) | (19) | (20) | (21) | (22) | Reference year or date (1) |
| 35.11 | 70.32 | 50.43 | 60.47 | 62.79 | 65.00 | 20.7 | 8.1 | 62 | 18,661 | 174 | Andhra Pradesh |
| 36.54 | 63.83 | 43.53 | 54.34 | N.A. | N.A. | 20.2 | 4.8 | 37 | N.A. | 228 | Arunachal Pradesh |
| 20.71 | 71.28 | 54.61 | 63.25 | 58.96 | 60.87 | 26.6 | 9.2 | 70 | N.A. | 171 | Assam |
| 18.84 | 59.68 | 33.12 | 47.00 | 65.66 | 64.79 | 30.9 | 7.9 | 61 | 6,015 | 140 | Bihar |
| 26.41 | 67.30 | 38.87 | 53.56 | 65.66 | 64.79 | 26.4 | 7.9 | 51 | N.A. | 141 | Jharkhand |
| 9.37 | 87.33 | 74.71 | 81.67 | N.A. | N.A. | 17.2 | 5.1 | 30 | 47,477 | 180 | Delhi |
| 22.36 | 88.42 | 75.37 | 82.01 | N.A. | N.A. | 14.0 | 8.3 | 17 | N.A. | 161 | Goa |
| 27.91 | 79.66 | 57.80 | 69.14 | 63.12 | 64.10 | 24.7 | 7.7 | 60 | 22,047 | 193 | Gujarat |
| 27.22 | 78.49 | 55.73 | 67.91 | 64.64 | 69.30 | 26.6 | 7.1 | 62 | 26,632 | 174 | Haryana |
| 43.67 | 85.35 | 67.42 | 76.48 | N.A. | N.A. | 20.7 | 7.5 | 52 | 22,576 | 223 | Himachal Pradesh |
| 22.45 | 66.60 | 43.00 | 55.52 | N.A. | N.A. | 19.2 | 5.7 | 45 | N.A. | 172 | Jammu & Kashmir |
| 31.98 | 76.10 | 56.87 | 66.64 | 62.43 | 66.44 | 22.1 | 7.2 | 55 | 18,521 | 192 | Karnataka |
| 15.38 | 94.24 | 87.72 | 90.86 | 71.67 | 75.00 | 16.9 | 6.4 | 10 | 21,853 | 162 | Kerala |
| 33.21 | 76.06 | 50.29 | 63.74 | 59.19 | 58.01 | 30.4 | 9.8 | 85 | 11,438 | 191 | Madhya Pradesh |
| 40.04 | 77.38 | 51.85 | 64.66 | 59.19 | 58.01 | 25.0 | 8.7 | 73 | 11,893 | 199 | Chhatisgarh |
| 30.81 | 85.97 | 67.03 | 76.88 | 66.75 | 69.76 | 20.3 | 7.3 | 45 | 26,291 | 203 | Maharashtra |
| 39.02 | 80.33 | 60.53 | 70.53 | N.A. | N.A. | 16.8 | 4.6 | 14 | N.A. | 222 | Manipur |
| 35.15 | 65.43 | 59.61 | 62.56 | N.A. | N.A. | 25.8 | 7.7 | 61 | 15,983 | 228 | Meghalaya |
| 47.54 | 90.72 | 86.75 | 88.80 | N.A. | N.A. | 16.9 | 4.8 | 14 | N.A. | 227 | Mizoram |
| 38.06 | 71.16 | 61.46 | 66.59 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | 121 | Nagaland |
| 24.66 | 75.35 | 50.51 | 63.08 | 60.05 | 59.71 | 23.2 | 9.8 | 87 | 10,340 | 178 | Orissa |
| 19.05 | 75.23 | 63.36 | 69.65 | 69.78 | 72.00 | 20.8 | 7.1 | 51 | 25,855 | 137 | Punjab |
| 33.49 | 75.70 | 43.85 | 60.41 | 62.17 | 62.80 | 30.6 | 7.7 | 78 | N.A. | 194 | Rajasthan |
| 38.57 | 76.04 | 60.40 | 68.81 | N.A. | N.A. | 21.9 | 4.9 | 34 | 18,647 | 214 | Sikkim |
| 31.54 | 82.42 | 64.43 | 73.45 | 67.00 | 69.75 | 18.5 | 7.7 | 44 | 21,433 | 185 | Tamil Nadu |
| 21.08 | 81.02 | 64.91 | 73.19 | N.A. | N.A. | 14.9 | 5.7 | 34 | N.A. | 219 | Tripura |
| 16.54 | 88.82 | 42.22 | 56.27 | 63.54 | 64.09 | 31.6 | 9.7 | 80 | N.A. | 193 | Uttar Pradesh |
| 27.33 | 33.28 | 59.63 | 71.62 | 63.54 | 64.09 | 17.0 | 6.4 | 41 | N.A. | 228 | Uttaranchal |
| 18.32 | 77.02 | 59.61 | 68.64 | 66.08 | 69.34 | 20.5 | 6.7 | 49 | 18,756 | 177 | West Bengal |
| 25.63 | 75.26 | 53.67 | 64.84 | 64.11 | 65.43 | 25.0 | 8.1 | 63 | 19,040 | 181 | India* |

छोट्या राज्यांचे व केंद्रशासित प्रदेशांचे बालमृत्यू दर त्रैवार्षिक (२०००-०२) सरकत्या सरासरीवर आधारित आहेत. /

Infant mortality rates for smaller States and Union territories are based on three year (2000-02) moving averages.

साक्षरतेची टक्केवारी सात व त्यापेक्षा अधिक वयाच्या लोकसंख्येची आहे /The literacy rates relate to the population aged seven and above

भारतातील राज्यांचे निवडक सामाजिक व आर्थिक निर्देशक/

| राज्य | दर हेक्टरी उत्पादन (किलोग्रॅममध्ये) Yield per hectare (in kg.) (P) | | | | | दरडोई अन्नधान्य उत्पादन (कि.ग्रॅ.) Foodgrains production per capita (Kg.) | पिकांखालील दर हेक्टर क्षेत्रामागे खतांचा वापर (कि.ग्रॅ.) Consumption of fertilizers per hectare of cropped area (Kg.) | एकूण सिंचित क्षेत्राची पिकांखालील एकूण क्षेत्राशी टक्केवारी Percentage of gross irrigated area to gross cropped area (P) | दर शेतकऱ्यामागे निव्वळ पेरणी क्षेत्र (हेक्टर) Net area sown per cultivator (Hectare) (P) | दर लाख लोकसंख्येमागे कारखान्यातील सरासरी दैनिक रोजगार (संख्या) Average daily factory employment per lakh of population (No.) (P) |
|--------------------------|---|-------------------------------------|---|------------------------------------|----------------------|--|---|---|---|---|
| | एकूण तृणधान्ये Total cereals | एकूण कडधान्ये Total pulses | एकूण अन्नधान्ये Total food grains | कापूस (रुई) Cotton (lint) | ऊस Sugar- cane | | | | | |
| संदर्भ वर्ष किंवा दिनांक | त्रैवाषिक सरासरी-Triennial average (2001-02 to 2002-03) | | | | | (2002-03) | (2001-02) | (1999-00) | (1999-2000) | (2001) |
| (1) | (23) | (24) | (25) | (26) | (27) | (28) | (29) | (30) | (31) | (32) |
| 1 आंध्र प्रदेश | 2,526 | 553 | 1,965 | 639 | 76,649 | 137.1 | 143.47 | 44.1 | 1.3 | 948 |
| 2 अरुणाचल प्रदेश | 1,179 | 1,058 | 1,177 | N.A. | 15,000 | 219.5 | 2.88 | 13.6 | 0.7 | N.A. |
| 3 आसाम | 1,484 | 553 | 1,446 | 220 | 36,806 | 146.1 | 38.81 | 14.0 | 0.7 | 370 |
| 4 बिहार | 1,855 | 838 | 1,749 | N.A. | 38,472 | 123.7 | 87.39 | 48.2 | 0.7 | N.A. |
| 5 झारखंड | 1,226 | 894 | 1,203 | N.A. | 31,612 | 99.6 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. |
| 6 दिल्ली | 1,782 | 411 | 1,789 | N.A. | N.A. | 6.0 | 59.90 | 80.3 | N.A. | (R)1,706 |
| 7 गोवा | 2,585 | 891 | 2,301 | N.A. | 60,278 | 106.1 | 34.28 | 20.3 | 2.5 | 2,584 |
| 8 गुजरात | 1,308 | 431 | 1,123 | 439 | 70,552 | 71.5 | 85.52 | 37.8 | 2.0 | (R)1,739 |
| 9 हरियाणा | 3,191 | 691 | 3,097 | 873 | 53,057 | 583.4 | 155.68 | 85.0 | 2.0 | N.A. |
| 10 हिमाचल प्रदेश | 1,610 | 548 | 1,565 | N.A. | 25,614 | 187.2 | 41.39 | 18.7 | 0.5 | (R)1,447 |
| 11 जम्मू व काश्मीर | 1,429 | 524 | 1,395 | N.A. | N.A. | 118.1 | 64.56 | 40.7 | N.A. | N.A. |
| 12 कर्नाटक | 1,495 | 417 | 1,202 | 233 | 89,933 | 129.3 | 101.48 | 26.1 | 1.7 | (R)1,859 |
| 13 केरळ | 2,181 | 797 | 2,132 | 594 | 84,373 | 22.3 | 60.73 | 15.7 | 2.2 | N.A. |
| 14 मध्य प्रदेश | 1,200 | 677 | 1,020 | 300 | 33,422 | 161.5 | 39.95 | 27.1 | 1.5 | 674 |
| 15 छत्तीसगड | 863 | 447 | 797 | N.A. | 2,496 | 151.7 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. |
| 16 महाराष्ट्र | 934 | 531 | 826 | 391 | 74,412 | 111.7 | 76.25 | 16.9 | 1.7 | 1,285 |
| 17 मणिपूर | 2,390 | 581 | 2,324 | N.A. | 28,952 | 164.1 | 104.94 | 37.7 | 0.4 | N.A. |
| 18 मेघालय | 1,646 | 763 | 1,615 | 502 | N.A. | 95.3 | 17.16 | 20.7 | 0.6 | N.A. |
| 19 मिझोराम | 1,965 | 1,395 | 1,942 | 233 | 7,000 | 145.2 | 13.72 | 12.1 | 0.5 | N.A. |
| 20 नागालँड | 1,533 | 870 | 1,452 | 220 | 44,583 | 195.6 | 2.13 | 24.7 | 0.8 | N.A. |
| 21 ओरिसा | 1,111 | 358 | 1,016 | 727 | 56,504 | 96.6 | 40.91 | 29.5 | 1.3 | 369 |
| 22 पंजाब | 3,995 | 734 | 3,967 | 1,069 | 62,068 | 964.3 | 173.38 | 90.9 | 2.1 | 1,902 |
| 23 राजस्थान | 1,136 | 334 | 952 | 338 | 43,754 | 133.9 | 36.86 | 36.0 | 1.9 | 663 |
| 24 सिक्कीम | 1,360 | 905 | 1,323 | N.A. | N.A. | 188.6 | 9.72 | 13.2 | 1.0 | N.A. |
| 25 तामिळनाडू | 2,766 | 434 | 2,311 | 804 | 1,07,770 | 111.1 | 141.55 | 55.0 | 1.0 | N.A. |
| 26 त्रिपुरा | 2,271 | 604 | 2,214 | 498 | 54,100 | 174.4 | 30.46 | 14.3 | 0.9 | 970 |
| 27 उत्तर प्रदेश | 2,290 | 847 | 2,097 | 353 | 58,512 | 218.4 | 130.44 | 66.4 | 0.8 | N.A. |
| 28 उत्तरांचल | 1,689 | 691 | 1,655 | N.A. | 59,765 | 183.9 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. |
| 29 पश्चिम बंगाल | 2,409 | 732 | 2,343 | 936 | 72,342 | 193.6 | 126.82 | 26.1 | 0.9 | N.A. |
| भारत* | 1,879 | 570 | 1,650 | 505 | 67,099 | 169.3 | 90.12 | 40.2 | 1.3 | 1,119 |

* केंद्रशासित प्रदेश धरून /Includes Union Territories (R) मागील वर्षाची माहिती / Previous year's data

(P) - अस्थायी /Provisional

N.A. - उपलब्ध नाही /Not available

SELECTED SOCIO-ECONOMIC INDICATORS OF STATES IN INDIA--contd.

| उद्योगातील दरडोई स्थूल उत्पादन (रुपये) per capita gross output in industries (Rs.) (P) | उद्योगातील दरडोई मूल्यवृद्धी (रुपये) Per capita value added in industries (Rs.) (P) | विजेचा दरडोई घरगुती वापर (कि.वॅ.ता.) Domestic consumption of electricity per capita (kwh.) (P) | विजेचा दरडोई औद्योगिक वापर (कि.वॅ.ता.) Industrial consumption of electricity per capita (kwh.) (P)@ | दर लाख लोकसंख्ये- मागे मोटार वाहने (संख्या) Motor vehicles per lakh of population (No.) | दर शंभर घौरस किलो- मीटर क्षेत्रामागे एकूण रस्त्यांची लांबी Total road length per hundred sq. km. of area (Km.) ** | दर लाख लोकसंख्ये- मागे रास्त भावाच्या/ शिधावाटप दुकानांची संख्या Number of fair price/ shops per lakh of population | अनुसूचित वाणिज्यिक बँका Scheduled commercial banks | | | State |
|--|--|--|---|---|--|---|--|--|--|----------------------------------|
| | | | | | | | दर लाख लोकसंख्ये- मागे बँक कार्यालयांची संख्या Number of banking offices per lakh of population (No.) | दरडोई ठेवी (रुपये) Deposits per capita (Rs.) | दरडोई दिलेले कर्ज (रुपये) Bank credit per capita (Rs.) | |
| (2602-03) (33) | (2002-03) (34) | (2002-03) (35) | (2002-03) (36) | (31-3-02) ## (37) | (31-3-99) (38) | (2001) (39) | (31-3- 2004) (40) | (31-3- 2004) (41) | (31-3- 2004) (42) | Reference year or date (1) |
| 10,742 | 1,487 | 92.25 | 98.55 | 5,670 | 65 | 53 | 6.7 | 10,799 | 7,131 | Andhra Pradesh |
| N. A. | N. A. | 31.00 | 1.49 | 2,106 | 22 | 94 | 5.9 | 8,604 | 1,493 | Arunachal Pradesh |
| 4,563 | 1,098 | 25.99 | 23.77 | 2,201 | 109 | 123 | 4.4 | 5,338 | 1,643 | Assam |
| 926 | 149 | 12.96 | 8.84 | 1,200 | 51 | 57 | 4.1 | 4,116 | 1,053 | Bihar |
| 8,908 | 2,497 | 19.49 | 195.01 | 3,576 | 51 | 31 | 5.2 | 8,430 | 2,309 | Jharkhand |
| 11,781 | 1,727 | 310.02 | 123.51 | 27,034 | 1,862 | 22 | 10.2 | 1,21,037 | 74,058 | Delhi |
| 51,669 | 10,338 | 251.06 | 495.65 | 23,890 | 264 | 37 | 22.5 | 72,233 | 15,727 | Goa |
| 35,022 | 4,346 | 86.61 | 267.17 | 11,599 | 48 | 29 | 6.9 | 15,922 | 6,897 | Gujarat |
| 24,062 | 3,500 | 108.92 | 128.12 | 9,222 | 65 | 39 | 7.2 | 13,880 | 6,648 | Haryana |
| 9,015 | 1,978 | 113.65 | 194.19 | 3,949 | 53 | 58 | 12.5 | 17,713 | 5,263 | Himachal Pradesh |
| 1,688 | 174 | 123.77 | 62.83 | 3,519 | 11 | 29 | 7.7 | 13,603 | 5,334 | Jammu & Kashmir |
| 12,085 | 2,120 | 78.96 | 120.79 | 6,782 | 79 | 39 | 8.8 | 16,974 | 10,676 | Karnataka |
| 8,285 | 1,167 | 118.53 | 92.37 | 7,210 | 382 | 44 | 10.4 | 20,297 | 9,601 | Kerala |
| 6,149 | 858 | 52.91 | 67.13 | 5,138 | 46 | 31 | 5.4 | 6,902 | 3,293 | Madhya Pradesh |
| 6,906 | 1,657 | 51.09 | 85.94 | 4,495 | 46 | 31 | 4.7 | 6,647 | 2,643 | Chhatisgarh |
| 21,869 | 3,507 | 123.29 | 185.98 | 7,507 | 81 | 51 | 6.3 | 31,854 | 25,914 | Maharashtra |
| 85 | 18 | 38.55 | 4.86 | 3,300 | 51 | 76 | 3.1 | 3,283 | 953 | Manipur |
| 1,293 | 167 | 78.43 | 119.99 | 2,828 | 41 | 155 | 7.5 | 11,099 | 4,094 | Meghalaya |
| N. A. | N. A. | 120.03 | 1.75 | 3,724 | 23 | 104 | 8.4 | 7,250 | 2,782 | Mizoram |
| 434 | 66 | 34.67 | 9.68 | 8,421 | 123 | 21 | 3.3 | 5,854 | 986 | Nagaland |
| 4166 | 628 | 66.65 | 78.09 | 3,263 | 169 | 68 | 5.9 | 5,967 | 3,237 | Orissa |
| 18,233 | 2,201 | 192.59 | 326.70 | 12,527 | 128 | 59 | 10.4 | 24,465 | 10,613 | Punjab |
| 5,655 | 822 | 51.84 | 80.87 | 5,507 | 41 | 35 | 5.6 | 6,478 | 3,708 | Rajasthan |
| N. A. | N. A. | 57.50 | 15.36 | 2,321 | 26 | 155 | 8.7 | 19,488 | 4,541 | Sikkim |
| 17,324 | 2,415 | 140.05 | 206.77 | 9,019 | 118 | 44 | 7.4 | 15,446 | 13,844 | Tamil Nadu |
| 784 | 141 | 43.63 | 14.72 | 1,771 | 148 | 36 | 5.4 | 6,978 | 1,777 | Tripura |
| 4,669 | 662 | 50.44 | 32.75 | 3,037 | 97 | 45 | 4.6 | 6,752 | 2,243 | Uttar Pradesh |
| 6,854 | 1,515 | 124.64 | 62.69 | 4,705 | 97 | 31 | 9.7 | 19,310 | 3,940 | Uttaranchal |
| 5,929 | 850 | 63.53 | 88.68 | 2,142 | 89 | 26 | 5.3 | 11,645 | 5,744 | West Bengal |
| 10,343 | 1,563 | 79.01 | 108.96 | 5,617 | 77 | 46 | 6.2 | 14,052 | 8,251 | India* |

(P) - अस्थायी /Provisional

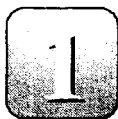
@ यात नॉनयुटीलिटीच्या स्वनिर्मितीचा समावेश आहे / This includes self generation of non-utilities

अरुणाचल प्रदेशाकरिता १९९७ चे, मणिपुर व पश्चिम बंगालकरिता २००० चे व हरियाणाकरिता २००१ चे आकडे आहेत.

Figure(s) for Arunachal Pradesh relates to 1997, for Manipur & West Bengal relate to 2000 and for Haryana relates to 2001.

** सार्वजनिक बांधकाम खाते, जिल्हा परिषदा, महानगरपालिका, नगरपरिषदा, पाटबंधारे विभाग व वन विभाग यांच्याकडील रस्त्यांचा समावेश आहे.

** This includes roads under P.W.D., Z.P., Municipal Corporations, Municipal Councils, Irrigation Department and Forest Department



EXECUTIVE SUMMARY

economic situation in the country

National Income

1.1 As per the advance estimates, the national economy is expected to grow at the rate of 6.9 per cent during 2004-05, as against an impressive growth of 8.5 per cent in 2003-04. The sectoral growth rates of GDP for the year 2004-05 are estimated to be 1.1 per cent for Primary Sector (Agriculture and allied activities), 3 per cent for Secondary Sector and 8.9 per cent for Tertiary Sector (Service). In 2003-04 at current prices, the GDP is estimated at Rs. 25,19,785 crore and the Net National Product (i.e. National Income) at Rs. 22,52,070 crore. The per capita National Income during 2003-04 is estimated at Rs.20,989, higher by about 10 per cent over the previous year.

Monsoon (June - September)

1.2 As per the forecast of the Indian Meteorological Department (IMD), rainfall for the country as a whole in the monsoon 2004 was expected to be near normal and quantitatively 90 per cent of the Long Period Average (LPA). However, the season ended with the area-weighted rainfall for the country as a whole at 81 per cent of the LPA. This deficiency was mainly due to shortage of rainfall (81 per cent of the LPA) during July, 2004 as against the expectation of 98 per cent of the LPA. The rainfall over the country during June and August turned out to be near normal. On the meteorological subdivisional basis, none of the meteorological subdivisions in the country experienced severe drought conditions at the end season (i.e. rainfall deficiency exceeding 50 per cent). However, Himachal Pradesh, West Uttar Pradesh, Punjab, West Rajasthan, Vidarbha and Mangalagiri experienced moderate drought conditions (deficiency of rainfall between 25 to 50 per cent).

Agricultural Production

1.3 Erratic monsoon rainfall in 2004 caused a substantial fall in *kharif* foodgrains production. The overall foodgrains production for the year 2004-05 is estimated at 206.4 million tonnes, nearly 6 million tonnes less than the last year's production. The oil seeds production is estimated at 24.8 million tonnes, marginally less than the earlier year's production of 25.1 million tonnes. However, the production of cotton is expected to be 17.1 million bales, more by about 24 per cent over the last year's production of 13.8 million bales. The sugarcane production is expected to fall marginally to 234.2 million tonnes during the year 2004-05 from 236.2 million tonnes during 2003-04.

Industrial Production

1.4 During 2004-05, the All India Indices of Industrial Production (Base 1993-94), for the period April-December, 2004 was 199.4. This was higher by 8.4 per cent than that for the corresponding period of the previous year. For the manufacturing sector, which accounts for a weight of 79 per cent in the Index of Industrial Production, the average index for the period April-December, 2004 increased at a better rate of 9.0 per cent, as against 7.4 per cent registered during the entire year 2003-04.

Service Sector

1.5 The service sector, which contributes about 51 per cent in GDP is expected to grow at the rate of 8.9 per cent in 2004-05 as compared to 9.1 per cent in 2003-04.

Public Finance

1.6 The fiscal deficit of the Central Government, as a proportion to GDP, is expected to decrease marginally to 4.3 per cent in 2005-06 (Budgetary Estimates) as against 4.5 per cent in 2004-05.

2004-05 (Revised Estimates). In the year 2005-06 (B.E.), the revenue deficit as a proportion to GDP is expected to remain same as in the previous year at 2.7 per cent.

Import-Export

1.7 The country's exports during first Ten months of 2004-05 were estimated at US \$ 60,754 million, showed an impressive growth of 25.6 per cent over the corresponding period of the previous year. During the same period imports were estimated at US \$ 83,442 million, which were higher by 34.7 per cent. The trade deficit for the period April, 2004 to January, 2005 was US \$ 22,688 million. The foreign currency assets with Reserve Bank of India stood at US \$ 1,23,654 million at the end of January, 2005 as against US \$ 1,07,448 million by the end of March, 2004. The average exchange rate for the period April, 2004 to January, 2005 was Rs. 45.18 per US dollar.

Balance of Payments

1.8 During the year 2004-05, the balance of payments estimates for the first half of the year (April-September) indicates that the current account has turned deficit for the first time since 2000-01. The emergence of the deficit can be attributed to a large merchandise trade deficit. Imports, fuelled by high global crude oil prices and sustained demand for non-oil imports from a buoyant domestic industry, grew rapidly by 39.0 per cent. The capital account however, recorded a healthy surplus, but was about US \$ 1.7 billion lower in size compared to that in April-September, 2003. The deficit in the current account has moderated the accumulation of reserves to around US \$ 7 billion in the first half of 2004-05, which is roughly half of the reserve accretion achieved in April-September, 2003-04.

Money Supply

1.9 On the year-on-year basis, (net of conversion of IDBI into a bank from October 11, 2004) the growth of broad money supply (M3) as on January 21, 2005, which reflects monetary developments, amounted to 13.9 per cent, almost the same as on the corresponding date of the previous year. During the year 2004-05, among the various components of money supply, the rate of expansion in currency with public till January 21, 2005 was 13.3 per cent, which was less

than that of 15.3 per cent in the corresponding period of the previous year.

Price Situation

1.10 In the current year, annual point-to-point inflation rate in terms of Wholesale Price Index (WPI) was 4.5 per cent on April 3, 2004, which shot to a peak of 8.7 per cent on August 28, 2004. However, it started decelerating since September, 2004. It stood at 5.2 per cent on January 29, 2005 significantly lower than that of 5.9 per cent recorded a year ago. However, because of the higher inflation in the early part of the year the 52 week average inflation rate as recorded on January 29, 2005, was 6.5 per cent, higher than that of 5.5 per cent registered a year ago.

1.11 During the financial year 2004-05 inflation rate based on All India Consumer Price Index for the Industrial Workers (CPI-IW) increased from 2.2 per cent in April 2004 to 4.8 per cent in September, 2004. Thereafter, it started declining and reached to 3.8 per cent in December, 2004. The inflation rate based on average CPI-IW for the period April-December, 2004 was 3.7 per cent which was more or less the same as registered during the corresponding period of the earlier year.

Economic Situation in Maharashtra

Gross State Domestic Product

1.12 As per the advance estimates, Gross State Domestic Product (GSDP) of Maharashtra at constant (1993-94) prices is expected to grow at the rate of 7.0 per cent during 2004-05. The sectoral growth rates of GSDP are expected to be (-)1.1 per cent in Primary Sector (Agriculture and allied activities), 8.1 per cent in Secondary Sector and 8.1 per cent in Tertiary Sector (Service). For the year 2003-04, the GSDP at constant (1993-94) prices for Maharashtra is estimated at Rs.1,90,151 crore as against Rs. 1,77,138 crore in 2002-03. At current prices, GSDP for 2003-04 is estimated at Rs. 3,33,145 crore as against Rs.2,95,525 crore in the previous year showing an increase of 12.7 per cent.

State Income

1.13 The preliminary estimates of the State Income (i.e. Net State Domestic Product) of Maharashtra at current prices for the year

2003-04 is Rs. 2,94,001 crore and the *per capita* State Income is Rs. 29,204. At constant 1993-94 prices, the State Income in 2003-04 is estimated at Rs. 1,65,896 crore and the *per capita* State Income at Rs. 16,479.

Public Finance

1.14 The revenue receipts of the State Government increased from Rs.12,987 crore in 1993-94 to Rs. 40,394 crore in 2004-05 (B.E.). During the same period, the total revenue expenditure has increased from Rs. 13,109 crore to Rs. 50,145 crore. The State Government debts have soared from Rs. 42,666 crore in 1999-2000 to Rs. 93,207 crore at the end of 2004-05 (B.E.) and its percentage to GSDP has increased from 17.5 per cent to 24.6 per cent during the same period. The interest payments and debt service burden on the State Government has also increased from Rs. 4,996 crore in 1999-2000 to Rs.10,320 crore in 2004-05 (B.E.) and its percentage to revenue receipts has increased from 19.8 per cent to 25.5 per cent during the same period. The revenue deficit of the State Government increased from Rs. 122 crore in 1993-94 to Rs. 9,751 crore in 2004-05 (B.E.). The fiscal deficit of the State Budget which was Rs. 2,265 crore in 1993-94, increased to Rs. 15,258 crore in 2004-05 (B.E.) and its percentage to GSDP, which was 0.3 per cent in 1993-94, increased to 4.0 per cent in 2004-05.

Monsoon

1.15 The South-West monsoon arrived in the State on 10th June, 2004, late by 3 days. Since 20th June, there was dry spell of 12 days in most of the districts and even 15 days in some districts of Vidarbha, Marathwada and the rest of Maharashtra, including Konkan, as a result some *kharif* crops were required to be resown. However, after 21st July, there was sufficient rainfall over the state. Up to 31st October, 2004, the State received 86.1 per cent of the normal rainfall. Out of 33 districts (excluding Mumbai City and Mumbai Suburban Districts) in the State, 8 districts received above normal rainfall i.e. more than 100 per cent of long-term average), 10 districts received 81 to 100 per cent rainfall, whereas 15 districts received deficient (less than 80 per cent) rainfall. Due to its uneven distribution and spread, in some of the districts of Vidarbha, Marathwada and

partly from Western Maharashtra some *kharif* crops and pulses were adversely affected. The unseasonal rains occurred in the month of January, 2005 (23rd to 31st January) in almost all parts of the state and heavy rainfall, hailstorm occurred in some parts of the Vidarbha and Marathwada regions badly affected the *rabi* and horticulture crops.

Agricultural Production

1.16 During 2004-05, the foodgrains production in the State is expected to be at 107.5 lakh tonnes, more by about 5 per cent than that in 2003-04. However, the production of cotton (lint) is expected to be around 5.08 lakh tonnes, less by about 3.1 per cent than that during the previous year. The oilseeds production is expected to increase by 2.6 per cent and would be 29.1 lakh tonnes. The sugarcane production, however is expected to be much less at 204 lakh tonnes, less by 24.5 per cent than that during the previous year.

Livestock Production

1.17 During 2004-05, the milk production in the State is estimated at 65.6 lakh tonnes which is 2.2 per cent more than the estimated production of 64.2 lakh tonnes in 2003-04. The production of eggs (in number) in 2004-05, is estimated at 346 crore showing an increase of 2.1 per cent over the production of 339 crore in 2003-04. The meat production is estimated at 2.30 lakh tonnes in 2004-05, more by 2.2 per cent than the production of 2.25 lakh tonnes in 2003-04.

1.18 During the year 2004-05, the average daily collection of milk by the Government and Co-operative Dairies in the State (excluding Greater Mumbai) would be 38.88 lakh litres, which is more by 2.7 per cent than the average daily milk collection of 37.86 lakh litres during the year 2003-04.

Fish Production

1.19 The estimated marine & inland fish catch in 2004-05 upto the end of September is 1.23 lakh tonnes & 0.70 lakh tonnes respectively. The potential of fish catch from marine area in the State has been estimated at 6.3 lakh tonnes per year. As against this, the production during 2003-04 was 4.20 lakh tonnes, 8.5 per cent more than that in 2002-03. The estimated inland fish catch in

2003-04 was 1.25 lakh tonnes, 1.6 per cent less than that during 2002-03. The approximate gross value of marine & inland fish catch taken together in the State during 2003-04 was Rs.1,553 crore.

Mineral Production

1.20 The potential mineral bearing area of the State is about 58 thousand sq. kms. (i.e. about 19 per cent of the total geographical area of the State). The total value of minerals extracted in the State during 2003-04 was at Rs. 3,132 crore, in which, the share of coal was about 83 per cent (Rs. 2,608 crore).

Industrial Production

1.21 From the available indications, it is surmised that the industrial production (manufacturing) in the State in first nine months of 2004-05 has registered a growth of about 8.2 per cent. The corresponding increase in the entire year of 2003-04 was 7.8 per cent. The net value added by all industries covered under ASI in the state during 2002-03 was Rs. 35,149 crore, which was higher by 17.6 per cent than that in the previous year.

Industrial Relations

1.22 The number of work stoppages in factories due to strikes and lockouts during 2004 was 23 and was lower than that of 27 during 2003. The number of mandays lost due to work stoppages including continuing work stoppages was 27.8 lakh during 2004, which was lower as compared to 43.5 lakh mandays lost during 2003.

Information Technology

1.23 The State Government with the help of City and Industrial Development Corporation (CIDCO) and Maharashtra Industrial Development Corporation (MIDC) is developing public Information Technology (IT) parks in different areas of the State. Accordingly, 27 Government/public IT parks and 90 private IT parks are being developed. The e-governance policy is aimed at providing quality services to citizens, improving efficiency in delivery of services, increasing revenue of the State and bringing greater transparency in the administration. Accordingly, citizen facility centers under the name 'SETU' have already been set up at

25 districts and 273 taluka places, through which 83 oftenly required certificates are issued to the public on demand.

New Investment Proposals

1.24 Since adoption of liberalisation policy, of the total investment proposed in the country, till the end of October, 2004, the total 11,967 industrial projects with an investment of Rs. 2,65,411 crore and an employment potential of about 20.47 lakh have been sanctioned by the Government of India to set up the projects in the State. Out of these, 5,536 projects involving an investment of Rs. 88,334 crore have already started their production and generated an employment of about 5.95 lakh.

Foreign Direct Investment

1.25 Since adoption of liberalisation policy, till the end of August, 2004 under Foreign Direct Investment (FDI), 3,655 projects with an investment of Rs. 52,092 crore have been approved by the Government of India for setting up industries in the State. Of these, 1,303 projects (36 per cent) with an investment of Rs. 32,020 crore (61 per cent) have already been commissioned. Of the proposed total investment under FDI in the country, Maharashtra continued to be at the top position. The FDI projects approved are mainly in the field of services (24 per cent), IT (21 per cent), Infrastructure (12 per cent), Automobile (10 per cent), Engineering (5 per cent), Power & Fuel (5 per cent) and Basic Metals (5 per cent).

Industrial Sickness

1.26 Since its inception up to October 2004, the Board for Industrial & Financial Reconstruction (BIFR) had received 79 references of sick units from the State. Of which, 129 cases were sanctioned for rehabilitation, 95 cases were recommended to be wound up, 107 cases were rejected and 5 cases were rehabilitated through worker co-operative scheme. The remaining 43 cases are still pending. In the case of State units, out of the 5,070 sick units, 509 units have received sickness certificates from the State Government upto December, 2004, and 3 units are under consideration, which enabled these units to obtain rescheduling of the outstanding dues of sales tax and electricity charges.

rice Situation

1.27 The price rise in the State during 2004-05 was almost same as that at All-India level. The Consumer Price Index Numbers compiled separately for the urban and rural areas of the State reveal that, during April to December, 2004 the State experienced a moderate rise in prices. During this period, the average urban CPI has shown a rise of 2.6 per cent, whereas for the rural area the rise was 4.6 per cent. Thus, the price rise in the State remained moderate for the sixth year in succession.

Public Distribution System

1.28 Under Public Distribution System (PDS), the number of authorised ration/fair price shops in the State upto February, 2004 were 50,160. The number of supply cards distributed upto February, 2004 in various types i.e. yellow, saffron and white were 73.40 lakh, 147.21 lakh and 8.86 lakh respectively. During 2004-05, up to December, 2004 under Targeted Public Distribution System, the off-take of rice and wheat (out of the quantity allotted) by BPL (Below Poverty Line) families was 76 per cent and 82 per cent respectively. Similarly, under Antyodaya Anna Yojana up to December, 2004, off-take of rice and wheat was 85 per cent and 91 per cent respectively. In the case of APL (Above Poverty Line) families, the off-take of the total allotment is only one per cent, indicating APL families moved out of the PDS network.

Electricity Generation

1.29 The installed capacity of electricity generation in Maharashtra during 2003-04 was 15,092 MW. During 2004-05, there was no capacity addition till the end of November, 2004. During 2004-05, the generation of electricity in the State upto the end of December, 2004 was 50,693 million kWh, which was higher by 3.5 per cent than that in the corresponding period of 2003-04. During 2004-05 upto December, the peak demand of 14,506 MW was recorded and was met with 3,039 MW load shedding. The State is facing power deficit during the entire period of the day, except the night off-peak hours (from 22.00 hrs. to 06.00 hrs.) and therefore, the load shedding has become a regular feature. Transmission and Distribution losses in the total electricity distributed were

38.2 per cent during 2003-04. The Government of Maharashtra is providing free electricity to agriculture pumpsets with effect from 1st July, 2004. For that purpose, the State Government has released subsidy of Rs. 810 crore to MSEB and Rs. 20.50 crore to Mula Pravara Electric co-operative society Ltd. as a recoupment cost of the electricity consumed for the period of six months from 1st July to 31st December, 2004. As on 31st March, 2004, the cumulative number of agricultural pumpsets energised stood at 22.74 lakh. As per the Electricity Act, 2003 of the Central Government, the MSEB is required to be restructured by 10th June, 2005. As per restructuring proposal the MSEB is to be divided in four companies i.e. 1) Holding Company 2) Generation Company (GENCO) 3) State Transmission Utility Company (STU) and 4) Distribution Company (DISCOM).

Transport and Communications

1.30 The total road length maintained by PWD and ZPs in the State by the end of March, 2004 was 2.27 lakh kms. The total length of railway routes in the State by the end of March, 2004 was 5,497 kms., which was 8.7 per cent of the total rail-route of the country (63,221 kms.). The total number of motor vehicles on road in the State as on 1st January, 2005 was 96.56 lakh. The number of Post Offices in the State at the end of March, 2004 were 12,638, of which 11,309 were in rural areas and 1,329 in urban areas. There were 63.54 lakh telephone connections in the State as on 31st March, 2004. At the end of December, 2004, there were 3.74 crore cell phones in India, out of which 66.16 lakhs (17.7 per cent) were in Maharashtra (including Mumbai circle).

Population

1.31 As per the population census 2001, Maharashtra's population was 9.69 crore. The Scheduled Castes population of the State was 98.82 lakh and the Scheduled Tribes population was 85.77 lakh. Maharashtra is the second largest State in India in respect of population after Uttar Pradesh. With 42.4 per cent urban population, Maharashtra was second most urbanised State among the major states of India, after Tamil Nadu (44.0 per cent). The sex ratio in the State declined from 934 in 1991 to all time low of 922 in 2001. The child sex ratio in the State (for age

group 0-6 years) declined to 913 from 945 in 1991. The density of population of the State was 315 persons per square kilometer. An attempt was made in 2001 population census to count the disabled population, by types of disability. Accordingly, 1.6 per cent population of the State have various disabilities, which is much less than that of India (2.1 per cent). The Birth rates, Death rates and infant mortality rates for Maharashtra (based on Sample Registration Scheme) for the year 2002 were 20.3, 7.3 & 45.0 respectively. The projected population of the State as on 1st March, 2005 is about 10.27 crore.

Employment

1.32.1 There is a continuous declining trend in factory employment in last few years. According to factory statistics, the average daily factory employment in the State at the end of December, 2003 was 11.7 lakh, which was 0.8 per cent less than that at the end of December, 2002.

1.32.2 As per the data collected under Employment Market Information Programme (EMI), the total employment as on 31st March, 2004 in public and private sectors together was 35.6 lakh as against 35.9 lakh during the previous year.

1.32.3 During 2004-05, up to the end of December, 2004 employment provided under the Employment Guarantee Scheme (EGS) was 19.4 crore mandays as against 18.5 crore mandays provided during the previous year. In addition to this, till the end of December, 2004, under Sampoorna Gramin Rojgar Yojana, employment of 3.9 crore mandays was provided as against 6.3 crore mandays provided during the entire year 2003-04.

1.32.4 During 2004-05, from April to December, 2004, the number of persons newly registered in Employment and Self-Employment Guidance Centres was 6.6 lakh as compared with 6.4 lakh in the corresponding period of 2003-04. The actual placements effected during 2004-05 from April to December, 2004 were 11 thousand as against 13.5 thousand placements effected during the corresponding period of the previous year. The number of persons on live register of Employment and Self-Employment Guidance Centres as at the end of December, 2004 was 41.1 lakh.

Education

1.33 Education is universally acknowledged as one of the key input contributing to the process of national and individual development. During 2004-05 there were 67,964 primary, 14,391 secondary, 3,693 higher secondary schools and 63 junior colleges in the State. The number of enrolments in primary, secondary, higher secondary schools and junior colleges in the state during 2004-05 were 117.47 lakh, 54.6 lakh, 43.31 lakh and 7.02 lakh respectively. The state government has taken a decision to provide free text books to all the students studying in standard Ist to Xth in all government, Non-government recognised & aided and local bodies schools, excluding all 'English Medium Schools' for 2004-05 academic year.

Primary Agricultural Credit Societies

1.34 The primary agricultural credit societies advanced loans of Rs.3,769 crore during 2003-04. The amount of loan outstanding at the end of 2003-04 was Rs.7,389 crore. The amount of loans recovered during 2003-04 was Rs. 3,429 crore, which was 57 per cent of the amount due for recovery and was less than that of the previous year. The loans overdue as on 31st March, 2004 were Rs.2,561 crore.

Scheduled Commercial Banks

1.35 As on 30th, September, 2004, the total number of banking offices (branches) of Scheduled Commercial Banks in the State was 6,332, which accounted for 9.4 per cent of the total scheduled commercial banking offices (67,221) in the country. The aggregate deposits of the scheduled commercial banks in the State, at the end of 30th September, 2004 were Rs.3,29,330 crore, which were higher by 19 per cent than those in the previous year. During the same period, gross credits of these banks increased impressively by 24 per cent to arrive at Rs.2,83,591 crore. The Credit-Deposit Ratio (CDR) of all the scheduled commercial banks in the State at the end of September, 2004 was 86 per cent. In respect of both bank deposits and gross bank credits of scheduled commercial banks in the country as on 30th September, 2004 Maharashtra stands first amongst the states in India.

Small Savings

1.36 For the financial year 2003-04, the net collection from small savings was Rs.11,033 crore as against the target of Rs.7,704 crore. For the financial year 2004-05, the target of Rs.11,171 crore is set for collection from small savings as against, it is expected that Rs.12,000 crore will be collected by the end of March, 2005.

Capital Market

1.37 During the current year, up to 30th November, 2004 in entire country, Rs.17,034 crore were raised through Initial Public Offer (IPO's), of which, the share of companies from Maharashtra was Rs.7,186 crore (42 per cent). During 2003-04, the total turnover of the stock exchanges of Maharashtra was about 8.9 per cent of the total turnover in the entire country.

Mutual Fund

1.38 Mutual Fund is a fast growing industry, regulated by SEBI. As on 31st December, 2004, there were 29 mutual funds registered in India with the total assets of the 429 schemes amounting to Rs.1,50,537 crore, of which, 26 (90 per cent) mutual funds were registered in Maharashtra with net amount mobilized to the tune of Rs.1,48,434 crore (99 per cent).

Special Study

1.39 In the 60th round of National Sample Survey (January-June, 2004), information on 'Morbidity and Health Care' was collected. Some important results of this survey are listed below.

(i) Of the total hospitalisation cases, one-fourth were hospitalised in public hospital/dispensary in both rural and urban areas.

(ii) The facility of free hospitalisation was availed by about 14 per cent cases in rural areas and 11 per cent cases in urban areas.

(iii) In both rural and urban areas, government hospital was preferred by mothers as a place for child birth. However, still 3 out of every 10 deliveries were taken place at home in rural areas, as against only one in urban areas.

1.40 Some important results based on quick tabulation of first two sub-rounds of 61st round of National Sample Survey (July, 2004-June, 2005) are listed below. These results are based on the information collected on 'Household Consumer Expenditure' and 'Employment & Unemployment'.

(i) Average monthly per capita household consumer expenditure was Rs.608 in rural areas and Rs. 1,239 in urban areas.

(ii) The percentage of expenditure on food and non-food items to the total expenditure in the rural areas was about 49 per cent and 51 per cent respectively. Whereas this percentage was 39 and 61 in urban areas.

(iii) About three-fourth of male population in rural areas was found to be engaged in agriculture either as a self-employed or casual labourer.

(iv) In urban areas, about 50 per cent employed females in the age group 15-59 years were regular wage salaried employee.

(v) The literacy rate estimated for the population aged 7 years and above was about 80 per cent for the state. It was 88 per cent for males and 71 per cent for females.

(vi) Even after implementation of 'Sarva Shiksha Abhiyan' programme about 7 per cent children in the age group 6 to 14 years in rural areas and 4 per cent in urban areas were not attending any school.



ECONOMIC OUTLOOK AND POLICY IMPERATIVES

State Economy

2.1 Maharashtra, the most industrialized State in the country contributes about 20 per cent to the country's industrial output. After experiencing rapid and sustained growth till the mid 1990s, the State economy remained vibrant with ups and downs. After a sharp setback of negative growth of 3.4 per cent registered in 2000-01, the economy of the State thereafter is riling on the recovery path by registering impressive growth rate of 7 per cent and above for the recent 3 years.

2.2 For the Xth Five Year Plan (2002 – 07), the target set for GSDP annual growth rate for Maharashtra is 8 per cent. The annual average growth rate of GSDP for the State for the first three years of Xth Five Year Plan (2002 – 03 to 2004-05) is expected to be 7.2 per cent. Despite of the unsatisfactory monsoon over the last successive years, affecting agricultural growth adversely, the growth of the State economy is driven by manufacturing and service sectors. The effective implementation of economic reform policies by the State Government have resulted in achieving higher growth rate of the State economy. The State has achieved this impressive growth rate in spite of the lack-lustre performance in agriculture sector during last 4 years. If the pace of growth in secondary and tertiary sectors remains the same and with favourable monsoon, the State may achieve commendable growth of about 8 to 8.5 per cent during next two years and possibly may reach the targetted growth as envisaged by the Planning Commission during Xth Five Year Plan.

2.3 In order to achieve the higher economy growth rate, broad based growth across the sectors

is essential. For that, there has to be more and more emphasis on boosting industrial growth with required institutional, infrastructural facilities and legislative reforms on large scale, incentives for establishing industries and making available finances on easy terms. The potential of agriculture needs to be exploited fullest with increasing productivity of traditional crops and diversifying to commercial agriculture, development of dry land farming, etc. Since the infrastructure development acts as a booster for the economic and social development, the Government may work as a facilitator of services ensuring that the infrastructural facilities are actually delivered at reasonable prices.

Public Finance

2.4 The fiscal deficit of the State, after witnessing improvement in the early 1990s, has started worsening thereafter and is posing threat to the stability and growth of the economy. The fiscal deficit of the State Government was 2.0 per cent of GSDP in 1993-94, which reached to 4.1 per cent in 1999-2000. It slightly came down at 3.6 per cent in 2000-01 and again, thereafter, it has been witnessing a rising trend to reach 5.5 per cent of GSDP in 2003-04. The revenue deficit of the State as proportion to GSDP has increased from 0.1 per cent in 1993-94 to 2.7 per cent in 2003-04. Deteriorating revenue mobilization and rising unproductive expenditure have resulted in growing fiscal and revenue deficit of the State. The major factors responsible for the budgetary imbalance are growing interest burdens, huge off-budget borrowings, poor recovery from public services and large investment projects and subsidies under Cotton Monopoly Procurement Scheme & other services. The diminishing kitty of the devolution of taxes

by the Central Government has also contributed to the deterioration of fiscal imbalance of the State.

2.5 The most growing concern is about the indebtedness of the State Government. The overall debt of the State Government is expected to rise to a record level of Rs.1,10,211 crore in 2004-05. The debt to GSDP and interest payment to GSDP ratios for the State are rising continuously. As such, the replacement of high cost debts of the State Government with less expensive borrowings through the Centre's Debt Swap Scheme should be the priority of the State Government.

2.6 In order to achieve fiscal sustainability in the medium term, the State Government has accorded Maharashtra Medium Fiscal Reform Programme 2000-01 to 2004-05 and has reached Memorandum of Understanding with Ministry of Finance, Government of India in October, 2002. Enhanced resource mobilization efforts, on both, own tax and non-tax revenues, expenditure restructuring and interest cost minimizing debt policy are the major areas needs to be effectively monitored by the State Government in order to achieve a sustainable fiscal regime in the medium term. The State is required to fulfil the necessary condition of annual reduction of 5 per cent in the ratio of revenue expenditure to revenue receipts, in order to become eligible for the Special Structural Adjustment Loan (SAL) assistance from the World Bank. The Fiscal Responsibility Bill that has already been introduced in the State Assembly needs to be passed and implemented without loss of time.

Population

2.7 The annual growth rate of the population of the State hovers about two per cent, which is higher than that for India. As per 2001 Census, 59 per cent of the State population is in the age group of 15-59 years, the State has ample scope to accelerate the economic growth with involvement of this age profile group to maximum extent in the economic activities. As the life expectancy at birth is increasing, the population of aged persons (60+) has also increased from 5.2 per cent in 1961 to 8.7 per

cent in 2001. The changing family structures and withering away of the traditional joint family system have led to the rising proportion of elderly persons in need of care and support. There is need for programmes and policies for ensuring physical and socio-economic security for this vulnerable section of the society. The State Government needs to address through food and income security programmes and by ensuring that the senior citizens get the priority in medical care and comforts.

Urbanisation

2.8 Maharashtra is the most urbanised State in the country with nearly 42 per cent of the State's population living in urban areas. Though the population in urban areas of the State grew largely through natural increase, the rural to urban as well the inter-state migrations to urban Maharashtra are the serious threats for unwieldy and enormous growth of urban population.

2.9 The rapid urban growth has resulted in the cities undergoing painful structural adjustments. The cities are becoming junction-points for transfer of goods, finance, capital, people and switch-gears of information. The cities have failed to provide their citizens the basic amenities like safe drinking water, sanitation, sewage disposal, drainage, solid waste management, housing, roads, public transport and clean air. These problems need to be addressed on priority basis. In order to make our cities efficient and liveable, concerted efforts are required to support the urban growth, strengthen urban civic management, plan and design the infrastructural services in efficient and cost effective manner by adopting modern technology to improve the environment.

2.10 The involvement of private sector to a large extent in certain physical and social infrastructure, keeping in view the huge deficits in services, fund requirements, technology and management needs to be considered. As huge inputs of resources are required for urban development, there is a dire need to tap the potential of existing resources from various sectors of economy and to improve the efficiency of tax and non-tax revenues. It is also essential to

develop a psychology among the habitants to pay for the services which are provided to them.

Prices

2.11 The inflation rate based on Wholesale Price Index which was around 3.5 per cent during the two years 2001-03, remained moderate at 5.5 per cent during 2003-04. During April-January of the current financial year, the average inflation reached at 6.7 per cent. The effect of delayed monsoon, steady upward move of crude oil prices in the international market and increase in steel prices were the factors responsible for the price rise. The increase of 10 per cent in the average index of the major group 'Fuel, power, light and lubricants' was mainly due to increase in indices of subgroups 'coal mining and mineral oil' which caused an increase in the inflation rate.

Public Distribution System

2.12 The below poverty line, tribal and rural population depend very much on public distribution system. However, the gap between Central Government's allotment of foodgrains (rice and wheat) and the State's offtake shows that there is scope for improvement in the public distribution system. The low offtake of foodgrains, specially under targetted public distribution system may be due to the allotment of foodgrain of 35 kg. as a kind component of wages to the people in targetted groups through various programmes like Employment Guarantee Scheme.

Industry and Infrastructure

2.13 Maharashtra, the leading industrial State, occupies a prominent position as far as the manufacturing sector in the country is considered. The manufacturing sector of the State contributes to about 20 per cent in the State Income and its share in the value of output in the industrial sector of the country is also around 20 per cent. The industrial growth in the State showed wide fluctuations and remained subdued in the late 90's and early 2000. However, the manufacturing sector is performing with relatively higher growth rate since 2002-03. The State has considerably good infrastructure, when it comes to factors like telecom infrastructure and international connectivity. The technology is getting upgraded

rapidly and market competition has become fierce. Hence, investments need to be made on continuous basis and infrastructure need to be upgraded with the time, keeping the pace with rising demand.

2.14 There is need to review the current policy on industrial growth and its dispersal. The State has to take aggressive measures to provide efficient and cost effective infrastructure, skilled human resources, stable environment and good governance, which are the prerequisites for creating a proper investment climate for sustainable industrial growth.

Agriculture and Irrigation

2.15 Agriculture in the State is heavily dependent on monsoon as barely 16 per cent of the gross cropped area is irrigated. It is less than half of the national average of 38.7 per cent of gross irrigated area. In spite of the huge investments in the irrigation projects during the last decade, the gross area under irrigation as a proportion to gross cropped area in the State has almost remained at the same level.

2.16 Nearly one-third area of the State falls under rain-shadow region, where the rains are scanty and erratic. The soil, topography and climate in the State are not much favourable to agriculture. The per hectare yield rates of crops are in general much below the national average.

2.17 About 58 per cent of the State population resides in rural areas, where major workforce is still dependent on agriculture as primary source of their livelihood. However, due to unfavourable monsoon, the growth rate of agriculture sector was negative for the last four successive years.

2.18 In order to increase the productivity in this sector, it is essential for the State Government to formulate its policies and priorities to create an environment suitable to dry land farming and to boost the agricultural growth. Frequent monsoon failures have focussed renewed attention on how best to utilise the scarce water resources. Appropriate strategies need to be formulated to reduce demand for water. Implementation of Comprehensive Watershed development programmes effectively, prioritising the irrigation

projects which are in near completion phase and reuse of the municipal waste water, may enhance the supply of water. Priority must be given to bridge the gap between irrigation potential created and actual area under irrigation. The State must use water judiciously, capitalise horticulture and floriculture sector, further promote allied activities, strengthen rural infrastructure and encourage private sector participation and investment in the agriculture sector and promote rural non-farm employment.

2.19 The Gram Swachhata Abhiyan, a scheme named after Sant Gadge Maharaj has turned out a grand success in creating remarkable awareness among the rural masses about the health care and keeping environment clean, and has demonstrated the importance of public participation on a large scale. A venture of similar type, if adopted with public participation in the areas of watershed development and water conservation, it will help to change the scenario of dry land farming in the State, boosting the agriculture production and solving the drinking water problem.

Electricity

2.20 Electricity is one of the crucial input in the process of economic development. As the State is highly industrialised and urbanised, the demand for electricity in the State is very high and increasing continuously. However, the installed capacity in the State has remained at the same level during the recent past. This has aggravated the gap between demand and supply of the electricity in the State. The load shedding has become routine practice in the State and the quality of power supply remains poor with voltage drops and frequent fluctuations. The gap between peak demand and supply was 2,042 MW during 2003-04.

2.21 In the total installed capacity and generation of the electricity in the State, the MSEB accounts for 75 per cent each. The MSEB continued to suffer very high transmission and distribution losses of about 38 per cent, which are extremely high when compared with the international average of developed countries.

Sparsely distributed loads over a large area, particularly in the remote rural areas, inadequate investment in the transmission system and substantial pilferage of power, etc. may be the reasons for high T&D losses. Though the agriculture sector consumes 25 per cent of electricity, it contributes only 10.7 per cent in revenue receipts of MSEB. The policy decision taken by the State Government to give free electricity to farmers has resulted in increase of demand of electricity in the agriculture sector and aggravated the problem of supply of electricity further. The financial health of MSEB has been plagued by poor revenue realisation, constant subsidization in the past, high T&D losses and substantial pilferage of power, etc. In order to improve the health of power sector in the State, the efforts for improvement in technology, equipments, operation and maintenance, material etc. is a need of hour. The effective implementation of Maharashtra Power Reform Bill, which envisages to promote and encourage efficiency, autonomy and accountability in decision making, anti-theft legislation, metering all consumers, reduce technical and commercial losses will certainly help the State to overcome the power crisis.

Roads

2.22 The total road length maintained by PWD and ZP in the State at the end of March, 2004 was 2.27 lakh km. Of the total inhabited villages in the State, 93.9 per cent villages were connected by all-weather roads, while 4.2 per cent villages were connected by fair-weather roads. Over the last two decades, the number of vehicles on road has increased substantially by more than eight times. This has resulted in deteriorating quality of roads, which cannot meet the needs of efficient and fast moving transportation. The road infrastructure in the State is highly inadequate in comparison with the number of motor vehicles. The good quality and reliable roads are essential for the growth of State's industrial, commercial, financial activities and to enable the masses to use the public road transport at economical prices. It saves fuel, time and minimises losses due to accidents. The

Government has already sought private participation in development and maintenance of roads in the State through the Maharashtra State Road Development Corporation. However, more and more private participation needs to be encouraged for qualitative improvement in the road infrastructure.

Education

2.23 Education is a key component of human capital and economic development. As the thrust towards human development intensifies, education will continue to be one of the essential mechanism. Over the decades, the State has registered impressive growth in literacy consistently, maximum rise of 12.0 percentage points was observed in the last decade. The rising level of literacy can be attributed to the widespread provision of basic education, expansion of school enrolment, as well as improvement in the economic condition of the masses. The number of primary schools and secondary schools have increased substantially. Though the quantitative expansion of schooling opportunities have been impressive, quality remains a question. The education sector is besieged by numerous problems such as inadequate school infrastructure, presence of single-teacher schools, high rate of teacher absenteeism particularly in rural areas, large scale teacher vacancies, inadequate equipments, high drop-out rates, poor rate of success in the school board exam, etc.

2.24 A serious high priority push is needed for a time-bound and rapid universalisation of literacy and of elementary education, to ensure that every child in the State is in school and is learning. When all adults are literate and all children are in school, education, the basic foundation of human development will become strong and sustainable. This can be achieved with the higher commitment of resources and a vision with right strategies.

Public Health

2.25 On two counts Maharashtra has done fairly well, though there is room for improvement - raising life expectancy at birth and reducing infant mortality rate (IMR). However, the overall

health sector in the State is weaker, not having kept pace with its general economic attainments. The urban areas are well provided with health infrastructure, while the rural areas lag behind. There is wide gap, qualitatively and quantitatively, in the health care infrastructure in the urban and rural areas. The infrastructural facilities are poorest in the hilly remote rural and tribal areas. The rural infrastructure of PHC's and sub-centres are as per defined norms but they are not adequately supported by inputs needed to run proper healthcare system.

2.26 The reduction in the public health investment and expenditure has resulted in slowing down the healthcare performance in the State. The strategies for making healthcare a fundamental right, enacting social legislation on common standards in the private medical sector, increasing budgetary allocations for health and initiating a scheme for village based healthcare provider need to be implemented on priority basis with vigour, which will strengthen the public health sector and will benefit to the people, especially the poor and deprived section of the population.

Employment

2.27 The factory employment in the State has been declining continuously over the last few years. The closure of factories and voluntary retirement schemes implemented by the public and private sector undertakings have affected the employment scenario. Even though the dependency on agriculture sector for employment is reducing, still 55 per cent of the workforce in the State is dependent on agriculture for subsistence. It is, therefore, essential to promote non-farm employment. Allied activities, which provides supplementary and complementary employment needs to be promoted. The Government is providing several fiscal and monetary incentives for small scale industries. However, these industries suffer from a lack of modern technology, skilled labour, inadequate institutional finance and an inefficient marketing network. It is therefore imperative that, programmes of skill development, vocational training and technical education are adopted on

a large scale in order to generate employment opportunities. Though the employment in service is rising, there is a constraint to improve growth in employment in IT sector, as it mostly depends on skilled manpower, while the growth in tourism and tourism-related services, such as hotels, holds a large potential for employment generation. A rapid growth in industrial sector is necessary not only to boost the overall growth of the economy, but also, to generate gainful employment for existing unemployed.

Poverty

2.28 Eradication of poverty has remained an integral component of the State's programme for economic development. The continuous decline in the poverty ratio from 53.2 per cent in 1973-74 to 25.0 per cent in 1999-2000, is the success of anti-poverty strategy adopted by the State Government. The rural poverty in the State has decreased much faster than the urban poverty. The rate of reduction of poverty in the State remained almost on par with that of the country, despite the State per capita income being one and a half times higher than the national average. It is, therefore, essential for the State to give top priority to rural industrialisation and diversification, accelerate employment programmes and implement PDS properly and sincerely with more attention to the poor. Considering the relatively higher annual average GSDP growth

rate, it seems that, if the pace of growth remains the same or gets further boost in the secondary and tertiary sector and with favourable monsoon during the next two years, it is likely that, the State may possibly achieve the target set by the Planning Commission for reduction of the poverty ratio to 16.2 per cent by the end of Xth Five Year Plan (2006-07).

Summing up

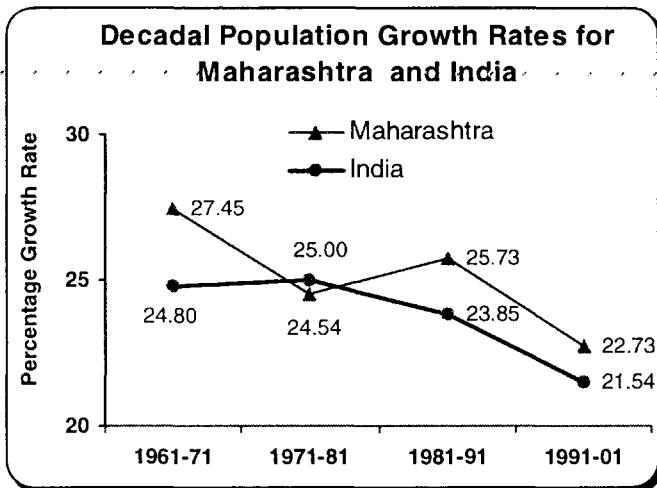
2.29 The State economy is on recovery path after 2001-02 with an average annual growth rate of 7.2 per cent, despite the unsatisfactory monsoon in the recent years, which adversely affected agricultural growth. The State economy has earlier achieved higher trajectory growth and has a potential to achieve higher growth of the order of 8.0 per cent and above. The target set for the State during Xth Five Year Plan can be achieved by devising strategies for sustained industrial & service sector growth in excess of 10 per cent per year. For that, there is an imperative need to address the issues such as infrastructure development, regulatory and tax reforms and fiscal consolidation. The participation of private sector in infrastructure and agriculture sector needs to be promoted in the State. Keeping the pace of reforms in continuance the State may emerge as a leading economy in the country in the next few years.



POPULATION

3.1 Maharashtra is the second largest state in India in respect of population after Uttar Pradesh. The Population of Maharashtra as per Census, 2001, was 9.69 crore, which contributes to 9.4 per cent of the total population (102.86 crore) of India. The projected population of the State as on 1st March, 2005 is about 10.27 crore.

3.2 During the decade 1991-2001, the population growth in the state was 22.7 per cent (annual compound growth rate 2.07 per cent), less as compared to that of 25.7 per cent in the earlier decade. The decadal population growth rate of the State during the last four decades remained higher than that for India, except 1971-81 decade. In-migration is one of the major factors of high population growth rate of the State.



3.3 The Migration figures for 2001 Population Census are not yet available. However, one can estimate net migration to the State by using difference between actual and natural growth rates of the population in the State. The natural growth of the population in the State considering the difference between Crude Birth Rate (CBR) and Crude Death Rate (CDR) based on Sample Registration Scheme (SRS) for the period 1991 to 2000 works out to

1.7 per cent per annum, indicating about 4 lakh net migrants in the State per year during 1991-2001. Thus, it appears that migration

Decadal population growth rates of some bigger States

| | | | |
|----------------|---------|----------------|---------|
| Andhra Pradesh | - 14.59 | Maharashtra | - 22.73 |
| Assam | - 18.92 | Bihar | - 28.62 |
| Gujrat | - 22.66 | Haryana | - 28.43 |
| Karnataka | - 17.51 | Madhya Pradesh | - 24.26 |
| Kerala | - 9.43 | Rajasthan | - 28.41 |
| Orissa | - 16.25 | Uttar Pradesh | - 25.86 |
| Punjab | - 20.10 | | |
| Tamil Nadu | - 11.72 | | |
| West Bengal | - 17.77 | | |

Population features at a glance Maharashtra vs India

(Census 2001)

| Item | Maharashtra | India |
|---|-------------|--------|
| Population (In lakh) | | |
| Total Persons | 969 | 10,286 |
| Male | 504 | 5,329 |
| Female | 465 | 4,967 |
| Rural Persons | 558 | 7,421 |
| Male | 285 | 3,810 |
| Female | 273 | 3,609 |
| Urban Persons | 411 | 2,865 |
| Male | 219 | 1,500 |
| Female | 192 | 1,354 |
| SC Population (%) | 10.2 | 16.5 |
| ST Population (%) | 8.9 | 8.9 |
| Decadal percentage growth (1991-2001) | 22.7 | 21.9 |
| Percentage of urban population | 42.4 | 27.8 |
| Sex-ratio (Females per 1000 males) | 922 | 930 |
| Area (in lakh Sq. km.) | 3.08 | 32.8 |
| Population Density (Per Sq. km.) | 315 | 310 |
| Literacy percentage (for the population of 7 years & above) | 76.9 | 64.8 |

stitutes about 23 per cent in the population growth of the State during 1991-2001. In other words, for every five persons added to the population during the decade, one of them was due to migration.

Population Density

3.4 As per Population Census 2001, the density of population (No. of persons per sq. km.) in Maharashtra was 315, which is slightly higher than that of India (313). As per 1991 Population Census the density of population in the State was 257. Over the decade 1991-2001, there was an addition of 58 persons per sq.km.

3.5 It is observed that the disparity in the density of population across the districts of the State was wide. The highest population density was found in Mumbai city district (21,190) and the lowest population density was in Gadchiroli district (67). There were eight districts in the State having density more than the State average (315) and 27 districts having density less than the State average.

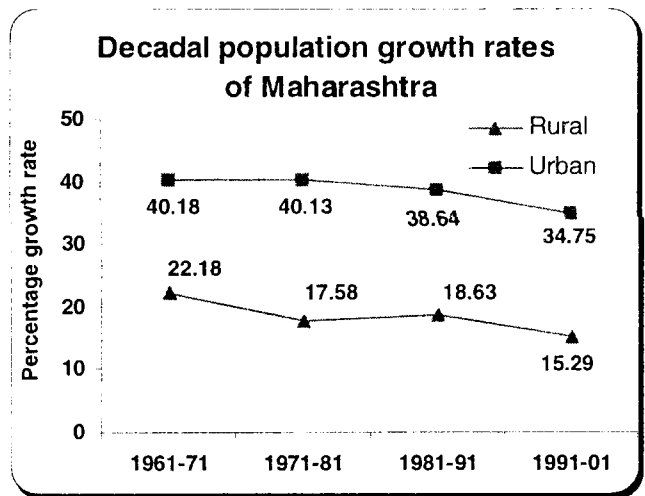
Urban Population

3.6 As per 2001 Population Census, 42.4 per cent of the State's population was living in urban areas. This percentage was much higher than that of all India percentage (27.8). The proportion of urban population in the State increased from 38.7 per cent in 1991 to 42.4 per cent in 2001. In respect of the proportion of urban population, the State stands second amongst the major States after Tamil Nadu (44.0 per cent).

Rural Population

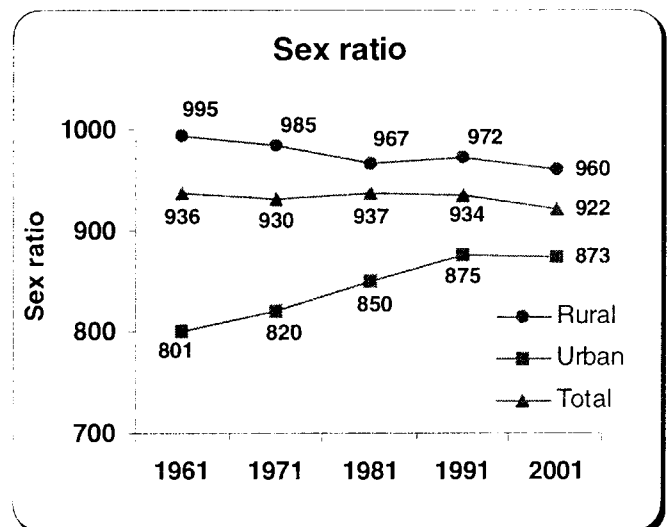
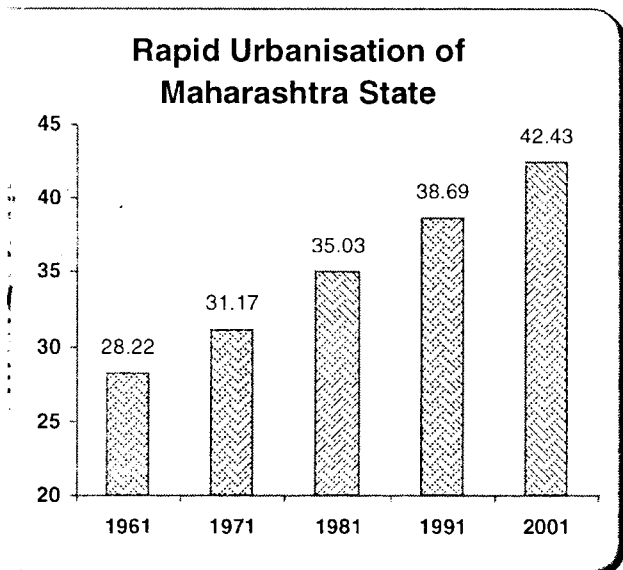
3.7 As per the Population Census 2001, the rural population of the State living in 41,095 villages, was 57.6 per cent of the total population. During the decade 1991-2001, the rural population of the State increased by 15.3 per cent, which was less than the corresponding All India percentage increase (18.1). Also it was less than the decadal growth rate of the State during 1981-91 (18.6).

3.8 The decadal population growth rates for rural and urban areas in the State indicate that urban population growth rate is almost double or more than that in rural areas. The growth trend also indicates a decreasing trend for last four decades except for 1981-91 decade.



Sex ratio

3.9 The Census 2001 results revealed that in Maharashtra State, sex ratio of females per thousand males declined to all time low at 922 from



934 in 1991. The decline hurts in the context of its improvement at the national level and is a cause of concern. The sex ratios in rural areas of the state were remained higher for all the time than that for the urban areas.

Child Sex ratio

3.10 The sex ratio in the age group 0-6 is an important indicator of the future trends of the sex composition in the State. The Population Census 2001 results revealed that the sex ratio in the State for age-group 0-6 years declined to 913 from 945 in 1991. This is in contrast to the Kerala state which had shown an improvement in it from 958 to 963. At national level also the sex ratio in the age group 0-6 years was higher (927) than that for the Maharashtra (913). It is suspected that in a society with a strong preference for a male child, and access to sex-test has perhaps added to the sex selective abortions.

Literacy

3.11 The Census 2001 results indicate that the Maharashtra State has registered an impressive growth in literacy among major States in India. The literacy rate of population aged seven years and above has improved from 64.9 per cent in 1991 to 76.9 per cent in 2001. This rise of 12.0 percentage points was the maximum rise during the last four decades. In the case of females, the rise in literacy was more prominent and was about 14.7 percentage points. Still there is a wide gap between male and female literacy rates and State has to make concerted efforts to increase pace of female literacy in the State. Maharashtra has always been remained much above the national average in literacy performance.

3.12 Among the major States in India, as per 2001 Census, Maharashtra ranked second in respect of literacy rate after Kerala (90.9 per cent). The literacy rates for males and females in the rural and urban areas are given in Table No 3.1.

Table No. 3.1
Literacy rates in Maharashtra

| Area | (per cent) | | |
|--------------------|------------|-------|---------|
| | Persons | Males | Females |
| Census 2001 | | | |
| Total | 76.9 | 86.0 | 67.0 |
| Rural | 70.4 | 81.9 | 58.4 |
| Urban | 85.5 | 91.0 | 79.1 |
| Census 1991 | | | |
| Total | 64.9 | 76.6 | 52.3 |
| Rural | 55.5 | 69.7 | 41.0 |
| Urban | 79.2 | 86.4 | 70.9 |

3.13 There is no doubt that the State has registered an impressive growth in literacy, but still there were 1.92 crore illiterate persons in the State, of which about 69 per cent were females.

States having literacy rates above national average (Census 2001)

| | | |
|--------------------|---|-------------|
| Kerala | - | 90.9 |
| Maharashtra | - | 76.9 |
| Tamil Nadu | - | 73.5 |
| Punjab | - | 69.7 |
| Gujarat | - | 69.1 |
| Karnataka | - | 66.6 |
| All India | - | 64.8 |

Scheduled Castes Population

3.14 The Scheduled Castes population of the State as per 2001 Census was 98.82 lakh (50.6 lakh males and 48.19 lakh females), of which 61.7 per cent were living in rural areas. The proportion of Scheduled Castes population to total population in the State was 10.2 per cent. The sex ratio in respect of the Scheduled Castes population was 952, which was higher than that for the State as a whole.

Scheduled Tribes Population

3.15 The Scheduled Tribes population of the State as per 2001 Census was 85.77 lakh (43.7 lakh males and 42.29 lakh females) of which 87.3 per cent were living in rural areas. The proportion of Scheduled Tribes population to total population in the State was 8.9 per cent. The sex ratio in respect of the Scheduled Tribes population was 973, which was much higher than that for the State as a whole.

3.16 Some important features of SC and ST population in Maharashtra state, based on population census 2001, are given in Table No. 3.2.

Table No. 3.2
SC & ST Population in Maharashtra

| Item | Total | SC | ST |
|-------------------|--------|-------|-------|
| Population ('000) | | | |
| Persons | 96,879 | 9,882 | 8,577 |
| Male | 50,401 | 5,063 | 4,348 |
| Female | 46,478 | 4,819 | 4,229 |
| Sex-Ratio | 922 | 952 | 973 |

Population by Religion

3.17 Every decennial census attempts to provide picture of the religious persuasions of the people. The religionwise composition of the population in the State is almost similar to that of all-India. The percentage distribution of population for two successive censuses 1991 and 2001 by major religious communities in the State and India is shown in Table No.3.3.

Table No. 3.3

Percentage distribution of population by Religion

| Religion | Percentage to total population | | | |
|---------------------|--------------------------------|-------|-------|-------|
| | Maharashtra | | India | |
| | 1991 | 2001 | 1991* | 2001 |
| Hindus | 81.1 | 80.4 | 82.0 | 80.5 |
| Muslims | 9.7 | 10.6 | 12.1 | 13.4 |
| Christians | 1.1 | 1.1 | 2.3 | 2.3 |
| Buddhists | 0.2 | 0.2 | 1.9 | 1.9 |
| Jains | 6.4 | 6.1 | 0.8 | 0.8 |
| Others | 1.2 | 1.3 | 0.4 | 0.4 |
| Others ^e | 0.3 | 0.3 | 0.5 | 0.7 |
| Total | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 |

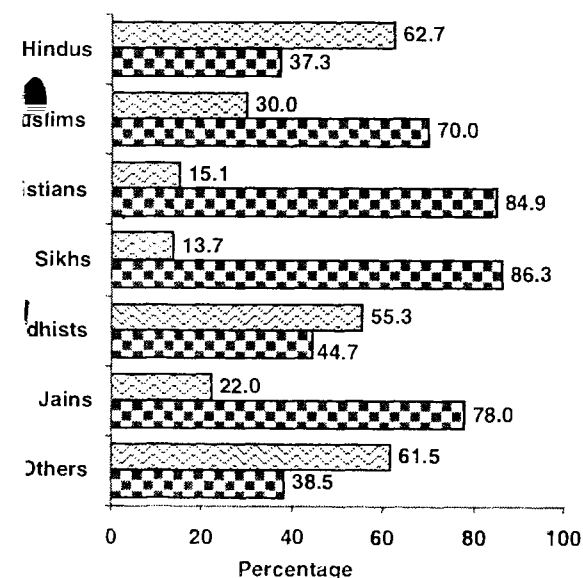
@ Including religion not stated.

* Excluding Jammu & Kashmir

3.18 As per population Census 2001, amongst Hindus, about 37.3 percent population was living

Religion wise Percentages of Population by Residential Status

■ Urban ■ Rural



in urban areas of the State. Whilst most of the Christian & Sikh Population (84.9 & 86.3 percent respectively) was living in urban areas. Data reveals that Sex Ratio among Christian community was highest (993), while that for Sikh community was lowest (829) when compared to the State level sex ratio (922).

Population by Disability

3.19 An attempt was made in 2001 population census to count the disabled population by types of disability. Accordingly, 1.6 per cent population of the State were having various disabilities, much less than that of India (2.1 per cent). The incidence of disability in males was much higher than that in females. In the disabled population, 59.5 percent were males and 40.5 percent were females. The percentage of disabled population by type of disability is given in Table No.3.4.

Table No.3.4

Percent distribution of disabled population by type of disability (Census 2001)

| Type of Disability | Maharashtra | India |
|--------------------|-----------------|------------------|
| In Seeing | 37.0 | 48.5 |
| In Speech | 7.2 | 7.5 |
| In Hearing | 5.9 | 5.8 |
| In Movement | 36.3 | 27.9 |
| Mental | 13.6 | 10.3 |
| Total | 100.0 (15.7) | 100.0 (219.1) |

Note: Figures in bracket denote total disabled population in lakh

Population by Age Group

3.20 The age group wise percentage distribution of population in the State as per 1991 and 2001 censuses is shown in Table No. 3.5.

3.21 The Census data revealed that there was a sizable reduction in the proportion of population, in percentage term, for the age groups 0 to 6 years and 7 to 14 years. Whereas the proportion of population in the age group 15 to 49 years, which is the age group of working force, is increased by 2 and half percentage points. This gives indication that there is increase in the work force of the state during the last decade. The aged population (60+ age) is also increased from 6.98 per cent in 1991 to 8.73 per cent in 2001.

Table No. 3.5

**Age group wise percentage distribution
of the population and Sex Ratio**

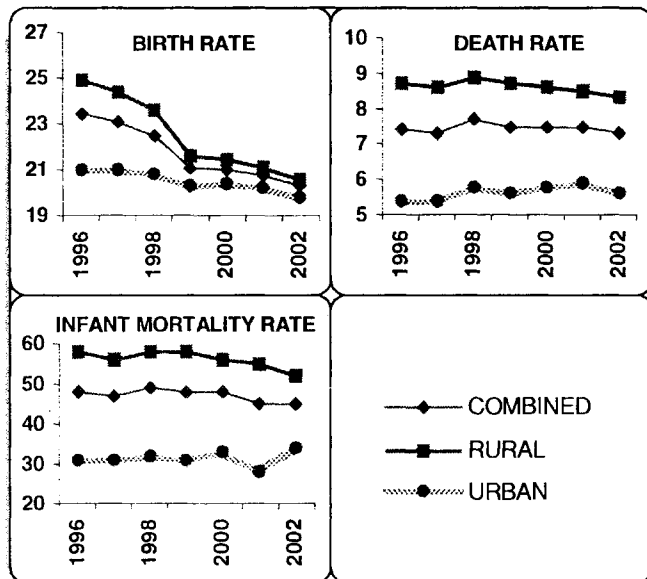
| Age Group (in Years) | Population Percentage | | Sex Ratio | |
|-------------------------|-----------------------|--------------|------------|------------|
| | 1991 | 2001 | 1991 | 2001 |
| 0-6 | 17.10 | 14.11 | 945 | 913 |
| 7-14 | 18.50 | 17.99 | 933 | 918 |
| 15-49 | 50.36 | 52.73 | 922 | 893 |
| 50-59 | 6.65 | 6.32 | 914 | 922 |
| 60+ | 6.98 | 8.73 | 1018 | 1150 |
| Age Not Stated | 0.40 | 0.12 | 831 | 797 |
| Total | 100.0 | 100.0 | 934 | 922 |
| | (789.21) | (968.79) | | |

Note: Figures in bracket denote total population in lakh

3.22 The age specific Sex Ratios indicate that there was drastic reduction in the Sex Ratio for the age group 0 to 6 years, which is a cause of concern, since this age group of population is going to project the structural scenario of the population of the state. It also indicates that there was discrimination towards female in the population composition at lower age groups. This may be due to sex selective abortions and maternal mortality.

Birth rate, Death rate and Infant Mortality rate

3.23 The birth rates, death rates and infant mortality rates based on Sample Registration Scheme for the period 1971 - 2002 are available



for different states and India. The birth rate, death rates and infant mortality rates for Maharashtra for the year 2002 were 20.3, 7.3 and 45.0 respectively. These rates were much lower than that for India, which were 25.9, 8.1, 65.0 respectively. These rates for Maharashtra and India are given in Table No. 3 of part II.

3.23.1 The trends of Birth Rate, for rural and urban areas based on SRS data are showing convergence with rural birth rates declining more sharply.

New Population Policy

3.24 Maharashtra State has always remained on the fore-front in implementing various national programmes. The State Government is implementing various family welfare programmes which has resulted in declining in crude birth rate, crude death rate and infant mortality rate. The State Government has implemented family planning programmes effectively in the State. In spite of this the population of the State is multiplied by 1.5 times between 1961 to 2001. As a population control measure, the State Government has declared its population policy. The goals set in the new population policy are given in Table No. 3.6

Table No. 3.6

**Targets set under new population policy
for Maharashtra**

| Indicator | Achievement By 2002 | Target By 2002 |
|----------------------------|------------------------|-------------------|
| Crude Birth rate* | 20.3 | 18 |
| Crude Death rate * | 7.3 | 7 |
| Total fertility rate # | 2.5 | 1.8 |
| Infant mortality rate @ | 45 | 18 |
| Neo-natal mortality rate @ | 33 | 18 |

* Crude birth rate and crude death rate are per thousand population.

@ Infant mortality rate and Neo-natal mortality rate per thousand live births.

per 1000 females in reproductive age group of 15 to 49 years. T.F.R. and N.M.R. refers to year 2000



PUBLIC FINANCE

State Finances

4.1 An existence of a sound financial system is a paramount importance for any State economy to sustain and prosper. The Maharashtra had, for long, occupied pride of place among Indian States in fiscal management. However, the State in the recent years is under severe fiscal strain. The factors responsible for high fiscal deficit include burgeoning interest payments, ever increasing pension liabilities and high growth in administrative expenditure. As a per cent of GDP, State's revenue deficit, fiscal deficit and debt stood at 2.7 per cent, 5.5 per cent and 25.0 per cent respectively by the end of 2003-04.

4.2 Comparing the revenue situation of the State vis-a-vis its expenditure and linked to its growth performance revealed that revenue expenditure continued to rise at an average rate of 11.8 per cent per annum between 1999-2000 and 2003-04, whereas the total revenue receipts, however rose at lower rate of 10.1 per cent per annum during the same period. Consequently, the revenue deficit in 2003-04 increased to 2.2 times than that in 1999-2000. A closer look at the disaggregated revenue receipts shows that there was the sharpest decline in revenue grants from the centre. The annual growth in the central grants fell from 5.8 per cent in 1999-2000 to 4.8 per cent in 2002-03. The growth in tax devolutions from the Centre too fell during the same period. The ratio of own State revenue to total revenue receipts of Maharashtra, during 2001 to 2003 was at about 40 per cent.

4.3 The State's own tax revenues are more susceptible to the fluctuations in growth of industry and service sectors. The industrial slowdown is a double whammy. It dampens own tax revenue as well as reduces the share in central

taxes because, central taxes too depend on the performance of industry. Hence, attainment of sustained industrial growth is a major factor for solution to the State's fiscal problems.

4.4 Due to increase in the revenue deficit, borrowings are used to finance the revenue expenditure. The large amount of borrowings have been used for the expenditure where clearly no returns are expected. As a result, the debt stock of the state is cumulatively rising and by the end of 2004-05, it is expected to rise at the level of Rs.1,10,211 crore. In order to reduce the debt burden, Maharashtra Govt. has requested the centre for the permission to replace the old high cost debts with less expensive borrowings through the Centre's Debt Swap Scheme.

4.5 Attempt in achieving the fiscal correction without any institutional arrangement, including statutory backing may not always be successful. Adoption of fiscal policy rules built under fiscal responsibility legislation commits the government to reduce the deficit or debt reduction path and provides thereby for greater fiscal discipline. The legislative framework of fiscal policy would, however, need to capture the critical aspects of fiscal consolidation, budget management and supporting institutional arrangements. The State Government, therefore, needs to pass the 'Fiscal Responsibility Bill' that has already been introduced in the State Assembly.

Financial Position 2004-05

4.6 The State Budget 2004-05 shows a revenue deficit of Rs. 9,751 crore and a capital surplus of Rs.8,607 crore. Thus the budgetary position for 2004-05 reveals the deficit of Rs. 1,144 crore. Taking into account the earlier year's deficit of Rs.950 crore and the unbudgetted plan outlay of Rs.5,209 crore, the budget for the year 2004-05 reveals the total deficit of Rs.7,303 crore. The details are given in Table No. 4.1.

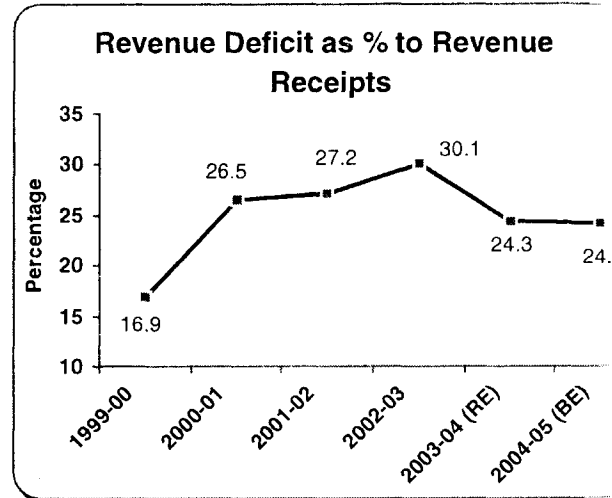
Table No. 4.1
Overall Financial Position for 2004-05
(Rs. crore)

| Item | Receipts | Expenditure/ Disbursements | Surplus(+) Deficit(-) |
|--|-------------|-------------------------------|--------------------------|
| (A) Revenue Account | 40,393.80 | 50,144.88 | (-9,751.08) |
| (B) Capital Account (1 to 8) | 76,981.45 | 68,374.56 | 8,606.89 |
| 1) Capital expenditure outside Revenue Account | 0.00 | 3,699.88 | (-3,699.88) |
| 2) Internal Debt of the State Government | 22,774.98 | 14,139.02 | 8,635.96 |
| 3) Loans & Advances from the Central Government | 1,405.27 | 1,558.72 | (-153.45) |
| 4) Loans & Advances given by State Government | 422.54 | 1,729.87 | (-1,307.33) |
| 5) Interstate Settlement | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 6) Appropriation to the Contingency Fund | 450.00 | 450.00 | 0.00 |
| 7) Contingency Fund | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 8) Public Account | 51,928.66 | 46,797.07 | 5,131.59 |
| (C) Financial Position (A+ B) | 1,17,375.25 | 1,18,519.44 | (-1,144.19) |
| 1) Opening surplus/ Deficit | | | (-949.96) |
| 2) Unbudgetted plan outlay | | | (-5,209.20) |
| 3) The Overall financial position for 2004-05 | | | (-7,303.35) |

Overview

4.7 Though the revenue deficit, in an absolute number, shows an increasing trend over the last couple of years, its percentage to GSDP is showing decreasing trend in recent few years. The revenue deficit of Rs. 122 crore (0.1 per cent of GSDP) in 1993-94 increased to Rs. 7,834 crore (3.3 per cent of GSDP) in 2000-01. Afterwards, it came down to 3.1 per cent and 3.2 per cent of GSDP in 2001-02 and 2002-03 respectively. The revenue deficit is a measure, which reflects the excess of current expenditure over current receipts. As per Budget Estimates for the year 2004-05 the revenue deficit for the State is estimated at 2.6 per cent (Rs. 9,751 crore) of GSDP. The revenue deficit has remained at fairly high level in the recent years. However, as a percentage to GSDP it has shown the declining trend since 2002-03.

4.8 Conceptually, the fiscal deficit is a measure for the extent to which a government is spending beyond its means. In mathematical term, it is the difference between the total government expenditure and a sum of total revenue receipts, recovery of loans and other receipts. The fiscal deficit of the State as per the revised estimates 2003-04, was 5.5 per cent



(Rs. 18,460 crore) of GSDP. The fiscal deficit the State as percent of GSDP is increasing continuously and was at 5.0 per cent in 2002-03 as compared to 2.0 per cent (Rs. 2,265 crore) in 1993-94. As per the budget estimate 2004-05 the fiscal deficit of the State, as percent of GSDP is expected to be (Rs. 15,258 crore) lower at 4.0 per cent. The details are given in Table No. 4.2

Table No. 4.2
Trends in parameters of State Budget deficit
(Rs. crore)

| Year | Revenue Deficit | Primary Deficit | Fiscal Deficit |
|-------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| 1993-94 | 122 (0.1) | 755 (0.7) | 2,265 (2.0) |
| 2000-01 | 7,834 (3.3) | 3,351 (1.4) | 8,574 (3.6) |
| 2001-02 | 8,189 (3.1) | 4,162 (1.6) | 10,591 (4.0) |
| 2002-03 | 9,371 (3.2) | 7,595 (2.6) | 14,886 (5.0) |
| 2003-04(RE) | 9,037 (2.7) | 9,758 (2.9) | 18,460 (5.5) |
| 2004-05(BE) | 9,751 (2.6) | 4,938 (1.3) | 15,258 (4.0) |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates
Figures in brackets indicate percentage to GSDP

4.9 The primary deficit, is the fiscal deficit net of interest payments and debt servicing. The debt service provisions are used for appropriation for reduction or avoidance of debt. The primary deficit of the State is also increasing continuously from 1993-94 in terms of absolute figures and percentage to GSDP. As per budget estimates 2004-05, the primary deficit

ected to decrease (1.3 per cent of GSDP) to 4,938 crore .

Gross Fiscal Deficit

4.10 The gross fiscal deficit consists of three parts (i) Revenue Deficit, (ii) Capital Expenditure outside the Revenue Account and (iii) Net Loans & Advances given by the state government. The gross fiscal deficit of the State is continuously increasing over the last few years, however, it is budgeted at Rs.14,758 crore (3.9 per cent of GSDP) in 2004-05. The significantly high proportion of the gross fiscal deficit has been originated from the revenue deficit. The share of revenue deficit in the gross fiscal deficit is expected 56.1 per cent in 2004-05. In an absolute term the gross fiscal deficit of the State is high, however, Statewise comparison as per cent of GSDP indicates that the Maharashtra is in a better position than many other States. The details are given in Table No.4.3.

| Statewise Gross Fiscal Deficit for 2003-04 | | |
|--|---------------|------------|
| State | Rs. crore | % to GSDP |
| Uttar Pradesh | 19,803 | 9.0 |
| Orissa | 4,219 | 8.2 |
| Rajasthan | 7,415 | 7.6 |
| West Bengal | 12,384 | 6.9 |
| Bihar | 4,107 | 6.9 |
| Punjab | 5,108 | 6.7 |
| Gujarat | 9,457 | 5.9 |
| Maharashtra | 19,477 | 5.9 |
| Karnataka | 6,033 | 4.9 |
| Andhra Pradesh | 7,338 | 4.3 |
| Madhya Pradesh | 4,000 | 4.3 |
| Tamil Nadu | 6,515 | 3.8 |
| Kerala | 3,307 | 3.3 |

Table No. 4.3

Gross Fiscal Deficit

| Item | (Rs. crore) | | | |
|---|----------------------|----------------------|-----------------|-----------------|
| | 2001-02 (Actuals) | 2002-03 (Actuals) | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
| Revenue deficit | 8,189 | 9,371 | 9,037 | 9,751 |
| Capital Expenditure outside the Revenue Account | 2,948 | 3,684 | 9,687 | 3,700 |
| Net Loans & Advances given by State Government | (-) 239 | 1,235 | 753 | 1,307 |
| Total (1+2+3) | 10,898 | 14,290 | 19,477 | 14,758 |
| % to GSDP | (4.1) | (4.8) | (5.9) | (3.9) |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Tax Policy

4.11 Over the last five years, the tax proposals of the State Government have revolved around the philosophy that moderate tax rates, not only improve the competitiveness of manufacturing by reducing costs but also encourages the growth in consumption by reducing prices. This growth, in turn generates employment and increase in revenue receipts. The tax proposals are outlined with this approach and it will lead to sustain the growth of State economy along with growth in revenue collection.

Revenue Receipts

4.12 The total revenue receipts are classified into two parts viz. (1) Tax Revenue and (2) Non-tax Revenue. The total revenue receipts, as per revised estimates, increased by 19.5 per cent to Rs. 37,159 crore in 2003-04 over the previous year. The same is budgeted to rise by 8.7 per cent to Rs. 40,394 crore (10.7 per cent of GSDP) in 2004-05. Such percentage for the year 2003-04 was 11.2. The share of tax revenue in total revenue receipts was 78.3 per cent in 2003-04 and is expected to be 79.5 per cent in the budget year 2004-05. The details are given in Table No. 4.4.

Table No. 4.4

Revenue Receipts of Maharashtra State (Rs. crore)

| Year | Tax revenue | Non-Tax revenue | Total revenue receipts | Percentage to GSDP |
|-------------|-------------|-----------------|------------------------|--------------------|
| 1993-94 | 9,238 | 3,749 | 12,987 | 11.5 |
| 2000-01 | 22,508 | 7,059 | 29,567 | 12.4 |
| 2001-02 | 23,756 | 6,337 | 30,093 | 11.3 |
| 2002-03 | 25,079 | 6,024 | 31,103 | 10.5 |
| 2003-04(RE) | 29,111 | 8,048 | 37,159 | 11.2 |
| 2004-05(BE) | 32,106 | 8,288 | 40,394 | 10.7 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Tax Revenue

4.13 The State's total tax revenue consists of two parts viz. (1) State's Own Tax Revenue and (2) State's share in Central Taxes. The total tax revenue which was Rs. 25,079 crore (8.5 per cent of GSDP) in 2002-03 increased to Rs.29,111 crore (8.7 per cent of GSDP) in 2003-04 and is expected to be Rs. 32,106 crore (8.5 per cent of GSDP) in the budget year 2004-05. The details are given in Table No.4.5.

Table No. 4.5
Tax Revenue of Maharashtra State

| (Rs. crore) | | | | |
|-------------|-------------------------|------------------------|-------------------|--------------------|
| Year | State's own tax revenue | Share in Central taxes | Total tax revenue | Percentage to GSDP |
| 1993-94 | 7,696 | 1,542 | 9,238 | 8.2 |
| 2000-01 | 19,727 | 2,781 | 22,508 | 9.4 |
| 2001-02 | 21,304 | 2,452 | 23,756 | 8.9 |
| 2002-03 | 22,814 | 2,265 | 25,079 | 8.5 |
| 2003-04(RE) | 26,074 | 3,037 | 29,111 | 8.7 |
| 2004-05(BE) | 28,462 | 3,644 | 32,106 | 8.5 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Current Revenue Receipts

4.14 As per the data made available, on tax revenue collection from April to December, 2004, it is observed that Sales Tax receipts are increased by 21.8 per cent, Stamps & Registration fees by 23.5 per cent, Taxes on vehicles by 12.7 per cent, Taxes on goods & passengers by 16.3 per cent, Other taxes & duties on commodities and services by 14.1 per cent and Land revenue by 10.3 per cent than the corresponding receipts in the previous year. It is estimated that the State may surpass the target of tax collection as estimated in the budget. The details are given in Table No. 4.6.

Table No. 4.6

Tax Revenue Collection from April to December 2004
(Rs. crore)

| Item | April - December, 2003 | April - December, 2004 | % Increase over previous year |
|-----------------------------------|------------------------|------------------------|-------------------------------|
| 1) Sales Tax | 10,888.97 | 13267.27 | 21.8 |
| 2) Stamps & Reg. fees | 2,397.01 | 2959.94 | 23.5 |
| 3) Taxes on Vehicles | 750.43 | 845.74 | 12.7 |
| 4) Taxes on goods and passengers | 89.57 | 104.21 | 16.3 |
| 5) Land Revenue | 162.19 | 178.96 | 10.3 |
| 6) Taxes & duties on comm. & ser. | 365.42 | 416.80 | 14.1 |

State's Own Tax Revenue

4.15 The State's Own Tax Revenue plays an important role in State's total tax revenue. It has contributed to total tax revenue by 89.6 per cent in 2003-04 and is expected to contribute with 88.7 per cent share during 2004-05. The Maharashtra State is earning the highest

revenue from Sales Tax followed by the Stamp & Registration fees and State Excise duties. The Sales Tax Revenue has contributed 59.4 per cent and 59.3 per cent share in State's Own Tax Revenue in 2003-04 and 2004-05 respectively. The incidence of taxation (i.e. percentage ratio of own tax revenue to GSDP) in the State is 7.8 per cent. Among the major states, Karnataka has the highest incidence of taxation (10.2 per cent) and the Andhra Pradesh, Tamil Nadu, Kerala and Punjab have higher incidence of taxation than Maharashtra. The details are given in Table No. 4.7.

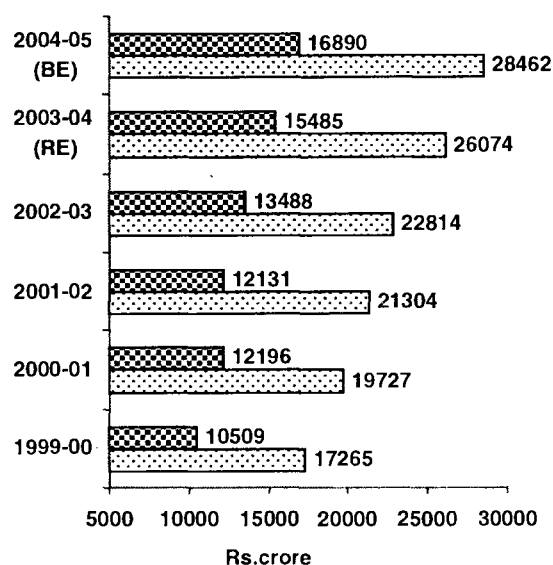
Table No. 4.7
Own Tax Revenue of Maharashtra State
(Rs. crore)

| Item | 2002-03 (Actual) | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
|---|------------------|---------------|---------------|
| 1) Sales Tax | 13,488 | 15,485 | 16,890 |
| 2) Stamps & Reg. fees | 2,823 | 3,100 | 3,375 |
| 3) State Excise Duties | 1,939 | 2,300 | 2,600 |
| 4) Electricity Duties | 1,149 | 1,280 | 1,290 |
| 5) Other taxes on Income and Expenditure | 1,032 | 1,020 | 1,100 |
| 6) Taxes on Vehicles | 941 | 1,025 | 1,155 |
| 7) Other taxes and duties on comm. & ser. | 811 | 861 | 963 |
| 8) Taxes on goods and passengers | 245 | 665 | 710 |
| 9) Land Revenue | 386 | 338 | 379 |
| 10) Taxes on agri. income | - | - | - |
| Total (1 to 10) | 22,814 | 26,074 | 28,462 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

State's Own-Tax Revenue and Sales Tax revenue of Maharashtra

Own-Tax Revenue Sales Tax Revenue



State's Own Tax Revenue for 2003-04

(Rs. crore)

| State | State's Own Tax Revenue | Percentage to GSDP |
|--------------------|-------------------------|--------------------|
| Karnataka | 12,588 | 10.2 |
| Andhra Pradesh | 16,062 | 9.4 |
| Tamil Nadu | 15,833 | 9.3 |
| Kerala | 8,684 | 8.7 |
| Punjab | 6,336 | 8.3 |
| Maharashtra | 26,074 | 7.8 |
| Madhya Pradesh | 7,027 | 7.6 |
| Rajasthan | 7,258 | 7.5 |
| Uttar Pradesh | 14,539 | 6.6 |
| Gujarat | 10,100 | 6.3 |
| Orissa | 3,028 | 5.9 |
| Bihar | 3,409 | 5.7 |
| West Bengal | 8,707 | 4.9 |

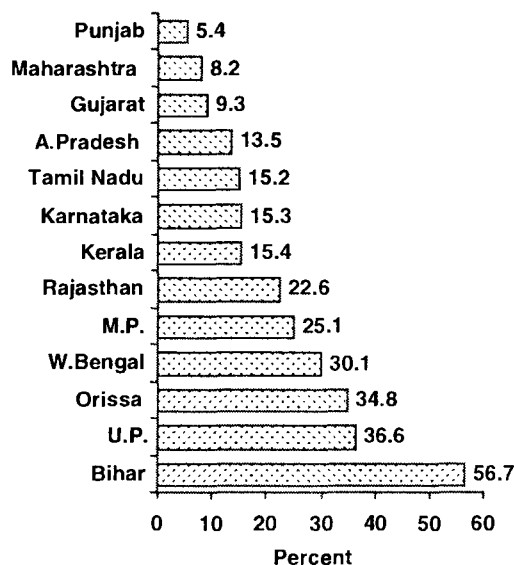
State's Sales Tax Revenue for 2003-04

| State | Sales Tax Revenue (Rs. crore) | % to Revenue Receipts |
|--------------------|-------------------------------|-----------------------|
| Kerala | 6,418 | 50.5 |
| Tamil Nadu | 10,476 | 46.2 |
| Maharashtra | 15,485 | 41.7 |
| Gujarat | 6,500 | 34.7 |
| Karnataka | 6,701 | 33.8 |
| Andhra Pradesh | 9,741 | 33.3 |
| West Bengal | 4,983 | 29.0 |
| Orissa | 1,767 | 29.0 |
| Punjab | 3,575 | 26.4 |
| Rajasthan | 3,970 | 25.7 |
| Uttar Pradesh | 8,138 | 24.4 |
| Madhya Pradesh | 3,340 | 21.1 |
| Bihar | 1,995 | 15.3 |

which all the States will receive 30.5 per cent share in Central taxes which is higher by one percentage point than the earlier commission's recommendations. The Maharashtra's share in Central Taxes as per TFC's Report is fixed at 4.997 per cent and the State will get Rs. 30,663.19 crore as a share from Central Taxes. In addition to this, Maharashtra will also get the grants-in-aid of Rs. 5,531.06 crore.

Share in Central Taxes for 2003-04

| State | Share in Central Tax (Rs. crore) | % to Revenue Receipts |
|--------------------|----------------------------------|-----------------------|
| Bihar | 7,392 | 56.7 |
| Uttar Pradesh | 12,207 | 36.6 |
| Orissa | 3,431 | 34.8 |
| West Bengal | 5,177 | 30.1 |
| Madhya Pradesh | 3,976 | 25.1 |
| Rajasthan | 3,491 | 22.6 |
| Kerala | 1,950 | 15.4 |
| Karnataka | 3,045 | 15.3 |
| Tamil Nadu | 3,435 | 15.2 |
| Andhra Pradesh | 3,946 | 13.5 |
| Gujarat | 1,740 | 9.3 |
| Maharashtra | 3,037 | 8.2 |
| Punjab | 728 | 5.4 |

Share in Central Taxes as % of Revenue Receipts for 2003-04**Central Tax Devolution to Maharashtra**

4.16 The Maharashtra's share in Central evolution of taxes has been coming down steeply over the years. The share of Central Tax which was 15.97 per cent in Second Finance Commission period (1957 to 1962) declined to 6.126 per cent in Tenth Finance Commission period (1995-2000). The Eleventh Finance Commission further reduced it to 4.632 per cent and in that effect the State has to suffer a loss of Rs. 5,600 crore during the award period (2000 to 2005). The various central taxes of Rs. 40,000 crore are collected from Mumbai alone every year and only 4.63 per cent of its share is returned back to the State. This position highlights the need for larger claims on central resources. The Twelfth Finance Commission (TFC) has submitted its report in December, 2004 and the Central Government has accepted all the recommendations in toto, under

Resources from Centre

4.17 The aggregate resource flow from the Central Government to Maharashtra Government is fluctuating and was Rs. 10,470 crore, Rs. 4,733

crore and Rs.8,771 crore for the years 2001-02, 2002-03 and 2003-04 respectively. This flow is expected to come down slightly to Rs. 8,597 crore for the budget year 2004-05. The details are given in Table No. 4.8.

Table No. 4.8

Transfer of Resources from Centre

(Rs. crore)

| Item | 2001-02 (Actuals) | 2002-03 (Actuals) | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
|---------------------------|----------------------|----------------------|-----------------|-----------------|
| 1) Share in Central Taxes | 2,452 | 2,265 | 3,037 | 3,644 |
| 2) Central Grants | 1,681 | 1,506 | 4,273 | 3,548 |
| 3) Central Loans | 6,337 | 962 | 1,461 | 1,405 |
| Total(1 to 3) | 10,470 | 4,733 | 8,771 | 8,597 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Non-Tax Revenue

4.18 The receipts from Non-Tax Revenue consist of four items viz. (1) Interest Receipts, (2) Dividends and Profits, (3) Central Grants and (4) Other Non-Tax Revenue, such as the receipts from fees, fines and penalties, etc. The receipts from non-tax revenue were Rs. 6,024 crore, Rs. 8,048 crore and Rs. 8,288 crore for the year 2002-03, 2003-04 and 2004-05 respectively. The major portion in total non tax revenue is recorded by other non tax revenue, such as the receipts from fees, fines and penalties. It contributed 39.5 per cent and 50.6 per cent share in total non tax revenue in 2003-04 and 2004-05 respectively. The details are given in Table No. 4.9

Table No. 4.9

Non-Tax Revenue of Maharashtra State

(Rs. crore)

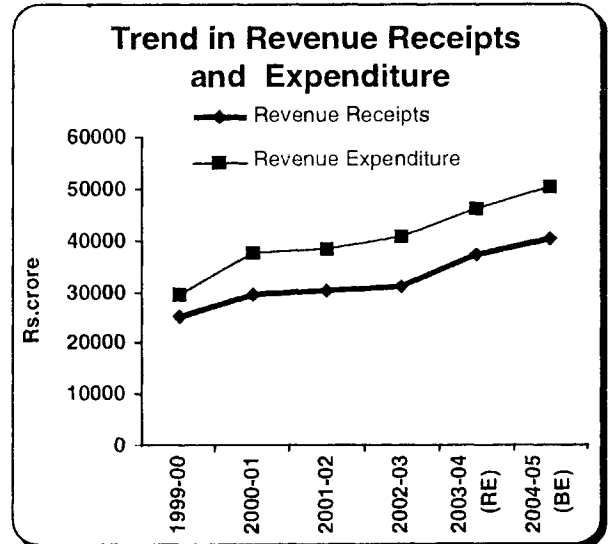
| Item | 2002-03 Actuals | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
|------------------------------|--------------------|-----------------|-----------------|
| (1) Interest Receipts | 1,777 | 595 | 545 |
| (2) Dividends & Profits | 1 | 2 | 2 |
| (3) Central Grants | 1,506 | 4,273 | 3,548 |
| (4) Other Non-Tax Revenue | 2,740 | 3,178 | 4,193 |
| Total (1 to 4) | 6,024 | 8,048 | 8,288 |
| % to Revenue Receipts | 19.4 | 21.7 | 20.5 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Revenue Expenditure

4.19 The Revenue expenditure consists of two parts; viz. (1) Development Expenditure and (2) Non-Development Expenditure. The Development Expenditure is classified into (a) Social Services (b) Economic Services and (c) Grant-in-aids and contributions to Local

Bodies and Panchayat Raj institutions. The major portion (about 63 to 68 per cent) of the development expenditure is incurred on Social Services during the last three years 2002-03, 2003-04 and 2004-05. The Non-Development Expenditure is classified into (a) General



Services and (b) Interest Payments and Debt Services. The major portion (about 58 to 61 per cent) of the non-development expenditure is incurred on General Services during the last three years. The total Revenue Expenditure which was Rs. 40,474 crore in 2002-03 increased to Rs.46,196 crore (14.1 per cent increase over previous year) in 2003-04 and further it is expected to increase to Rs.50,145 crore in 2004-05. The drinking water problem in drought-hit areas, loss making cotton purchase scheme and free electricity supply to farmer are the current major issues affecting the revenue expenditure of the State. The details are given in Table No. 4.10.

Table No. 4.10

Revenue Expenditure of Maharashtra State

(Rs. crore)

| Item | 2002-03 Actuals | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
|--|--------------------|-----------------|-----------------|
| (I) Development Expenditure (a+b+c) | 22,528 | 25,315 | 23,937 |
| a) Social services | 14,218 | 16,802 | 16,376 |
| b) Economic services | 7,636 | 7,419 | 6,905 |
| c) Grant-in-aids to local bodies & P.R. Institutions | 674 | 1,094 | 656 |
| (II) Non-Development Expenditure (a+b) | 17,946 | 20,881 | 26,208 |
| a) General services | 10,660 | 12,179 | 15,888 |
| b) Interest payments & Debt services | 7,286 | 8,702 | 10,320 |
| Total Revenue Expenditure (I + II) | 40,474 | 46,196 | 50,145 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

Capital Receipts and Expenditure

4.20 The capital receipts consist of three parts viz. i) Recovery of loans ii) Other receipts i.e. net receipts from Cash Balance Investment Account and iii) Borrowings and Other Liabilities.

4.21 Borrowings and other liabilities are the receipts of two types (1) Debt receipts and (2) Non-Debt receipts. Debts receipts are of three types, the Internal Debt of the State Government i.e. Market Borrowings and loans from financial institutions, Loans from Central Government and the Net Receipts from Interest Bearing Obligations, such as Provident Funds, Reserve Funds and Civil Deposits, etc.

4.22 The Non-Debt Receipts are of two types, (1) The net receipts on public account i.e. non-interest bearing obligations such as Reserve Funds, Civil Deposits, Suspense & Miscellaneous account and Remittances account, etc. and (2) The net capital receipts from Inter State Settlement, Appropriations to the Contingency Fund and Contingency Fund, etc. The major part of the capital receipt is covered by borrowings and other liabilities which leads to a higher fiscal deficit. The details are given in Table No. 4.11.

Table No. 4.11
Capital Receipts & Expenditure of
Maharashtra State

| Item | (Rs. crore) | | | |
|---|----------------------|----------------------|-----------------|-----------------|
| | 2001-02 (Actuals) | 2002-03 (Actuals) | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
| Capital Receipts (1 to 3) | 10,615 | 14,755 | 19,241 | 14,037 |
| Recovery of loans | 298 | 469 | 587 | 423 |
| Other receipts | 306 | (-591) | 1,016 | (-500) |
| Borrowing & other liabilities | 10,011 | 14,877 | 17,638 | 14,114 |
| Capital Expenditure (1 to 2) | 3,007 | 5,388 | 11,027 | 5,430 |
| Capital Exp. outside revenue Account | 2,948 | 3,684 | 9,688 | 3,700 |
| Loans and Advances given by the State Govt. | 59 | 1,704 | 1,339 | 1,730 |

RE : Revised Estimates BE : Budget Estimates

4.23 The capital expenditure consists of two

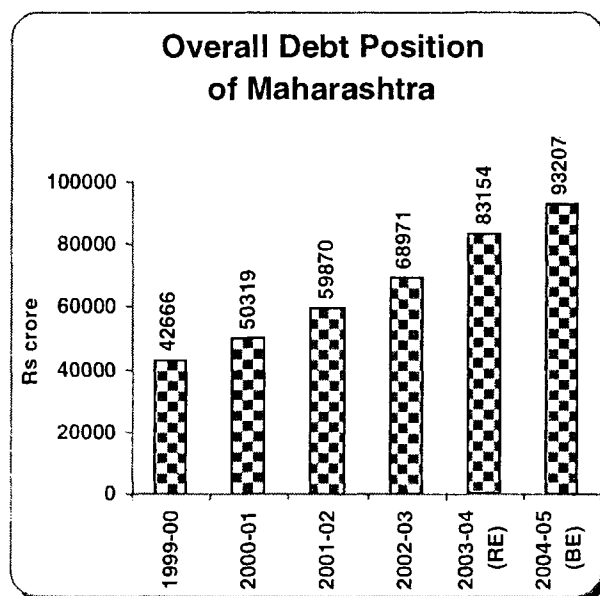
parts 1) Capital Expenditure outside the Revenue Account and 2) Loans and Advances given by the State Government. The major portion of the total capital expenditure is covered by capital expenditure outside the revenue account. The average growth of capital expenditure is continuously showing the declining trend (except 1999-2000) since 1995-96. The details are given in Table No. 4.12.

Table No. 4.12
Yearwise Capital Expenditure of
Maharashtra State

| Year | Capital Expenditure (Rs. crore) | Percentage to G.S.D.P |
|---------|------------------------------------|--------------------------|
| 1993-94 | 2,354 | 2.1 |
| 1994-95 | 4,758 | 3.7 |
| 1995-96 | 3,703 | 2.4 |
| 1996-97 | 3,572 | 2.0 |
| 1997-98 | 4,056 | 2.1 |
| 1998-99 | 3,806 | 1.8 |
| 1999-00 | 7,688 | 3.2 |
| 2000-01 | 3,737 | 1.6 |
| 2001-02 | 3,007 | 1.1 |
| 2002-03 | 5,388 | 1.8 |

Debt Position of Maharashtra

4.24 The total debt of the State consists of three parts (1) Public Debts, (2) Borrowings from the Provident Funds and (3) Borrowings from the Public Account transactions i.e. Other Interest



Statewise Debt position for 2003-04

| State | Total Debt (Rs. crore) | % to GSDP |
|--------------------|---------------------------|-------------|
| Bihar | 49,882 | 83.3 |
| Orissa | 33,756 | 65.5 |
| Punjab | 42,057 | 54.9 |
| Rajasthan | 48,714 | 50.2 |
| Uttar Pradesh | 1,04,079 | 47.3 |
| West Bengal | 79,575 | 44.6 |
| Madhya Pradesh | 40,888 | 44.4 |
| Gujarat | 55,318 | 34.6 |
| Andhra Pradesh | 57,574 | 33.7 |
| Kerala | 33,708 | 33.7 |
| Karnataka | 38,091 | 31.0 |
| Tamil Nadu | 44,834 | 26.3 |
| Maharashtra | 83,154 | 25.0 |

Bearing Obligations, such as Reserve funds and Civil Deposits. The overall debt of the State, which was Rs.15,354 crore (13.5 per cent of GSDP) in 1993-94 increased to Rs.50,319 crore (21.1 per cent of GSDP) in 2000-01 and further increased to Rs. 83,154 crore in 2003-04. The budget estimate 2004-05 expects this debt to rise upto Rs. 93,207 crore i.e 24.6 per cent of GSDP. The increasing revenue deficit has led to a higher fiscal

deficit and the higher fiscal deficit, in turn, has led to a spiralling debt. Consequently, a vicious cycle of deficit, debt and debt service burden has emerged. The State Government is aware of the situation and taking various measures to contain debts. The details are given in Table No. 4.13

Role of Twelfth Finance Commission

4.25 As per Twelfth Finance Commission's recommendations, States enacting Fiscal Responsibility Act and complying with the Centre's fiscal prudence norms would have the benefit of complete write-off of Central loans over five years beginning from 1st April, 2005. There will be a facility of debt relief for all the States by rescheduling all outstanding Central loans. All Central loans to States would be consolidated and repayment would be encouraged with a new 20 years payback period as well as a lower interest rate of 7.5 per cent compared with 9.0 per cent now.

4.26 The States would be allowed to borrow directly from the market with the Centre's permission. However, the States, unable to raise money from open market, would continue, to have the option of availing of loans from the Centre.

Table No. 4.13
Overall Debt Position of Maharashtra State

| Item | 1993-94 | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | (Rs. crore) | |
|---|---------------|---------------|---------------|---------------|-----------------|-----------------|
| | | | | | 2003-04 (RE) | 2004-05 (BE) |
| 1.Public Debt (a + b) | 12,453 | 38,171 | 45,652 | 54,055 | 65,647 | 74,130 |
| a) Internal debt of the State Govt. | 1,474 | 6,482 | 8,587 | 17,151 | 32,227 | 40,863 |
| b) Loans & Advances from Central Govt. | 10,979 | 31,689 | 37,065 | 36,904 | 33,420 | 33,267 |
| 2.Provident Funds etc. | 1,782 | 6,509 | 7,143 | 7,201 | 9,045 | 9,800 |
| 3.Other Interest bearing obligation - (From Reserve Funds & Civil Deposits) | 1,119 | 5,639 | 7,075 | 7,715 | 8,462 | 9,277 |
| Total Debt (1 + 2 + 3) | 15,354 | 50,319 | 59,870 | 68,971 | 83,154 | 93,207 |
| Percentage to GSDP | (13.5) | (21.1) | (22.4) | (23.3) | (25.0) | (24.6) |
| Expenditure on Interest Payments and Debts Services | 1,893 | 5,359 | 6,562 | 7,286 | 8,702 | 10,320 |
| % to Revenue Receipts | 14.6 | 18.1 | 21.8 | 23.4 | 23.4 | 25.5 |

Local Self-Government Institutions

4.27 Local Self-Government (LSG) institutions are the prominent organisations playing an important role in development at local level through public finance. The Local Self-Government Institutions are distinctly divided into rural and urban areas.

4.28 The typewise various Local Self-Government Institutions functioning in the State by the end of March, 2004, their total income (including opening balance) and total expenditure during 2003-04 is given in Table No. 4.14. Though the urban LSG institutions are less in number, their share in both total income and expenditure of all LSGs was 59 per cent (income Rs. 13,034 crore and expenditure Rs. 11,327 crore) for 2003-04.

Table No. 4.14
Income and expenditure of
Local Self-Government Institutions
during 2003-04

(Rs. in crore)

| Type of LSGs | Number | Total @ Income | Total Expenditure |
|---------------------------|--------|------------------|-------------------|
| 1. Gram Panchayats | 27,946 | 939.09 | 662.46 |
| 2. Zilla Parishads | 33 | 8,165.36 | 7,228.50 |
| 3. Municipal Corporations | 22 | 11,134.78 | 9,750.87 |
| 4. Municipal Councils | 222 | 1,741.18 | 1,443.85 |
| 5. Nagar Panchayats | 3 | 12.42 | 8.54 |
| 6. Cantonment Boards | 7 | 145.68 | 123.53 |
| Total | .. | 22,138.51 | 19,217.75 |

including opening balance

Gram Panchayats

4.29 The major sourcewise income and broad categorywise expenditure of all Gram Panchayats together for the years 2002-03 and 2003-04 is given in Table No. 4.15.

4.29.1 The total receipts of all Gram Panchayats in the State during 2003-04 were Rs. 709.70 crore, registered 22 per cent increase over that of the previous year. The receipts of Gram Panchayats increased mainly due to 51 per cent increase in the Government grants. The Government grants have increased from

Table No. 4.15
Income and expenditure of
Gram Panchayats

(Rs. in crore)

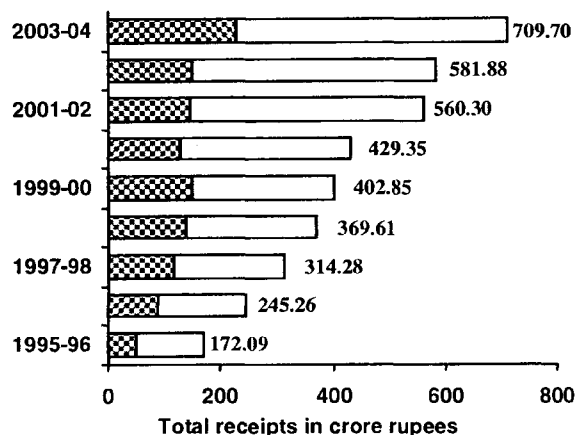
| Item | 2002-03 | | 2003-04 | |
|---------------------------------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | Actuals | Per-centage* | Actuals | Per-centage* |
| Income | | | | |
| (A) Opening balance | 193.12 | - | 229.39 | - |
| (B) Receipts | | | | |
| 1. Taxes | | | | |
| i) Taxes on houses & other properties | 172.93 | 29.7 | 197.57 | 27.8 |
| ii) Other taxes | 112.92 | 19.4 | 118.96 | 16.8 |
| Total taxes (i+ii) | 285.85 | 49.1 | 316.53 | 44.6 |
| 2. Government grants | 150.32 | 25.8 | 227.59 | 32.1 |
| 3. Contributions and donations | 91.11 | 15.7 | 99.90 | 14.1 |
| 4. Other receipts | 54.60 | 9.4 | 65.68 | 9.3 |
| Total receipts (B) | 581.88 | 100.0 | 709.70 | 100.0 |
| Total Income (A+B) | 775.00 | - | 939.09 | - |
| Expenditure | | | | |
| 1. Administration | 102.68 | 18.8 | 121.89 | 18.4 |
| 2. Health and Sanitation | 148.18 | 27.2 | 166.58 | 25.2 |
| 3. Public Works | 185.16 | 34.0 | 236.75 | 35.7 |
| 4. Public lighting | 29.84 | 5.5 | 32.64 | 4.9 |
| 5. Education | 14.19 | 2.6 | 16.73 | 2.5 |
| 6. Welfare of people | 45.53 | 8.4 | 57.63 | 8.7 |
| 7. Other Expenditure | 18.81 | 3.5 | 30.25 | 4.6 |
| Total expenditure (1 to 7) | 544.39 | 100.0 | 662.46 | 100.0 |

* excluding opening balance

Rs. 150.32 crore in 2002-03 to Rs. 227.59 crore in 2003-04. The share of Government grants in total receipts increased from 26 per cent in 2002-

Government grants in total receipts of Gram Panchayats

Legend: Government grants



03 to 32 per cent in 2003-04. The Government grants has remained the prominent source of receipts for the Gram Panchayats and were highest at 32 per cent during 2003-04 since 1995-96. The receipts per Gram Panchayat during 2003-04 were Rs. 2.54 lakh.

4.29.2 The total expenditure of all the Gram Panchayats increased from Rs. 544 crore in 2002-03 by 22 per cent to Rs. 662 crore in 2003-04. Of the total expenditure, the highest expenditure, was on account of public works at 36 per cent followed by Health and Sanitation with a share of 25 per cent. The expenditure per Gram Panchayat during 2003-04 was Rs. 2.37 lakh.

Zilla Parishads

4.30 The major sourcewise income of all Zilla Parishads in the State during 2002-03 (actuals) and 2003-04 (Revised estimates) is given in Table No. 4.16.

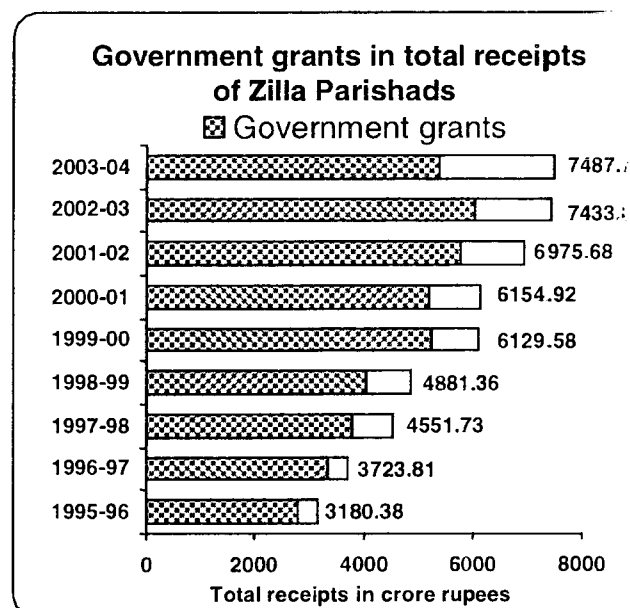
Table No. 4.16
Income of Zilla Parishads
(Rs. in crore)

| Item | 2002-03 | | 2003-04 | |
|--|-----------------|------------------|----------------------|------------------|
| | Actuals | Percent- age* | Revised estimates | Percent- age* |
| A) Opening balance | 466.08 | - | 677.64 | - |
| B) Revenue receipts | | | | |
| 1. Self-raised resources | 186.72 | 2.5 | 496.68 | 6.6 |
| 2. Government grants | 6,054.82 | 81.4 | 5,392.23 | 72.0 |
| 2.1 Statutory Grants | | | | |
| (a) Purposive | 2,638.65 | 35.5 | 2,105.48 | 28.1 |
| (b) Establishment | 1,572.48 | 21.2 | 1,819.23 | 24.3 |
| (c) Plan | 779.29 | 10.5 | 557.81 | 7.4 |
| (d) Other | 474.17 | 6.4 | 394.24 | 5.3 |
| Total (2.1) | 5,464.59 | 73.5 | 4,876.75 | 65.1 |
| 2.2 For agency schemes | 590.22 | 7.9 | 515.48 | 6.9 |
| Total Revenue receipts (B)(1+2) | 6,241.54 | 84.0 | 5,888.92 | 78.6 |
| C) Capital receipts | 1,192.34 | 16.0 | 1,598.80 | 21.4 |
| D) Total Receipts(B+C) | 7,433.87 | 100.0 | 7,487.72 | 100.0 |
| Total Income(A+D) | 7,899.96 | - | 8,165.36 | - |

* excluding opening balance

4.30.1 Total receipts of all the Zilla Parishads taken together have increased from Rs.7,434 crore in 2002-03 to Rs. 7,488 crore in 2003-04. Eventhough, there was a substantial increase in the capital receipts and self-raised resources, there was nominal increase in total receipts because during 2003-04 the Government grants

decreased by 11 per cent. The share Government grants in total receipts also decreases from 81 per cent in 2002-03 to 72 per cent 2003-04.



4.30.2 The major headwise expenditure of Zilla Parishads during 2002-03 (actuals) and 2003-04 (revised estimates) is given in Table No.4.17.

Table No. 4.17
Expenditure of Zilla Parishads
(Rs. in crore)

| Item | 2002-03 | | 2003-04 | |
|--|-----------------|--------------|-------------------|--------------|
| | Actuals | Percentage | Revised estimates | Percentage |
| (A) Revenue Expenditure | | | | |
| 1. General Administration | 471.73 | 6.7 | 718.77 | 9.0 |
| 2. Education | 2,765.68 | 39.2 | 2,500.63 | 34.0 |
| 3. Buildings and communications (Public Works) | 362.93 | 5.1 | 372.99 | 5.0 |
| 4. Irrigation | 143.46 | 2.0 | 147.90 | 2.0 |
| 5. Agriculture | 77.31 | 1.1 | 55.12 | 0.7 |
| 6. Animal Husbandry | 70.55 | 1.0 | 66.81 | 0.9 |
| 7. Forests | 4.84 | 0.1 | 8.22 | 0.1 |
| 8. Medical and health services | 422.56 | 6.0 | 359.30 | 4.8 |
| 9. Public health Engineering | 179.83 | 2.5 | 195.71 | 2.6 |
| 10. Social welfare | 218.56 | 3.1 | 231.21 | 3.1 |
| 11. Community development | 149.84 | 2.1 | 235.07 | 3.1 |
| 12. Other Expenditure | 923.81 | 13.1 | 839.64 | 11.2 |
| Total(A) | 5,791.09 | 82.0 | 5,731.37 | 79.0 |
| (B) Capital Expenditure | 1,269.82 | 18.0 | 1,497.13 | 20.0 |
| Total Expenditure (A+ B) | 7,060.91 | 100.0 | 7,228.50 | 100.0 |

4.30.3 The total expenditure for all the Zilla Parishads show nominal increase of 2 per cent for 2003-04 over the previous year. The expenditure on Education and Medical & Health Zilla Parishads has decreased, both in terms of percentage and by absolute numbers in 2003-04 over the previous year, which is a cause of concern, as these two are basic functions of Zilla Parishads. However, during the same period the expenditure on General Administrations increased by 3.2 percentage points.

Urban Local Self-Government (LSG) Institutions

4.31 The Urban Local Self-Government institutions in Maharashtra State, comprise of 22 Municipal Corporations, 222 Municipal Councils and 3 Nagar Panchayats. Of the 222 Municipal Councils, 18 were 'A' class (population more than one lakh), 62 'B' class (population more than 40,000 but not more than one lakh) and 2 'C' class (population of 40,000 or less). Besides these, there were 7 Cantonment Boards in the state as at the end of March, 2004. The income and expenditure of the urban LSGs (excluding Nagar Panchayats) during 2002-03 and 2003-04 given in Table No. 4.18.

Table No.4.18

Income and Expenditure of Urban LSGs

| Item | (Rs. in crore) | |
|-------------------------------|------------------|------------------|
| | 2002-03 | 2003-04 |
| Municipal Corporations | | |
| 1. Number | 19 | 22 |
| 2. Income | 10,456.01 | 11,134.78 |
| 2.1 Opening Balance | 1,035.99 | 1,234.54 |
| 2.2 Receipts | 9,420.02 | 9,900.23 |
| 3. Expenditure | 9,234.02 | 9,750.87 |
| Municipal Councils | | |
| 1. Number | 224 | 222 |
| 2. Income | 1,560.53 | 1,741.18 |
| 2.1 Opening Balance | 201.58 | 249.82 |
| 2.2 Receipts | 1,358.95 | 1,491.36 |
| 3. Expenditure | 1,279.42 | 1,443.85 |
| Cantonment Boards | | |
| 1. Number | 7 | 7 |
| 2. Income | 134.06 | 145.68 |
| 2.1 Opening Balance | 14.19 | 11.84 |
| 2.2 Receipts | 119.87 | 133.84 |
| 3. Expenditure | 122.22 | 123.53 |

4.31.1 The major sourcewise income and load headwise expenditure of urban LSGs for 2003-04 is given in Table No.12 of Part II of this publication.

Municipal Corporations

4.32 The total receipts of all Municipal Corporations during 2003-04 were Rs.9,900 crore (excluding BEST undertaking), more by 5 per cent than that in the previous year. Out of the total receipts, octroi collection constituted for 37 per cent, property tax 7 per cent, Government grants and contributions 4 per cent and receipts from water charges 10 per cent.

4.32.1 The total expenditure of all Municipal Corporations during 2003-04 was Rs. 9,751 crore (excluding BEST undertaking), 6 per cent more than that of the previous year. Of the total expenditure, expenditure on establishment was 34 per cent, on water supply 8 per cent, drainage and sewerage 5 per cent, construction work 6 per cent.

4.32.2 Total receipts of MCGM (excluding BEST undertaking) during 2003-04 were Rs.5,911 crore which was 60 per cent of the total receipts of all Municipal Corporations in the State.

4.32.3 Total expenditure of MCGM (excluding BEST undertaking) during 2003-04 was Rs.5,794 crore which was 59 per cent of the total expenditure of all Municipal Corporations in the State.

4.32.4 Total receipts of BEST undertaking during 2003-04 was Rs. 2,420 crore, of which electric supply division contributed 68 percent. Though the electric supply division earned profit of Rs. 144 crore, the total deficit during 2003-04 for BEST undertaking was Rs. 31 crore

4.32.5 As per the 2001 Census the total population of MCGM was 1.19 crore. It was 41 per cent of the total population of all the 22 Municipal Corporations in the state. Per capita receipts of MCGM (excluding BEST) during 2003-04 were Rs. 4,967 and per capita receipts for all other Municipal Corporations together was Rs. 2,360. Corresponding per capita expenditure figures were Rs. 4,869 and Rs. 2,341 respectively.

Municipal Councils

4.33 The total receipts of all Municipal Councils for 2003-04 were Rs. 1,491 crore, out of which receipts of 'A' class were 28 per cent, 'B' Class 42 per cent and 'C' class Municipal Councils 30 per cent. In the total receipts of all Municipal Councils the share of taxes, fees and rents was

31 per cent, Government grants 46 per cent and share of deposits and loans was 9 per cent.

4.33.1 The total expenditure of all Municipal Councils during 2003-04 was Rs. 1,444 crore less by 13 per cent over the previous year. Out of the total expenditure, 28 per cent was incurred by 'A' class, 45 per cent by 'B' class and 27 per cent by 'C' class. Out of this expenditure, 32 per cent expenditure was on establishment, 14 per cent on construction works, 9 per cent on water supply and 10 per cent on debt services.

Nagar Panchayats and Cantonment Board

4.34 There are three Nagar Panchayats in the State. Their total receipts and expenditure in 2003-04 were Rs. 9.06 crore and Rs. 8.54 crore respectively.

4.35 There are seven Cantonment Boards in the State. Their total receipts and expenditure in 2003-04 were Rs. 133.84 crore and Rs. 123.84 crore respectively.



STATE INCOME

Forecast of Gross Domestic Product for 2004-05

5.1 As per the advance estimates released by Central Statistical Organisation (CSO), the Gross Domestic Product (GDP), which is the aggregate National Income, at constant (1993-94) prices, is poised to grow at 6.9 per cent during 2004-05. This growth rate is more impressive over the higher base of earlier year's GDP that grew at 8.5 per cent. The growth in GDP may be viewed against the disappointing monsoon during 2004-05. The growth of Indian economy is mainly driven by the growth in manufacturing and service sectors. The primary sector is expected to grow at 1.5 per cent with its percentage contribution in the GDP at 22.8. The agriculture, forestry and fishing sub-sector is likely to show a growth of 1.1 per cent during 2004-05, as against an impressive growth of 9.6 per cent during 2003-04. The secondary sector is expected to grow by 8.0 per cent during 2004-05 with its percentage share in the GDP at 44.8. This growth is mainly attributed due to an accelerated growth of 8.9 per cent in manufacturing sub-sector. The growth in trade, hotels & restaurants and communication sub-sectors, under tertiary sector, is expected to be 1.3 per cent, that will help to raise the sector's domestic product by 8.9 per cent during 2004-05.

Expected Growth Rates in Gross Domestic Product 2004-05

(per cent)

| Sector | Maharashtra | India |
|-----------|-------------|-------|
| Primary | (-) 1.1 | 1.5 |
| Secondary | 8.5 | 8.0 |
| Tertiary | 8.1 | 8.9 |
| Total | 7.0 | 6.9 |

The share of tertiary sector in the GDP at National level would be 52.4 per cent. However, the GDP at current prices, during 2004-05 is likely to increase by 12.6 per cent.

5.2 As per the advance estimates, the Gross State Domestic Product (GSDP) for Maharashtra State, at constant (1993-94) prices, is expected to grow at the rate of 7.0 per cent during 2004-05. The GSDP of the State had, however, registered a growth of 7.3 per cent during 2003-04. The advance estimates indicate that the primary sector is likely to register a negative growth of 1.1 per cent with its share of 12.4 per cent in the GSDP. This negative growth in the primary sector is mainly due to unsatisfactory monsoon, which adversely affected the *kharif* crops in the State. The secondary sector is expected to contribute 29.8 per cent in the GSDP of the State. The encouraging growth perspectives in construction (12.2 per cent) and manufacturing (8.2 per cent) sub-sectors will enable in boosting the growth of secondary sector at 8.5 per cent. The expected growth rate in the secondary sector is more impressive against its growth of 11.7 per cent during earlier year. The tertiary sector is the major contributory sector of the GSDP, with contribution to the extent of 57.8 per cent, is likely to grow by 8.1 per cent during 2004-05. The growth in tertiary sector is mainly due to the higher growth rate of 9.5 per cent in trade, hotels, transport & communication and 11.3 per cent in public administration and other services. Despite of the lackluster performance in agriculture sector for last three years, the higher growth rates in secondary and tertiary sectors resulted in overall impressive growth rate of 7 per cent and above during last three years. The Gross State Domestic Product (GSDP), at current prices, however, is likely to grow at 13.8 per cent during 2004-05.

Gross State Domestic Product for 2003-04

5.3 As per preliminary estimates, the GSDP of Maharashtra, at constant (1993-94) prices, is estimated at Rs. 1,90,151 crore during 2003-04, as against Rs. 1,77,138 crore in 2002-03, showing an increase of 7.3 per cent. The corresponding growth rate for all India was 8.5 per cent. The rainfall received during the monsoon in 2003-04 was not satisfactory in the State, which had resulted in the steep down fall in the agriculture production for both the *kharif* and *rabi* crops, consequently, a negative growth of 5.5 per cent was registered in the primary sector. The secondary sector registered an impressive growth of 11.7 per cent, mainly due to accelerated growth in manufacturing and construction sub-sectors. The significant growth of 18.8 per cent in communication and 11.8 per cent in trade, hotels and restaurants, resulted in growth of 8.6 per cent in the tertiary sector during 2003-04. The sectoral growth rates of GSDP at constant (1993-94) prices are given in Table No. 5.1.

Table No. 5.1
Sectoral growth rates* of GSDP for Maharashtra at constant (1993-94) prices

| Sector | Percentage change over previous year | |
|--|--------------------------------------|---------------|
| | 2002-03 | 2003-04 |
| Primary Sector | (-1.4) | (-5.5) |
| Agriculture | (-1.7) | (-7.3) |
| Forestry & Logging | (-0.6) | 5.1 |
| Fishing | (-2.7) | 4.4 |
| Mining & Quarrying | 4.8 | 8.3 |
| Secondary Sector | 8.7 | 11.7 |
| Manufacturing | | |
| (a) Registered | 10.8 | 8.6 |
| (b) Un-registered | 1.8 | 6.1 |
| Construction | 16.3 | 33.1 |
| Electricity, Gas & Water Supply | 5.9 | 5.0 |
| Tertiary Sector | 10.1 | 8.6 |
| Railways | 5.7 | 3.8 |
| Transport & Storage | 8.0 | 7.1 |
| Communications | 7.8 | 18.8 |
| Trade, Hotels and Restaurants | 18.5 | 11.8 |
| Banking & Insurance | 11.5 | 5.7 |
| Real Estate, Ownership of Dwelling and Business Services | 4.6 | 4.5 |
| Public Administration | 4.3 | 7.6 |
| Other Services | 5.3 | 6.4 |
| Total | 7.8 | 7.3 |

* Provisional

5.4 As per the preliminary estimates, the GSDP of Maharashtra in 2003-04 at current prices is estimated at Rs. 3,33,145 crore, higher by 12.7 per cent than that of Rs. 2,95,525 crore in 2002-03.

State Income and Per Capita State Income

5.5 The preliminary estimate of State Income i.e. Net State Domestic Product (NSDP) of Maharashtra, at current prices, is Rs. 2,94,001 crore in 2003-04, higher by 12.7 per cent than that of 2002-03. During 2003-04, the NSDP for primary sector registered a negative growth of 1.4 per cent, whereas the secondary and tertiary sectors registered a growth of 20.1 per cent and 13.4 per cent respectively. Thus, the overall increase in NSDP registered was 12.7 per cent during 2003-04. Details of NSDP are given in Table No. 5.2.

Table No. 5.2
Sectorwise NSDP of Maharashtra
(Rs. in Crore)

| Year | Primary | Secondary | Tertiary | Total |
|-------------------------------------|---------|-----------|----------|----------|
| At Constant (1993-94) Prices | | | | |
| 2002-03 | 25,304 | 38,333 | 90,915 | 1,54,552 |
| 2003-04 | 23,879 | 43,166 | 98,850 | 1,65,896 |
| % change | (-) 5.6 | 12.6 | 8.7 | 7.3 |
| At Current Prices | | | | |
| 2002-03 | 40,085 | 63,050 | 1,57,677 | 2,60,812 |
| 2003-04 | 39,516 | 75,701 | 1,78,784 | 2,94,001 |
| % change | (-) 1.4 | 20.1 | 13.4 | 12.7 |

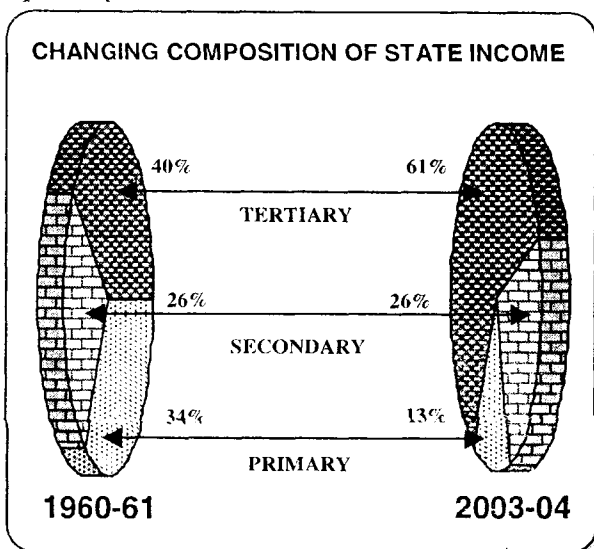
5.6 The *Per Capita* State Income (*Per Capita* NSDP), at constant (1993-94) prices, increase by 5.8 per cent in 2003-04 over 2002-03 and at current prices, it increased by 11.1 per cent. Details of *Per Capita* NSDP are given in Table No. 5.3

Table No. 5.3
Per Capita NSDP of Maharashtra
(In Rs.)

| | At Constant (1993-94) Prices | At Current Prices |
|----------|------------------------------|-------------------|
| 2002-03 | 15,580 | 26,291 |
| 2003-04 | 16,479 | 29,204 |
| % change | 5.8 | 11.1 |

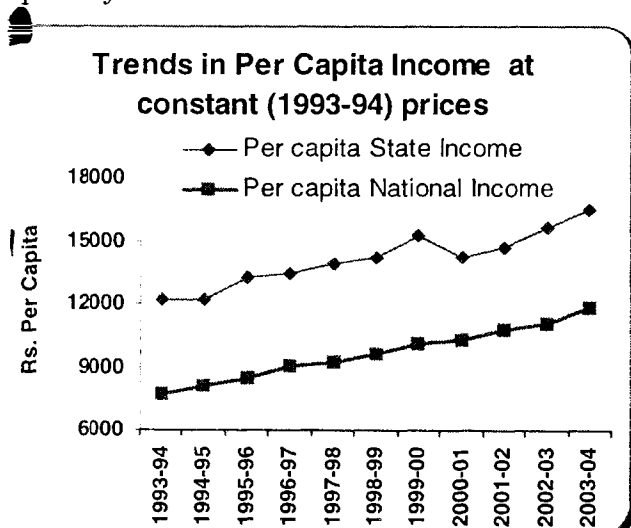
Sectoral composition of State Income

5.7 The sectoral composition of the State Income has undergone considerable changes during 1960-61 to 2003-04. Over these 40 plus years, the share of primary sector has declined from 34.4 per cent to 13.4 per cent, the share of secondary sector has remained more or less at about 26 per cent, however, the share of tertiary sector has increased from 39.9 per cent to 60.8 per cent. For the year 1993-94 (which is base year for current national account series) however, the corresponding shares were 21.2 per cent, 31.2 per cent and 47.6 per cent, respectively.



Growth Trends

5.8 The average annual growth rate of State Income at constant (1993-94) prices, during the last decade from 1993-94 to 2003-04 was 7.7 per cent. During this period, the *Per Capita* State Income grew by an annual growth rate of 8 per cent. The sectoral growth rates during this period for primary, secondary and tertiary sectors were 1.5 per cent 1.8 per cent and 7.5 per cent respectively.



Inter-state Comparison

5.9 The average annual growth rates of State Income and *Per Capita* State Income for major States of India for the period 1993-94 to 2002-03 and *Per Capita* State Income at current prices for 2002-03, are given in Table No. 5.4. In terms of *Per Capita* State Income, among the major states in India, Maharashtra State ranked second, after Haryana.

Table No. 5.4
Growth Rates and Per Capita State Income of major States

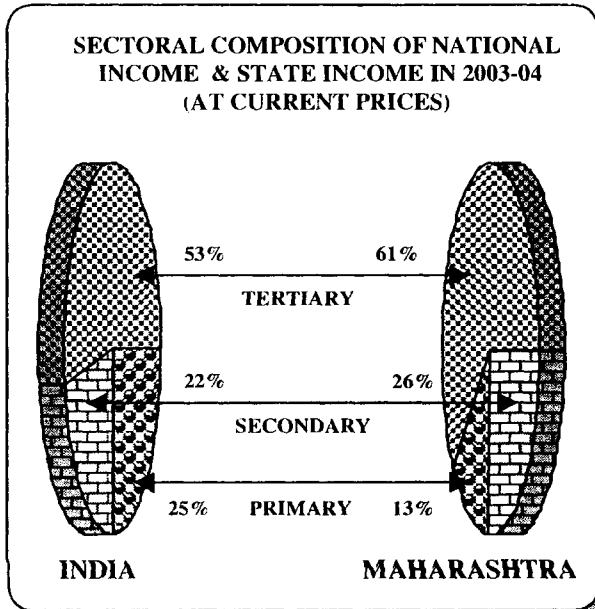
| State | <i>Per Capita</i> State Income at current prices 2002-03 (Rs.) | *Average annual growth rate(%) | |
|--------------------|--|--------------------------------|--------------------------------|
| | | State Income | <i>Per Capita</i> State Income |
| Haryana | 26,632 | 5.7 | 3.2 |
| Maharashtra | 26,291 | 4.6 | 2.6 |
| Punjab | 25,855 | 4.2 | 2.4 |
| Himachal Pradesh | 22,576 | 6.4 | 4.6 |
| Gujarat | 22,047 | 5.0 | 2.9 |
| Kerala | 21,853 | 4.7 | 3.8 |
| Tamil Nadu | 21,433 | 5.2 | 4.1 |
| All-India | 19,040 | 6.1 | 4.1 |
| West Bengal | 18,756 | 7.1 | 5.5 |
| Andhra Pradesh | 18,661 | 5.5 | 4.4 |
| Karnataka | 18,521 | 6.9 | 5.4 |
| Madhya Pradesh | 11,438 | 3.7 | 1.5 |
| Orissa | 10,340 | 3.6 | 2.2 |
| Bihar | 6,015 | 5.6 | 3.0 |

* At constant (1993-94) prices for the period 1993-94 to 2002-03

Comparison with National Income

5.10 At current prices, the National Income (i.e. Net National Product at factor cost) is estimated at Rs. 22,52,070 crore in 2003-04, as against Rs. 20,08,770 crore in 2002-03, showing an increase of 12.1 per cent. The corresponding increase in the State Income was 12.7 per cent. During 2003-04, the *Per Capita* National Income at current prices was Rs. 20,989, where as the *per capita* State Income was Rs. 29,204. The higher *per capita* State Income is mainly due to the predominance of registered manufacturing and tertiary sector in the State. At constant (1993-94) prices, the National Income in 2003-04 increased by 9.0 per cent and the State Income increased by 7.3 per cent over that of 2002-03.

5.11 The share of primary, secondary and tertiary sectors, at current prices, in the National Income during 2003-04 were 26.3 per cent, 21.5 per cent and 52.2 per cent respectively. The corresponding shares in the State Income were 13.4 per cent, 25.8 per cent and 60.8 per cent respectively.



5.12 The sectorwise details of Gross State Domestic Product, State Income and National Income at current & at constant (1993-94) prices are presented in Table Nos. 13 to 18 of Part II of this publication.

District Domestic Product - Maharashtra

5.13 Estimates of domestic product at district level are compiled by the 'income originating approach', the method used for calculating the state domestic product. Though, the income accruing concept is a better method to work out estimates of district income, it cannot be adopted because economic activities at the district level are open ended and inter-district flows cannot be captured fully. Therefore, district domestic products estimates have all inherent limitations of the state domestic product estimates. The availability of districtwise basic data required for estimation of income at the district level is still not satisfactory. The data in respect of commodity producing sector are mostly available, but are very scanty for other sectors. As such, wherever the basic data are available, the methodology used at the state level has been followed

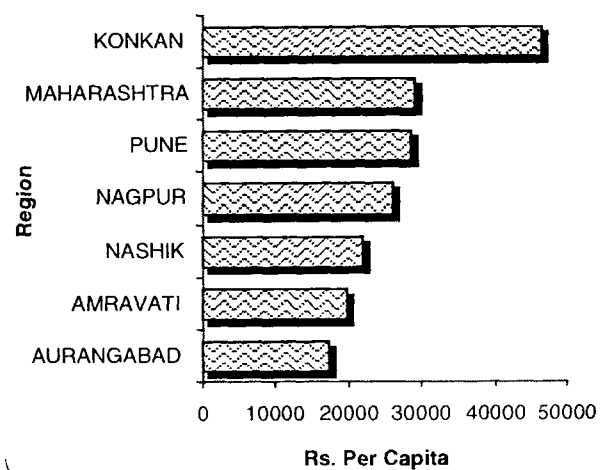
for preparation of estimates at district level. Proxy indicators are used to allocate State level estimates to districts, as and when the actual data are not available. Because of the paucity of data, use of proxy indicators and various limitations in estimation procedure, the district domestic products are to be accepted with a margin of error and can be used to have a broad judgement on income at district level. The district domestic product estimates presented in this publication in Table No. 19 of part-II may be viewed considering above limitations.

Per Capita Net District Domestic Product

5.14 Among the districts, Greater Mumbai with *Per Capita* Net District Domestic Product at Rs. 62,495 (at current prices) in 2003-04 stood first in the State followed by Pune (Rs.35,677) Nagpur (Rs. 34,385), Raigad (Rs.33,609) and Thane (Rs.33,462). The lowest *Per Capita* Income was for Gadchiroli district (Rs. 13,186).

5.15 Regionwise distribution of Net State Domestic Product for the year 2003-04 indicates that Konkan division accounts for 41.4 per cent (20.5 per cent excluding Greater Mumbai) of total NSDP in the State, followed by Pune (20.2 per cent), Nashik (12.1 per cent), Nagpur (9.8 per cent) and Aurangabad division (9.6 per cent). The least contribution was from Amravati division (6.9 per cent).

Regionwise Per Capita Net Domestic Product 2003-04 (At Current Prices)





INSTITUTIONAL FINANCE AND CAPITAL MARKET

6.1 Ever since liberalization has been started all over the world, the Indian financial sector has been increasingly integrated with the world economy and the IT has become an integral part of their regular operations. The financial institutions in the country are playing an important role in economic development by mobilization of deposits and credit disbursement to various sectors.

6.2 The scheduled commercial banks in India are categorised into five different groups according to their ownership and/or nature of operations. These groups are (i) State bank of India and its associate banks, (ii) Nationalised banks, (iii) Foreign banks, (iv) Regional rural banks and (v) Other Scheduled Commercial banks. These institutions are playing an important role for the development of economy. The Commercial banks have adopted several initiatives to strengthen their business of operations.

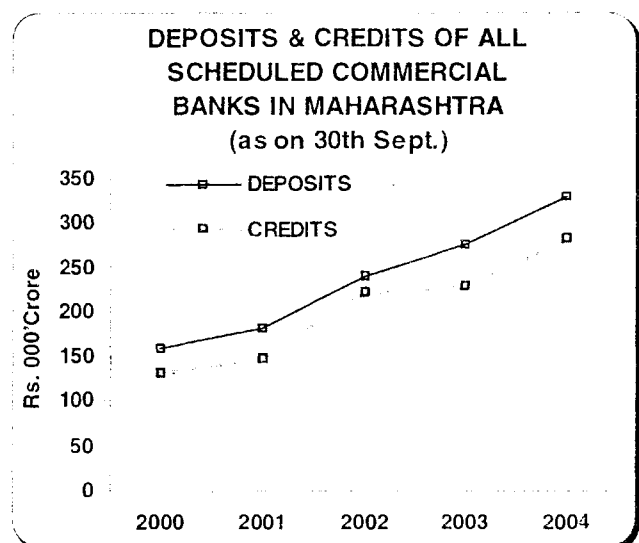
Scheduled Commercial Banks in Maharashtra

6.3 As on 30th September, 2004, the total number of banking offices (branches) of scheduled commercial banks in the State was 6,332, which accounted for 9.4 per cent of the total scheduled commercial banking offices (67,221) in the country. The number of banking offices in the State increased marginally by 0.3 per cent over that of the previous year. Of the total scheduled commercial banking offices in the State, 35 per cent were in the rural areas, 17 per cent were in semi-urban (population 10,000 and above but less than one lakh) areas and 48 per cent were in urban areas. Greater Mumbai alone accounted for 49 per cent of the banking offices in urban areas of the State. Of the total banking offices in India, the rural areas, semi-urban areas and the urban areas accounted for 48, 22 and 30 per cent respectively. The number of scheduled commercial

banking offices per lakh population in the State as on 30th September, 2004, was 6.2, which was same as that All-India.

6.4 Maharashtra stands first in India in respect of both the aggregate bank deposits and gross bank credits as on 30th September, 2004. Though the State had a share of 9.4 per cent in the total number of banking offices in India, its share in the aggregate deposits and gross credits was higher at 21 per cent and 30 per cent respectively. The aggregate deposits of the scheduled commercial banks in the State, at the end of 30th September, 2004 were Rs.3,29,330 crore, which were higher by 19 per cent than those in the previous year. During the same period, gross credits of these banks increased impressively by 24 per cent to arrived at Rs.2,83,591 crore. The corresponding increase in aggregate deposits and gross credits at the All-India level was 16 per cent and 22 per cent respectively.

6.5 As on 30th September, 2004, deposits and credits of all scheduled commercial banks in the rural and semi-urban areas taken together



for the State were Rs.24,335 crore and Rs.14,342 crore respectively, showing an increase in deposits by 17 per cent and in credits by 12 per cent over the previous year. Corresponding increase in deposits and credits in the country was 10 per cent and 23 per cent respectively. Even though the rural and semi-urban areas of the State accounted for 53 per cent branches of the scheduled commercial banks, their share in aggregate deposits and gross credits was merely 7 per cent and 5 per cent respectively. Both deposits and credits of these scheduled commercial banks in the State doubled during the span of five years from 2000 to 2004 .

6.6 Greater Mumbai alone accounted for 23.4 per cent branches of all scheduled commercial banks in the State and their share in total deposits and credits was as high as 77 per cent and 86 per cent respectively.

6.7 The details of deposits and credits of the scheduled commercial banks in the State are given in Table No.20 of Part II.

6.8 As on 30th September, 2004, the *per capita* deposit of scheduled commercial banks in the State was Rs.32,256 which was more than the double of that for All-India (Rs.14,380). The *per capita* credit of these banks in the State was Rs.27,776, which was more than thrice of that for All-India *per capita* credit (Rs.8,617). The *per capita* deposit and credit for the State, excluding Greater Mumbai, was merely at Rs.7,304 and Rs.3,901 respectively, almost half of the corresponding All-India figures.

6.9 The Credit-Deposit Ratio (CDR) of all the scheduled commercial banks in the State at the end of September, 2004, was 86 per cent as against 82 per cent in last year. The CDR of all scheduled commercial banks in Greater Mumbai was much higher at 96 per cent at the end of September, 2004. The CDR for rural and semi-urban scheduled commercial banks taken together was 59 per cent as against 62 per cent for the previous year. The CDR of all scheduled commercial banks in the State (86 per cent) was much higher than that for All-India (60 per cent).

6.10 The latest available data on outstanding credits of the scheduled commercial banks in the State in different sectors is presented in the Table No.6.1.

Table No. 6.1
Sectorwise outstanding credits of scheduled commercial banks in Maharashtra

| | | (Rs. in crore) | | | |
|---------|-----------------------------------|------------------------|---------------------|------------------------|---------------------|
| Sr. No. | Sector | As on 31st March, 2002 | | As on 31st March, 2003 | |
| | | Out-standing credits | Percentage to total | Out-standing credits | Percentage to total |
| 1. | Agriculture and allied activities | 6,525 | 3.8 | 7,462 | 3.9 |
| 2. | Mining and quarrying | 6,346 | 3.7 | 6,849 | 3.5 |
| 3. | Manufacturing * | 65,816 (6,992) | 38.2 (4.1) | 73,651 (8,262) | 38.1 (4.3) |
| 4. | Electricity, Gas and Water Supply | 3,520 | 2.0 | 2,589 | 1.3 |
| 5. | Construction | 3,281 | 1.9 | 5,204 | 2.7 |
| 6. | Transport | 3,139 | 1.8 | 3,275 | 1.7 |
| 7. | Professional and other services | 7,451 | 4.3 | 8,189 | 4.2 |
| 8. | Trade | 34,251 | 19.9 | 33,174 | 17.2 |
| 9. | Personal loans | 12,076 | 7.0 | 16,562 | 8.6 |
| 10. | Others | 23,138 | 13.4 | 36,393 | 18.8 |
| | Total | 1,72,535 | 100.0 | 1,93,348 | 100.0 |

* Figure in bracket indicates the share of Artisans, Village Industries and other Small-Scale Industries together

6.11 The outstanding credits of all scheduled commercial banks in the State as on 31st March 2003 were Rs. 1,93,348 crore and were higher by 12.1 per cent than that of the previous year. The share of Maharashtra in total outstanding credits at All-India level was 26 per cent as on 31st March, 2003 and was highest among all the States. Of the total credits by the scheduled commercial banks in the State at the end of March, 2003, manufacturing sector accounted for a sizeable share of 38.1 per cent, followed by trade (17.2 per cent). The agriculture and allied activities accounted for only 3.9 per cent. The artisans, village industries and other small-scale industries which are included in the manufacturing sector accounted for 4.3 per cent of the total credits.

Annual Credit Plan

6.12 With a view to improve the annual rural credit delivery system, viz. Service Approach (SAA) scheme has been introduced by Reserve Bank of India. As per the SAA, all credit requirements of the rural population from a cluster of villages are allocated to a unique financial institution. The Commercial Banks, Regional Rural Banks and Co-operative Banks together are expected to achieve the yearly targets of credit disbursement. The target of credit disbursement is fixed by the respective lead bank.

Table No. 6.2
Credit disbursement in Maharashtra State under Annual Credit Plan (Rs. in crore)

| Sector | 2003-04 | | | 2004-05 | | |
|--|--------------|-----------------------|-----------------------------|---------------|-----------------------|-----------------------------|
| | Target | Achievement | No. of beneficiaries (Nos.) | Target | Achievement (*) | No. of beneficiaries (Nos.) |
| Agriculture and allied activities | 6,250 | 4,471 (72) | 4,86,995 | 7,081 | 3,458 (49) | 3,71,843 |
| Rural Artisans, Village & Cottage Industries & SSI | 709 | 631 (89) | 11,890 | 824 | 198 (24) | 3,711 |
| Other Sectors | 2,231 | 2,113 (95) | 2,01,210 | 2,669 | 846 (32) | 80,537 |
| Total | 9,190 | 7,215 (79) | 7,00,095 | 10,574 | 4,502 (43) | 4,56,091 |

Note : Figures in brackets indicate percentages of the achievement to target.

(*) : upto end of September, 2004

in each district. The Bank of Maharashtra is functioning as the convener bank to monitor this scheme in the State. The targets and achievements in respect of credit disbursement under this scheme for the years 2003-04 and 2004-05 are given in Table No.6.2.

6.13 During the year 2003-04 under the Annual Credit Plan, total credit of Rs.7,215 crore was disbursed to about 7 lakh beneficiaries in the rural areas of the State. Of this, the share of agriculture and allied activities was 62 per cent. During the year 2004-05 under the Annual Credit Plan, by the end of September, 2004, credit of Rs.4,502 crore was disbursed to 4.56 lakh beneficiaries. Out of these 3.71 lakh (82 per cent) beneficiaries were from agriculture and allied activities. The target of credit disbursement proposed under Annual Credit Plan 2005-06 is Rs. 11,197 crore.

Joint Stock Companies

6.14 As on 31st March, 2003 the number of Joint Stock Companies in Maharashtra State was 1,34,352 and was higher by 4.1 per cent over the previous year. The increase in the number of Joint Stock Companies at the All-India level during the same period was 0.9 per cent. Of the total Joint Stock Companies in India as at the end of March, 2003, Maharashtra accounted for 21.9 per cent. Out of the total Joint Stock Companies in the State, 1,22,260 (91 per cent) were private limited companies and 12,092 (9 per cent) were public

limited companies. During 2002-03 the number of private limited companies in the State increased by 4.6 per cent over the previous year, however, during the same period number of public limited companies decreased marginally by 0.6 per cent. The paid-up capital of these companies in the State increased from Rs.78,032 crore as at the end of March, 2002 to Rs.86,186 crore as at the end of March, 2003 registering a growth of 10.5 per cent, which is more than that of the All-India level (7.3 per cent). The paid-up capital at All-India as at the end of March, 2002 and March, 2003 was Rs.4,05,753 crore and Rs. 4,35,311 crore respectively. Of the total paid up capital of Joint Stock Companies in India as at the end of March, 2003, Maharashtra accounted for 19.8 per cent.

Small Savings

6.15. For the financial year 2003-04, the net collection from small savings was Rs.11,033 crore as against the target of Rs. 7,704 crore. The small saving collection was more by Rs. 2,776 crore (43 per cent) of the target. During the year 2003-04, upto December, 2003, the State Govt. received Rs. 6,565 crore from Government of India as a Central Loan Assistance against the small saving funds. During 2004-05 upto December, 2004, Rs. 11,636 crore were sanctioned as Central Loan Assistance. For the financial year 2004-05, the target of Rs. 11,171 crore is set for collection from small savings as against it is expected that Rs. 12,000 crore will be collected by the end of March, 2005.

Lottery

6.16. In order to raise resources for the socio-economic development, the State Government introduced the Scheme of Lottery in the State from 1st March, 1969. Under this scheme Bumper, monthly, weekly and two digit draws are being arranged. During 2003-04, the net profit from lottery was Rs.9.20 crore as against Rs.10.48 crore in the previous year. During 2004-05 upto November, 2004, the profit from lottery was approximately Rs.15.73 crore. For the same period during the last financial year the profit of Rs.1.88 crore was recorded. The net profit from lottery during 2004-05 is expected to be Rs. 17.84 crore. From the year 2004-05, Government of Maharashtra has started collecting sales tax on sales on lottery tickets sold in the State. It is expected that Rs. 33.06 crore Sales tax will be collected from the sales of lottery tickets in the State. It is expected that the Maharashtra State online lottery will be restarted by this financial year.

Capital Market

6.17 Capital Market plays a vital role in the development of economy by channalising surplus savings to various economic activities. In Maharashtra, three major stock exchanges are functioning viz. Bombay Stock Exchange (BSE), National Stock Exchange (NSE) and Pune Stock Exchange (PSE). Apart from above, two other stock exchanges i.e. Over The Counter Stock Exchange of India (OTCIE) and Inter Connected Stock Exchange (ICSE) are functioning. The capital market had showing significant performance on economic development of the State in last two decade through productive output, employment generation as well as revenue to the Government.

Market Capitalisation

6.18 Market capitalisation of equity shares on Indian bourses experienced phenomenal growth during the year 2003-04. The Market Capitalisation on NSE & BSE exchanges was doubled in 12 months of the year 2003-04. The total market capitalisation of NSE and BSE as at the end of March, 2004 amounted to Rs. 11,20,976 crore and Rs.12,01,207 crore respectively. The market capitalisation of securities available for trading during the year 2003-04 on NSE (CM segment) and BSE witnessed increase over the previous year's market capitalization by 109 per cent and 110 per cent respectively. The share of NSE and BSE were 48:52 in market capitalisation during the 2003-04.

Primary Security Market

Initial Public Offers

6.19 As per the data supplied by SEBI, during the current year, up to 30th November, 2004 in the entire country, Rs. 17,034 crore were raised through Initial Public Offer (IPO's). Of which, the share from Maharashtra was (Rs. 7,186 crore) 42 per cent.

Secondary Security Market

Volume of business

6.20 The trading volumes in the equity segments of all the stock exchanges have been witnessing a phenomenal growth in last few years. The turnover of business at all the 23 stock exchanges in the country had increased from Rs.1,64,057 crore during 1994-95 to Rs.16,20,497 crore during 2003-04. During 2003-04, about 98 per cent of the total turnover at all the stock exchanges in the country was from Maharashtra State. Stock exchange wise turnover in the State and rest of the country is shown in the Table No. 6.3.

Table No. 6.3
Turnover in the Stock Exchanges

| Stock Exchange | Turnover (Rs. in crore) | | percentages | |
|----------------------|-------------------------|------------------|--------------|--------------|
| | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04 |
| Maharashtra | | | | |
| NSE | 6,17,989 | 10,99,534 | 63.8 | 67.9 |
| BSE | 3,14,073 | 5,02,618 | 32.4 | 31.0 |
| Pune | 2 | -- | — | -- |
| ICSE | 65 | -- | — | — |
| OTCEI | 2 | 16 | — | — |
| Rest of India | 36,779 | 18,329 | 3.8 | 1.1 |
| Total | 9,68,908 | 16,20,497 | 100.0 | 100.0 |

Source :- SEBI-Annual Report 2003-04

National Stock Exchange

6.21 National Stock Exchange (NSE) functioning as a recognized stock exchange since April, 1993, which is one of the most important events in the securities market reforms in India. NSE was set up with the objectives of (a) establishing a nationwide trading facility for all types of securities, (b) ensuring equal access to all investors to all over the country through an appropriate communication network, (c) providing a fair, efficient and transparent securities market using an electronic trading system, (d) enabling

shorter settlement cycles and book entry settlements and (e) meeting the current international standards on trading.

6.22 Trading volumes at the National Stock Exchange increased from Rs.6,17,989 crore in 2002-03 to Rs. 10,99,534 crore in 2003-04, by 78 per cent.

Very Small Aperture Terminals

6.23 As on 31st October, 2004 there were total 2,873 Very Small Aperture Terminals (VSATs) on which NSE was working for online trading in 356 cities of the country. Out of the total VSATs, 609 terminals (21 per cent) were in 19 cities from Maharashtra State.

Bombay Stock Exchange

6.24 Bombay Stock Exchange (BSE) is a century year old institution playing an important role in the capital market of the country. During 2003-04, similar to other stock exchanges, Bombay Stock Exchange also has shown an increasing trend in the turnover. The turnover of BSE increased by 60 per cent, from Rs. 3,14,073 crore during 2002-03 to Rs. 5,02,618 crore in the year 2003-04.

Security and Exchange Board of India

6.25 The Security and Exchange Board of India (SEBI) has been discharged its functions in fulfillment of the twin objectives of investor protection and market development mandated by the Securities and Exchange Board of India Act, 1992. The SEBI has been constantly reviewing and reappraising its existing policies and programme, formulating new policies and crafting new regulations for efficient working of the capital market & protecting interest of investors.

6.26 In order to protect the investors interest, SEBI has been strengthening its investigation activities over the years. The redressal rate of grievances received to SEBI upto the year 2003-04 was 94.50 per cent which was 94.99 per cent upto earlier year. The number of grievances received to SEBI during 2003-04 was 36,744 and by the year end, pending cases with SEBI was 1,53,028.

Stock Brokers

6.27 During the year 2003-04, new 141 brokers were registered while existing 292 brokers did not renew their registrations. As on 31st March, 2004 the total number of brokers were 9,368 less by 151 than in the previous year.

Dematerialization

6.28 Price and default risk are two very important aspects in the Capital Market. Dematerialization has speeded up the transfer and ownership of securities and many related risk have been almost eliminated. There are two depositories i.e. a) National Securities Depository Ltd. (NSDL) and b) Central Depository Services Ltd. (CDSL) which provide demat services to the investors. The number of companies signed for dematerialization with NSDL was 5,216 and CDSL was 4,810 by the end of 2003-04. The number of shares dematerialized has also risen to 8,369 crore and 1,401 crore at NSDL & CDSL respectively.

6.29 The number of users of NSDL depository system is steadily increasing. At the end of August, 2004, there were about 47 lakh investor accounts within the country, out of that 26 per cent (12 lakh) account holders were from Maharashtra State.

Mutual Fund

6.30 In India, the 'Mutual Fund' industry started with setting up of Unit Trust of India in 1964. The public sector banks and financial institutions began to establish mutual funds in 1987. The private sector and foreign institutions were allowed to set up mutual funds since, 1993. This fast growing industry is regulated by SEBI. As on 31st December, 2004 there were 29 mutual funds and the total assets of the 429 schemes of these funds was Rs. 1,50,537 crore. As on 31st December, 2004 out of total mutual funds in India, 26 (90 per cent) mutual funds were registered in Maharashtra with net amount mobilized of Rs. 1,48,434 crore (99 per cent).

Inflation

7.1 Inflation is an important indicator of macro-economic stability. High inflation adversely affects individual household budget and is considered as the worst tax on the poor. It also upsets all developmental works in the economy. A mild inflation in the range of 2 to 5 per cent on the other hand, is considered as the leverage to economic growth. The rate of inflation is measured by the statistical device of index number of prices.

7.2 At present five series of price indices are compiled at national level which capture the price movements at retail and wholesale levels. Out of these, Consumer Price Index (CPI) for industrial workers, CPI for agricultural labourers, CPI for rural labourers, CPI for urban non-manual employees are used to measure monthly variation in the retail prices of items of daily consumption of specified population groups. All-India Wholesale Price Index (WPI) on the other hand, is used to measure the week-to-week fluctuations in the wholesale prices of all traded commodities in the economy. As the WPI represents wholesale trade and transactions and also being available on a weekly basis, this index is conventionally used in India as an indicator to assess the rate of inflation in the economy.

A. Price situation in India

Inflation based on WPI

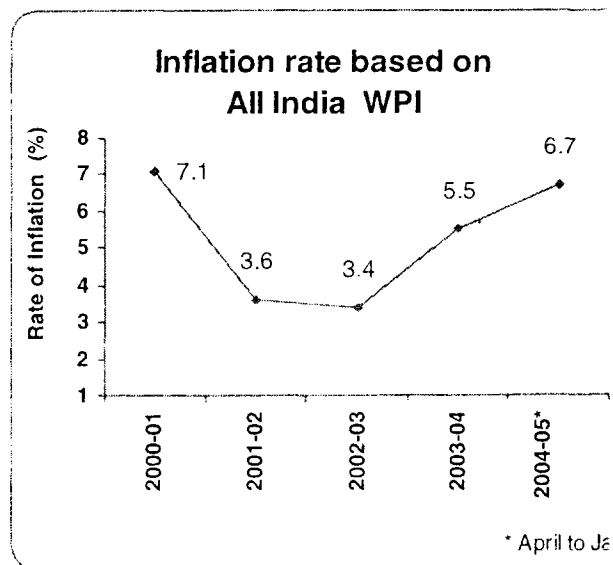
7.3 The rate of inflation based on WPI (point-to-point) zoomed to 8.5 per cent in August, 2004, and thereafter, softened to 5.5 per cent for the month of January, 2005. This was lower than inflation rate (6.5 per cent) recorded during the corresponding month of (January, 2004) last year. The fall in the inflation rate for the month of January, 2005 was mainly due to decline in prices of food items and fuels. However, the average inflation rate during 2004-05 (April, 2004 to January, 2005) was 6.7 per cent and the same was

Inflation in India: an overview

The inflation based on WPI witnessed double digit figure in the first half of 1970s and again in the first four years of 1990s. The double digit inflation touched the highest level of 13.7 per cent in 1991-92. From 1995-96 onwards, there has been continuous deceleration and the average inflation for the period 1996-97 to 2000-01 was moderate at 5 per cent. After remaining subdued during two years 2001-03 at around 3.5 per cent, the average inflation rate rose to 5.5 per cent during 2003-04 and further to 6.7 per cent during 2004-05 (upto Jan. 05). WPI is released by the office of the Economic Adviser, Ministry of Commerce & Industry Govt. of India.

higher than the inflation rate of 5.5 per cent recorded during the corresponding period of previous year.

7.4 After experiencing a benign inflation at around 3.5 per cent in 2001-02 and 2002-03 to



economy witnessed the inflation rate crossing 5 per cent level in 2003-04. Though the average inflation rate remained moderate at 5.5 per cent during that year, the rate showed rising trend from August, 2003 (4.0 per cent) and reached around 6.5 per cent in January, 2004. Subsequently, the inflation rate softened to around 4 per cent in April-May, 2004 and thereafter, the rate started firming up. The factors responsible for price rise were delayed monsoon, steady upward move of crude oil prices in the international market and increase in steel prices. The rate of inflation peaked to 8.5 per cent for the month of August, 2004. A series of fiscal and monetary measures taken by the Government and the gradual fall in the prices of crude oil helped to contain inflation in subsequent months. Inflation rate dipped to 7 per cent in December, 2004 and below 6 per cent in January, 2005. The major groupwise WPI and inflation rates for latest periods are given in Table No.7.1.

Table No. 7.1

Major Groupwise All-India Wholesale Price Index Numbers

(Base Year 1993-94=100)

| Year/ Month | All India WPI for | | | | Inflation rate |
|----------------|---------------------|--|-------------------------------|-------------------------|-------------------|
| | Primary articles | Fuel, power, light and lubricants | Manu- factured products | All commo- dities | |
| Weight | 22.02 | 14.23 | 63.75 | 100.00 | - |
| 000-01 | 162.5 | 208.1 | 141.7 | 155.7 | 7.1 |
| 001-02 | 168.4 | 226.7 | 144.3 | 161.3 | 3.6 |
| 002-03 | 174.0 | 239.2 | 148.1 | 166.8 | 3.4 |
| 003-04 | 181.5 | 254.6 | 156.4 | 175.9 | 5.5 |
| 003-04* | 181.4 | 252.9 | 155.6 | 175.1 | 5.5 |
| 004-05* | 188.8 | 278.4 | 165.7 | 186.8 | 6.7 |
| April, 04 | 183.5 | 263.6 | 161.2 | 180.7 | 4.4 |
| Jan.,05(P) | 185.4 | 287.9 | 167.4 | 188.5 | 5.5 |

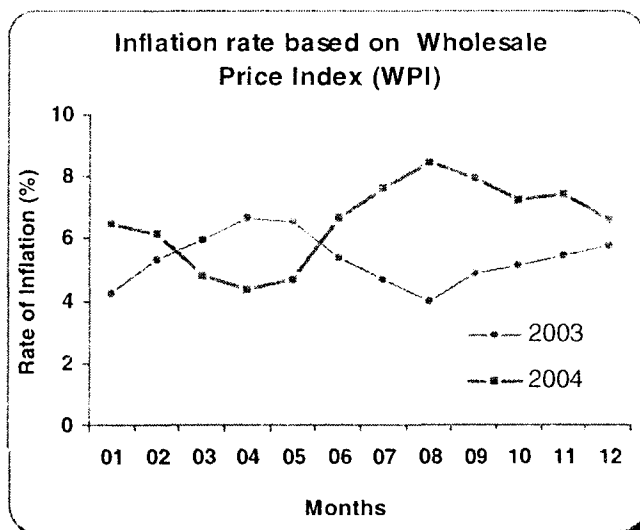
* 10 months' average (April to January) (P) Provisional

7.5 The average index of the major group 'primary articles', for the period April, 2004 to January, 2005 registered an increase of 4.1 per cent over the average index of the corresponding period of earlier year. This was the combined effect of the increase in the average indices of the sub-groups 'food articles' (2.7 per cent) and 'minerals' (117.6 per cent).

7.6 The average index of the major group 'fuel, power, light and lubricants' for the period April, 2004 to January, 2005 registered an increase of 10.1 per cent. This was mainly due to increase in the average indices of the sub-groups 'coal mining' and 'mineral oils'.

7.7 In the case of major group 'manufactured products' the increase in the average index was 6.5 per cent during the period April, 2004 to January, 2005. The same during the corresponding period of the earlier year was 5.4 per cent.

7.8 During the financial year 2004-05 the monthly All-India WPI moved up from 180.7 in April, 2004 to 188.5 in January, 2005 an increase by 4.3 per cent.



Inflation based on CPI

7.9 There are at present four series of CPIs covering different socio-economic groups in the economy. The inflation based on the same are discussed below.

All-India Consumer Price Index Number for Industrial Workers (CPI-IW)

7.10 CPI-IW measures monthly movement of retail prices of essential commodities and services in 70 industrially developed centres in the country. Out of these, five centres viz. Mumbai, Pune, Nagpur, Solapur and Nashik are from Maharashtra State. This index (base year 1982) is released by Labour Bureau, Simla. The major groupwise All-India CPI-IW and inflation rates for the latest periods are given in Table No.7.2. In addition, CPI-IW for five centres in the State viz. Jalgaon, Nanded, Aurangabad, Kolhapur and Akola are also compiled by the office of the Labour Commissioner, Govt. of Maharashtra.

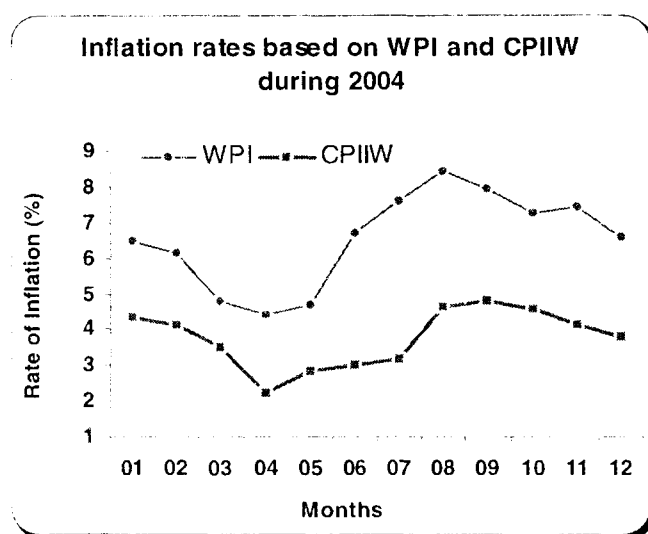
7.11 For the sixth year in succession, the financial year 2004-05 (April to December) also

Table No. 7.2
Major Groupwise All-India Consumer Price Index Numbers for Industrial Workers
(Base Year 1982=100)

| Year/ Month | Food | Pan, supari tobacco and intoxicants | Fuel and light | Housing | Clothing, bedding, & footwear | Miscell- aneous | General index | Inflation rate |
|----------------|-------|---|----------------------|---------|----------------------------------|--------------------|------------------|-------------------|
| Weight | 57.00 | 3.15 | 6.28 | 8.67 | 8.54 | 16.36 | 100.00 | - |
| 2000-01 | 453 | 592 | 454 | 463 | 315 | 442 | 444.2 | 3.8 |
| 2001-02 | 466 | 620 | 483 | 514 | 325 | 463 | 463.3 | 4.3 |
| 2002-03 | 477 | 633 | 534 | 556 | 332 | 489 | 481.8 | 4.0 |
| 2003-04 | 495 | 655 | 566 | 582 | 338 | 507 | 500.3 | 3.9 |
| 2003-04* | 495 | 651 | 561 | 579 | 338 | 505 | 499.1 | 3.8 |
| 2004-05* | 507 | 673 | 609 | 631 | 345 | 522 | 517.6 | 3.7 |
| April, 2004 | 494 | 669 | 592 | 592 | 344 | 515 | 504.0 | 2.2 |
| Dec., 2004 | 505 | 681 | 625 | 651 | 346 | 529 | 521.0 | 3.8 |

*9 months' average (April to December)

experienced an inflation rate below 5 per cent. The inflation rate which was 2.2 per cent at the beginning of the financial year moved up steadily and reached 4.8 per cent in September, 2004. Thereafter, it dipped to 3.8 per cent in December, 2004. The average All-India CPI-IW for the period April to December, 2004 (517.6) was higher by 3.7 per cent than the average index for the corresponding period of the previous year. During the financial year 2004-05, CPI-IW for December, 2004 was 521. This was higher by 3.4 per cent than the index (504) for March, 2004. The Central Government employees' wage compensation is done twice a year based on the movement of this index.



7.12 Major groupwise CPI-IW for all ten centre in the State are given in Table No. 23 of Part - I of this publication.

All-India CPI for Urban Non-manual Employees

7.13 All-India Consumer Price Index Number for Urban Non-manual Employees (base year 1984-85) is released by Central Statistical Organisation as a monthly series for 59 cities in the country. Out of these, five cities viz., Mumbai, Aurangabad, Nagpur, Pune and Solapur are from Maharashtra.

7.14 The above index indicates the change in retail prices of essential commodities and services in various cities. Banks and foreign embassies use this index for wage compensation of the employees. The inflation rate for the year 2004-05 (April to December) as per CPI for urban non-manual employees was 3.6 per cent over the corresponding period of the previous year. The same for the entire year 2003-04 was 3.7 per cent.

All-India CPI for Agricultural and Rural Labourers

7.15 Labour Bureau, Simla releases CPI for agricultural and rural labourers separately (base year 1986-87) as a monthly series for the country and for each state. During 2004-05 (April to December) the average consumer price indices for agricultural labourers and the rural labourers

Table No. 7.3
Groupwise Consumer Price Index Numbers for Urban and Rural Maharashtra

(Base Year 1982=100)

| URBAN | | | | | | | RURAL | | | | | | |
|-------|-------------------------|-------------------|--------------------------------|---------------|-----------------|----------------|--------------------|-------|-----------------|--------------------------------|---------------|-----------------|----------------|
| Food | Pan, supari and tobacco | Fuel, power light | Clothing, bedding and footwear | Miscellaneous | All commodities | Inflation rate | Year and month | Food | Fuel, and light | Clothing, bedding and footwear | Miscellaneous | All commodities | Inflation rate |
| 54.12 | 2.02 | 6.67 | 5.95 | 31.24 | 100.00 | - | Weight | 61.66 | 7.92 | 7.78 | 22.64 | 100.00 | -- |
| 421 | 594 | 380 | 518 | 454 | 437.8 | 3.3 | 2000-01 | 415 | 405 | 380 | 503 | 431.2 | (-)1.2 |
| 430 | 608 | 420 | 538 | 481 | 455.3 | 4.0 | 2001-02 | 415 | 436 | 383 | 518 | 437.7 | 1.5 |
| 441 | 626 | 458 | 544 | 496 | 468.9 | 3.0 | 2002-03 | 426 | 456 | 394 | 522 | 447.8 | 2.3 |
| 457 | 645 | 461 | 550 | 502 | 480.8 | 2.6 | 2003-04 | 442 | 459 | 413 | 523 | 461.4 | 3.0 |
| 456 | 644 | 460 | 551 | 501 | 480.0 | 2.4 | 2003-04* | 438 | 457 | 410 | 520 | 458.4 | 2.3 |
| 472 | 657 | 470 | 551 | 511 | 492.3 | 2.6 | 2004-05* | 467 | 462 | 418 | 540 | 479.3 | 4.6 |
| 458 | 652 | 463 | 547 | 509 | 483.6 | 2.0 | April, 2004 | 448 | 453 | 415 | 537 | 466.2 | 3.6 |
| 470 | 655 | 479 | 548 | 521 | 495.0 | 2.7 | Dec., 2004 | 473 | 465 | 423 | 568 | 489.8 | 4.6 |

9 months' average (April to December)

recorded an inflation rate that hovered around 2.6 per cent in both the series. The CPI for agricultural labourers is used for fixation and revision of minimum wages in agriculture sector.

5. Price situation in Maharashtra.

7.16 In an open economy, the price situation in the country influences the price behaviour in the State also. For assessing the price situation in the State, the Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra collects, on a regular basis, the retail prices of essential commodities and cost of services to consumers from selected centres in the urban and the rural areas. On the basis of these prices, monthly Consumer Price Index Numbers (base year-1982) are compiled separately for the urban and rural areas of the State. From the index thus compiled for the State, it is observed that inflation rate in urban and rural areas of the State also remained below 5 per cent as that based on CPI at All-India level during 2004-05 (upto Dec. 04).

Price behaviour in Urban Areas of the State

7.17 During 2004-05, the average Urban Consumer Price Index (UCPI) for the period April to December, 2004 was higher by 2.6 per cent than the corresponding average for the previous year. The corresponding rise during 2003-04 was also 2.6 per cent.

7.18 The UCPI for December, 2004 (495.0) was higher by 2.5 per cent over that for March, 2004 (482.7). This increase was mainly due to

rise in the prices of items like jowar, potato, turmeric, sugar etc. in the 'food group'. The major groupwise UCPI and inflation rates for latest periods are given in Table No.7.3.

Price behaviour in Rural Areas of the State

7.19 During 2004-05 the average Rural Consumer Price Index (RCPI) for the period April to December, 2004 was higher by 4.6 per cent than the corresponding average for the previous year. The corresponding rise during 2003-04 was 3.0 per cent.

7.20 The RCPI for December, 2004 (489.8) was higher by 4.8 per cent over that for March, 2004 (467.3). This was mainly due to increase in the prices of commodities like jowar, rice, potato, gur, sugar etc. in the 'food group'. The major groupwise RCPI and inflation rates for latest periods are given in Table No.7.3.

CPI for Agricultural and Rural Labourers in Maharashtra.

7.21 As per CPI for Agricultural and Rural labourers in Maharashtra released by the Labour Bureau, Simla the average indices for agricultural labourers and rural labourers during the year 2004-05, for the period April to December were higher by 4.5 per cent over the corresponding period of earlier year in both the series.

7.22 The major groupwise WPI, CPIs, and the inflation rates are given in Table Nos. 21 to 28, of Part II of this publication.

Civil supplies

Public Distribution System

7.23 The Public Distribution System (PDS) is a major instrument for ensuring availability of selected essential commodities at affordable prices, specially for the families living below poverty line (BPL) and remote area of the State. It is an important constituent of the strategy of the anti-poverty eradication programme of the state Government.

7.24 The State Government introduced 'Three Tier Card Scheme' from 1st May, 1999. In order to cater foodgrains effectively to only the needy families, a supply card is issued to a household depending on its annual income. Yellow supply card is issued to a family having annual income upto Rs. 15,000, saffron supply card to a family having annual income between Rs. 15,001 to 1 lakh and white supply card to a family having annual income over Rs. 1 lakh. Considering the general experience that the affluent class of families do not purchase foodgrains from PDS, the supply of foodgrains, sugar and pulses has been stopped to the white supply card holders.

| Supply cards distributed (Upto Feb. 2004) | |
|--|-------------|
| Type | Number |
| Yellow | 73,40,650 |
| Saffron | 1,47,21,599 |
| White | 8,85,655 |

7.25 The distribution of rice, wheat, sugar, and kerosene through the Public Distribution System (PDS) is continued during the year 2004-05 in the State. In addition to above commodities, iodised salt, tea powder, toilet and washing soaps are also distributed in tribal and drought prone areas under specially subsidised PDS.

7.26 There were 49,921 authorised ration/fair price shops till December, 2003 in the State, which have gone upto 50,160 at the end of February, 2004. Since April, 2002 the monthly quantum of foodgrains under PDS for saffron cardholders has been fixed at 35 kg. per card per month and the rate of rice and wheat were brought down from Rs.10.00 to Rs. 9.50 and from Rs. 7.25 to Rs. 7.00 per kg. respectively w.e.f. September, 2004.

Targeted Public Distribution System

7.27 Under the common minimum need programme, the Government of India decided to streamline the PDS with the focus on the poor and accordingly, has introduced 'Targeted Public Distribution System (TPDS)'. This system is for the families below poverty line and is being implemented in the State since June, 1997. The Government of India has fixed 65.34 lakh BPL families in the State under this scheme. Under TPDS, every yellow cardholder is entitled to get 35 kg. of foodgrains (wheat and /or rice) per month. The retail prices of wheat and rice supplied to these cardholders under this scheme are fixed at Rs. 5 and Rs. 6 per kg. respectively since October, 2001.

Antyodaya Anna Yojana

7.28 In order to make the TPDS more focused and target oriented towards the poor, the Government of India has launched the Antyodaya Anna Yojana (AAY) in December, 2000. This scheme contemplates benefit to the poorest among poor families. The Government of India has fixed a target of 10.02 Lakh beneficiaries for the State of Maharashtra. Accordingly, the beneficiaries are identified and they are supplied 35 kg. foodgrains per month at the low rate of Rs.2 per kg. for wheat and Rs.3 per kg for rice.

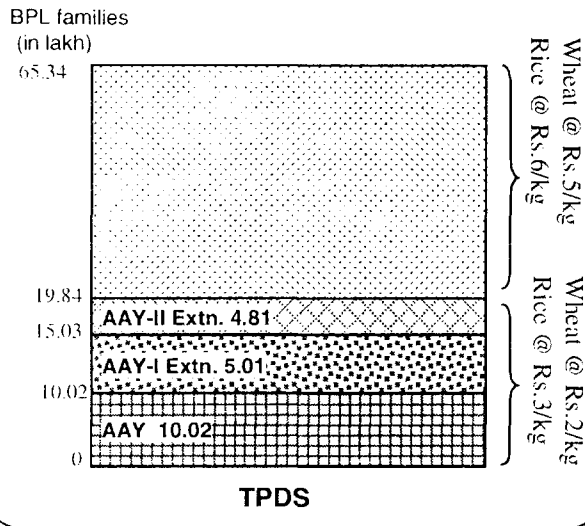
Extended Antyodaya Anna Yojana

7.29 The Government of India has extended the AAY in the year October, 2003 and a target of 5.01 Lakh beneficiaries has been fixed for the State under this Scheme. The Scheme contemplates benefit to the weaker families with head as widow, disabled, terminally ill person and person aged above 60 years, as well as primitive tribal households in the priority group. The Government of India has given further second extension to AAY and fixed a target of 4.81 lakh beneficiaries, the identification of which is under progress. Including first and second extension of AAY, about 30 per cent of the TPDS families so far are covered.

Allotment and off-take of foodgrains

7.30 The Government of India allots rice and wheat to the State Government through the Food Corporation of India (FCI) for distribution under the PDS.

Extensions of AAY under TPDS



7.30.1 During 2003-04 under Antyodaya Anna Yojana, the off-take of rice and wheat was 2 per cent and 91 per cent respectively. During current year upto December, 2004 off-take of rice and wheat was 85 per cent and 91 per cent respectively. The details of allotment and off-take are given in the Table No. 7.4.

Table No. 7.4

Allotment and off-take under Antyodaya Anna Yojana

(In Lakh Tonnes)

| Year | Allotment | | Off-take | |
|----------|-----------|-------|--------------|--------------|
| | Rice | Wheat | Rice | Wheat |
| 2003-04 | 1.58 | 2.93 | 1.45 (92) | 2.68 (91) |
| 2004-05* | 1.78 | 2.90 | 1.51 (85) | 2.64 (91) |

Figures in the bracket indicate percentage to allotment.

* Upto Dec. 04

7.30.2 In the case of TPDS (beneficiaries excluding those under AAY), the off-take of rice and wheat was 71 per cent and 70 per cent respectively for the year 2003-04. During current year upto December, 2004 off-take of rice and wheat was 76 per cent and 82 per cent respectively. The details of allotment and off-take are given in the Table No.7.5.

7.30.3 Even though, the rate of foodgrains provided under TPDS are almost at the half rate of the PDS prices, the off-take was still less by 25 per cent of the allotment. This may

Table No. 7.5
Allotment and off-take under BPL

(In Lakh Tonnes)

| Year | Allotment | | Off-take | |
|----------|-----------|-------|--------------|---------------|
| | Rice | Wheat | Rice | Wheat |
| 2003-04 | 8.03 | 14.90 | 5.71 (71) | 10.36 (70) |
| 2004-05* | 5.95 | 9.94 | 4.55 (76) | 8.20 (82) |

Figures in the bracket indicate percentage to allotment.

* Upto Dec. 04

be partly because of the ample quantity of foodgrains provided under EGS and other welfare schemes.

7.30.4 In the case of Above Poverty Line (APL) families, the off-take is almost negligible (below 1 per cent). This may be the result of the narrow gap between prices of commodities under PDS and in open market. It indicates that APL families are almost completely moved out of the PDS network. The details of allotment and off-take are given in the Table No. 7.6.

Table No.7.6
Allotment and off-take for APL

(In Lakh Tonnes)

| Year | Allotment | | Off-take | |
|----------|-----------|-------|---------------|---------------|
| | Rice | Wheat | Rice | Wheat |
| 2003-04 | 16.5 | 30.51 | 0.05 (0.3) | 0.37 (1.2) |
| 2004-05* | 12.37 | 22.88 | 0.07 (0.6) | 0.29 (1.3) |

Figures in the bracket indicate percentage to allotment.

* Upto Dec. 04

Specially Subsidised Public Distribution Scheme

7.31 Considering the inadequate purchasing power of tribals and the people living in drought prone areas, in addition to regular commodities of PDS, the State Government is providing some daily needed additional commodities under a scheme known as 'Specially Subsidised Public Distribution Scheme' (SSPDS). This scheme is being implemented in the State

since November, 1992. The scheme covered 68 talukas of 15 tribal districts and 56 Talukas of 12 drought prone districts of the State. However, during 2004-05 there was no demand from ITDP and Drought prone areas for these commodities and hence no allotment of these commodities was made. The additional commodities distributed under this scheme, their quantum per supply card per month and retail selling prices per kg. are shown in Table No. 7.7.

Table No. 7.7
Quantum and Prevailing rates under SSPDS in ITDP and drought prone areas for 2004-05

| Commodity | Quantum per supply card per month | Retail price Per unit (Rs.) |
|-----------------|-----------------------------------|-----------------------------|
| 1. Iodised salt | 1 kg. | 1.65 TSP 2.90 DPAP |
| 2. Tea Powder | 3 Packets @ | 10.50 |
| 3. Toilet Soap | 2 Cakes @ | 3.40 |
| 4. Washing Soap | 2 Cakes \$ | 2.40 |

@ 100 gm. each. : \$ 125 gm. each

TSP - Tribal Sub Plan

DPAP - Drought Prone Area Programme

Door Step Delivery Scheme

7.32 The 'Door Step Delivery' scheme for the distribution of PDS commodities are being implemented in the Tribal and Drought Prone Areas of the State through Tribal Development Corporation and the Maharashtra State Co-operative Marketing Federation respectively. Under this scheme, the foodgrains are transported by Government vehicles at Government cost from Government godowns to fair price shops.

Controlled (Levy) Sugar

7.33 Since January, 2003, the State receives monthly allocation of 13,918 tonnes of levy sugar for distribution under PDS to BPL families. The quantum of levy sugar to be supplied to BPL cardholders is 500 grams per head per month at the rate of Rs.13.50 per kg. since March, 2002.

7.33.1 Apart from monthly regular allocation of levy sugar during the year 2004, the Government of India has given additional

allotment of 4,507 tonnes of levy sugar in August and November, 2004 as festival quota. This additional sugar along with regular monthly quota was made available for distribution at the quantum of 700 grams per head in the months of August and November, 2004.

Kerosene

7.34 During the year 1999-2000 upto January, 2000 the State received monthly allocation of 1,68,972 kiloliters of kerosene from the Government of India. However, the Government of India decided to reduce the kerosene allotment at the rate 143 Litres per year per additional LPG connection released over and above the normal entitlement. Accordingly during the period from February, 2000 to April 2004, the Government of India has reduced the State's allocation by 44,315 kiloliters and since April, 2004 the State receives monthly allocation of 1,34,230 kiloliters. The retail price of kerosene for Mumbai Rationing Area is fixed at Rs. 9.20 per litre and in the rest of the districts, it is fixed between Rs.9.22 to Rs.10.80 per litre depending on distance criteria. These prices are in force w.e.f. October, 2002. There are 60,250 kerosene licensees in the State, out of which 80 are wholesale licensees.

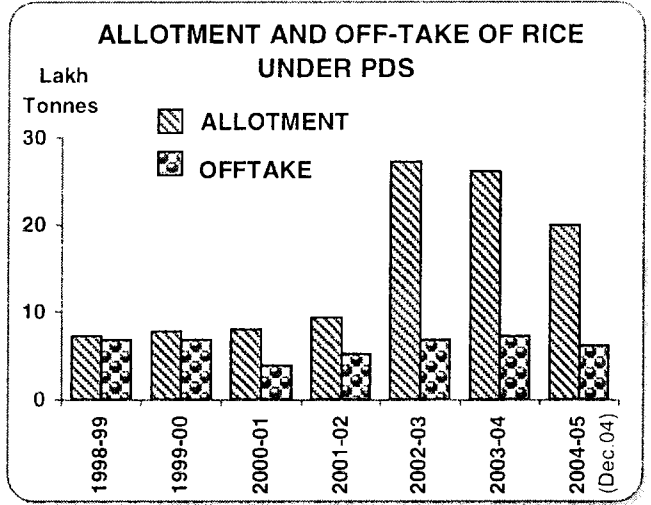
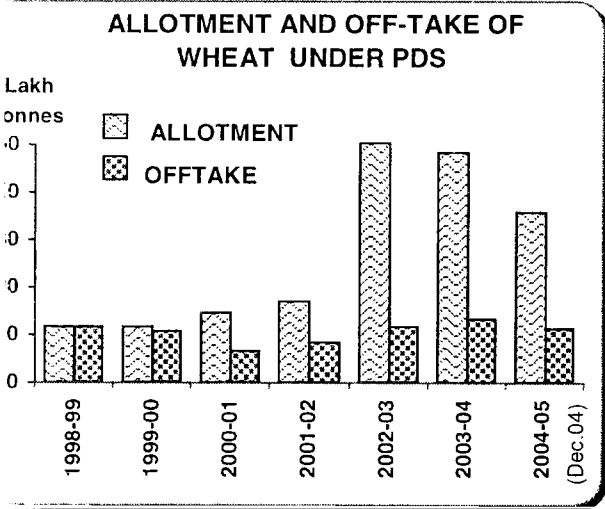
Support Price Scheme

7.35 As in the past, the State Government has made arrangements to purchase paddy, fair average quality (FAQ) jowar, bajra and maize under the support price scheme during kharif marketing season 2004-05 through the Maharashtra State Co-operative Marketing Federation and Maharashtra State Tribal Development Corporation. The support prices of paddy for Grade 'A' and common variety for 2004-05 season are fixed at Rs.590 and Rs.560 per quintal respectively. These prices were Rs.580 and Rs.550 per quintal respectively in the previous year. During 2004-05, the support prices fixed for FAQ jowar and bajra is Rs.515 and that for maize is 525 per quintal. It was Rs. 505 per quintal for all the three commodities in the previous year. During current marketing season upto the end of January, 2005, about 68,350 tonnes of paddy, 10,800 tonnes of jowar, 4,300 tonnes of bajra, and 13,850 tonnes of maize are procured. However, during 2003-04 these quantities were 1,85,833 tonnes, 49,981 tonnes, 193 tonnes and 16,836 tonnes respectively.

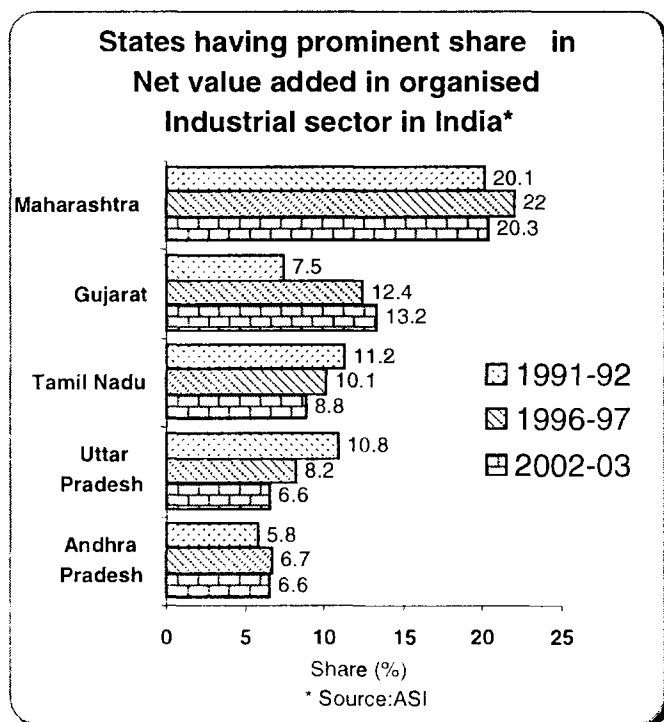
Levy on Rice Millers

7.36 The Maharashtra Rice (Levy on Rice Millers) Order, 1989 (State Order) is issued under Essential Commodities Act, 1955. As per this order, the rice millers are required to pay 30 per cent of the rice milled by them in the form of

levy to the Government, except for hullers and to some extent khavti milling for the cultivators and agricultural labourers. During 2003-04 season, about 1,96,964 tonnes of levy rice was collected from rice millers. In the current marketing season 2004-05, the Government has decided to accept voluntary rice from the rice millers.



8.1 Maharashtra has been considered as the country's industrial powerhouse. The State's consistent contribution of more than 20 per cent in net value added in the organised manufacturing sector in the country, which is unparalleled, reflects its high level of industrialisation. While the share of manufacturing sector in the GDP of the State is about 20 per cent the corresponding share at all India level is about 16 per cent. The Annual Survey of Industries (ASI), the main source of industrial statistics provides estimates of various aggregates like capital structure, employment, output, value added etc. pertaining to organised manufacturing sector. The latest ASI results (2002-03) revealed that Maharashtra continued to maintain its leading position in the country with its contribution of more than 20 per cent in the net value added in the manufacturing sector.



Index Number of Industrial Production (Manufacturing) in India

8.2 The Index number of Industrial Production (IIP) which covers mining, manufacturing and electricity sectors is a measure of industrial growth in the country and the same is being published by the Central Statistical Organisation for All-India as a monthly series. During 2004-05 (April to December) the growth in the industrial sector as per IIP (Base year 1993-94) was 8.4 per cent. The industrial growth as measured by IIP in the manufacturing sector, which accounts for 79 per cent weightage in the index, showed an increase of 7.2 per cent during 2003-04 against a growth of 6 per cent recorded during 2002-03. The growth in the manufacturing sector during 2004-05 (April to December) over the corresponding period of 2003-04 was 9 per cent. The IIP (manufacturing) for the month of December, 2004 was 229 (provisional) which showed an increase of 8.8 per cent over that of December, 2003.

Table No. 8.1
Index Numbers of Industrial Production in India

(Base Year 1993-94=100)

| Item | Weight | Average Indices | | Percentage growth | |
|---------------|--------|-----------------|----------|-------------------|----------|
| | | 2003-04 | 2004-05* | 2003-04 | 2004-05* |
| Gen. Index | 100.00 | 188.7 | 199.4 | 6.8 | 8.4 |
| Mining | 10.47 | 146.7 | 149.0 | 5.1 | 4.8 |
| Manufacturing | 79.36 | 196.3 | 208.5 | 7.2 | 9.0 |
| Electricity | 10.17 | 172.5 | 180.4 | 5.0 | 6.4 |

* For the period April to December, 2004 (Provisional)

Industrial scenario of Maharashtra

8.3 It has been observed that the industrial groups refined petroleum products; chemicals and chemical products; food products; machinery and equipments; motor vehicles, trailers; rubber, plastic

Products and electrical machinery contribute substantially to the industrial production of the State and at All-India level. Their contribution together was more than 71 per cent in the total net value added in the manufacturing sector in the State in 2002-03. Using the index number of industrial production in India (April to December, 2004) and the latest State level ASI data for 2002-03, it is surmised that the industrial production (manufacturing) in the State during 2004-05 has registered a growth of 8.2 per cent against similar growth of 7.8 per cent during 2003-04.

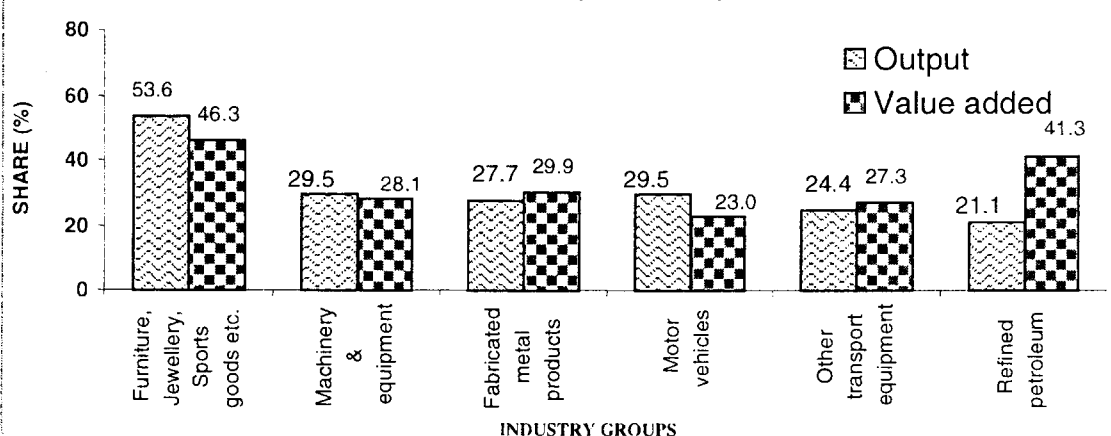
8.4 The latest ASI results i.e., for 2002-03 revealed that in the organised industrial sector in the country, the State contributed 19.2 per cent in gross value of output and 20.3 per cent in net value added; deployed 17.3 per cent of fixed capital and 16.6 per cent of productive capital. Out of the 25 major industry divisions at 2 digit level (NIC 98) covered under ASI, in as many as 19 industry divisions, Maharashtra was one among the first three leading states in the country in respect of value of output. Of these 19 industry divisions, the State occupied first position in 10 industry divisions and these industry divisions were i) food and beverages, ii) paper and paper products, iii) printing and publishing, iv) rubber and plastic, v) basic metal, vi) metal products, vii) machinery viii) electrical machinery, ix) motor vehicles and x) furniture. The State had more than one-fourth share in the total value of either output or value added or both in the country in respect of 6 industry divisions.

Annual Survey of Industries (ASI)

The ASI, which is the principal source of industrial statistics, is conducted across the country by the National Sample Survey Organisation (NSSO), Government of India. It covers all factories registered under section 2 m (i) and 2 m (ii) of Factory Act, 1948 and bidi & cigar manufacturing establishments registered under Bidi & Cigar Workers (Conditions of Employment) Act, 1966. It also covered electricity undertakings registered under Central Electricity Authority, certain services like cold storage, water supply, repairs of motor vehicles etc. The sampling design and the scope of the ASI have undergone revision in 1997-98 and again in 1998-99. At present all departmental undertakings and all electricity undertakings have been kept outside the purview of the survey. The National Industrial Classification (NIC) of 1998 has been introduced in the survey from 1998-99.

8.5 As per ASI 2002-03 results, the average investment on fixed capital per registered factory in the State was Rs. 429 lakh. At All-India level, it was Rs. 346 lakh. The results also revealed that the per factory production of goods and services at ex-factory price in the State was Rs. 1,226 lakh and per factory net value added was Rs. 197 lakh. Per factory average investment on fixed capital and production of goods & services during 2002-03 in the State registered an increase of 11 per cent and 20 per cent respectively over the same during 2001-02. The generation of employment

INDUSTRY GROUPS HAVING MORE THAN 25 PER CENT SHARE OF MAHARASHTRA IN THE TOTAL VALUE OF OUTPUT OR VALUE ADDED OR BOTH IN INDIA (ASI 2002-03)



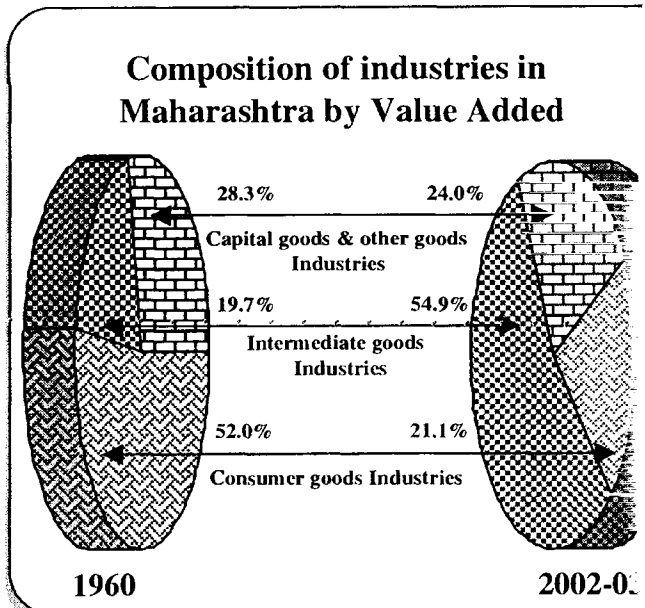
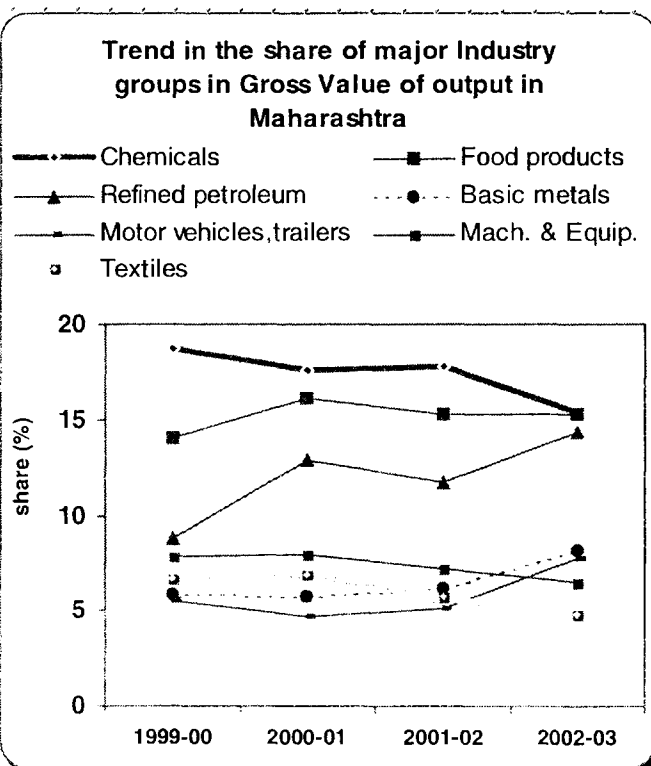
As per ASI 2002-03 results, the per capita net value added in the State (Rs.3,507) was 2.2 times that of All-India per capita net value added (Rs.1,563).

per factory in the State was for 66 persons. At All-India level per factory production of goods and services at ex-factory price was Rs. 884 lakh and per factory net value added was Rs.134 lakh. At All-India level per factory generation of employment was for 62 persons.

8.6 The industry divisions which contributed together more than 75 per cent to the industrial production in the State were (i) chemicals and chemical products (15.4 per cent), (ii) food products (15.3 per cent), (iii) refined petroleum products (14.3 per cent), (iv) basic metals (8.2 per cent) (v) motor vehicles, trailers (7.7 per cent) (vi) machinery and equipments (6.5 per cent), (vii) textiles (4.6 per cent) and viii) furniture (4.5 per cent). From the point of consumption of inputs, the above major industry divisions together consumed about 78.2 per cent of total inputs consumed by all industries covered under ASI in the State. In the case of investment also these industry divisions accounted for 74.1 per cent of fixed capital deployed in all industries taken together. It is, however, observed that the shares

of these groups in the total production varied over the years. While the shares of the industry group chemicals, mech. & equip. and textiles in total production showed a declining trend over the last few years the same in the case of industry group refined petroleum, basic metal and motor vehicles showed upward trend.

8.7 The composition of organised industrial sector in Maharashtra, as observed from ASI data has undergone considerable change over the decades. In 1960, the consumer goods industries were predominant and the share of net value added by these industries was then about 52 per cent of the total net value added by all the industries together. The relative importance of consumer goods industries in the State has gradually declined with shift towards the intermediate goods industries. The contribution in terms of net value added of consumer goods industries was only 21 per cent in 2002-03.



8.8 The salient features of industrial sector of the State for 2001-02 and 2002-03 based on ASI data are shown in Table No.32 of Part II. The net value added by all industries covered under ASI in the State during 2002-03 was Rs. 35,149 crore which was higher by 17.6 per cent than that of 2001-02.

8.9 To get an idea of the overall performance of industries, certain economic indicators are presented in Table No.8.2. The ratio of labor productivity and output per worker

Maharashtra in the year 2002-03 were more than those at All-India level. The wage rate in the State was also found to be higher than that at All-India level.

Industrial Policy

Central Policy

8.12 The main objectives of the Industrial Policy announced by the Government of India in July, 1991 were to introduce liberalisation with a view to integrating the Indian economy with the world economy, to remove restrictions on foreign direct investment (FDI) as also to free the domestic entrepreneurs from the restrictions of Monopolies and Restrictive Trade Practices (MRTP) Act. Accordingly, the Government of India has been taking various steps in this direction. The liberalisation process continued in 2004-05.

State Policy

8.13 The State has entered into the second phase of economic reforms in 2001 by providing better infrastructure, fiscal incentives and promoting exports from the industrial units. This in turn, resulted in flow of large investment in the industrial sector of the State. The objectives of Industrial Policy, 2001 are to accelerate further the flow of investment to industry and infrastructure by promoting Information Technology (IT), high-tech, knowledge based and Bio-technology (BT) industries, augmenting exports from the industrial units in the State and creating large scale employment opportunities duly ensuring environmental planning. The approach of the policy is to ensure sustainable industrial growth in the State by introducing structural changes in the wake of national consensus to discontinue sales tax based incentives, development of high-tech and other industries, creating conducive industrial climate and giving sharp competitive edge to the industrial sector of the State.

8.14 Highlights of the Industrial Policy, 2001 are as follows: 1) Under new package scheme of incentives, exemption from payment of electricity duty, stamp duty and registration fees and refund of octroi/entry tax to all new industrial units in backward areas of the State, 2) Special capital incentives in the form of grant for setting up new Small Scale Industry (SSI) units in backward areas of the State and interest subsidy to new textile, hosiery and knitwear SSI units, 3) Exemption from payment of sales tax to Khadi & village industries, 4) Minimum floor rate of sales tax and no turn-over tax on IT products, 5) Rescheduling of arrears payment of sick SSI

Table No.8.2

Some Economic Indicators relating to industries

| Indicator | 2001-02 | 2002-03 |
|-------------------------------------|---------|---------|
| Labour productivity ratio* | | |
| <i>Maharashtra</i> | 5.39 | 6.08 |
| <i>India</i> | 4.95 | 5.49 |
| Output per worker (Rs. in lakh) | | |
| <i>Maharashtra</i> | 22.16 | 26.45 |
| <i>India</i> | 16.15 | 18.37 |
| Annual wages per worker (in Rs.) | | |
| <i>Maharashtra</i> | 67,360 | 70,231 |
| <i>India</i> | 48,691 | 50,797 |

*Net value added per rupee of wages to workers

8.10 Broad industry groupwise ratios of economic importance relating to organised industries in the State are given for the years 2001-02 to 2002-03 in Table No. 35 in part II. The capital-output ratio provides a measure of capital required to produce one rupee worth of net value added. This ratio for 2002-03 was 2.2 against 2.3 in 2001-02. The level of efficiency is measured by the ratio of net value added to gross output. This ratio for 2002-03 was 0.16, the same as that in 2001-02.

Industrial pollution

8.11 In Maharashtra, nearly 50 per cent of factories in the State belonged to the polluting category (ASI 1997-98). These industries contributed about 58 per cent of output and 50 per cent of value added in the manufacturing sector of the State. Nearly 50 per cent of factory workers in the State were employed in such polluting industries. At All-India level 68 per cent of output of the manufacturing sector was contributed by polluting industries and 60 per cent of total workforce in the sector was employed in such industries. As such, on environmental reasons the economy can not afford to shutdown these industries. Instead, rigorous implementation of the pollution abatement measures in such polluting industries is the need of the hour.

Plan to set up Special Economic Zones at -

- | | |
|-----------------------|---------------------------------|
| ★ Butibori (Nagpur) | ★ Kagal-Hatkanangale (Kolhapur) |
| ★ Sinnar (Nashik) | ★ Shendre(Aurangabad) |
| ★ Guhagar (Ratnagiri) | ★ Khopta (Raigad) |

Self-governing industrial townships proposed at -

- | | |
|------------------------------|------------------------|
| ★ Vile Bhagad (Raigad) | ★ Airoli (Navi Mumbai) |
| ★ Talegaon-Dabhade (Pune) | ★ Hinjewadi (Pune) |
| ★ Shendre (Aurangabad) | ★ Additional Latur |
| ★ Nandgaon Peth (Amravati) | ★ Additional Yavatmal |
| ★ Tadali (Chandrapur) | ★ Butibori (Nagpur) |
| ★ Additional Sinnar (Nashik) | ★ Nardhana (Dhule) |
| ★ Waluj (Aurangabad) | ★ Paithan(Aurangabad) |
| ★ Nanded | ★ Hingoli |
| ★ Osmanabad | |

Proposed Export Zones at - Agro Exports Zone

- | | | |
|---------------------|--------|------------------------------------|
| ★ Nashik | Satara | Pune |
| ★ Solapur | Sangli | Ahmednagar |
| ★ Grape wine parks | - | Winchur (Nashik) Palus (Sangli) |
| ★ Food park | - | Alkud- Manerajuri (Sangli) |
| ★ Floriculture park | - | Talegaon (Pune) |
| ★ Orange city park | - | Nagpur |
| ★ Bio-Tech parks | - | Hinjewadi (Pune) Jalna |

Other Exports Zone

- | | | |
|--------------------------|---|---|
| ★ Gems & Jewellery parks | - | Andheri (Mumbai) Navapur (Nandurbar) |
| ★ Textile parks | - | Butibori (Nagpur) Airoli (Navi Mumbai) |
| ★ Silver park | - | Hupari (Kolhapur) |

units, 6) Establishment of IT/BT units on textile mill lands in Mumbai, 7) Additional FSI for IT units, 8) Establishment of self-governing industrial townships at different places in the State, 9) Development of non-conventional energy, 10) Setting up of special economic zones, 11) Providing land to Educational & research institutes of national and international standards in industrial areas/estates at concessional rates and 12) Permission for captive power generation.

8.15 The Government of India has introduced the scheme of development of special economic zones (SEZs) for increasing foreign direct investment in the country and to boost the exports from the country. The Central Government has already established special economic zone (SEEPZ) at Andheri, Mumbai. Under this scheme, such type of zone is being

created at Dronagiri, Navi Mumbai. The State Government gives following benefits under SEZ policy : 1) 100 per cent exemption in payment various taxes & fees such as sales tax, turnover tax, property tax, state excise duty, stamp duty and registration fees, etc. 2) Permission for captive power generation and 3) Status of public utility service with labour laws relaxation to all 100 per cent export-oriented units. The State Government has planned to set up SEZs, self-governing industrial townships, agro and other export zones at different places in the State.

Bio-Technology Policy

8.16 The State Government has announced 'Bio-Technology Policy' in December, 2001. Under this policy, special capital incentives such as exemption of stamp duty, permission for captive power generation, electricity duty exemption, octroi refund, etc. are being extended to bio-technology units.

Information Technology Policy

8.17 The State Government declared its firm 'Information Technology Policy' in 1998 with the mission statement 'Empowerment through connectivity'. The objective was to develop a system in the State having the capacity 'Anytime, Anyhow and Anywhere connectivity'. The State Government has declared a 'Information Technology (IT) and Information Technology Enabled Services (ITES) Policy 2003. The objective of this policy is to make Maharashtra the most favoured destination for investment in the IT and ITES industries. For achieving the objectives of this policy, the State Government has committed for : i) creation of institutional framework in IT and ITES areas; ii) providing unique infrastructure, iii) developing a pool of skilled globally employable manpower; iv) creating industry-friendly and supportive environment, v) providing various fiscal incentives to IT parks and vi) giving directions to urban local bodies for supporting IT and ITES units.

8.18 The State Government with the help of City and Industrial Development Corporation (CIDCO) & Maharashtra Industrial Development Corporation (MIDC) is developing public Information Technology (IT) parks in different areas of the State. Accordingly, 27 Government / Public IT parks and 90 private IT parks are being developed in the State. The E-governance policy is aimed at providing quality services

citizens, improving efficiency in delivery of services, increasing revenue of the State and bringing greater transparency in the administration. Accordingly, citizen facility centres under the name 'SETU' have already been set up at 25 districts and 273 taluka places, through which 83 oftenly required certificates are issued to the public on demand. It is also proposed to set up I-SETU centres in big cities through which services like railway/bus reservation, payment of telephone/electricity bills, payment of various bills of Municipal Corporation, birth & death certificates, etc. are to be provided.

Industrial Investment

8.19 Better infrastructure and incentives provided to the industries has attracted a lot of industrial investment in the State. Since adoption of liberalisation policy in August, 1991, the total 11,967 industrial projects with an investment of Rs. 2,65,411 crore have been registered with the Government of India by the end of October, 2004 for setting up industries in the State. It is expected that these projects will generate employment of about 20.47 lakh. Of the total investment, about 22 per cent will be in Konkan (including Greater Mumbai) region, 22 per cent in Pune region, 12 per cent in Nashik region and 10 per cent in Nagpur region. Of the 11,967 industrial projects, 5,336 (46 per cent) projects involving an investment of Rs. 88,334 crore (33 per cent) had started their production and about 5.95 lakh (29 per cent) employment was generated. The projects under execution were 1,492. Remaining 4,939

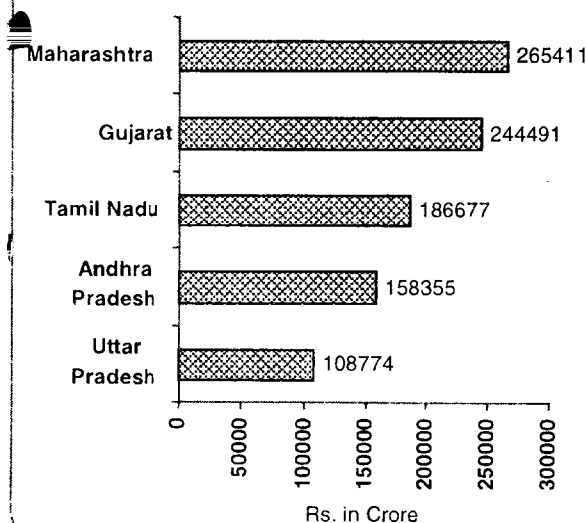
Industrial Investment (Since August, 1991 upto October, 2004)

| | |
|--|----------|
| ❖ Projects registered (no.) ... | 11,967 |
| ❖ Investment (Rs. in crore) ... | 2,65,411 |
| ❖ Employment to be generated (in lakh) ... | 20 |

projects were at different stages of implementation. The progress of industrial investment in Maharashtra is given in Table No.8.3. Of the total investment in the State, the major investments were in chemicals & fertilisers (21 per cent), metallurgical (19 per cent), food processing (12 per cent), textiles (8 per cent), IT (6 per cent), engineering (6 per cent), electrical and electronics (5 per cent) and rubber & petroleum (5 per cent). Of the total industrial investment in the country made during August, 1991 to October, 2004, Maharashtra remained at the top position with 17 per cent share in investment as well as in employment.

8.20 During 2003 - 2004, the Government of India issued 9 letters of intent, 14 industrial licences and 534 Industrial Entrepreneur's Memoranda for setting up medium and large scale industries in the State. These were mainly from Pune, Nashik and Nagpur districts. The large number of industries among them were drugs and pharmaceuticals, chemicals, textiles, information technology, iron & steel and engineering. During April - December, 2004, the

**Industrial investment in major States
(August, 1991 to October, 2004)**



**Industrial investment by
sectors in the State**

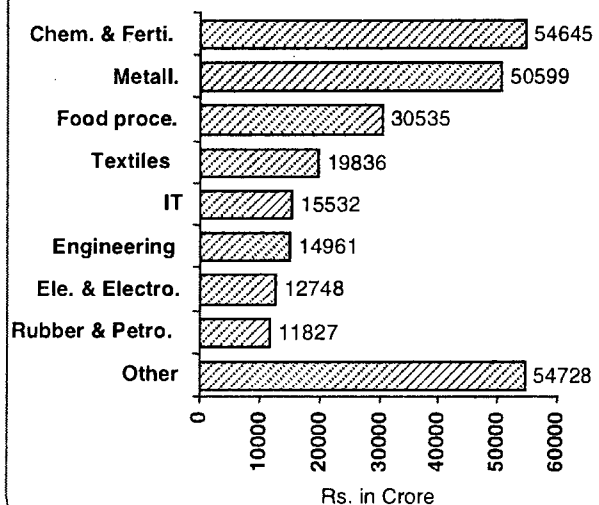


Table No. 8.3
Progress of Industrial Investment in Maharashtra

| Year | Projects registered during the year | | | Out of projects registered in the corresponding year, no. of projects implemented upto the end of October, 20 | | |
|--------------|-------------------------------------|--------------------------|-------------------------------|---|--------------------------|--------------------------------|
| | No. | Investment (Rs.in crore) | Targeted employment (in '000) | No. | Investment (Rs.in crore) | Employment generated (in '000) |
| 1991-92 * | 778 | 20,673 | 151 | 443 | 11,750 | 69 |
| 1992-93 | 994 | 21,172 | 178 | 548 | 8,496 | 69 |
| 1993-94 | 1,480 | 18,092 | 230 | 869 | 9,807 | 91 |
| 1994-95 | 979 | 19,654 | 160 | 580 | 10,986 | 57 |
| 1995-96 | 1,077 | 20,780 | 210 | 622 | 10,379 | 46 |
| 1996-97 | 812 | 16,568 | 130 | 471 | 3,788 | 34 |
| 1997-98 | 576 | 6,947 | 85 | 366 | 2,923 | 26 |
| 1998-99 | 1,303 | 42,468 | 292 | 453 | 4,226 | 46 |
| 1999-2000 | 841 | 37,789 | 150 | 382 | 3,043 | 23 |
| 2000-01 | 724 | 15,114 | 120 | 315 | 1,747 | 18 |
| 2001-02 | 703 | 9,997 | 101 | 261 | 2,323 | 78 |
| 2002-03 | 626 | 21,583 | 75 | 129 | 12,586 | 26 |
| 2003-04 | 685 | 8,878 | 125 | 48 | 745 | 6 |
| 2004-05 ** | 389 | 5,696 | 40 | 49 | 5,535 | 6 |
| Total | 11,967 | 2,65,411 | 2,047 | 5,536 | 88,334 | 595 |

* From August, 1991

** Upto October, 2004

Government of India issued two letters of intent, eight industrial licences and 526 Industrial Entrepreneur's Memoranda for the industries to be set up in Maharashtra.

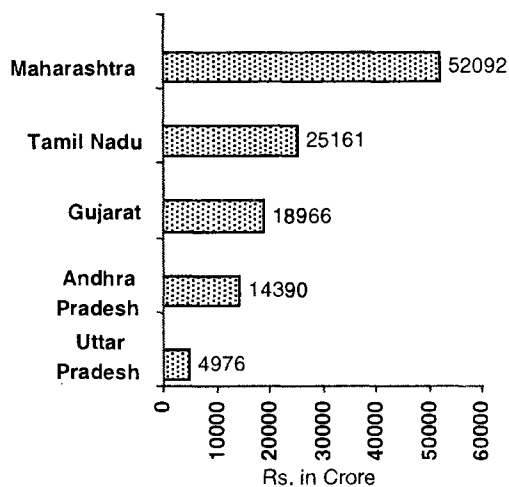
Foreign Direct Investment

8.21 Liberalisation policy adopted in August, 1991 resulted in faster industrial development in the State, due to Foreign Direct Investment (FDI). Under FDI, upto end of August, 2004, 3,655 projects with an investment of Rs.52,092 crore have been approved by the

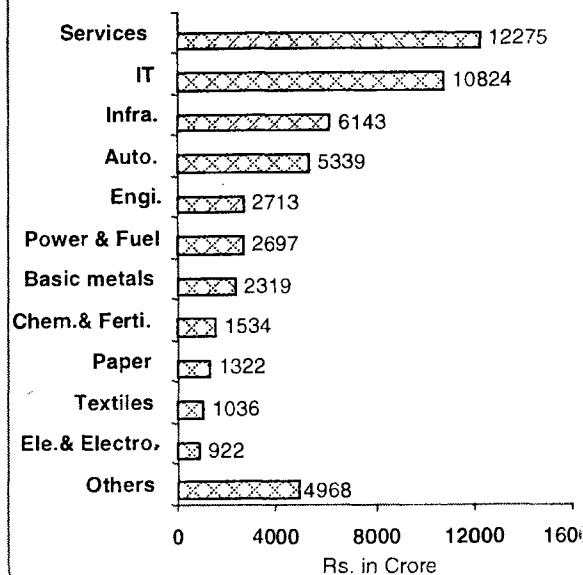
Foreign Direct Investment (FDI) (Since August, 1991 to August, 2004)

- ❖ Projects approved (no.) 3,655
- ❖ Investment (Rs.in crore) 52,092

Most favoured States for FDI (August, 1991 to August, 2004)



FDI by sectors in the State (August, 1991 to August, 2004)



Government of India for setting up industries in the State. Of these projects, 1,303 (36 per cent) projects with an investment of Rs.32,020 crore (61 per cent) have already started production by August, 2004. Maharashtra remained at the top position in FDI with 21 per cent share of investment in the country. Foreign Direct Investment was mainly in the field of services (24 per cent), IT (21 per cent), infrastructure (12 per cent), automobile (10 per cent), engineering (5 per cent), power & fuel (5 per cent) and basic metals (5 per cent).

Exports from Maharashtra

8.22 The main products exported from the State are software, gems & jewellery, ready-made garments, cotton yarns, made-up fabrics, machinery & instruments, metal & metal products and agro-based products. The total exports from the State during 2002-03 was Rs.99,778 crore which was more by 35 per cent than that of the previous year. Exports from Maharashtra and India are given in Table No.8.4. Of the total exports from India, about one-third exports was from the Maharashtra.

Table No. 8.4

Exports from Maharashtra & India

(Rs.in crore)

| Year | Maharashtra | India |
|-----------|-------------|----------|
| 2000-2001 | 69,474 | 2,30,809 |
| 2001-2002 | 73,865 | 2,44,245 |
| 2002-2003 | 99,778 | 3,00,290 |

Package Scheme of Incentives

8.23 Package scheme of incentives is introduced in 1964 for dispersal of industries located in the Mumbai, Thane and Pune belt to the underdeveloped and developing areas

of the State. Under the scheme, various incentives such as refund of octroi/entry tax, exemption in electricity duty, concessional power supply, etc. are given to the industries. This scheme is implemented through Directorate of Industries for medium and large scale industries and District Industries Centres for small scale industries. The new package scheme of incentives is being implemented from 1st April, 2001 and shall remain in operation for a period of five years. The industries fulfilling eligibility criteria of 'Package scheme of incentives, 1993' are also eligible under new scheme. New units of IT, BT, non-conventional energy units, units generating electricity from bio-gas, municipal waste, etc. and new conventional energy units are also eligible under this scheme. With a view to disperse industries to the industrially backward districts of the State by raising scale of incentives, the talukas have been reclassified as industrially backward talukas under the 'Package scheme of incentives-2001' which is shown in Table No.8.5. During 2004-05 up to December, 2004, an amount of Rs.23 crore was made available by the State Government for disbursement as a subsidy to 836 SSI units. The corresponding figures for the year 2003-04 were Rs.75 crore and 566 SSI units respectively.

Small Scale Industry Sector

8.24 The Small Scale Industry (SSI) sector plays a major role in the economy contributing substantially in the form of production, employment and export. For speedy growth of SSI sector in the State, the Government has already brought about simplifications in the SSI registration procedure. The maximum investment limit for hand tools and hosiery SSI units is kept

Table No. 8.5

Reclassification of talukas under 'Package scheme of incentives, 2001'

| Region | No.of talukas | No.of Talukas by category | | | | | Total |
|--------------|---------------|---------------------------|----------|-----------|-----------|------------|------------|
| | | A | B | C | D | D+ | |
| Konkan | 47 | 14 | 3 | 7 | 3 | 20 | 47 |
| Pune | 58 | 5 | - | 7 | 17 | 29 | 58 |
| Nashik | 54 | - | 2 | 3 | 18 | 31 | 54 |
| Aurangabad * | 76 | - | - | - | 1 | 70 | 71 |
| Amravati | 56 | - | - | - | - | 56 | 56 |
| Nagpur * | 64 | - | - | - | 1 | 51 | 52 |
| Total | 355 | 19 | 5 | 17 | 40 | 257 | 338 |

* Hingoli and Gadchiroli districts are declared as no industry districts.

of the Board are to organise, develop and expand activities of Khadi and Village Industries (KVI) in the State. The Board provides financial assistance to individuals, registered institutions and co-operatives. It also provides technical guidance and training to individual beneficiaries and makes arrangement in marketing of products of village industries, etc.

8.35 Details of financial assistance made available by various financial institutions and the State Government to KVI sector in the State are given in Table No.8.8.

Table No.8.8
Financial assistance provided to KVI Sector

| Particulars | (Rs. in lakh) | | |
|----------------------|---------------|---------|-----------------------|
| | 2002-03 | 2003-04 | 2004-05 (Expected) |
| a) Grants by: | | | |
| KVI Commission | 263 | 241 | 622 |
| State Government | 1,393 | 1,411 | --- |
| b) Loans by: | | | |
| Banks* | 3,017 | 1,559 | --- |

* These includes nationalised banks, co-operative banks and other financial institutions.

8.36 Presently, 116 categories of industries are in the purview of the KVI sector. Under Artisan Employment Guarantee Scheme, employment opportunities were provided to 3.96 lakh artisans during 2003-04, as compared to 3.67 lakh artisans for the previous year. It is expected that during 2004-05, employment opportunities will be provided to 4.02 lakh artisans.

8.37 The Board is also implementing a special scheme of bee-keeping in the Western ghat region of the State. The board had distributed 622 bee-boxes during the year

2003-04. Presently, 5,673 bee boxes are in working condition. From these bee-boxes, 10,830 kg. honey worth of Rs.9.75 lakh was produced.

8.38 The value of production and employment generated from these assisted units is given in Table No.8.9.

Table No.8.9
Value of production and employment generated in KVI units

| Year | Units assisted | Value of production (Rs. in crore) | Employment (in lakh) |
|-----------|----------------|---------------------------------------|-------------------------|
| 2002-03 | 2,43,392 | 1,101 | 4.98 |
| 2003-04 | 2,48,089 | 1,132 | 5.18 |
| 2004-05 * | 2,48,089 | 1,188 | 5.43 |

* Estimated

(b) State and Central Level Financial Institutions

8.39 Several Central as well as State level financial institutions are providing financial assistance to the industries in Maharashtra. The Central level financial institutions are IFCI Ltd. IDBI, SIDBI, IIBI Ltd., LIC & GIC, whereas the State level financial institutions are MSFC & SICOM Ltd. Details of finance sanctioned and disbursed to the industries in Maharashtra are shown in Table No.8.10. During the year 2003-04, these institutions together sanctioned loan of Rs.6,751.19 crore whereas disbursed Rs.8,767.90 crore to the industrial units in Maharashtra. The details of financial assistance sanctioned and disbursed by financial institutions to the industries in Maharashtra are given in Table No.36 of part II.

Minerals

8.40 In Maharashtra, minerals like coal, limestone, manganese ore, bauxite, iron ore

Table No.8.10
Details of finance sanctioned and disbursed to the industries in Maharashtra

(Rs.in crore)

| Financial Institutions | Institutions (No.) | 2002-03 | | 2003-04 | |
|------------------------|--------------------|------------|-----------|------------|-----------|
| | | Sanctioned | Disbursed | Sanctioned | Disbursed |
| Central | 4 | 8,712.97 | 7,180.56 | 6,524.70 | 8,534.42 |
| State | 2 | 381.20 | 359.23 | 226.49 | 233.56 |

olomite, laterite, kyanite, fluorite (graded), chromite, etc. are found. These minerals are mainly found in Bhandara, Chandrapur, Gadchiroli, Nagpur, Yavatmal, Kolhapur, Satara, Raigad, Ratnagiri, Sindhudurg and Thane districts. The total potential mineral area is about 19 thousand sq.km. which is about 19 per cent of the total geographical area. The production of major minerals alongwith their values are given

in Table No.37 of Part II.

8.41 The total value of minerals extracted during the year 2003-04 was Rs.3,132 crore which was more by 5 per cent of the total value of the previous year. The value of coal extracted during 2003-04 was Rs.2,608 crore, which was 83 per cent of the value of total minerals extracted in the State.

Maharashtra Scenario

9.1 Agriculture sector plays an important role in the economy. According to the Population Census 2001, the total number of workers (main and marginal) in Maharashtra was 4.21 crore, of which cultivators and agricultural labourers were 28.56 per cent and 26.85 per cent respectively. Thus, more than 55 per cent of the workers in the State directly depend on agriculture for their livelihood. However, the share of Agriculture and Animal Husbandry in the Gross State Domestic Product (GSDP) for the year 2003-04 has remained comparatively low, at around 11.4 per cent. This is because the soil, topography and climate in Maharashtra are not much favourable to agriculture. Nearly one-third area of the State falls under rain shadow region. As a result, the agriculture in the State is not as productive as that at the national level. Though, the proportion of area under agriculture in the State at 57.2 per cent is much more than such proportion at the national level (46.1 per cent), the proportion of gross irrigated area in the State is just around 17 per cent as against, around 41 per cent at the national level. Consequently, the per hectare crop yield in Maharashtra is much lower than that at the national level.

Monsoon 2004

9.2 The South-West monsoon arrived in the State by 10th June, 2004, late by 3 days. In almost all the parts of the State, the intensity and spread of the rainfall was good till 19th June, 2004. Since 20th June, there was dry spell of 7 to 12 days and even more days in some districts of Vidharbha, Marathwada and the rest of Maharashtra, excluding Konkan. The dry period was prolonged in Vidarbha and North Maharashtra. As a result, some *kharif* crops like cotton, groundnut, jawar, bajara and maize were

required to be resown. Similarly, crops like soyabean (oilseed), urid and mung (pulses) were adversely affected, thereby their production likely to fall. However, after 21st July, the were sufficient rains all over the State and sowing of *kharif* crops, including plantation of paddy was geared up. The sowing of *kharif* crops which was completed 62 per cent by the end of June 2004, was 100 per cent completed by the end of August, 2004. During September-October 2004, spread of the rainfall was good throughout the State. As a result, 98 per cent *rabi* sowing was completed, as against 86 per cent during the previous year. Overall situation of *rabi* crops in the State is satisfactory. The unseasonal rain occurred in the month of January, 2005 (23rd to 31st January) in almost all the parts of the State and the heavy rainfall, hail-storm occurred in some parts of Vidharbha and Marathwada regions affected the *rabi* and horticulture crops. The rainfall received in the month of June was 99 per cent of the normal rainfall, while it was 71 per cent in July, 112 per cent in August, 100 per cent in September and 56 per cent in October of the normal rainfall. The total rainfall received in the State during 10th June to 31st October 2004 was 86.1 per cent of the normal rainfall. Due to its uneven spread, some of the districts in Vidharbha, Marathwada and partly from Western Maharashtra did not receive satisfactory rainfall. Out of the 33 districts in the State (excluding Mumbai City and Mumbai Suburban District) as per the norms followed by the Indian Meteorological Department (IMD), 15 districts received deficient rainfall, i.e. 41 to 80 per cent, 10 districts received 81 to 100 per cent and 8 districts received rainfall above 100 per cent of the normal rainfall. Classification of the districts according to the extent of rainfall is shown in Table No. 9.1.

Table No. 9.1

Classification of districts according to the percentage rainfall received during the monsoon 2004

| Percentage of rainfall to the normal rainfall | Number of districts Covered* |
|---|------------------------------|
| Up to 40 | - (0.0%) |
| 41 - 80 | 15 (45.5%) |
| 81 - 100 | 10 (30.3%) |
| 101 - 119 | 5 (15.1%) |
| 120 & above | 3 (9.1%) |
| Total | 33 (100.0%) |

*Excluding Mumbai City & Mumbai Suburban districts

9.3 Talukawise rainfall data reveals that according to IMD norms, 9 out of the total 353 talukas in the State received scanty (less than 40 per cent to normal), 159 talukas received deficient (1 to 80 per cent), while 44 talukas received excess (120 per cent and above) rainfall. The details are presented in Table No.9.2.

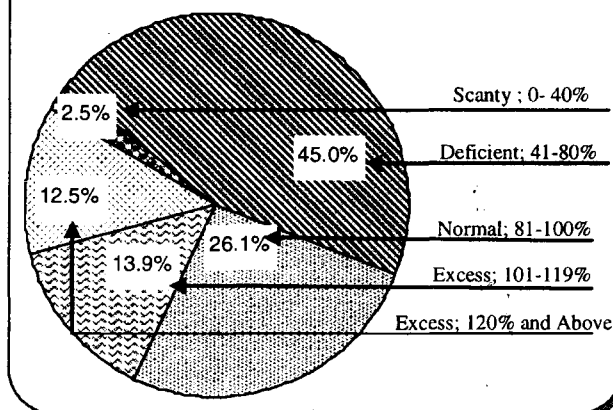
Table No. 9.2

Classification of talukas according to the percentage of rainfall received during monsoon 2004

| Percentage of rainfall received | Number of talukas | | | | | | Total |
|---------------------------------|-------------------|-----------|-----------|------------|-----------|-----------|---------------------|
| | Konkan | Nashik | Pune | A'bad vati | Amravati | Nagpur | |
| Up to 40 | - | - | - | 2 | 5 | 2 | 9 (2.5%) |
| 41-80 | 8 | 7 | 7 | 45 | 40 | 52 | 159 (45.0%) |
| 81-100 | 26 | 12 | 16 | 22 | 8 | 8 | 92 (26.1%) |
| 101-119 | 7 | 13 | 19 | 6 | 3 | 1 | 49 (13.9%) |
| 120 & above | 6 | 22 | 15 | 1 | - | - | 44 (12.5%) |
| Total | 47 | 54 | 57 | 76 | 56 | 63 | 353 (100.0%) |

9.4 Out of the 168 talukas which received scanty or deficient rainfall, 99 (58.9 per cent) talukas were from Vidharbha region, 47 (28.0 per cent) from Marathwada region, 14 (8.3 per cent) were from Central Maharashtra (Nashik and Pune Divisions) and 8 (4.8 per cent) talukas were from Konkan region. Thus, the overall picture of the rainfall received during monsoon-2004 in the State was not satisfactory. This has resulted in downfall of the agricultural production for both the *khari* and *rabi* crops.

DISTRIBUTION OF TALUKAS BY RAINFALL DURING MONSOON 2004



9.5 The percentage distribution of 353 talukas according to the rainfall is given in Table No. 9.3.

Table No. 9.3

Percentage distribution of talukas by actual rainfall received

| Rainfall classes (In mm) | Percentage distribution of talukas | |
|--------------------------|------------------------------------|--------------------------|
| | Monsoon-2004 | As per long-term average |
| Up to 250 | - | - |
| 251 - 500 | 19.0 | 8.8 |
| 501 - 750 | 43.6 | 28.6 |
| 751 - 1,000 | 14.2 | 24.9 |
| 1,001 - 2,000 | 7.9 | 22.9 |
| 2,001 - 5,000 | 14.4 | 14.2 |
| Above 5,000 | 0.9 | 0.6 |
| Total | 100.0 (353) | 100.0 (353) |

9.6 As stated above, the monsoon-2004 in Maharashtra has been very unfavourable affecting the agriculture production continuously in the fourth year. As per *final paisewari*, the State Government has declared drought situation in 12,034 villages from 25 districts as per the norms, the Government ordered to give instant relief to the affected cultivators.

Reservoir Storage Status

9.7 The total live storage as on 15th October, 2004 in the major, medium and minor irrigation (State sector) reservoirs in the State taken together was 21,954 million cubic meters (MCM), which was about 71 per cent of the project storage.

This percentage was 65 on the same date in the year 2003 and 70 in 2002. Divisionwise information presented in the Table No. 9.4 reflects that the percentage of live storage as on 15th October, 2004 was comparatively high in Konkan (95 per cent), Nashik (94 per cent) and Pune (89 per cent) divisions and low in Aurangabad (46 per cent), Amaravati (34 per cent) and Nagpur (28 per cent) divisions.

Table No. 9.4
**Reservoir live storage status as on
15th October, 2004**

| Division | No. of reser-voirs | Live Storage (MCM) | | Percentage of live storage as on 15th October | | |
|--------------|--------------------|-----------------------|----------------|---|-----------|-----------|
| | | As per Project design | As on 15.10.04 | 2004 | 2003 | 2002 |
| Konkan | 103 | 487 | 465 | 95 | 94 | 92 |
| Nashik | 320 | 3,786 | 3,547 | 94 | 77 | 81 |
| Pune | 488 | 9,245 | 8,226 | 89 | 57 | 68 |
| Aurangabad | 471 | 6,218 | 2,847 | 46 | 36 | 52 |
| Amaravati | 319 | 2,381 | 809 | 34 | 71 | 85 |
| Nagpur | 358 | 3,447 | 951 | 28 | 81 | 58 |
| Others* | 14 | 5,395 | 5,109 | 95 | 88 | 83 |
| Total | 2,073 | 30,959 | 21,954 | 71 | 65 | 70 |

* Storages for drinking water and hydro-electric projects

Agricultural Production in 2004-05

9.8 According to the preliminary forecast, the total foodgrains production in the State during 2004-05 is expected to be 107.5 lakh tonnes, more by 4.99 per cent than the production of 102.4 lakh tonnes during the previous year. Broad details of the foodgrains production are given in the Table No. 9.5.

Table No. 9.5
Foodgrains production in Maharashtra
(Lakh tonnes)

| Crop | 2004-05 (Tentative) | 2003-04 (Final forecast) | Percentage increase (+)/ decrease (-) |
|-------------------------|------------------------|--------------------------------|---|
| Kharif + Rabi | | | |
| (i) Cereals | 93.21 | 82.84 | 12.52 |
| (ii) Pulses | 14.29 | 19.55 | (-)26.91 |
| Total foodgrains | 107.50 | 102.39 | 4.99 |
| Oilseeds | 29.10 | 28.37 | 2.57 |

Kharif Crops

9.9 During 2004-05, the status as regards the area under *kharif* crops and the production thereof was as follows.

Kharif cereals

9.9.1 During 2004-05, the area under *kharif* cereals was 51.5 lakh hectares, which was more by 4.3 per cent than that in the previous year. However, the production of cereals during 2004-05 is expected to be less by 6.3 per cent at 62.5 lakh tonnes than that of 66.6 lakh tonnes during the previous year. The area under rice during 2004-05 was 14.5 lakh hectares, less by 3.1 per cent than that in the earlier year, while the production is expected to be at 23.9 lakh tonnes, less by 13.5 per cent than that in the earlier year. The area under *kharif* jowar was 14.5 lakh hectares, less by 9.4 per cent than that in the earlier year and the production thereof is expected to be less by 24.3 per cent at 16.0 lakh tonnes. In the case of bajra, the cropped area (16.1 lakh hectares) was more by 21.4 per cent and the production is expected to be at 13.0 lakh tonnes, much more (44.8 per cent) than that in the earlier year.

Kharif pulses

9.9.2 The area under *kharif* pulses in the State in 2004-05 was 22.7 lakh hectares, less by 9.5 per cent than that in the earlier year and the production is expected to be much low at 9.5 lakh tonnes, less by 38.1 per cent than that in the earlier year. By the preliminary forecast, the area under tur in 2004-05 is estimated at 11.5 lakh hectares, more by 6.4 per cent, however, the production is expected to be at 5.68 lakh tonnes, less by 18.0 per cent than that in the earlier year.

Kharif oilseeds

9.9.3 The area under *kharif* oilseeds during 2004-05 was 29.1 lakh hectares, more by 32.4 per cent and the production is expected to be at 27.0 lakh tonnes, more by 1.3 per cent than that in the previous year. Under *kharif* oilseeds, soyabean is major crop and it accounted for 77 per cent area. The area under soyabean was more by 42.1 per cent and however, its production during 2004-05 is expected to be 21.8 lakh tonnes, less by 1.9 per cent. Area under *kharif* groundnut during 2004-05 was 3.38 lakh hectares, more by 4.3 per cent than

that in the previous year and the production is expected to be at 4.1 lakh tonnes, more by 15.2 per cent.

Cotton

9.9.4 The area under cotton during 2004-05 was 30.4 lakh hectares, more by 0.1 per cent than that in the previous year, but the cotton (lint) production is expected to be at 1.1 lakh tonnes, less by 3.1 per cent.

Sugarcane

9.9.5 During 2004-05 the area under sugarcane considerably reduced to 3.2 lakh hectares, less by 38.4 per cent than that in the previous year. This is because of drought situation in the previous year. The sugar production is also expected to fall to 204 lakh tonnes, less by 1.5 per cent than in the previous year. The spread of the pest called lokari mava has affected the production heavily.

9.9.6 The area and production of principal kharif crops in the State are given in Table No. 9.6

Rabi crops

9.10 The area under rabi foodgrains (excluding summer crops) in 2004-05 was 48.5 lakh hectares, more by 7.6 per cent than that in the previous year. In 2004-05, the area under rabi jowar is expected to be more by 12.1 per cent than the area during the previous year, while that under wheat is expected to be more by 6.8 per cent. In the case of rabi pulses, the area is expected to be less by 6.1 per cent than that in the earlier year. As per tentative forecast, the production of rabi foodgrains (excluding summer cereals) in 2004-05 is expected to be 35.96 lakh tonnes, more by 71.2 per cent than the production of 21 lakh tonnes in 2003-04. As per tentative forecast the production of rabi jowar, rabi wheat and rabi oilseeds is expected to be more by 167.3 per cent, 18.9 per cent and 22.8 per cent respectively. The area and production of principal rabi crops in the State are given in Table No. 9.7.

Table No. 9.6
Area and production of principal kharif crops in Maharashtra State

(Area in thousand hectares)
(Production in thousand tonnes)

| Crop | Area | | | Production | | |
|--------------------------------|--------------------------------|------------------------|----------------------|--------------------------------|------------------------|----------------------|
| | 2003-04 (Final forecast) | 2004-05 (Tentative) | Percentage change | 2003-04 (Final forecast) | 2004-05 (Tentative) | Percentage change |
| Rice | 1,500 | 1,453 | (-) 3.1 | 2,769 | 2,394 | (-) 13.5 |
| Bajri | 1,325 | 1,609 | 21.4 | 896 | 1,297 | 44.8 |
| Kharif jowar ... | 1,586 | 1,437 | (-) 9.4 | 2,111 | 1,598 | (-) 24.3 |
| Other kharif cereals | 528 | 652 | 23.5 | 879 | 947 | 7.7 |
| Total kharif cereals | 4,939 | 5,151 | 4.3 | 6,655 | 6,236 | (-) 6.3 |
| Pulses | 1,046 | 1,113 | 6.4 | 693 | 568 | (-) 18.0 |
| Other kharif pulses | 1,466 | 1,161 | (-) 20.8 | 791 | 350 | (-) 55.8 |
| Total kharif pulses | 2,512 | 2,274 | (-) 9.5 | 1,484 | 918 | (-) 38.1 |
| Total kharif foodgrains | 7,451 | 7,425 | (-) 0.3 | 8,139 | 7,154 | (-) 12.1 |
| Soyabean | 1,589 | 2,258 | 42.1 | 2,219 | 2,176 | (-) 1.9 |
| Groundnut (Pods) | 324 | 338 | 4.3 | 355 | 409 | 15.2 |
| Other oilseeds ... | 285 | 315 | 10.5 | 92 | 115 | 25.0 |
| Total kharif oilseeds | 2,198 | 2,911 | 32.4 | 2,666 | 2,700 | 1.3 |
| Cotton (Lint) ... | 2,762 | 3,041 | 10.1 | 524 | 508 | (-) 3.1 |
| Sugarcane | 526(H) | 324(H) | (-) 38.4 | 26,982 | 20,360 | (-) 24.5 |
| Total | 12,937 | 13,701 | 5.9 | — | — | — |

- Harvested Area

Table No. 9.7
Area and production of principal rabi crops in Maharashtra State
 (Area in thousand hectare;
 Production in thousand tonne)

| Crop | Area | | | Production | | |
|-------------------------------------|------------------------|------------------------|----------------------|------------------------|------------------------|----------------------|
| | 2003-04 (Tentative) | 2004-05 (Tentative) | Percentage change | 2003-04 (Tentative) | 2004-05 (Tentative) | Percentage change |
| <i>Rabi jowar</i> | 2,854 | 3,198 | 12.1 | 777 | 2,077 | 167.3 |
| Wheat | 665 | 710 | 6.8 | 778 | 925 | 18.9 |
| Other <i>rabi</i> cereals | 66 | 76 | 15.2 | 74 | 83 | 12.2 |
| Total <i>rabi</i> cereals | 3,585 | 3,984 | 11.1 | 1,629 | 3,085 | 89.4 |
| Gram | 795 | 791 | (-) 0.5 | 421 | 494 | 17.3 |
| Other <i>rabi</i> pulses | 130 | 78 | (-) 40.0 | 50 | 17 | (-) 66.0 |
| Total <i>rabi</i> pulses | 925 | 869 | (-) 6.1 | 471 | 511 | 8.5 |
| Total <i>rabi</i> foodgrains | 4,510 | 4,853 | 7.6 | 2,100 | 3,596 | 71.2 |
| Oilseeds (<i>rabi</i>) | 505 | 519 | 2.8 | 171 | 210 | 22.8 |
| Total | 5,015 | 5,372 | 7.1 | — | — | — |

Index Numbers of Agricultural Production

9.11 The index number of agricultural production in Maharashtra (Base: Triennial average 1979-82=100) for 2003-04 was 115.8, lower by 11.1 per cent than that for 2002-03. The decrease in index is seen in almost all the groups of crops. The long term annual growth rate of the agricultural production in the State for the period 1982-83 to 2003-04 was less than 1.0 per cent. The Table No. 9.8 gives index numbers of agricultural production for various groups of crops. The index numbers of agricultural production of principal crops in the State are given in Table No. 42 of Part-II. The annual

growth rate in agricultural production in the State is generally less than that at All-India level. The wide fluctuations in the indices indicate the vulnerability of agriculture sector in the State.

Horticulture Development

9.12 Fruit crops have a very high return per hectare as compared to the conventional foodgrain crops. Up to 1990-91, the area under fruit crops in the State was 2.42 lakh hectare. The State Government has been implementing a programme to promote horticulture development by establishing nurseries to supply genuine plan

Table No. 9.8
Index numbers of agricultural production by groups of crops
 (Base: Triennial average 1979-82=100)

| Group of crops | Weight | 1982-83 | 1987-88 | 1992-93 | 1997-98 | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 |
|-----------------------------|---------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|
| Cereals | 42.22 | 88.5 | 103.3 | 131.3 | 92.8 | 100.4 | 94.5 | 94.8 |
| Pulses | 10.44 | 99.2 | 139.3 | 180.3 | 117.5 | 192.9 | 206.8 | 185.9 |
| Total foodgrains | 52.66 | 90.6 | 110.4 | 141.1 | 97.7 | 118.8 | 116.8 | 112.8 |
| Oilseeds | 9.16 | 73.3 | 133.4 | 121.0 | 95.6 | 90.0 | 84.6 | 83.4 |
| Fibres | 9.93 | 110.1 | 102.7 | 129.3 | 115.8 | 183.8 | 177.4 | 210.4 |
| Miscellaneous | 28.25 | 113.3 | 102.8 | 127.4 | 142.8 | 163.3 | 154.3 | 98.6 |
| Total non-foodgrains | 47.34 | 104.9 | 108.7 | 126.6 | 128.0 | 153.4 | 145.6 | 119.1 |
| All groups | 100.00 | 97.4 | 109.6 | 134.2 | 112.0 | 135.2 | 130.4 | 115.8 |

f various fruit crops to farmers and granting subsidy to encourage them to grow selected fruit crops. Since 1990-91, horticulture development is linked with the Employment Guarantee Scheme (EGS). During 2004-05 upto the end of December, 1.39 lakh hectares of land was brought under fruit crops benefiting 0.56 lakh farmers. Up to December, 2004 under this programme, the cumulative area brought under horticulture was 1.20 lakh hectares and the number of farmers benefited were 15.08 lakh.

9.13 By the end of March, 2004 the total area under all horticulture crops including EGS linked scheme in the State was 13.23 lakh hectares and the share therein of main horticultural crops was as follows. Mango : 1.25 lakh hectares, Cashew nut : 1.62 lakh hectares, Orange : 1.30 lakh hectares, Pomegranate: 0.85 lakh hectares, Sweet orange : 0.84 lakh hectares, Banana : 0.57 lakh hectares and Grapes : 0.39 lakh hectares.

9.14 Yield value of the conventional foodgrain crops is in the range of Rs. 4 thousand to Rs. 12 thousand per hectare. As against this, the yield values per hectare for main fruit crops, based on the data of 2003-04, were as follows. Grapes : Rs. 4.16 lakh, Sweet orange : Rs. 2.56 lakh, Banana : Rs.1.90 lakh and Mango: Rs. 1.28 lakh. The additional area brought under fruit crops is expected to add substantially into the gross value of horticulture production in the State. The area under main horticultural crops and the production are given in Table No. 9.9.

Irrigation

9.15 The net area irrigated in the State in 2002-03 was 29.7 lakh hectares and was about the same as that in the earlier year. Of the net irrigated area, the area irrigated under wells was 19.3 lakh hectares. The gross irrigated area in 2002-03 was 36.7 lakh hectares and was the same as in 2001-02. The percentage of gross irrigated area to gross cropped area in 2002-03 was 16.4. This percentage remained almost the same at about 15 to 16 per cent since 1990-91 and there was no noticeable improvement in proportion of gross irrigated area to gross cropped area. The area irrigated by various sources in the State is given in Table No.41 of Part-II.

Irrigation Projects

9.16 According to the Maharashtra Water and Irrigation Commission (1999), considering water availability in river basins, cultivable land, augmentation of ground water, ground water recharge facilitated through watershed area development, use of modern irrigation techniques and improvement in the water application systems on farms, the irrigation potential of the State can be increased upto 126 lakh hectares. It has also been anticipated by the Commission that the share of surface storages and wells in command area is around 85 lakh hectares. Number of major, medium and minor irrigation projects have been taken up by the State Government to tap the maximum possible irrigation potential. The details of irrigation projects taken up in the State and the irrigation potential created therefrom are given in the Table No. 9.10.

Table No. 9.9

Area and production of main horticultural crops in the State

(Area in 00' hectares, Production in 00' Tonnes)

| Name of fruit crop | Item | 1990-91 | 1995-96 | 1998-99 | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 |
|--------------------|-------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| Banana | Area | 290 | 385 | 587 | 613 | 721 | 721 | 574 | 574 |
| | Prod. | 16,040 | 22,168 | 34,380 | 36,780 | 43,305 | 43,313 | 36,075 | 35,588 |
| Orange | Area | 300 | 534 | 1,229 | 1,411 | 1,322 | 1,484 | 1,508 | 1,303 |
| | Prod. | 2,290 | 5,578 | 12,953 | 13,233 | 10,776 | 8,331 | 8,815 | 8,754 |
| Grapes | Area | 150 | 275 | 262 | 298 | 298 | 298 | 352 | 390 |
| | Prod. | 2,450 | 6,784 | 6,635 | 7,792 | 7,790 | 7,790 | 9,887 | 8,960 |
| Mango | Area | 776 | 2,659 | 3,507 | 3,764 | 4,035 | 4,095 | 4,198 | 4,254 |
| | Prod. | 2,444 | 3,510 | 4,664 | 5,005 | 5,005 | 5,590 | 6,159 | 6,847 |
| Cashew nut | Area | 150 | 199 | 677 | 1,305 | 1,384 | 1,533 | 1,591 | 1,615 |
| | Prod. | 112 | 161 | 756 | 955 | 1,015 | 1,252 | 1,345 | 1,576 |

Table No. 9.10
Number of irrigation projects and potential created thereunder in the State

| Sr. No. | Item | Major | Medium | Minor (State Sector) | Minor (Local Sector) | | | | | Total minor | Total |
|---------|--|-------|--------|----------------------|----------------------|-------------------|-----------------|------------|--------|-------------|-------|
| | | | | | K.T. Weirs | Percolation tanks | Lift Irrigation | M.I. tanks | Others | | |
| 1. | No. of projects * completed up to 30.6.2004 | 32 | 178 | 2,239 | 8,681 | 16,623 | 2,925 | 1,920 | 16,551 | 48,939 | - |
| 2. | No. of projects ongoing up to 30.6.2004 ** | 21 | 34 | 218 | 1,738 | 3,040 | 131 | 370 | 2,077 | 7,574 | - |
| 3. | Irrigation potential created | | | | | | | | | | |
| | (a) Up to 30.6.2004 (lakh ha.) | 22.85 | 6.67 | 9.61 | 2.64 | 5.30 | 0.36 | 1.96 | 1.21 | 21.08 | 50.6 |
| | (b) Up to 30.6.2003 (lakh ha.) | 22.67 | 6.40 | 9.56 | 2.64 | 5.14 | 0.36 | 1.94 | 1.19 | 20.83 | 49.9 |
| 4. | Actual utilisation of irrigation potential during 2003-04 (lakh ha.) | 8.53 | 1.57 | 2.34 | 0.92 | 1.29 | 0.14 | 0.58 | 0.83 | 6.10 | 16.2 |
| 5. | Area under irrigation on wells in command area in addition to Sr.No.4 (lakh ha.) | 3.13 | 0.75 | 0.53 | - | - | - | - | - | 0.53 | 4.4 |

* Irrigation potential fully created

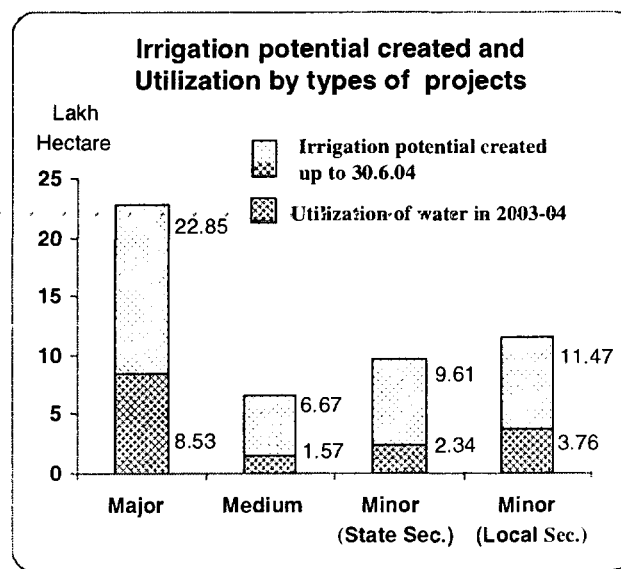
** Irrigation potential partially created

9.17 The total irrigation potential created in the State by the end of June, 2004 through major, medium and minor irrigation projects taken together was 50.60 lakh hectares. The share of major, medium, minor (State sector) and minor (Local sector) irrigation projects in the total irrigation potential created was 45.2 per cent, 13.2 per cent, 19.0 per cent and 22.6 per cent respectively. The additional irrigation potential created during 2003-04 was 0.70 lakh hectares showing an increase of 1.4 per cent over the cumulative achievement by the end of June, 2003. The actual utilisation of irrigation potential in 2003-04 was 16.2 lakh hectares (32.5 per cent) as against the potential of 49.9 lakh hectares created upto the end of June, 2003.

Reforms in the Irrigation Sector

9.18 The Government of Maharashtra has taken some reform measures for improvement in the irrigation sector of the State, which are as given below.

9.18.1 *State Water Policy* :- The Government of Maharashtra has released State Water Policy in July, 2003, which ensures sustainable development, efficient management and optimal use of scarce water resources within rivers and adjoining lands in a manner to maintain importance of ecological values in order to provide economic and social benefits to the people.



9.18.2 *Maharashtra Water Resource Regulatory Authority Act, 2003* :- The Government of Maharashtra has moved the bill name 'Maharashtra Water Resources Regulator Authority Act, 2003' which contemplates to regulate, facilitate and ensure judicious, equitable allocation and utilization of water. It also ensures sustainable water management and fixing of water rates for use of agriculture, industry, domestic and other purpose.

9.18.3 *Maharashtra Management of Irrigation System by Farmers Act, 2004* :- In order to bridge the gap between the irrigation potential created and its actual utilization and to optimize the benefits by ensuring proper use of surface and ground water by increased efficiency in distribution, delivery, application and drainage of irrigation system, the State Government has taken policy decision to provide a legal recognition to the constitution and operation of Water User Associations. Accordingly, a bill viz., Maharashtra Management of Irrigation System by Farmers Act, 2004 has been placed before the legislature for its approval.

9.18.4 *Water Users Associations* :- The State Government has taken policy decision in July, 2001 for formation of Water Users Associations (WUAs) and handing over the irrigation management to WUAs for all irrigation projects in the State. The policy seeks i) to reduce the gap between irrigation potential created and actual area irrigated, ii) to increase efficiency of irrigation management for water use, iii) to restrict the expenditure on maintenance and repairs of irrigation system, iv) to take up repairs of irrigation system before handing over, v) to use water more efficiently and vi) to recover water charges effectively.

Irrigation Development Corporations

9.19 In order to accelerate the completion of the irrigation projects in the State, the Government established following five Irrigation Development Corporations during the period from January, 1996 to August, 1998. i) Maharashtra Krishna Valley Development Corporation, ii) Marbha Irrigation Development Corporation, iii) Tapi Irrigation Development Corporation, iv) Konkan Irrigation Development Corporation and v) Godavari-Marathwada Irrigation Development Corporation. These Corporations raised funds to the tune of Rs. 11,548 crore till March, 2004 from open market. The paid-up share capital of the Government to these corporations upto March, 2004 was of the order of Rs. 3,869 crore. The interest payment of Rs. 5,045 crore on bonds upto March, 2004 was borne by the State Government. The details of these corporations are given in Table No. 9.11

Integrated Watershed Development Programme

9.20 As the agriculture in the State is mainly based on rainfed farming, works of soil-conservation are being carried out on a large scale. With a view to increase the production from dry land farming, maintaining continuity in the same and preventing deterioration of natural resources, watershed-based soil and water conservation works are being implemented in the State since 1983. Various programmes are reframed and are being implemented under Integrated Watershed Development Programme. As per the laid down norms, in all 15,739 villages were selected and works were actually undertaken in 25,718 watersheds in 12,079 villages. The expenditure incurred on the programme during 2003-04 was Rs. 688 crore and during 2004-05 upto the end of September, Rs. 398 crore were incurred. During the same period of the previous year, an expenditure of Rs. 266 crore was incurred. The cumulative expenditure incurred on this programme from 1992 till the end of September, 2004 was Rs. 3,687 crore.

Improved seeds

9.21 Among the various measures being taken for enhancing the agricultural production in the State, distribution of hybrid and improved certified/quality seeds of various crops is of prime importance. The public and private sectors play a significant role in distribution of such seeds. Seed replacement programme is implemented to a large extent in the State for most of the crops. The total seed distribution during *khariif* 2003 was 10.18 lakh quintals and during *rabi* 2003, it was 3.48 lakh quintals. It is estimated that the certified/quality seeds distributed in the *khariif* 2004 season through public and private sectors were to the extent of 5.90 lakh quintals and 5.04 lakh quintals respectively. During 2004-05, seeds of different varieties of 25 crops were made available to the farmers. The quantity of seed distributed for some important crops is given in Table No. 9.12.

holding (at 4.28 hectares) as per 1970-71 census. Some main features of the agriculture census 1995-96 are given in Table No. 9.14 and Table No. 38 of part -II

Table No. 9.14

Operational holdings and area thereunder as per agricultural Census 1995-96 in Maharashtra State

| Size Class (Hectares) | No. of operational holdings (In 00') | Area of operational holdings (In 00' ha.) | Average size of holding (In ha.) |
|-----------------------|--------------------------------------|---|----------------------------------|
| 0.0 - 1.0 | 42,661 | 20,866 | 0.49 |
| 1.0 - 2.0 | 31,755 | 46,059 | 1.45 |
| 2.0 - 5.0 | 25,393 | 75,933 | 2.99 |
| 5.0 - 10.0 | 5,558 | 37,150 | 6.68 |
| 10.0 - 20.0 | 1,029 | 13,514 | 13.13 |
| 20.0 and above | 132 | 5,274 | 39.95 |
| Total | 1,06,528 | 1,98,796 | 1.87 |

Agricultural Finance

9.28 The financial institutions associated with direct agricultural finance in the State are Primary Agricultural Credit Co-operative Societies (PACS) extending short-term crop loans to their cultivator members. National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) refinances credit to the apex and Central Co-operative Financial Institutions in the State (Maharashtra State Co-operative Bank, NABARD, and RRB's) in order to enable them to extend agriculture credit to the cultivator members through the PAC's and the branches at local level.

9.29 The number of PACS at the end of 2003-04 was 20,952 with a membership of 104.79 lakh. During 2003-04, the amount of loans advanced to the cultivators by these PACS were Rs. 3,769 crore, of which Rs.1,497 crore i.e. 40 per cent were given to small and marginal farmers.

9.30 The disbursement of direct finance for agriculture and allied activities in the State in 2003-04 by public sector banks was Rs.1,731 crore, which was less by 13.62 per cent than that of Rs. 2,004 crore disbursed in 2002-03. Credit disbursement to agriculture sector during 2003-04 was adversely affected due to severe drought in Maharashtra. Out of the total disbursements in 2003-04, agriculture proper accounted for Rs.1,550 crore (90 per cent). The rest of the

disbursements (Rs.181 crore) were for allied agricultural activities like dairy, poultry farming, fisheries, etc. Of the medium/long term-lending of Rs.677 crore to agriculture sector, 16.3 per cent was for purchase of tractors, agricultural implements & machinery, 15.5 per cent for plantation & horticulture and 14.8 per cent was for irrigation schemes. The total outstanding loans of these banks against the loans advanced for agriculture and allied activities in the State as on 31st March, 2004 stood at Rs.4,583 crore with 13.98 lakh accounts. Out of the total amount outstanding, the share of agriculture proper was Rs.3,498 crore (76.3 per cent). Nearly 42 per cent of the outstanding amount was of term-loans. Of the total outstanding amount of Rs.4,583 crore on agriculture proper, Rs.1,252 crore (27.3 per cent) were in 4.39 lakh accounts with holding size up to 1 hectare and Rs.1,105 crore (24.1 per cent) were in 4.69 lakh accounts with holding size of 1 to 2 hectares.

9.31 The private sector banks also advanced loans for agriculture and allied activities to the extent of Rs.188 crore in the State during 2003-04. The outstanding amount of these banks against the loans extended to agriculture and allied activities at the end of March, 2004 was Rs.296 crore.

NABARD

9.32 The National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD), the apex bank in the country for supporting and promoting agricultural and rural development, performed the following important role in the State during the year 2003-04.

Credit Limits

9.32.1 During 2003-04, short term credit limit sanctioned by NABARD for supporting Seasonal Agricultural Operations (SAO) by the Co-operative Banks and Regional Rural Banks (RRBs) in the State aggregated to Rs. 336.6 crore as compared to Rs. 285.0 crore during 2002-03. The maximum level of credit outstanding reached to Rs. 77.0 crore, i.e. 23 per cent of the credit limit sanctioned. In addition, NABARD had sanctioned Rs. 5.9 crore to RRBs for Other than Seasonal Agricultural Operations (OSAO) in the State against which the maximum outstanding reached was Rs. 3.6 crore. Further, under the new line of credit of NABARD, Rs. 8.14 crore were sanctioned to the DCCBs for OSAO activities and was fully utilised.

Investment Credit

9.32.2 A refinance assistance of Rs. 458 crore was disbursed by NABARD to various credit agencies in the State under investment credit during 2003-04, which was less by 29 per cent than that in the previous year. The State was the eighth largest recipient of refinance from NABARD in the year 2003-04 and its share was 10 per cent in the country, which had declined from 7.9 per cent of share during the previous year.

Rural Infrastructure Development Fund

9.32.3 Upto 31st December, 2004, NABARD had sanctioned Rs. 2,967 crore to the Government of Maharashtra for Rural Infrastructure Development Fund (RIDF). Out of this amount, Rs. 1,934 crore were disbursed. Out of the 7,058 projects sanctioned so far, 5,465 projects are completed. Of the 7,058 projects, 408 were irrigation projects, 5,180 were roads, 1,242 were bridges and 228 were Rural Water Supply schemes. Of the 5,465 projects completed, 150 were irrigation projects, 5,254 were rural roads & bridges and 61 were Rural Water Supply schemes. Out of the total disbursement of Rs. 1,934 crore, the disbursement during 2003-04 amounted to Rs. 314 crore.

Land Reforms in Maharashtra

9.33 The policy of reforming the agrarian system is continued in the State. As a result of the implementation of the tenancy laws came into force in Maharashtra between 1957 to 1965, the right of ownership was conferred on about 1.92 lakh tenants in respect of 17.36 lakh hectares of land by the end of March, 2004.

9.34 Every land holder in the State is provided a Khate-Pustika in which the record of his land is updated every year. Out of the 92.59 lakh land holders, 73.11 lakh land holders have been issued Khate-Pustikas upto 31st March, 2004. The State Government has introduced the scheme for distribution of up-to-date holding certificate No. 7/12 every year to the land holders since May, 1999. Also the Government has started a scheme for distribution of this document by the State Government from 2002. Thus, the State Government has taken sufficient measures to make available up-to-date records of their lands.

9.35 The work of computerisation of 'Village Form No. 7/12' is under progress in the State which is taken up under 100 per cent centrally

sponsored scheme for computerisation of land records. The data entry work of all the 7/12 forms totalling to 2,10,93,851 in the State is almost completed. Validation and verification of the data entered in the computers is in progress. As per the guidelines given by Government of India the computer output forms of 7/12 are to be distributed at taluka level.

World Trade Organisation

9.36 The restrictions on international trade of agricultural produce have been reduced largely due to international agreement with World Trade Organisation (WTO). The object of the agreement is to have equal opportunities to all in the open trade and none of the country is allowed to disturb the balance in the international trade by way of charging undue custom duties or by giving subsidies for exports. This ensures the countries to take agricultural production at low cost by utilising their natural resources efficiently and to sell their produce freely any where in the international market. On this background, the State Government has taken initiative actions such as public education, increasing productivity, promotion of post-harvest technology, etc.

Developments in the field of bio-technology

9.37.1 In order to enhance the agricultural production for meeting the requirements of the increasing population, it has been necessary to adopt bio-technology in the field of agriculture. Accordingly, the State Government has established a Committee for enlarging the scope and development of Bio-technology. The Government of Maharashtra has announced its Bio-Technology Policy in January, 2002 and constituted Maharashtra Bio-Technology Board under the chairmanship of Chief Minister. The board is supported by Maharashtra Bio-Technology Commission, the latter works as a key advisor to the board on the diversified trade policy related issues.

9.37.2 The government has decided to supply electricity to the Agro-Bio-Technology companies at the rates prevailing in agriculture sector and further to establish the centre for research and development. Besides this, a Pharma Bio-Technology park at Hinjawadi (Pune), Agro-Bio-Technology park at Shendre (Jalna) and Akola are also established. The Bio-Technology units are eligible under this scheme for all the benefits available to industry units located in 'D' and 'D+' industry zones.

Forests

9.38 The area under forests in Maharashtra State at the end of 2003-04 was 61.9 thousand sq. kms., which accounted for 20.13 per cent of the geographical area of the State, much below the expected standard norm of 33 per cent of the forest cover. Of this, 55.9 thousand sq. kms. area was managed by the Forest Department, 2.4 thousand sq. kms. by the Revenue Department and 3.6 thousand sq. kms. by the Forest Development Corporation of Maharashtra (FDCM). Out of 61.9 thousand sq. kms. forest area, 49.2 thousand sq. kms. was reserved forests, 8.2 thousand sq. kms. was protected forests and 4.5 thousand sq. kms. was classified as unclassed forests. As per State of Forest Report, 2001, out of total 61.9 thousand sq. kms of recorded forest area in the state, 47.5 thousand sq. kms. was forest cover. Out of this forest cover, 65.1 per cent area was under dense forest and remaining was open forest. During 2003-04, about 24.2 thousand hectares of forest lands as well as village community lands were covered under various afforestation programmes by the Forest Department and FDCM.

Forest Produce

9.39 In order to maintain ecological balance, the Government has restricted clear felling of the trees in the forest areas. As a result, the felling of trees is done only on limited scale. The expected production of timber in 2004-05 is about 1.50 lakh cubic meters valued at Rs. 90 crore as against the production of 1.28 lakh cubic meters in 2003-04 valued at Rs. 95 crore. The expected production of firewood in 2004-05 is about 2.59 lakh cubic meters valued at Rs. 32 crore as compared to 8.02 lakh cubic meters produced in 2003-04 and valued at Rs. 22 crore.

9.40 The expected value of minor forest produce in 2004-05 is Rs. 58.83 crore in which tendu leaves and bamboo account for Rs. 21.37 crore and Rs. 36.60 crore respectively. The value of minor forest produce in 2003-04 was Rs. 68 crore in which tendu leaves and bamboo accounted for Rs. 35.15 crore and Rs. 30.49 crore. The value of minor forest produce for 2003-04 and 2004-05 is given in table No. 9.15

Table No. 9.15
Value of Minor Forest Produce
(Rs. in Crore)

| Forest Produce | 2003-04 | 2004-05 * |
|-----------------|---------|-----------|
| Bamboo | 30.49 | 36.60 |
| Tendu | 35.15 | 21.37 |
| Grass & Grazing | 0.33 | 0.16 |
| Gum | 0.24 | 0.19 |
| Others | 1.85 | 0.51 |
| | 68.06 | 58.83 |

* Expected

Social forestry

9.41 With a view to maintaining ecological balance through plantation of trees on community land and encouraging tree plantation on private land, several plantation programmes have been undertaken in the state. During 2003-04, in addition to the plantation carried out by the Forest Department, the Social Forestry Department carried out plantation on community land of about 2.71 thousand hectares area and supplied 3.28 crore plants for plantation on private land under 20 point programme. During 2004-05 up to the end of February, 2005, plantation was carried out on an area of about 2.65 thousand hectares of community land and supplied 3.3 crore plants for plantation on private land under 20 point programme.

Sericulture

9.42 Sericulture is an agriculture-based cottage industry with a high capacity for employment generation in the rural areas and is also useful in upliftment of the cultivator's income. Sericulture activity covers plantation of Mulberry and Aini trees, culturing of silk worms, production of cocoons and raw silk. At present mulberry silk development programme is implemented in 20 districts of Maharashtra and Tasar silk development programme is implemented in 4 districts of Vidarbha viz Gadchiroli, Chandrapur, Bhandara and Gondia. The performance of the State Government's Sericulture Development Programme regarding the area under plantation, production of silk and employment generation is given in Table No. 9.16

Table No. 9.16

Performance under Sericulture activities

| Item | Mulberry Silk | | Tasar Silk | |
|----------------------------|---------------|----------|------------|----------|
| | 2003-04 | 2004-05* | 2003-04 | 2004-05* |
| Area under Plantation | 2,164 | 1,500 | 1,100 | 1,100 |
| of Mulberry & Tasar (Ha.) | | | | |
| Production of silk (kg.) | 11,600 | 2,556 | 1,112 | 460 |
| Employment generated (No.) | 36,000 | 18,750 | 11,000 | 11,000 |

* Upto end of Sept. 2004

Animal Husbandry

9.43 Amongst the allied activities related to agriculture, animal husbandry is an important one. As per the Livestock Census of 1997, the total livestock population in Maharashtra was about 3.96 crore. The information about the livestock and poultry in the State as per livestock censuses is given in Table No. 43 of Part-II of this publication.

9.44 According to the Livestock Census, 1997, total livestock and poultry population in India was 48.5 crore and 34.8 crore respectively. The share of Maharashtra in India was 8.2 per cent and 10.2 per cent respectively. The categorywise population details are given in the table No.9.17.

Table No. 9.17

Livestock as per Livestock Census - 1997

(In thousand)

| Category | Population | | % share of Maharashtra |
|------------------------|-----------------|---------------|------------------------|
| | All India | Maharashtra | |
| Cattle | 1,98,882 | 18,071 | 9.1 |
| Buffaloes | 89,918 | 6,073 | 6.7 |
| Sheep & goats | 1,80,215 | 14,802 | 8.2 |
| Other livestock | 16,369 | 692 | 4.2 |
| Total livestock | 4,85,385 | 39,638 | 8.2 |
| Total poultry | 3,47,611 | 35,392 | 10.2 |

As per the livestock census 1997, the density of livestock per sq.kms. in Maharashtra State was 129 and number of livestock per 1000 population was 502. The number of veterinary institutes per one lakh of livestock was 11.

9.45 The main livestock products are milk, eggs, meat and wool. During 2003-04, *per capita* daily availability of milk in the State was 173 gms. which is much below the per capita daily

milk availability at National level (231 gms) and at International level (256 gms). The programme of breeding of hybrid cows through artificial insemination implemented in Maharashtra State on a large scale has resulted in increase of milk production of cows in the last three decades. Details of production of milk, eggs, meat and wool are given in Table No.9.18.

Table No. 9.18

Main Livestock Products

| Item | 2002-03 | 2003-04 | % change |
|--------------|---------|---------|----------|
| Total Milk @ | 6,251 | 6,377 | 2.0 |
| of which, | | | |
| Cow Milk @ | 3,097 | 3,161 | 2.0 |
| Eggs \$ | 329 | 336 | 2.1 |
| Meat @ | 218 | 225 | 3.2 |
| Wool # | 16.59 | 16.74 | 0.9 |

@ Thousand tonnes, \$ Crore, # Lakh Kg.

Per Capita Daily availability of Milk in Maharashtra

| Year | Milk (gms) |
|---------|------------|
| 1994-95 | 154 |
| 2003-04 | 173 |

Per capita daily availability of Milk for Punjab State is 845 gms., which is the highest in country.

9.46 As per preliminary forecast, during 2004-05, the production of milk, eggs, meat and wool would be 6,565 thousand tonnes, 346 crore, 230 thousand tonnes and 16.92 lakh kg. respectively.

9.47 During 2003-04, there was noticeable increase in State livestock health facility centres with 418 new centres. As on 31st March, 2004, there were in all 31 veterinary poly-clinics, 12 state level and 1523 local level veterinary dispensaries, 2,392 primary veterinary aid centres and 61 mobile veterinary clinics in the State. Under the Artificial Insemination (AI) programme, there were 29 District AI centres, 49 regional AI centres with 670 sub-centres thereunder and 48 key village centres with 468 sub-centres. There were 4565 institutes having artificial insemination at local and state level. For the production of frozen semen, there were three laboratories in the State. The number of (fresh) artificial inseminations performed during 2003-04 was 3.11 lakh under exotic and 9.12 lakh under crossbred category as against 3.33 lakh exotic and 9.32 lakh crossbred performed during

the earlier year. The number of crossbreed calves born during 2003-04 was 4.45 lakh as against 4.64 lakh during 2002-03.

Poultry Development

9.48 Implementation of poultry development is done mainly through four central hatcheries, 16 intensive poultry development blocks and two poultry extension centres. The population of improved poultry birds has decreased notably in the year 2003-04. The number of birds supplied during 2003-04 by these units was 8.67 lakh as against 13.02 lakh in 2002-03. Under the scheme of establishing poultry societies on co-operative basis, during the period from 1985-86 to 2002-03, in all 73 projects of co-operative poultry societies were sanctioned by the Government and 35 out of them are functioning at present.

As per Livestock census 1997, out of the total poultry fowls of 3.54 crore in the State, 71 per cent were Deshi and 29 per cent were improved. As against this, 98 per cent were Deshi fowls and 2 per cent were improved as per livestock census 1961.

Milk collection through Government and Co-operative Dairies

9.49 During 2004-05, there were 64 milk processing plants in operation in the state and aggregate processing capacity of all these plants was 72.15 lakh liters per day. Besides these processing plants, there were 122 Government/co-operative milk chilling centres in operation in the State in 2004-05 and their aggregate capacity was 22.24 lakh liters per day.

9.50 The average daily collection of milk by the Government and co-operative dairies taken together in the State (excluding Greater Mumbai) during 2004-05 would be 38.88 lakh liters, which is more by 2.7 per cent than the average daily collection of 37.86 lakh liters during the year 2003-04.

Fisheries

9.51 Maharashtra has a coastal length of about 720 kms., rivers of about 3.2 thousand kms. length and canals of about 12.8 thousand kms. length. The area suitable for marine fisheries is 1.12 lakh sq. kms., for inland fisheries it is 3.20 thousand sq. kms. and for brackish water fisheries,

it is 18.6 thousand hectares (Government land 7 thousand hectares and private land 8.6 thousand hectares). Though the territorial water area of Maharashtra is 1.32 lakh sq. kms., the continental shelf extends upto 180 meters of depth having an area of only 1.12 lakh sq. kms. Out of this area fishing takes place only upto 72 meters in depth i.e. 30 to 40 fathoms. The potential of fish catch from marine area has been estimated at 6.3 lakh tonnes per year. As against this, the production during 2003-04 was 4.20 lakh tonnes. The Government is now planning to introduce intermediate fishing crafts to tap the resources in the exclusive economic zone i.e. upto 200 meter depth, in order to achieve the optimum capacity of the fish production (6.3 lakh tonnes). For intermediate fishing, so far 61 medium size boats have been financed.

9.52 The number of boats used in the State for marine fishing was 21,868 in 2002-03 which increased to 22,322 in 2003-04. Of the total fishing boats 11,624 (52 per cent) were mechanised. There were 184 landing centres in the State along the coastline. Estimated marine fish catch in 2003-04 was 4.20 lakh tonnes, 8.5 per cent more than that in 2002-03. Out of this fish catch, 2.90 lakh tonnes were used in fresh form, 0.12 lakh tonnes were sent for salting and 0.89 lakh tonnes were sundried. In 2003-04, fish catch to the tune of 1.23 lakh tonnes valued at Rs. 884 crore were exported. In marine area, out of the 13 ports and 38 jetties proposed under Konkan Development Project, construction of 11 jetties is completed and that of 3 ports and 10 jetties is in progress. The estimated marine fish catch during 2004-05 (upto the end of September) was 1.23 lakh tonnes.

9.53 The estimated inland fish catch during 2003-04 was 1.25 lakh tonnes, 1.6 per cent less than that in 2002-03. Efforts are being made to exploit the potential of inland fishing to as large extent as possible. The approximate gross value of the marine and inland fish catch taken together in the State during 2003-04 was Rs. 1,553 crore. The estimated inland fish catch in 2004-05, upto the end of October is 0.70 lakh tonnes.

9.54 Under the fish seed production programme, during 2003-04, there were 70 fish seed production/rearing farms in the State and the number of seeds produced in these farms was 21.65 crore, as against 22.34 crore in the earlier year from the same number of fish seed production/rearing farms.



CO-OPERATION

10.1 Co-operation plays an important role in safeguarding the vulnerable unorganised sections of the people engaged in various economic activities. The movement has helped in preventing exploitation of the rural masses from feudalism and in raising economic standards of small farmers, village artisans, landless labours, etc. It has developed growth centres in the rural areas generating new employment opportunities, augmenting productive capacity and enhancing the competitive ability of the weaker sections. However, the co-operative movement in the post liberalisation era has been facing new challenges like cut-throat competition and qualitative standards of products and services.

Co-operative Movement in Maharashtra

10.2 In its initial era, the co-operative movement in Maharashtra was confined mainly to the field of agricultural credit. Later on it rapidly

spread to other fields like agro-processing, agro-marketing, rural industries, consumer stores, social services, etc. This has resulted in a considerable beneficial impact in raising the standard of living of the rural masses. However in order to face the problems emerging out of the liberalisation, suitable ways are needed to be explored in order that the co-operatives compete with the new economic scenario and market trends.

10.3 The progress of various types of co-operative societies in the State since 1961 is given in the Table No.10.1.

10.4 The substantial growth in the number of co-operative societies in the State is mainly due to the higher increase in the number of co-operative housing societies, non-agricultural credit societies and productive enterprises. The membership of all co-operative societies taken together in the State as on 31st March, 2004 was

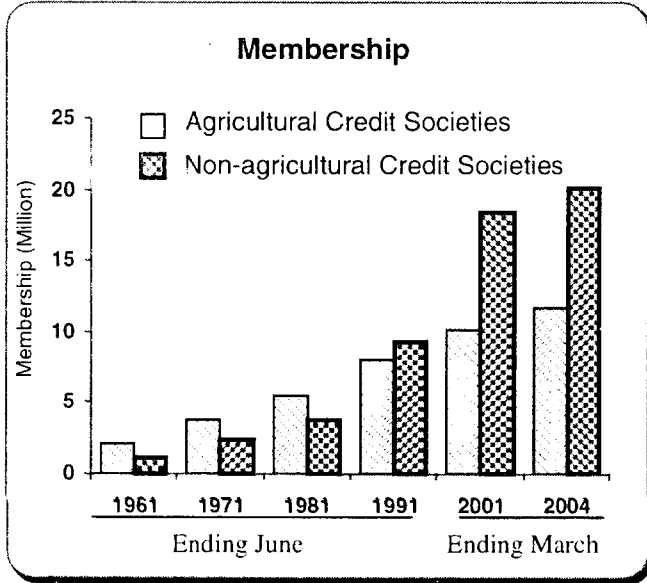
Table No. 10.1
The Growth of co-operative societies in Maharashtra

| Sr. No. | Type of co-operative society | As on 30th June | | As on 31st March | | |
|---------|---|-----------------|---------------|------------------|-----------------|-----------------|
| | | 1961 | 1981 | 2001 | 2003 | 2004 |
| 1. | Apex and Central- credit institutions | | | | | |
| | i) Agricultural | 37 | 28 | 32 | 32 | 32 |
| | ii) Non-agricultural | 2 | 3 | 2 | 2 | 2 |
| 2. | Primary agricultural credit societies | 21,400 | 18,577 | 20,551 | 20,839 | 21,000 |
| 3. | Non-agricultural credit societies | 1,630 | 5,474 | 22,014 | 25,107 | 25,664 |
| 4. | Marketing societies | 344 | 423 | 1,115 | 1,252 | 1,222 |
| 5. | Productive enterprises* | 4,306 | 14,327 | 39,070 | 40,171 | 40,885 |
| 6. | Social service and other co-operative societies** | 3,846 | 21,915 | 75,232 | 85,999 | 90,049 |
| | Total Societies | 31,565 | 60,747 | 1,58,016 | 1,73,402 | 1,78,854 |

sugar factories, rice mills, dairy societies etc.

* consumer stores, housing etc.

483 lakh, which was nearly 11.5 times to that of 41.9 lakh as on 30th June, 1961. The total working capital of these societies by the end of June, 1961 was Rs.291 crore, which increased by manifold to Rs.1,83,201 crore as on 31st March, 2004. The total outstanding loans of these societies as on 30th June, 1961 were Rs. 170 crore, which increased to Rs.86,829 crore as at the end of March, 2004.



10.5 The details regarding the membership, working capital, advances, outstanding loans and turnover of the co-operative societies in Maharashtra State are presented in Table No.44 of Part II of this publication.

10.6 Some important characteristics of the co-operative societies of all types taken together in the State, are given in the Table No.10.2.

10.7 The gross as well as net advances made by co-operative societies in the State decreased during 2003-04. The decrease in gross advances by co-operative societies was 19 per cent over the previous year. As on 31st March 2004, the contribution of the state Government in the total paid-up share capital in co-operative societies was Rs. 2,057 crore (15.4 per cent). Of the total 1,78,854 societies, about 36 per cent societies were in profit, 26 per cent with loss, 4 per cent with no profit no loss position and the societies for which the information was not available were about 34 per cent.

Table No. 10.2
Important characteristics of the
co-operative societies in the State

| Item | Ending March | | Percent change |
|---|--------------|----------|----------------|
| | 2003 | 2004* | |
| 1. Number of societies | 1,73,402 | 1,78,854 | 3.1 |
| 2. Number of members (in lakh) | 476 | 483 | 1.5 |
| 3. i) Paid-up share capital | 12,865 | 13,378 | 4.0 |
| ii) of which Govt. | 2,037 | 2,057 | 1.0 |
| 4. Deposits | 96,196 | 1,06,622 | 10.8 |
| 5. Working capital | 1,72,864 | 1,83,201 | 6.0 |
| 6. Advances (Gross) | 81,921 | 66,327 | (-19.0) |
| 7. Advances (Net) | 55,133 | 47,864 | (-13.2) |
| 8. Societies in profit | | | |
| i) Number | 62,573 | 64,374 | 2.9 |
| ii) Profit | 1,820 | 1,563 | (-14.1) |
| 9. Societies in loss | | | |
| i) Number | 44,432 | 45,815 | 3.1 |
| ii) Loss | 2,409 | 1,462 | (-39.3) |
| 10. Number of societies with no profit no loss | 6,437 | 6,569 | 2.1 |
| 11. Number of societies profit/loss not reported | 59,960 | 62,096 | 3.6 |

* Provisional

Apex and Central Credit Institutions

10.8 The Apex and Central Credit Institutions in the State include Maharashtra State Co-operative Bank, Maharashtra State Co-operative Agriculture Rural Multipurpose Development Bank, Solapur District Industrial Co-operative Bank, Maharashtra State Housing Finance Corporation and 31 District Central Co-operative Banks. The working capital of the Apex and Central Credit Institutions together on 31st March, 2004 was Rs.52,326 crore, which was higher by 12 per cent than that of the previous year and it was 29 per cent of the total working capital of all types of co-operative societies taken together. The total loans advanced by these 34 institutions, during 2003-04 was Rs.18,483 crore. The share of Apex and Central Credit Institutions in total loans advanced by all types of co-operative societies together was 15.4 per cent. The amount of outstanding loans as on 31st March, 2004 of these institutions was Rs.26,064 crore, lower by 0.4 per cent than that of the previous year. The total employment of these co-operative societies as at the end of March 2003 was 33,698.

10.8.1 Some important characteristics of Apex and Central Agricultural & Non-Agricultural Credit Co-operative Societies in the State, ending March, 2003 and 2004 are given in the Table 10.3.

Table No. 10.3

Important characteristics of the Apex and Central Agricultural, Non-Agricultural Credit Co-operative Societies in the State

(Rs. in crore)

| Item | Ending March | | Percentage change |
|---|--------------|----------|-------------------|
| | 2003 | 2004* | |
| AGRICULTURAL CREDIT | | | |
| Maharashtra State Co-operative Bank | | | |
| Members | 41,552 | 43,259 | 4.1 |
| Deposits | 11,238 | 13,300 | 18.3 |
| Working capital | 15,207 | 17,694 | 16.4 |
| Gross loans Advanced | 12,831 | 6,946 | (-) 45.9 |
| Loans outstanding | 8,908 | 8,432 | (-) 5.3 |
| Overdues | 1,278 | 1,508 | 18.0 |
| District Central Co-operative Banks (31) | | | |
| Members | 1,21,093 | 1,28,616 | 6.2 |
| Deposits | 21,420 | 23,887 | 11.5 |
| Working capital | 29,905 | 32,903 | 10.0 |
| Gross loans advanced | 13,957 | 11,517 | (-) 17.5 |
| Loans outstanding | 15,990 | 16,358 | 2.3 |
| Overdues | 4,495 | 5,332 | 18.6 |
| Maharashtra State Co-operative Agriculture and Rural Multipurpose Development Bank | | | |
| Members | 828 | 828 | 0.0 |
| Deposits | - | - | - |
| Working capital | 1,248 | 1,318 | 5.6 |
| Gross loans Advanced | - | - | - |
| Loans outstanding | 1,019 | 1,046 | 2.6 |
| Overdues | 279 | 273 | (-) 2.2 |
| NON-AGRICULTURAL CREDIT | | | |
| Solapur District Industrial Co-operative Bank | | | |
| Members | 1,971 | 1,971 | 0.0 |
| Deposits | 36 | 33 | (-) 8.3 |
| Working capital | 41 | 49 | 19.5 |
| Gross loans Advanced | 13 | 12 | (-) 7.7 |
| Loans outstanding | 31 | 28 | (-) 9.7 |
| Overdues | 18 | 28 | 55.6 |
| Maharashtra State Co-operative Housing Finance Corporation | | | |
| Members | 11,727 | 11,809 | 0.7 |
| Deposits | 0.46 | 0.73 | 58.7 |
| Working capital | 381 | 362 | (-) 5.0 |
| Gross loans Advanced | 5.31 | 8.43 | 58.8 |
| Loans outstanding | 222 | 200 | (-) 9.9 |
| Overdues | 128 | 129 | 0.8 |

* Provisional

AGRICULTURAL CREDIT

10.8.2 In the case of Maharashtra State Co-operative Bank, the overdues as on 31st March, 2004 were higher by 18 per cent than those as on 31st March, 2003. In the case of District

Central Co-operative Banks, overdues were higher by 18.6 per cent than the previous year. Maharashtra State Co-operative Agriculture and Rural Development Bank was reorganised into a federal structure with effect from 1st October, 2001 and 29 District Co-operative Agriculture Rural Multipurpose Development Banks (primary) with an Apex Bank at Mumbai named Maharashtra State Co-operative Agriculture Rural Multipurpose Development Bank were created.

NON-AGRICULTURAL CREDIT

10.8.3 During the year 2003-04, Solapur District Industrial Co-operative Bank advanced gross loans of Rs. 12 crore. Due to liquidation from 7.2.2004, the bank was unable to advance new loans as from that date. Its overdues were increased heavily by 55.6 per cent than that of the previous year. In the case of Maharashtra State Co-operative Housing Finance Corporation, the gross loans advanced during 2003-04 were Rs. 8.43 crore, which were higher by 58.8 per cent than that of the corresponding figure for previous year.

Primary Agricultural Credit Societies

10.9 Primary Agricultural Credit Societies (PACS) are the grassroot level co-operative credit institutions playing a pivotal role in the disbursement of short-term agricultural credit to the cultivators. The high level of overdues, inadequacy and irregularity in availability of funds for giving credit to the farmers and lack of resource mobilisation continued to be major reasons of weaknesses of PACS.

10.9.1 As on 31st March, 2004, there were 21,000 Primary Agricultural Credit Societies and their membership was 117 lakh. These societies include Primary Agricultural Credit Societies (19,990), Farmers Service Societies (21), Adivasi Co-operative Societies (941) and Grain Banks (24). The working capital of the PACS increased by 2 per cent to Rs. 9,886 crore as at the end of 31st March, 2004 from Rs. 9,717 crore as at the end of the previous year. These societies (excluding Grain Banks) advanced loans of Rs. 3,769 crore during 2003-04, which were lower by 1.5 per cent than that of Rs. 3,825 crore during 2002-03. These loans were advanced to 34.62 lakh members, of which 8.45 lakh were small farmers and about 9.30 lakh were marginal farmers. Of the total loanee members of PACS, 51 per cent were small and marginal farmers.

However, the average amount of loan advanced per marginal and small farmer was Rs. 7,748 and Rs. 9,184 respectively, much less as compared to Rs. 10,881, the overall average loan advanced per loanee member of PACS.

10.9.2 The loans outstanding as on 31st March, 2004 in respect of PACS alone was Rs.6,750 crore, which was higher by 5 per cent than that of Rs.6,412 crore at the end of the previous year. The loans due for recovery of PACS as on 31st March, 2004 were Rs. 5,990 crore as against Rs. 5,931 crore as on 31st March, 2003. The loans recovered during 2003-04 by the PACS were Rs.3,429 crore, which were higher by 1 per cent than those of Rs.3,395 crore in 2002-03. The percentage of loans recovered by the PACS to the loans due for recovery was 57 and was less than that of the previous year. The loans overdue as on 31st March, 2004 were Rs.2,561 crore. The proportion of overdues to outstandings was 38 per cent as on 31st March, 2004, which was lower by 2 percent than that in the previous year. As on 31st March, 2004 out of the total loans overdue, 54 per cent were for less than two years. The total employment in PACS as at the end of March, 2003 was 27,114. The details regarding land holdingwise loans advanced by PACS during 2003-04 are given in table No. 10.4

Table No. 10.4
Land holdingwise loans advanced by PACS
(Excluding Grain Banks)

| Size class (Hectare) | Members (Lakhs) | Borrowing members (Lakhs) | Percentage of borrowing members to total members | Loan advanced per borrowing member (Rs.) |
|----------------------|-----------------|---------------------------|--|--|
| < 1 | 26.71 | 9.30 | 34.8 | 7,748 |
| 1 - 2 | 26.91 | 8.45 | 31.4 | 9,184 |
| 2 - 4 | 18.72 | 6.89 | 36.8 | 11,400 |
| 4 - 8 | 12.23 | 5.84 | 47.7 | 12,463 |
| > 8 | 5.74 | 4.09 | 71.3 | 18,498 |
| Others | 16.05 | 0.06 | 0.4 | 3,525 |
| Total | 106.36 | 34.63 | 32.6 | 10,881 |

10.9.3 The details regarding the loans given to small and marginal farmers by PACS during 2003-04 are given in Table No.10.5.

Table No.10.5
Details of loans given by PACS during 2003-04

| Item | Marginal land holders | Small land holders | All member |
|--|-----------------------|--------------------|------------|
| Loans advanced (crore Rs.) | 720.67 | 775.89 | 3,767.23 |
| Percentage share in loans advanced | 19.1 | 20.6 | 100.0 |
| Loans outstanding (crore Rs.) | 1,250.43 | 1,329.13 | 6,750.50 |
| Percentage share in loans outstanding | 18.5 | 19.7 | 100.0 |
| Per loanee member loan outstanding (Rs.) | 13,443 | 15,733 | 19,497 |

Non-Agricultural Credit Societies

10.10 The number of primary non agricultural credit societies in the State as on 31st March, 2004 was 25,664. The total membership of all these societies was 200.5 lakh, which was more by 1.2 per cent than the previous year. In the total membership of all types of co-operative societies together the share of membership of non-agricultural credit societies was 41 per cent. The deposits of these societies as on 31st March, 2004 were Rs. 67,313 crore which were higher by 9.5 per cent than those of the previous year. Of the total working capital of all types of co-operative societies, non-agricultural credit societies accounted for almost half of the working capital. The working capital of these societies as on 31st March, 2004 was Rs.89,500 crore which was 49 per cent of the working capital of all types of co-operative societies taken together. In the total loans advanced by all types of co-operative societies taken together during 2003-04, the non-agricultural credit societies share was 66 per cent. The loans advanced by these credit societies during 2003-04 were lower by 14 per cent at Rs.43,767 crore over the previous year. The loans outstanding of these societies as on 31st March, 2004 were Rs.52,441 crore, which were higher by 6 per cent than those of Rs.49,522 crore in the previous year. The loans overdues of these societies as on 31st March, 2004 were Rs.3,861 crore as against Rs.3,677 crore in the previous year.

Co-operative Marketing

10.11 The basic objectives of the co-operative marketing are to prevent exploitation of the agriculturists by traders and to enable the cultivators to have better returns of their products.

by making arrangements for purchase and sales of their produce and also to benefit consumers to avail quality goods at reasonable prices. With these objectives in view, financial assistance in the form of share capital and loans are provided by the State Government to co-operative marketing societies for enlarging the scope of their activities.

10.11.1 The Maharashtra State Co-operative Marketing Federation had a working capital of Rs.24.99 crore as on 31st March, 2004. Its total paid up share capital was Rs.13.04 crore, of which Rs.12.35 crore was of the State Government and which accounted for 95 per cent of the total paid up share capital. Its total turnover in 2003-04 was Rs. 378.16 crore, out of which agricultural equisites accounted for 44 per cent.

10.11.2 The Maharashtra State Co-operative Cotton Growers' Marketing Federation Ltd. had a working capital of Rs. 7.88 crore as on 31st March, 2004. Its total turnover during the season 2003-04 had drastically came down to Rs.96 lakh as against Rs.597.95 crore in the year 2002-03 season.

10.11.3 The number of co-operative marketing societies including District/Central Marketing Societies and Marketing Federation, as at the end of March, 2004 was 1,222 with a membership of 1.12 lakh and working capital of Rs.1,219 crore. The turnover of these societies was Rs. 1,903 crore in 2003-04, as compared to Rs.1,826 crore in 2002-03.

Monopoly Procurement of Cotton

10.12 The monopoly procurement of cotton under the Maharashtra Raw Cotton Procurement, Processing and Marketing) Act, 1971 has given extension upto 30th June, 2006. The Government has taken a decision to purchase cotton through Maharashtra State Co-operative Cotton Growers' Marketing Federation in four grades, for each variety of cotton viz. FAQ (Fair Average Quality), Fair, Fadtar and Kawadi during 2004-05 season, as was done in the earlier season. The varietywise and gradewise per quintal purchase price of raw cotton as declared by the State Government for the season 2004-05 ranged from Rs.2,200 to 2,500 for F.A.Q. grade; Rs.1,875 to 2,175 for Fair grade, Rs.1,550 to 1,740 for Fadtar grade and Rs.1,000 for Kawadi grade. From the season 2004-05, the procurement of kapas has started from 8th November, 2004 in the main cotton producing track viz. Vidarbha, Marathwada and Khandesh. For the season

2004-05, the procurement of cotton up to 24th February, 2005 was 200.43 lakh quintals valued at Rs.4,585.87 crore.

10.12.1 Under this scheme, there was lowest ever procurement of Kapas during 2003-04, that was 3200 quintals valued at Rs.73.00 lakh, as against 23.58 lakh quintals of kapas valued at Rs.481 crore procured during 2002-03. The cotton procured during 2003-04 was processed and 662 bales were pressed and 2046 quintals of cotton seed was obtained. All the 662 bales pressed, valued at Rs.63 lakh approximately were contracted for sale upto 24th February, 2005. The cotton seed of 2,046 quintals was sold at Rs.20 lakh. The average selling price per bale for 2003-04 worked out to Rs.9,572 and the average selling price of cotton seed per quintal worked out to Rs.987.

10.12.2 The Final Accounts for the cotton season 2002-03, as per the guaranteed prices, generated a surplus of Rs. 74.56 crore.

Productive Enterprises

10.13 The processing of agricultural produce has a strategic place in rural economy. Co-operative processing helps farmers for getting better returns and to create non-exploitative industrial environment in the rural agro-industry.

10.13.1 The number of co-operative societies engaged in productive activities as on 31st March, 2004 was 40,885 with the membership of 88.02 lakh and working capital of Rs.26,121 crore. Out of these, 854 co-operative societies were independent processing societies. Of these 854 societies, the number of registered co-operative sugar factories, as on 31st March, 2004 in the State was 202, of which 120 were in production during 2003-04. During the year 2003-04, these 120 co-operative and 16 private sugar factories together crushed 291 lakh metric tonnes of sugarcane and produced 32 lakh metric tonnes sugar. As per the pre-seasonal estimates, it is expected that 192 lakh metric tonnes of sugarcane will be crushed during the season 2004-05 and the production of sugar is expected to be 21.75 lakh metric tonnes. The season will be closed by 15th March, 2005. The sugar production during the season will be much lower than that of in the previous year.

10.13.2 As on 31st March 2004, the number of independent registered co-operative societies, except sugar factories, engaged in productive

activities were 652, of which 590 were in production during the year 2003-04. The membership of these societies together was 5.24 lakh and the total paid up share capital was Rs. 52 crore, of which the Government paid-up share capital was Rs.10 crore (19 per cent). The total working capital of these societies together was Rs. 261 crore. The loan outstanding of these societies was Rs.39 crore.

10.13.3 The quantity of kapas processed by 221 cotton ginning and pressing societies in the year 2003-04 was 4 lakh tonnes, which was less by 13 per cent than that in the previous year. The quantity of paddy process by the 88 rice mills was 1.15 lakh tonnes which was more by 0.8 per cent than that in the previous year.

10.13.4 The details of independent co-operative societies engaged in productive activities are given in the Table No.10.6.

10.14 As on 31st March, 2003 the number of co-operative spinning mills in the State was 201 and their membership was 5.59 lakh. The paid-up share capital of these mills was Rs. 747 crore of which, Rs. 632 crore was of the State Government. The share of the State Government in total paid-up share capital was 84.60 per cent. The working capital of these mills was Rs. 1,338 crore. The loans outstanding of these spinning mills was 645 crore as on 31st March, 2003. Of the total 201 spinning mills in the State, 43 mills having 15 lakh spindles were in production and produced yarn worth Rs.590 crore during the year 2002-03. Out of remaining 158 spinning mills, about 11 mills were under conversion/cancellation of registration, 17 mills were stop their production, 41 mills were under erection and 89 mills made no further progress after registration.

10.15 Co-operative spinning mills were established with the prime objectives of providing employment to the downtrodden segments of the society and supply of quality yarn to weavers' co-operatives. But, in the recent past, performance report of co-operative spinning mills showed a dismal picture. Most of them were sick and beyond revival stage. There were 689 co-operative handloom societies and 1,087 co-operative powerloom societies in the State at the end of 2002-03. These societies with 32.5 thousand handlooms produced cloth worth Rs.84.53 crore during 2002-03 as against Rs.105 crore during the year 2001-02 and 29.9 thousand powerloom produced cloth worth Rs.36.78 crore during 2002-03 as against Rs.35 crore in the previous year.

10.16 There were 26,259 primary co-operative dairy societies and 78 dairy unions in the state with membership of 23.33 lakh and 3.87 lakh respectively in 2003-04. These dairy societies and dairy unions had working capital of Rs. 248.16 crore and Rs. 772.32 crore respectively. During 2003-04, the total value of sale of milk and milk products of the dairy societies was Rs.1,685.06 crore and that of the dairy unions was Rs.1,966.89 crore. The same was Rs. 1,681 crore and Rs.1,579 crore respectively in the year 2002-03.

10.17 During 2003-04, there were 2,559 primary fisheries co-operative societies, 30 fisheries unions and 2 fisheries federations. All these societies had membership of 2.08 lakh. They had working capital of Rs.98.25 crore and they sold fish and fish products worth Rs.120.8 crore as against the sale of Rs.112 crore in 2002-03.

Table No. 10.6
Independent agro-processing co-operative societies

| Type of Society | Total number of societies | | Number of societies in production | | Quantity processed† (in thousand tonnes) | |
|---------------------------------------|---------------------------|------------|-----------------------------------|------------|--|----------|
| | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04* | 2002-03 | 2003-04* |
| Sugar factories | 201 | 202 | 144 | 120 | 50,557 | 27197 |
| Cotton ginning and pressing societies | 270 | 248 | 259 | 221 | 461 | 400 |
| Rice mills | 89 | 89 | 88 | 88 | 114 | 115 |
| Oil mills | 14 | 13 | 12 | 12 | 30 | 32 |
| Others | 284 | 302 | 265 | 269 | 22 | 23 |
| Total | 858 | 854 | 768 | 710 | ... | ... |

† Quantity processed pertains to sugarcane, raw cotton, paddy, oil seeds.

* Provisional.

Social Service and Other Co-operative Societies

10.18 By the end of March, 2004, besides an apex consumers' federation, there were 147 wholesale consumers stores and 3,302 primary consumers stores in the State. The sale of the apex consumer federation during 2003-04 was Rs.37 crore as against Rs.36 crore in 2002-03. The amount of loss incurred by the apex consumer federation by the end of March, 2004 was Rs.52 lakh and it was same for the earlier year too. Even though the sales of these consumers stores registered a marginal growth, their losses were more as compared to the previous year. The total sale of all these consumer stores was Rs. 954 crore during 2003-04 as against Rs.935 crore in the previous year.

10.19 There were 61,506 co-operative housing societies in the State with a membership of 16.78 lakh as at the end of March, 2004. At

the end of March 2003, the total employment in these societies was 38,510. The progressive number of tenements as on 31st December, 2004 for which loans were sanctioned by the Maharashtra State Co-operative Housing Finance Corporation was 2.19 lakh. Of which, construction work of almost all tenements were completed by 31st December, 2004.

10.20 There were 10,056 labour contract societies in the State with 7.03 lakh members as at the end of 2003-04. These societies executed work of Rs.537 crore during 2003-04, as against Rs.562 crore during the previous year. The total employment in these societies as at the end of March, 2003 was 88,107.

10.21 There were 265 forest labour societies in the State with membership of 68 thousand as at the end of March, 2004. The wood and other forest products sold by these societies during the year 2003-04 were worth Rs.58 crore.



INFRASTRUCTURE

11.1 Planned investment in the basic infrastructure boosts not only the growth of the economy but also assures its sustainable development over a sufficiently long period. The infrastructure in a broad sense covers power, transportation by railways, road, air and water, irrigation, communication and urban infrastructure.

11.2 The growth of the economy, calls for a matching rate of growth in the infrastructure facilities. The growth rate of demand for power in developing countries is generally higher than that of GDP rate. Therefore, in order to support a rate of growth of GDP of around 7 per cent per annum, the rate of growth of power supply needs to be over 10 per cent annually. Power sector, hitherto, had been funded mainly through budgetary support and external borrowings. But given the budgetary support limitations, the Government has now recognised the importance of private investment in the power sector.

11.3 The ultimate goal of infrastructure policy is to effectively deliver infrastructure services of high quality and at low prices, to households and firms. The success of infrastructure policy must be judged by the quality, quantity and prices that end users are charged for these services and comparison with global standards on each of these three fronts. The policy reforms for the supply of basic infrastructural services drawn up with a consumer face, supported by appropriate code of conduct are necessary for both development and welfare of people.

Energy

Electricity

11.4 The National Electricity Policy aims at laying guidelines for accelerated development of power sector, providing supply of electricity to all areas and protecting interest of consumers and

other stakeholders keeping in view availability of energy resources, technology available to exploit these resources, economics of generation using different resources and energy security aspects. The policy envisages per capita availability of electricity to be increased to over 1,000 units by 2012. The National Electricity Act 2003 emphasises to introduce competition protection of consumer's interest and to provide power to all.

11.5 The Government of Maharashtra has already taken steps towards implementation of this Act by constitution of a State Electricity Regulatory Commission, enforcement of a tariff order, passing an anti-theft law and entering into a Memorandum of Understanding (MOU) with Government of India. Maharashtra State Electricity Board (MSEB) plays significant role in the State in generation and distribution of power. Since Maharashtra being the highly industrialised and urbanised state in the country, the demand for electricity in the State is very high and hence MSEB's own generation capacity alone is not adequate to fulfil the demand. The additional requirement of electricity is partially met from the Central Government power project. In addition, Tata Electric Company, Reliance Energy and MEDA are also connected to the national grid.

Installed Capacity

11.6 The installed capacity of electricity generation in Maharashtra as on 31st March 2004 was 12,903 MW, which was less by 60 MW than that of the earlier year. Of the total installed capacity of 12,903 MW, MSEB accounted for major share of 75 per cent, Tata for 14 per cent, Reliance Energy for 4 per cent, Dabhol Power Corporation (DPC) for 6 per cent and Tarapur for 1 per cent. The capacity of DPC was not in use since May, 2001. However, the Government has actively initiated some steps for its revival.

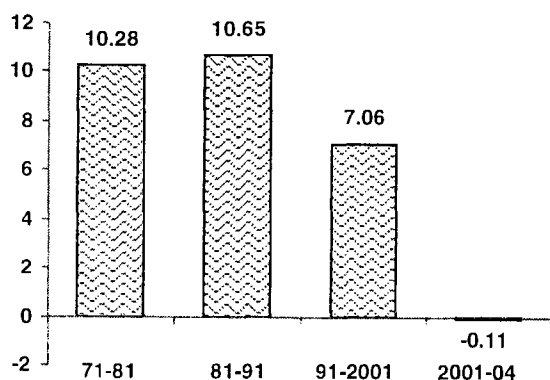
11.6.1 In addition to above installed capacity, the State has a share of 2,189 MW in the installed capacity of the National Thermal Power Corporation (NTPC) and the Nuclear Power Corporation (NPC). Thus, the total installed capacity of electricity generation available to the State as on 31st March, 2004 was 15,092 MW. The installed capacity in Natural Gas has decreased by 60 MW in 2004 compared with 2003, as one unit of Uran Natural Gas plant has closed in July, 2003. The Table No. 11.1 gives the details of available installed capacity by type of electricity generation.

Table No. 11.1
Installed Capacity

| Type of generation | (MW) | |
|----------------------------------|------------------|---------------|
| | As on 31st March | |
| | 2003 | 2004 |
| In the State | | |
| Thermal | 8,075 | 8,075 |
| Hydro | 2,878 | 2,878 |
| Natural Gas | 1,820 | 1,760 |
| Nuclear (State's Share) | 190 | 190 |
| Total (A) | 12,963 | 12,903 |
| State's share in NTPC/NPC | 2,189 | 2,189 |
| Total (A+B) | 15,152 | 15,092 |

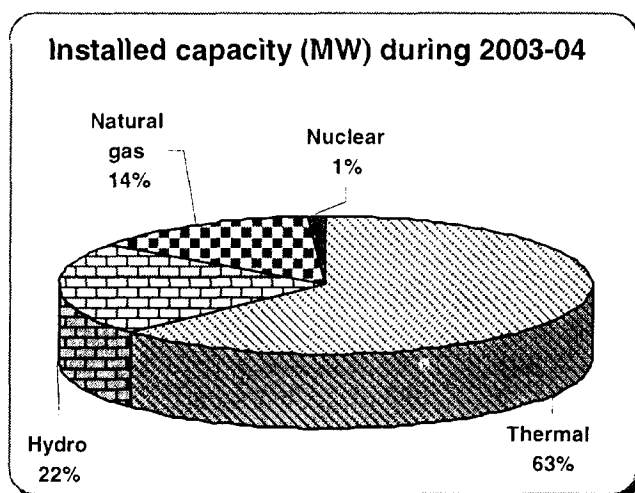
11.6.2 The installed capacity of electricity generation in the State was increased annually at the compound rate of 7.4 per cent during the

Average annual growth rate installed capacity of Electricity in Maharashtra



period from 1960-61 to 2003-04. During 1961-71 decade, the installed capacity in the State was increased annually at the compound rate of 10.6 per cent. However during 1994-2004, it increased annually with much lower rate of 5.1 per cent (compounded), nearly half the rate observed in 1961-71 decade. In the recent years, there was no addition in the installed capacity in the State, which is a cause of concern and will have serious implications, as the demand of electricity is rising enormously.

11.6.3 Of the total installed capacity of 12,903 MW in the State as on 31st March, 2004, the thermal capacity accounted for 62.6 per cent, followed by hydro 22.3 per cent, natural gas 13.6 per cent and nuclear (Maharashtra State's share) 1.5 per cent. The derated capacity of all electricity generation plants in the State as on 31st March, 2004 was 12,815 MW. During 2004-05 there was no capacity addition by end of November, 2004.



Generation of Electricity

11.7 During 2003-04, the total generation of electricity (including electricity received from non-conventional sources) was 66,991 million Kilo Watt Hours (KWH), which was higher by 3.47 per cent over the previous year. Thermal electricity generation accounted for 80.7 per cent of the total generation of electricity in the State. The share of Tata Power and Reliance Energy in the generation of total electricity was 15.5 per cent and 6 per cent respectively. The details of electricity generated in the State during 2002-03 and 2003-04 are given in Table No.11.2.

Table No. 11.2
Generation of Electricity in the State
 (million KWH)

| Type | 2002-03 | 2003-04 | % change |
|--------------|---------------|---------------|---------------|
| Thermal | 52,204 | 54,071 | (+)3.6 |
| Hydro | 5,534 | 5,425 | (-)2.0 |
| Natural Gas | 5,043 | 5,432 | (+)7.2 |
| Nuclear * | 1,158 | 1,131 | (-)2.3 |
| Others | 801 | 932 | (+)16.4 |
| Total | 64,740 | 66,991 | (+)3.5 |

* State's share

11.7.1 MSEB has proposed various measures to fulfil the increased demand of electricity

A) The capacity addition by way of extension to the existing power projects at Parali Vajjanath thermal project (250 MW), Paras thermal project (250 MW) and Uran gas turbine project (1040 MW). The works of Parli and Paras thermal power projects have been started and are expected to be completed by 2006-07.

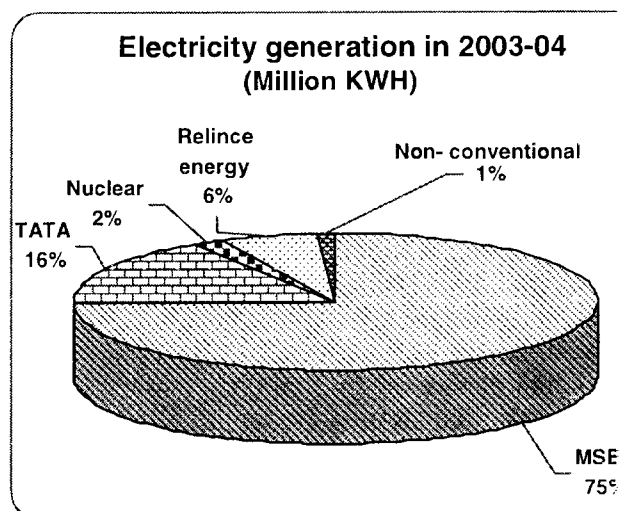
B) It is proposed to increase, 1,020 MW capacity of electricity in the 10th five year plan. It include (i) Ghatghar (250 MW), (ii) Minor Hydro Projects of State Government (90 MW), (iii) Sardar Sarovar Project (391 MW) and (iv) Non-conventional energy projects (289 MW)

C) MSEB has made an agreement for purchase of electricity from various projects of Government of India. They are (i) Vindhyachal stage II of Central Electricity Authority (326 MW), (ii) Shipath Stage -II (319 MW) and (iii) Kahalgaon stage II (100 MW).

D) MSEB has registered a demand of 468 MW electricity from Central Nuclear Power Corporation Project of unit 3 & 4 of Tarapur.

E) Besides, MSEB has proposed renovation and modernisation of Thermal projects, which would get additional 19 MW electricity. To increase capacity of Uran Terbine Gas Project by 300 MW, efforts are being made by MSEB to increase supply of natural gas.

11.7.2 During 2004-05 upto the end of December, the total generation of electricity in the State was 50,693 million KWH, which was higher by 3.5 per cent than that in the corresponding period of 2003-04.



Purchase of Electricity

11.7.3 During 2003-04, in addition to abc the State have received 16,991 million KW power from NTPC and NPC (Kakrapar Nucle Power) and 40.22 million KWH power from Bhandardara Hydro Electric Project (BHEP). The cost of electricity per unit from central sector was Rs. 2.00 and that for BHEP Rs. 2.80. The electricity received by the State during 2004- upto December, from NTPC and NPC was 12,9 million KWH and that from BHEP (Dodson) was 24 million KWH.

Consumption of Electricity

11.8 The total consumption of electric in the State (excluding electricity sold to other states) during 2003-04 was 52,233 million KW which was higher by 4.6 per cent compared 49,945 million KWH during 2002-03. The industrial sector (37.9 per cent) was the largest consumer of the electricity in the State, followed by domestic (24.2 per cent) and agriculture sector (20.2 per cent). These three sectors together accounted for 82.3 per cent of the total electric consumption in the State. The Table No.1 gives the details of consumption of electricity Maharashtra.

11.8.1 During 2003-04, the consumption of electricity was increased by 4.6 per cent over the previous year. During the last decade, the consumption of electricity in the state was increased annually at the compound rate of 4.6 per cent.

11.8.2 During 2003-04, the *per capita* total, industrial and domestic consumption

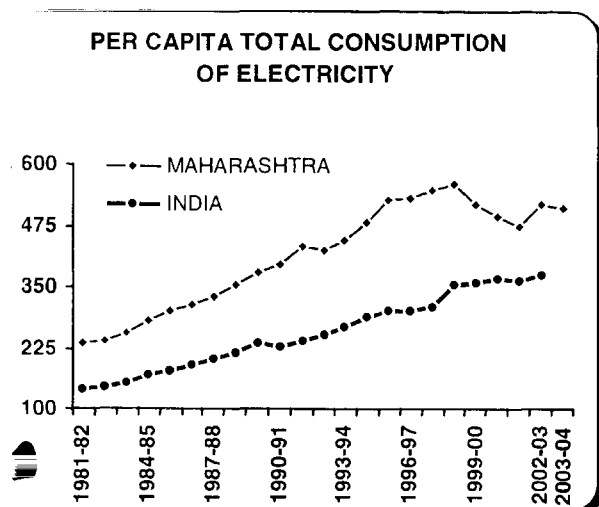
Table No. 11.3

Consumption of electricity in the State (million KWH)

| Type | 2002-03 | 2003-04 | %change |
|--------------------|---------------|---------------|------------|
| Domestic | 12,267 | 12,617 | 2.9 |
| Commercial | 4,669 | 5,015 | 7.4 |
| Industrial | 18,156 | 19,806 | 9.1 |
| Agriculture | 10,642 | 10,572 | (-)0.7 |
| Public Lighting | 666 | 632 | (-)5.1 |
| Railways | 1,748 | 1,749 | 0.1 |
| Public Water Works | 1,416 | 1,493 | 5.5 |
| Miscellaneous | 381 | 349 | (-)8.3 |
| Total | 49,945 | 52,233 | 4.6 |

Note: Consumption indicated in the table is exclusive of electricity sold to other States.

Electricity in Maharashtra was 511.6 KWH, 194 KWH and 123.6 KWH respectively. As per the best available data, the corresponding figures All-India for 2002-03 were 373.0 KWH, 108.96 KWH and 79.0 KWH respectively.



Export of Electricity

11.8.3 Maharashtra sold 8.64 million KWH of electricity to other States in 2003-04 against 16.8 million KWH sold during 2002-03.

Maharashtra State Electricity Board

11.9 The Maharashtra State Electricity Board was established by the Government of Maharashtra in 1960 to develop infrastructure relating to State's

growing needs for electrical energy. The Board has endeavoured to fulfil this obligation over the last 43 years. Starting with an installed capacity of 135 MW, the Board has become one of the leading electricity boards in power development with the highest installed capacity and the largest transmission and distribution (T & D) network in the country.

Progress of MSEB's Connectivity

| Ending March | Towns & villages electrified | Agriculture pumps energised | Consumers connected |
|--------------|------------------------------|-----------------------------|---------------------|
| 1962 | 1,191 | 8,445 | 1,41,043 |
| 1975 | 19,085 | 3,80,844 | 18,35,245 |
| 1990 | 39,413 | 14,74,537 | 77,03,706 |
| 2000 | 39,413 | 22,23,414 | 1,29,82,779 |
| 2004 | 40,687 | 22,74,146 | 1,35,32,398 |

11.9.1 Of the total installed capacity (12,903 MW) as on 31st March, 2004 in the State, the MSEB accounted for 75 per cent. The electricity generated by MSEB during 2003-04 was 50,276 million KWH, which was about 75 per cent of the total generation of electricity in the State.

11.9.2 The categorywise percentage share in consumption and revenue received by MSEB from sale of electricity during 2003-04 is shown in Table No.11.4.

Table No. 11.4
Electricity consumption and revenue of MSEB during 2003-04

| Type of consumption | Percentage share in | |
|---------------------|---------------------|-------------------|
| | consumption | revenue |
| Domestic | 18.7 | 15.9 |
| Commercial | 4.4 | 6.6 |
| Industrial | 42.3 | 48.0 |
| Railways | 2.6 | 3.1 |
| Public Lighting | 1.3 | 1.1 |
| Agriculture | 24.8 | 10.7 |
| Public Water Works | 3.6 | 2.8 |
| Miscellaneous | 2.3 | 11.8 |
| Total* | 100.0 | 100.0 |
| | (40,736 MKWH) | (Rs.13,332 Crore) |

* excluding sales to other States

11.9.3 Out of the total consumption of electricity distributed by MSEB in 2003-04, the

industrial sector accounted for 42.3 per cent and has contributed 48.0 per cent in the total revenue received by MSEB. Though the agricultural sector accounted for 24.8 per cent of electricity consumption, it has contributed only 10.7 per cent in the revenue receipts of MSEB. During 2003-04, out of the total consumption only 76 per cent units were metered. The unmetered consumers are mostly from agriculture, powerloom and some of the public water work units. As per Maharashtra Electricity Regulatory Commission's (MERC) order dated 10th March, 2004, the current average cost of power supply per unit worked out to Rs.2.83. However, the electricity is not charged at uniform rate to all the users. The details of the tariff rates in force for different types of users and ratio of average realisation to average cost of supply per unit are given in Table No.11.5.

Table No. 11.5

Average realisation and it's ratio to average supply cost for MSEB (as on 10th March, 2004)

| Category of user | Average realisation (Rs. per unit) | Ratio of average realisation to average cost of supply (%) |
|---------------------------|------------------------------------|--|
| Low Tension Power | | |
| Domestic | 2.79 | 99 |
| Non-Domestic | 3.94 | 138 |
| General motive power | 2.83 | 100 |
| Public Water Works | | |
| i) Urban | 2.82 | 100 |
| ii) Rural | 1.54 | 55 |
| Agriculture | 1.94 | 69 |
| Street Lighting | 2.41 | 85 |
| High Tension Power | 3.20 | 113 |

Note: Average cost of power supply per unit is Rs.2.83

Plant Availability and Load Factors

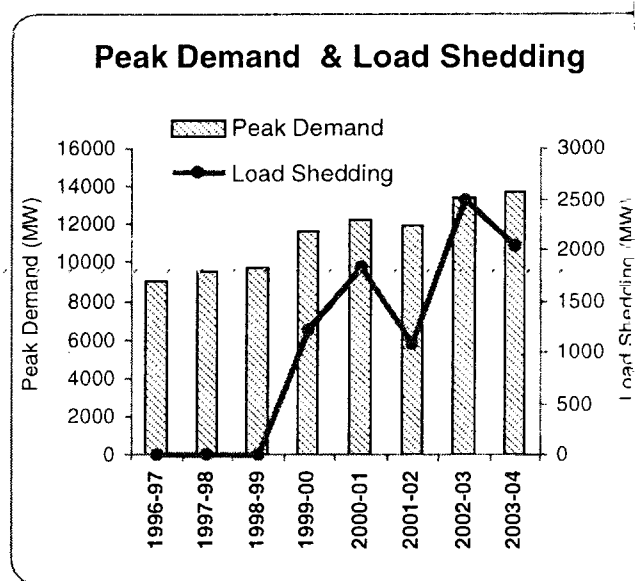
11.9.4 During 2003-04, the average plant availability factor (AVF) of thermal power stations of MSEB was 84.64 per cent and that of Tata Electric Company (TEC) was 94 per cent. The plant load factor (PLF) of MSEB was 75.07 per cent and that of TEC was 77.4 per cent. The average PLF for All India was 74.9 per cent during 2002-03. The gap between AVF and PLF for MSEB and TEC was 9.57 percentage point

and 16.6 percentage point respectively. Theoretically, the AVF and PLF should be nearly equal. The AVF is influenced by many factors like the quality of coal, quality of maintenance and age of plant, while the PLF is influenced by the quality of load management.

Peak Demand

11.9.5 During 2003-04, the peak demand of 13,692 MW electricity was met on 23rd March 2004 with load shedding of 2,042 MW. During 2004-05, upto December, the peak demand of 14,506 MW was met with load shedding of 3,032 MW.

11.9.6 The available installed capacity of electricity generation for MSEB during 2003-04 was 12,903 MW. The evening peak demand varied in range of 9,100 MW to 13,700 MW and it was met by load shedding of 2,050 MW. The morning peak demand varied in the range of 8,450-12,400 MW which was met by load shedding of 1990 MW.



Transmission and Distribution

(T & D) Losses

11.9.7 The MSEB had T & D losses of 38.5 per cent with respect to the total electricity input for the year 2003-04. The T & D losses during 2001-02 and 2002-03 were 39.17 per cent and 38.59 per cent respectively. The MSEB has initiated the measures like replacement of faulty meters, bifurcation of LT Circuits, diversion of heavily loaded feeders, checks on power

thefts and unauthorised energy consumption, etc. For reduction of T & D losses under Internal Reform Programme, resulting marginal decrease in T & D losses from 38.59 per cent to 38.2 per cent during 2003-04. The Scheme like Janmitra Yojana, DTC metering and Energy Accounting Programmes are some other measures also are implemented.

11.9.8 With the objective of improving and maintaining the performance, MSEB is pursuing a program of renovation, modernisation and augmentation of various old power stations. Transmission system form is an essential link between power stations and load centres and plays a vital role in the power grid. For improvement in the transmission system, during 2003-04, MSEB installed 704 circuit kms. Extra High Voltage lines bringing the total to 34,070 circuit kms. During 2003-04, the transformation capacity to the tune of 2573 Mega Volt Ampere (MVA) was added bringing the total transformation capacity to 48,867 MVA. During 2003-04, no. of distribution transformers installed was 5,879 bringing the total to 1,97,899.

11.9.9 In order to detect and curb the theft of electricity energy, there are 32 flying squads operative at different places in the State. During 2003-04, these squads detected 6,751 irregular/unauthorised electric units, of which 920 were theft cases.

11.9.10 The financial statistics of the MSEB for the year 2002-03 and 2003-04 are presented in Table No. 11.6.

Table No. 11.6
Financial Statistics of the MSEB

| Item | (Rs. in crore) | |
|------------------------------------|-----------------|-----------------|
| | 2002-03 | 2003-04 |
| a. Revenue Receipts | 13,447.1 | 14,453.7 |
| b. Subsidy from State Govt. | - | - |
| Total receipts (a+b) | 13,447.1 | 14,453.7 |
| a. Expenditure | 13,673.1 | 14,352.2 |
| b. less : Expenses capitalized | | |
| (i) Interest and finance charges | 97.8 | 86.1 |
| (ii) Other expenses | 153.1 | 163.9 |
| Total (i+ii) | 250.9 | 250.0 |
| c. Other Expenditure | 240.1 | 398.7 |
| Total expenditure (a-b+c) | 13,662.3 | 14,501.0 |
| a. Profit before tax | (-215.2) | (-47.3) |
| b. Prior period (charges)/ credits | (-39.5) | (-501.7) |
| Deficit (-) | (-254.7) | (-549.0) |

11.9.11 The MSEB received total revenue (excluding subsidy) of Rs.14,454 crore during 2003-04, which was 7.48 per cent higher than that of the previous year. The total expenditure during 2003-04 was Rs.15,003 crore which was more by 9.49 per cent than that of the previous year. MSEB's finances have been affected adversely by poor revenue realisation and constant subsidisation.

Free Electricity to Agriculture

11.9.12 The Government of Maharashtra is providing free electricity to agriculture pumpsets with effect from 1st July, 2004. For that purpose, subsidy of Rs. 810 crore to MSEB and Rs. 20.50 crore to Mula Pravara Electric Co-operative Society Ltd., has released by Government of Maharashtra against their revenue losses for the period from 1st July, 2004 to 31st December, 2004.

Rural Electrification

11.9.13 In order to stimulate the growth of small-scale industries and promote a more balanced and diversified economy, rapid rural electrification was found necessary and was pursued vigorously at State level. Maharashtra State has achieved 100 per cent village electrification by the end of March, 1989. All Harijan Basties (33,711) feasible for electrification in the State have been electrified by 31st March, 1998. During 2003-04, 110 wadis were electrified, bringing the total number of wadis electrified to 37,737.

11.9.14 During 2003-04, 74,021 agricultural pumps were energised, bringing the total number of agricultural pumps energised in the State to 22.74 lakh by the end of March, 2004. The number of pending applications for energisation of pump sets, as on 31st March, 2004, was 4.03 lakh, as compared with 2.04 lakh as on 31st March, 2003.

Maharashtra Electricity Regulatory Commission

11.10 The Government of Maharashtra has set up the Maharashtra Electricity Regulatory Commission (MERC) under the provisions of the Electricity Regulatory Commission Act, 1998, for regulation of pricing of the electricity and for the economic management reforms of the power sector. The commission is primarily entrusted

with the task of pricing of electricity in a rational and transparent manner.

Power Sector reforms in Maharashtra

11.11 Government of Maharashtra has published a 'White Paper' on Maharashtra Power Sector Reforms in, August, 2002. 'Maharashtra Power Reforms Bill' has been updated based on suggestions and comments received from various sources. The Government has already taken some steps to convert MSEB's loan liabilities into Government equity. The Maharashtra Power Reforms Bill has been passed. The main features of the bill are i) Restructuring MSEB in order to promote and encourage efficiency, autonomy and accountability in decision making, ii) Anti-theft legislation iii) metering all agricultural consumers and iv) to reduce technical and commercial losses.

Restructuring of MSEB

As per the Electricity Act 2003 of Government of India, the State Govt. has to restructure the MSEB by 10th June, 2005. The restructuring of MSEB proposes to divide MSEB in four companies i.e. 1) Holding Company 2) Generation Company (GENCO) 3) State Transmission Utility Company (STU) and 4) Distribution Company (DISCOM).

Privatisation of Electricity Generation

11.12 In keeping with the policy decision taken by the Government of India in respect of infrastructure development, the State Government has taken active lead to involve private sector participation in the power sector.

Captive Power Generation

11.13 The Captive Power Plant is a generation plant set up by an industrial unit for supplying power primarily for its own consumption. Under this scheme, a threshold level is prescribed for the industry's own consumption from the captive units and capacity in excess is permitted for sale into the grid. In accordance with this policy, the MSEB has granted permission and given 'No Objection Certificate' to 163 projects based on conventional energy generation for total capacity of 1,757 MW upto December, 2004. Out of these projects, the total generation capacity so far commissioned is 898 MW by 79 projects.

Non-Conventional Energy Sources

11.14 During the last two decades, there has been a vigorous pursuit of activities relating to the development, trial and induction of a variety of renewable energy technologies. The Ministry of Non-conventional Energy Sources, Government of India provides the financial assistance depending upon the projects and schemes. In Maharashtra, the programmes covered under non-conventional energy are implemented by Maharashtra Energy Development Agency (MEDA).

11.14.1 For about one decade since its establishment, MEDA did extensive work in the field of renewable energy focussed in rural areas on stand-alone devices. Energy conservation work was also taken up in 384 industries in the State.

11.14.2 With the excellent participation of the private sector, MEDA has been able to facilitate establishment of about 695 MW of installed capacity in wind power generation at 11 different locations in Maharashtra during 2003-04. During the last two years, MEDA has also initiated establishment of power projects with other renewable sources of energy. Bagasse based co-generation and power projects based on other agricultural waste like rice husk, generation of power from industrial and urban waste etc. are other areas in which significant advancements have been made.

11.14.3 Maharashtra is the second largest state in the country in production of power from renewables with around 659 MW installed capacity (including Small Hydro) which is 4.4 per cent of total installed capacity of the State.

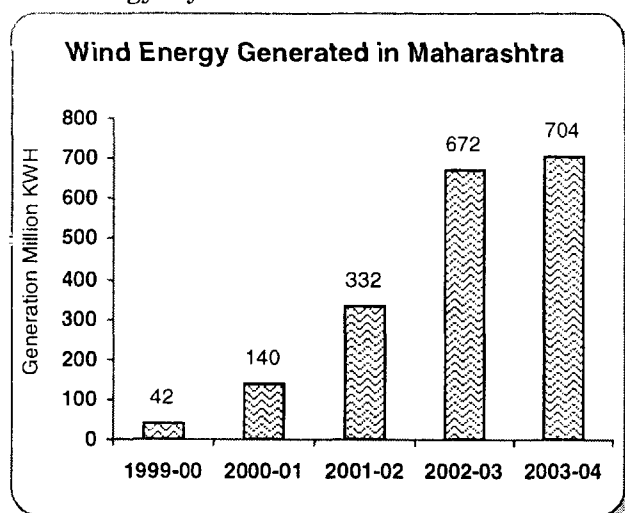
Co-generation of Electricity By Co-operative Sugar Factories

11.14.4 In Maharashtra ten sugar factories (of which nine bagasse based and one biogas based) and one paper mill have already started co-generation and have fed 202.7 million KWH to MSEB grid till the end of December, 2004. There are 135 sugar factories in Maharashtra having potential of 1000 MW of captive power generation. The co-generation projects of 17 bagasse based and two biomass based factories with capacity of 248.5 MW and 14.6 MW respectively are in pipeline.

11.14.5 The MSEB have a power purchase agreements with eleven sugar / paper mills having total capacity of 85.86 MW.

Wind Energy

11.14.6 Wind power potential in Maharashtra is 3,650 MW. The sites with annual mean Wind Power Density more than 200 W per square meter are considered as potential sites. Maharashtra has 28 such sites. Technical viability of demonstration projects and investor friendly policy announced by the Government of Maharashtra has facilitated private investment of more than Rs. 2000 crore in the wind energy sector. Nearly 399 MW of private wind power projects have been installed in the State at 11 sites. During 2003-04, 704 million KWH energy was generated by these projects. The Government of Maharashtra has declared a new policy for wind energy in February, 2004. The new policy envisages to establish private projects which will generate total 750 MW energy by 2007.



Biomass Power

11.14.7 The potential of grid quality power from surplus biomass material in the state is 81 MW. The policy for attracting private participation in Maharashtra is showing encouraging trend. As a result, first project of 1 MW capacity is installed and commissioned at Jay Pulp and Power Ltd, Satara and another agro-waste power project of 6.6 MW at village Mumkheda in Gondia district is under commissioning. The projects of 231.8 MW capacity are in the pipeline.

Energy Conservation Programme

11.14.8 Under this programme, energy audit of various industrial establishments are undertaken to identify inefficient use of energy and to suggest ways and means to save the energy. During 2003-04, eight energy audits were conducted with the help of experts and the implementation of suggestions made thereunder resulted in energy savings in the post audit period.

11.14.9 The performance in respect of the other important schemes implemented by MEDA is shown in Table No.11.7.

Table No. 11.7
Performance in respect of schemes implemented by MEDA

| Item | During 2003-04 | Cumulative upto March, 2004 |
|--|----------------|-----------------------------|
| (1) Installed capacity of Power Generation from Renewables | | |
| (a) Wind Energy Power Projects (MW) | 8.2 | 407.6 |
| (b) Biomass Power Project (MW) | 0.0 | 3.5 |
| (c) Bagasses Co-generation (MW) | 0.0 | 32.5 |
| (d) Industrial Waste (MW) | 0.0 | 6.1 |
| (2) Solar Thermal Programme | | |
| (a) Solar cookers sold (no.) | 970 | 47,257 |
| (b) Total capacity of Solar systems (lakh litres per day) | 7.7 | 58.2 |
| (c) Solar desalination systems installed (no.) | 0.0 | 954 |
| (d) Solar Photovoltaic lanterns installed (no.) | 300 | 8,977 |
| (e) Solar Photovoltaic battery chargers distributed (no.) | 0.0 | 310 |
| (f) Solar Photovoltaic sprayers supplied (no.) | 0.0 | 179 |
| (3) Bio-gas Programme | | |
| (a) Community bio-gas plants installed (no.) | 0.0 | 72 |
| (b) Institutional bio-gas plants installed (no.) | 0.0 | 35 |
| (c) Nightsoil based bio-gas plants installed (no.) | 0.0 | 352 |
| (4) Bio-mass Gasifier Programme | | |
| (a) Improved crematoria | 20 | 952 |

Transport and Communications

Transport

11.15 The transport services which include roads, motor vehicles, railways, water transport civil aviation and communication facilities are the important constituents of the infrastructure. The present worldwide competition has invited more attention towards making availability of appropriate infrastructure that leads to rapid economic development. The Government of Maharashtra, keeping in view the linkage between the infrastructural facilities and economic development has been always giving high priority to the expansion of these facilities in the State.

11.16 Lack of adequate transport infrastructure has been not only constraining the growth performance of the economy but has also induced significant costs in terms of environmental degradation, morbidity and welfare loss. Ever increasing vehicle growth choking the road corridors, particularly in the big cities of the State has become routine. The road network expansion has failed to keep pace with the traffic growth resulting heavy congestion in these cities.

Roads

11.17 The road infrastructure development is dealt by Public Works Department (PWD) of the State Government, Zilla Parishads (ZPs), Municipal Corporations and Municipal Councils etc, in the State. The total road length maintained together by PWD and ZPs (excluding internal road length of local bodies) at the end of March, 2004 was 2.27 lakh kms. The road length by categories of road is given in the Table No. 11.8.

Table No. 11.8
Road length maintained
by PWD and ZPs

| Category of road | ending March | | Per cent increase |
|----------------------|--------------|----------|-------------------|
| | 2003 | 2004 | |
| National highways | 3,710 | 4,225 | 13.9 |
| State highways | 33,705 | 33,633 | (-)0.2 |
| Major district roads | 48,192 | 48,220 | 0.1 |
| Other district roads | 44,183 | 44,321 | 0.3 |
| Village roads | 95,150 | 96,593 | 1.5 |
| Total | 2,24,940 | 2,26,992 | 0.9 |

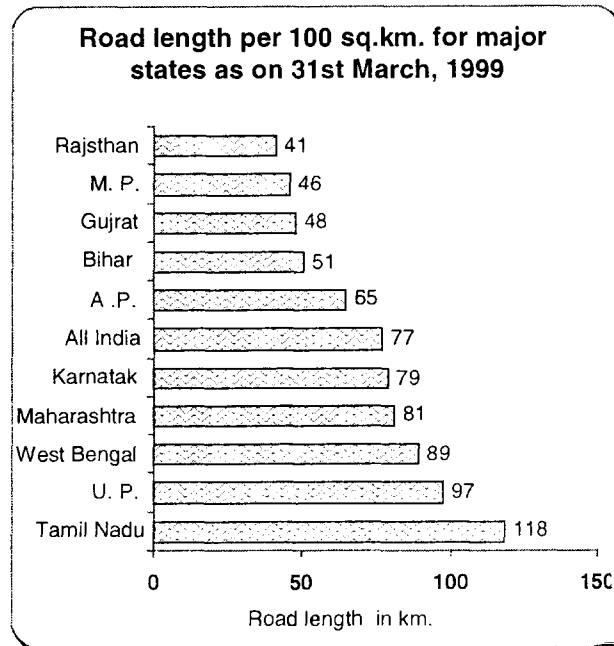
11.18 The data on road length reveals that, at the end of March, 2004 the road length

maintained together by PWD and ZPs registered an increase of 0.9 per cent over the previous year. The length of National highways was increased by 13.9 per cent during 2003-04 and Major district roads, Other district roads and Village roads were increased marginally over the previous year by 0.1 per cent, 0.3 per cent and 1.5 per cent respectively. The length of State highways was decreased marginally by the 0.2 per cent due to conversion into the higher category.

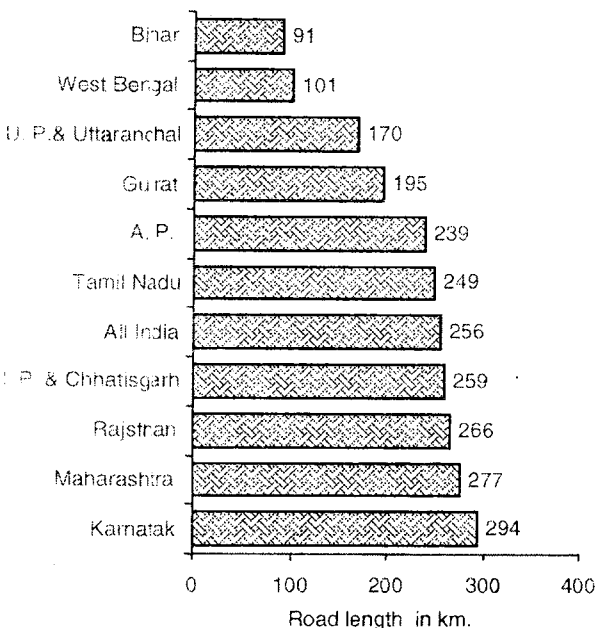
11.19 At the end of March, 2004 the proportion of surfaced (1,98,459 km) and un-surfaced (28,533 km) road length maintained together by PWD and ZPs was 87.4 per cent and 12.6 per cent respectively.

11.20 For measuring the spread of roads indicators such as road length per 100 sq.km of geographical area and road length per lakh of population are normally used. At the end of March 2004 the road length per 100 sq.km. of geographical area maintained by PWD and ZPs in the State was 74 km. Similarly, the road length per lakh of population was 221 km.

11.21 At the end of March, 2004 out of the total 40,412 inhabitate villages (as per Census 1991) in the State, 37,932 villages (93.9 per cent) were connected by all-weather roads, while 1,715 villages (4.2 per cent) were connected by all-weather or fair-weather roads. Remaining 765 inhabitate villages were not connected by all-weather or fair-weather roads, out of which 66 villages were having population less than 500. Further out of these 765 villages, 255 villages were

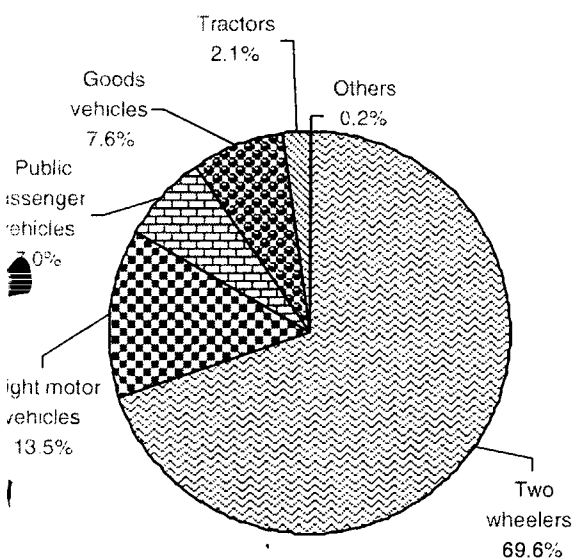


Road length per lakh of population for major states as on 31st March, 1999



tribal area including 108 in hilly area and 510 villages were in non-tribal area including 158 in hilly area.

Motor vehicles in Maharashtra in percentage (1st January, 2005)



Maharashtra State Road Development Corporation

11.22 Maharashtra State Road Development Corporation (MSRDC) was established in 1996 for road development through private participation.

The major projects undertaken on 'Build, Operate and Transfer' (BOT) basis by MSRDC, expenditure incurred thereon upto end of December, 2004 are given in the Table No. 11.9

Table No. 11.9
Major Projects undertaken by MSRDC
(Rs. in Crore)

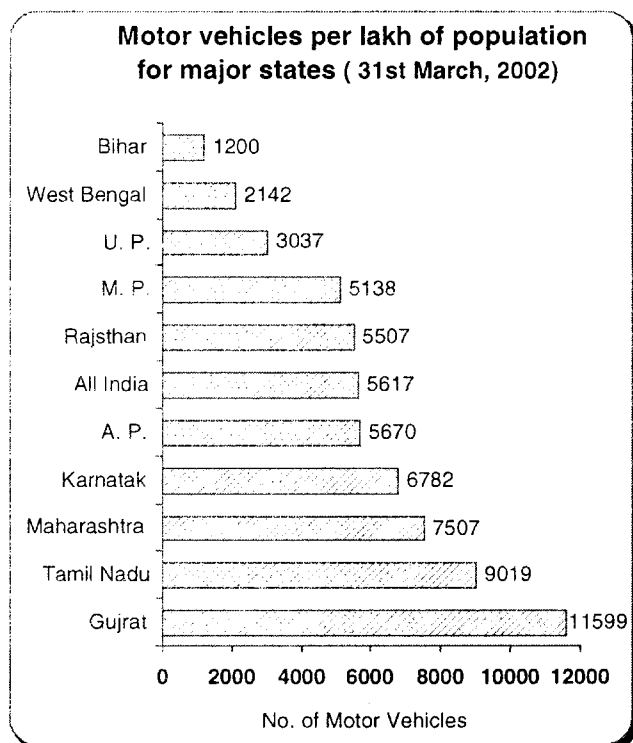
| Name of the Project | Project cost | Expd. upto Dec.04 |
|---|--------------|-------------------|
| A) Completed Projects | | |
| 1 Mumbai Pune Expressway | 2,136 | 2,098.76 |
| 2 50 Flyovers in Mumbai & Andheri Flyover | 1,617 | 1,170.16 |
| 3 Railway Over Bridges in Maharashtra | 195 | 185.95 |
| 4 Kalyan Durgadi Bridge | 4 | 3.95 |
| 5 Thane-Ghodbunder Road | 81 | 73.10 |
| 6 Wardha Nakoda | N.A. | 7.69 |
| 7 PWD Projects | 40 | 43.07 |
| 8 Road works in Latur city | 20 | 32.50 |
| Total (A) | 4,093 | 3,615.18 |
| B) On Going Projects | | |
| 1 Bandra Worli Sealink | 1,306 | 347.60 |
| 2 Nagpur-Aurangabad-Sinner-Ghoti Road | 700 | 331.47 |
| 3 Four laning of Satara-Kolhapur-Kagal National Highway | 725 | 548.04 |
| 4 Road works in Nagpur city | 450 | 246.44 |
| 5 Road works in Pune city | 280 | 73.61 |
| 6 Road works in Aurangabad city | 142 | 33.32 |
| 7 Road works in Solapur city | 92 | 19.99 |
| 8 Road works in Nandurbar city | 21 | 3.63 |
| 9 Road works in Amravati city | 114 | 20.93 |
| 10 Road works in Kolhapur city | 143 | 0.51 |
| 11 Road works in Nanded city | 67 | 0.78 |
| 12 Road works in Baramati city | 25 | 9.24 |
| 13 Improvemnt to PWD Road in Nagpur Circle | 16 | 7.73 |
| 14 Satara Chalkewadi Project | 15 | 25.05 |
| 15 Misc. Project | N.A. | 21.93 |
| 16 Corporate Assets | N.A. | 172.11 |
| Total (B) | 4,096 | 1,862.38 |
| Total (A+B) | 8,189 | 5,477.56 |

N.A. - Not available

Motor Vehicles

11.23 The number of motor vehicles on road in the State as on 1st January, 2005 was 96.56 lakh showing an increase of 10.67 per cent over the previous year. Of the total vehicles, Greater Mumbai alone accounted for 13.2 per cent. The details of motor vehicles on road as on 1st January for selected years in the State are given in the Table No.47 of Part-II of this publication.

11.24 The number of motor vehicles on road in the State as on 31st March, 2004 was 89.69



lakh and the number of motor vehicles per lakh of population was 8,785.

11.25 The number of valid motor driving licenses in the State at the end of March, 2004 was 135.40 lakh as against 126.77 lakh at the end of March, 2003. There were 1,327 approved Pollution Under Control (PUC) checking centers at the end of March, 2004.

11.26 During 2003-04 the revenue receipt from taxes and fees was increased by 36.4 per cent (highest increase during last 5 years) to Rs. 1,443.57 crore as compared to 6.3 per cent of increase in the previous year.

11.27 During 2003-04 the revenue receipt from the Mumbai Motor Vehicle Tax and Passenger Tax worked out to 63 per cent and 27 per cent respectively to the total revenue collected. The total collection from border check posts, flyovers, squad, clandestine, PUC and overloading goods was Rs.132.13 crore during 2003-04, as against Rs.124.36 crore during 2002-03.

Maharashtra State Road Transport Corporation

11.28 The total traffic receipts of Maharashtra State Road Transport Corporation (MSRTC) during 2003-04 was Rs. 2,685 crore registering a negligible increase (0.4 per cent) over the previous year. During 2003-04, Rs. 17.69 lakh were received per bus as traffic realisation against Rs. 17.24 lakh received during the previous year. During 2003-04, the percentage average seating capacity utilisation of buses on road had decreased to 56 per cent. The MSRTC carried 56.42 lakh passengers per day during 2003-04, less by 7.96 per cent than that of the previous year. The operational statistics of the MSRTC for 2002-03 and 2003-04 are presented in the Table No.11.10.

11.29 At the end of March 2004, the population residing in about 1,457 villages in the State required to walk more than 5 km to reach the nearest MSRTC bus stop. Concessions on bus-fair for travel in MSRTC buses are given to students, senior citizens (above 65 years), cancer patients, freedom fighters, etc. Due to the loss paying trips operated for providing service to the population in remote areas, MSRTC incurred loss

Table No. 11.10
Operational Statistics of Maharashtra State Road Transport Corporation

| Item | Unit | Year | | Percentage change over 2002-03 |
|---|-----------|----------|----------|--------------------------------|
| | | 2002-03 | 2003-04 | |
| 1. Routes operated at the end of the year | Number | 18,868 | 17,835 | (-) 5.47 |
| 2. Route length at the end of the year | Lakh km. | 13.08 | 12.81 | (-) 2.06 |
| 3. Average effective kms. operated per day | Lakh | 48.37 | 48.23 | (-) 0.29 |
| 4. Average number of passengers carried per day | Lakh | 61.30 | 56.42 | (-) 7.96 |
| 5. Average Number of buses owned by the MSRTC | Number | 16,510 | 16,120 | (-) 2.36 |
| 6. Average number of buses on road per day | Number | 15,512 | 15,179 | (-) 2.15 |
| 7. Average fleet utilisation | Per cent | 93.96 | 94.16 | 0.20 |
| 8. Average seat capacity utilisation of buses on road | Per cent | 58.99 | 55.98 | (-) 3.01 |
| 9. Total traffic receipts | Crore Rs. | 2,673.78 | 2,685.24 | 0.43 |

approximately Rs. 166.93 crore during the year 2003-04, less by Rs. 23.25 crore as compared to the previous year.

11.30 During 2003-04, the MSRTC received revenue of Rs. 2,747.07 crore, which was 0.71 per cent higher than the previous year. However, the operating expenses increased by 4.8 per cent over that of previous year. Consequently, the profit before taxes decreased from Rs. 320.57 crore during 2002-03 to Rs. 222.86 crore during 2003-04. After paying the taxes and prior adjustment, total losses of MSRTC in 2003-04 were Rs. 205.07 crore, which were more than the losses of Rs. 71.91 crore incurred during the previous year. The financial statistics of MSRTC are given in the Table No.11.11.

Table No. 11.11

Financial Statistics of Maharashtra State Road Transport Corporation

(Rs. crore)

| No. | Item | 2002-03 | 2003-04 |
|-----|---|----------|-----------|
| | Total Receipts | 2,727.51 | 2,747.07 |
| | Total Expenses (exclu. taxes) | 2,406.94 | 2,524.21 |
| | of which | | |
| | (a) Operating expenses | 2,359.41 | 2,473.20 |
| | (b) Non-operating expenses | 47.53 | 51.01 |
| | Profit before taxes (1 - 2) | 320.57 | 222.86 |
| | Total Taxes | 401.87 | 402.90 |
| | (a) Passenger Tax | 392.07 | 393.17 |
| | (b) Motor Vehicle & Other taxes | 9.80 | 9.73 |
| | Total Expenses (2 + 4) | 2,808.81 | 2,927.11 |
| | Net profit / loss (1 - 5) | (-)81.30 | (-)180.04 |
| | Prior period adjustment (profit / loss) | 9.39 | (-)25.03 |
| | Total profit / loss (6 + 7) | (-)71.91 | (-)205.07 |

Public Transport

11.31 Public transport facility is available in all cities in the State. Of these cities, MSRTC provides local transport facility in 21 cities and in the remaining 13 cities, the respective Municipal Corporations / Councils are providing such facilities. The Municipal Corporations / Councils which were operating city bus service during 2003-04 in the State, were operating on an average 4,854 city buses, out of which BEST alone Greater Mumbai was operating 3,382 buses (69 per cent).

Railways

11.32 The total railway route length in the State by the end of March, 2004 was 5,497 km.

This was 8.69 per cent of the total length in the country (63,221 km as on 31st March, 2004). The railway routes are classified as broad gauge (1.676 m.), meter gauge (1 m) and narrow gauge (0.762 m & 0.610 m). Of the total railway route length in the State, 78.2 per cent was broad gauge, 8.1 per cent was metre gauge and remaining 13.7 per cent was narrow gauge. Corresponding percentages for All-India were 74.1, 21.0 and 4.9 respectively. The railway route length per 1000 sq.km of geographical area as on 31st March, 2004 was 17.9 km in the State, as against 19.2 km in the country. At the end of March 2004, the proportion of electrification of the railway route length in the State was 34.2 per cent, as against 28.0 per cent for the country as a whole. The proportion of railway routes with double line in the State was 27.8 per cent.

11.33 The status of on going works of Railways (at the end November, 2004) in the State is given below.

11.33.1 The construction work of 138 km new broad gauge line between Amravati and Narkhed is under progress. The first phase work of 44 km from Amravati is scheduled to be completed before March, 2005 and remaining section will be completed by March, 2007. The total estimated cost for the project is Rs. 284.27 crore.

11.33.2 The work of Ahmednagar-Beed-Parali-Vaijanath new broad gauge railway line of 261.25 km was under progress. Of which, the work of 209 km (80 per cent) was completed. The total estimated cost of the project is Rs.15.71 crore.

11.33.3 The construction work of 54 km new broad gauge line between Baramati-Lonand is under progress. The total estimated cost of the project is Rs.138.48 crore.

11.33.4 The construction work of 17.8 km new broad gauge line between Puntamba and Shirdi is in progress. The total cost of the project is Rs. 48.78 crore. This project is expected to complete by December, 2005.

11.33.5 The gauge conversion work of narrow gauge into broad gauge in Miraj-Latur section is being done in phases. The first phase of gauge conversion work from Kurduwadi to Pandharpur (52 km) was completed and commissioned in March, 2001. The conversion of the track linking between Latur to Latur Road (42 km) section and also Kurduwadi-Latur (152 km) section were completed. The work of 43 minor and 3 major bridges on this track is also completed. The Miraj-Pandharpur (137 km) the last phase IV work is in progress.

11.33.6 The work of New Panvel-Karjat broad gauge railway route 28.05 km was completed 95 per cent. This project was targeted for completion by February, 2005 with total estimated cost of Rs. 137.44 crore.

11.33.7 The 15 per cent work of doubling of Panvel-Jasai-JNPT (28.5 km) route was completed. The 45 per cent work of doubling Diva-Kalyan (10.73 km) 5th-6th line was completed. Apart from these works, Panvel-Roha (75.44 km) and Pakni-Solapur (16.28 km) doubling work were in progress.

11.33.8 In order to decongest Mumbai and to develop Navi Mumbai, the following railway works are in progress:-

- (1) Thane-Turbhe-Vashi railway line (22.6 km) costing Rs. 403 crore, was completed and the Vashi-Turbhe-Thane project was inaugurated on 9th November, 2004. Currently 18 km route is in use, on which 7 railway stations are operating.
- (2) Belapur-Seawood-Uran (27 km) new broad gauge line costing Rs. 495 crore is in progress and 12 per cent of it's work was completed
- (3) Remodelling of Kalyan yard (cost Rs. 14.50 crore), stabling lines at Kalyan (cost Rs. 33.70 crore) and Kurla- Thane (17 km) additional 5th and 6th new broad gauge lines (cost Rs. 102.9 crore) are in pipeline.

Ports

11.34 Along the 720 km coastal line of the State, two major ports namely Mumbai Port Trust and Jawaharlal Nehru Port Trust (JNPT), at Nhawa-Sheva are in operations. Apart from these, as per the State Government Policy of ports developments, 48 notified minor ports are developed for handling passenger and cargo traffic, with participation of private sector on the principle of 'Build, Own, Operate and Transfer (BOOT)' basis. For this purpose, Maharashtra Meritime Board was established in 1996. In order to develop multi-user port facilities capable of handling all types of cargos like bulk and break bulk, petroleum and chemical containers, the Government declared policy for ports development.

11.35 The Mumbai Port Trust handled 265.51 lakh tonnes cargo comprising of 88.92 lakh tonnes of coastal and 176.59 lakh tonnes of overseas cargo during 2003-04, as against 243.04 lakh tonnes cargo handled in the previous year (comprising of 85.51 lakh tonnes of coastal and 157.53 lakh tonnes of overseas cargo). During

2003-04, out of the total cargo handled, 160.5 lakh tonnes related to imports and 104.96 lakh tonnes to export. The passenger traffic at the Mumbai Port during 2003-04 was 5.14 thousand comprising entirely of overseas passengers. During 2004-05 upto October, the cargo handled was 129.97 lakh tonnes of imports and 62.27 lakh tonnes of exports. During this period, the port handled 2.03 thousand overseas passengers and there was no coastal passenger traffic.

11.36 JNPT handled 312 lakh tonnes of cargo during 2003-04 as against 268 lakh tonnes of cargo handled in the previous year. During 2004-05 upto September 2004, cargo handled was 164 lakh tonnes, which was 7.20 per cent more than that during corresponding period of the previous year. Recently, the JNPT has outsourced the cargo handling on BOT basis to the M/s MAERSK CONCOR consortium for the period of 30 years. This project envisages to augment container handling capacity of JNPT to the extent of 15 lakh tonnes by August, 2006.

11.37 The 48 minor ports together handled 128.4 lakh passenger traffic during 2003-04, of which 108.6 lakh passenger traffic was through mechanized vessels and 19.8 lakh was by non-mechanized vessels.

11.38 During 2003-04, the 48 minor port handled 103.3 lakh tonnes of cargo as against 87.5 lakh tonnes of cargo during 2002-03. Out of 103.3 lakh tonnes cargo, import contribute 89 per cent and the rest was export. During 2004-05, upto end of September, 49.8 lakh tonnes of cargo was handled by minor ports.

Civil Aviation

11.39 There is only one International Airport in Maharashtra namely Chhatrapati Shivaji Maharaj International Airport in Mumbai. The details regarding aircraft movement as well as passenger and cargo traffic from this international airport and other 5 domestic airports in the State are presented in the Table No. 11.12. During 2003-04, international aircraft movement increased by 7 per cent, whereas the domestic aircraft movement increased by 10 per cent as compared to the previous year. The number of domestic aircraft flights routed through Mumbai airport accounted for 87 per cent to the total domestic flights taken place in the State during 2003-04. Similarly, the number of domestic embarking and disembarking passengers were 90 and 90.8 per cent respectively.

Table No. 11.12

Aircraft movement, passenger and cargo traffic by airports in Maharashtra

| Airport | Total Flights | | Passenger | | | | Cargo (tonnes) | | | |
|----------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|----------------|---------------|---------------|---------------|
| | | | Embarking | | Disembarking | | Loaded | | Unloaded | |
| | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04 | 2002-03 | 2003-04 |
| Domestic | | | | | | | | | | |
| Mumbai | 90,451 | 99,652 | 35,85,623 | 39,81,210 | 35,86,756 | 39,67,083 | 37,793 | 41,976 | 45,744 | 50,521 |
| Pune | 6,778 | 7,462 | 2,06,461 | 2,33,306 | 2,03,675 | 2,32,969 | 2,449 | 3,368 | 2,877 | 4,011 |
| Nagpur | 3,967 | 4,271 | 1,17,383 | 1,16,996 | 1,11,822 | 1,13,810 | 331 | 789 | 1,079 | 1,310 |
| Aurangabad | 2,415 | 2,668 | 53,314 | 56,759 | 51,582 | 53,624 | 400 | 479 | 333 | 401 |
| Colhapur | 184 | 90 | 510 | 222 | 510 | 222 | - | - | - | - |
| Total | 1,03,795 | 1,14,143 | 39,63,291 | 43,88,493 | 39,54,315 | 43,67,708 | 41,053 | 46,612 | 50,033 | 56,243 |
| International | | | | | | | | | | |
| Mumbai | 35,100 | 37,560 | 23,96,698 | 25,31,961 | 21,62,784 | 22,84,905 | 1,46,598 | 1,49,625 | 77,470 | 84,355 |

Communications

11.40 The communication system comprises posts, telegraphs & telecommunication. The telecommunication systems in the State is operated both by the private operators and the public undertakings. The modern hightech communication system is an integral part of the development process and is growing rapidly after liberalisation and privatisation policies implemented in 1990s.

11.41 At the end of March, 2004 the number of Post Offices in the rural areas of the State was 1,309 and in the urban areas, it was 1,329. At the end of March, 2004 the number of letter boxes in the rural areas was 39,063 and in the urban areas it was 10,347. At the end of March, 2004 there were 517 delivery postmen in the rural areas and 7,594 were in the urban areas.

11.42 A public sector company 'Bharat Sanchar Nigam Ltd.' (BSNL) established in October, 2000 for providing telecom services in the country. There were 63.54 lakh telephone connections as on 31st March, 2004 in the State, showing an increase of 1.9 per cent over that of the previous year. Out of the total 63.54 lakh telephone connections, 21.4 per cent were in the rural areas and 78.6 per cent were in urban areas. The number of telephone connections per lakh of population at the end of March, 2004 in the State was 6,275. Out of the 63.54 lakh telephone connections, 24.08 lakh (37.9 per cent) were managed by the Mahanagar Telephone Nigam Limited (MTNL) in Greater Mumbai. The number of telephone connections in Greater Mumbai increased by 1.5 per cent as compared to the

previous year. At the end of March, 2004 the number of PCOs under MTNL and BSNL were 1.39 lakh and 1.41 lakh respectively. Of these, PCOs with STD and ISD facilities were 34,420 and 82,324 respectively.

11.43 At the end of March, 2004 there were 2.11 lakh and 7.50 lakh internet account holders registered with MTNL and Videsh Sanchar Nigam Ltd. (VSNL) respectively.

11.44 Cellular Technology is the most recently developed fast communication technology all over the world and is growing by leaps and bounds. These cellular services are provided by private and public operators. As on 31st December, 2004 there were 3.74 crore cell phones in India, out of which 66.16 lakh (17.70 per cent) were in Maharashtra (including Greater Mumbai Circle). The service providerwise figures for the Maharashtra and Mumbai circle are given in table No.11.13

Table No. 11.13
**Circle/operators wise cellular data
as on 31st Dec. 2004**

| Mumbai | |
|--------------------|-----------|
| BPL Mobile | 11,89,750 |
| Hutchison Max | 14,39,568 |
| MTNL | 3,21,292 |
| Bharati Cellular | 6,46,528 |
| Maharashtra | |
| BPL Cellular | 5,18,244 |
| Idea Cellular | 12,13,459 |
| Bharati Cellular | 5,97,322 |
| BSNL | 6,90,277 |

Source : Cellular Operators Association of India

Poverty

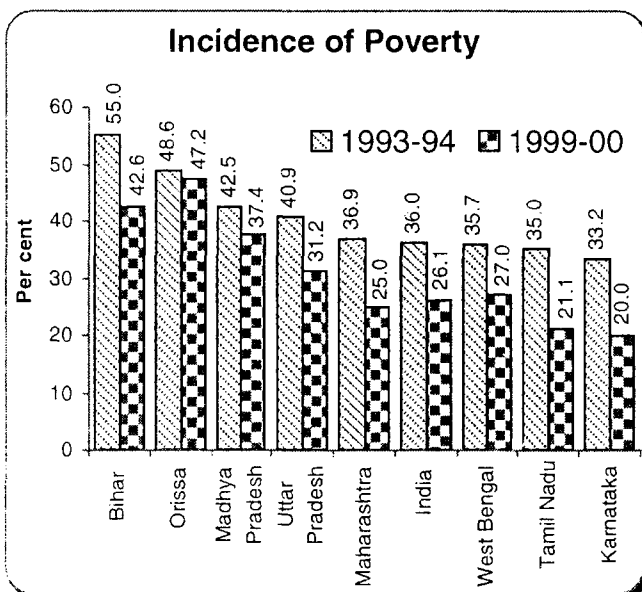
12.1 Poverty leads to poor quality of life, deprivation, malnutrition, illiteracy and the end result is low human development. The Planning Commission regularly estimates the incidence of poverty (percentage of families living below poverty line) at the national and state levels based on data from large sample survey on household consumer expenditure conducted by National Sample Survey Organisation (NSSO). The latest estimates of poverty prepared by Planning Commission based on such survey (55th Round) for 1999-2000 revealed that there was a significant decline in proportion of people living below poverty line in the State from 53.2 per cent in 1973-74 to 36.9 per cent in 1993-94 and further to 25.0 per cent in 1999-2000, which is lower than the all-India ratio of 26.1 per cent. However still more than 2.5 crore population in the State did not have sufficient income to access a consumption basket which defines the poverty line. Of this 2.5 crore below poverty line population, 1.4 crore lives in rural areas of the State. Planning Commission has also projected

the population below poverty line by the end of Tenth plan i.e.2006-07. As per this projection in the year 2006-07 the population below poverty line in the State would be 1.7 crore, of which 1.1 crore will be in rural areas.

12.2 The results of annual survey on household consumer expenditure conducted by NSSO (57th round) for 2001-02 are now available. As per these results the proportion of chronically hungry households in the State (not getting enough to eat during any month of the year) has declined to zero per cent in rural areas and 0.1 per cent in urban areas. At all-India level the proportion of chronically hungry households reported in rural and urban areas are 0.5 per cent and 0.1 per cent respectively. As for seasonal hunger (getting enough food only in some months of the year) in the State, number of households reported per thousand household is 7 in rural and 2 in urban areas. These figures at all-India level are 16 in rural and 3 in urban areas.

12.3 The trend that emerged between 1993-94 and 1999-2000 is that rural poverty decreased much faster than that of urban poverty in most of the states including Maharashtra. The incidence of poverty in rural areas of the State reduced from 57.7 per cent in 1973-74 to 23.7 per cent in 1999-2000. This is expected to decline further to 17 per cent by the end of Tenth Plan (2006-07). During the same period, in urban areas of the State it reduced from 43.9 per cent to 26.8 per cent and is expected to decline to 15.2 per cent by 2006-07. The incidence of poverty at present is higher in urban areas than that in rural areas of the State.

12.4 The Planning Commission has made poverty projections (percentage of poor) for 2006-07 end of Tenth Plan, based on certain targeted growth rates of GDP, agricultural productivity, per capita plan expenditure etc.



The same for some major states are given in Table No.12.1. Given the targeted growth rates during Tenth plan are achieved, the poverty ratio in

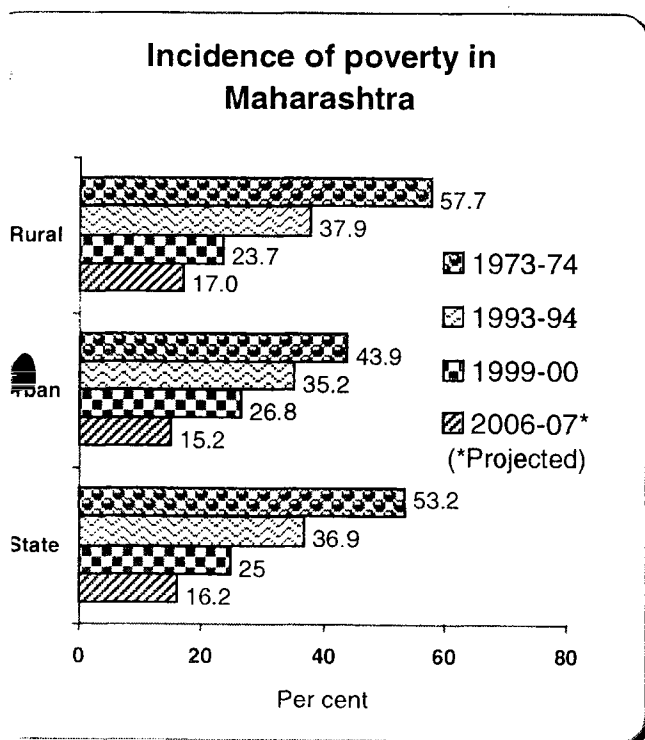
Table No.12.1

Poverty Projection for some major states- 2006-07

| State | (per cent) | | |
|----------------|------------|-------|----------|
| | Rural | Urban | Combined |
| Bihar | 44.8 | 32.7 | 43.2 |
| Madhya Pradesh | 28.7 | 31.8 | 29.5 |
| Orissa | 41.7 | 37.5 | 41.0 |
| Uttar Pradesh | 24.2 | 26.2 | 24.7 |
| West Bengal | 21.9 | 9.0 | 18.3 |
| Andhra Pradesh | 4.6 | 19.0 | 8.5 |
| Karnatak | 7.8 | 8.0 | 7.9 |
| Maharashtra | 17.0 | 15.2 | 16.2 |
| Rajasthan | 11.1 | 15.4 | 12.1 |
| Tamil Nadu | 3.7 | 9.6 | 6.6 |
| India | 21.1 | 15.0 | 19.3 |

Source :- Tenth Five year Plan.

India is expected to decline to about 19.3 per cent in 2006-07 from 36 per cent in 1993-94. Against this, the poverty ratio in Maharashtra is expected to decline to 16.2 per cent in 2006-07 from 36.9 per cent in 1993-94.



12.5 Poverty alleviation has been one of the guiding principles of planning process. Over the years anti-poverty programmes have been strengthened to generate additional

employment, create productive assets, impart technical and entrepreneurial skills and raise income level of the poor. In the State, it was long realised that employment intensive growth can only make continued poverty reduction possible and the EGS was the outcome of this. The present Rural Employment Guarantee Act at national level which is an adoption of EGS of the State, corroborates this view point. Apart from EGS, other major poverty alleviation and employment generation programmes implemented in the State are Sampoorna Gramin Rojgar Yojana (SGRY), Swarna Jayanti Gram Swarajgar Yojana, Swarna Jayanti Shahari Rojgar Yojana, PM's Rojgar Yojana etc.

Employment

12.6 The latest decennial population census, 2001 in the country throws light on the work participation rate and composition of workforce. Work Participation Rate (WPR) is defined as the percentage of total workers (Main and Marginal) to the total population. In the census, workers are classified into two broad categories viz (i) Main workers i.e. those who worked for a major period of the year (i.e. 6 months or more) and (ii) Marginal workers i.e. those who worked for less than 6 months in a year. The WPRs for latest two censuses are given in Table No. 12.2

Composition of Workers

12.7 The composition of workers in 2001 indicates that the proportion of main workers to total population in the State decreased from 39.3 per cent in 1991 to 35.9 per cent in 2001. However, the proportion of marginal workers to total population which was 3.7 per cent in 1991, increased substantially (6.6 per cent) in 2001. The proportion of main workers to total workers which was 91.4 per cent in 1991 declined to 84.4 per cent in 2001. Against this, the proportion of marginal workers to total workers which remained stable as per 1981 and 1991 censuses, around 9 per cent, rose to 15.6 per cent in 2001.

12.8 Population census 2001 revealed that the incidence of marginal workers among the males was lower as compared with the females. Only 5.9 per cent of the males in the State were marginal workers, while 9.7 per cent of the females were marginal workers. The incidence of marginal workers was

Table No.12.2

Work Participation Rates (WPR) in the State

| Sr. No. | Item | Maharashtra | | India | |
|---------|---|-------------|-------------|-------------|-------------|
| | | 1991 | 2001 | 1991 | 2001 |
| 1) | WPR | 43.0 | 42.5 | 37.7 | 39.3 |
| | a) Rural | 49.7 | 48.9 | 40.2 | 42.0 |
| | b) Urban | 32.3 | 33.8 | 30.5 | 32.2 |
| 2) | Male WPR | 52.2 | 53.3 | 51.5 | 51.9 |
| | a) Rural | 53.2 | 53.9 | 52.4 | 52.4 |
| | b) Urban | 50.6 | 52.4 | 49.0 | 50.9 |
| 3) | Female WPR | 33.1 | 30.8 | 22.7 | 25.7 |
| | a) Rural | 46.0 | 43.6 | 27.1 | 31.0 |
| | b) Urban | 11.4 | 12.6 | 9.7 | 11.6 |
| 4) | Proportion of Male workers to total workers | 62.8 | 65.2 | 71.0 | 68.4 |
| 5) | Proportion of Female workers to total workers | 37.2 | 34.8 | 29.0 | 31.6 |

comparatively higher in the rural areas (9.7 per cent) than that in the urban areas (2.5 per cent). This may be due to the fact that in the rural areas the workers are generally engaged more in seasonal work.

12.9 The percentage distribution of workers (main plus marginal) as per 1991 and 2001 censuses according to broad economic classification (4 categories) is presented in the Table No.12.3.

Table No.12.3

Percentage distribution of workers (main plus marginal) as per 1991 and 2001 censuses according to broad economic classification

| Class of Workers | Rural | | Urban | | Total | |
|---------------------------|----------|----------|---------|----------|----------|----------|
| | 1991 | 2001 | 1991 | 2001 | 1991 | 2001 |
| 1. Cultivators | 46.7 | 42.4 | 3.2 | 1.8 | 34.0 | 28.7 |
| 2. Agricultural labourers | 37.4 | 37.8 | 5.5 | 3.6 | 28.1 | 26.3 |
| 3. Household industry* | 1.5 | 2.3 | 2.1 | 3.4 | 1.7 | 2.6 |
| 4. Other classes | 14.4 | 17.5 | 89.2 | 91.2 | 36.2 | 42.4 |
| Total | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 |
| Total workers (000) | (24,033) | (27,261) | (9,877) | (13,912) | (33,910) | (41,173) |

* This relates to production, processing, servicing, repairing or making and selling of goods in household industry.

12.10 The proportion of cultivators in the State declined from 34.0 per cent in 1991 to 28.7 per cent in 2001. The proportion of agricultural labourers also declined from 28.1 per cent to 26.3 per cent in the same period in the State. In the rural areas of the State even though the proportion of cultivators declined to 42.4 per cent in 2001 from 46.7 per cent in 1991, the same in the case of agricultural labourers showed a marginal increase in 2001 (37.8 per cent) over 1991 (37.4 per cent). The proportion of workers in the household industry also showed an increase from 1.7 per cent in 1991 to 2.6 per cent in 2001. The composition of workforce in 2001 indicates that there was a shift of workforce from agriculture to other sectors in the last decade. That means in comparison to earlier decades the economy is less dependent on agriculture. However, about 55 per cent of workforce is still dependent on agriculture.

Factory Employment

12.11 The factory employment covers the employment in the factories registered under sections 2m(i), 2m(ii) and section 85 of the Factories Act, 1948. The latest available data on factory employment at All-India level which pertain to the year 2001, indicate that Maharashtra State continued to occupy the first position in respect of the average daily factory employment amongst all the states in the country.

12.12 The data on average daily factory employment in the State for the last few years show a declining trend. This may be due to closure of factories or modernisation of units resulting in the downsizing of workforce. As per the latest data available for the year 2003 the average daily factory employment in the State was 11.7 lakh against 11.8 lakh in 2002, less by 0.8 per cent. It is observed that the proportion of the female workers (about 6 to 7 per cent) in the total factory employment remained unchanged throughout the last decade. The manufacturing sector which accounted for about 92 per cent of the total factory employment comprised of consumer goods industry, intermediate goods industry and capital goods industry. The major industry divisionwise factory employment is shown in Table No. 48 of Part II of this publication.

12.13 From the point of view of factory employment, the relative importance of consumer goods industry, intermediate goods industry and capital goods industry has considerably changed between 1961 to 2003. In 1961, consumer goods industry was predominant as it accounted for 65 per cent of the total factory employment. Its share declined to 36 per cent in 2003. This is mainly due to large scale reduction in employment in textile industry. The employment in textile industry which was 3.7 lakh in 1961 declined drastically (more than 50 per cent) to 1.8 lakh in 2003. On the other hand, the intermediate goods industry and capital goods industry have shown substantial growth during this period as their share together in employment increased from 32 per cent in 1961 to 56 per cent in 2003.

12.14 In intermediate goods industry (chemicals; petroleum, rubber, plastic; basic metals etc.) the employment increased from 1.3 lakh in 1961 to 3.6 lakh in 2003. Similarly, the employment in capital goods industry (machinery and equipment and transport equipments) also increased from 1.2 lakh to 3 lakh in the same period.

Long term growth rate

12.15 During the period 1961 to 2003 the total factory employment in the State registered an annual growth rate of one per cent. But intermediate and capital goods industries together recorded a higher annual growth rate of 1.9 per

cent in the same period. The annual growth rate in factory employment during the period 1961 to 1990 was 1.3 per cent, however, the factory employment registered very negligible growth during the period 1991 to 2003. During the period 1961 to 2003 the annual growth rate in employment in the industry divisions Tanning and dressing of leather and leather products (3.2 per cent), Petroleum, rubber, plastic (3.2 per cent), Chemicals and chemical products (3.0 per cent), Food products, beverages etc. (3.0 per cent) and Basic metals and metal products (2.1 per cent), registered annual growth which was more than double the annual growth rate of one per cent for all industry divisions together. The total number of factories for the same period however, recorded much higher growth rate of 3.6 per cent.

Newly registered factories

12.16 During 2003, the number of factories newly registered in the State under the Factories Act, 1948 was 1,370. The employment in these factories was 48 thousand. Amongst the newly registered factories 79 per cent were employing less than 50 workers each. Higher proportion of employment in the newly registered factories is accounted for by the industry groups (i) Textiles (22.7 per cent), (ii) Food product and beverages (10.2 per cent), (iii) Machinery and equipment (8.0 per cent), (iv) Fabricated metal products (7.9 per cent), (v) Chemicals (5.7 per cent) and (vi) Basic metals and metal products (5.0 per cent).

12.17 The thrust of the government policies is on encouraging the industries in areas other than the industrially advanced districts of Mumbai city, Mumbai suburban district, Thane and Pune. As a result of this policy, the total share of districts excluding the above four districts in the factory employment went up to 44 per cent in 2003 from 23 per cent in 1975.

12.18 The factory employment in the early two decades after the formation of Maharashtra, showed an upward trend in the Konkan region, but it started declining in the subsequent years. Against this, a visible improvement in the factory employment situation in Marathwada and Vidarbha regions was noticed since 1981. Western Maharashtra, however, recorded a consistent increasing trend in respect of average daily factory employment.

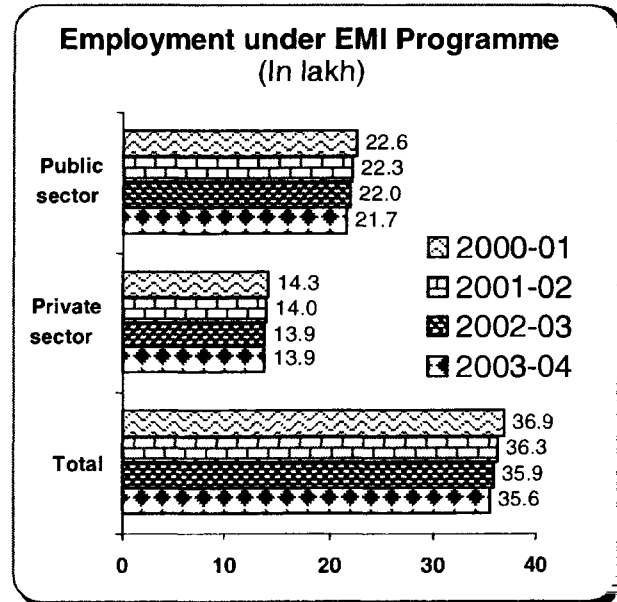
Employment Situation

12.19 The total employment in establishments in public and private sectors reported under Employment Market Information (EMI) programme as on 31st March, 2004 was 35.6 lakh which was less by 0.8 per cent compared to that of 35.9 lakh employment reported as on 31st March, 2003. These data reveal that employment in both the public and private sectors has been declining, though marginally, over the last few years. The total employment in public and private sectors has come down by 3.8 per cent from 37 lakh during 2000-01 to 35.6 lakh during 2003-04. By the end of March, 2004 the employment in public sector was 21.7 lakh and the employment in the private sector was 13.9 lakh. Employment in these sectors were less by 4 per cent and 2.8 per cent respectively when compared to the public sector employment of 22.6 lakh and private sector employment of 14.3 lakh at the end of March, 2001.

Employment Market Information

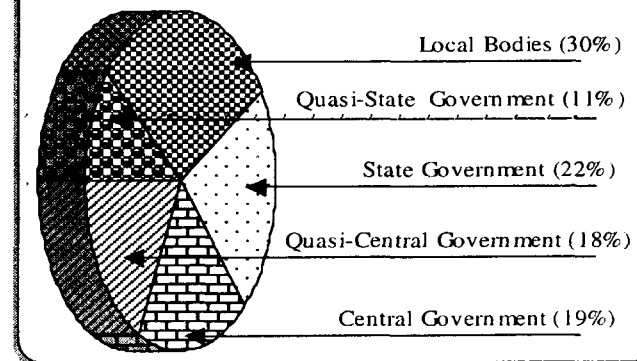
The information about the number of establishments in public and private sectors and employment therein, is being collected quarterly under this programme as per the provision made in the Employment Exchanges (Compulsory Notification of Vacancies) Act, 1959. Under EMI programme, data are collected from those (public and private sector) establishments employing 25 or more employees, in Greater Mumbai, and those employing 10 or more employees, in the rest of the State.

12.20 Out of the total 35.6 lakh employment as at the end of March, 2004 reported under EMI programme in the State, 21.7 lakh employment was in the public sector as against 22 lakh employment as on 31st March, 2003. In the public sector employment, the share of Local Bodies (30 per cent), State Government (22 per cent) and the Central Government (19 per cent), together was 71 per cent. The shares of Quasi-Central Government and Quasi-State Government in the public sector employment were 18 per cent and 11 per cent respectively. The employment in private sector as at the end of March,



2004 was 13.92 lakh as against 13.88 lakh at the end of the March, 2003. Of the total employment reported as at the end of March, 2004 under EMI programme 14.7 per cent were females.

Distribution of Public sector employment Reported under EMI programme as at the end of March, 2004



Employment in the State Government and Local Bodies

12.21 As per the Census of Government Employees, 2003, the total number of regular and other employees in State Government and local bodies were 12 lakh, of which 5.8 lakh employees were in the State Government, 4.1 lakh were in Zilla Parishads, 0.6 lakh were in Municipal Councils and 1.2 lakh were in Municipal Corporations (excluding Greater Mumbai). The number of employees in the State Government and local bodies (excluding Municipal Corporation of Greater Mumbai) as on 1st July, 2003 are given in Table No. 12.4.

Table No. 12.4

Employees in State Government and Local Bodies as on 1st July, 2003

(In lakh)

| Category | Regular | Others@ | Total | Of which, females |
|--------------------|--------------|-------------|--------------|-------------------|
| State Govt. | 5.11 | 0.71 | 5.82 | 0.93 |
| Z.Ps. (33) | 3.12 | 1.27 | 4.39 | 1.97 |
| M. Councils (228) | 0.54 | 0.05 | 0.59 | 0.16 |
| M. Corpns. ** (21) | 1.24 | - | 1.24* | 0.36 |
| Total | 10.01 | 2.03 | 12.04 | 3.42 |

@ Covers daily wage/work charged employees. Breakup as regular and other employees is not available.

* Excluding Greater Mumbai.

Employment and Self-Employment Guidance Centres

12.22 The number of persons newly registered in the Employment and Self-Employment Guidance Centres in the State during 2003-04 was 8.5 lakh, which showed an increase of 23.2 per cent over 6.9 lakh registrations during 2002-03. The number of vacancies notified and the actual placements effected during 2003-04 were 51.6 thousand and 17.6 thousand respectively as against 4.4 thousand vacancies notified and 10.1 thousand placements effected during the previous year. The actual placements effected during 2003-04 (17.6 thousand) showed an increase of 74.3 per cent over the previous year. During 2004-05 (ending December), the number of persons registered in the Centres was 6.6 lakh, which showed an increase of 3.1 per cent over 6.4 lakh registrations during the corresponding period of 2003-04. The number of vacancies notified and the actual placements effected during 2004-05 (ending December) were 31.7 thousand and 11 thousand respectively as against 40.1 thousand vacancies notified and 3.5 thousand actual placements effected during the same period of 2003-04. The data about registrations, vacancies notified and placements effected are given in Table 12.5 of Part - II.

12.23 The number of persons on the Live Register of Employment and

Self-Employment Guidance Centres at the end of December, 2004 was 41.1 lakh, of which 8.5 lakh (20.7 per cent) were females. About 17.1 per cent persons on the Live Register as at the end of December, 2004 were below S.S.C. (Secondary School Certificate Examination) level including illiterates. About 50.1 per cent were S.S.C. and 8.7 per cent were graduates in various disciplines. Most of the graduates were in the disciplines other than Engineering/Technology and Medicine. The proportion of post-graduates on the Live Register was less than one per cent (0.94 per cent) and almost all were from the disciplines other than Engineering/Technology and Medicine. The number of persons on the Live Register of Employment and Self-Employment Guidance Centres as at the end of December, 2004 is given in the Table No. 52 of Part-II.

State Sponsored Employment Schemes/ Programmes

(1) Employment Guarantee Scheme

12.24 The Employment Guarantee Scheme (EGS) is being implemented in the State, since 1972. The fundamental objective of the scheme is to provide gainful and productive employment to the people who are in need of work and are prepared to do unskilled manual work, on the principle of 'Work on Demand' in the rural areas and in the areas of 'C' class municipal councils. The sub-schemes viz. Horticulture Development Programme, Jawahar Wells Scheme, Plantation of Trees on Barren Lands and Sericulture are also being implemented under EGS. Data regarding number of works, mandays provided and expenditure incurred under EGS for latest periods are given in Table No.12.5. During the year 2003-04 the work of 18.5 crore mandays was provided under EGS as against 15.5 crore mandays provided during year 2002-03. During 2004-05 (ending December) 19.4 crore mandays was provided under this scheme. The average per day labour attendance under EGS during the year 2003-04 and 2004-05 (ending December, 2004) was 5.8 lakh and 4.8 lakh respectively. Since the inception of the EGS, 5 lakh works of various types were taken up upto the end of March, 2004, of which 4.8 lakh works were completed. Out of the completed works, soil conservation and land development works

Table No. 12.5
**Number of works, mandays &
 expenditure incurred under EGS.**

| Year | No. of works completed (ending March) | Mandays provided (crore) | Expenditure incurred (Rs. in crore) |
|-------------|---------------------------------------|--------------------------|-------------------------------------|
| 2000-01 | 32,856 | 11.1 | 577.9 |
| 2001-02 | 30,579 | 16.2 | 913.5 |
| 2002-03 | 42,500 | 15.5 | 889.0 |
| 2003-04 | 68,782 | 18.5 | 1,050.7 |
| 2004-05 (P) | 68,109 | 19.4 | 1,080.1 |

(upto December)

(P) Provisional

together accounted for 62 per cent and irrigation works 10 per cent. Information about categorywise number of works and expenditure incurred thereon, under the Employment Guarantee Scheme in Maharashtra State, is given in the Table No. 53 of Part-II.

(2) Employment Promotion Programme

12.25 Under this programme, educated unemployed are given training for acquisition/upgradation of skills for enabling them to secure employment. The number of candidates placed under training during 2003-04, was 4,395 as against 3,617 during 2002-03. The number of trainees who completed training during 2003-04 was 3,049 as against 2,436 during 2002-03. Of the trained candidates, the number of candidates absorbed in various jobs during 2003-04 was 796 as against 700 absorbed in the previous year. The number of candidates placed under training during 2004-05 (ending December) was 4,357 of which 636 (14.6 per cent) were females as compared to the 3,031 candidates placed under training during the same period of previous year (ending December, 2003), of which 611 candidates (20.2 per cent) were females.

(3) Seed Money Assistance Programme

12.26 Under this programme the educated unemployed who are domiciled in Maharashtra and have passed standard-VII or are ITI trained are given 'Seed Money Assistance' to the extent of 15 to 22.5 per cent of the project cost, subject to a limit of Rs.1.5 lakh. Under this programme, during 2003-04, Rs.2.5 crore was given as assistance to 625 beneficiaries. During 2004-05 (ending December) an assistance of Rs.2.2 crore was given to 467 beneficiaries.

(4) Apprenticeship Training Programme

12.27 The number of apprentices undergoing training in various trades during the academic year 2004-05 (July to June) is 46.3 thousand, which is 17.8 per cent higher than 39.3 thousand apprentices undergoing training during the previous academic year.

(5) Entrepreneurial Development Training Programme

12.28 The programme intends to motivate and train the educated unemployed youths to take up self-employment. Under this programme, one to three weeks training programmes are arranged by the Maharashtra Centre for Entrepreneurship Development (MCED) with a view to developing entrepreneurship through systematic training. Under this programme, during 2003-04, the number of youths trained was 6,227 and the number of youths trained during 2004-05 (ending December) was 2,316.

Centrally Sponsored Employment Programmes

(1) Sampoorna Gramin Rojgar Yojana

12.29 Two central schemes viz *Employment Assurance Scheme (EAS)* and *Jawahar Gram Samridhi Yojana (JGSY)* were merged by Government of India and launched in September, 2001 as a new scheme 'Sampoorna Gramin Rojgar Yojana'. It is one of the important schemes aimed at poverty alleviation in the tenth five year plan. In Maharashtra State, this scheme is being implemented since January, 2002. It is linked with food security. The primary objective of the scheme is to provide additional employment in all rural areas for providing food security and also to improve nutritional level of the poor masses. The secondary objective is to create durable community, social and economic asset and infrastructural development in rural areas. The scheme is implemented as a centrally sponsored scheme on a cost sharing basis between the Centre and the State in the ratio of 75:25 of cash component of the scheme. However, the cost of kind component (Foodgrains) is 100 per cent borne by the Govt. of India and it is supplied free to the State. Under this scheme 5 Kg. of foodgrain (wheat/rice) is made available per manday to the workers at a rate of Rs.5 per Kg. for wheat and Rs.6 per Kg. for rice. The

remaining wages are paid in cash after deducting the cost of foodgrains.

12.30 Upto 2003-04, the scheme Sampoorna Gramin Rojgar Yojana was being implemented in two Streams. The Central Government has combined both the Streams from the year 2004-05. However, the tiers of the implementation continue to be Zilla Parishad, Panchayat Samiti and Grampanchayat with the distribution of available funds in the proportion of 20 per cent, 30 per cent and 50 per cent respectively.

12.31 Of the funds and foodgrains available for the Zilla Parishad and Panchayat Samiti 22.5 per cent is to be provided for the individual beneficiary schemes for SC/ST families living Below Poverty Line. Similarly, 50 per cent of the funds and foodgrains available for the Grampanchayat are to be provided for the creation of the need based village infrastructure in SC/ST habitation.

12.32 Under this scheme during 2003-04, employment of 6.3 crore mandays was provided under first and second Streams together against 3 crore mandays during 2002-03. During the year 2004-05, (ending December) an amount of Rs.370 crore was made available (including the unspent balance of Rs.33 crore of the last year) against which an expenditure of Rs.280 crore has been incurred and employment of 3.9 crore mandays was generated.

(2) *Swarnajayanti Gram Swarajgar Yojana*

12.33 *Swarnajayanti Gram Swarajgar Yojana* (SGSY) has been started by Central Government in April, 1999 by restructuring DP and other self employment programmes. The scheme intends to bring the assisted poor families above the poverty line within three years by providing them income generating sets through a mix of bank credit and Government subsidy. The financial pattern of this scheme is 75:25 basis between Central and State Government. Under this programme either individuals or Self Help Groups (SHGs) are given assistance. This programme lays more emphasis on group approach, under which the rural poor are organised into Self Help Groups. The beneficiaries are known as Swarajgaris under this programme. Under SGSY during 2003-04, subsidy of Rs.60 crore and credit of Rs.100 crore was disbursed to 60,659 swarajgaris (individuals and SHGs). During

2004-05 (ending December) a subsidy of Rs. 28.9 crore and credit of Rs.48.1 crore was disbursed to 28,803 swarajgaris as against the subsidy of Rs.25 crore and credit of Rs.41.8 crore disbursed to 25,074 swarajgaris during the corresponding period of the previous year. During 2003-04, out of the 60,659 swarajgaris, 40,019 swarajgaris (66 per cent) were females. During 2004-05 (ending December) the female component in the total swarajgaris was as high as 70 per cent.

12.34 During 2003-04 out of the total 60,659 swarajgaris, 45,494 were SHG swarajgaris from 4,309 SHGs. The proportion of female swarajgaris in SHG during 2003-04 was 76 per cent. During 2004-05 (ending December) it was 78 per cent. The details of subsidy and credit given to SHG swarajgaris are given in Table No. 12.6.

Table No. 12.6

Subsidy and credit given to SHG swarajgaris under SGSY

| Year | SHGs Assisted (No.) | SHG Swarajgaris (No.) | Subsidy (Rs.in crore) | Credit (Rs.in crore) |
|----------|---------------------|-----------------------|-----------------------|----------------------|
| 2001-02 | 2,350 | 25,357 | 28.90 | 39.93 |
| 2002-03 | 3,227 | 34,129 | 36.20 | 51.42 |
| 2003-04 | 4,309 | 45,494 | 44.69 | 67.47 |
| 2004-05* | 2,230 | 23,221 | 22.88 | 36.01 |

* Upto end of December, 2004

(3) *Swarnajayanti Shahari Rojgar Yojana*

12.35 *The Swarnajayanti Shahari Rojgar Yojana* has been started by the Central Government in December, 1997, replacing three schemes viz. Nehru Rojgar Yojana, Urban Basic Service for Poor and Prime Minister's Integrated Urban Poverty Eradication Programme. The Central and the State Governments provide the funds to the scheme in the ratio of 75:25. This scheme seeks to provide employment to the urban unemployed or underemployed living Below Poverty Line and educated upto standard-IX by encouraging them for setting up of self-employment ventures or by providing wage employment. This scheme comprises two sub-schemes viz. Urban Self Employment Programme (USEP) and Urban Wage Employment Programme (UWEP).

12.36 Under Urban Self Employment Programme, during 2003-04 an expenditure of Rs.2.8 crore was incurred on 8,332 beneficiaries. During the current year upto the end of December, 2004, an expenditure of Rs. 1.5 crore was incurred on 4,037 beneficiaries as against an expenditure of Rs.1.8 crore incurred on 5,459 beneficiaries during the corresponding period of the previous year. During 2003-04 an expenditure of Rs.3.7 crore was incurred on imparting training of self employment to 21,758 beneficiaries. During 2004-05 (ending December) an expenditure of Rs.1.1 crore was incurred on 7,557 beneficiaries as compared to an expenditure of Rs.1.4 crore incurred for imparting training of self employment to 10,337 beneficiaries during the corresponding period of the previous year. Under Urban Wage Employment Programme during 2003-04, an expenditure of Rs.5.9 crore was incurred and an employment of 3.2 lakh mandays was generated. During 2004-05 upto December, 2004 an expenditure of Rs.1.8 crore was incurred and an employment of 76 thousand mandays was generated as compared to Rs.4.4 crore expenditure and 1.9 lakh mandays generated during the corresponding period of the previous year.

(4) Prime Minister's Rojgar Yojana

12.37 The Prime Minister's Rojgar Yojana (PMRY) is implemented both in the urban and rural areas of the State with a view to providing self employment to the educated unemployed youths. Any person between age group of 18 to 35 years, (SC/ST, Ex-Servicemen, Handicapped and Women have age relaxation upto 10 years) VIIIth passed or I.T.I. passed or having undergone Government technical course for 6 months and whose annual income is not more than Rs.40,000 is eligible for assistance. For business, Rs.1 lakh and for industry and service, Rs. 2 lakh as project cost is provided under this scheme. An entrepreneur is required to contribute between 5 to 16.25 per cent of the project cost as margin money in cash. The balance would be sanctioned as loan by the banks. During 2003-04, 12,734 beneficiaries were sanctioned Rs. 74.1 crore loan by banks and during 2004-05 (ending December) 12,848 beneficiaries were sanctioned Rs.75.8 crore loan.

Total Employment Generated

12.38 Under all the aforesaid central sponsored employment programmes, during 2003-04, total employment of 6.3 crore mandays was generated as compared to the total employment of 5.4 crore mandays generated during 2002-03. During 2004-05 (ending December) an employment of 3.9 crore mandays was generated as against an employment of 3.4 crore mandays generated during the corresponding period of the previous year. The performance of central sponsored employment programmes implemented in Maharashtra State is given in Table No. 54 of Part-II.

Industrial Relations

12.39 The number of work stoppages (strikes and lockouts) during 2004 decreased to 23 from 27 during the previous year. The number of workers (6,317) involved in the work stoppages during 2004 was also lower by 2.1 per cent than that in 2003. Similarly, the number of mandays lost due to work stoppages including continuing work stoppages of earlier year was also lower by 36.1 per cent and stood at 27.1 lakh during 2004 as against 43.5 lakh mandays during 2003. The details of industrial disputes in Maharashtra State are given in the Table No.55 of Part-II.

Closed Industries

12.40 The number of small scale, medium and large scale industries closed down in the State and the workers affected are shown in Table No.12.7.

Table No. 12.7
Industries closed down and
workers affected

| Year | Small Scale Industries | | Medium & Large Scale Industries | |
|----------|------------------------|------------------------|---------------------------------|------------------------|
| | Closed down (No) | Workers affected (No.) | Closed down (No.) | Workers affected (No.) |
| 2000-01 | 4,952 | 25,209 | 333 | 52,900 |
| 2001-02 | 5,726 | 30,769 | 203 | 27,800 |
| 2002-03 | 6,249 | 28,996 | 339 | 45,500 |
| 2003-04 | 4,686 | 29,371 | 213 | 51,800 |
| 2004-05* | 2,566 | 12,830 | 536 | 81,460 |

*Upto end of December, 2004.

Education

12.41 Education is universally acknowledged as one of the key inputs contributing to the process of national and individual development.

In the present context of global economy, an access to the basic education is considered as a human right. The process of human resource development need more investment in education, in order to empower people with appropriate knowledge, skills, values and attitudes, to enhance their quality of life, to improve their productivity and to enable them to participate more fully in the development process.

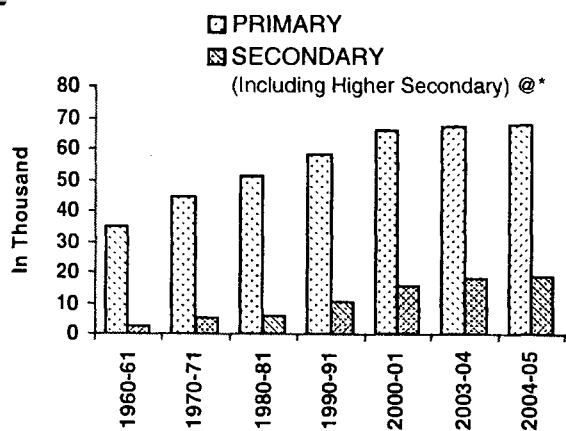
12.42 Universalisation of elementary education is spelled out more forcefully in the directive principles of State Education Policy. In Maharashtra, education governance, especially of primary education, takes place through collaborative efforts of the State Government and local bodies. Though, the major responsibility for basic education lies with the State Government, however, the local self-government bodies in rural areas and municipal councils in the urban areas have also been associated with school education in order to make the education system responsive to local conditions and facilitate community participation.

Growth of Education

12.43 Universalisation of primary education has led to massive demand for secondary education. In the field of secondary education, Non-Government institutions are performing an important role. In Maharashtra State, most of the schools are run by the private societies and Government pays grant in-aid to them. In addition to this, Local Bodies like Municipal Corporations, Municipal Councils are also running secondary schools in their jurisdictions, resulting into phenomenal increase in the enrolment. During 2004-05 as compared to 1960-61, the enrolment of students in primary school has tripled whereas the enrolment in secondary and higher secondary institutions increased by twelve times. The teacher student ratio for primary school was fluctuating between 33 to 39 from 1960-61 to 2000-01 thereafter it remained around 36 to 37. However, this ratio for secondary and higher secondary institutions together has increased from 25 students in 1960-61 to 38 students in 2004-05. The number of primary schools in the State has increased from 67,291 in 2003-04 to 67,964 in 2004-05, with a marginal increase in the enrolment. As against this, the number of secondary and higher secondary institutions together increased from 17,985 in

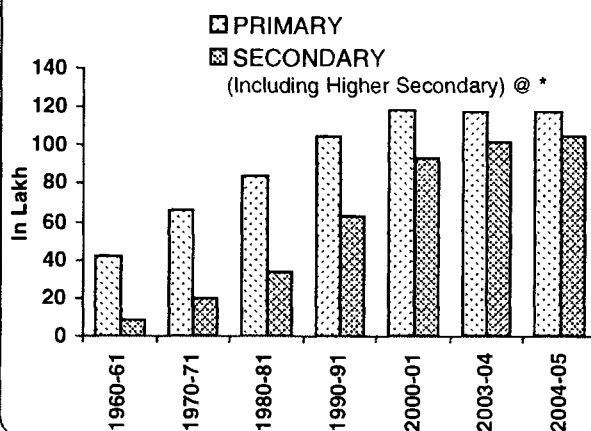
GROWTH OF EDUCATION IN THE STATE

NUMBER OF INSTITUTIONS



Excluding Students from school level vocational institutions.

ENROLMENT OF STUDENTS



@ Including junior colleges and students therein from 1994-95.

2003-04 to 18,717 in 2004-05 with corresponding increase in enrolment. The growth of education in the State from 1960-61 onwards is presented in Table No.56 of part II of this publication.

12.44 The number of primary, secondary and higher secondary schools in the State and the enrolment therein for the years 2003-04 and 2004-05 are given in Table No. 12.8.

Table No. 12.8

Number of primary, secondary and higher secondary schools and enrolment in Maharashtra State

(Teachers and Enrolment in thousand)

| Type of Educational Institution@ | 2003-04* | 2004-05* | Percentage change |
|----------------------------------|----------|----------|-------------------|
| 1. Primary | | | |
| 1) Schools(I to VII) | 67,291 | 67,964 | 1.0 |
| 2) (a) Enrolment | 11,689 | 11,747 | 0.5 |
| (b) Of these, girls | 5,605 | 5,633 | 0.5 |
| 3) Teachers | 322 | 330 | 2.5 |
| 2. Secondary | | | |
| 1) Schools (I to X) | 13,773 | 14,391 | 4.5 |
| 2) (a) Enrolment | 5,339 | 5,466 | 2.4 |
| (b) Of these, girls | 2,493 | 2,568 | 3.0 |
| 3) Teachers | 155 | 158 | 1.9 |
| 3. Higher Secondary | | | |
| 1) Schools (I to XII) | 3,585 | 3,693 | 3.0 |
| 2) (a) Enrolment | 4,129 | 4,331 | 4.9 |
| (b) Of these, girls | 1,854 | 1,971 | 6.3 |
| 3) Teachers | 104 | 107 | 2.9 |
| 4. Junior College | | | |
| 1) Institutes (XI & XII) | 627 | 633 | 1.0 |
| 2) (a) Enrolment | 654 | 702 | 7.3 |
| (b) Of these, girls | 267 | 288 | 7.9 |
| 3) Teachers | 13 | 13 | - |

* Estimated

@ Excluding school level vocational education institutions.

12.45 The percentage increase in the enrolment during 2004-05 over that of the previous year was more for girls than that for the boys for all the categories viz. primary, secondary and higher secondary education. This may be due to increasing awareness of girls education in

the State. The number of students per teacher 2004-05 were 36 for primary schools, 35 secondary schools, 40 for higher secondary schools and 54 for junior colleges.

12.46 The enrolment according to group standards in schools for the years 2003-04 and 2004-05 in the rural and urban areas of the State is given in Table No. 12.9.

Table No. 12.9

Enrolment of students by group of standards

(No. in '00)

| Group of Standards | | 2003-04* | 2004-05* |
|--------------------|-------|----------|----------|
| I—IV | Rural | 5,366 | 5,473 |
| | Urban | 3,577 | 3,648 |
| V—VIII | Rural | 4,973 | 5,072 |
| | Urban | 3,315 | 3,381 |
| IX—X | Rural | 1,701 | 1,735 |
| | Urban | 1,134 | 1,157 |
| XI—XII | Rural | 698 | 712 |
| | Urban | 1,047 | 1,068 |

* Estimated

12.47 The enrolment during 2004-05 over that of the year 2003-04, in all groups standards increased by about 2.0 per cent both rural and urban areas.

Vasti Shala

12.48 As a part of universalisation education, the Government has fixed the norm open a primary school within a vicinity of 1.5 km of a habitation having minimum population of 200. This norm for tribal areas is 1.0 km. vicinity a population 100. But still there are some habitations which do not fulfill above conditions. For such habitations, the Government has started 'Vasti Shalas' as alternative education within a radius 1.0 km. for at least 15 students. Under this scheme in all 8256 vasti shalas were running, of these 8256 vasti shalas are opened during the year 2004-05. The provision of Rs. 863.76 lakh was made during the year 2004-05 under this scheme and about 3.93 lakh students are expected to get benefit. These shalas are run by a single teacher.

Mahatma Phule Shikshan Hami Yojana

12.49 For children working as child labour in urban and rural areas, mainly in agricultural field, animal rearing and / or for shelterless deprived from primary education due to poor economic condition, the 'Mahatma Phule Shikshan Hami Yojana' is being implemented. Under this scheme, total 3.92 lakh students have taken education from 20,184 centres in the State.

Women Education

12.50 During 2003-04, there were 1,961 primary schools, 847 secondary schools and 269 higher secondary institutions exclusively for girls in the State. The percentage of girls in the total enrolment in primary, secondary and higher secondary schools in the State in 2003-04 was 48, 47 and 45 respectively. In 1985-86, when education for girls was made free upto standard X, the corresponding percentages were 44, 36 and 32 respectively. Enrolment figures, at least at primary school level, indicate that the girls enrolment is matching to the sex ratio in the respective population group and the gender gap in enrolment at secondary and higher secondary school level is also reducing fast in the recent years.

12.51 The continuous efforts to promote quality education throughout the State needs spending of sizeable funds. The total State Government expenditure on primary, secondary and higher secondary education for the year 2003-04 was Rs. 7,954 crore, which was 2.4 per cent of the Gross State Domestic Product. The average expenditure incurred by the State Government per student in 2003-04 was Rs. 2,672 for primary schools (Standard I - VII), Rs. 7,130 for secondary and Rs. 2,985 for higher secondary schools.

Information Technology Policy related to school education

12.52 Acknowledging the importance of the Information Technology in the process of development, the State Government has declared the 'Information Technology Policy' in 1998. According to this policy, the State Government has introduced Information Technology as an optional subject for

Standards VIII to X from June, 1999 and for Standards XI and XII from June, 2000. The State Government has suggested various alternatives/options for establishing computer labs in the schools for teaching this subject. Apart from own funds of the managements, donations from private industries, companies, co-operative societies, business organisations can be utilised for creation of infrastructure for computer education. The schools are allowed to engage private computer training institutions for establishment of computer labs in their school premises allowing them to use this space for commercial purpose after school time on a condition of providing free training to the students. Out of 15,000 secondary schools in the State, about 7,000 schools are using computers. Of these, 3,060 schools received 5,302 computers through funds of the Local Area Development Programme.

Maharashtra Cadet Corps

12.53 The objective of the scheme is to foster the qualities such as leadership, brotherhood, sportsmanship, national integrity, social service etc. among the students. This scheme has been restructured in the year 2000 and is implemented in all the schools for students of standards VIII and IX. However, it is kept voluntary for the students. The school shall have at least one troop in it. Each troop shall consist of minimum 100 students in urban areas, 50 in rural and 30 in tribal and hilly areas. The ratio of boys and girls should be maintained 50:50 as far as possible. During 2003-04, this scheme covered 25.50 lakh students and is expected to retain the same number of students during 2004-05.

Drop Out Rates

12.54 In 1980-81, the drop out rate (DOR) for boys and girls in the State for standard V was 53 per cent and 63 per cent respectively. In 2002-03, this rate for boys and girls reduced to 13 per cent and 14 per cent respectively. The drop out rate for standard VIII for boys and girls has reduced to 31 per cent and 36 per cent respectively as compared to 65 percent and 78 per cent in 1980-81.

DROP OUT RATE

$DOR_{(i,j)}$ = Drop Out Rate of students for standard 'i' with reference to year 'j'

$$= 100 \times \left[1 - \frac{B_{(i,j)}}{A_{(1,j-i+1)}} \right],$$

where, $B_{(i,j)}$ = No. of students on enrolment in standard 'i' for the year 'j'

$A_{(1,j-i+1)}$ = No. of students on enrolment in the first standard in the year (j-i+1).

Though the drop out rate of boys and girls for standard X has reduced considerably over last 20 years, still it is 50 per cent for boys and 55 per cent for girls. High drop out rate of standard VIII and X for both boys and girls may be due to need of student's participation in the economic and domestic activities of the families. The drop out figures for 2002-03 indicate that about 87 per cent of total boys and girls had completed primary education, 67 per cent completed upper primary education and 48 per cent had completed secondary education. The students drop out rates are given in Table No. 12.10.

Table No. 12.10
Drop out rates of students

| | | (Percentage) | | | |
|----------|-------|--------------|---------|---------|---------|
| Standard | | 1980-81 | 1990-91 | 2000-01 | 2002-03 |
| V | Boys | 53 | 29 | 15 | 13 |
| | Girls | 63 | 39 | 19 | 14 |
| VIII | Boys | 65 | 47 | 35 | 31 |
| | Girls | 78 | 62 | 41 | 36 |
| X | Boys | 74 | 64 | 52 | 50 |
| | Girls | 86 | 76 | 57 | 55 |

Nutritional diet for students in primary schools

12.55 With a view to providing nutritional diet to students for increasing their attendance in the school, this scheme is being implemented for primary school students. This scheme is fully centrally sponsored and is being implemented in the State from the year 1995-96. Under this scheme, a student of standard I to V from Government and Government aided schools, having minimum 80 per cent attendance in a

month, is given 3 kg. of rice per month as a nutritional diet. However, as per the order of the Hon. Supreme Court students are to be provided cooked food having 300 calories and 8 to 12 gms proteins such as dal-rice, vegetable-rice, curd-rice, milk-rice, khichadi etc. This scheme is implemented throughout the State. From 2002-03 onwards the vastishala, deaf-dumb and blind schools, Mahatma Phule Education Guarantee scheme centres have been covered under this scheme. During 2003-04, under this scheme, 77.82 lakh students were benefited. A provision of Rs 90.37 crore is made under this scheme for the year 2004-05.

Free supply of text books to primary students

12.56 In order to boost the literacy rate in the Panchayat Samiti areas where the female literacy rate is below the national average (i.e. 39.3 per cent as per 1991 census), the State Government is supplying free text books to all primary school students of standard I to IV from 1996-97 in 103 Panchayat Samities in the State identified for this purpose. During the year 2003-04 under this scheme 4.05 lakh students were provided text books and it is expected that 3.93 lakh students will be covered during the year 2004-05.

Sainik Schools

12.57 The main objectives of the scheme is to develop the spirit of nationality, co-operation, discipline, leadership, self-confidence, valour and patriotism amongst the students. In 1996-97 the State Government has taken the decision to start sainik school in every district by giving permission to non-government organisations. By the end of November, 2004 under this scheme 41 sainik schools (including 3 existing schools) have been established in 33 districts. Of these six schools are exclusively for girls. Intake capacity per class in these schools for standard V to XI is fixed at 45 students, and 8,544 students are taking education in all these schools.

Ahilyabai Holkar Scheme

12.58 To promote education amongst girls the State Government has started Ahilyabai Holkar Scheme providing free travel concession to girls from 1996-97. Under this scheme, girls in the rural areas studying in standards V to X are provided free travel in Maharashtra State Road Transport Corporation buses to attend middle/secondary school, if such school

s not available in their village. During 2003-04, about 13.92 lakh girls availed such facility and in 2004-05, about the same number of girls are expected to avail this concession. Out of the total expenditure made under this scheme, one-third expenditure is reimbursed to the State Road Transport Corporation from the State Government. The share of State Government in the expenditure incurred for the year 2003-04 was Rs. 57.49 crore, which was adjusted against the passenger tax to be paid by the State Road Transport Corporation to the State Government.

Attendance Allowance to Girls Learning in Primary School

12.59 With a view to increase the rate of attendance and to reduce the drop out rates of the school going girls, this scheme is being implemented in the State from 1992 for the girls belonging to below poverty line families in tribal sub-plan areas and also for the girls belonging to below poverty line families from Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Vimukta Jati/Nomadic Tribes in remaining parts of the State. Under this scheme, one rupee per day per girl student is paid as attendance allowance for girls studying in Standard I to IV. During 2003-04, under this scheme 4.05 lakh girl students were benefited and during 2004-05, about 3.93 lakh girl students are expected to get benefit.

Book Bank Scheme

12.60 A large number of students belonging to Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Vimukta Jati / Nomadic Tribes and other deprived sections of the community are provided with text books under this scheme. The Government has established book banks for the students of primary and secondary schools run by Zilla Parishads, Municipal Councils and Municipal Corporations and also by the recognised/ aided secondary schools. The set of text books supplied is to be returned to the book bank at the end of academic year. The scheme covers the students upto standard X. Under this scheme, 2.35 lakh students were covered during the year 2003-04. The State Government has taken a decision to provide free text book to all students, studying in standard I to X in all Government, Non-Government recognised & aided and local bodies schools excluding all English medium schools for 2004-05 academic year.

Shikshan Sevak Yojana

12.61 The Government of Maharashtra has introduced various schemes for expansion as well as for the qualitative improvement in education, which has resulted in enormous rising of the education expenditure. For filling up the large number of vacant post of teachers in the State, the Government has started Shikshan Sevak Yojana from 2000. The Government has given permission to appoint Shikshan Sevaks in all recognised / aided primary, secondary, higher secondary schools and junior colleges, etc. These Shikshan Sevaks are being paid with Rs. 3,000 to Rs. 5,000 as honorarium per month as per their educational qualifications. Initially, these appointments are made for three academic years. After successful completion of three years tenure, these Shikshan Sevaks are appointed on regular pay scales.

Adult Education

12.62 The Government of India started the 'National Literacy Mission' (NLM) in 1988 in order to implement successfully the new strategy of eradicating the illiteracy in the age-group 15-35 years (i.e. adult illiteracy) as a mission. The NLM has prescribed detailed guidelines for the implementation of 'Total Literacy Campaign' in the districts. Accordingly, the State Government has taken a policy decision to implement 'Total Literacy Campaign' in all the districts of the State in a phased manner. District Literacy Mission Committees are constituted for monitoring of this scheme.

12.63 'Total Literacy Campaign' was implemented in all districts of the State. The target fixed under this scheme was to literate 67.22 lakh adult illiterates. As against this target, 64.45 lakh adult illiterates were enrolled, of which 53.70 lakh completed all the three primers prescribed under 'Total Literacy Campaign'.

12.64 Post-literacy programme is implemented in the districts after completion of 'Total Literacy Campaign'. The strategy and approach in the Post-Literacy Programme is to disseminate the education to neo-literates through Lok Shikshan Kendras. Post-Literacy Programme is completed in 27 districts and is in progress in two districts.

Higher Education

12.65 Higher education provides technical & skilled human resources necessary for the all-round economic development. The higher education in this publication covers education on agriculture, veterinary, medical/pharmaceutical, engineering, technical & vocational education, etc. along with general higher education.

12.66 There are four agriculture universities, one university for health science courses, one university for veterinary science and 11 non-agricultural universities in the State, including SNDT University which is exclusively for women, Yashwantrao Chavan Open University for non-formal education and Kavi Kulguru Kalidas University established for conduct of studies, research, development and spread of Sanskrit language. In addition, there are seven deemed universities in the State.

General Higher Education

12.67 The total number of colleges for general education and other higher educational institutions (excluding colleges and institutions of medical, engineering and agriculture) in the State during 2004-05 stood at 1,934 showing an increase of 3.0 per cent over the previous year.

Table No. 12.11

Colleges for general education and other higher educational institutions and enrolment (Teachers and enrolment in thousand)

| Type-of Educational Institution | 2003-04* | 2004-05# | Percentage increase |
|---|----------|----------|---------------------|
| 1. Colleges for general education | | | |
| (1) Number | 1,266 | 1,304 | 3.0 |
| (2) (A) Enrolment | 960 | 989 | 3.0 |
| (B) Of these, girls | 428 | 441 | 3.0 |
| (3) Teachers | 23.5 | 24 | 2.1 |
| 2. Other higher educational institutions | | | |
| (1) Number@ | 612 | 630 | 2.9 |
| (2) (A) Enrolment | 151 | 156 | 3.3 |
| (B) Of these, girls | 60 | 62 | 3.3 |
| (3) Teachers | 13 | 13 | - |
| 3. Total | | | |
| (1) Number@ | 1,878 | 1,934 | 3.0 |
| (2) (A) Enrolment | 1,111 | 1,145 | 3.1 |
| (B) Of these, girls | 488 | 503 | 3.1 |
| (3) Teachers | 36.5 | 37 | 1.4 |

* Provisional # Estimated

@ Excluding Junior, Medical, Engineering & Agricultural Colleges and pre-degree vocational education institutions

Of these, 1,304 are Science, Arts and Commerce colleges and 630 are other higher educational institutions which include 76 Law Colleges, 206 B.Ed. colleges and 348 colleges of other higher educational institutions. The total enrolment of these 1,934 colleges and other institutions taken together for the year 2004-05 is 11.45 lakh students which is higher by 3.1 per cent than that of 2003-04. The enrolment of girls in these colleges/institutions during 2004-05 showed an increase of 3.1 per cent over that of the previous year. The number of colleges for general education and other higher educational institutions and enrolment are given in the Table No. 12.11.

Agricultural Education

12.68 The number and intake capacity of Government aided and unaided colleges affiliated to four agricultural universities in the State are given in the Table No.12.12.

Table No. 12.12

No. of agricultural colleges and their intake capacity during 2004-05

| Type of college | Aided | | Unaided | |
|----------------------------------|-----------|-----------------|-----------|-----------------|
| | No. | Intake capacity | No. | Intake capacity |
| 1. Agriculture | 13 | 1,603 | 20 | 1,728 |
| 2. Horticulture | 4 | 138 | 6 | 576 |
| 3. Forestry | 2 | 64 | - | - |
| 4. Fisheries | 1 | 40 | - | - |
| 5. Agri.Engineering | 4 | 186 | 6 | 576 |
| 6. Food Technology | 1 | 70 | 5 | 480 |
| 7. Home Science | 1 | 35 | - | - |
| 8. Bio-Technology | - | - | 5 | 480 |
| 9. Agri.Marketing and Management | - | - | 3 | 288 |
| Total | 26 | 2,136 | 45 | 4,128 |

12.68.1 For the year 2004-05, intake capacity of aided and unaided agriculture colleges was 2,136 and 4,128 students respectively. In the total intake capacity, 30 per cent capacity is reserved for girl students. All the four agriculture universities have post graduation and Ph.D. facilities. Intake capacity for post graduation courses and Ph.D. courses is given in Table No.12.13 and 12.14 respectively.

Veterinary Education

12.69 Maharashtra Animal & Fishery Sciences University was established in Maharashtra in the Year 2000. Under this university there are 6

Table No.12.13
Post Graduate courses and their intake capacity 2004-05

| Courses | Intake capacity |
|------------------------|-----------------|
| M.Sc. Agriculture | 617 |
| M.Tech. (Agril. Engg.) | 46 |
| M.Tech. (Food Science) | 6 |
| M.Sc. (Home Science) | 12 |
| M.F.Sc. | 18 |
| Total | 699 |

Table No.12.14
h.D. courses and their intake capacity 2004-05

| Courses | Intake capacity |
|--------------|-----------------|
| Agriculture | 99 |
| Home Science | 2 |
| Fisheries | 3 |
| Total | 104 |

erinary & one Dairy technology college as constituent colleges. All the six veterinary science colleges have post-graduation facilities. During 2004-05, the intake capacity of six colleges for post-graduate students was 323 and the enrolment therein was 295. The intake capacity and enrolment in these colleges are given in the Table No.12.15.

Table No.12.15
Intake capacity and enrolment of students in veterinary and dairy technology colleges during 2004-05

| Faculty | Intake capacity | Enrolment | Curriculum period (in years) |
|---------------------------------|-----------------|-----------|------------------------------|
| Veterinary Colleges | | | |
| 1) Under Graduate (BVSc & AH) | 287 | 262 | 5 |
| 2) Post Graduate (MVSc) | 186 | 153 | 2 |
| 3) Ph.D. | 54 | N.A. | . |
| Dairy Technology College | | | |
| Under Graduate D.T. (B.Tech) | 36 | 33 | 4 |

Not available

Medical Education

2.70 In the year 1998, the State Government established Maharashtra University of Health Science at Nashik for integration of all the health science courses. During 2004-05, there are 35opathic, 53 Ayurvedic, 47 Homeopathic, 5 Unani

and 21 Dental degree colleges/institutions in the State. Their intake capacity by type of institution (Government, Government aided and unaided) is given in Table No.57 of part II of this publication.

Other Medical Courses

12.71 Several other courses such as D.M.L.T., physiotherapy, occupational therapy, audiology & speech language pathology, prosthetics & orthotics are considered as health science courses. The number of institutions and their intake capacity in respect of these courses for the year 2004-05 is given in Table No.12.16.

Table No.12.16
Number of institutions and their intake capacity for other medical courses for the year 2004-05

| Faculty | No. of Institutions | Intake capacity |
|--|---------------------|-----------------|
| 1. D.M.L.T. | 10 | 176 |
| 2. Physiotherapy | 14 | 470 |
| 3. Occupational Therapy | 6 | 120 |
| 4. Audiology and Speech Language pathology | 2 | 25 |
| 5. Prosthetics and orthotics | 1 | 5 |

Nursing Education

12.72 During 2004-05, there are 11 basic Nursing, 6 post-basic Nursing degree institutions, 122 institutions of Nursing diploma education (73 institutions of General Nursing and Midwifery Nursing [G.N.M.], 38 institutions of Auxiliary Nursing and Midwifery Nursing [A.N.M.], 11 institutions of G.N.M. & A.N.M.), 5 institutions of post-certificate courses after G.N.M. Nursing training in the State. Their intake capacity by type of institution (Government, Government aided and unaided) is given in Table No.57 of part II of this publication.

Technical & Vocational Education

12.73 During 2004-05, there are 151 Engineering degree, 31 Architectural degree and 102 Management science colleges/institutions in the State. In addition, there are 10 institutions of degree in Hotel Management & Catering Technology, 72 Pharmaceutical Science degree, 165 Engineering Diploma, One Architecture Diploma, 16 Hotel Management and Catering Technology Diploma, 106 Pharmaceutical Science Diploma, 59 institutions of M.C.A. and 598 Industrial Training Institutions. Their intake capacity by type of institution (Government, Government aided and unaided) is given in Table No.58 of part II of this publication. Dr. Babasaheb Ambedkar Technological University at Lonere, taluka Mangaon, district Raigad is included in engineering degree institutions.

12.74 The details of university-wise number of engineering degree colleges/institutions and their intake capacity for the year 2004-05 are given in Table No.12.17.

Table No.12.17

University-wise No. of engineering degree colleges/ institutions and their intake capacity for the year 2004-05

| University | No. of Institutions | Intake capacity |
|---|---------------------|-----------------|
| 1. Mumbai University | 43 | 12,728 |
| 2. Pune University | 34 | 11,240 |
| 3. North Maharashtra University, Jalgaon | 13 | 3,375 |
| 4. Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad | 13 | 3,594 |
| 5. Swami Ramanand Tirth University, Nanded | 5 | 1,620 |
| 6. Shivaji University, Kolhapur | 14 | 5,000 |
| 7. Amravati University | 10 | 3,160 |
| 8. Nagpur University | 17 | 5,582 |
| 9. S.N.D.T. University, Mumbai | 1 | 180 |
| 10. Dr. Babasaheb Ambedkar University, Lonere (Raigad) | 1 | 390 |
| Total | 151 | 46,869 |

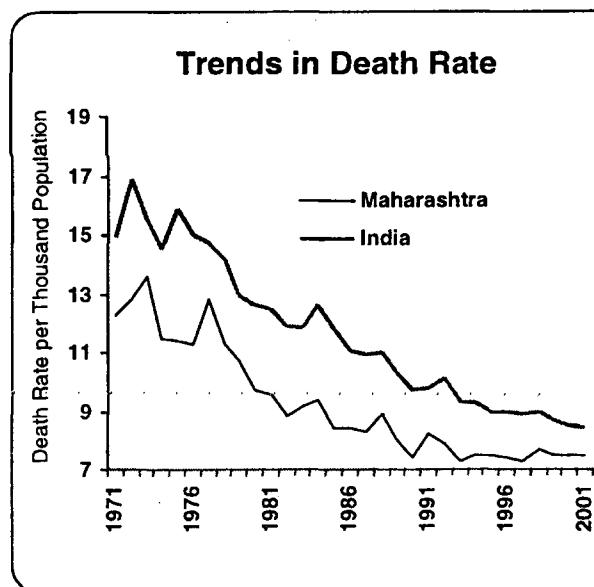
12.75 During the academic year 2004-05, students admitted for engineering degree courses were 38,972, out of which 8,374 were girls (21 per cent) and 7,897 (17 per cent) seats remained vacant.

Sports Academy

12.76 For development of sportspersons of national and international standard from the students of age group 8 to 14 years by imparting them training for about 8-10 years, the State Government in 1995 took the decision to establish Central Sports Centre at Pune and Sports Academies at various places in the State. Accordingly, sports academies are established at 11 places in the State. During the year 1997-98 to 2003-04 in these 11 sports academies trainings for Athletics, Swimming, Diving, Volley-ball, Foot-ball, Hand ball, Wrestling, Judo, Hockey, Cycling, Traithlone, Archery, Rowing, Shooting and Gymnastics were given to the near about 470 trainees every year. During the year 2003-04, 230 trainees have awarded at State level, 106 trainees at National level and 2 trainees were at International level. Since inception of the sports academies, 22 trainees participated from the Indian team at International level. During 2004-05, 470 trainees are selected, of which 72 (15 per cent) are girls.

Public Health

12.77 Achieving an expectable standard of good health amongst the general population is the main objective of the 'National Health Policy - 2002' (NHP). Improvement in the health status of the people is sought to be achieved through improvement in the Health Services in the State with special focus on needy and unprivileged segments of the population. Large investments in health care are needed to maintain the current health situation. The technology required for tackling resistant infections and non-communicable diseases are expensive which result in escalation of health care cost. The NHP-2002 envisages increasing public health investment to 2 per cent of the GSDP by 2010.



12.78 The Health Care Delivery System, however, has created a paradoxical situation with a plethora of hospitals but few located in the areas with high morbidity. However, there are many hospitals in public, voluntary and private sectors without appropriate manpower, infrastructure, therapeutic services and drugs. There are massive interdistrict/ urban-rural differences in performance, availability and utilisation of Health services. Facilities are poorest in the hilly remote rural and tribal areas of the State. Most of the secondary and tertiary

stitutions in the State have good facilities with skilled staff but they are facing difficulties in running institutions because of change in the health care needs, rapid advances in technology, obsolescence of equipments and rapid turnover of the staff.

12.79 By the end of 2004, there were 945 public and Government aided hospitals, 2,019 dispensaries, 1,807 primary health centres and 9,731 sub-centres in the State for rendering health services. These services have appreciably helped to improve the health standard of the people in the State, which is evident from the relatively low crude death rate (7.3) and low infant mortality rate (45) achieved at the end of 2002 in the State, as compared with the similar rates of 8.1 and 63 respectively for All-India. Maharashtra also shows a continuous improvement in life expectancy at birth. During 1970-75, the life expectancy at birth for males and females was 53.3 and 54.5 years respectively and which, per projection for 2001-06, for males is 58.8 years and for females 69.8 years. The details of vital statistics and medical facilities available in the State are given in Table No. 3 and 59 respectively of Part-II.

Family Welfare

12.80 The main objective of the family welfare programme is to stabilize population and improve quality of life of the people. The effective implementation of population control programme has reflected in the relatively low birth rate of 20.3 in the State as compared with that of 25.0 for All-India for the year 2002. The percentage of eligible couples effectively protected by the various family planning methods under the family welfare programme was 60.9 as observed in the National Family Health Survey of 1998 (NFHS-2) in the State as against 48.2 for All-India. From the survey report, it is revealed that out of the total eligible couples in the State, 52.2 per cent were covered under the sterilisation methods. The number of sterilisation operations performed in the State during 2003-04 was 6.89 lakh, as against 6.82 lakh sterilisation operations

performed during 2002-03. During 2004-05 upto the end of October, the number of sterilisation operations performed in the State was 2.95 lakh, which is less by 2 per cent than that during the corresponding period of 2003-04.

12.81 Though, the sterilisation was the main stay of the family welfare programme in the past, the spacing of births has become an equally important aspect. The Government is therefore, giving more stress on propagation of spacing methods like Copper-T, Intra Uterine Device (IUD), Conventional Contraceptives etc. As a result, among all protected couples, the percentage of couples protected by family planning methods other than sterilisation is 8.7 (NFHS-2). During the year 2004-05 upto the end of December, the number of Copper-T acceptors in the State was 3.15 lakh, which was more by 5 per cent than that of the corresponding period of 2003-04.

12.82 For effective impact of family welfare programme on fertility, it is essential that the programme is accepted by younger couples having one or two living children. The average number of living children in the case of vasectomy acceptors has declined from 4.3 in 1971-72 to 2.61 in 2003-04 and that for tubectomy acceptors, it has declined from 4.5 to 2.49. In respect of I.U.D acceptors, it declined from 2.3 in 1979-80 to 1.49 in 2003-04. Similarly, average age at acceptance has declined during the corresponding period from 39.5 to 28.8 years for vasectomy acceptors, from 32.4 to 27.0 years for tubectomy acceptors and from 27.4 to 24.8 years for I.U.D. acceptors, which is a good sign. For every vasectomy acceptors, State Govt. & Central Govt. has given incentive of Rs. 351/- and 150/- respectively.

Reproductive & Child Health Programme

12.83 The programme is aimed at reducing the child mortality and maternal mortality. Under this programme, three activities are undertaken. The details of the activities and progress of the programme is given in Table No.12.18.

Table No.12.18

Number of beneficiaries under Reproductive and Child Health Programme in Maharashtra

| (in lakh) | | | |
|--|--|---------|----------|
| Sr. No. | Name of Scheme | 2003-04 | 2004-05* |
| (A) Distribution of Folic Acid and Ferrous Sulphate tablets | | | |
| 1. | For pregnant women -- | | |
| | (a) Prophylatic | 12.4 | 9.54 |
| | (b) Therapeutic | 7.2 | 5.58 |
| 2. | For children between 1 to 5 years | 23.9 | 22.09 |
| (B) Immunisation | | | |
| 1. | D.P.T. - 3rd Dose | 21.1 | 14.20 |
| 2. | Polio - 3rd Dose | 20.8 | 14.27 |
| 3. | BCG | 21.7 | 15.90 |
| 4. | Measles | 19.5 | 14.32 |
| 5. | Anti tetanus (pregnant women) | 21.4 | 14.44 |
| (C) Other immunisation doses | | | |
| 1. | Tetanus toxoid (1-10 years) | 20.6 | 13.16 |
| 2. | Tetanus toxoid (10-16 years) | 18.2 | 12.01 |
| 3. | Oral Vitamin - A (9 months to 3 years) | 52.0 | 64.71 |

* Upto the end of December, 2004.

Pulse Polio Programme

12.84 The World Health Organisation has aimed at making the world 'Polio Free'. As a part of this, the Health Department of the Government of India decided to implement the pulse polio programme throughout the country. To eradicate polio throughout the country, in addition to the regular immunisation programme, additional two oral doses of polio vaccine every year were administered to the children in the age group 0-5 years during the years 1995-96 to 2003-04 (except, four doses during 1999-2000). During 2003-04 two additional doses were administered to about 116 lakh children in the State. For the year 2004-05 on 4th April and 17th October, these additional doses of polio vaccine are administered to about 114.9 lakh and 112.2 lakh children respectively.

Special School Health Programme

12.85 Under this programme, medical check up of the students in standard I to IV is done every year. During the year 2003-04, such programme was taken up on 10th to 25th January, 2004 and about 60.23 lakh students from 64,168 schools throughout the State were examined and primary treatment

was given for minor illness and referral services were provided for major illness. Expenditure of Rs. 1.35 crore is expected under this scheme during 2004-05.

Savitribai Phule Kanya Kalyan Scheme

12.86 As per the state's new population policy, the scheme is modified with effect from 1st April, 2000. This scheme is applicable only for below poverty line families and having one or two daughters and no male child and accepting sterilization. The couple having no male child and accepting terminal method after one daughter is given an incentive of Rs. 10,000 in the form of fixed deposit for 18 years in the name of daughter and couple having no male child and accepting terminal method after two daughters is given an amount of Rs. 5,000 to each daughter in the form of fixed deposit for 18 years in the name of daughters. Under 2nd part of the scheme, an additional incentive of Rs. 5,000 each for beneficiary daughter will be provided as a fixed deposit for five years when she completes her schooling upto Std. X and does not get married before 20 years of age. During 2002-03 and 2003-04, under this scheme there were 475 and 384 beneficiaries and total expenditure of Rs.47.5 lakh and Rs. 30.5 lakh have been incurred respectively. Since inception upto the end of December, 2004 total expenditure of Rs.2.48 crore was incurred on this scheme, covering 2,40,000 beneficiaries.

National AIDS Control Programme

12.87 The National AIDS (Acquired Immuno Deficiency Syndrome) Control Programme is a 100 per cent centrally sponsored scheme and is being implemented in the country with the assistance from the World Bank. In the phase-I, the project was sanctioned for the period September, 1992 to March, 1999. The phase-II project plan with World Bank assistance for a period 1999-2004 is being implemented in the State (except Greater Mumbai) through the Maharashtra State AIDS Control Society from April, 1999. During 2002-03, 2003-04 and 2004-05, the Maharashtra State AIDS Control Society (MSACS) received funds of Rs.10 crore, Rs.10.00 crore and Rs.7.50 crore

respectively. The Society has spent Rs. 8.93 crore in 2002-03, Rs.10.77 crore in 2003-04 and Rs. 9.48 crore upto the end of December 2004. The statistics regarding the AIDS control programme for Maharashtra is given in the Table No.12.19.

Table No.12.19
The statistics regarding the AIDS
in the Maharashtra State

| Sr. No. | Item | (Number) | |
|---------|-----------------------------------|-------------------|---------------------------|
| | | 2004-05 upto Dec. | Cumulative upto Dec. 2004 |
| | Persons screened from risk groups | 3,33,580 | 13,35,300 |
| a) | H.I.V. positive by 2 tests | 25,882 | 1,53,463 |
| b) | H.I.V. positivity rate (per cent) | 7.8 | 11.5 |
| | AIDS Cases | 5,296 | 25,884 |
| | AIDS Death | 426 | 2,257 |
| | Blood units screened | 57,80,601 | 78,37,564 |
| | Elisa Reactive | 5,745 | 94,371 |
| | Elisa Reactivity Rate(per cent) | 0.7 | 1.2 |

HIV.- Human Immuno-deficiency Virus.

12.88 For prevention of HIV spread through blood, each and every blood unit received in the hospital is tested for HIV, malaria, Hepatitis C, VDRL etc.. In Maharashtra State there are total 269 registered blood banks, of which 250 are functioning. There are total 57 Voluntary Counselling Testing Centers (VCTC) established in the State, of which 25 are at District Hospitals, 11 are at Government Medical Colleges, 11 are at Sub District Hospitals and 10 are at Corporation Hospitals. Under Sexually Transmitted Diseases (STD) control programme, there are 61 STD Clinics established in the State. For prevention of HIV transmission from infected mothers to their child 'Prevention of Parent to Child Transmission Centres' (PPTCT) are established. In the State 55 such centers are functioning in different Government hospitals, Government Medical Colleges and Private Medical Colleges. During 2004-05, 16 more PPTCT's have been approved.

Sentinel Surveillance

12.89 Sentinel Surveillance for HIV infection round 2004 was launched in the State

from 1st July to 30th September, 2004. During this period, blood samples were collected in 80 sites which consists of 9 STD sites, 33 Districts ANC(Anti Natal Care) sites, 33 FRU(First Referral Unit) ANC sites and one Special Age Group ANC site. These blood samples were tested for HIV and VDRL at district testing laboratories. Such study is being taken every year to see the trend of prevalence. The prevalence of HIV observed in ANC sites is 0.75 per cent and in STD it is 10.4 per cent.

Information, Education and Communication (IEC)

12.90 HIV/AIDS awareness is created by organising World AIDS Day Event, International Marathon, Awareness in Ganesh Festival, Awareness Campaign at Pandharpur and Kolhapur. In World AIDS Day Campaign, AIDS Workshops were conducted at taluka level for Commercial Sex Workers, school and college going teenager girls, truck drivers and cleaners.

School AIDS Prevention and Education Programme

12.91 Since year 1994 School AIDS Prevention and Education Programme has been implemented with technical and financial support of UNICEF, Social Justice, Cultural Affairs and Special Assistance Department and Tribal Welfare Department. The programme is implemented for students of 9th and 11th standards (for students of 7th to 9th standards in tribal area) for which education is imparted by teacher of school. NGO's are also involved to a great extent. Out of 15,510 higher secondary schools in the State so far 14,500 schools are covered under this programme.

12.91.1 During 2004-05, School Adolescent Life Skill Education Programme (SALSEP) is initiated with assistance and coordination of UNICEF and Education Department of the State. As per guidelines of National Council for Education, Research and Training (NCERT), State Council for Education, Research and Training (SCERT) has planned

training programme for awareness of AIDS and life skill Education for adolescent.

AIDS Control Programme in Greater Mumbai

12.92 The National AIDS Control Programme in Mumbai is implemented by Mumbai Districts AIDS Control Society (MDACS) established by MCGM in the year 1998. Fast increasing population and the constant influx of single male migrants to the city, have resulted HIV/AIDS one of the most important health problems in Mumbai.

12.92.1 Sentinel Surveillance, undertaken in Mumbai during July to October, 2004 revealed prevalence of HIV infection to the tune of 1.13 per cent in pregnant women attending ANC clinics, 44.76 per cent in Commercial Sex Workers, 14.78 per cent in STD sufferers, 28 per cent in Intravenous Drug Users (IDU) and 9.6 per cent in men having sex with Men (MSM). Two new groups i.e. TB patients and eunuchs have been included during 2004-05 for HIV testing and the prevalence of HIV positivity found among them was 11 per cent and 49 per cent respectively. The prevalence of HIV infection amongst blood donors is 0.65 per cent.

12.92.2 In Greater Mumbai, 2,913 AIDS cases and 233 AIDS deaths have been recorded during the year 2003. In 2004 upto the end of September, 2,297 AIDS cases and 180 AIDS deaths have been reported. Both in cases detected for AIDS and death occurred thereby, percentage of male in the State was 70 per cent.

12.92.3 The Mumbai Districts AIDS Control Society received Rs.5.20 crore and incurred expenditure of Rs.7.01 crore in the year 2003-04. In the current year upto 15th November, 2004, the society has received funds of Rs. 4 crore and incurred expenditure of Rs. 2.94 crore.

12.92.4 MDACS undertakes various types of IEC activities in Greater Mumbai through different media for public awareness about HIV/AIDS. So far, in about 85% schools, AIDS

Prevention Education Programme has been undertaken for the benefit of students and teachers. MDACS provides all technical and financial support for training programme undertaken in Greater Mumbai for doctors, nurses, paramedical staff and Class I employees of all hospitals. MDACS conducts AIDS Control Programme in 18 different parts of Greater Mumbai in collaboration with 21 NGOs.

Schemes for Social Justice

National Social Assistance Programme

12.93 National Social Assistance Programme (NSAP) introduces a National Policy for social assistance to households which are below poverty line. The programme represents a significant step towards the fulfilment of the directive principles in Articles 41 and 42 of the Constitution recognising the concurrent responsibility of the Central and State Governments in the matter. The NSAP includes following two schemes.

1) National Old Age Pension Scheme Under this scheme, each destitute aged 60 years and above is paid a pension of Rs. 100 per month from Central Government funds. In addition, each beneficiary is given Rs. 100 per month from Government of Maharashtra under the Shravanbal Seva Yojana.

2) National Family Benefit Scheme Under this scheme, in the case of accident or natural death of a bread winner aged between 18 to 64 years, bereaved household below poverty line is given Rs. 10,000 in one instalment.

12.93.1 During 2003-04 under National Old age Pension Scheme, there were 4,46,800 beneficiaries and Rs. 41.34 crore were distributed as an aid from Central Government and as well Rs. 20.93 crore were paid by the State Government. Under the National Family Benefit Scheme, there were 22,870 beneficiaries and assistance of Rs. 22.87 crore was released by Central Government.

Sanjay Gandhi Niradhar / Arthik Urbalansathi Anudan Yojana

12.94 This scheme is applicable to persons and destitute widows below the age 65 years and those who are not be able to earn due to physical/mental illness like the blindness, handicapped, crippled, paralysis, cancer, T.B, AIDS, etc. Other eligibility conditions are (i) the person must be domicile or at least 15 years in Maharashtra, (ii) he/she should not be a resident member of institute sponsored by Charitable Trust. Under this scheme, Rs. 250 per month are given to beneficiary. If there are two beneficiaries in a family, such family is given Rs. 500 per month and if there are more than two beneficiaries in a family, they get Rs.625 per month. Under this scheme, 4,66,166 persons were benefitted in the State during the year 2003-04 for which Rs.139.85 crore were disbursed.

Indira Gandhi Niradhar & Bhumihin Urbalansathi Mahila Anudan Yojana

12.95 Under this scheme women below the age 65 years and in the categories of landless agricultural labourer, destitute-widows, parityaktya, in divorce process, sexually abused, whose husband is head of family and is in prison, released from institutions and orphan girls, are benefitted. Under this scheme, other eligibility conditions and pattern for financial assistance is similar to that of Sanjay Gandhi Niradhar/Arthik Urbalansathi Anudan Yojana. Under this scheme, 3,22,833 women/girls were benefitted during 2003-04 and Rs.96.85 crore were disbursed.

Women Policy

12.96 Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination Against Women was adopted by the United Nations General Assembly in 1979. The convention binds signatory nations to end all forms of discrimination against women. Maharashtra was the first State in India to formulate women's policy in the year 1994. The Government of India in the constitution

amendments 73rd & 74th took a historic decision to provide 1/3rd reservations for women. The women's policy 1994 provides for review after every three years, and accordingly revised policy and various recommendations/measures for the development of the women are incorporated in the women's policy 2001. This Policy provides for participation, protection, economic development, capacity building and a supportive environment to the women.

Child Development Policy

12.97 In the Child Rights Convention (CRC), of the United Nation an appeal was made to all nations to focus special attention on children. India has ratified this convention. The child's right for survival, growth, development and protection have already been included in the Constitution of India. Besides this, provisions have been made under various laws set up at the National & State level to punish those who violate and threaten the safety and rights of the child. Although, many laws related to children exist in our country, most of them do not meet the standards of CRC. The "National Child Policy" was declared in the year 1974. In order to protect the rights of the child in Maharashtra, framing of the Child's Development Policy became the need of the hour. The Child Development Policy was declared first in the year 2002 by Government of Maharashtra in concurrence with the commitments made by the Central Government with the international health institutions. This policy envisages establishment of the Children Rights Commission for protection of their rights and creation of friendly environment among them.

Women and Child Development

12.98 Women and Child Development Department of State Government looks after the welfare of women and children with a view to ensure their speedy and effective development. The performance under the important schemes for upliftment of women and children in the State is shown in the Table No.12.20.

Table No. 12.20
Performance under important schemes
for upliftment of women and children
during 2003-04 in the State.

| Sr. No. | Name of the scheme | No. of beneficiaries | Expenditure (Rs. in lakh) |
|---------|---|----------------------|---------------------------|
| 1. | Government Women Hostels for destitutes women | 513 | 265.82 |
| 2. | Voluntary Rescue Homes | 263 | 22.35 |
| 3. | Multipurpose Community Centres for women | 645 | 4.01 |
| 4. | Hostel for Devdasi children | 150 | 11.13 |
| 5. | Educational assistance to Devdasi children | 130 | 0.49 |
| 6. | Subsistence allowance to Devdasis | 4,450 | 155.24 |
| 7. | Assistance to NGO's for propoganda against Devdasi system | 4* | 0.40 |
| 8. | Dowry Prohibition | 35* | 1.40 |
| 9. | Financial assistance for the marriage of the inmate in Govt. Institutions | 6 | 0.90 |
| 10. | Financial assistance for the marriage of widow's daughter | 587 | 11.74 |
| 11. | Marriage allowance for marriage of Devdasi/or daughter of Devdasi | 8 | 0.80 |
| 12. | Individual aid under self employment scheme to women | 4,536 | 22.68 |
| 13. | Award of stipend to the Girls for Vocational Training | 5,770 | 34.62 |
| 14. | Grant-in-aid. to Mahila Mandals training centre | 8,426 | 60.54 |
| 15. | Women and Child Welfare Committee Z.P. (24 schemes) | 33* | 180.60 |

* Institutions @ Districts # Zilla Parishad

12.99 Under the child welfare programme, various Government/voluntary institutes are functioning in the state. The performance of child welfare schemes is given in the Table No.12.21.

Table No.12.21
Performance under important schemes for
child welfare during 2003-04 in the State

| Name of the scheme | No. of beneficiaries | Expenditure (Rs. in lakh) |
|--|----------------------|---------------------------|
| Government and Voluntary observation homes | 3,750 | 426.26 |
| Government and Voluntary children homes | 12,540 | 1,243.97 |
| Balsadan and destitute homes | 9,810 | 848.06 |
| Orphanages | 1,002 | 88.00 |
| Voluntary After Care Homes | 30 | 11.18 |
| Foster-care | 865 | 36.11 |
| Child Guidance Clinics | 150 | 1.06 |

Nutrition Programme

12.100 In order to meet the minimum nutritional requirements of children, pregnant women and nursing mothers and provide health care to them, the State Government implements various schemes under nutrition programme. The performance under these schemes is given below.

Integrated Child Development Services Supplementary Nutrition Programme for Rural areas

12.100.1 The 'Supplement Nutrition Programme' (SNP) is being implemented by the Integrated Child Development Services (ICDS). The SNP aims at to provide nutritious diet to the children below six years of age in order to improve the standard of health of the pregnant women and nursing mothers belonging to the families from the disadvantaged section of the society, to focus and control malnutrition situation in remote and sensitive areas and to minimise the rate of infant mortality. The programme is operationalised in entire jurisdiction of Zilla Parishads through Anganwadi Centres. The population norm for establishment of Anganwadi Centre in non-tribal area is of 1000 while in tribal area it is 700. For monitoring of ICDS programme, a skeleton staff consisting of a deputy chief executive officer (child welfare) in Zilla Parishad at district level, child development project officer at project level and Anganwadi Sevika at village level is sanctioned by the Government of India and the same is adopted by the Government of Maharashtra. As such, in 2003-04, 52,899 Anganwadi Centres in 305 projects are opened in the State.

12.100.2 In order to cover the gap of 300 calories and 10-12 gms. of proteins in diet under this scheme, Rs. 1.50 per day per beneficiary are made available as the feeding cost for providing 'usal' and 'khichdi' at Anganwadi Centre. The expenditure on nutrition is borne by the Government of Maharashtra State, while the expenditure on

other than nutrition is fully reimbursed from the Government of India. During the year 2003-04, number of beneficiaries under the programme was 46.65 lakh including pregnant women and nursing mothers and thereon an expenditure of Rs. 173.63 crore was incurred. During the current year upto end of November, 2004, total beneficiaries under this programme was 41.86 lakh and expenditure incurred thereon was Rs. 52.73 crore.

Supplementary Nutrition Programme for Urban areas

12.100.3 In urban areas of the State, nutritious diet containing 300 calories and about, 10-12 gms. of proteins contained diet in "ready to eat" form (sheera and usal) is provided to the ICDS beneficiaries for which Rs. 1.50 per day per beneficiary are sanctioned. During the year 2003-04, number of beneficiaries under the programme was 2.26 lakh including pregnant women and nursing mothers and thereon an expenditure of Rs. 10.82 crore was incurred. During the current year upto end of November, 2004, total beneficiaries under this programme was 2.07 lakh and expenditure incurred thereon was Rs. 5.84 crore.

Pradhan Mantri Gramodaya Yojana

12.101 The "Pradhan Mantri Gramodaya Yojana" (PMGY) is a newly initiative under ICDS programme, which aims at achieving the objective of sustainable human development at the village level. Under this scheme, children in grade I to IV categories of malnutrition and in the age group of 6 months to 3 years are covered. For supply of nutritious diet i.e. therapeutic food in powder form containing 300 calories and 8 to 10 gms. of protein at the cost of Re. one per day per beneficiary is provided under the scheme. Since April, 2003, the scheme is modified targetting beneficiaries from BPL categories only. During 2003-04 beneficiaries covered under the scheme were 4.51 lakh and expenditure incurred thereon was Rs. 9.90 crore.

Housing

12.102 The National Housing and Habitate Policy 1998, has been formulated in order to address the issues of sustainable development of housing infrastructure through strong public and private partnership. It also seeks to ensure that housing, alongwith supporting services, is treated as the priority sector at par with infrastructure. The State Government has realised the need to provide fiscal concession, carry out legal and regulatory reforms in order to create a conducive environment for housing construction. To look after the housing problems, the Maharashtra Government has set-up the Maharashtra Housing and Area Development Authority (MHADA) and City and Industrial Development Corporation (CIDCO) Limited.

Urban Housing

Maharashtra Housing and Area Development Authority

12.103 The main objective of the Maharashtra Housing and Area Development Authority (MHADA) is to meet the need for housing in urban areas of the State. The MHADA secures funds for housing activities from the Housing and Urban Development Corporation (HUDCO), Life Insurance Corporation of India (LIC) and from the State Government.

12.104 MHADA has constructed in all 3,96,725 dwelling units since inception up to the end of March, 2004. Details of category wise construction of dwelling units by MHADA and expenditure incurred during the last five years are shown in Table No.12.22.

City and Industrial Development Corporation Ltd.

12.105 The City and Industrial Development Corporation (Maharashtra) Ltd. (CIDCO) was formed in March, 1970 under the Maharashtra Regional and Town Planning Act, 1966 for undertaking development work in the urban areas of the State. CIDCO has drawn up ambitious development programmes covering housing for all sections of the community providing infrastructure like schools, hospitals, community centres, playgrounds, recreational areas and public utilities and land scaping etc. The Government of

Table No. 12.22
No. of dwelling units constructed by MHADA

| Year | Category | | | | | Total dwelling units | Expenditure (Rs. in Lakh) |
|----------|----------|--------|--------|--------|-------|----------------------|---------------------------|
| | E.W.S. | L.I.G. | M.I.G. | H.I.G. | Other | | |
| 1999-00 | 1,595 | 9,890 | 523 | 165 | 50 | 12,223 | 15,285 |
| 2000-01 | 1,044 | 2,462 | 279 | 290 | 79 | 4,154 | 9,856 |
| 2001-02 | 1,013 | 3,549 | 418 | 223 | 57 | 5,260 | 15,235 |
| 2002-03 | 93 | 1,796 | 1,235 | 516 | 698 | 4,338 | 24,546 |
| 2003-04 | 1,361 | 3,862 | 975 | 642 | 1,301 | 8,141 | 20,619 |
| 2004-05* | 160 | 571 | 60 | 72 | - | 863 | 13,672 |

* upto end of October, 2004.

Maharashtra subsequently authorised CIDCO for construction of district head quarter at Oras, development of Vasai Virar sub-division and construction of Meghdoot Township near Butibori area at Nagpur.

12.106 Since inception up to March, 2004 CIDCO has constructed 1,14,102 tenements (including sites & services) in different nodes of Navi Mumbai for which an expenditure of Rs.1,084 crore was incurred. An expenditure of Rs.55.60 crore has been incurred on housing during the year 2004-05 upto the end of Dec.2004. During 2004-05, CIDCO has taken up construction of following housing schemes.

i) Under phase-II, 456 HIG tenements along with club-house and swimming pool and 156 HIG tenements under phase-III of Millennium Tower at Sanpada. Under this phase an amount of Rs.22.60 crore has been spent during 2003-04.

ii) 1,456 tenements catering to lower and middle income group under "Spaghetti" Housing Scheme at Kharghar. An amount of Rs.25 crore has been spent during 2003-04.

iii) 3,236 tenements for Lower & Middle Income Group under "Gharonda" Housing Scheme in sector-9 at Ghansoli.

12.107 Upto the end of March, 2004, CIDCO has constructed 21,088 tenements at Aurangabad, 24,544 tenements at Nashik, 7,884 tenements at Nanded and 972 tenements at Walunj (Aurangabad) with total expenditure of Rs.107 crore. Provision of Rs.35 lakhs has been made during 2004-05 under this scheme. The details of categorywise number of tenements constructed by CIDCO and expenditure incurred at various places in the State are given in Table No.12.23

Slum Rehabilitation Scheme

12.108 Maharashtra Government has announced slum rehabilitation scheme to provide free houses to 40 lakh slum dwellers in Greater Mumbai. Under this scheme, free of cost tenement with carpet area 225 sq.feet is to be given to a slum dweller.

12.109 Under Slum Rehabilitation Scheme upto the end of February, 2005 total 1,273 proposals were received by Slum Rehabilitation Authority

Table No. 12.23
Tenements constructed by CIDCO upto March, 2004

| Place | Category | | | | Total tenements | Expenditure (Rs. in crore) |
|---------------------|---------------|--------|--------|--------|-----------------|----------------------------|
| | E.W.S./L.I.G. | M.I.G. | H.I.G. | N.R.I. | | |
| Navi Mumbai | 57,003 | 32,492 | 23,071 | 1,536 | 1,14,102 | 1,084 |
| Aurangabad | 18,759 | 1,897 | 432 | 0 | 21,088 | 47 |
| Nashik | 21,343 | 2,619 | 582 | 0 | 24,544 | 42 |
| Nanded | 7,758 | 126 | 0 | 0 | 7,884 | 9 |
| Walunj (Aurangabad) | 742 | 230 | 0 | 0 | 972 | 9 |

Out of which 704 proposals were approved. By the end of February, 2005, total 33,505 slum families were rehabilitated under this scheme.

Shivshahi Punarvasan Prakalp Ltd.

12.110 Under Shivshahi Punarvasan Prakalp Ltd. (SPPL), so far construction work of 6 buildings comprising 4,751 tenements were completed and work of 5,930 tenements in 55 buildings is in progress.

Lok Awas Yojana

12.111 The Govt. of India has started National Slum Development Programme (NSDP) from October, 1999. Under this programme, 10 per cent budget of NSDP is spent for housing and shelter development. The Govt. of Maharashtra is participating in the scheme named as Lok Awas Yojana since August, 2000 for construction of 50,000 houses for low income group families in 61 towns (except Mumbai) of the State. Under this scheme the construction work is entrusted to MHADA. Under Lok Awas Yojana, total 6,959 houses were constructed upto the end of November, 2004 and expenditure incurred upto the end of September, 2004 was Rs.1,858 lakh.

Financial pattern under Lok Awas Yojana (Cost Per Unit Rs.30,000)

| | |
|---|--|
| 30 thousand units to be provided to Backward Class | 20 thousand units to be provided to Non-Backward Class |
| NSDP @ Rs.11,000 per unit | NSDP @ Rs. 10,000 per unit |
| Social Welfare Dept. @ Rs.9,000 per Unit | ----- |
| II. Beneficiary's contribution @ Rs.5,000 per unit | Beneficiary's contribution @ Rs.5,000 per Unit |
| IV. Loan from financial institutions such as Hudco/NHB @ Rs. 5,000 per unit | Loan from financial institutions such as Hudco/NHB @ Rs. 15,000 per unit |

Valmiki Ambedkar Awas Yojana

12.112 The Government of Maharashtra has decided to implement Valmiki Ambedkar Awas Yojana (in September, 2002) in the state with a

view to upgrading the living standard of the slum dwellers, who have been living in unhygienic conditions in slums and also for the people who are below poverty line and belonging to Economically Weaker Section within the city and urban agglomeration. It has been decided to implement the scheme in 80 cities of the State. The construction cost to be given to each beneficiary for the Mega city is Rs. 60,000, Metro cities Rs. 50,000 and other remaining cities Rs. 40,000 per house. Out of the total outlay the Central Govt. and the State Govt. have to contribute share of 50 per cent each towards the scheme. The scheme envisages;

- 1) The construction of new houses by the beneficiary's themselves
- 2) Upgradation of /Repairs to the existing slum
- 3) Development works under Nirmal Bharat Abhiyan under which the construction of W.C. Blocks

MHADA has been declared as Nodal Agency for the implementation of this scheme, expenditure was incurred Rs.9,693.32 lakhs upto Sept.2004.

12.113 Under this scheme during the financial year 2003-04 the Central Govt. has accorded sanction for construction of about 17,171 houses, upgradation of 141 houses and 3,900 W Cs under Nirmal Bharat Abhiyan to be constructed by MHADA in the State. Construction of 3,908 tenements and 2,572 W.Cs were completed upto the end of March, 2004 and total expenditure incurred was of Rs.3,756 lakhs.

Beedi Gharkul Yojana

12.114 The Government of Maharashtra has decided to implement the Beedi Gharkul Yojana from July, 2001 in order to raise the living standard of the Beedi workers belonging to economically weaker section in the State. Under this scheme, financial assistance of Rs. 20,000 each from the State and Central Govt. is given for each dwelling unit. An amount of Rs.1,321 lakh have been distributed upto March, 2004. Under this scheme, financial assistance is given to two cooperative societies from Solapur for Beedi workers. These societies proposed to construct 10,309 houses, of which 6,275 houses were completed by the end of November, 2004.

Rural Housing

Indira Awas Yojana

12.115 The objective of Indira Awas Yojana (IAY) is to provide houses free of cost to below poverty line families in rural areas. In order to construct houses of durable quality, the State Government has fixed cost per house at Rs.30,000. The funding pattern of this scheme currently in force from April, 2004 is given below.

| | |
|--|-------------------|
| a) Central Government share (75%) | Rs. 18,750 |
| b) State Government share (25%) | Rs. 6,250 |
| Sub-total | Rs. 25,000 |
| c) State Government's additional share | Rs. 3,500 |
| d) Beneficiary's share | Rs. 1,500 |
| Total | Rs. 30,000 |

12.116 IAY in its present form has a limited scope for construction of new houses and there is a need of upgradation of unserviceable Kutcha houses in the rural areas. It is, therefore, felt that it would be most effective to provide part financing for upgradation of existing unserviceable Kutcha houses. In view of this Government has decided to modify IAY scheme suitably. As per the modified scheme 80 per cent of funds under IAY are to be used for construction of new houses and 20 per cent of funds for upgradation of existing unserviceable Kutcha houses. For upgradation of unserviceable Kutcha houses Rs. 12,500 per unit are fixed. This 20 per cent fund can also be used for improving sanitary, latrine and smokeless chulhas attached to the houses, wherever necessary.

12.117 The funds made available (including last year's unspent balance) for construction of new houses for the year 2003-04 was Rs. 205 crore, against which an expenditure of Rs. 194 crore was incurred. During 2003-04, the target of construction of 66,910 new houses was fixed against which 36,942 new houses were constructed and construction of 29,968 new houses was in progress. Besides this, 2,753 houses from the last year's target were completed. During 2004-05 upto the end of January, 2005, funds of Rs. 145 crore has been made available

(including last year's unspent balance) and an expenditure of Rs. 117 crore has been incurred. The target for construction of 70,415 new houses is fixed for the year 2004-05, of which 41,046 houses have been constructed by the end of January, 2005 and construction works of 47,994 houses was in progress.

12.118 The funds made available under IAY for upgradation of unserviceable kutcha houses for 2003-04 were Rs. 38 crore, against which an expenditure of Rs. 34 crore was incurred. A target of upgradation of 33,455 kutcha houses was fixed during 2003-04 against which upgradation of 32,678 houses was completed and upgradation of 14,485 houses was in progress. During 2004-05 upto the end of January, 2005 funds of Rs. 33 crore was made available and an expenditure of Rs. 24 crore was incurred. The target of upgradation of kutcha houses is 35,207 for 2004-05. As against this by the end of January, 2005 upgradation of 19,994 houses was completed and upgradation works of 21,203 houses was in progress.

Pradhan Mantri Gramodaya Yojana

12.119 The Government of Maharashtra is participating in the centrally sponsored scheme 'Pradhan Mantri Gramodaya Yojana' since October, 2001 for the weaker section, houseless and marginal land holders in the State. This scheme contemplates an assistance of Rs. 25,000 per dwelling unit in plain areas and Rs. 27,500 per unit in hilly and/or remote areas of the State from April, 2004. In addition to this for reconstruction of existing dwelling unit an assistance of Rs. 12,500 is provided per beneficiary. Under this scheme, Rs. 24.75 crore were distributed during 2002-03. However, for the year 2003-04 the grant received from Central Government was Rs. 60 lakhs only.

Water Supply

12.120 Availability of safe drinking water and provision of sanitation facilities are the basic minimum requirement for healthy living. State Governments and Urban Local bodies are responsible for providing such facilities to the urban population. There is increasing awareness that supply of drinking water in cities is posing serious problems because of scarcity of water and

availability of civic authorities to access new sources of potable water. Acute scarcity of water in summer months has become common. Whereas, the sharing of cost by the users in urban areas is necessary, it is equally important that expansion of supply facilities and their subsequent maintenance is planned in anticipation of accretion to urban population which, of late, has accelerated due to migration from rural areas. By the end of Eighth Five Year Plan, 240 villages/towns in the State were provided with piped water supply facility. During Ninth Five Year Plan, works of new Water Supply Schemes for 2 towns, augmentation schemes for 243 towns and sewerage schemes for 14 towns were taken up. Out of these, 113 schemes were completed up to 2003-04. A provision of Rs.87.76 crore is made for the financial year 2004-05 for urban water supply and sanitation programme.

12.121 The Government of India and the State Government have accorded very high priority to the drinking water supply programme. The rural drinking water supply schemes are implemented by providing piped water supply, bore wells and dug wells, depending on source of water, terrain and population of the village. With the help of Central Government, through accelerated Rural Water Supply Programme (RWSP), Sector Reforms, Swajaldhara and Alwaraj Schemes with the help of World Bank K.F.W. (German) Water Supply Programme are being implemented in the State.

12.122 During the Ninth Five Year Plan (1997-2002), 30,741 villages/wadis were tackled under drinking water and water supply programme. As per new survey, as on 1st April, 2004, there were 392 villages/wadis having problems of drinking water in the State. A provision of Rs.297 crore is earmarked for rural water supply programme in the Annual Plan 2004-05. During 2004-05, up to the end of January, 414 villages/wadis were tackled for which an expenditure of Rs. 211.2 crore was incurred.

12.123 Due to inadequacy of rainfall and water shortage in sources of regular schemes, acute scarcity of drinking water arises in number of villages in the State every year. The State Government has to take emergency water supply schemes in these villages/towns. The District Collectors and Divisional Commissioners have been given adequate powers for execution and monitoring of the scarcity programme. Every

year the scarcity programme is implemented during the period from October to June. The schemewise number of villages/wadis covered under this programme during the period from October, 2003 to September, 2004 are shown in the Table No.12.24.

Table No. 12.24
Schemewise number of villages / Wadis covered under emergency water supply schemes during October, 2003 to September, 2004.

| Name of the scheme | Villages | Wadis |
|---|----------|-------|
| Construction of new borewells | 1,533 | 471 |
| Special repairs to piped water schemes | 1,534 | 164 |
| Special repairs to borewells | 3,488 | 730 |
| Temporary supplementary piped water schemes | 598 | 59 |
| Supply of water by tankers / bullock carts | 5,040 | 9,300 |
| Requisition of private wells | 5,295 | 2,626 |
| Deepening/desiltation of Existing wells | 517 | 57 |
| Construction of Budkies | 95 | 0 |

12.124 The total expenditure in the State on various schemes of water supply from 1999-2000 to 2003-04 is given in Table No 12.25.

Table No 12.25
Expenditure on various water supply schemes

| Year | Expenditure (Rs. in crore) |
|---------|----------------------------|
| 1999-00 | 1,474.57 |
| 2000-01 | 981.18 |
| 2001-02 | 572.41 |
| 2002-03 | 692.10 |
| 2003-04 | 502.57 |

Environment (Prevention of Air and Water Pollution)

12.125 A good environment is considered as the totality of social, biological, physical and chemical surroundings which lead to a better life. An ever increasing influence on environment degradation is due to rapidly growing urbanisation and industrialisation without proper and scientific

arrangements made for disposal of effluents. The environmental stress is greatly caused by emissions and discharge of carbon monoxide, sulphur dioxide, suspended particulate matter, oxide of nitrogen, volatile hydrocarbons oxidants, ozone and lead into air, water and soil. The State Government has been taking sufficient care for implementation of water and air (Preventive and Control of Pollution) acts rigorously in the State. The Maharashtra Pollution Control Board (MPCB) in the State is regularly monitoring environmental water quality of main rivers every month at 38 locations under Global Environmental Monitoring System (GEMS) & Monitoring of Indian National Aquatic Resources (MINARS) projects. Out of these 38 locations the water quality was found to be maximum deteriorated at 19 locations during 2003-04, since Bio-Oxygen Demand (BOD) was exceeding the limits. The main reason for this is discharge of domestic affluent in the river after monsoon.

12.126 The ambient air quality in Gr.Mumbai is monitored by Municipal Corporation of Gr.Mumbai at 6 locations. MPCB and various educational institutes are monitoring air quality at 19 locations under National Ambient Air Quality Monitoring (NAAQM) project in the State. Maharashtra Pollution Control Board is monitoring air quality at 4 locations and the remaining 15 stations are monitored by the educational institutes. During 2003-04, SO₂ and NO_x levels were found within limit at 17 locations, however, at 13 locations Suspended Particulate Matter (SPM) level was found above the standard. The ambient air quality status under NAAQM projects for the year 2003-04 is shown in Table No.12.26.

12.127 The Government of India has recently enacted Bio-Medical (Management and Handling) Rules, 1998 and Government of Maharashtra has appointed Maharashtra Pollution Control Board as its implementing authority. The Board has already started preparing inventory of Bio-medical waste generating hospitals/medical institutions. Till the end of December, 2005, the Board has given authorisation to 5,640 medical institutions.

12.128 The Board collects data on various aspects of Water and Air pollution from all major establishments in the State and regularly monitors them. During 2003-04, under 'Water and Air Pollution Act' the board has issued 9,038

National Ambient Air Quality Standards

| Pollutant | Time Weighted average | Industrial Area µg/m ³ | Residential Area µg/m ³ | Sensitive Area µg/m ³ |
|-----------------|-----------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|-------------------------------------|
| SO ₂ | Annual | 80 | 60 | 15 |
| | 24 hours | 120 | 80 | 30 |
| NO _x | Annual | 80 | 60 | 15 |
| | 24 hours | 120 | 80 | 30 |
| SPM | Annual | 360 | 140 | 70 |
| | 24 hours | 500 | 200 | 100 |

Table No. 12.26
Ambient Air Quality Status (Annual average under NAAQM Projects for 2003-04)

| Region | Type | Station | SO ₂ | NO _x | SPM |
|------------|------|------------------------|-----------------|-----------------|-----|
| Thane | R | Dhobighat, Kopri | 08.2 | 14.8 | |
| | R | Shahu Mkt, Naupada | 09.9 | 18.4 | |
| | I | Balkum & Kolshet | 10.6 | 18.4 | 109 |
| Nashik | I | RTO | 29.0 | 23.2 | 147 |
| | R | VIP | 26.5 | 22.9 | 144 |
| | R | NMC | 31.2 | 25.8 | 191 |
| Nagpur | R | Govt. Polytechnic | 10.0 | 18.8 | 196 |
| | I | IOE Ambazari Road | 09.3 | 16.8 | 205 |
| Solapur | R | Hingna Road | 09.6 | 16.8 | 208 |
| | I | WIT Campus Ashok Chowk | 19.3 | 43.7 | 387 |
| Mumbai | R | Sat Rasta | 19.3 | 44.3 | 386 |
| | R | Kalbadebvi | 08.6 | 22.0 | 215 |
| | R | Parel | 08.5 | 22.5 | 227 |
| Chandrapur | R | Worli | 08.2 | 19.0 | 208 |
| | R | SRO office | 17.2 | 34.2 | 204 |
| Pune | I | MIDC, Chandrapur | 21.1 | 38.3 | 277 |
| | I | Bhosari | 37.7 | 36.9 | 160 |
| | R | Nal stop | 36.3 | 71.9 | 458 |
| | R | Swargate | 34.2 | 65.0 | 384 |

R- Residential I - Industrial

consents to various industries to establish expand, as against 9,264 consents issued during 2002-03. During 2004-05, up to the end of September, the Board has issued 5,037 consents to various industries in the State. As per the provision under the Act, the Board collects water cess from the specified industries and local bodies on the basis of consumption of water. An amount of Rs.12.02 crore was collected as water cess during 2003-04.

12.129 The Board monitors the pollution industries for their pollution control operations and

action is taken against defaulters. The information regarding the details of legal actions taken against defaulting industries is given in Table No. 12.27.

Table No. 12.27

(a) Complaints filed under Water and Air Prevention Pollution Control Acts by the end of December, 2004

| Particulars of case | No. of cases | |
|------------------------|--------------|------------|
| | U/S 43 & 44* | U/S 37/39@ |
| Filed | 300 | 146 |
| Convicted | 56 | 144 |
| Acquitted | 107 | 30 |
| Pending | 137 | 2 |

*As per Water (P & CP) Act, 1974

@As per Air (P & CP) Act, 1981

(b) Applications filed under Water and Air Prevention Pollution Control Acts by the end of December, 2004

| Particulars | No. of cases | |
|--|--------------|----------|
| | U/S 33* | U/S 22A@ |
| Application filed | 140 | 3 |
| Application decided in favour of Board | 87 | 1 |
| Applications against the Board | 52 | 2 |
| Applications pending | 1 | - |

*As per Water (P & CP) Act, 1974

@As per Air (P & CP) Act, 1981

National River Action Plan

12.130 Under National River Action Plan, the Central Government has decided to purify the polluted area of main rivers in the country. The National River Action Plan has been launched in 1995 in the Maharashtra State. This was 100 per cent Centrally sponsored scheme up to April, 1997. In the Tenth Five Year Plan, Government of India has changed the sharing pattern as 70:30 i.e. 70 per cent cost will be shared by Central Government and 30 per cent cost will be shared by concerned Municipal Corporation/Municipal Council. The main objective of this scheme is to reduce river water pollution due to municipal sewage/domestic liquid waste. Under this scheme initially Nashik and Nanded cities on the bank of Godavari river and Karad & Sangli cities on the bank of Krishna river were covered and Tryambakeshwar is added in the Tenth Five Year Plan. Sub-schemes-like Sewage treatment plant, interception & diversion river front

development, low cost sanitations, crematoria development and afforestation works are undertaken under this scheme. The cumulative expenditure incurred under the scheme is given in Table No.12.28.

Table No. 12.28

Expenditure under the National River Action Plan

| Name of Town | Cumulative Expenditure* (Rs. in Lakh) |
|----------------|--|
| Tryambakeshwar | 987.33 |
| Nashik | 4800.98 |
| Nanded | 1164.50 |
| Karad | 243.17 |
| Sangli | 396.64 |

*Since inception upto the end of November, 2004

National lake conservation plan

12.131 The Govt. of India has undertaken a National Lake Conservation Plan in order to conserve important ecological viable lakes in the country. Initially, under the Plan, urban lakes are proposed to be covered. The Govt. of India has included 20 important lakes under this scheme throughout the country. In the first phase 11 lakes have been covered which includes Powai lake from Mumbai. The scheme is 100 per cent centrally sponsored. The Govt. of India has sanctioned grant of Rs. 6.62 crore for the Powai scheme, of which Rs. 4.7 crore have been released to Mumbai Municipal Corporation, and up to end of August, 2003 works to the tune of Rs. 4.02 crore have been completed.

12.132 From December, 2002, nine lakes from Thane district have been covered under this scheme. For maintenance of the ecological balance of the lake, the works under these scheme are supplemented by process called bioremediation. For cleaning of lake by bioremediation method, financial assistance to the extent of Rs. 2.22 crore has been approved by Central Government, of which Re. one crore have been released to Thane Municipal Corporation. These works are required to be completed within a period of three years.

12.133 For the development of lake front of Powai lake and other lakes in Thane Municipal Corporation area, 30 per cent of the cost is to be borne by Thane Municipal Corporation and 70 per cent by Central Government.

13.1 The Government of India regularly conducts nationwide sample surveys through National Sample Survey (NSS) Organisation to collect data on socio-economic aspects of the various sectors of the economy. The Government of Maharashtra participates in these surveys on a matching sample basis and collects & analyses the data from the State sample. So far 60 such surveys are conducted. The survey work of 61st round is in progress. The information on 'Morbidity and health care' was collected in details in the 60th round of NSS (January-June, 2004) while information on "Employment and unemployment" and 'Household consumer expenditure' was collected in a thin sample. Some important results based on 'Morbidity and health care' are presented in 'Part-A' of this chapter.

13.2 The information on 'Employment and unemployment' & 'Household consumer expenditure' is regularly collected through quinquennial surveys and the seventh such survey is undertaken in 61st round of NSS (July, 2004-June, 2005). Some important results based on quick tabulation of selected data collected in first two sub-rounds (July-December, 2004) of current round on above subjects are presented in 'Part-B' of this chapter. These results are based on the State sample and they are provisional subject to revision.

Part-A Morbidity and health care

13.3 In the survey, information relating to morbidity, problems of aged persons, pre-natal and post-natal care of pregnant women, utilisation of health care services provided by the public and private sectors along with the expenditure incurred by households for availing these services was collected. The data was collected from 2,666 households covering 272 villages and 4,073 households covering 408 urban blocks.

13.4 It is revealed from the survey results that about 2.8 per cent rural population and 3.2 per cent urban population was hospitalised during last 365 days from the date of survey. Of the total hospitalisation cases in both rural and urban areas one-fourth were hospitalised in public hospital dispensary. The facility of free hospitalisation was availed by about 14 per cent cases in rural areas and 11 per cent cases in urban areas. Table No. 13.1 gives the percentage distribution of cases hospitalised during last 365 days from the date of survey.

Table No. 13.1
Percentage distribution of hospitalisation cases during last 365 days

| Particulars | Hospitalised cases by residence from | |
|-------------------------|--------------------------------------|--------------|
| | Rural | Urban |
| By hospital type | 100.0 | 100.0 |
| Public hospital | 21.4 | 20.9 |
| Public dispensary | 3.0 | 3.3 |
| Private hospital | 75.6 | 75.8 |
| By ward type | 100.0 | 100.0 |
| Free | 14.4 | 11.4 |
| Paying general | 72.6 | 70.3 |
| Paying special | 13.0 | 18.3 |

13.5 Average expenditure per hospitalised case during last 365 days was Rs. 6,916 in rural areas and Rs. 9,656 in urban areas. In the rural areas, the patients are needed to be hospitalised at distant place other than their residential place for which additional expenditure on transportation and lodging & boarding of accompanying person was required to be made, resulting increase in average expenditure per case. The details are given in Table No.13.2.

13.6 Among the hospitalised cases, it was seen that 46 per cent patients from rural areas and 5 per cent patients from urban areas were unde-

Table No. 13.2
Average expenditure per hospitalised case by type of ward

(Rs.)

| Area of patient's residence | Per case average expenditure in | | | |
|-----------------------------|---------------------------------|----------------|----------------|-----------|
| | Free | Paying general | Paying special | All cases |
| Rural | 1,957 | 6,697 | 13,256 | 6,916 |
| Urban | 1,428 | 8,812 | 18,106 | 9,656 |

treatment before hospitalisation. Such treatment was availed by about 15 per cent patients both from rural and urban areas in public hospital/dispensary. Table No. 13.3 gives the percentage distribution of patients treated by source of treatment.

Table No.13.3

Percentage distribution of patients treated before hospitalisation by source of treatment

| Source of treatment | Patients from | |
|----------------------------|---------------|------------|
| | Rural | Urban |
| Public hospital/dispensary | 14 | 15 |
| Private hospital | 28 | 21 |
| Private doctor | 58 | 64 |
| All patients | 100 | 100 |

13.7 The percentage distribution of patients who could not take treatment before hospitalisation by reasons is given in Table No. 13.4. It is seen that about nine per cent patients in both rural and urban areas had not taken any treatment before hospitalisation. In rural areas, financial hardship was the major cause (33 per cent) for not taking treatment. In Urban areas, two-third of the total patients had not taken any treatment because they thought that they were not having any serious ailment. In rural areas, 4.1 per cent

Table No. 13.4

Percentage distribution of patients who could not take treatment before hospitalisation

| Treatment not taken due to | Patients from | |
|---|---------------|--------------|
| | Rural | Urban |
| Non-availability of medical facility nearby | 4.1 | 0.0 |
| <i>Facility available but</i> | | |
| Lack of faith | 7.5 | 0.1 |
| Long waiting | 11.6 | 1.2 |
| Financial reasons | 32.6 | 3.2 |
| Ailment not considered serious | 16.3 | 68.8 |
| Others | 27.9 | 26.7 |
| All patients | 100.0 | 100.0 |

patients reported about non-availability of medical facility nearby their residence for not taking any treatment.

13.8 Average expenditure incurred per patient on treatment during last 15 days of the date of survey by social group is given in Table No. 13.5. This expenditure for rural and urban areas was Rs. 116 and Rs. 164 respectively. In both rural and urban areas, no noticeable difference was observed in average expenditure incurred by patients of various social groups.

Table No. 13.5

Average expenditure incurred on treatment per patient during last 15 days

(Rs.)

| Social group | Patients from | |
|---------------------|---------------|------------|
| | Rural | Urban |
| ST | 94 | 129 |
| SC | 103 | 154 |
| OBC | 120 | 145 |
| Others | 124 | 173 |
| All patients | 116 | 164 |

13.9 The data was also collected from mothers who have given child births during 365 days before the date of survey and expenditure incurred on delivery cases. It is observed that in both rural and urban areas, Government hospital was preferred by mothers as a place for child birth. However, still three out of every 10 deliveries were taken place at home in rural areas, as against only one in urban areas. The details are given in Table No. 13.6.

Table No. 13.6

Percentage distribution of mothers and average expenditure on childbirth by place of childbirth

| Place of Child birth | Percentage | | Average Expenditure (Rs.) | |
|----------------------|------------|------------|---------------------------|-------|
| | Rural | Urban | Rural | Urban |
| Govt.hospital | 35 | 40 | 186 | 413 |
| Private hospital | 31 | 51 | 2,855 | 4,453 |
| At home | 34 | 9 | 200 | 103 |
| All | 100 | 100 | - | - |

13.10 Information on persons who received medical attention before death was also collected in the survey. The proportions in percentage, of males and females who had received medical attention before their deaths are given in Table No. 13.7. The proportion of receiving medical attention before death was higher among males than females in both rural and urban areas. However, disparity was more in rural areas.

Table No. 13.7
Proportion in percentage of males and females who had received medical attention before death

| Area | Male | Female |
|-------|------|--------|
| Rural | 69.7 | 40.5 |
| Urban | 65.6 | 59.7 |

13.11 Data on disability of persons of age 60 years and above collected in the survey revealed that of the total persons of age 60 years and above, about seven per cent persons were disabled in rural areas and 10 per cent were in urban areas. Among the disabled aged persons, hearing disability was prominent in rural areas whereas the visual disability was prominent in urban areas. The details are given in Table No. 13.8.

Table No. 13.8
Percentage distribution of persons of age 60+ years by type of disability

| Disability | Rural | Urban |
|--------------|--------------|--------------|
| Hearing | 32.1 | 12.1 |
| Locomotor | 14.5 | 6.4 |
| Visual | 11.6 | 14.4 |
| Speech | 4.7 | 0.4 |
| Others | 37.1 | 66.7 |
| Total | 100.0 | 100.0 |

13.12 In the survey, information on the state of economic independence of persons of age 60 years and above was collected. A person was considered as economically dependent on others if he/she was required to take financial help from others in order to live a normal life. The percentage distribution of persons of age 60 years and above according to type of economic independence is given in Table No. 13.9. It is observed that about two-third of the total population of age 60 years and above in both rural and urban areas was found to be partially or fully dependent on others. The dependency either partially or fully was more prominent in the case of females in both rural and urban areas.

Part-B Household consumer expenditure

13.13 The data collected from 2,520 households covering 252 villages in rural areas and 3,764 households covering 378 urban blocks was used for preparing estimates.

13.14 The consumer expenditure of a household is the value of goods and services

Table No. 13.9
Percentage distribution of persons of age 60+ years by type of economic independence

| Economic independence | Rural | | Urban | |
|-----------------------|------------|------------|------------|------------|
| | Male | Female | Male | Female |
| Not dependent | 52 | 15 | 51 | 15 |
| Partially dependent | 17 | 14 | 14 | 11 |
| Fully dependent | 31 | 71 | 35 | 74 |
| Total | 100 | 100 | 100 | 100 |

consumed by the household, exclusively for domestic consumption. During the survey, data on value and quantity of goods and services consumed by the sample household for a period of 30 days, preceding the date of survey, were collected. The quick estimates revealed that average monthly per capita consumer expenditure (MPCE) was Rs. 608 in rural areas and Rs. 1,239 in urban areas. The percentage distribution of population, according to MPCE class is given in Table No. 13.10. It is observed that MPCE of 64 per cent rural and 65 per cent urban population was below the respective average MPCE.

Table No. 13.10
Percentage distribution of population according to MPCE class

| MPCE class (Rs.) | Rural | Urban |
|------------------|--------------|--------------|
| 0-300 | 6.6 | 1.0 |
| 300-400 | 21.6 | 5.3 |
| 400-500 | 22.3 | 7.0 |
| 500-600 | 13.9 | 7.3 |
| 600-800 | 18.2 | 17.3 |
| 800-1000 | 8.2 | 16.1 |
| 1000 and above | 9.2 | 46.0 |
| All | 100.0 | 100.0 |

13.15 The percentage of expenditure incurred on non-food items excluding clothing, fuel and light is considered as a crude indicator for assessment of standard of living of the household. These percentages according to MPCE class are shown in Table No. 13.11. It is observed that about 34 per cent of the total expenditure in rural area and about 47 per cent of its in urban areas was on non-food items excluding clothing, fuel and light.

Table No. 13.11
Percentage of expenditure on non-food items excluding clothing, fuel and light according to MPCE class

| PCE class (Rs.) | Rural | Urban |
|-----------------|-------------|-------------|
| 0-300 | 23.8 | 26.9 |
| 300-400 | 24.4 | 25.4 |
| 400-500 | 26.6 | 27.4 |
| 500-600 | 28.2 | 29.0 |
| 600-800 | 31.6 | 33.8 |
| 800-1000 | 36.5 | 37.4 |
| 1000 and above | 50.2 | 54.0 |
| All | 34.1 | 47.3 |

13.16 The data based on quinquennial National Sample Surveys conducted earlier on 'Household consumer expenditure' shows that the percentage share of expenditure (MPCE) on non-food items is increasing in both rural and urban areas of the State.

13.17 The percentage distribution of households and their average MPCE according to household type (major source of means of livelihood during 365 days preceding the date of survey) is given in Table No. 13.12. Average MPCE for urban areas was nearly twice of rural areas.

Table No. 13.12
Percentage distribution of households and their average MPCE according to household type

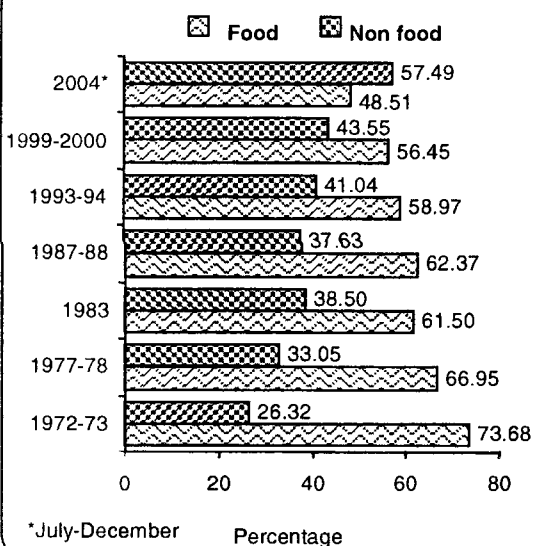
| Household type | Percentage of households | Average MPCE (Rs.) |
|----------------------------------|--------------------------|--------------------|
| Rural | | |
| Self employed in non agriculture | 12.2 | 682 |
| Agricultural labour | 35.6 | 479 |
| Other labour | 5.9 | 505 |
| Self employed in agriculture | 33.8 | 616 |
| Other | 12.5 | 965 |
| All | 100.0 | 608 |
| Urban | | |
| Self employed | 33.4 | 1,213 |
| Regular wage/ salaried | 50.3 | 1,297 |
| Casual labour | 8.2 | 598 |
| Other | 8.1 | 2,118 |
| All | 100.0 | 1,239 |

13.18 Average MPCE on food and non-food items is given in Table No.13.13. It is observed that the percentage of expenditure on food items to the total expenditure was about 49 per cent in rural areas and 39 per cent in urban areas. Average MPCE on non-food items in urban areas was 2.4 times that of rural areas. MPCE by main types of consumption is shown in Table No. 60 of Part II.

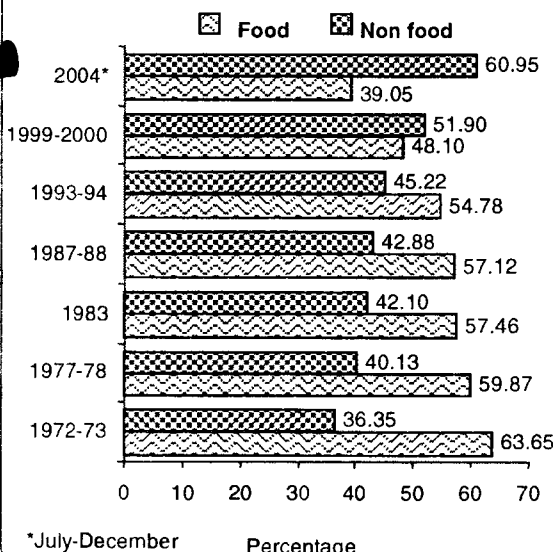
Table No. 13.13
Average MPCE on food and non-food items (Rs.)

| Item | Rural | | Urban | |
|--------------|------------|------------|--------------|------------|
| | MPCE | Percentage | MPCE | Percentage |
| Food | 295 | 49 | 484 | 39 |
| Non-food | 313 | 51 | 755 | 61 |
| Total | 608 | 100 | 1,239 | 100 |

Percentage MPCE on food and non food items (Rural)



Percentage MPCE on food and non food items (Urban)



Employment and unemployment

13.19 The data on employment and unemployment status for the week preceding the date of the survey was collected for every person in the sample household. The weekly status of a person is categorised as 'employed', if the person while pursuing any economic activity had worked for at least one hour, on at least one day, during the reference week. Similarly, a person is categorised as 'unemployed', if during the reference week, no economic activity was pursued by the person but he/she was seeking and/or available for work. It would be thus possible to estimate from the survey data, the percentage distribution of persons according to current weekly activity status.

13.20 Persons who are categorised as 'employed' and those seeking and/or available for work constitute the labour force. The percentage distribution of persons in the age group 15-59 years according to current weekly status is given in Table No.13.14. It is observed that about 80 per cent males in rural areas and 77 per cent in urban areas were employed. About 47 per cent females in rural areas were out of labour force. This percentage was very high in urban areas (81 per cent).

Table No. 13.14

Percentage distribution of persons in the age group 15-59 years according to current weekly activity status

| Current weekly activity status | Rural | | Urban | |
|--------------------------------|------------|------------|------------|------------|
| | Male | Female | Male | Female |
| Employed | 80 | 52 | 77 | 18 |
| Unemployed | 4 | 1 | 4 | 1 |
| Total | 84 | 53 | 81 | 19 |
| Not in labour force | 16 | 47 | 19 | 81 |
| Grand Total | 100 | 100 | 100 | 100 |

13.21 The percentage distribution of employed persons of age 15-59 years by current weekly activity status is given in Table No. 13.15. About three-fourth of male population in rural areas was found to be engaged in agriculture either as a self-employed or a casual labourer. The percentage of females working as a casual labourer in agriculture was 47, which was substantially higher than that of their counterpart. In urban areas, half of the total employed female population of the age group 15-59 years was found to be working as a regular wage/salaried employee.

Table No. 13.15
Percentage distribution of employed persons of age 15-59 years by current weekly activity status

| Current weekly activity status | Rural | | Urban | |
|--|------------|------------|------------|------------|
| | Male | Female | Male | Female |
| Agriculture | 74 | 90 | 4 | 12 |
| Self-employed/helpers in household enterprises | 40 | 43 | 3 | 6 |
| Regular wage/salaried employee | 0 | 0 | 0 | 0 |
| Casual labour | 34 | 47 | 1 | 6 |
| Non-agriculture | 26 | 10 | 96 | 88 |
| Self-employed/helpers in household enterprises | 11 | 6 | 36 | 28 |
| Regular wage/salaried employee | 11 | 2 | 51 | 49 |
| Casual labour | 4 | 2 | 9 | 11 |
| Total | 100 | 100 | 100 | 100 |

13.22 It is observed that the percentage of persons engaged exclusively in domestic duties was 14 and 22 in rural and urban areas respectively. Of the total persons engaged in domestic duties, 27 per cent persons from rural areas were willing to accept the work if it is made available in the household. Such a percentage for urban areas was 24. Of the total persons engaged in domestic duties, 46 per cent persons in rural areas were required to fetch water from outside the household premise. Such a percentage for urban areas was 13.

13.23 The literacy rates estimated as on 1 October, 2004 for the population aged seven years and above based on data from current survey are given in Table No. 13.16. The literacy rate estimated for the State is about 80 per cent. For males and females, it is estimated at 88 and 71 per cent respectively.

Table No. 13.16
Literacy rates estimated for 2004 (Percentage)

| Area | Male | Female | Person |
|--------------|-----------|-----------|-----------|
| Rural | 83 | 63 | 73 |
| Urban | 95 | 84 | 90 |
| State | 88 | 71 | 80 |

13.24 The percentage of persons of age 15 years by current weekly activity status and general educational level is given in Table No. 13.17. It

men that about two per cent rural and three per cent urban persons were found to be unemployed on all seven days. The percentage of unemployed persons who attained educational level of graduates and above was five in rural areas and four in urban areas.

Table No. 13.17

Percentage of persons of age 15 years and above by current weekly activity status and general educational level

| General educational level | Rural | | | Urban | | |
|---------------------------|-----------|-------------|---------------------|-----------|-------------|---------------------|
| | Empl-oyed | Unempl-oyed | Out of labour force | Empl-oyed | Unempl-oyed | Out of labour force |
| Secondary | 47 | 2 | 51 | 40 | 3 | 57 |
| Higher sec. | 50 | 2 | 48 | 38 | 2 | 60 |
| Diploma certificate | 89 | 8 | 3 | 62 | 5 | 33 |
| Graduate & above | 88 | 5 | 7 | 62 | 4 | 34 |
| II | 64 | 2 | 34 | 46 | 3 | 51 |

13.25 Table No. 13.18 gives the percentage distribution of children of age between 6 to 14 years by current attendance status. Even after implementation of 'Sarva Shiksha Abhiyan' programme, about seven per cent and four per cent children of age 6 to 14 years respectively from rural and urban areas were not attending any school.

Table No. 13.18

Percentage distribution of children of age 6-14 years by current attendance status

| Current attendance status | Rural | Urban |
|---|--------------|--------------|
| Currently Not attending | 3.7 | 2.2 |
| Ever attended but currently not attending | 3.3 | 1.7 |
| Currently Attending | 93.0 | 96.1 |
| All | 100.0 | 100.0 |

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
 National Institute of Educational
 Planning and Administration,
 17-B, Sri Aurobindo Marg,
 New Delhi-110016
 Doc. No. A-12607
 15-6-2005

भाग दोन

सांख्यिकीय तक्ते

PART II
STATISTICAL TABLES

T-1

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 1

महाराष्ट्राची व भारताची लोकसंख्या
POPULATION OF MAHARASHTRA AND INDIA

| वर्ष Year | एकूण लोकसंख्या (कोटीत) Total population (In crore) | | दशवर्षीय वाढ (+) किंवा घट (-) टक्केवारी Decennial percentage increase (+) or decrease (-) | | साक्षरतेची टक्केवारी †† Literacy percentage | |
|--------------|--|---------------|--|---------------|--|---------------|
| | महाराष्ट्र Maharashtra | भारत India | महाराष्ट्र Maharashtra | भारत India | महाराष्ट्र Maharashtra | भारत India |
| | (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) |
| 1951 | 3.20 | 36.11 | (+) 19.27 | (+) 13.31 | 20.5 | 18.3† |
| 1961 | 3.96 | 43.92 | (+) 23.60 | (+) 21.51 | 35.1 | 28.3 |
| 1971 | 5.04 | 54.82 | (+) 27.45 | (+) 24.80 | 45.8 | 34.5 |
| 1981 | 6.28 | 68.52 | (+) 24.54 | (+) 25.00 | 57.1 | 43.7* |
| 1991 | 7.89 | 84.63† | (+) 25.73 | (+) 23.85† | 64.9 | 52.2@@ |
| 2001 | 9.69 | 102.86 | (+) 22.73 | (+) 21.54 | 76.9 | 64.8** |

† जम्मू आणि काश्मीरची प्रक्षेपित केलेली लोकसंख्या धरून/Including projected population of Jammu and Kashmir.

†† १९५१, १९६१ व १९७१ ची साक्षरतेची टक्केवारी ५ वर्ष व त्याहून अधिक वयाच्या लोकसंख्येसाठी आहे. १९८१, १९९१ व २००१ ची साक्षरतेची टक्केवारी ७ वर्ष व त्याहून अधिक वयाच्या लोकसंख्येसाठी आहे. / Literacy rates for 1951, 1961 and 1971 relate to population aged 5 and above. The rates for the years 1981, 1991 and 2001 relate to population aged 7 and above.

* १९८१ च्या साक्षरतेची टक्केवारी आसाम व जम्मू आणि काश्मीर सोडून/Literacy percentage of 1981 is excluding Assam and Jammu and Kashmir.

@@ १९९१ च्या साक्षरतेची टक्केवारी जम्मू आणि काश्मीर सोडून/Literacy percentage of 1991 is excluding Jammu and Kashmir.

** २००१ च्या साक्षरतेची टक्केवारी गुजरात व हिमाचल प्रदेश मधील नैसर्गिक आपत्तीमुळे बाधित झालेल्या क्षेत्रातील लोकसंख्या व साक्षरांची संख्या वगळून

Literacy percentage of 2001 is excluding the population and number of literates of areas affected by natural calamities of Gujrat and Himachal Pradesh

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 2

राज्यातील ग्रामीण आणि नागरी लोकसंख्या
RURAL AND URBAN POPULATION IN THE STATE

| अनु.क्र. Serial No. | वर्ष Year | लोकसंख्या (कोटीत)/Population (In Crore) | | | | | नागरी लोकसंख्येची एकूण लोकसंख्येशी टक्केवारी Percentage of urban population to total population | स्त्री-पुरुष प्रमाण (दर हजार पुरुषांमागे स्त्रियांची संख्या) Sex Ratio (Females per thousand males) | घनता (दर चौ.कि.मीटर मागे लोकसंख्या) Density (No. of persons per sq. km.) | | |
|------------------------|--------------|---|----------------|---------------|----------------|---------------------|--|--|---|-----|-----|
| | | ग्रामीण Rural | नागरी Urban | एकूण Total | पुरुष Males | स्त्रिया Females | | | | | |
| | | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | | | | | |
| 1 | 1901 | 1.62 | 0.32 | 1.94 | 0.98 | 0.96 | 16.59 | 978 | 1,003 | 862 | 67 |
| 2 | 1911 | 1.82 | 0.32 | 2.15 | 1.09 | 1.06 | 15.13 | 967 | 1,000 | 796 | 75 |
| 3 | 1921 | 1.70 | 0.39 | 2.09 | 1.07 | 1.02 | 18.50 | 950 | 994 | 776 | 73 |
| 4 | 1931 | 1.95 | 0.45 | 2.40 | 1.23 | 1.17 | 18.60 | 947 | 987 | 790 | 83 |
| 5 | 1941 | 2.12 | 0.57 | 2.68 | 1.38 | 1.31 | 21.11 | 949 | 989 | 810 | 94 |
| 6 | 1951 | 2.28 | 0.92 | 3.20 | 1.65 | 1.55 | 28.75 | 941 | 1,000 | 807 | 106 |
| 7 | 1961 | 2.84 | 1.12 | 3.96 | 2.04 | 1.91 | 28.22 | 936 | 995 | 801 | 129 |
| 8 | 1971 | 3.47 | 1.57 | 5.04 | 2.61 | 2.43 | 31.17 | 930 | 985 | 820 | 164 |
| 9 | 1981 | 4.08 | 2.20 | 6.28 | 3.24 | 3.04 | 35.03 | 937 | 967 | 850 | 204 |
| 10 | 1991 | 4.84 | 3.05 | 7.89 | 4.08 | 3.81 | 38.69 | 934 | 972 | 875 | 257 |
| 11 | 2001 | 5.58 | 4.11 | 9.69 | 5.04 | 4.65 | 42.43 | 922 | 960 | 873 | 315 |

† आकडे संक्षिप्तता दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

Source - i) Registrar General and Census Commissioner, Government of India, New Delhi

ii) संचालक, जनगणना कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई.

ii) Director of Census Operations, Maharashtra, Mumbai.

राष्ट्राची आर्थिक पाहणी २००४-०५

ECONOMIC SURVEY OF MAHARASHTRA 2004-05

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 3

महाराष्ट्र राज्याचे नमुना नोंदणी पाहणीवर आधारलेले जन्म दर, मृत्यू दर व बालमृत्यू दर
BIRTH RATE, DEATH RATE AND INFANT MORTALITY RATES BASED ON
SAMPLE REGISTRATION SCHEME, MAHARASHTRA STATE

| वर्ष Year (1) | ग्रामीण / Rural | | | नागरी / Urban | | | एकत्र / Combined | | |
|---------------------|---------------------------------|-----------------------------------|--|---------------------------------|-----------------------------------|--|---------------------------------|-----------------------------------|---|
| | जन्म दर Birth rate (2) | मृत्यू दर Death rate (3) | बालमृत्यू दर Infant mortality rate (4) | जन्म दर Birth rate (5) | मृत्यू दर Death rate (6) | बालमृत्यू दर Infant mortality rate (7) | जन्म दर Birth rate (8) | मृत्यू दर Death rate (9) | बालमृत्यू दर Infant mortality rate (10) |
| 1971 | 33.7 (38.9) | 13.5 (16.4) | 111 (138) | 29.0 (30.1) | 9.7 (9.7) | 88 (82) | 32.2 (36.9) | 12.3 (14.9) | 105 (129) |
| 1981 | 30.4 (35.6) | 10.6 (13.7) | 90 (119) | 24.5 (27.0) | 7.4 (7.8) | 49 (62) | 28.5 (33.9) | 9.6 (12.5) | 79 (110) |
| 1985 | 29.8 (34.3) | 9.4 (13.0) | 78 (107) | 27.7 (28.1) | 6.7 (7.8) | 49 (59) | 29.0 (32.9) | 8.4 (11.8) | 68 (97) |
| 1986 | 31.7 (34.2) | 9.7 (12.2) | 73 (105) | 27.4 (27.1) | 6.1 (7.6) | 44 (62) | 30.1 (32.6) | 8.4 (11.1) | 63 (96) |
| 1987 | 30.2 (33.7) | 9.5 (12.0) | 76 (104) | 26.6 (27.4) | 6.1 (7.4) | 47 (61) | 28.9 (32.2) | 8.3 (10.9) | 66 (95) |
| 1988 | 31.4 (33.1) | 10.1 (12.0) | 76 (102) | 25.8 (26.3) | 6.7 (7.7) | 50 (62) | 29.4 (31.5) | 8.9 (11.0) | 68 (94) |
| 1989 | 30.6 (32.2) | 8.9 (11.1) | 66 (98) | 24.6 (25.2) | 6.3 (7.2) | 44 (58) | 28.5 (30.6) | 8.0 (10.3) | 59 (91) |
| 1990 | 29.5 (31.7) | 8.5 (10.5) | 64 (86) | 23.8 (24.7) | 5.4 (6.8) | 44 (50) | 27.5 (30.2) | 7.4 (9.7) | 58 (80) |
| 1991* | 28.0 (30.9) | 9.3 (10.6) | 69 (87) | 22.9 (24.3) | 6.2 (7.1) | 38 (53) | 26.2 (29.5) | 8.2 (9.8) | 60 (80) |
| 1992* | 27.4 (30.9) | 9.1 (10.9) | 67 (85) | 21.5 (23.1) | 5.6 (7.0) | 40 (53) | 25.3 (29.2) | 7.9 (10.1) | 59 (79) |
| 1993* | 27.1 (30.4) | 9.3 (10.6) | 63 (82) | 22.8 (23.7) | 4.8 (5.8) | 32 (45) | 25.2 (28.7) | 7.3 (9.3) | 50 (74) |
| 1994* | 26.9 (30.5) | 9.2 (10.1) | 68 (80) | 23.0 (23.1) | 5.6 (6.7) | 38 (52) | 25.1 (28.7) | 7.5 (9.3) | 55 (74) |
| 1995* | 26.0 (30.0) | 8.9 (9.8) | 66 (80) | 22.4 (22.7) | 5.4 (6.6) | 34 (48) | 24.5 (28.3) | 7.5 (9.0) | 55 (74) |
| 1996* | 24.9 (29.3) | 8.7 (9.7) | 58 (77) | 21.0 (21.6) | 5.4 (6.5) | 31 (46) | 23.4 (27.5) | 7.4 (9.0) | 48 (72) |
| 1997* | 24.4 (28.9) | 8.6 (9.6) | 56 (77) | 21.0 (21.5) | 5.4 (6.5) | 31 (45) | 23.1 (27.2) | 7.3 (8.9) | 47 (71) |
| 1998* | 23.6 (28.0) | 8.9 (9.7) | 58 (77) | 20.8 (21.1) | 5.8 (6.6) | 32 (45) | 22.5 (26.5) | 7.7 (9.0) | 49 (72) |
| 1999* | 21.6 (27.6) | 8.7 (9.4) | 58 (75) | 20.3 (20.8) | 5.6 (6.3) | 31 (44) | 21.1 (26.1) | 7.5 (8.7) | 48 (70) |
| 2000 | 21.4 (27.6) | 8.6 (9.3) | 56 (74) | 20.4 (20.7) | 5.8 (6.3) | 33 (44) | 21.0 (25.8) | 7.5 (8.5) | 48 (68) |
| 2001 | 21.1 (27.1) | 8.5 (9.1) | 55 (72) | 20.2 (20.3) | 5.9 (6.3) | 28 (42) | 20.7 (25.4) | 7.5 (8.4) | 45 (66) |
| 2002# | 20.6 (26.6) | 8.3 (8.7) | 52 (69) | 19.8 (20.0) | 5.6 (6.1) | 34 (40) | 20.3 (25.0) | 7.3 (8.1) | 45 (63) |

टीप/Note - (१) कंसातील आकडे भारताकरिता आहेत.

Bracketed figures are for India.

(२) * जम्मू व काश्मीर आणि १९९५ करिता मिझोराम सह वगळून/

* Excludes Jammu & Kashmir and for 1995 Mizoram also.

(५) # नागालँड (ग्रामीण) वगळून

Excludes Nagaland (Rural)

आधार - नमुना नोंदणी पत्रिका, महानिबंधक, भारत सरकार, नवी दिल्ली.

Source - Sample Registration Bulletin, Registrar General of India, New Delhi.

महाराष्ट्राची आर्थिक पाहणी २००४-०५

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 4
काम करणाऱ्या लोकांची १९९१ जनगणनेनुसार आर्थिक वर्गवारी
ECONOMIC CLASSIFICATION OF WORKERS AS PER
POPULATION CENSUS 1991

(हजारत/In thousand)

| काम करणाऱ्यांचा वर्ग (1) | महाराष्ट्र † Maharashtra | | | भारत India | | | Class of workers (1) |
|--|-----------------------------|----------------------------|----------------------|-----------------------|----------------------------|----------------------|---|
| | पुरुष Males (2) | स्त्रिया Females (3) | एकूण Total (4) | पुरुष Males (5) | स्त्रिया Females (6) | एकूण Total (7) | |
| 1 शेतकरी | 6,231 | 3,941 | 10,172 | 88,481 | 22,221 | 1,10,702 | Cultivators |
| 2 शेतमजूर | 3,906 | 4,408 | 8,313 | 46,165 | 28,433 | 74,598 | Agricultural labourers |
| 3 पशुसंवर्धन, जंगलकाम, मच्छिमारी, शिकार, मळे, फळबागा आणि संलग्न कामे | 404 | 68 | 472 | 4,716 | 1,325 | 6,041 | Livestock, forestry, fishing, hunting and plantations, orchards and allied activities |
| 4 खाणकाम आणि दगड खाणकाम | 98 | 17 | 115 | 1,537 | 214 | 1,751 | Mining and quarrying |
| 5 वस्तुनिर्माण, प्रक्रिया, संधारण व दुरुस्ती | | | | | | | Manufacturing, processing, servicing and repairs— |
| (अ) घरगुती उद्योग | 337 | 162 | 498 | 4,555 | 2,249 | 6,804 | (a) Household industry |
| (ब) घरगुती उद्योगाव्यतिरिक्त इतर उद्योग | 3,251 | 347 | 3,598 | 19,414 | 2,453 | 21,867 | (b) Other than household industry |
| 6 बांधकाम | 709 | 93 | 802 | 5,122 | 421 | 5,543 | Construction |
| 7 व्यापार आणि वाणिज्य | 2,400 | 256 | 2,657 | 19,863 | 1,434 | 21,296 | Trade and Commerce |
| 8 वाहतूक, साठवण आणि दळणवळण | 1,116 | 45 | 1,160 | 7,810 | 208 | 8,018 | Transport, storage and communications |
| 9 इतर सेवा | 2,468 | 751 | 3,219 | 23,995 | 5,316 | 29,312 | Other services |
| (अ) एकूण मुख्यतः काम करणारे (१ ते ९) | 20,919 | 10,088 | 31,006 | 2,21,659 | 64,274 | 2,85,932 | (a) Total main workers (1 to 9) |
| (ब) सिमांतिक कामगार | 374 | 2,530 | 2,904 | 2,705 | 25,494 | 28,199 | (b) Marginal workers |
| (क) एकूण काम न करणारे | 19,525 | 25,486 | 45,011 | 2,10,844 | 3,13,592 | 5,24,437 | (c) Total non-workers |
| एकूण (अ + ब + क) | 40,817 | 38,104 | 78,921 | 4,35,208 | 4,03,360 | * 8,38,568 | Total (A + B + C) |

* जम्मू व काश्मीर वगळून/Excluding Jammu and Kashmir

† धुळे जिल्ह्यातील ३३ गावांची, जेथे गणना घेतली नाही, माहिती वगळून/
Excluding information of 33 villages of Dhule District, where Census was not conducted.

टीप - आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही

Note - Figures may not add up to totals due to rounding

आधार - i) महानिबंधक व गणना आयुक्त, भारत सरकार, नवी दिल्ली

ii) संचालक, जनगणना कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई

Source - i) Registrar General and Census Commissioner, Government of India, New Delhi

ii) Director of Census Operations, Maharashtra, Mumbai

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 5
महाराष्ट्र राज्यातील कृषि क्षेत्रावरील करांपासून महसुली जमा
REVENUE RECEIPTS FROM TAXES ON AGRICULTURE SECTOR IN MAHARASHTRA STATE

(रुपये लाखात/Rs. in lakh)

| अनुक्रमांक Sr. No | तपशील (2) | 1980-81 (3) | 1985-86 (4) | 1990-91 (5) | 1995-96 (6) | 2000-01 (7) | 2002-03 (8) | 2003-04 (R/E) (9) | 2004-05 (B/E) (10) | Particulars (2) |
|----------------------|---|-----------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|-------------------------|--------------------------|--|
| 1 | कृषि उत्पन्नावरील कर | 23.08 | 8.68 | 0.64 | 0.01 | ... | ... | ... | ... | Taxes on agricultural income |
| 2 | जमीन महसूल/कर-सर्वासाधारण वसुली | 852.77 | 1,225.11 | 2,543.38 | 3,791.55 | 6,417.57 | 9,262.29 | 10,114.00 | 11,588.00 | Land revenue/tax-ordinary collections. |
| 3 | महाराष्ट्र कर (सुधारणा) अधिनियम, १९७५ अन्वये फेरबदल केलेल्या महाराष्ट्र जमीन महसूल व विशेष आकारणी यामध्ये वाढ करणयाबाबत अधिनियम, १९७४ च्या कलम ३ नुसार जमीन महसुलातील वाढ | 38.41 | ... | ... | ... | ... | ... | ... | ... | Increase in land revenue under Sec 3 of Maharashtra Increase of Land Revenue and Special Assessment Act, 1974 as modified by Maharashtra Tax (Amendment) Act, 1975 |
| 4 | रोजगार हमी योजनेकरिता जमीन महसुलातील वाढ | 43.12 | 221.69 | 186.99 | 224.05 | 374.86 | 403.54 | 591.00 | 685.00 | Increase in land revenue for Employment Guarantee Scheme. |
| 5 | जमिनीवरील पट्टी व उपकर | 356.08 | 1,082.52 | 1,115.45 | 4,314.40 | 4,326.11 | 5,823.84 | 6,823.00 | 7,300.60 | Rates and cesses on land |
| 6 | ऊस खरेदीवरील कर | 1,775.53 | 3,363.45 | 3,892.98 | 5,366.61 | 9,415.54 | 2,484.45 | 500.00 | 16,000.00 | Tax on purchase of sugarcane |
| | | (+)0.36* | (+)15.00* | ... | ... | ... | ... | ... | ... | |
| 7 | ऊस (विनियमन, पुरवठा आणि खरेदी, नियंत्रण) अधिनियमाखालील जमा रकमा | ... | ... | ... | ... | ... | 56.38 | ... | ... | Receipts under sugarcane (Regulation, supply and purchase, control) Act. |
| 8 | शिक्षण उपकर अधिनियम- | ... | ... | ... | ... | ... | ... | ... | ... | Education Cess Act-- |
| | (अ) वाणिज्यिक पिकांखालील शेत जमिनीवरील विशेष आकारणी | 7.64 | 44.49 | 91.88 | 486.17 | 1,584.63 | 2,015.99 | 2,036.60 | 2,056.90 | (a) Special assessment on agricultural lands under commercial crops |
| | (ब) जलसिंचित कृषि जमिनीवरील रोजगार हमी उपकर | 78.35 | 53.72 | 39.14 | 192.41 | 310.11 | 521.94 | 527.00 | 532.30 | (b) Employment Guarantee Cess on irrigated agricultural lands |
| | (क) महाराष्ट्र जमीन महसूल व विशेष आकारणी अधिनियम, १९७४ खालील विशेष आकारणीत वाढ | 30.00 | 11.10 | 12.20 | 17.35 | 106.29 | 47.58 | 48.00 | 48.50 | (c) Increase in special assessment under Maharashtra Land Revenue and Special Assessment Act, 1974 |
| | एकूण | 3,205.34 | 6,025.76 | 7,882.66 | 14,392.55 | 22,535.11 | 20,616.01 | 20,639.60 | 38,211.30 | Total |

* अर्थसंकल्पीय शीर्ष ००४५, वस्तू व सेवा यावरील इतर कर व शुल्क या शीर्षाखालील जमा

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates.

आधार - वित्त विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

* Receipt under the budget head 0045, Other Taxes and Duties on commodities and Services.

B/E = अर्थसंकल्पीय अंदाज / Budget Estimates

Source - Finance Department, Government of Maharashtra, Mumbai.

महसुली व भांडवली लेखांवरील जमेतील कल
TRENDS IN RECEIPTS ON REVENUE AND CAPITAL ACCOUNTS

(रुपये कोटीत/Rs in crore)

| नाम (1) | 1980-81 प्रत्यक्ष रकमा Actuals (2) | 1990-91 प्रत्यक्ष रकमा Actuals (3) | 2000-01 प्रत्यक्ष रकमा Actuals (4) | 2002-03 प्रत्यक्ष रकमा Actuals (5) | 2003-04 सु.अं. (R/E) (6) | 2004-05 अ.अं. (B/E) (7) | Item (1) |
|---|---|---|---|---|-----------------------------------|----------------------------------|---|
| महसुली जमा | | | | | | | REVENUE RECEIPTS |
| (एक) कर महसूल (अ+ब) | 1,467 | 6,110 | 22,508 | 25,079 | 29,110 | 32,105 | (I) Tax Revenue (A+B) |
| (अ) केंद्रीय करातील हिस्सा | 336 | 990 | 2,781 | 2,265 | 3,037 | 3,643 | (A) Share in Central Taxes |
| (१) आयकर | 110 | 338 | 772 | 404 | 480 | 570 | (i) Income Tax |
| (२) संपदा शुल्क | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | (ii) Estate Duty |
| (३) केंद्रीय उत्पादन शुल्क | 224 | 652 | 869 | 793 | 965 | 1,136 | (iii) Union Excise Duties |
| (४) निगम कर | 0 | 0 | 487 | 498 | 830 | 1,049 | (iv) Corporation Tax |
| (५) संपत्ती कर | 0 | 0 | 2 | 1 | 1 | 1 | (v) Wealth Tax |
| (६) जकात | 0 | 0 | 620 | 506 | 646 | 700 | (vi) Customs |
| (७) सेवा कर | 0 | 0 | 31 | 63 | 115 | 187 | (vii) Service Tax |
| (ब) राज्याचा स्वतःचा कर महसूल- | 1,131 | 5,120 | 19,727 | 22,814 | 26,073 | 28,462 | (B) State's own Tax Revenue |
| (१) कृषि उत्पादनावरील कर | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | (i) Agriculture Income Tax |
| (२) जमीन महसूल | 16 | 62 | 215 | 386 | 338 | 379 | (ii) Land Revenue |
| (३) मुद्रांक व नोंदणी फी | 43 | 286 | 2,201 | 2,823 | 3,100 | 3,375 | (iii) Stamps and Registration Fees |
| (४) राज्य उत्पादन शुल्क | 89 | 542 | 1,779 | 1,939 | 2,300 | 2,600 | (iv) State Excise Duties |
| (५) विक्रीकर | 750 | 3,175 | 12,196 | 13,488 | 15,485 | 16,890 | (v) Sales Tax |
| (६) वाहनावरील कर | 51 | 204 | 786 | 941 | 1,025 | 1,155 | (vi) Taxes on Vehicles |
| (७) माल व उतारवरील कर | 18 | 202 | 100 | 245 | 665 | 710 | (vii) Tax on Goods and Passengers |
| (८) विद्युत शुल्क | 59 | 278 | 934 | 1,149 | 1,280 | 1,290 | (viii) Electricity Duty |
| (९) करमणूक कर | 45 | 71 | 0 | 0 | 0 | 0 | (ix) Entertainment Tax |
| (१०) उत्पन्न व खर्च यावरील इतर कर | 32 | 191 | 947 | 1,032 | 1,020 | 1,100 | (x) Other Taxes on Income & Expenditure |
| (११) विक्रेय वस्तु व सेवा यावरील इतर कर व शुल्क | 28 | 109 | 569 | 811 | 860 | 963 | (xi) Other Taxes & Duties on Commodities & Services |
| (दोन) कराव्यतिरिक्त महसूल- | 571 | 2,589 | 7,059 | 6,024 | 8,049 | 8,289 | (II) Non-Tax Revenue |
| (१) व्याजविषयक जमा रकमा | 99 | 658 | 3,162 | 1,777 | 596 | 545 | (i) Interest Receipts |
| (२) केंद्र शासनाकडून सहाय्यक अनुदाने | 134 | 795 | 1,463 | 1,506 | 4,274 | 3,548 | (ii) Grants-in-aid from Central Govt |
| (३) इतर कराव्यतिरिक्त महसूल | 338 | 1,136 | 2,434 | 2,741 | 3,179 | 4,196 | (iii) Other non-tax revenue |
| एकूण महसूली जमा (एक + दोन) | 2,038 | 8,699 | 29,567 | 31,103 | 37,159 | 40,394 | Total Revenue Receipts (I + II) |
| भांडवली जमा | | | | | | | CAPITAL RECEIPTS |
| (१) राज्य शासनाचे देशातर्गत ऋण* | 516 | 266 | 7,294 | 22,794 | 25,514 | 22,775 | (i) Internal Debt of the State Govt.* |
| (२) केंद्र शासनाकडून कर्जे व आगाऊ रकमा | 312 | 1,296 | 5,401 | 962 | 1,461 | 1,405 | (ii) Loans & Advances from Central Govt. |
| (३) राज्य शासनाचे दिलेली कर्जे व आगाऊ रकमा(वसुली) | 39 | 122 | 2,595 | 469 | 587 | 422 | (iii) Loans & Advances by the State Government (Recoveries) |
| (४) लोक लेखावरील निव्वळ जमा | 152 | 630 | 4,012 | 5,903 | 7,062 | 5,132 | (iv) Net Receipts on Public Account. |
| (५) इतर जमा (निव्वळ)‡ | (-) 18 | (-) 14 | (-) 38 | (-) 21 | 0 | 0 | (v) Other Receipts. (net)‡ |
| एकूण भांडवली जमा | 1,001 | 2,300 | 19,264 | 30,107 | 34,624 | 29,734 | Total Capital Receipts. |
| एकूण जमा (महसूली + भांडवली) | 3,039 | 10,999 | 48,831 | 61,210 | 71,783 | 70,128 | Total Receipts (Revenue + Capital) |

* अर्थोपाय व आगाऊ रकमा धरून

‡ यात 'आंतरराज्यीय तडजोड' (निव्वळ) आकस्मिकता निधीमध्ये केलेले विनियोजन (निव्वळ) आणि 'आकस्मिकता निधी' (निव्वळ) यांचा समावेश आहे.

आधार - संक्षिप्त अर्थसंकल्प, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

* Inclusive of ways & means advances.

‡ It comprises inter state settlement (net), appropriations to the contingency fund (net) and contingency fund (net).

Source - Budget-in-Brief, Government of Maharashtra, Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 7
महसुली व भांडवली लेखावरील खर्चातील कल
TRENDS IN EXPENDITURE ON REVENUE AND CAPITAL ACCOUNTS

(रुपये कोटीत/Rs. in crore)

| बाब (1) | 1980-81 प्रत्यक्षा Actuals (2) | 1990-91 प्रत्यक्षा Actuals (3) | 2000-01 प्रत्यक्षा Actuals (4) | 2001-02 प्रत्यक्षा Actuals (5) | 2002-03 प्रत्यक्षा Actuals (6) | 2003-04 सु.अ. (R/E) (7) | 2004-05 अ.अ. (B/E) (8) | Item (1) |
|---|---|---|---|---|---|----------------------------------|---------------------------------|--|
| महसुली खर्च | | | | | | | | REVENUE EXPENDITURE |
| (ए) विकास खर्च (अ+ब+क) | 1,435 | 5,616 | 22,699 | 20,551 | 22,527 | 25,315 | 23,937 | (A) Development Expenditure (a+b+c) |
| (अ) सामाजिक सेवा (१ ते ८) | 678 | 3,024 | 14,351 | 14,137 | 14,218 | 16,802 | 16,376 | (a) Social Services (1 to 8) |
| (१) शिक्षण, क्रिडा, कला व संस्कृती | 381 | 1,694 | 9,409 | 9,382 | 8,937 | 9,377 | 9,287 | (1) Education, Sport, Art & Culture |
| (२) आरोग्य व कुटुंब कल्याण | 162 | 477 | 1,595 | 1,784 | 1,656 | 1,914 | 1,878 | (2) Health & Family Welfare |
| (३) पाणीपुरवठा, स्वच्छता, गृहनिर्माण व नगरविकास | 38 | 388 | 1,443 | 988 | 1,480 | 2,461 | 2,253 | (3) Water Supply Sanit. Housing and Urban Development |
| (४) माहिती व ध्वनी प्रसारण | 4 | 11 | 19 | 17 | 19 | 21 | 20 | (4) Information & Broadcasting |
| (५) अ.जा.अ.ज. व इ.मा.व. यांचे कल्याण | 0 | 139 | 753 | 730 | 831 | 1,315 | 1,191 | (5) Welfare of SC ST. & OBC |
| (६) कामगार व कामगार कल्याण | 13 | 58 | 213 | 182 | 189 | 203 | 229 | (6) Labour and Labour Welfare |
| (७) समाज कल्याण व पोषण आहार | 49 | 247 | 892 | 1,031 | 1,079 | 1,477 | 1,489 | (7) Social Welfare and Nutrition |
| (८) इतर | 31 | 10 | 27 | 23 | 27 | 34 | 29 | (8) Others |
| (ब) आर्थिक सेवा (१ ते ९) | 749 | 2,560 | 7,656 | 5,876 | 7,635 | 7,419 | 6,905 | (b) Economic Services (1 to 9) |
| (१) कृषि व संलग्न सेवा | 322 | 1,163 | 2,626 | 2,392 | 2,651 | 2,329 | 2,331 | (1) Agriculture and Allied activities |
| (२) ग्राम विकास | 0 | 259 | 507 | 522 | 905 | 2,571 | 2,440 | (2) Rural Development |
| (३) विशेष क्षेत्र कार्यक्रम | 0 | 13 | 46 | 35 | 53 | 56 | 60 | (3) Special Area Programme |
| (४) पाटबंधारे व पूर नियंत्रण | 166 | 642 | 1,858 | 1,874 | 1,811 | 325 | 295 | (4) Irrigation and Flood control |
| (५) ऊर्जा | 0 | 87 | 2,405 | 723 | 759 | 1,065 | 1,175 | (5) Energy |
| (६) उद्योग व खनिजे | 5 | 78 | 39 | 133 | 226 | 540 | 188 | (6) Industry and Minerals. |
| (७) वाहतूक | 83 | 14 | 46 | 74 | 997 | 259 | 94 | (7) Transport |
| (८) सर्वसाधारण आर्थिक सेवा | 173 | 302 | 120 | 122 | 226 | 243 | 302 | (8) General Economic Services |
| (९) विज्ञान, तंत्रशास्त्र व पर्यावरण | 0 | 2 | 9 | 1 | 7 | 31 | 20 | (9) Science, Technology & Environment |
| (क) स्थानिक संस्था आणि पंचायत राज्य संस्था यांना सहायक अनुदाने व अंशदाने | 8 | 32 | 692 | 538 | 674 | 1,094 | 656 | (c) Grants-in-Aid & contributions to Local Bodies & P.R. Institutions |
| (बी) विकासेतर खर्च (अ+ब) | 482 | 3,138 | 14,702 | 17,730 | 17,947 | 20,880 | 26,208 | (B) Non-Development Expenditure (a+b) |
| (अ) सर्वसाधारण सेवा (१ ते ५) | 328 | 1,944 | 9,343 | 11,168 | 10,661 | 12,178 | 15,888 | (a) General Services (1 to 5) |
| (१) राज्यांची अंणे | 21 | 74 | 306 | 296 | 325 | 413 | 492 | (1) Organs of State |
| (२) करवसुली खर्च | 53 | 147 | 409 | 1,085 | 345 | 562 | 621 | (2) Collection Charges |
| (३) प्रशासकीय सेवा | 209 | 837 | 3,394 | 3,334 | 3,152 | 3,592 | 4,417 | (3) Administrative Services |
| (४) निवृत्ती वेतने आणि संकीर्ण सर्वसाधारण सेवा | 45 | 327 | 2,156 | 2,716 | 2,802 | 3,408 | 5,888 | (4) Pensions and Miscellaneous General Services |
| (५) राखीव निधीकडे हस्तांतरण | 0 | 559 | 3,078 | 3,737 | 4,037 | 4,203 | 4,470 | (5) Transfer to Reserve Funds |
| (ब) व्याज प्रदान व ऋण सेवा | 154 | 1,194 | 5,359 | 6,562 | 7,286 | 8,702 | 10,320 | (b) Intrest Payments and Servicing of Debt. |
| ॥॥॥ एकूण महसुली खर्च (ए+बी) | 1,917 | 8,754 | 37,401 | 38,981 | 40,474 | 46,195 | 50,145 | Total Revenue Expenditure (A+B) |

| बाब | 1980-81 प्रत्यक्ष Actuals | 1990-91 प्रत्यक्ष Actuals | 2000-01 प्रत्यक्ष Actuals | 2001-02 प्रत्यक्ष Actuals | 2002-03 प्रत्यक्ष Actuals | 2003-04 सु.अं. (R/E) | 2004-05 अ.अं. (B/E) | Item |
|---|---------------------------------|---------------------------------|---------------------------------|---------------------------------|---------------------------------|----------------------------|---------------------------|--|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (1) |
| भांडवली खर्च | | | | | | | | |
| (ए) विकास खर्च (अ+ब) | 623 | 1,678 | 3,737 | 3,007 | 5,388 | 11,027 | 5,430 | (A) Development Expenditure (a+b) |
| (अ) महसुली लेखाबाहेरील भांडवली खर्च | 348 | 964 | 4,463 | 2,948 | 3,684 | 9,688 | 3,700 | (a) Capital Expenditure outside the Revenue Account |
| (ब) राज्य शासनाने दिलेली कर्जे व आगाऊ रक्कम | 275 | 714 | (-) 726 | 59 | 1,704 | 1,339 | 1,730 | (b) Loans and Advances given by the State Government |
| (बी) विकासेतर खर्च (अ+ब) | 554 | 341 | 7,022 | 13,623 | 15,353 | 15,383 | 15,697 | (B) Non-Development Expenditure(a+b) |
| सरकारी ऋणाची परतफेड | | | | | | | | |
| (अ) राज्य शासनाचे देशांतर्गत ऋण | 508 | 60 | 6,161 | 12,662 | 14,231 | 10,438 | 14,139 | (a) Internal Debt of the State Government |
| (ब) केंद्र शासनाकडून घेतलेली कर्जे व आगाऊ रक्कम | 46 | 281 | 861 | 961 | 1,122 | 4,945 | 1,558 | (b) Loans & Advances from Central Govt. |
| एकूण भांडवली खर्च (ए+बी) | 1,177 | 2,019 | 10,759 | 16,630 | 20,741 | 26,410 | 21,127 | Total Capital Expenditure (A+B) |
| एकूण खर्च (महसुली + भांडवली) | 3,094 | 10,773 | 48,160 | 54,911 | 61,215 | 72,605 | 71,272 | Total Expenditure (Revenue + Capital) |

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates.
आधार - संक्षिप्त अर्थसंकल्प, महाराष्ट्र शासन

B/E = अर्थसंकल्पीय अंदाज / Budget Estimates.
Source - Budget-in-Brief, Government of Maharashtra.

तक्ता क्रमांक,
महाराष्ट्र राज्य शासनाच्या अर्थसंकल्पाने

ECONOMIC AND PURPOSE CLASSIFICATION OF

| आर्थिक वर्गीकरण (1) | सर्वसाधारण सेवा General Services | | | सामाजिक आणि सामूहिक सेवा Social and Community Services | | |
|----------------------------------|-------------------------------------|------------------------------|-----------------------------|---|------------------------------|-----------------------------|
| | 2002-03 (प्रत्यक्ष) (Actuals) | 2003-04 (सु.अं.) (R/E) | 2004-05 (अ.अं.) (B/E) | 2002-03 (प्रत्यक्ष) (Actuals) | 2003-04 (सु.अं.) (R/E) | 2004-05 (अ.अं.) (B/E) |
| | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) |
| १ चालू खर्च-- | | | | | | |
| (अ) सेवा व वस्तू | 4,414 | 5,253 | 8,519 | 2,549 | 3,114 | 3,088 |
| (ब) व्याज प्रदान | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| (क) अनुदाने | 1,112 | 1,518 | 1,138 | 11,009 | 12,083 | 11,566 |
| (ड) इतर चालू खर्च | 200 | 433 | 780 | 475 | 754 | 881 |
| एकूण-(१) | 5,726 | 7,204 | 10,437 | 14,033 | 15,951 | 15,535 |
| २ भांडवली खर्च-- | | | | | | |
| २.१(अ) एकूण भांडवल निर्मिती | 141 | 299 | 192 | 553 | 990 | 817 |
| (ब) भांडवली अनुदाने | 106 | 120 | 166 | 237 | 408 | 234 |
| (क) भाग भांडवलात केलेली गुंतवणूक | 0 | 0 | 0 | 10 | 45 | 74 |
| (ड) कर्ज | 55 | 28 | 27 | 229 | 299 | 355 |
| (इ) इतर भांडवली हस्तांतरित रकमा | (-) 14 | (-) 27 | (-) 30 | 21 | 14 | 22 |
| उपबेरीज - (२.१) | 288 | 420 | 355 | 1,050 | 1,756 | 1,502 |
| २.२ ऋणाची परतफेड | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| एकूण-(२) | 288 | 420 | 355 | 1,050 | 1,756 | 1,502 |
| एकूण-(१+२) | 6,014 | 7,624 | 10,792 | 15,083 | 17,707 | 17,037 |

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates.

- टीप -** (१) १९८३-८४ पर्यंतच्या आर्थिक पाहणीच्या प्रकाशनात प्रसिद्ध केलेल्या उद्देशानुसार वर्गीकरणात व येथे सादर केलेल्या वर्गीकरणात थोडा फरक आहे.
- (२) सर्वसाधारण सेवेत प्रशासनिक व न्यायदान, कायदा व सुव्यवस्था, करवसुलीविषयक सेवा व इतर सर्वसाधारण सेवा यांचा अंतर्भाव होतो.
- (३) सामाजिक व सामूहिक सेवेत मूलभूत सामाजिक सेवा उदा. शिक्षण, सार्वजनिक आरोग्य, कुटुंबकल्याण, वैद्यकीय सोयी, मागासवर्गीयांचे कल्याण व इतर सामाजिक सेवा उदा. सामाजिक सुरक्षा व कल्याण कार्यक्रम व करमणूक, सार्वजनिक उद्यान इत्यादी बाबतीतील सेवांचा समावेश होतो.
- (४) आर्थिक सेवेत कृषि, लघु पाटबंधारे, मृद संधारण, क्षेत्र विकास, पशुसंवर्धन, दुग्ध व कुक्कुट विकास, वन, शिकार व मत्स्यव्यवसाय, जल व वीज विकास, उद्योग खनिजे, परिवहन व दळणवळण, सहकार इत्यादि विषयक सेवा या कार्यक्रमांचा अंतर्भाव होतो.
- (५) इतर सेवा या सदरात आपत्तीच्या निवारणासाठी केलेला खर्च, जमिनीची कमालमर्यादा, जमीनदारी पद्धती निर्मूलनामुळे भूधारकांना नुकसान भरपाई, सरकारी ऋणावरील व्याज प्रदान, सरकारी ऋण व्यवहार इत्यादींचा समावेश होतो.

आधार - राज्य अर्थसंकल्पाचे आर्थिक व उद्देशानुसार वर्गीकरण.

TABLE No. 8

आर्थिक व उद्देशानुसार वर्गीकरण

MAHARASHTRA STATE GOVERNMENT BUDGET

(रुपये कोटीत/Rs. in Crores)

| वर्गीकरण Classification | | | | | | | | | |
|--|-------------------------------------|-------------------------------------|---|--------------------------------------|-------------------------------------|---|--------------------------------------|-------------------------------------|--|
| आर्थिक सेवा Economic Services | | | इतर सेवा Other Services | | | एकूण Total | | | |
| 2002-03 (प्रत्यक्ष) (Actuals) (8) | 2003-04 (सु.अं.) (R/E) (9) | 2004-05 (अ.अं.) (B/E) (10) | 2002-03 (प्रत्यक्ष) (Actuals) (11) | 2003-04 (सु.अं.) (R/E) (12) | 2004-05 (अ.अं.) (B/E) (13) | 2002-03 (प्रत्यक्ष) (Actuals) (14) | 2003-04 (सु.अं.) (R/E) (15) | 2004-05 (अ.अं.) (B/E) (16) | Economic Classification (1) |
| 2,986 | 3,574 | 3,295 | 675 | 677 | 752 | 10,624 | 12,618 | 15,654 ... | 1. Current Expenditure |
| 0 | 0 | 0 | 5,605 | 8,498 | 10,095 | 5,605 | 8,498 | 10,095 ... | (a) Consumption expenditure |
| 904 | 1,225 | 1,572 | 920 | 333 | 294 | 13,945 | 15,159 | 14,570 ... | (b) Interest payments |
| 2,070 | 917 | 487 | 36 | 47 | 121 | 2,781 | 2,151 | 2,269 ... | (c) Grants |
| | | | | | | | | | (d) Other current expenditure |
| 5,960 | 5,716 | 5,354 | 7,236 | 9,555 | 11,262 | 32,955 | 38,426 | 42,588 | ... Total—(1) |
| | | | | | | | | | 2. Capital Expenditure -- |
| 3,817 | 8,517 | 3,809 | (-) 61 | (-) 75 | (-) 71 | 4,450 | 9,761 | 4,747 | 2.1 (a) Gross capital formation |
| 1,161 | 1,773 | 1,732 | 0 | 0 | 0 | 1,504 | 2,301 | 2,132 | (b) Capital grants |
| 335 | 2,708 | 1,521 | 1 | 0 | 0 | 346 | 2,753 | 1,595 | (c) Investment in shares |
| 1,418 | 1,010 | 1,346 | 1 | 1 | 1 | 1,703 | 1,338 | 1,729 ... | (d) Loans |
| 52 | 31 | 36 | 8 | 2 | 14 | 67 | 20 | 42 ... | (e) Other capital transfers |
| 6,783 | 14,069 | 8,444 | (-) 51 | (-) 72 | (-) 56 | 8,070 | 16,173 | 10,245 ... | Sub-total - 2.1 |
| 0 | 0 | 0 | 15,353 | 15,383 | 15,698 | 15,353 | 15,383 | 15,698 ... | 2.2 Repayment of Debt |
| 6,783 | 14,069 | 8,444 | 15,302 | 15,311 | 15,642 | 23,423 | 31,556 | 25,943 | ... Total - (2) |
| 12,743 | 19,785 | 13,798 | 22,538 | 24,866 | 26,904 | 56,378 | 69,982 | 68,531 | ... Grand Total - (1+2) |

B/E = अर्थसंकल्पिय अंदाज / Budget Estimates.

- Note** - (1) The purpose classification presented here slightly differs from those published in the Economic Survey upto 1983-84.
- (2) General services cover the services which are administrative and judiciary, those related to the maintenance of law and order and the tax collection and other general services
- (3) Social and community services cover the basic social services like education, public health, family welfare, medical facilities, backward class welfare and other social services like social security and welfare activities, recreation, public gardens etc.
- (4) Economic services cover the services like agriculture, minor irrigation, soil conservation, area development, animal husbandry, dairy and poultry development, forests, hunting and fisheries, water and power development, industry and minerals, transport and communications, co-operative activities etc.
- (5) Other services cover the outlay in connection with relief on calamities, land ceiling, compensation to land owners on abolition of Zamindari system, payment of interest on public debt, public debt transactions etc.

Source - Economic and purpose classification of State Budgets.

महाराष्ट्र राज्य शासनाचा अर्थसंकल्पीय जमा व खर्च

BUDGETARY RECEIPTS AND EXPENDITURES OF MAHARASHTRA STATE GOVERNMENT

(रुपये कोटीत/Rs. in crore)

| बाब (1) | 1990-91 (Actuals) प्रत्यक्षा (2) | 2000-01 (Actuals) प्रत्यक्षा (3) | 2002-03 (Actuals) प्रत्यक्षा (4) | 2003-04 (R/E) (सु.अ.) (5) | 2004-05 (B/E) (अ.अ.) (6) | Item (1) |
|--|---|---|---|------------------------------------|-----------------------------------|--|
| 1. महसुली जमा (अ + ब) | 8,699.02 | 29,566.92 | 31,103.05 | 37,158.92 | 40,393.80 | Revenue Receipts (a+b) |
| अ) कर महसूल | 6,109.56 | 22,507.94 | 25,079.42 | 29,110.92 | 32,105.65 | a) Tax Revenue |
| ब) कराव्यतिरिक्त महसूल | 2,589.46 | 7,058.98 | 6,023.63 | 8,048.00 | 8,288.15 | b) Non-Tax Revenue |
| 2. महसुली खर्च | 8,753.67 | 37,400.96 | 40,474.30 | 46,195.49 | 50,144.88 | Revenue Expenditure |
| त्यापेकी | | | | | | of which, Expenditure on -- |
| अ) व्याज प्रदान | 880.77 | 5,224.54 | 7,285.96 | 8,702.32 | 10,320.06 | a) Interest Payments |
| ब) प्रशासकीय सेवा | 719.93 | 3,394.53 | 3,152.03 | 3,592.31 | 4,416.64 | b) Administrative Services |
| क) निवृत्ती वेतन आणि संकीर्ण सर्वसाधारण सेवा | 326.67 | 2,155.78 | 2,801.91 | 3,407.91 | 5,888.16 | c) Pensions & Misc. gen. Services |
| 3. महसुली तूट (2 - 1) | 54.65 | 7,834.04 | 9,371.25 | 9,036.57 | 9,751.08 | Revenue Deficit (2 - 1) |
| 4. निव्वळ भांडवली जमा | 1,959.73 | 12,242.47 | 14,754.25 | 19,241.44 | 14,036.64 | Net Capital Receipts |
| त्यापेकी | | | | | | of which, Receipts on -- |
| अ) कर्जाची वसुली | 122.01 | 2,595.20 | 469.16 | 586.84 | 422.53 | a) Recovery of loans |
| ब) इतर भांडवली जमा | (-) 169.70 | 399.90 | (-) 591.44 | 1,016.71 | (-) 500.00 | b) Other capital receipts |
| क) कर्ज व इतर दायित्व | 2,007.42 | 9,247.37 | 14,876.53 | 17,637.89 | 14,114.11 | c) Borrowings & Other Liabilities |
| 5. भांडवली खर्च | 1,678.25 | 3,736.97 | 5,387.76 | 11,027.00 | 5,429.75 | Capital Expenditure |
| 6. एकूण खर्च (2 + 5) | 10,431.92 | 41,137.93 | 45,862.06 | 57,222.49 | 55,574.63 | Total Expenditure (2 + 5) |
| त्यापेकी | | | | | | of which, |
| अ) योजनांतर्गत खर्च | 2,675.29 | 6,934.03 | 5,167.36 | 10,903.93 | 5,647.84 | a) Plan Expenditure |
| ब) योजनेतर खर्च | 7,756.63 | 34,203.90 | 40,694.70 | 46,318.56 | 49,926.79 | b) Non - Plan Expenditure |
| 7. राजकोषीय तूट (2 + 5 - 1 - 4 + 4क) | 1,780.59 | 8,575.91 | 14,881.29 | 18,460.02 | 15,258.30 | Fiscal Deficit (2 + 5 - 1 - 4 + 4C) |
| 8. प्राथमिक तूट (7 - 2अ) | 899.82 | 3,351.37 | 7,595.33 | 9,757.70 | 4,938.24 | Primary Deficit (7 - 2a) |

स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी / As per cent of G.S.D.P.

| | | | | | | |
|--|---------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|--|
| 1. महसुली जमा (अ + ब) | 12.9 | 12.4 | 10.5 | 11.2 | 10.7 | Revenue Receipts (a + b) |
| अ) कर महसूल | 9.1 | 9.4 | 8.5 | 8.7 | 8.5 | a) Tax Revenue |
| ब) कराव्यतिरिक्त महसूल | 3.8 | 3.0 | 2.0 | 2.4 | 2.2 | b) Non - Tax Revenue |
| 2. महसुली खर्च | 13.0 | 15.7 | 13.7 | 13.9 | 13.2 | Revenue Expenditure |
| त्यापेकी | | | | | | of which, Expenditure on -- |
| अ) व्याज प्रदान | 1.3 | 2.2 | 2.5 | 2.6 | 2.7 | a) Interest Payments |
| ब) प्रशासकीय सेवा | 1.1 | 1.4 | 1.1 | 1.1 | 1.2 | b) Administrative Services |
| क) निवृत्ती वेतन आणि संकीर्ण सर्वसाधारण सेवा | 0.5 | 0.9 | 0.9 | 1.0 | 1.6 | c) Pensions & Misc. gen. Services |
| 3. महसुली तूट (2 - 1) | 0.1 | 3.3 | 3.2 | 2.7 | 2.6 | Revenue Deficit (2 - 1) |
| 4. निव्वळ भांडवली जमा | 2.9 | 5.1 | 5.0 | 5.8 | 3.7 | Net Capital Receipts |
| त्यापेकी | | | | | | of which, Receipts on -- |
| अ) कर्जाची वसुली | 0.2 | 1.1 | 0.2 | 0.2 | 0.1 | a) Recovery of loans |
| ब) इतर भांडवली जमा | (-) 0.3 | 0.2 | (-) 0.2 | 0.3 | (-) 0.1 | b) Other capital receipts |
| क) कर्ज व इतर दायित्व | 3.0 | 3.9 | 5.0 | 5.3 | 3.7 | c) Borrowings & Other Liabilities |
| 5. भांडवली खर्च | 2.5 | 1.6 | 1.8 | 3.3 | 1.4 | Capital Expenditure |
| 6. एकूण खर्च (2 + 5) | 15.5 | 17.2 | 15.5 | 17.2 | 14.7 | Total Expenditure (2 + 5) |
| त्यापेकी | | | | | | of which, |
| अ) योजनांतर्गत खर्च | 4.0 | 2.9 | 1.7 | 3.3 | 1.5 | a) Plan Expenditure |
| ब) योजनेतर खर्च | 11.5 | 14.3 | 13.8 | 13.9 | 13.2 | b) Non - Plan Expenditure |
| 7. राजकोषीय तूट (2 + 5 - 1 - 4 + 4क) | 2.6 | 3.6 | 5.0 | 5.5 | 4.0 | Fiscal Deficit (2 + 5 - 1 - 4 + 4C) |
| 8. प्राथमिक तूट (7 - 2अ) | 1.3 | 1.4 | 2.6 | 2.9 | 1.3 | Primary Deficit (7 - 2a) |
| महाराष्ट्र राज्याचे स्थूल राज्य उत्पन्न | 67,278 | 2,38,672 | 2,95,525 | 3,33,145 | 3,78,985 | G.S.D.P. of Maharashtra State |

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates.

आधार - राज्य अर्थसंकल्प

B/E = अर्थसंकल्पीय अंदाज / Budget Estimates.

Source - State Budgets.

राज्य शासनाची भांडवल निर्मिती व त्यासाठी वित्तीय सहाय्य

THE CAPITAL FORMATION BY STATE GOVERNMENT AND ITS FINANCING

(रुपये कोटीत / Rs. in crore)

| बाब | 2000-01 (Actuals) प्रत्यक्ष (2) | 2001-02 (Actuals) प्रत्यक्ष (3) | 2002-03 (Actuals) प्रत्यक्ष (4) | 2003-04 (R/E) (सु.अं.) (5) | 2004-05 (B/E) (अ.अं.) (6) | Item (1) |
|---|--|--|--|-------------------------------------|------------------------------------|---|
| 1. राज्य शासनाची एकूण भांडवल निर्मिती | 3,119.50 | 3,264.15 | 4,450.80 | 9,760.36 | 4,746.82 | Gross capital formation by the State Government |
| 2. उर्वरित अर्थव्यवस्थेस भांडवल निर्मितीकरिता वित्तीय सहाय्य (अ+ब+क+ड) | 6,407.59 | 2,996.08 | 2,618.78 | 5,674.20 | 4,735.23 | Financial assistance for capital formation to the rest of economy (a+b+c+d) |
| अ) भांडवली अनुदाने | 3,543.57 | 1,518.03 | 1,503.85 | 2,301.29 | 2,132.09 | a) Capital Grants |
| ब) इतर हस्तांतरित भांडवली रकमा | 58.67 | 41.88 | 77.10 | 45.23 | 68.82 | b) Other capital transfers |
| क) भांडवल निर्मितीसाठी कर्जे | 580.08 | 1,000.78 | 692.52 | 574.77 | 938.73 | c) Loans for capital formation |
| ड) भाग भांडवलात केलेली गुंतवणूक | 2,225.27 | 435.39 | 345.31 | 2,752.91 | 1,595.59 | d) Investment in shares |
| 1. राज्य शासनाच्या अर्थसंकल्पीय उपाय योजनातून होणारी एकूण भांडवल निर्मिती (1+2) | 9,527.09 | 6,260.23 | 7,069.58 | 15,434.56 | 9,482.05 | Gross Capital formation out of bugetary resources of State Government (1+2) |
| स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी / As per cent of G.S.D.P. | | | | | | |
| राज्य शासनाची एकूण भांडवल निर्मिती | 1.3 | 1.2 | 1.5 | 2.9 | 1.3 | Gross capital formation by the State Government |
| उर्वरित अर्थव्यवस्थेस भांडवल निर्मितीकरिता वित्तीय सहाय्य (अ+ब+क+ड) | 2.7 | 1.1 | 0.9 | 1.7 | 1.2 | Financial assistance for capital formation to the rest of economy (a+b+c+d) |
| अ) भांडवली अनुदाने | 1.5 | 0.6 | 0.5 | 0.7 | 0.6 | a) Capital Grants |
| ब) इतर हस्तांतरित भांडवली रकमा | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | 0.0 | b) Other capital transfers |
| क) भांडवल निर्मितीसाठी कर्जे | 0.2 | 0.4 | 0.2 | 0.2 | 0.2 | c) Loans for capital formation |
| ड) भाग भांडवलात केलेली गुंतवणूक | 0.9 | 0.2 | 0.1 | 0.8 | 0.4 | d) Investment in shares |
| राज्य शासनाच्या अर्थसंकल्पीय उपाय योजनातून होणारी एकूण भांडवल निर्मिती (1+2) | 4.0 | 2.3 | 2.4 | 4.6 | 2.5 | Gross Capital formation out of bugetary resources of State Government (1+2) |
| महाराष्ट्र राज्याचे स्थूल राज्य उत्पन्न | 2,38,672 | 2,66,904 | 2,95,525 | 3,33,145 | 3,78,985 | G.S.D.P. of Maharashtra State |

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates.

B/E = अर्थसंकल्पीय अंदाज / Budget Estimates.

आधार - राज्य अर्थसंकल्पाचे आर्थिक व उद्देशानुसार वर्गीकरण

Source - Economic and purpose classification of State Budgets.

T-12

तक्ता क्रमांक / Table No.11

वर्षभरातील कर्जे व इतर दायित्व

BORROWINGS AND OTHER LIABILITIES DURING THE YEAR

(रुपये कोटीत / Rs. in crore)

| बाब (1) | 2001-02 (Actuals) प्रत्यक्षा (2) | 2002-03 (Actuals) प्रत्यक्षा (3) | 2003-04 (B/E) (अ.अ.) (4) | 2003-04 (R/E) (सु.अ.) (5) | 2004-05 (B/E) (अ.अ.) (6) | Item (1) |
|--|---|---|-----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------|--|
| एक - ऋण प्राप्ती (१ + २ + ३) | 9,550.62 | 9,101.68 | 9,041.08 | 14,182.91 | 10,052.40 | I Debt Receipts (1+2+3) |
| १) राज्य शासनाचे देशातर्गत ऋण (निव्वळ) | 2,104.84 | 8,563.42 | 7,109.25 | 15,076.09 | 8,635.96 | 1) Internal Debt of the State Government (net) |
| २) केंद्र शासनाकडून कर्जे व आगाऊ रकमा (निव्वळ) | 5,375.69 | (-)160.31 | 374.94 | (-)3,483.82 | (-)153.44 | 2) Loans & Adv. from Central Government (net) |
| ३) व्याजी गटबंधने (अ + ब + क) | 2,070.09 | 698.57 | 1,556.89 | 2,590.64 | 1,569.88 | 3) Interest bearing obligations (a + b + c) |
| अ) भविष्य निर्वाह निधी (निव्वळ) | 634.57 | 58.01 | 732.27 | 1,843.70 | 754.85 | a) Provident Fund (net) |
| ब) राखीव निधी (निव्वळ) | 7.83 | 3.36 | 1.10 | 1.27 | 5.70 | b) Reserve Fund (net) |
| क) व्याजी ठेवी (निव्वळ) | 1,427.69 | 637.20 | 823.52 | 745.67 | 809.33 | c) Deposits Bearing Interest (net) |
| दोन - बिगर ऋण प्राप्ती (१ - २ + ३) | 459.79 | 5,774.85 | 238.47 | 3,454.98 | 4,061.71 | II Non-Debt receipts (1 - 2 + 3) |
| १) लोकलेख्यातील निव्वळ जमा @ | 726.36 | 5,204.45 | (-) 261.53 | 4,471.69 | 3,561.71 | 1) Net receipts on Public Account @ |
| २) वजा : रोख शिल्लक गुंतवणूक लेखा (निव्वळ) | 306.22 | (-) 591.44 | (-) 500.00 | 1,016.71 | (-) 500.00 | 2) Less : C.B.I. Account (net) |
| ३) इतर भांडवली जमा (निव्वळ) | 39.65 | (-) 21.04 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3) Other capital receipts (net) |
| तीन - कर्जे व इतर दायित्व (एक + दोन) | 10,010.41 | 14,876.53 | 9,279.55 | 17,637.89 | 14,114.11 | III Borrowings & Other Liabilities (I+II) |

R/E = सुधारलेले अंदाज / Revised Estimates

B/E = अर्थसंकल्पिय अंदाज / Budget Estimates

@ भविष्य निर्वाह निधी (निव्वळ), राखीव निधी (निव्वळ) आणि व्याजी ठेवी (निव्वळ) इ. व्याजी गटबंधने वगळून

@ Excluding interest bearing obligation of Provident Fund (net), Reserve Fund (net), and Deposits Bearing Interest (net)

आधार - राज्य अर्थसंकल्प

Source - State Budget

नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे २००३-०४ मधील उत्पन्न व खर्च
INCOME AND EXPENDITURE OF URBAN LSGs DURING 2003-04

(रुपये कोटीत / Rs in crore)

| बाब (1) | महानगरपालिका Municipal Corpo- rations (2) | नगरपरिषदा/Municipal Councils | | | सर्व All (6) | नगर Nagar Panchayat (7) | कटक मंडळे Cantonment Boards (8) | सर्व नागरी संस्था All Civic Bodies (9) | Item (1) |
|--------------------------------|---|------------------------------|-----------------------------|-----------------------------|--------------------|----------------------------------|--|--|--|
| | | वर्ग 'अ' Class'A' (3) | वर्ग 'ब' Class'B' (4) | वर्ग 'क' Class'C' (5) | | | | | |
| उत्पन्न | | | | | | | | | Income |
| 1. आरंभीची शिल्लक | 1,234.54 | 72.50 | 79.59 | 97.72 | 249.82 | 3.36 | 11.84 | 1,499.56 | Opening Balance |
| 2. जमा | | | | | | | | | Receipts |
| 2.1 पट्टी, कर इत्यादी | 6828.63 | 126.97 | 175.73 | 159.28 | 461.98 | 5.28 | 75.39 | 7371.29 | Rents, taxes etc. |
| 2.2 शासकीय अनुदाने | 374.05 | 234.37 | 256.50 | 201.48 | 692.35 | 0.98 | 52.25 | 1,119.63 | Government grants |
| 2.3 वाणिज्यिक उपक्रमांपासून | 97.12 | 0.37 | 5.10 | 8.86 | 14.33 | 0.00 | 0.14 | 111.59 | Commercial enterprises |
| 2.4 ठेवी आणि कर्जे इ. | 350.08 | 37.16 | 46.65 | 43.52 | 127.33 | 1.15 | 2.72 | 481.29 | Deposits and Loans etc. |
| 2.5 इतर उत्पन्न | 2,250.34 | 26.59 | 138.06 | 30.72 | 195.37 | 1.65 | 3.34 | 2,450.70 | Other income |
| एकूण जमा (2) | 9,900.23 | 425.45 | 622.05 | 443.86 | 1,491.36 | 9.06 | 133.84 | 11,534.50 | Total receipts(2) |
| एकूण उत्पन्न (1+2) | 11,134.78 | 497.96 | 701.64 | 541.58 | 1,741.18 | 12.42 | 145.68 | 13,034.06 | Total Income(1+2) |
| खर्च | | | | | | | | | Expenditure |
| प्रशासन | | | | | | | | | Administration |
| (अ) आस्थापना | 3,307.03 | 123.49 | 191.12 | 141.84 | 456.45 | 1.28 | 30.11 | 3794.87 | (a) Establishment |
| (ब) इतर | 169.16 | 8.46 | 19.16 | 13.07 | 40.69 | 0.58 | 0.32 | 210.75 | (b) Others |
| कर वसुली | 17.24 | 3.30 | 3.76 | 1.56 | 8.62 | 0.02 | 0.22 | 26.10 | Recovery of taxes |
| सार्वजनिक दिवाबत्ती | 199.36 | 11.64 | 15.72 | 9.31 | 36.67 | 0.38 | 1.29 | 237.70 | Streetlighting |
| पाणीपुरवठा | 782.71 | 45.14 | 59.43 | 27.35 | 131.92 | 0.33 | 1.34 | 916.31 | Water supply |
| सार्वजनिक सुरक्षा | 27.16 | 0.82 | 1.90 | 1.74 | 4.46 | 0.12 | 0.17 | 31.90 | Public security |
| सार्वजनिक आरोग्य | 378.91 | 12.75 | 14.52 | 10.68 | 37.96 | 0.17 | 2.18 | 419.23 | Public health |
| जलनिःसारण व मलनिःसारण | 525.02 | 14.10 | 8.88 | 4.99 | 27.97 | 0.63 | 0.67 | 554.28 | Drainage and Sewerage |
| बांधकामे | 581.89 | 58.99 | 83.17 | 65.98 | 208.14 | 2.61 | 8.23 | 800.86 | Construction works |
| परिवहन | 329.18 | 1.14 | 3.29 | 0.73 | 5.16 | 0.00 | 0.00 | 334.34 | Transport |
| शिक्षण | 264.53 | 3.28 | 10.52 | 6.41 | 20.21 | 0.01 | 0.26 | 285.01 | Education |
| दुर्बल घटकांवरील खर्च | 74.85 | 3.85 | 7.62 | 4.44 | 15.91 | 0.14 | 0.07 | 90.98 | Expenditure on weakersections |
| विशेष खर्च व दिलेली कर्जे | 692.41 | 43.55 | 60.63 | 38.89 | 143.07 | 1.96 | 61.19 | 898.64 | Extraordinary expenditure and loans extended |
| इतर खर्च | 2,401.40 | 69.51 | 170.56 | 66.57 | 306.63 | 0.31 | 17.49 | 2,725.84 | Other expenditure |
| एकूण खर्च (१ ते १३) | 9,750.87 | 400.01 | 650.29 | 393.55 | 1,443.85 | 8.54 | 123.53 | 11,326.80 | Total expenditure (1 to 13) |

टीप - विविध विभागांतर्गत कर्मचारी / आस्थापनावरील खर्च एकत्रित करण्यात आला असून बाब क्र.१ (अ) समोर दर्शविला आहे.

Note - Expenditure on staff/ establishments under various sections has been clubbed and shown at item 1(a).

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 13

औद्योगिक स्रोतांनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न-चालू किमतीनुसार

GROSS STATE DOMESTIC PRODUCT BY INDUSTRY OF ORIGIN AT CURRENT PRICES

(रुपये कोटीत/Rs in crore)

| अनुक्रमांक Sr No (1) | उद्योग (2) | 1993-94 (3) | 1997-98 (4) | 1998-99 (5) | 1999-00* (6) | 2000-01* (7) | 2001-02* (8) | 2002-03* (9) | 2003-04† (10) | Industry (2) |
|----------------------------|--|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|--|
| 1 | कृषि | 20,265 | 28,429 | 31,080 | 35,551 | 32,915 | 36,103 | 36,055 | 34,875 | Agriculture |
| 2 | वन संवर्धन आणि ऑडके पाडणे | 1,303 | 1,963 | 1,949 | 2,257 | 2,829 | 3,100 | 3,216 | 3,432 | Forestry and logging |
| 3 | मासेमारी | 529 | 1,036 | 927 | 915 | 899 | 979 | 1,080 | 1,255 | Fishing |
| 4 | खाण व दगड खाणकाम | 752 | 2,058 | 1,787 | 1,928 | 2,176 | 2,393 | 2,446 | 2,676 | Mining and quarrying |
| | एकूण - प्राथमिक | 22,849 (20.2) | 33,486 (17.2) | 35,743 (17.0) | 40,651 (16.7) | 38,820 (16.3) | 42,576 (16.0) | 42,797 (14.5) | 42,237 (12.7) | Sub-Total - Primary |
| 5 | वस्तुनिर्माण (कारखाने) - | | | | | | | | | Manufacturing— |
| | अ) नोंदणीकृत | 19,354 | 35,599 | 34,677 | 38,038 | 35,090 | 34,818 | 40,223 | 45,659 | a) Registered |
| | ब) अनोंदणीकृत | 9,116 | 17,028 | 14,301 | 17,308 | 15,217 | 17,454 | 18,195 | 22,354 | b) Un-registered |
| 6 | बांधकाम | 5,581 | 9,794 | 11,316 | 11,170 | 10,879 | 13,009 | 15,141 | 20,275 | Construction |
| 7 | वीज, वायु (गॅस) आणि पाणीपुरवठा | 3,082 | 5,406 | 5,911 | 6,188 | 4,951 | 6,323 | 6,885 | 7,504 | Electricity, gas and water supply |
| | एकूण - द्वितीय | 37,133 (32.8) | 67,827 (34.8) | 66,205 (31.6) | 72,704 (29.9) | 66,136 (27.7) | 71,604 (26.8) | 80,444 (27.2) | 95,792 (28.8) | Sub-Total - Secondary |
| 8 | परिवहन, साठवण व दळणवळण, व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे. | 21,635 (19.1) | 44,132 (22.6) | 45,016 (21.5) | 47,902 (19.7) | 52,124 (21.8) | 57,310 (21.5) | 66,087 (22.4) | 77,547 (23.3) | Transport, storage and communications, trade, hotels and restaurants |
| 9 | बँका व विमा उद्योग, स्थावर मालमत्ता व राहत्या घरांची मालकी, व्यवसाय सेवा, सार्वजनिक प्रशासन आणि इतर सेवा | 31,703 (28.0) | 49,723 (25.5) | 62,734 (29.9) | 81,943 (33.7) | 81,593 (34.2) | 95,413 (35.7) | 1,06,197 (35.9) | 1,17,569 (35.3) | Banking & insurance, real estate & ownership of dwellings, business services, public administration and other services |
| | एकूण - तृतीय | 53,338 (47.1) | 93,855 (48.1) | 1,07,751 (51.4) | 1,29,845 (53.4) | 1,33,717 (56.0) | 1,52,723 (57.2) | 1,72,284 (58.3) | 1,95,116 (58.6) | Sub-Total - Tertiary |
| | एकूण - स्थूल राज्य उत्पन्न | 1,13,320 (100.0) | 1,95,168 (100.0) | 2,09,699 (100.0) | 2,43,199 (100.0) | 2,38,672 (100.0) | 2,66,904 (100.0) | 2,95,525 (100.0) | 3,33,145 (100.0) | Total - Gross State Domestic Product. |
| | दरडोई स्थूल राज्य उत्पन्न (रुपये) | 13,566 | 21,511 | 22,665 | 25,791 | 24,848 | 27,295 | 29,791 | 33,093 | Per capita Gross State Income (Rs.) |

* अस्थायी/Provisional

टीप - १) कंसातील आकडे स्थूल राज्य उत्पन्नाशी टक्केवारी दर्शावतात.

२) आकडे संक्षिप्तता दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

† प्रारंभिक अंदाज/Preliminary Estimates

Note - 1) Figures in brackets show percentages to Gross State Domestic Product

2) Details may not add upto totals due to rounding.

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

औद्योगिक स्रोतांनुसार स्थूल राज्य उत्पन्न-स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार
GROSS STATE DOMESTIC PRODUCT BY INDUSTRY OF ORIGIN AT CONSTANT (1993-94) PRICES

(रुपये कोटीत/Rs in crore)

| अनुक्रमांक Sr. No. (1) | उद्योग (2) | 1993-94 (3) | 1997-98 (4) | 1998-99 (5) | 1999-00* (6) | 2000-01* (7) | 2001-02* (8) | 2002-03* (9) | 2003-04† (10) | Industry (2) |
|------------------------------|--|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|--|
| 1 | कृषि | 20,265 | 20,492 | 22,077 | 23,963 | 22,394 | 23,773 | 23,362 | 21,667 | Agriculture |
| 2 | वन संवर्धन आणि ऑडके पाडणे | 1,303 | 1,355 | 1,230 | 1,275 | 1,424 | 1,449 | 1,441 | 1,514 | Forestry and logging |
| 3 | मासेमारी | 529 | 757 | 714 | 659 | 619 | 676 | 657 | 686 | Fishing |
| 4 | खाण व दगड खणकाम | 752 | 1,154 | 1,115 | 1,212 | 1,327 | 1,357 | 1,423 | 1,541 | Mining and quarrying |
| | एकूण - प्राथमिक | 22,849 (100.0) | 23,758 (104.0) | 25,135 (110.0) | 27,109 (118.6) | 25,764 (112.8) | 27,255 (119.3) | 26,883 (117.7) | 25,407 (111.2) | Sub-Total - Primary |
| 5 | वस्तुनिर्माण (कारखाने) - | | | | | | | | | Manufacturing— |
| | अ) नोंदणीकृत | 19,354 | 27,176 | 25,521 | 27,117 | 23,258 | 22,307 | 24,721 | 26,848 | a) Registered |
| | ब) अनोंदणीकृत | 9,116 | 13,168 | 11,841 | 13,971 | 11,692 | 12,662 | 12,890 | 13,680 | b) Un-registered |
| 6 | बांधकाम | 5,581 | 6,717 | 7,371 | 6,888 | 6,424 | 7,027 | 8,170 | 10,877 | Construction |
| 7 | वीज, वायु (गॅस) आणि पाणीपुरवठा | 3,082 | 4,257 | 4,466 | 4,205 | 4,194 | 4,059 | 4,299 | 4,513 | Electricity, gas and water supply |
| | एकूण - द्वितीय | 37,133 (100.0) | 51,318 (138.2) | 49,199 (132.5) | 52,180 (140.5) | 45,567 (122.7) | 46,054 (124.0) | 50,081 (134.9) | 55,918 (150.6) | Sub-Total - Secondary |
| 8 | परिवहन, साठवण व दळणवळण, व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे. | 21,635 | 32,921 | 32,835 | 34,698 | 37,015 | 38,755 | 43,942 | 49,282 | Transport, storage and communications, trade, hotels and restaurants. |
| 9 | बँका व विमा उद्योग, स्थावर मालमत्ता व राहत्या घरांची मालकी, व्यवसाय सेवा, सार्वजनिक प्रशासन आणि इतर सेवा | 31,703 | 35,726 | 41,379 | 49,085 | 48,028 | 52,188 | 56,231 | 59,544 | Banking & insurance, real estate & ownership of dwellings, business services, public administration and other services |
| | एकूण - तृतीय | 53,338 (100.0) | 68,647 (128.7) | 74,214 (139.1) | 83,783 (157.1) | 85,043 (159.4) | 90,943 (170.5) | 1,00,174 (187.8) | 1,08,826 (204.0) | Sub-Total - Tertiary |
| | एकूण - स्थूल राज्य उत्पन्न | 1,13,320 (100.0) | 1,43,723 (126.8) | 1,48,548 (131.1) | 1,63,072 (143.9) | 1,56,373 (138.0) | 1,64,252 (144.9) | 1,77,138 (156.3) | 1,90,151 (167.8) | Total - Gross State Domestic Product. |
| | दरडोई स्थूल राज्य उत्पन्न (रुपये) | 13,566 (100.0) | 15,841 (116.8) | 16,056 (118.4) | 17,294 (127.5) | 16,280 (120.0) | 16,797 (123.8) | 17,856 (131.6) | 18,889 (139.2) | Per capita Gross State Income (Rs.) |

* अस्थायी/Provisional

टीप - १) कंसातील आकडे स्तंभ (३) शी टक्केवारी दर्शवितात.

२) आकडे संक्षिप्तत दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

† प्रारंभिक अंदाज/Preliminary Estimates

Note - 1) Figures in brackets show percentages to Col. (3).

2) Details may not add upto totals due to rounding.

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 17

औद्योगिक स्रोतांनुसार निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न व राष्ट्रीय उत्पन्न-चालू किंमतीनुसार
NET NATIONAL DOMESTIC PRODUCT BY INDUSTRY OF ORIGIN AND NATIONAL INCOME AT CURRENT PRICES

(रुपये कोटीत/Rs. in crore)

| अनुक्रमांक Sr. No. (1) | उद्योग (2) | 1993-94 (3) | 1997-98 (4) | 1998-99 (5) | 1999-00* (6) | 2000-01* (7) | 2001-02* (8) | 2002-03* (9) | 2003-04† (10) | Industry (2) |
|------------------------------|--|----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|--|
| 1 | कृषि | 2,10,919 | 3,35,676 | 3,87,100 | 4,01,497 | 4,01,439 | 4,39,157 | 4,30,832 | 4,94,245 | Agriculture |
| 2 | वन संवर्धन आणि ओडके पाडणे | 11,166 | 15,736 | 17,260 | 18,919 | 21,762 | 21,909 | 23,654 | 25,922 | Forestry and logging |
| 3 | मासेमारी | 7,744 | 15,554 | 16,107 | 17,738 | 19,949 | 21,842 | 23,810 | 23,427 | Fishing |
| 4 | खाण व दगड खाणकाम | 14,950 | 24,941 | 26,777 | 31,975 | 35,849 | 37,866 | 51,768 | 52,237 | Mining and quarrying |
| | एकूण - प्राथमिक | 2,44,779 (35.1) | 3,91,907 (31.7) | 4,47,244 (31.3) | 4,70,129 (29.8) | 4,78,999 (28.1) | 5,20,774 (27.9) | 5,30,064 (26.2) | 5,95,831 (26.3) | Sub-Total - Primary |
| 5 | वस्तुनिर्माण (कारखाने) - | | | | | | | | | Manufacturing— |
| | अ) नोंदणीकृत | 65,774 | 1,15,568 | 1,22,236 | 1,27,497 | 1,49,313 | 1,58,113 | 1,75,673 | 2,00,267 | a) Registered |
| | ब) अनोंदणीकृत | 37,965 | 70,138 | 77,939 | 82,158 | 90,334 | 93,161 | 1,01,263 | 1,11,573 | b) Un-registered |
| 6 | बांधकाम | 38,749 | 74,545 | 88,365 | 1,01,382 | 1,11,848 | 1,20,875 | 1,34,873 | 1,50,220 | Construction |
| 7 | वीज, वायु (गॅस) आणि पाणीपुरवठा | 8,801 | 17,755 | 24,108 | 21,073 | 20,223 | 19,681 | 23,277 | 25,399 | Electricity, gas and water supply |
| | एकूण - द्वितीय | 1,51,289 (21.7) | 2,78,006 (22.5) | 3,12,648 (21.9) | 3,32,110 (21.0) | 3,71,718 (21.8) | 3,91,830 (21.0) | 4,35,086 (21.5) | 4,87,459 (21.5) | Sub-Total - Secondary |
| 8 | परिवहन, साठवण व दळणवळण, व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे. | 1,34,348 (19.2) | 2,64,048 (21.3) | 3,03,180 (21.2) | 3,38,170 (21.4) | 3,76,656 (22.1) | 4,21,060 (22.6) | 4,66,719 (23.1) | 5,35,897 (23.6) | Transport, storage and communications, trade, hotels and restaurants. |
| 9 | बँका व विमा उद्योग, स्थावर मालमत्ता व राहत्या घरांची मालकी, व्यवसाय सेवा, सार्वजनिक प्रशासन आणि इतर सेवा | 1,67,576 (24.0) | 3,04,190 (24.6) | 3,66,989 (25.7) | 4,39,070 (27.8) | 4,77,731 (28.0) | 5,30,133 (28.4) | 5,90,067 (29.2) | 6,46,961 (28.5) | Banking & insurance, real estate & ownership of dwellings, business services, public administration and other services |
| | एकूण - तृतीय | 3,01,924 (43.3) | 5,68,238 (45.9) | 6,70,169 (46.9) | 7,77,240 (49.2) | 8,54,387 (50.1) | 9,51,193 (51.0) | 10,56,786 (52.3) | 11,82,858 (52.2) | Sub- Total - Tertiary |
| | एकूण - निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न | 6,97,992 (100.0) | 12,38,151 (100.0) | 14,30,061 (100.0) | 15,79,479 (100.0) | 17,05,104 (100.0) | 18,63,796 (100.0) | 20,21,936 (100.0) | 22,66,148 (100.0) | Total - Net National Domestic Product. |
| | एकूण - निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्न | 6,85,912 | 12,24,946 | 14,15,093 | 15,64,048 | 16,86,995 | 18,48,229 | 20,08,770 | 22,52,070 | Total - Net National Product (I.e. National Income) |
| | दरडोई राष्ट्रीय उत्पन्न (रुपये) | 7,690 | 12,707 | 14,396 | 15,625 | 16,555 | 17,823 | 19,040 | 20,989 | Per capita National Income(Rs.) |

* अस्थायी/Provisional

टीप - १) कंसातील आकडे निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्नाशी टक्केवारी दर्शवितात.

२) आकडे संक्षिप्तता दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

† प्रारंभिक अंदाज / Preliminary Estimates

Note - 1) Figures in brackets show percentages to Net National Domestic Product

2) Details may not add upto totals due to rounding.

औद्योगिक स्रोतानुसार निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न व राष्ट्रीय उत्पन्न-स्थिर (१९९३-९४) किंमतीनुसार
NET NATIONAL DOMESTIC PRODUCT BY INDUSTRY OF ORIGIN AND NATIONAL INCOME AT CONSTANT (1993-94) PRICES

(रुपये कोटीत/Rs. in crore)

| अनुक्रमांक Sr No. (1) | उद्योग (2) | 1993-94 (3) | 1997-98 (4) | 1998-99 (5) | 1999-00* (6) | 2000-01* (7) | 2001-02* (8) | 2002-03* (9) | 2003-04† (10) | Industry (2) |
|-----------------------------|--|----------------------------|----------------------------|----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-----------------------------|---|
| 1 | कृषि | 2,10,919 | 2,34,228 | 2,50,854 | 2,50,112 | 2,48,596 | 2,65,144 | 2,42,331 | 2,68,352 | Agriculture |
| 2 | वन संवर्धन आणि ऑडके पाडणे | 11,166 | 11,785 | 11,960 | 12,400 | 12,702 | 12,884 | 12,998 | 13,180 | Forestry and logging |
| 3 | मासेमारी | 7,744 | 9,359 | 8,823 | 9,414 | 9,707 | 10,425 | 11,156 | 11,501 | Fishing |
| 4 | खाण व दगड खाणकाम | 14,950 | 19,470 | 20,212 | 21,007 | 21,724 | 22,468 | 25,069 | 26,865 | Mining and quarrying |
| | एकूण - प्राथमिक | 2,44,779 (100.0) | 2,74,842 (112.3) | 2,91,849 (119.2) | 2,92,933 (119.7) | 2,92,729 (119.6) | 3,10,921 (127.0) | 2,91,554 (119.1) | 3,19,898 (130.7) | Sub-Total - Primary |
| 5 | वस्तुनिर्माण (कारखाने) - | | | | | | | | | Manufacturing-- |
| | अ) नोंदणीकृत | 65,774 | 89,434 | 88,484 | 89,928 | 97,297 | 1,01,296 | 1,09,483 | 1,18,282 | a) Registered |
| | ब) अनोंदणीकृत | 37,965 | 52,978 | 55,017 | 57,768 | 61,783 | 62,855 | 66,254 | 70,535 | b) Un-registered |
| 6 | बांधकाम | 38,749 | 48,504 | 51,447 | 55,623 | 59,343 | 61,823 | 66,475 | 70,962 | Construction |
| 7 | वीज, वायु (गॅस) आणि पाणीपुरवठा | 8,801 | 12,631 | 13,678 | 14,381 | 14,977 | 15,450 | 15,838 | 16,358 | Electricity, gas and water supply |
| | एकूण - द्वितीय | 1,51,289 (100.0) | 2,03,547 (134.5) | 2,08,626 (137.9) | 2,17,700 (143.9) | 2,33,400 (154.3) | 2,41,424 (159.6) | 2,58,050 (170.6) | 2,76,137 (182.5) | Sub-Total - Secondary |
| 8 | परिवहन, साठवण व दळणवळण, व्यापार, हॉटेल्स व उपाहारगृहे. | 1,34,348 (100.0) | 1,97,178 (146.8) | 2,13,252 (158.7) | 2,32,503 (173.1) | 2,48,609 (185.0) | 2,72,525 (202.9) | 3,01,020 (224.1) | 3,38,290 (251.8) | Transport, storage and communications, trade, hotels and restaurants. |
| 9 | बँका व विमा उद्योग, स्थावर मालमत्ता व राहत्या घरांची मालकी, व्यवसाय सेवा, सार्वजनिक प्रशासन आणि इतर सेवा | 1,67,576 (100.0) | 2,26,168 (135.0) | 2,46,827 (147.3) | 2,76,160 (164.8) | 2,87,754 (171.7) | 3,00,610 (179.4) | 3,19,169 (190.5) | 3,39,749 (202.7) | Banking & insurance, real estate & ownership of dwellings, business services, public administration and other services. |
| | एकूण - तृतीय | 3,01,924 (100.0) | 4,23,346 (140.2) | 4,60,079 (152.4) | 5,08,663 (168.5) | 5,36,363 (177.6) | 5,73,135 (189.8) | 6,20,189 (205.4) | 6,78,039 (224.6) | Sub-Total - Tertiary |
| | एकूण - निव्वळ राष्ट्रीय देशांतर्गत उत्पन्न | 6,97,992 (100.0) | 9,01,735 (129.2) | 9,60,554 (137.6) | 10,19,296 (146.0) | 10,62,492 (152.2) | 11,25,480 (161.2) | 11,69,793 (167.6) | 12,74,074 (182.5) | Total - Net National Domestic Product. |
| | एकूण - निव्वळ राष्ट्रीय उत्पन्न | 6,85,912 (100.0) | 8,91,086 (129.9) | 9,48,581 (138.3) | 10,08,115 (147.0) | 10,50,338 (153.1) | 11,15,172 (162.6) | 11,61,902 (169.4) | 12,66,005 (184.6) | Total - Net National Product (i.e. National Income) |
| | दरडोई राष्ट्रीय उत्पन्न (रुपये) | 7,690 (100.0) | 9,244 (120.2) | 9,650 (125.5) | 10,071 (131.0) | 10,308 (134.0) | 10,754 (139.8) | 11,013 (143.2) | 11,799 (153.4) | Per capita National Income (Rs.) |

* अस्थायी/Provisional

टीप - १) कंसातील आकडे स्तंभ (३) शी टक्केवारी दर्शवितात.

२) आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

आधार - केंद्रीय सांख्यिकीय संघटना, नवी दिल्ली.

† प्रारंभिक अंदाज / Preliminary Estimates

Note - 1) Figures in brackets show percentages to Col. (3).

2) Details may not add upto totals due to rounding.

Source - Central Statistical Organisation, New Delhi.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 19

निव्वळ जिल्हा उत्पन्न आणि दरडोई जिल्हा उत्पन्न

NET DISTRICT DOMESTIC PRODUCT AND PER CAPITA NET DISTRICT DOMESTIC PRODUCT

| अनुक्रमांक Serial No. | जिल्हा (2) | निव्वळ उत्पन्न (रुपये लाखात) Net Domestic Product (Rs. in lakh) | | | | | दरडोई उत्पन्न (रुपये) Per Capita Net Domestic Product (Rs.) | | | | | Districts (2) |
|-----------------------------|--------------------|--|------------------|--------------------------------------|--------------------|---------------------------------|--|-----------------|--------------------------------------|------------------|----------------------------------|--------------------|
| | | स्थिर किमतीनुसार At Constant Prices | | चालू किमतीनुसार At Current Prices | | शेकडा बदल % Change (7) | स्थिर किमतीनुसार At Constant Prices | | चालू किमतीनुसार At Current Prices | | शेकडा बदल % Change (12) | |
| | | 2002-03* (3) | 2003-04@ (4) | 2002-03* (5) | 2003-04@ (6) | | 2002-03* (8) | 2003-04@ (9) | 2002-03* (10) | 2003-04@ (11) | | |
| 1 | मुंबई # | 39,54,804 | 43,87,658 | 66,44,025 | 77,27,732 | 16.31 | 32,369 | 35,483 | 54,379 | 62,495 | 14.92 | Mumbai # |
| 2 | ठाणे | 15,35,310 | 16,84,231 | 26,08,838 | 30,10,140 | 15.38 | 17,746 | 18,723 | 30,154 | 33,462 | 10.97 | Thane |
| 3 | रायगड | 3,77,187 | 4,15,173 | 6,63,467 | 7,69,539 | 15.99 | 16,706 | 18,132 | 29,385 | 33,609 | 14.37 | Raigad |
| 4 | रत्नागिरी | 2,22,120 | 2,40,673 | 3,90,723 | 4,33,027 | 10.83 | 13,020 | 14,064 | 22,903 | 25,304 | 10.48 | Ratnagiri |
| 5 | सिंधुदुर्ग | 1,30,352 | 1,38,179 | 2,05,350 | 2,25,694 | 9.91 | 14,964 | 15,812 | 23,573 | 25,827 | 9.56 | Sindhudurg |
| | कोकण विभाग | 62,19,772 | 68,65,915 | 1,05,12,404 | 1,21,66,132 | 15.73 | 24,197 | 26,170 | 40,897 | 46,372 | 13.39 | KONKAN DIV. |
| 6 | नाशिक | 7,06,005 | 7,57,423 | 12,04,757 | 13,15,966 | 9.23 | 13,699 | 14,413 | 23,377 | 25,042 | 7.12 | Nashik |
| 7 | धुळे | 1,65,352 | 1,82,152 | 2,85,252 | 3,29,226 | 15.42 | 9,508 | 10,360 | 16,402 | 18,724 | 14.16 | Dhule |
| 8 | नंदुरबार | 1,21,435 | 1,31,597 | 2,04,436 | 2,30,103 | 12.55 | 9,101 | 9,761 | 15,322 | 17,068 | 11.40 | Nandurbar |
| 9 | जळगांव | 4,65,106 | 4,76,533 | 7,65,962 | 8,28,951 | 8.22 | 12,468 | 12,677 | 20,534 | 22,052 | 7.39 | Jalgaon |
| 10 | अहमदनगर | 4,69,915 | 4,83,884 | 7,90,549 | 8,61,907 | 9.03 | 11,404 | 11,602 | 19,185 | 20,665 | 7.71 | Ahmednagar |
| | नाशिक विभाग | 19,27,812 | 20,31,588 | 32,50,956 | 35,66,152 | 9.70 | 11,991 | 12,470 | 20,220 | 21,890 | 8.26 | NASHIK DIV. |
| 11 | पुणे | 14,68,647 | 15,62,128 | 24,52,147 | 27,28,820 | 11.28 | 19,619 | 20,424 | 32,758 | 35,677 | 8.91 | Pune |
| 12 | सातारा | 3,72,336 | 3,92,666 | 6,16,192 | 6,72,440 | 9.13 | 13,102 | 13,723 | 21,683 | 23,500 | 8.38 | Satara |
| 13 | सांगली | 3,80,498 | 3,93,183 | 6,12,822 | 6,71,589 | 9.59 | 14,511 | 14,861 | 23,371 | 25,384 | 8.61 | Sangli |
| 14 | सोलापूर | 4,48,510 | 4,61,279 | 7,46,898 | 8,29,710 | 11.09 | 11,443 | 11,639 | 19,055 | 20,935 | 9.87 | Solapur |
| 15 | कोल्हापूर | 5,78,673 | 6,08,963 | 9,25,162 | 10,43,036 | 12.74 | 16,156 | 16,832 | 25,830 | 28,830 | 11.61 | Kolhapur |
| | पुणे विभाग | 32,48,664 | 34,18,220 | 53,53,220 | 59,45,595 | 11.07 | 15,885 | 16,484 | 26,176 | 28,672 | 9.54 | PUNE DIV. |

| अनुक्रमांक Serial No. (1) | जिल्हा (2) | निव्वळ उत्पन्न (रुपये लाखात) Net Domestic Product (Rs. in lakh) | | | | | दरडोई उत्पन्न (रुपये) Per Capita Net Domestic Product (Rs) | | | | | Districts (2) |
|------------------------------------|-----------------------|--|--------------------|--------------------------------------|--------------------|---------------------------------|---|---------------|--------------------------------------|---------------|----------------------------------|------------------------|
| | | स्थिर किमतीनुसार At Constant Prices | | चालू किमतीनुसार At Current Prices | | शेकडा बदल % Change (7) | स्थिर किमतीनुसार At Constant Prices | | चालू किमतीनुसार At Current Prices | | शेकडा बदल % Change (12) | |
| | | 2002-03* | 2003-04@ | 2002-03* | 2003-04@ | | 2002-03* | 2003-04@ | 2002-03* | 2003-04@ | | |
| | | (3) | (4) | (5) | (6) | (8) | (9) | (10) | (11) | | | |
| 16 | औरंगाबाद | 3,63,629 | 3,66,293 | 6,21,081 | 6,52,509 | 5.06 | 12,138 | 11,976 | 20,733 | 21,333 | 2.89 | Aurangabad |
| 17 | जालना | 1,50,391 | 1,44,383 | 2,48,336 | 2,54,263 | 2.39 | 9,169 | 8,714 | 15,141 | 15,346 | 1.35 | Jalna |
| 18 | परभणी | 1,53,308 | 1,53,056 | 2,61,033 | 2,78,791 | 6.80 | 9,844 | 9,713 | 16,761 | 17,692 | 5.55 | Parbhani |
| 19 | हिंगोली | 98,141 | 1,07,136 | 1,60,253 | 1,85,500 | 15.75 | 9,793 | 10,593 | 15,990 | 18,341 | 14.70 | Hingoli |
| 20 | बीड | 2,11,368 | 2,09,152 | 3,68,135 | 3,89,647 | 5.84 | 9,615 | 9,418 | 16,747 | 17,545 | 4.77 | Beed |
| 21 | नांदेड | 2,60,153 | 2,75,446 | 4,47,943 | 4,90,052 | 9.40 | 8,834 | 9,220 | 15,212 | 16,403 | 7.83 | Nanded |
| 22 | उस्मानाबाद | 1,28,534 | 1,23,679 | 2,18,371 | 2,21,086 | 1.24 | 8,525 | 8,134 | 14,484 | 14,541 | 0.39 | Osmanabad |
| 23 | लातूर | 1,81,125 | 1,94,035 | 3,03,685 | 3,46,789 | 14.19 | 8,495 | 8,963 | 14,243 | 16,019 | 12.47 | Latur |
| | औरंगाबाद विभाग | 15,46,649 | 15,73,180 | 26,23,838 | 28,18,636 | 7.22 | 9,680 | 9,713 | 16,453 | 17,403 | 5.77 | AURANGABAD DIV. |
| 24 | बुलढाणा | 2,08,596 | 2,21,108 | 3,67,661 | 4,02,244 | 9.41 | 9,190 | 9,644 | 16,197 | 17,544 | 8.32 | Buldhana |
| 25 | अकोला | 1,80,071 | 1,89,033 | 3,21,406 | 3,52,335 | 9.62 | 10,831 | 11,235 | 19,332 | 20,940 | 8.32 | Akola |
| 26 | वाशिम | 1,09,058 | 1,15,659 | 1,86,899 | 2,03,060 | 8.65 | 10,512 | 11,035 | 18,014 | 19,374 | 7.55 | Washim |
| 27 | अमरावती | 2,96,295 | 3,11,202 | 5,09,693 | 5,85,409 | 14.86 | 11,173 | 11,616 | 19,221 | 21,850 | 13.68 | Amravati |
| 28 | यवतमाळ | 2,54,939 | 2,64,474 | 4,36,239 | 4,80,025 | 10.04 | 10,199 | 10,474 | 17,451 | 19,010 | 8.93 | Yavatmal |
| | अमरावती विभाग | 10,48,958 | 11,01,476 | 18,21,898 | 20,23,072 | 11.04 | 10,364 | 10,769 | 18,000 | 19,780 | 9.89 | AMRAVATI DIV. |
| 29 | बर्धा | 1,58,618 | 1,69,001 | 2,66,738 | 3,05,327 | 14.47 | 12,657 | 13,379 | 21,284 | 24,171 | 13.56 | Wardha |
| 30 | नागपूर | 7,27,371 | 8,03,114 | 12,37,863 | 14,53,783 | 17.44 | 17,459 | 18,996 | 29,712 | 34,385 | 15.73 | Nagpur |
| 31 | भंडारा | 1,29,208 | 1,36,088 | 2,22,372 | 2,45,943 | 10.60 | 11,300 | 11,859 | 19,447 | 21,431 | 10.20 | Bhandara |
| 32 | गोंदिया | 1,13,093 | 1,21,844 | 1,95,224 | 2,18,756 | 12.05 | 9,361 | 10,051 | 16,160 | 18,046 | 11.67 | Gondia |
| 33 | चंद्रपूर | 2,71,555 | 2,92,803 | 4,73,290 | 5,23,810 | 10.67 | 12,912 | 13,792 | 22,504 | 24,674 | 9.64 | Chandrapur |
| 34 | गडचिरोली | 63,544 | 76,359 | 1,18,369 | 1,32,876 | 12.26 | 6,397 | 7,577 | 11,916 | 13,186 | 10.66 | Gadchiroli |
| | नागपूर विभाग | 14,63,388 | 15,99,209 | 25,13,858 | 28,80,495 | 14.58 | 13,466 | 14,563 | 23,132 | 26,230 | 13.39 | NAGPUR DIV. |
| | महाराष्ट्र | 1,54,55,245 | 1,65,89,588 | 2,60,81,172 | 2,94,00,083 | 12.73 | 15,580 | 16,479 | 26,291 | 29,204 | 11.08 | MAHARASHTRA |

* अस्थायी / Provisional @ प्रारंभिक / Preliminary

टीप - आकडे संक्षिप्तत दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

मुंबई शहर + मुंबई उपनगर जिल्हा / Mumbai City + Mumbai Suburban District.

Note - Details may not add up to totals due to rounding.

Source - Directorate of Economics & Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 20

महाराष्ट्र राज्याच्या ग्रामीण, निमनगरी व नागरी/महानगर क्षेत्रातील सर्व अनुसूचित वाणिज्यिक बँकांच्या ठेवी व कर्जे
DEPOSITS AND CREDITS OF ALL SCHEDULED COMMERCIAL BANKS IN RURAL, SEMI-URBAN AND URBAN/METROPOLITAN AREAS OF MAHARASHTRA STATE

(रुपये कोटीत/Rs in crore)

| वर्ष Year | वर्षाच्या जून महिन्यातील शेवटच्या शुक्रवारची स्थिती Position as on last Friday of June of the year | | | | | | एकूण ठेवी Total deposits | एकूण कर्जे Total credits | दरडोई ठेवी (रुपये) Per capita deposits (in Rs.) | दरडोई कर्जे (रुपये) Per capita credits (in Rs.) | एकूण बँक कार्यालयांची संख्या No of banking offices | | | दर लाख लोकसंख्येमागे बँक कार्यालयांची संख्या Number of banking offices per lakh of population |
|--------------|---|------------------|-----------------------|------------------|------------------------------------|------------------|-----------------------------|-----------------------------|--|--|---|---|---------------|--|
| | ग्रामीण Rural | | निमनगरी Semi-Urban | | नागरी/महानगर Urban/Metropolitan | | | | | | ग्रामीण व निमनगरी Rural and semi-Urban | नागरी/महानगर क्षेत्रातील Urban/Metro-politan | एकूण Total | |
| | ठेवी Deposits | कर्जे Credits | ठेवी Deposits | कर्जे Credits | ठेवी Deposits | कर्जे Credits | | | | | (12) | (13) | (14) | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (13) | (14) | (15) |
| 1971 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | 1,460.06 | 1,291.20† | 290 | 256 | N.A. | N.A. | 1,471 | 2.9 |
| 1976 | 78.53 | 58.86 | 266.33 | 132.02 | 2,904.43 | 2,396.16 | 3,249.29 | 2,587.04 | 582 | 464 | N.A. | N.A. | 2,381 | 4.3 |
| 1981 | 308.51 | 226.20 | 713.56 | 383.55 | 6,568.26 | 5,320.98 | 7,590.33 | 5,930.72 | 1,204 | 940 | N.A. | N.A. | 3,627 | 5.8 |
| 1986 | 763.58 | 583.44 | 1,190.23 | 669.06 | 15,550.08 | 13,872.79 | 17,503.89 | 15,125.30 | 2,498 | 2,159 | 2,838 | 2,063 | 4,901 | 7.0 |
| 1991 | 1,700.76 | 1,356.90 | 2,347.38 | 1,354.43 | 36,181.44 | 26,935.52 | 40,229.58 | 29,646.85 | 5,344 | 3,580 | 3,353 | 2,238 | 5,591 | 7.4 |
| 1996 | 3,285.64 | 2,044.94 | 4,959.32 | 2,408.91 | 82,416.66 | 61,059.35 | 90,661.62 | 65,513.19 | 10,369 | 7,493 | 3,339 | 2,538 | 5,877 | 6.7 |
| 1997 | 3,870.84 | 2,546.57 | 5,667.98 | 2,344.08 | 94,380.49 | 64,209.87 | 1,03,919.31 | 69,100.52 | 11,773 | 7,828 | 3,345 | 2,637 | 5,982 | 6.7 |
| 1998 | 4,356.24 | 2,787.33 | 6,501.61 | 2,638.55 | 1,10,969.38 | 76,912.46 | 1,21,827.22 | 82,338.35 | 13,626 | 9,209 | 3,372 | 2,731 | 6,103 | 6.8 |
| 1999 | 5,100.69 | 3,142.13 | 7,535.99 | 3,088.63 | 1,20,609.52 | 90,031.19 | 1,33,246.20 | 96,261.95 | 14,731 | 10,642 | 3,398 | 2,811 | 6,209 | 6.9 |
| 2000 | 5,981.05 | 4,109.96 | 8,815.25 | 3,649.93 | 1,35,705.41 | 1,20,595.82 | 1,50,501.71 | 1,28,355.72 | 16,461 | 14,039 | 3,379 | 2,845 | 6,224 | 6.8 |
| 2001 | 6,768.70 | 5,028.75 | 10,033.74 | 4,137.97 | 1,59,198.90 | 1,34,339.88 | 1,76,001.33 | 1,43,506.59 | 18,106 | 14,763 | 3,380 | 2,914 | 6,294 | 6.5 |
| 2002 | 7,383.50 | 6,848.91 | 10,911.60 | 4,567.24 | 2,16,620.09 | 2,07,032.17 | 2,34,915.19 | 2,18,448.32 | 23,667 | 22,008 | 3,380 | 2,940 | 6,320 | 6.4 |
| 2003 | 7,995.72 | 7,488.71 | 12,110.58 | 5,220.14 | 2,41,394.39 | 2,14,735.11 | 2,61,500.68 | 2,27,443.97 | 25,824 | 22,461 | 3,360 | 2,957 | 6,317 | 6.2 |
| 2004* | 10,231.00 | 8,175.00 | 14,104.00 | 6,167.00 | 3,04,995.00 | 2,69,249.00 | 3,29,330.00 | 2,83,591.00 | 32,256 | 27,776 | 3,326 | 3,006 | 6,332 | 6.2 |

T-22

† आकडे, जून, १९७१ च्या दुसऱ्या शुक्रवारचे आहेत/ † Data relate to the second Friday of June, 1971

* सप्टेंबर, २००४ पर्यंत

टीप - आकडे संक्षिप्तता दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

N.A. = उपलब्ध नाही / Not Available.

* As on September, 2004

Note - Details may not add up to totals due to rounding.

Source - Reserve Bank of India, Mumbai.

T-23

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 21

अखिल भारतीय घाऊक किंमतींचे निर्देशांक

ALL INDIA WHOLESALE PRICE INDEX NUMBERS

(पायाभूत वर्ष / Base year: 1993-94=100)

| वर्ष/महिना Year / Month | प्रथमिक वस्तू Primary articles | इंधन, शक्ति, दिवाबत्ती व वंगण Fuel, power, light and lubricants | वस्तुनिर्माण उत्पादने Manufactured products | सर्व वस्तू All commodities |
|----------------------------|-----------------------------------|---|---|-------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) |
| भार / Weight | (22.025) | (14.226) | (63.749) | (100.000) |
| 1995-96 | 125.3 | 114.5 | 121.9 | 121.6 |
| 1996-97 | 135.8 | 126.4 | 124.4 | 127.2 |
| 1997-98 | 139.4 | 143.8 | 128.0 | 132.8 |
| 1998-99 | 156.2 | 148.5 | 133.6 | 140.7 |
| 1999-00 | 158.0 | 162.0 | 137.2 | 145.3 |
| 2000-01 | 162.5 | 208.1 | 141.7 | 155.7 |
| 2001-02 | 168.4 | 226.7 | 144.3 | 161.3 |
| 2002-03 | 174.0 | 239.2 | 148.1 | 166.8 |
| 2003-04 | 181.5 | 254.5 | 156.5 | 175.9 |
| 2004-05*(P) | 188.8 | 278.4 | 165.7 | 186.8 |
| जानेवारी/January,2004 | 182.2 | 261.7 | 159.0 | 178.7 |
| फेब्रुवारी/February,2004 | 182.4 | 262.2 | 160.6 | 179.8 |
| मार्च/March,2004 | 180.8 | 262.6 | 161.0 | 179.8 |
| एप्रिल/April, 2004 | 183.5 | 263.6 | 161.2 | 180.7 |
| मे/May, 2004 | 185.1 | 264.5 | 161.7 | 181.5 |
| जून/June, 2004 | 190.5 | 269.9 | 164.5 | 185.2 |
| जुलै/July, 2004 | 189.7 | 274.9 | 165.8 | 186.6 |
| ऑगस्ट/August, 2004 | 192.2 | 279.6 | 166.8 | 188.4 |
| सप्टेंबर/September, 2004 | 192.8 | 281.9 | 167.7 | 189.5 |
| ऑक्टोबर/October, 2004 | 191.3 | 281.9 | 167.4 | 188.9 |
| नोव्हेंबर/November, 2004 | 191.4 | 290.7 | 167.3 | 190.2 |
| डिसेंबर/December, 2004(P) | 186.4 | 288.7 | 167.0 | 188.6 |
| जानेवारी/January, 2005(P) | 185.4 | 287.9 | 167.4 | 188.5 |

* १० महिन्यांची सरासरी/ Average for 10 months

(P) अस्थायी / Provisional.

आधार - आर्थिक सल्लागार, वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नवी दिल्ली, यांचे कार्यालय.

Source - Office of the Economic Adviser, Ministry of Commerce and Industry, Government of India, New Delhi.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 22

औद्योगिक कामगारांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किंमतींचे निर्देशांक
ALL INDIA CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR INDUSTRIAL WORKERS

(पायाभूत वर्ष / Base year: 1982=100)

| वर्ष/महिना Year/Month (1) | खाद्यपदार्थ Food (2) | पान, सुपारी, तंबाखू व मादक पदार्थ Pan, supari, tobacco and intoxicants (3) | इंधन व दिवाबत्ती Fuel and light (4) | निवास Housing (5) | कापड, बिछाना व पादत्राणे Clothing, bedding, and footwear (6) | संकीर्ण Miscellaneous (7) | सर्वसाधारण निर्देशांक General index (8) |
|---------------------------------|----------------------------|---|---|-------------------------|---|---------------------------------|--|
| भार / Weight | 57.00 | 3.15 | 6.28 | 8.67 | 8.54 | 16.36 | 100.00 |
| 1990-91 | 199 | 243 | 186 | 185 | 154 | 187 | 193 |
| 1991-92 | 230 | 280 | 204 | 198 | 169 | 210 | 219 |
| 1992-93 | 254 | 315 | 220 | 212 | 185 | 233 | 240 |
| 1993-94 | 272 | 340 | 234 | 224 | 201 | 251 | 258 |
| 1994-95 | 304 | 368 | 243 | 237 | 227 | 273 | 284 |
| 1995-96 | 337 | 397 | 260 | 255 | 253 | 294 | 313 |
| 1996-97 | 369 | 432 | 295 | 280 | 271 | 322 | 342 |
| 1997-98 | 388 | 479 | 328 | 304 | 286 | 354 | 366 |
| 1998-99 | 445 | 515 | 353 | 389 | 296 | 386 | 414 |
| 1999-00 | 446 | 565 | 379 | 437 | 306 | 416 | 428 |
| 2000-01 | 453 | 592 | 454 | 463 | 315 | 442 | 444 |
| 2001-02 | 466 | 620 | 483 | 514 | 325 | 463 | 463 |
| 2002-03 | 477 | 633 | 534 | 556 | 332 | 489 | 482 |
| 2003-04 | 495 | 655 | 566 | 582 | 338 | 507 | 500 |
| 2004-05* | 507 | 673 | 609 | 631 | 345 | 522 | 518 |
| डिसेंबर/December, 2003 | 496 | 660 | 572 | 583 | 338 | 512 | 502 |
| जानेवारी/January, 2004 | 496 | 664 | 579 | 592 | 338 | 513 | 504 |
| फेब्रुवारी/February, 2004 | 495 | 667 | 584 | 592 | 342 | 514 | 504 |
| मार्च/March, 2004 | 494 | 667 | 590 | 592 | 342 | 515 | 504 |
| एप्रिल/April, 2004 | 494 | 669 | 592 | 592 | 344 | 515 | 504 |
| मे/May, 2004 | 499 | 669 | 595 | 592 | 345 | 517 | 508 |
| जून/June, 2004 | 504 | 669 | 598 | 592 | 346 | 518 | 512 |
| जुलै/July, 2004 | 505 | 670 | 604 | 651 | 346 | 519 | 517 |
| ऑगस्ट/August, 2004 | 511 | 670 | 610 | 651 | 345 | 521 | 522 |
| सप्टेंबर/September, 2004 | 512 | 675 | 616 | 651 | 346 | 523 | 523 |
| ऑक्टोबर/October, 2004 | 517 | 676 | 617 | 651 | 344 | 525 | 526 |
| नोव्हेंबर/November, 2004 | 514 | 677 | 620 | 651 | 344 | 527 | 525 |
| डिसेंबर/December, 2004 | 505 | 681 | 625 | 651 | 346 | 529 | 521 |

* ९ महिन्यांची सरासरी/Average for 9 months

आधार - श्रम केंद्र, भारत सरकार, सिमला.

Source - Labour Bureau, Government of India, Simla.

महाराष्ट्र राज्यातील निवडक केंद्रांमधील औद्योगिक कामगारांकरिता ग्राहक किंमतीचे निर्देशांक

CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR INDUSTRIAL WORKERS AT SELECTED CENTRES IN MAHARASHTRA STATE

(पायाभूत वर्ष/Base year 1982=100)

| वर्ष/महिना Year/Month (1) | मुंबई MUMBAI | | सोलापूर SOLAPUR | | नागपूर NAGPUR | | पुणे PUNE | | |
|---------------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|------|
| | खाद्यपदार्थ गट Food group (2) | सर्वसाधारण निर्देशांक General index (3) | खाद्यपदार्थ गट Food group (4) | सर्वसाधारण निर्देशांक General index (5) | खाद्यपदार्थ गट Food group (6) | सर्वसाधारण निर्देशांक General index (7) | खाद्यपदार्थ गट Food group (8) | सर्वसाधारण निर्देशांक General index (9) | |
| | भार/Weight | ... | 59.9 | 100.0 | 59.9 | 100.0 | 53.08 | 100.0 | 50.6 |
| 1992-93 | ... | 285 | 260 | 274 | 262 | 257 | 257 | 287 | 257 |
| 1993-94 | ... | 302 | 279 | 271 | 269 | 270 | 273 | 299 | 272 |
| 1994-95 | ... | 342 | 314 | 308 | 296 | 299 | 296 | 335 | 304 |
| 1995-96 | ... | 378 | 346 | 361 | 337 | 331 | 320 | 383 | 339 |
| 1996-97 | ... | 401 | 372 | 385 | 365 | 364 | 354 | 406 | 366 |
| 1997-98 | ... | 449 | 412 | 383 | 377 | 378 | 379 | 440 | 400 |
| 1998-99 | ... | 502 | 461 | 466 | 445 | 440 | 435 | 513 | 457 |
| 1999-00 | ... | 504 | 474 | 454 | 452 | 421 | 439 | 502 | 468 |
| 2000-01 | ... | 541 | 512 | 451 | 466 | 439 | 469 | 513 | 501 |
| 2001-02 | ... | 556 | 536 | 454 | 477 | 448 | 487 | 523 | 519 |
| 2002-03 | ... | 562 | 565 | 466 | 490 | 460 | 496 | 548 | 534 |
| 2003-04 | ... | 583 | 588 | 491 | 509 | 471 | 507 | 580 | 561 |
| 2004-05* | ... | 594 | 607 | 513 | 530 | 485 | 529 | 589 | 577 |
| जानेवारी/January, 2004 | ... | 585 | 593 | 515 | 528 | 469 | 509 | 582 | 568 |
| फेब्रुवारी/February, 2004 | ... | 585 | 594 | 518 | 530 | 467 | 508 | 578 | 564 |
| मार्च/March, 2004 | ... | 584 | 596 | 504 | 521 | 471 | 510 | 576 | 565 |
| एप्रिल/April, 2004 | ... | 584 | 597 | 510 | 526 | 473 | 512 | 577 | 566 |
| मे/May, 2004 | ... | 589 | 600 | 508 | 525 | 475 | 513 | 583 | 569 |
| जून/June, 2004 | ... | 593 | 601 | 510 | 526 | 478 | 515 | 593 | 575 |
| जुलै/July, 2004 | ... | 593 | 606 | 506 | 527 | 481 | 531 | 586 | 577 |
| ऑगस्ट/August, 2004 | ... | 598 | 610 | 514 | 532 | 495 | 539 | 598 | 583 |
| सप्टेंबर/September, 2004 | ... | 596 | 610 | 519 | 534 | 498 | 540 | 593 | 581 |
| ऑक्टोबर/October, 2004 | ... | 600 | 612 | 517 | 534 | 500 | 542 | 600 | 584 |
| नोव्हेंबर/November, 2004 | ... | 601 | 613 | 517 | 534 | 489 | 537 | 595 | 582 |
| डिसेंबर/December, 2004 | ... | 595 | 612 | 514 | 534 | 480 | 535 | 580 | 577 |

महत्त्वाच्या किंमत निर्देशांकांवर आधारित चलन वाढीचे दर
INFLATION RATES BASED ON IMPORTANT PRICE INDICES

| वर्ष/महिना Year/Month | चलनवाढीचे दर/Inflation Rates | | | | |
|---------------------------|--|--|---|--|--|
| | अखिल भारतीय घाऊक किमतीचा निर्देशांक All India wholesale price index number@ | औद्योगिक कामगारांसाठी अखिल भारतीय ग्राहक किमतीचा निर्देशांक All India consumer price index number for industrial workers+ | नागरी श्रमिकेतर कर्मचाऱ्यांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किमतीचा निर्देशांक All India consumer price index number for urban non-manual employees @@ | शेतमजुरांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किमतीचा निर्देशांक All India consumer price index number for agricultural labourers + | ग्रामीण मजुरांकरिता अखिल भारतीय ग्राहक किमतीचा निर्देशांक All India consumer price index number for rural labourers + |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) |
| 1992-93 | ... | 9.86 | 10.53 | 12.37 | ... |
| 1993-94 | ... | 7.28 | 6.93 | 3.48 | ... |
| 1994-95 | 12.58 | 10.27 | 9.49 | 11.94 | ... |
| 1995-96 | 7.99 | 9.96 | 9.48 | 10.74 | ... |
| 1996-97 | 4.63 | 9.43 | 9.27 | 9.10 | ... |
| 1997-98 | 4.38 | 6.84 | 6.89 | 3.39 | 3.77 |
| 1998-99 | 5.94 | 13.13 | 11.30 | 10.97 | 10.65 |
| 1999-00 | 3.33 | 3.42 | 4.51 | 4.43 | 4.33 |
| 2000-01 | 7.13 | 3.82 | 5.59 | (-) 0.33 | 0.08 |
| 2001-02 | 3.62 | 4.31 | 5.12 | 1.09 | 1.33 |
| 2002-03 | 3.38 | 3.98 | 3.78 | 3.16 | 3.13 |
| 2003-04 | 5.49 | 3.85 | 3.74 | 3.90 | 3.79 |
| 2004-05 | 6.68** | 3.69* | 3.55* | 2.62* | 2.60* |
| डिसेंबर/December, 2003 | 5.80 | 3.72 | 3.95 | 3.43 | 3.09 |
| जानेवारी/January, 2004 | 6.50 | 4.35 | 4.43 | 3.75 | 3.73 |
| फेब्रुवारी/February, 2004 | 6.14 | 4.13 | 3.92 | 3.11 | 3.40 |
| मार्च/March, 2004 | 4.78 | 3.49 | 3.41 | 2.47 | 2.45 |
| एप्रिल/April, 2004 | 4.39 | 2.23 | 2.91 | 1.53 | 1.83 |
| मे/May, 2004 | 4.67 | 2.83 | 2.89 | 1.83 | 1.82 |
| जून/June, 2004 | 6.68 | 3.02 | 3.36 | 1.82 | 1.81 |
| जुलै/July, 2004 | 7.61 | 3.19 | 3.09 | 2.11 | 1.80 |
| ऑगस्ट/August, 2004 | 8.46 | 4.61 | 4.05 | 3.02 | 3.00 |
| सप्टेंबर/September, 2004 | 7.92 | 4.81 | 4.05 | 3.31 | 3.29 |
| ऑक्टोबर/October, 2004 | 7.27 | 4.57 | 4.02 | 3.60 | 3.58 |
| नोव्हेंबर/November, 2004 | 7.41 | 4.17 | 4.03 | 3.30 | 3.28 |
| डिसेंबर/December, 2004 | 6.61 (P) | 3.78 | 3.56 | 3.01 | 2.99 |
| जानेवारी/January, 2005 | 5.48 (P) | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. |

N.A. = उपलब्ध नाही / Not available. (P) अस्थायी / Provisional

* ९ महिन्यांची सरासरी / Average for 9 months.

** १० महिन्यांची सरासरी / Average for 10 months.

टीप - चलनवाढ दर= मागील वर्षाच्या तत्सम कालावधीतील निर्देशांकापेक्षा चालू कालावधीतील निर्देशांकात झालेली टक्केवारीतील वाढ.

Note - Inflation rate= Percentage rise in the index of the current period over that of corresponding period of the previous year.

आधार - @ आर्थिक सल्लागार, वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नवी दिल्ली यांचे कार्यालय.

+ श्रम केंद्र, भारत सरकार, सिमला.

@@ केंद्रिय सांख्यिकीय संघटना, नवी दिल्ली.

Source - @ Office of Economic Advisor, Ministry of Commerce and Industry, Government of India, New Delhi.

+ Labour Bureau, Government of India, Simla.

@@ Central Statistical Organisation, New Delhi.

महाराष्ट्रातील नागरी भागाकरिता ग्राहक किंमतीचे गटवार निर्देशांक

GROUPWISE CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR URBAN MAHARASHTRA

(पायाभूत वर्ष/Base Year 1982=100)

| वर्ष/ महिना | खाद्यपदार्थ Food | पान, सुपारी आणि तंबाखू Pan,Supari and Tobacco | इंधन, वीज व दिवाबत्ती Fuel, power and Light | कापड, बिछाना व पादत्राणे Clothing, Bedding & Footwear | सकीर्ण Miscellaneous | सर्व वस्तू All Commo- dities | भाववाढीचा दर Inflation rate | Year/ Month |
|------------------|---------------------|--|--|---|-------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) |
| भार | 54.12 | 2.02 | 6.67 | 5.95 | 31.24 | 100.00 | ... | Weight |
| १९९०-९१ | 198 | 245 | 185 | 240 | 208 | 204 | 11.20 | 1990-91 |
| १९९१-९२ | 236 | 274 | 197 | 270 | 229 | 234 | 15.03 | 1991-92 |
| १९९२-९३ | 261 | 317 | 210 | 307 | 258 | 261 | 11.28 | 1992-93 |
| १९९३-९४ | 270 | 357 | 220 | 339 | 283 | 277 | 6.09 | 1993-94 |
| १९९४-९५ | 296 | 387 | 226 | 378 | 300 | 300 | 8.35 | 1994-95 |
| १९९५-९६ | 330 | 427 | 232 | 426 | 319 | 327 | 9.30 | 1995-96 |
| १९९६-९७ | 355 | 465 | 238 | 446 | 333 | 348 | 6.27 | 1996-97 |
| १९९७-९८ | 371 | 495 | 245 | 473 | 358 | 367 | 5.48 | 1997-98 |
| १९९८-९९ | 436 | 531 | 261 | 505 | 394 | 417 | 13.64 | 1998-99 |
| १९९९-०० | 424 | 576 | 273 | 512 | 429 | 424 | 1.58 | 1999-00 |
| २०००-०१ | 421 | 594 | 380 | 518 | 454 | 438 | 3.31 | 2000-01 |
| २००१-०२ | 430 | 608 | 420 | 538 | 481 | 455 | 4.00 | 2001-02 |
| २००२-०३ | 441 | 626 | 458 | 544 | 496 | 469 | 2.99 | 2002-03 |
| २००३-०४ | 457 | 645 | 461 | 550 | 502 | 481 | 2.56 | 2003-04 |
| २००३-०४* | 456 | 644 | 460 | 551 | 501 | 480 | 2.36 | 2003-04* |
| २००४-०५* | 472 | 657 | 470 | 551 | 511 | 492 | 2.56 | 2004-05* |
| जानेवारी, २००४ | 462 | 645 | 462 | 550 | 503 | 483 | 3.34 | January, 2004 |
| फेब्रुवारी, २००४ | 460 | 651 | 462 | 550 | 504 | 483 | 3.14 | February, 2004 |
| मार्च, २००४ | 458 | 647 | 463 | 544 | 507 | 483 | 2.68 | March, 2004 |
| एप्रिल, २००४ | 458 | 652 | 463 | 547 | 509 | 484 | 1.82 | April, 2004 |
| मे, २००४ | 460 | 664 | 469 | 552 | 509 | 486 | 1.96 | May, 2004 |
| जून, २००४ | 470 | 663 | 466 | 552 | 507 | 490 | 1.95 | June, 2004 |
| जुलै, २००४ | 471 | 657 | 470 | 557 | 508 | 491 | 1.73 | July, 2004 |
| ऑगस्ट, २००४ | 477 | 670 | 469 | 553 | 509 | 495 | 3.25 | August, 2004 |
| सप्टेंबर, २००४ | 482 | 645 | 472 | 552 | 508 | 497 | 3.96 | September, 2004 |
| ऑक्टोबर, २००४ | 480 | 654 | 470 | 553 | 512 | 497 | 2.70 | October, 2004 |
| नोव्हेंबर, २००४ | 478 | 656 | 473 | 546 | 514 | 497 | 3.03 | November, 2004 |
| डिसेंबर, २००४ | 470 | 655 | 479 | 548 | 521 | 495 | 2.68 | December, 2004 |

* ९ महिन्यांची सरासरी / Average for 9 months

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Economics & Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai

महाराष्ट्रातील ग्रामीण भागाकरिता ग्राहक किंमतीचे गटवार निर्देशांक

GROUPWISE CONSUMER PRICE INDEX NUMBERS FOR RURAL MAHARASHTRA

(पायाभूत वर्ष/Base Year 1982=100)

| वर्ष/ महिना (1) | खाद्यपदार्थ Food (2) | इंधन व दिवाबत्ती Fuel and Light (3) | कापड Clothing (4) | संकीर्ण Miscella- neous (5) | सर्व वस्तू All Commo- dities (6) | भाववाढीचा दर Inflation rate (7) | Year/ Month (1) |
|-----------------------|----------------------------|---|-------------------------|--------------------------------------|---|--|-----------------------|
| भार | 61.66 | 7.92 | 7.78 | 22.64 | 100.00 | ... | Weight |
| १९९०-९१ | 191 | 204 | 192 | 222 | 199 | 8.83 | 1990-91 |
| १९९१-९२ | 240 | 225 | 210 | 247 | 238 | 19.42 | 1991-92 |
| १९९२-९३ | 271 | 239 | 236 | 274 | 266 | 12.06 | 1992-93 |
| १९९३-९४ | 263 | 245 | 249 | 300 | 269 | 0.83 | 1993-94 |
| १९९४-९५ | 298 | 253 | 275 | 315 | 297 | 10.45 | 1994-95 |
| १९९५-९६ | 344 | 273 | 309 | 336 | 334 | 12.40 | 1995-96 |
| १९९६-९७ | 367 | 289 | 340 | 363 | 358 | 7.26 | 1996-97 |
| १९९७-९८ | 376 | 311 | 358 | 391 | 373 | 4.16 | 1997-98 |
| १९९८-९९ | 449 | 328 | 371 | 425 | 428 | 14.80 | 1998-99 |
| १९९९-०० | 445 | 342 | 378 | 468 | 437 | 2.07 | 1999-00 |
| २०००-०१ | 415 | 405 | 380 | 503 | 431 | (-) 1.22 | 2000-01 |
| २००१-०२ | 415 | 436 | 383 | 518 | 438 | 1.50 | 2001-02 |
| २००२-०३ | 426 | 456 | 394 | 522 | 448 | 2.28 | 2002-03 |
| २००३-०४ | 442 | 459 | 413 | 523 | 461 | 3.02 | 2003-04 |
| २००३-०४* | 438 | 457 | 410 | 520 | 458 | 2.28 | 2003-04* |
| २००४-०५* | 466 | 462 | 418 | 540 | 479 | 4.55 | 2004-05* |
| जानेवारी, २००४ | 457 | 464 | 423 | 530 | 471 | 5.38 | January, 2004 |
| फेब्रुवारी, २००४ | 459 | 465 | 419 | 533 | 473 | 5.51 | February, 2004 |
| मार्च, २००४ | 450 | 465 | 420 | 531 | 467 | 4.71 | March, 2004 |
| एप्रिल, २००४ | 448 | 453 | 415 | 537 | 466 | 3.60 | April, 2004 |
| मे, २००४ | 459 | 463 | 416 | 533 | 473 | 4.52 | May, 2004 |
| जून, २००४ | 461 | 462 | 416 | 535 | 474 | 3.91 | June, 2004 |
| जुलै, २००४ | 467 | 461 | 415 | 537 | 478 | 4.30 | July, 2004 |
| ऑगस्ट, २००४ | 471 | 465 | 416 | 534 | 481 | 4.80 | August, 2004 |
| सप्टेंबर, २००४ | 473 | 465 | 419 | 535 | 482 | 5.72 | September, 2004 |
| ऑक्टोबर, २००४ | 473 | 462 | 421 | 539 | 483 | 4.53 | October, 2004 |
| नोव्हेंबर, २००४ | 477 | 463 | 424 | 542 | 487 | 4.96 | November, 2004 |
| डिसेंबर, २००४ | 473 | 465 | 423 | 568 | 490 | 4.63 | December, 2004 |

* ९ महिन्यांची सरासरी / Average for 9 months

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Economics & Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 29

महाराष्ट्रातील अधिकृत शिधावाटप/रास्त भाव दुकानांना देण्यात आलेला तांदूळ व गहू
**QUANTITY OF RICE AND WHEAT ISSUED TO AUTHORISED RATION/
 FAIR PRICE SHOPS IN MAHARASHTRA**

(परिमाण लाख टनात/Quantity in lakh tonnes)

| वर्ष Year | तांदूळ/Rice | | | गहू/Wheat | | | शिधावाटप/ रास्त भावाच्या दुकानांची संख्या* No. of ration/fair price shops* |
|-------------------------------|---|-------------------------------------|---|---|-------------------------------------|---|--|
| | मुंबई शिधावाटप क्षेत्र Mumbai rationing area | इतर जिल्हे Other districts | एकूण (रकाना २+ रकाना ३) Total (Col. 2+ Col. 3) | मुंबई शिधावाटप क्षेत्र Mumbai rationing area | इतर जिल्हे Other districts | एकूण (रकाना ५+ रकाना ६) Total (Col.5+ Col.6) | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
| 98-99 (Total) | 1.48 | 5.27 | 6.75 | 1.53 | 10.14 | 11.67 | 43,285 |
| which TPDS | 0.02 | 2.40 | 2.42 | 0.03 | 4.17 | 4.20 | ... |
| 99-2000 (Total) | 1.28 | 5.61 | 6.89 | 1.33 | 9.34 | 10.67 | 45,827 |
| which TPDS | 0.02 | 2.44 | 2.46 | 0.02 | 4.17 | 4.19 | ... |
| 00-01 (Total) | 0.03 | 3.91 | 3.94 | 0.05 | 6.59 | 6.64 | 46,756 |
| which TPDS | 0.03 | 3.77 | 3.80 | 0.04 | 6.38 | 6.42 | ... |
| 01-02 (Total) | 0.02 | 5.16 | 5.18 | 0.05 | 8.48 | 8.53 | 48,655 |
| which TPDS | 0.02 | 5.01 | 5.02 | 0.04 | 8.27 | 8.31 | ... |
| 02-03 (Total) | 0.08 | 6.72 | 6.80 | 0.14 | 11.46 | 11.60 | 49,502 |
| which TPDS@ | 0.05 | 6.62 | 6.67 | 0.07 | 11.38 | 11.45 | ... |
| 03-04 (Total) | 0.06 | 7.15 | 7.21 | 0.16 | 13.25 | 13.41 | 49,921 |
| which TPDS@ | 0.06 | 7.10 | 7.16 | 0.09 | 12.95 | 13.04 | ... |
| 04-05 (Total upto Dec., 2004) | 0.07 | 6.06 | 6.13 | 0.14 | 10.99 | 11.13 | 50,160 |
| which TPDS@ | 0.05 | 6.01 | 6.06 | 0.06 | 10.78 | 10.84 | ... |

ही आकडेवारी कॅलेंडर वर्षासाठी आहे.

* This data pertains to calendar year.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 30

भारत सरकारकडून महाराष्ट्र राज्याला मिळालेले तांदूळ व गहू यांचे नियतन
**QUANTITY OF RICE AND WHEAT ALLOTTED BY GOVERNMENT OF INDIA TO
 MAHARASHTRA STATE**

(लाख टनात/Lakh tonnes)

| वर्ष Year | तांदूळ Rice | गहू Wheat |
|---------------------------------|----------------|--------------|
| (1) | (2) | (3) |
| 1998-99 (Total) | 7.23 | 11.69 |
| Of which TPDS | 2.54 | 4.72 |
| 1999-2000 (Total) | 7.63 | 11.69 |
| Of which TPDS | 2.54 | 4.72 |
| 2000-01 (Total) | 7.91 | 14.66 |
| Of which TPDS | 5.22 | 9.69 |
| 2001-02 (Total) | 9.23 | 17.12 |
| Of which TPDS | 6.54 | 12.16 |
| 2002-03 (Total) | 27.20 | 50.37 |
| Of which TPDS@ | 9.60 | 17.38 |
| 2003-04 (Total) | 26.10 | 48.34 |
| Of which TPDS | 9.61 | 17.83 |
| 2004-05 (Total upto Dec., 2004) | 20.11 | 35.72 |
| Of which TPDS@ | 7.74 | 12.84 |

- अंत्योदय अन्न योजनेची आकडेवारी लक्ष्य निर्धारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेअंतर्गत आकडेवारीमध्ये समाविष्ट केलेली आहे.

e - Figures of Antyodaya Anna Yojana included in of which TPDS

r - अन्न, नागरी पुरवठा व ग्राहक संरक्षण विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

rce - Food, Civil Supplies and Consumer Protection Department, Government of Maharashtra, Mumbai.

भारतातील औद्योगिक उत्पादनाचे निर्देशांक
INDEX NUMBERS OF INDUSTRIAL PRODUCTION IN INDIA

(पायाभूत वर्ष/Base year 1993-94 = 100)

| अनुक्रमांक Serial No. (1) | बाब (2) | भार/ Weight (3) | 1998-99 (4) | 1999-00 (5) | 2000-01 (6) | 2001-02 (7) | 2002-03 (8) | 2003-04 (9) | Item (2) |
|------------------------------------|--|-----------------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|---|
| I | सर्वसाधारण निर्देशांक | 100.00 | 145.2 | 154.9 | 162.7 | 167.0 | 176.6 | 188.7 | General Index |
| II | खाणकाम व दगड खाणकाम | 10.47 | 125.4 | 126.7 | 131.4 | 131.9 | 139.6 | 146.7 | Mining and quarrying |
| III | वस्तुनिर्माण | 79.36 | 148.8 | 159.4 | 167.9 | 172.7 | 183.1 | 196.3 | Manufacturing |
| | उद्योग गट | | | | | | | | Industry groups |
| 1 | खाद्य उत्पादने | 9.08 | 134.7 | 140.3 | 154.5 | 152.0 | 168.7 | 168.3 | Food products |
| 2 | पेये, तंबाखू व संबंधित उत्पादने | 2.38 | 178.5 | 192.1 | 200.4 | 224.8 | 287.6 | 314.7 | Beverages, tobacco and related products |
| 3 | सुती वस्त्रोद्योग | 5.52 | 115.9 | 123.7 | 127.3 | 124.5 | 121.2 | 117.2 | Cotton textiles |
| 4 | लोकर, रेशीम व मनुष्यनिर्मित धागा वस्त्र | 2.26 | 176.8 | 197.8 | 209.3 | 218.5 | 225.1 | 239.0 | Wool, silk & man made fibre textiles |
| 5 | ताग व इतर वनस्पतीजन्य धागावस्त्र (कापूस सोडून) | 0.59 | 106.0 | 105.0 | 105.8 | 99.6 | 107.9 | 103.4 | Jute & other veg. fibre textiles (except cotton) |
| 6 | कापडाची उत्पादने (परिधान करण्याची वस्त्रे धरून) | 2.54 | 153.1 | 156.1 | 162.4 | 166.3 | 190.3 | 183.1 | Textile products (including wearing apparels) |
| 7 | लाकूड, लाकडाची उत्पादने आणि फर्निचर इ. | 2.70 | 121.0 | 101.4 | 104.3 | 92.8 | 76.5 | 81.7 | Wood, wood products and furniture etc. |
| 8 | कागद आणि कागदाची उत्पादने व मुद्रण, प्रकाशन इ. | 2.65 | 169.8 | 180.5 | 164.0 | 169.0 | 180.5 | 209.2 | Paper and paper products & printing, publishing etc. |
| 9 | चामडे आणि चामड्याची उत्पादने | 1.14 | 119.1 | 135.5 | 150.0 | 158.0 | 152.9 | 146.3 | Leather & leather products |
| 10 | रसायने व रासायनिक उत्पादने (पेट्रोलियम व कोळसा यांची उत्पादने सोडून) | 14.00 | 149.7 | 164.6 | 176.6 | 185.0 | 191.8 | 207.5 | Chemicals and chemical products (except products of petroleum & coal) |
| 11 | रबर, प्लॅस्टिक, पेट्रोलियम व कोळसा यांची उत्पादने | 5.73 | 138.7 | 137.2 | 153.4 | 170.4 | 179.7 | 187.8 | Rubber, plastic, petroleum and coal products |
| 12 | अधातू खनिज उत्पादने | 4.40 | 177.5 | 220.8 | 218.2 | 220.7 | 232.0 | 240.5 | Non-metallic mineral products |
| 13 | मूलभूत धातू व मिश्र धातू उद्योग | 7.45 | 139.9 | 146.9 | 149.6 | 156.0 | 170.4 | 185.9 | Basic metal & alloys industries |
| 14 | धातूची उत्पादने व सुटे भाग (यंत्रे व यंत्रसामग्री सोडून) | 2.81 | 139.5 | 137.8 | 158.5 | 142.6 | 151.7 | 156.9 | Metal products & parts (except machinery & equipment) |
| 15 | यंत्रे व यंत्रसामग्री (परिवहन सामग्री सोडून) | 9.57 | 155.0 | 182.5 | 195.8 | 198.3 | 201.4 | 232.0 | Machinery & equipment (except transport equipment) |
| 16 | परिवहन सामग्री व सुटे भाग | 3.98 | 183.6 | 194.1 | 190.3 | 203.3 | 232.9 | 272.4 | Transport equipment and parts |
| 17 | इतर वस्तुनिर्माण उद्योग | 2.56 | 169.7 | 142.5 | 159.1 | 173.2 | 173.3 | 184.6 | Other manufacturing industries |
| IV | विद्युत | 10.17 | 138.4 | 148.5 | 154.4 | 159.2 | 164.3 | 172.5 | Electricity |

आधार - केंद्रीय सांख्यिकीय संघटना, नवी दिल्ली.

Source - Central Statistical Organisation, New Delhi.

महाराष्ट्र राज्यातील उद्योगांच्या महत्त्वाच्या बाबी
IMPORTANT CHARACTERISTICS OF INDUSTRIES IN MAHARASHTRA STATE

(रुपये कोटीत/Rs in crore)

| उद्योग गट | वर्ष Year | स्थिर | खेळते | कामगारांचे | एकूण उत्पादन | | वापरलेला | एकूण | मूल्यवृद्धी | | Industry groups |
|---|--------------|-------------------------|---------------------------|--------------------------|--------------|------------|----------|-------------------------|-------------|------------|---|
| | | भांडवल Fixed capital | भांडवल Working capital | वेतन Wages to workers | Total output | मूल्य | माल | निविष्टी Total input | Value added | मूल्य | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (1) |
| | | | | | मूल्य | एकूणशी | Material | Total | मूल्य | एकूणशी | |
| | | | | | Value | टक्केवारी | consumed | input | Value | टक्केवारी | |
| | | | | | | Percentage | | | | Percentage | |
| | | | | | | to total | | | | to total | |
| (1) खाद्य उत्पादने, पेये व तंबाखूची उत्पादने | 2001-02 | 7,019 | 1,703 | 821 | 29,067 | 15.9 | 19,537 | 24,605 | 3,764 | 12.6 | Food products, beverages and tobacco products |
| | 2002-03 | 7,688 | 945 | 827 | 34,647 | 15.9 | 22,545 | 30,186 | 3,716 | 10.6 | |
| (2) वस्त्रोद्योग आणि परिधान करण्याची वस्त्रे इ. | 2001-02 | 6,386 | (-) 328 | 729 | 12,011 | 6.6 | 6,627 | 10,113 | 1,270 | 4.3 | Textiles, wearing apparels etc. |
| | 2002-03 | 6,213 | (-) 894 | 737 | 12,280 | 5.6 | 6,717 | 10,199 | 1,453 | 4.1 | |
| (3) चामडे आणि चामड्याची उत्पादने | 2001-02 | 17 | 35 | 6 | 143 | 0.1 | 55 | 113 | 27 | 0.1 | Leather and leather products |
| | 2002-03 | 18 | 49 | 6 | 190 | 0.1 | 111 | 152 | 34 | 0.1 | |
| (4) लाकूड व लाकडाची उत्पादने | 2001-02 | 107 | 48 | 14 | 272 | 0.2 | 139 | 212 | 49 | 0.2 | Wood and wood products |
| | 2002-03 | 200 | 44 | 14 | 336 | 0.2 | 165 | 255 | 57 | 0.2 | |
| (5) कागद आणि कागदाची उत्पादने, प्रकाशन, मुद्रण इ. | 2001-02 | 3,387 | 1,106 | 208 | 5,860 | 3.2 | 2,828 | 4,042 | 1,533 | 5.1 | Paper and paper products, publishing, printing etc. |
| | 2002-03 | 3,968 | 602 | 205 | 6,138 | 2.8 | 2,887 | 4,724 | 1,039 | 3.0 | |
| (6) शुद्ध पेट्रोलियम, रबर, प्लॅस्टिक उत्पादने | 2001-02 | 6,610 | 1,527 | 354 | 27,069 | 14.8 | 19,723 | 21,526 | 4,938 | 16.5 | Refined petroleum, rubber, plastic products |
| | 2002-03 | 7,403 | 867 | 381 | 37,688 | 17.3 | 26,290 | 28,031 | 9,038 | 25.7 | |
| (7) रसायने व रासायनिक उत्पादने | 2001-02 | 14,043 | 4,740 | 899 | 32,519 | 17.8 | 15,756 | 24,159 | 6,946 | 23.2 | Chemicals and chemical products |
| | 2002-03 | 13,808 | 5,157 | 876 | 33,639 | 15.4 | 16,546 | 25,067 | 7,157 | 20.4 | |
| (8) अधातू खनिज उत्पादने | 2001-02 | 2,890 | 594 | 146 | 3,285 | 1.8 | 1,277 | 2,283 | 778 | 2.6 | Non-metallic mineral products |
| | 2002-03 | 3,262 | 641 | 149 | 3,567 | 1.6 | 1,258 | 2,633 | 711 | 2.0 | |
| (9) मूलभूत धातू, रिसायक्लिंग | 2001-02 | 8,792 | (-) 1,313 | 278 | 11,397 | 6.2 | 7,529 | 10,316 | 480 | 1.6 | Basic metals & recycling |
| | 2002-03 | 13,611 | (-) 1,500 | 335 | 17,904 | 8.2 | 11,855 | 16,010 | 1,082 | 3.1 | |

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 32 - contd.

(रुपये कोटीत/Rs. in crore)

| उद्योग गट | वर्ष Year | स्थिर भांडवल Fixed capital | खेळते भांडवल Working capital | कामगारांचे वेतन Wages to workers | एकूण उत्पादन Total output | | वापरलेला माल Material consumed | एकूण निविष्टी Total input | मूल्यवृद्धी Value added | | Industry groups |
|---|--------------|-------------------------------------|---------------------------------------|--|------------------------------|---|---|------------------------------------|----------------------------|---|--|
| | | | | | मूल्य Value | एकूणशी टक्केवारी Percentage to total | | | मूल्य Value | एकूणशी टक्केवारी Percentage to total | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (1) |
| (10) धातूच्या तयार वस्तू | 2001-02 | 2,356 | 79 | 249 | 5,184 | 2.8 | 2,612 | 4,056 | 878 | 2.9 | Fabricated metal products |
| | 2002-03 | 2,104 | 1,144 | 283 | 6,402 | 2.9 | 2,923 | 4,983 | 1,162 | 3.3 | |
| (11) यंत्रे व यंत्रसामग्री | 2001-02 | 6,476 | 3,322 | 894 | 21,624 | 11.9 | 11,559 | 16,551 | 4,321 | 14.5 | Machinery and equipment |
| | 2002-03 | 9,070 | 4,352 | 937 | 28,044 | 12.8 | 15,714 | 22,133 | 4,879 | 13.9 | |
| (12) वैद्यकीय, अचूक मोजमापनाची व ऑप्टिकल साधने इ. | 2001-02 | 433 | 338 | 42 | 1,180 | 0.7 | 487 | 806 | 342 | 1.1 | Medical, precision and optical instruments etc. |
| | 2002-03 | 309 | 290 | 58 | 1,188 | 0.5 | 520 | 739 | 411 | 1.2 | |
| (13) मोटार वाहने, ट्रेलर्स आणि इतर परिवहन सामग्री | 2001-02 | 7,049 | 1,031 | 638 | 15,266 | 8.4 | 9,486 | 11,592 | 2,796 | 9.4 | Motor vehicles, trailers and other transport equipment |
| | 2002-03 | 7,220 | (-)122 | 681 | 23,696 | 10.9 | 16,521 | 19,732 | 3,057 | 8.7 | |
| (14) फर्निचर | 2001-02 | 2,563 | 3,266 | 218 | 13,163 | 7.2 | 7,442 | 11,392 | 1,505 | 5.0 | Furniture |
| | 2002-03 | 969 | 2,266 | 268 | 9,854 | 4.5 | 6,013 | 8,677 | 1,063 | 3.0 | |
| (15) इतर | 2001-02 | 775 | 288 | 52 | 4,495 | 2.5 | 193 | 4,155 | 274 | 0.9 | Others |
| | 2002-03 | 596 | 166 | 40 | 2,777 | 1.3 | 151 | 2,442 | 290 | 0.8 | |
| एकूण | 2001-02 | 68,903 | 16,437 | 5,548 | 1,82,533 | 100.0 | 1,05,252 | 1,45,923 | 29,901 | 100.0 | Total |
| | 2002-03 | 76,439 | 14,007 | 5,797 | 2,18,351 | 100.0 | 1,30,216 | 1,75,964 | 35,149 | 100.0 | |

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai

महाराष्ट्रातील निवडक उद्योग गटांतील कारखान्यांची रोजगार आकारवर्गाप्रमाणे टक्केवारी २००२-०३
**PERCENTAGE DISTRIBUTION OF FACTORIES BY SIZE CLASS OF EMPLOYMENT
 IN SELECTED INDUSTRY GROUPS IN MAHARASHTRA 2002-03**

| रोजगार आकार वर्ग | खाद्य, पेये व तंबाखू उत्पादने | वस्त्रोद्योग आणि परिधान वस्त्रे इ. करण्याची वस्त्रे इ. | कागद आणि कागदाची उत्पादने, प्रकाशन, मृद्रण इ. | रसायने व रासायनिक उत्पादने | शुद्ध पेट्रोलियम, रबर, प्लॅस्टिक यांची उत्पादने | मूलभूत धातू, रिसायक्लींग | धातूच्या तयार वस्तू | यंत्रे व यंत्रसामग्री | मोटर वाहने, ट्रॅलर्स आणि इतर परिवहन सामग्री | सर्व उद्योग | Size class of employment |
|------------------|-------------------------------|--|---|----------------------------|---|--------------------------|---------------------|-----------------------|---|--------------|--------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (1) |
| २० पेक्षा कमी | 51.8 | 46.0 | 59.1 | 44.8 | 68.9 | 49.5 | 59.9 | 52.8 | 42.6 | 52.9 | Below 20 |
| २०-४९ | 20.3 | 26.6 | 30.1 | 28.4 | 15.9 | 29.8 | 23.7 | 26.0 | 30.7 | 24.9 | 20-49 |
| ५०-९९ | 9.6 | 15.6 | 5.9 | 12.2 | 9.0 | 11.0 | 9.1 | 11.0 | 14.5 | 11.2 | 50-99 |
| १००-१९९ | 7.5 | 5.9 | 3.1 | 7.3 | 3.1 | 4.6 | 4.9 | 5.9 | 7.0 | 5.7 | 100-199 |
| २००-४९९ | 5.5 | 3.5 | 1.4 | 5.4 | 2.1 | 3.7 | 1.7 | 3.0 | 3.4 | 3.4 | 200-499 |
| ५०० आणि जास्त | 5.3 | 2.4 | 0.5 | 2.0 | 1.0 | 1.4 | 0.7 | 1.2 | 2.0 | 1.9 | 500 and above |
| एकूण | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | Total |

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai

महाराष्ट्रातील निवडक उद्योग गटांतील कारखान्यांची स्थिर भांडवल आकारवर्गाप्रमाणे टक्केवारी २००२-०३
**PERCENTAGE DISTRIBUTION OF FACTORIES BY SIZE CLASS OF FIXED CAPITAL
 IN SELECTED INDUSTRY GROUPS IN MAHARASHTRA 2002-03**

| स्थिर भांडवल आकार वर्ग | खाद्य, पेये व तंबाखू यांची उत्पादने | वस्त्रोद्योग आणि परिधान कपड्यांची वस्त्रे इ. | कामद आणि कागदाची उत्पादने, प्रकाशन, मुद्रण इ. | रसायने व रासायनिक उत्पादने | शुद्ध पेट्रोलियम, रबर, प्लॅस्टिक यांची उत्पादने | मूलभूत धातू, रिसायक्लिंग | धातूच्या यंत्र व यंत्रसामग्री | यंत्रे व यंत्रसामग्री | मोटर वाहने, ट्रेलर्स आणि इतर परिवहन सामग्री | सर्व उद्योग | Size class of fixed capital |
|---------------------------|---|---|---|----------------------------------|--|--------------------------------|-------------------------------------|--------------------------|--|----------------|--------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (1) |
| २.५ लाखापेक्षा कमी | 23.0 | 25.7 | 10.3 | 9.1 | 19.4 | 12.0 | 19.8 | 16.2 | 7.5 | 18.2 | Less than 2.5 lakh |
| २.५ लाख ते ५.० लाख | 8.9 | 8.1 | 10.4 | 4.1 | 8.4 | 2.7 | 11.4 | 9.9 | 2.7 | 8.3 | 2.5 lakh to 5.0 lakh |
| ५.० लाख ते ७.५ लाख | 6.5 | 7.5 | 2.6 | 4.2 | 6.1 | 3.4 | 9.5 | 6.3 | 6.0 | 6.2 | 5.0 lakh to 7.5 lakh |
| ७.५ लाख ते १०.० लाख | 5.0 | 3.5 | 10.2 | 6.2 | 3.7 | 3.4 | 5.0 | 3.9 | 2.1 | 4.7 | 7.5 lakh to 10.0 lakh |
| १०.० लाख ते १५.० लाख | 6.1 | 7.4 | 8.2 | 6.9 | 10.3 | 9.5 | 4.1 | 10.3 | 8.1 | 7.5 | 10.0 lakh to 15.0 lakh |
| १५.० लाख ते २०.० लाख | 2.8 | 7.6 | 7.6 | 3.8 | 1.4 | 4.2 | 5.9 | 4.0 | 7.8 | 4.9 | 15.0 lakh to 20.0 lakh |
| २०.० लाख ते ५०.० लाख | 13.5 | 15.8 | 22.2 | 19.5 | 14.4 | 22.8 | 15.6 | 20.3 | 19.4 | 17.4 | 20.0 lakh to 50.0 lakh |
| ५०.० लाख ते १ कोटी | 7.7 | 9.8 | 11.8 | 10.4 | 10.4 | 14.2 | 13.6 | 9.0 | 10.9 | 10.3 | 50.0 lakh to 1 crore |
| १ कोटी ते ५ कोटी | 14.9 | 9.6 | 11.3 | 21.3 | 16.9 | 16.2 | 11.0 | 13.9 | 26.1 | 14.8 | 1 crore to 5 crore |
| ५ कोटी व त्याहून जास्त | 11.5 | 5.0 | 5.5 | 14.5 | 9.0 | 11.7 | 4.2 | 6.3 | 9.5 | 7.8 | 5 crore and above |
| एकूण | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | Total |

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

महाराष्ट्र राज्यातील उद्योगांकरिता ढोबळ उद्योग गट समूहानुसार महत्त्वाची गुणोत्तरे
IMPORTANT RATIOS FOR BROAD GROUPS OF INDUSTRY DIVISIONS OF INDUSTRIES IN MAHARASHTRA STATE

| ढोबळ उद्योग गट समूह | वर्ष Year | स्थिर भांडवलाचे | स्थिर | निव्वळ मूल्यवृद्धीचे | उत्पादनाचे | वापरलेल्या | Broad groups of Industry divisions (1) |
|---|--|---|--|--|--|--|---|
| | | निव्वळ मूल्यवृद्धीशी गुणोत्तर Fixed capital to net value added ratio (3) | भांडवलाचे उत्पादनाशी गुणोत्तर Fixed capital to output ratio (4) | स्थूल उत्पादनाशी गुणोत्तर Net value added to gross output ratio (5) | निविष्टीशी गुणोत्तर Output to input ratio (6) | मालाचे उत्पादनाशी गुणोत्तर Material input to output ratio (7) | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | |
| खाद्य उत्पादने, पेये व तंबाखूची उत्पादने | 2000-01 2001-02 2002-03 | 2.10 1.86 2.07 | 0.23 0.24 0.22 | 0.11 0.13 0.11 | 1.15 1.18 1.15 | 0.67 0.67 0.65 | Food products, beverages and tobacco products |
| त्रस्त्रोद्योग, परिधान करण्याची वस्त्रे इ. | 2000-01 2001-02 2002-03 | 3.46 5.03 4.28 | 0.38 0.53 0.51 | 0.14 0.11 0.12 | 1.22 1.19 1.20 | 0.55 0.55 0.55 | Textiles, wearing apparels, etc. |
| चामडे आणि चामड्याची उत्पादने, लाकूड, कागदाची उत्पादने, प्रकाशन, मुद्रण इ. | 2000-01 2001-02 2002-03 | 3.52 2.18 3.70 | 0.57 0.56 0.63 | 0.16 0.26 0.17 | 1.27 1.44 1.30 | 0.55 0.48 0.47 | Leather and leather products, wood, paper products, publishing, printing etc. |
| शुद्ध पेट्रोलियम, रसायने, रबर, प्लॅस्टिक उत्पादने इ. | 2000-01 2001-02 2002-03 | 1.57 1.74 1.31 | 0.32 0.35 0.30 | 0.21 0.20 0.23 | 1.31 1.30 1.34 | 0.61 0.60 0.60 | Refined petroleum, chemicals, rubber and plastic products etc. |
| अधातू खनिज उत्पादने, मूलभूत आणि धातूच्या लयार वस्तू | 2000-01 2001-02 2002-03 | 5.31 6.57 6.42 | 0.64 0.71 0.68 | 0.12 0.11 0.11 | 1.20 1.19 1.18 | 0.54 0.57 0.58 | Non-metallic mineral products, basic metal and fabricated metal products |
| यंत्रे, परिवहन सामग्री आणि इतर यंत्र सामग्री | 2000-01 2001-02 2002-03 | 2.11 1.90 2.05 | 0.39 0.37 0.31 | 0.18 0.19 0.15 | 1.29 1.31 1.24 | 0.58 0.57 0.62 | Machinery, transport equipment and other equipment |
| सर्व उद्योग महाराष्ट्र | 2000-01 2001-02 2002-03 | 2.23 2.30 2.17 | 0.36 0.38 0.35 | 0.16 0.16 0.16 | 1.25 1.25 1.24 | 0.59 0.58 0.60 | All Industries Maharashtra |
| सर्व उद्योग भारत | 2000-01 2001-02 2002-03 | 2.77 2.99 2.57 | 0.43 0.45 0.39 | 0.16 0.15 0.15 | 1.24 1.24 1.23 | 0.60 0.61 0.62 | All Industries India |

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 36

**महाराष्ट्र राज्यातील उद्योगांना वित्तीय संस्थांनी मंजूर केलेले व वितरित केलेले अर्थसहाय्य
FINANCIAL ASSISTANCE SANCTIONED AND DISBURSED BY FINANCIAL INSTITUTIONS
TO THE INDUSTRIES IN MAHARASHTRA STATE**

(कोटी रुपये /Rs. in crore)

| अनु- क्रमांक Serial No. (1) | वित्तीय संस्था (2) | 1980-81 | | 1985-86 | | 1990-91 | | 2002-03 | | 2003-04 (Provisional) | | Financial institutions (2) |
|---|--|----------------------------|--------------------------|----------------------------|--------------------------|----------------------------|--------------------------|----------------------------|---------------------------|-----------------------------|---------------------------|---|
| | | मंजूर Sanctioned (3) | वाटप Disbursed (4) | मंजूर Sanctioned (5) | वाटप Disbursed (6) | मंजूर Sanctioned (7) | वाटप Disbursed (8) | मंजूर Sanctioned (9) | वाटप Disbursed (10) | मंजूर Sanctioned (11) | वाटप Disbursed (12) | |
| 1 | भारतीय औद्योगिक वित्त महामंडळ मर्यादित | 36.52 | 23.37 | 83.92 | 57.03 | 407.77 | 251.93 | 649.49 (33%) | 527.65 (30%) | ... | 100.62 (36%) | Industrial Finance Corporation of India Ltd |
| 2 | आयसीआयसीआय मर्यादित | 85.00 | 52.00 | 112.00 | 93.00 | 1,113.43 | 379.30 | ... | ... | ... | ... | ICICI Ltd. @ |
| 3 | भारतीय औद्योगिक विकास बँक | 208.82 | 188.65 | 567.84 | 353.30 | 1,271.68 | 700.15 | 2,352.10 (39%) | 2,593.20 (41%) | 1,003.60 (21%) | 1,040.00 (22%) | Industrial Development Bank of India * |
| 4 | भारतीय लघु उद्योग विकास बँक | ... | ... | ... | ... | 306.73 | 227.24 | 2,575.88 (24%) | 1,596.61 (24%) | N.A. | N.A. | Small Industries Development Bank of India |
| 5 | भारतीय उद्योग गुंतवणूक बँक मर्या. | 0.38 | ... | 14.44 | 6.24 | 33.54 | 25.54 | N.A. | N.A. | N.A. | N.A. | Industrial Investment Bank of India Ltd |
| 6 | महाराष्ट्र राज्य वित्तीय महामंडळ | 36.85 | 26.36 | 67.03 | 40.65 | 157.97 | 94.61 | 0.20 | 5.23 | 2.49 | 1.56 | Maharashtra State Financial Corporation |
| 7 | सिकॉम मर्यादित | 31.06 | 23.77 | 53.87 | 43.27 | 85.40 | 68.87 | 381.00 | 354.00 | 224.00 | 232.00 | SICOM Ltd. |
| 8 | युनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया | 14.02 | 21.92 | 235.80 | 166.46 | 1,006.27 | 901.58 | ... | ... | ... | ... | Unit Trust of India @ |
| 9 | भारतीय आयुर्विमा महामंडळ | 16.05 | 12.97 | 54.42 | 19.71 | 254.55 | 110.58 | 3,068.90 (71%) | 2,401.30 (39%) | 5,205.10 (19%) | 7,097.30 (45%) | Life Insurance Corporation of India |
| 10 | भारतीय सर्वसाधारण विमा महामंडळ | 17.20 | 27.40 | 30.72 | 14.05 | 108.34 | 52.25 | 66.60 (18%) | 61.80 (19%) | 316.00 (47%) | 296.50 (45%) | General Insurance ** Corporation of India |
| एकूण | | 445.90 | 376.44 | 1,220.04 | 793.71 | 4,745.68 | 2,812.05 | 9,094.17 | 7,539.79 | 6,751.19 | 8,767.98 | Total |

* पुनर्वित्तसहाय्य, हुंडी पुनर्वरणावळ व थेट अर्थसहाय्य मिळून एकूण अर्थसहाय्य/Aggregate Financial Assistance including refinance, bills financing and direct assistance कंसातील आकडे एकूण संख्येशी (भारत) महाराष्ट्राची टक्केवारी दर्शवतात/ Figures in brackets indicate percentage of Maharashtra to all India total.

@ युनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया व आयसीआयसीआय मर्यादित या संस्थांनी उद्योगांना वित्तीय सहाय्य देणे थांबविले आहे. / UTI and ICICI Ltd. has stopped of giving financial assistance to the industries

** यामध्ये वित्तीय संस्थांचे बॉन्ड्स व शासनाची हमी असलेल्या बॉन्ड्सचा अंतर्भाव आहे. / Includes Bonds of Financial Institutions and Government guaranteed Bonds.

आधार - ह्या तक्त्यात उल्लेखिलेल्या वित्तीय संस्था

Source - Financial institutions mentioned in this table

महाराष्ट्र राज्यातील खनिजांचे उत्पादन MINERALS PRODUCTION IN MAHARASHTRA STATE

(उत्पादन हजार टनात/Quantity in thousand tonnes)

(मूल्य हजार रुपयात/Value in thousand Rs)

| अ.क्र. Sr. No | खनिज पदार्थ (2) | उत्पादन/मूल्य (3) | 1961* (4) | 1971* (5) | 1976* (6) | 1980-81 (7) | 1985-86 (8) | 1990-91 (9) | 1995-96 (10) | 2002-03 (11) | 2003-04 (Provisional) (12) | Quantity/ Value (3) | Minerals (2) |
|------------------|--------------------|-----------------------------|---------------|-----------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|-------------------|--------------------|----------------------------------|---------------------------|-------------------------------|
| 1 | क्रोमाईट | (i) उत्पादन | 1 | 3 | 3 | 2 | ... | ... | 2 | 0.03 | 0.33 | Quantity | Chromite |
| | | (ii) मूल्य | 108 | 468 | 650 | 539 | ... | ... | 1,323 | 50 | 1,328 | Value | |
| 2 | कोळसा | (i) उत्पादन | 856 | 2,085 | 3,490 | 5,770 | 11,569 | 16,848 | 22,815 | 31,359 | 32,912 | Quantity | Coal |
| | | (ii) मूल्य | 18,643 | 74,517 | 2,07,899 | 6,68,090 | 20,27,273 | 47,24,381 | 110,96,766 | 2,48,47,600 | 2,60,78,152 | Value | |
| 3 | कच्चे लोखंड | (i) उत्पादन | 362 | 613 | 757 | 1,456 | 1,399 | 645 | 172 | 36 | 35 | Quantity | Iron ore |
| | | (ii) मूल्य | 5,099 | 6,933 | 12,224 | 65,657 | 59,235 | 38,427 | 11,427 | 5,342 | 4,915 | Value | |
| 4 | चुनखडी | (i) उत्पादन | 55 | 363 | 593 | 715 | 1,803 | 5,135 | 5,980 | 8,892 | 10,207 | Quantity | Limestone |
| | | (ii) मूल्य | 230 | 3,316 | 8,029 | 16,318 | 61,263 | 1,96,850 | 3,67,600 | 7,68,034 | 8,77,953 | Value | |
| 5 | कच्चे मँगनीज | (i) उत्पादन | 179 | 218 | 200 | 232 | 235 | 276 | 321 | 396 | 454 | Quantity | Manganese ore |
| | | (ii) मूल्य | 20,625 | 14,784 | 31,667 | 55,315 | 1,58,508 | 1,61,462 | 3,67,649 | 7,87,937 | 9,21,341 | Value | |
| 6 | केओलिन(नैसर्गिक) | (i) उत्पादन | 2 | 3 | 4 | 5 | 13 | 3 | 5 | 0.4 | 0.2 | Quantity | Kaolin |
| | | (ii) मूल्य | 13 | 16 | 37 | 114 | 305 | 94 | 431 | 44 | 19 | Value | |
| 7 | बाँक्सईट | (i) उत्पादन | 27 | 302 | 294 | 365 | 399 | 543 | 724 | 978 | 1,168 | Quantity | Bauxite |
| | | (ii) मूल्य | 199 | 2,052 | 7,646 | 13,742 | 15,969 | 44,263 | 1,35,849 | 1,69,537 | 2,10,726 | Value | |
| 8 | मीठ | (i) उत्पादन | 384 | 472 | 433 | 540* | 375* | 229* | 224 | 197 | 204 | Quantity | Salt |
| 9 | डोलोमाईट | (i) उत्पादन | 6 | 5 | 7 | 27 | 21 | 28 | 36 | 62 | 59 | Quantity | Dolomite |
| | | (ii) मूल्य | 38 | 53 | 133 | 750 | 1,200 | 2,667 | 6,819 | 15,710 | 8,640 | Value | |
| 10 | सिलीका सँड | (i) उत्पादन | 5 | 27 | 67 | 89 | 185 | 197 | 144 | 194 | 238 | Quantity | Silica sand |
| | | (ii) मूल्य | 34 | 346 | 1,628 | 2,474 | 7,014 | 8,717 | 12,831 | 29,603 | 34,541 | Value | |
| 11 | फ्लोराईट (ग्रेडेड) | (i) उत्पादन | ... | ... | ... | ... | ... | 3 | 3 | 4 | 1 | Quantity | Fluorite (Graded) |
| | | (ii) मूल्य | ... | ... | ... | ... | ... | 2,444 | 4,161 | 7,206 | 3,270 | Value | |
| 12 | लॅटेराईट | (i) उत्पादन | ... | ... | ... | ... | ... | 85 | 263 | 140 | 250 | Quantity | Laterite |
| | | (ii) मूल्य | ... | ... | ... | ... | ... | 7,603 | 23,629 | 19,969 | 43,181 | Value | |
| 13 | कायनाईट | (i) उत्पादन | ... | 5 | 16 | 22 | 12 | 15 | 5 | 0.6 | 1.8 | Quantity | Kyanite |
| | | (ii) मूल्य | ... | 1,066 | 2,981 | 5,312 | 3,102 | 8,529 | 3,336 | 584 | 1,659 | Value | |
| 14 | इतर | (i) उत्पादन | ... | 4 | 92 | 544 | 1,250 | 912 | 442 | N.A. | N.A. | Quantity | Others** |
| | | (ii) मूल्य | ... | 36 | 1,839 | 2,717 | 19,597 | 19,610 | 13,333 | 31,32,662 | 31,31,596 | Value | |
| | | एकूण मूल्य (१ ते १४) | 44,989 | 1,03,587 | 2,74,733 | 8,31,028 | 23,53,466 | 52,15,047 | 120,45,154 | 2,97,84,278 | 3,13,17,321 | ... | Total Value (1 to 14)† |
| | | | (100) | (230) | (611) | (1,847) | (5,231) | (11,592) | (26,774) | (66,203) | (69,611) | ... | |

*आकडे कॅलेंडर वर्षाकरिता आहेत/ Figures for calendar year.

** कोरंडम, फायर क्ले, ओचिर, पायरोफायलाईट, स्फटिक, वाळू(इतर), सिलीमानाईट, शेल, स्टेटाईट आणि फेलस्पार, हे इतर खनिजांमध्ये अंतर्भूत आहेत

Others include minerals like Corandum, Fireclay, Ochere, Pyrophyllite, Quartz, Sand (others), Sillimanite, Shale, Steatite and Felspar.

टोप - (१) १९६१ चे पायाभूत वर्ष धरून कंसातील आकडे सापेक्ष टक्केवारी दर्शविताना.

(२) मिठाचे मूल्य एकूण मूल्यात अंतर्भूत केलेले नाही.

आधार - (१) इंडियन ब्युरो ऑफ माईन्स, भारत सरकार, नागपूर.

(२) सहाय्यक मीठ आयुक्त, भारत सरकार, मुंबई (फक्त मीठाकरिता).

Note - (1) Figures in the brackets show the percentage relative by taking 1961 as base

(2) † Value of salt is not included in the total value.

Source - (1) Indian Bureau of Mines, Government of India, Nagpur.

(2) Assistant Salt Commissioner, Government of India, Mumbai (for salt only).

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 38

कृषि गणनांनुसार महाराष्ट्रातील एकूण वहिती खातेदार, वहितीचे एकूण क्षेत्र व सरासरी क्षेत्र
**TOTAL NUMBER, AREA AND AVERAGE SIZE OF OPERATIONAL HOLDINGS IN
 MAHARASHTRA ACCORDING TO AGRICULTURAL CENSUSES**

| अनु- क्रमांक Serial No. | आकारवर्ग (हेक्टर) Size class (Hectare) | वहिती खातेदारांची संख्या Number of operational holdings (शंभरात/In hundred) | | | | वहितीचे एकूण क्षेत्र (शंभर हेक्टरसमध्ये) Area of operational holdings (In hundred hectares) | | | | वहितीचे सरासरी क्षेत्र (हेक्टर) Average size of holdings (hectare) | | | |
|----------------------------------|---|---|---------------|---------------|-----------------|--|-----------------|-----------------|-----------------|---|-------------|-------------|-------------|
| | | 1970-71 | 1980-81 | 1990-91 | 1995-96 | 1970-71 | 1980-81 | 1990-91 | 1995-96 | 1970-71 | 1980-81 | 1990-91 | 1995-96 |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (13) | (14) |
| 1 | Below 0.5 पेक्षा कमी | 6,834 | 9,914 | 16,672 | 22,409 | 1,634 | 2,630 | 4,119 | 5,746 | 0.24 | 0.27 | 0.25 | 0.26 |
| 2 | 0.5—1.0 | 5,585 | 9,345 | 16,075 | 20,252 | 4,142 | 7,103 | 12,057 | 15,120 | 0.74 | 0.76 | 0.75 | 0.75 |
| 3 | 1.0—2.0 | 8,783 | 15,409 | 27,276 | 31,755 | 12,842 | 23,337 | 39,833 | 46,059 | 1.46 | 1.51 | 1.46 | 1.45 |
| 4 | 2.0—3.0 | 6,266 | 10,275 | 13,969 | 14,745 | 15,386 | 25,363 | 33,689 | 35,420 | 2.46 | 2.47 | 2.41 | 2.40 |
| 5 | 3.0—4.0 | 4,606 | 6,583 | 7,289 | 6,774 | 15,920 | 22,815 | 25,108 | 23,303 | 3.46 | 3.47 | 3.44 | 3.44 |
| 6 | 4.0—5.0 | 3,576 | 4,601 | 4,469 | 3,874 | 15,961 | 20,556 | 19,864 | 17,210 | 4.46 | 4.47 | 4.44 | 4.44 |
| 7 | 5.0—10.0 | 8,715 | 9,316 | 7,241 | 5,558 | 61,213 | 63,937 | 48,700 | 37,150 | 7.02 | 6.86 | 6.73 | 6.68 |
| 8 | 10.0—20.0 | 4,180 | 2,819 | 1,530 | 1,029 | 56,302 | 37,213 | 19,749 | 13,514 | 13.47 | 13.20 | 12.91 | 13.13 |
| 9 | 20.0 व त्यापेक्षा अधिक/and above | 961 | 363 | 176 | 132 | 28,394 | 10,662 | 6,129 | 5,274 | 29.55 | 29.37 | 34.82 | 39.95 |
| एकूण / Total | | 49,506 | 68,625 | 94,697 | 1,06,528 | 2,11,794 | 2,13,616 | 2,09,248 | 1,98,796 | 4.28 | 3.11 | 2.21 | 1.87 |

आधार - कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे

Source - Commissionerate of Agriculture, Maharashtra State, Pune

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 39

महाराष्ट्रातील जमिनीच्या वापराची आकडेवारी
LAND UTILISATION STATISTICS OF MAHARASHTRA

(क्षेत्र शंभर हेक्टर्समध्ये/Area in hundred hectares)

| वर्ष Year | भौगोलिक क्षेत्र Geographical area | वनांखालील क्षेत्र Area under forests | मशागतीसाठी उपलब्ध नसलेले क्षेत्र Land not available for cultivation | | मशागत न केलेले इतर क्षेत्र Other uncultivated land | | | पडीत जमिनी Fallow lands | | पिकांखालील क्षेत्र Cropped Area | | पिकांखालील क्षेत्र Gross cropped area |
|--------------|--------------------------------------|---|--|---|---|--|---|----------------------------|-------------------------|---------------------------------------|---|--|
| | | | नापीक व मशागतीस अयोग्य जमीन Barren and uncultivable land | बिगर-शेती वा वापराखाली आणलेली जमीन Land put to non-agricultural uses | मशागत-योग्य पडीत जमीन Culturable waste land | कायमची कुरणे व चराऊ कुरणे Permanent pastures and grazing land | किरकोळ झाडे, झुडूपे यांच्या समूहाखालील क्षेत्र Miscellaneous tree crops and groves | चालू पड Current fallows | इतर पड Other fallows | निव्वळ पेरणी क्षेत्र Net area sown | दुसोटा/तिसोटा क्षेत्र Area sown more than once | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (13) |
| 1986-87 | 3,07,583 | 53,498 | 16,791 | 11,524 | 10,439 | 13,670 | 1,958 | 9,091 | 10,574 | 1,80,038 | 23,202 | 2,03,240 |
| 1987-88 | 3,07,583 | 53,050 | 16,216 | 11,791 | 9,455 | 12,707 | 1,894 | 9,890 | 11,191 | 1,81,389 | 28,034 | 2,09,423 |
| 1988-89 | 3,07,583 | 52,293 | 16,347 | 11,820 | 10,089 | 11,345 | 2,471 | 9,725 | 11,306 | 1,82,187 | 32,671 | 2,14,858 |
| 1989-90 | 3,07,583 | 51,259 | 16,138 | 10,921 | 9,839 | 11,120 | 2,965 | 8,811 | 10,901 | 1,85,629 | 31,048 | 2,16,677 |
| 1990-91 | 3,07,583 | 51,279 | 16,217 | 10,910 | 9,659 | 11,248 | 3,009 | 8,983 | 10,631 | 1,85,647 | 32,947 | 2,18,594 |
| 1991-92 | 3,07,583 | 51,341 | 16,354 | 11,656 | 9,666 | 11,377 | 2,832 | 14,155 | 11,254 | 1,78,948 | 22,386 | 2,01,334 |
| 1992-93 | 3,07,583 | 51,447 | 15,906 | 11,866 | 9,479 | 11,803 | 2,874 | 13,064 | 10,941 | 1,80,203 | 31,683 | 2,11,886 |
| 1993-94 | 3,07,583 | 51,460 | 15,624 | 12,811 | 9,430 | 11,726 | 2,728 | 9,785 | 12,138 | 1,81,881 | 32,209 | 2,14,090 |
| 1994-95 | 3,07,583 | 51,471 | 15,423 | 13,170 | 9,475 | 11,733 | 2,795 | 9,118 | 13,868 | 1,80,530 | 33,046 | 2,13,576 |
| 1995-96 | 3,07,583 | 51,480 | 15,435 | 13,486 | 9,596 | 11,663 | 2,921 | 10,724 | 12,478 | 1,79,800 | 35,240 | 2,15,040 |
| 1996-97 | 3,07,583 | 51,486 | 15,435 | 13,501 | 9,577 | 11,737 | 3,080 | 10,278 | 14,006 | 1,78,483 | 39,876 | 2,18,359 |
| 1997-98 | 3,07,583 | 51,481 | 15,438 | 13,504 | 9,632 | 11,798 | 3,304 | 10,805 | 14,406 | 1,77,215 | 36,623 | 2,13,838 |
| 1998-99 | 3,07,583 | 51,497 | 15,440 | 13,520 | 9,586 | 11,678 | 3,275 | 11,318 | 12,861 | 1,78,408 | 37,481 | 2,15,889 |
| 1999-00 | 3,07,583 | 53,651 | 16,979 | 12,448 | 8,894 | 13,405 | 2,241 | 11,540 | 11,513 | 1,76,912 | 46,600 | 2,23,512 |
| 2000-01 | 3,07,583 | 52,958 | 16,957 | 13,010 | 9,029 | 13,410 | 2,256 | 11,886 | 11,713 | 1,76,364 | 46,194 | 2,22,558 |
| 2001-02 | 3,07,583 | 52,155 | 17,205 | 13,739 | 9,143 | 12,491 | 2,456 | 12,163 | 11,918 | 1,76,313 | 47,734 | 2,24,047 |
| 2002-03 | 3,07,583 | 52,140 | 17,195 | 13,799 | 9,150 | 12,486 | 2,468 | 12,547 | 12,004 | 1,75,794 | 48,081 | 2,23,875 |

टीप - १९९९-०० ते २००२-०३ चे आकडे अस्थायी आहेत.

Note - The figures for 1999-00 to 2002-03 are provisional.

आधार - कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे

Source - Commissionerate of Agriculture, Maharashtra State, Pune

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 40

महाराष्ट्र राज्यातील मुख्य पिकांखालील क्षेत्र, पीक उत्पादन आणि दर हेक्टरी उत्पादन
**AREA UNDER PRINCIPAL CROPS, PRODUCTION AND YIELD PER HECTARE
 IN MAHARASHTRA STATE**

(क्षेत्र हजार हेक्टर्समध्ये/Area in thousand hectares)

उत्पादन शंभर टनामध्ये/Production in hundred tonnes

दर हेक्टरी उत्पादन किलोग्रॅममध्ये/Yield per hectare in kilogram

अन्नधान्ये

Foodgrains

| अनु- क्रमांक Serial No (1) | वर्ष Year (2) | तांदूळ/Rice | | | गहू/Wheat | | | ज्वारी/Jowar | | |
|--|---------------------|------------------------|------------------------------|--|------------------------|------------------------------|--|------------------------|-------------------------------|---|
| | | क्षेत्र Area (3) | उत्पादन Production (4) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (5) | क्षेत्र Area (6) | उत्पादन Production (7) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (8) | क्षेत्र Area (9) | उत्पादन Production (10) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (11) |
| 1 | 1960-61 | 1,300 | 13,692 | 1,054 | 907 | 4,011 | 442 | 6,284 | 42,235 | 672 |
| 2 | 1965-66 | 1,321 | 8,843 | 669 | 833 | 2,800 | 336 | 6,057 | 22,948 | 379 |
| 3 | 1970-71 | 1,352 | 16,622 | 1,229 | 812 | 4,403 | 542 | 5,703 | 15,574 | 273 |
| 4 | 1975-76 | 1,416 | 22,858 | 1,615 | 1,169 | 11,991 | 1,026 | 6,064 | 34,662 | 572 |
| 5 | 1980-81 | 1,459 | 23,147 | 1,587 | 1,063 | 8,862 | 834 | 6,469 | 44,085 | 681 |
| 6 | 1985-86 | 1,536 | 21,605 | 1,406 | 888 | 6,515 | 734 | 6,628 | 39,178 | 591 |
| 7 | 1990-91 | 1,597 | 23,436 | 1,467 | 867 | 9,093 | 1,049 | 6,300 | 59,292 | 941 |
| 8 | 1995-96 | 1,552 | 26,592 | 1,713 | 770 | 9,772 | 1,270 | 5,658 | 51,996 | 919 |
| 9 | 2000-01 | 1,512 | 19,297 | 1,277 | 754 | 9,476 | 1,256 | 5,094 | 39,878 | 783 |
| 10 | 2003-04 | 1,535 | 28,386 | 1,849 | 665 | 7,782 | 1,171 | 4,440 | 28,883 | 651 |

| अनु- क्रमांक Serial No (1) | वर्ष Year (2) | बाजरी/Bajri | | | सर्व तृणधान्ये/All cereals | | | तूर/Tur | | |
|--|---------------------|-------------------------|-------------------------------|---|----------------------------|-------------------------------|---|-------------------------|-------------------------------|---|
| | | क्षेत्र Area (12) | उत्पादन Production (13) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (14) | क्षेत्र Area (15) | उत्पादन Production (16) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (17) | क्षेत्र Area (18) | उत्पादन Production (19) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (20) |
| 1 | 1960-61 | 1,635 | 4,886 | 299 | 10,606 | 67,550 | 637 | 530 | 4,683 | 883 |
| 2 | 1965-66 | 1,828 | 3,698 | 202 | 10,512 | 40,374 | 384 | 564 | 2,480 | 440 |
| 3 | 1970-71 | 2,039 | 8,241 | 404 | 10,320 | 47,367 | 459 | 627 | 2,711 | 432 |
| 4 | 1975-76 | 1,808 | 5,600 | 310 | 10,931 | 78,687 | 720 | 676 | 4,078 | 604 |
| 5 | 1980-81 | 1,534 | 6,966 | 454 | 10,976 | 86,465 | 788 | 644 | 3,186 | 495 |
| 6 | 1985-86 | 1,717 | 4,198 | 245 | 11,209 | 75,540 | 674 | 758 | 4,541 | 599 |
| 7 | 1990-91 | 1,940 | 11,149 | 575 | 11,136 | 1,07,401 | 964 | 1,004 | 4,185 | 417 |
| 8 | 1995-96 | 1,732 | 9,718 | 561 | 10,120 | 1,02,818 | 1,016 | 1,039 | 6,055 | 583 |
| 9 | 2000-01 | 1,800 | 10,872 | 604 | 9,824 | 84,965 | 865 | 1,096 | 6,603 | 602 |
| 10 | 2003-04 | 1,325 | 8,963 | 676 | 8,568 | 83,670 | 977 | 1,046 | 6,930 | 662 |

| अनु- क्रमांक Serial No (1) | वर्ष Year (2) | हरभरा/Gram | | | सर्व कडधान्ये/All pulses | | | सर्व अन्नधान्ये/All foodgrains | | |
|--|---------------------|-------------------------|-------------------------------|---|--------------------------|-------------------------------|---|--------------------------------|-------------------------------|---|
| | | क्षेत्र Area (21) | उत्पादन Production (22) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (23) | क्षेत्र Area (24) | उत्पादन Production (25) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (26) | क्षेत्र Area (27) | उत्पादन Production (28) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (29) |
| 1 | 1960-61 | 402 | 1,341 | 334 | 2,349 | 9,889 | 421 | 12,955 | 77,439 | 598 |
| 2 | 1965-66 | 312 | 790 | 252 | 2,330 | 6,574 | 282 | 12,842 | 46,948 | 366 |
| 3 | 1970-71 | 310 | 866 | 281 | 2,566 | 6,770 | 264 | 12,886 | 54,137 | 420 |
| 4 | 1975-76 | 446 | 1,805 | 404 | 2,914 | 11,675 | 401 | 13,845 | 90,362 | 653 |
| 5 | 1980-81 | 410 | 1,372 | 335 | 2,715 | 8,252 | 304 | 13,691 | 94,717 | 692 |
| 6 | 1985-86 | 501 | 1,606 | 320 | 2,840 | 11,575 | 408 | 14,049 | 87,115 | 620 |
| 7 | 1990-91 | 668 | 3,548 | 532 | 3,257 | 14,409 | 442 | 14,393 | 1,21,810 | 846 |
| 8 | 1995-96 | 733 | 3,857 | 526 | 3,361 | 16,730 | 498 | 13,481 | 1,19,548 | 887 |
| 9 | 2000-01 | 676 | 3,508 | 519 | 3,557 | 16,369 | 460 | 13,382 | 1,01,334 | 757 |
| 10 | 2003-04 | 795 | 4,211 | 530 | 3,436 | 19,551 | 569 | 12,004 | 1,03,221 | 860 |

(पुढे चालू/contd.)

तक्ता क्रमांक / TABLE No.40 - contd.

नगदी पिके (क्षेत्र हजार हेक्टरमध्ये / Area in thousand hectares,
Cash crops उत्पादन शंभर टनांमध्ये/Production in hundred tonnes,
दर हेक्टरी उत्पादन किलोग्रॅममध्ये/Yield per hectare in kilogram)

| अनु- क्रमांक Serial No. (1) | वर्ष Year (2) | कापूस(रुई)/Cotton (lint) | | | | भुईमूग/Groundnut | | |
|---|---------------------|---------------------------|-------------------------------|---|-------------------------|-------------------------------|---|-------|
| | | क्षेत्र Area (30) | उत्पादन Production (31) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (32) | क्षेत्र Area (33) | उत्पादन Production (34) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (35) | |
| 1 | 1960-61 | ... | 2,500 | 2,843 | 114 | 1,083 | 7,999 | 739 |
| 2 | 1965-66 | ... | 2,716 | 1,787 | 66 | 1,117 | 4,731 | 423 |
| 3 | 1970-71 | ... | 2,750 | 824 | 30 | 904 | 5,863 | 649 |
| 4 | 1975-76 | ... | 2,307 | 1,326 | 58 | 854 | 6,925 | 811 |
| 5 | 1980-81 | ... | 2,550 | 2,081 | 82 | 695 | 4,507 | 648 |
| 6 | 1985-86 | ... | 2,709 | 3,372 | 125 | 670 | 4,906 | 732 |
| 7 | 1990-91 | ... | 2,721 | 3,188 | 117 | 864 | 9,788 | 1,132 |
| 8 | 1995-96 | ... | 3,078 | 4,781 | 155 | 590 | 6,424 | 1,089 |
| 9 | 2000-01 | ... | 3,077 | 3,064 | 100 | 490 | 4,696 | 958 |
| 10 | 2003-04 | ... | 2,762 | 3,080 | 190 | 390 | 4,532 | 1,162 |

| अनु- क्रमांक Serial No. (1) | वर्ष Year (2) | ऊस/Sugarcane | | | | तंबाखू/Tobacco | | | |
|---|---------------------|--|-------------------------|-------------------------------|---|-------------------------|-------------------------------|---|-------|
| | | तोडणी क्षेत्र Harvested area (36A) | क्षेत्र Area (36) | उत्पादन Production (37) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (38) | क्षेत्र Area (39) | उत्पादन Production (40) | दर हेक्टरी उत्पादन Yield per hectare (41) | |
| 1 | 1960-61 | ... | 155 | 155 | 1,04,040 | 66,924 | 25 | 123 | 480 |
| 2 | 1965-66 | ... | 133 | 171 | 1,00,800 | 75,996 | 13 | 64 | 461 |
| 3 | 1970-71 | ... | 167 | 204 | 1,44,333 | 86,531 | 12 | 52 | 448 |
| 4 | 1975-76 | ... | 228 | 268 | 2,05,444 | 89,988 | 11 | 49 | 441 |
| 5 | 1980-81 | ... | 258 | 319 | 2,37,063 | 91,742 | 12 | 77 | 648 |
| 6 | 1985-86 | ... | 265 | 355 | 2,32,682 | 87,771 | 10 | 79 | 775 |
| 7 | 1990-91 | ... | 442 | 536 | 3,81,544 | 86,400 | 8 | 79 | 1,039 |
| 8 | 1995-96 | ... | 527 | 657 | 4,41,944 | 83,800 | 5 | 52 | 1,040 |
| 9 | 2000-01 | ... | 595 | 687 | 4,95,687 | 83,267 | 8 | 93 | 1,148 |
| 10 | 2003-04 | ... | 526 | 442 | 2,69,817 | 51,315 | 6 | 69 | 1,113 |

टीप - (१) माहिती अंतिम अनुमानावर आधारित आहे.
(२) कापसाचे उत्पादन रुईमध्ये आहे.

आधार - कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे

Note - (1) Information is based on final forecast.
(2) Production of cotton is in lint.

Source - Commissionerate of Agriculture, Maharashtra State, Pune

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 41
विविध स्रोतांनुसार महाराष्ट्र राज्यातील सिंचित क्षेत्र
AREA IRRIGATED BY VARIOUS SOURCES IN MAHARASHTRA STATE

(हजार हेक्टरमध्ये / In thousand hectares)

| अनु- क्रमांक Serial No. | वर्ष Year | सिंचित क्षेत्र / Area irrigated | | | | ओलिताखालील पिकांची सघनता Intensity of irrigated cropping | सिंचन विहिरींची संख्या (हजारात) (In thousand) | दर विहिरीमागे सिंचित निव्वळ क्षेत्र (हेक्टरमध्ये) Net area irrigated per well (In hect.) | पिकाखालील एकूण क्षेत्र Gross cropped area | एकूण सिंचित क्षेत्राची पिकाखालील एकूण क्षेत्राशी टक्केवारी Percentage of gross irrigated area to gross cropped area |
|----------------------------------|--------------|---------------------------------|----------------------------------|----------------------------|----------------------------|---|---|---|--|---|
| | | विहिरी Wells | इतर साधने Other sources | निव्वळ क्षेत्र Net area | एकूण क्षेत्र Gross area | | | | | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) |
| 1 | 1960-61 | 595 | 477 | 1,072 | 1,220 | 114 | 542 | 1.10 | 18,823 | 6.48 |
| 2 | 1965-66 | 711 | 496 | 1,206 | 1,388 | 115 | 611 | 1.16 | 18,972 | 7.32 |
| 3 | 1970-71 | 768 | 579 | 1,347 | 1,570 | 117 | 694 | 1.11 | 18,737 | 8.38 |
| 4 | 1975-76 | 1,084 | 717 | 1,802 | 2,171 | 120 | 779 | 1.39 | 19,664 | 11.04 |
| 5 | 1980-81 | 1,055 | 780 | 1,835 | 2,415 | 132 | 826 | 1.28 | 19,642 | 12.30 |
| 6 | 1985-86 | 1,162 | 787 | 1,949 | 2,420 | 124 | 914 | 1.27 | 20,569 | 11.77 |
| 7 | 1990-91 | 1,672 | 999 | 2,671 | 3,319 | 124 | 1,017 | 1.64 | 21,859 | 15.18 |
| 8 | 1994-95 | 1,760 | 1,017 | 2,778 | 3,377 | 122 | 1,197 | 1.47 | 21,358 | 15.81 |
| 9 | 1995-96 | 1,870 | 1,010 | 2,880 | 3,550 | 123 | 1,229 | 1.52 | 21,504 | 16.51 |
| 10 | 1996-97 | 2,059 | 1,028 | 3,087 | 3,769 | 122 | 1,243 | 1.66 | 21,836 | 17.26 |
| 11 | 1997-98 | 2,090 | 1,050 | 3,140 | 3,693 | 118 | 1,276 | 1.64 | 21,384 | 17.27 |
| 12 | 1998-99 | 2,210 | 1,063 | 3,273 | 3,858 | 118 | 1,291 | 1.71 | 21,589 | 17.87 |
| 13 | 1999-00 | 1,921 | 1,051 | 2,972 | 3,663 | 123 | N.A. | N.A. | 22,351 | 16.39 |
| 14 | 2000-01 | 1,912 | 1,047 | 2,959 | 3,647 | 123 | N.A. | N.A. | 22,256 | 16.39 |
| 15 | 2001-02 | 1,922 | 1,053 | 2,975 | 3,667 | 123 | N.A. | N.A. | 22,405 | 16.37 |
| 16 | 2002-03 | 1,931 | 1,040 | 2,971 | 3,668 | 123 | N.A. | N.A. | 22,387 | 16.38 |

टीप - (१) आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.
 (२) स्तंभ क्र.७ मध्ये (स्तंभ क्र.६ ÷ स्तंभ क्र.५) x १०० हे सूत्र वापरून सघनता काढली आहे.
 (३) १९९९-०० ते २००२-०३ चे आकडे अस्थायी स्वरूपाचे आहेत.

आधार - कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे.

N. A. = उपलब्ध नाही/Not available

Note - (1) Details may not add up to the totals due to rounding.
 (2) Intensity under Col. No. 7 is worked out by using the formula (Col. No. 6 ÷ Col. No. 5) x 100.
 (3) Figures for the years 1999-00 to 2002-03 are provisional.

Source - Commissionerate of Agriculture, Maharashtra State, Pune

CROPWISE INDEX NUMBERS OF AGRICULTURAL PRODUCTION IN MAHARASHTRA STATE

(त्रैवर्षीय सरासरी - पाया : १९७९-८२ = १००/Triennial average - Base : 1979-82=100)

| गट/पिके (1) | भार | | | | | | | | | | | | | | | Groups/Crops (1) |
|------------------------------|---------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|---------------------------------|---------------------|
| | Weight (2) | 1982-83 (3) | 1986-87 (4) | 1990-91 (5) | 1994-95 (6) | 1995-96 (7) | 1996-97 (8) | 1997-98 (9) | 1998-99 (10) | 1999-00 (11) | 2000-01 (12) | 2001-02 (13) | 2002-03 (14) | 2003-04 (15) | | |
| १. अन्नधान्ये- | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Foodgrains— | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (अ) तृणधान्ये-- | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) Cereals— | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (१) तांदूळ | 9.49 | 87.4 | 79.8 | 106.1 | 109.0 | 120.4 | 121.2 | 109.4 | 113.7 | 115.9 | 87.4 | 120.1 | 84.0 | 128.6 | (i) Rice | |
| (२) गहू | 5.92 | 80.6 | 58.4 | 93.9 | 118.8 | 100.9 | 122.6 | 70.5 | 133.6 | 148.3 | 97.9 | 111.3 | 101.6 | 90.1 | (ii) Wheat | |
| (३) ज्वारी | 22.16 | 95.5 | 63.4 | 121.1 | 95.9 | 106.1 | 127.5 | 79.1 | 93.3 | 95.8 | 81.4 | 79.8 | 79.3 | 67.5 | (iii) Jowar | |
| (४) बाजरी | 3.08 | 64.2 | 64.6 | 154.3 | 153.3 | 134.5 | 255.7 | 163.5 | 207.8 | 157.0 | 150.5 | 115.0 | 158.7 | 124.0 | (iv) Bajri | |
| (५) बाली | 0.02 | 37.7 | 56.6 | 17.0 | 24.5 | 1.9 | 13.2 | 17.0 | 20.8 | 20.7 | 13.2 | 17.0 | 9.4 | N.A. | (v) Barley | |
| (६) मका | 0.46 | 36.9 | 63.4 | 105.2 | 274.3 | 223.8 | 258.7 | 265.1 | 369.8 | 362.7 | 253.8 | 491.8 | 622.9 | 631.9 | (vi) Maize | |
| (७) नाचणी | 0.85 | 92.0 | 70.5 | 98.4 | 80.6 | 72.1 | 77.2 | 70.0 | 76.3 | 79.4 | 60.8 | 85.8 | 58.7 | 80.4 | (vii) Ragi | |
| (८) कोदरा | 0.05 | 73.7 | 61.9 | 66.6 | 48.9 | 32.4 | 26.5 | 28.3 | 47.7 | 47.7 | 43.6 | 34.2 | 41.3 | 28.3 | (viii) Kodra | |
| (९) इतर तृणधान्ये | 0.19 | 76.7 | 83.7 | 150.8 | 83.9 | 75.7 | 75.2 | 112.5 | 120.9 | 91.4 | 162.5 | 94.9 | 49.1 | 57.8 | (ix) Other cereals | |
| एकूण - तृणधान्ये | 42.22 | 88.5 | 66.7 | 115.7 | 107.7 | 111.0 | 134.8 | 92.8 | 114.6 | 114.6 | 91.9 | 100.4 | 94.5 | 94.8 | Total - Cereals | |
| (ब) कडधान्ये-- | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (b) Pulses— | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (१) हरभरा | 1.47 | 78.4 | 80.5 | 215.8 | 277.6 | 234.6 | 278.4 | 172.8 | 342.6 | 364.9 | 213.3 | 274.0 | 272.8 | 299.8 | (i) Gram | |
| (२) तूर | 5.45 | 96.1 | 90.6 | 105.2 | 128.7 | 152.2 | 173.1 | 87.7 | 210.3 | 218.2 | 166.0 | 193.7 | 195.3 | 98.3 | (ii) Tur | |
| (३) इतर कडधान्ये | 3.52 | 112.5 | 110.3 | 160.0 | 171.1 | 163.4 | 206.3 | 140.4 | 216.0 | 177.5 | 150.0 | 157.8 | 196.9 | 274.0 | (iii) Other pulses | |
| एकूण - कडधान्ये | 10.44 | 99.2 | 95.8 | 139.2 | 163.9 | 167.6 | 202.3 | 117.5 | 230.9 | 225.1 | 167.3 | 192.9 | 206.8 | 185.9 | Total - Pulses | |
| एकूण - अन्नधान्ये | 52.66 | 90.6 | 72.5 | 120.4 | 118.8 | 122.2 | 148.1 | 97.7 | 137.6 | 136.5 | 106.8 | 118.8 | 116.8 | 112.8 | Total - Foodgrains | |
| २. अन्नधान्येतर | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2. Non-Foodgrains | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (अ) गळिताची धान्ये-- | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (a) Oil Seeds— | | | | | | | | | | | | | | | | |
| (१) भुईमूग | 7.23 | 71.4 | 72.4 | 158.9 | 103.2 | 104.3 | 122.6 | 87.5 | 108.7 | 92.9 | 76.2 | 79.9 | 73.1 | 73.5 | (i) Groundnut | |
| (२) तीळ | 0.57 | 94.2 | 141.0 | 223.7 | 161.6 | 162.2 | 136.3 | 105.4 | 133.4 | 115.7 | 88.9 | 110.1 | 103.9 | 111.9 | (ii) Sesamum | |
| (३) मोहरी, राई आणि जवस | 0.78 | 73.4 | 66.0 | 86.5 | 72.8 | 73.3 | 64.8 | 27.8 | 52.5 | 52.6 | 30.8 | 39.8 | 23.5 | 40.6 | (iii) Rape, mustard and linseed | |
| (४) परंडी | 0.01 | 25.0 | 83.3 | 166.7 | 166.7 | 58.3 | 58.3 | 166.7 | 225.0 | 233.3 | 358.3 | 258.3 | 566.7 | 416.7 | (iv) Castor seed | |
| (५) सूर्यफूल | 0.57 | 76.8 | 170.8 | 609.8 | 573.3 | 643.6 | 643.6 | 280.3 | 379.2 | 422.2 | 352.3 | 263.8 | 287.3 | 233.1 | (v) Sunflower | |
| एकूण - गळिताची धान्ये | 9.16 | 73.3 | 82.3 | 184.8 | 133.5 | 138.8 | 150.9 | 95.6 | 122.4 | 111.5 | 90.6 | 90.0 | 84.6 | 83.4 | Total - Oil seeds | |

(पृढे चालू/contd)

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 42 - *concl.*

| गट/पिके (1) | भार Weight (2) | 1982-83 (3) | 1986-87 (4) | 1990-91 (5) | 1994-95 (6) | 1995-96 (7) | 1996-97 (8) | 1997-98 (9) | 1998-99 (10) | 1999-00 (11) | 2000-01 (12) | 2001-02 (13) | 2002-03 (14) | 2003-04 (15) | Groups / Crops (1) |
|-------------------------------|----------------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-------------------------------------|
| (ब) तंतू पिके -- | | | | | | | | | | | | | | | (b) Fibres--- |
| (१) कापूस | 9.89 | 110.4 | 61.9 | 128.6 | 158.2 | 192.8 | 219.1 | 116.2 | 180.1 | 212.5 | 123.6 | 184.4 | 178.0 | 211.2 | (i) Cotton |
| (२) मेस्टा | 0.04 | 44.5 | 44.0 | 38.0 | 36.3 | 24.9 | 24.2 | 24.6 | 4.7 | 42.4 | 36.5 | 34.5 | 28.2 | 25.6 | (ii) Mesta |
| एकूण - तंतू पिके .. | 9.93 | 110.1 | 61.9 | 128.2 | 157.7 | 192.1 | 218.2 | 115.8 | 179.4 | 211.8 | 123.2 | 183.8 | 177.4 | 210.4 | Total - Fibres |
| (क) संकीर्ण | | | | | | | | | | | | | | | 1. Miscellaneous--- |
| (१) ऊस | 25.97 | 114.3 | 99.6 | 158.2 | 167.1 | 166.6 | 144.2 | 147.3 | 205.8 | 200.3 | 186.9 | 170.2 | 160.7 | 101.7 | (i) Sugarcane |
| (२) तंबाखू | 0.14 | 68.3 | 142.6 | 117.3 | 179.7 | 77.2 | 93.6 | 133.7 | 68.3 | 163.4 | 138.1 | 98.0 | 139.6 | N.A. | (ii) Tobacco |
| (३) बटाटा | 0.22 | 84.2 | 110.8 | 120.9 | 113.7 | 107.4 | 117.0 | 115.5 | 130.3 | 119.9 | 121.9 | 129.7 | 127.8 | 125.6 | (iii) Potato |
| (४) मिरची | 1.92 | 107.1 | 82.6 | 102.2 | 87.6 | 83.0 | 88.0 | 84.9 | 77.6 | 79.7 | 82.0 | 79.3 | 71.6 | 59.7 | (iv) Chilli |
| एकूण - संकीर्ण .. | 28.25 | 113.3 | 98.7 | 153.9 | 161.3 | 160.0 | 139.9 | 142.8 | 195.8 | 191.3 | 179.0 | 163.4 | 154.3 | 98.6 | Total- Miscellaneous |
| एकूण - अन्नधान्येतर .. | 47.34 | 104.9 | 87.8 | 154.5 | 155.2 | 162.7 | 158.4 | 128.0 | 178.2 | 180.2 | 150.2 | 153.4 | 145.6 | 119.1 | Total - Non - Foodgrains |
| सर्व पिके .. | 100.00 | 97.4 | 79.7 | 136.5 | 136.1 | 141.4 | 153.0 | 112.0 | 156.8 | 157.2 | 127.4 | 135.2 | 130.4 | 115.8 | All Crops |

टीप - १९९९-२००० ते २००२-०३ चे निर्देशांक अस्थायी आहेत.

Note - Index numbers for 1999-2000 to 2002-03 are provisional.

आधार - कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र शासन, पुणे

Source - Commissionerate of Agriculture, Maharashtra State, Pune

तक्ता क्रमांक / TABLE No.43

महाराष्ट्र राज्यातील पशुधन आणि कोंबड्या व बदके
LIVESTOCK AND POULTRY IN MAHARASHTRA STATE

(हजारात/In thousand)

| अनु क्रमांक Serial No | वर्ष Year | गाई-बैल Cattle | म्हशी-रेडे Buffaloes | मेंढ्या आणि | | एकूण पशुधन Total live stock | दर शंभर हेक्टर चराई क्षेत्रामागे शेळ्या, मेंढ्या (संख्या) Sheep and goats per hundred hectares of grazing and pasture land (No.) | | पिकांखालील दर शंभर हेक्टर निव्वळ क्षेत्रामागे पशुधन (संख्या) Live-stock per hundred hectares of net area cropped (No.) | | एकूण कोंबड्या व बदके Total poultry |
|--------------------------|--------------|-------------------|-------------------------|---------------------------|---------------------------|-----------------------------------|--|---|--|--------|---------------------------------------|
| | | | | शेळ्या Sheep and goats | इतर* Other* live stock | | दर शंभर हेक्टर निव्वळ क्षेत्रामागे पशुधन (संख्या) Live-stock per hundred hectares of net area cropped (No.) | दर लाख लोकसंख्ये-मागे पशुधन No. of Live-stock per lakh of population | | | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | |
| 1 | 1961 | 15,328 | 3,087 | 7,273 | 360 | 26,048 | 512 | 144 | 66 | 10,578 | |
| 2 | 1966 | 14,729 | 3,042 | 7,326 | 352 | 25,449 | 522 | 140 | 57 | 9,902 | |
| 3 | 1972 | 14,705 | 3,301 | 8,038 | 317 | 26,361 | 491 | 164 | 52 | 12,217 | |
| 4 | 1978 | 15,218 | 3,899 | 10,199 | 326 | 29,642 | 650 | 162 | 51 | 18,791 | |
| 5 | 1982 | 16,162 | 3,972 | 10,376 | 410 | 30,919 | 673 | 175 | 48 | 19,845 | |
| 6 | 1987 | 16,983 | 4,755 | 12,068 | 448 | 34,255 | 950 | 189 | 48 | 24,839 | |
| 7 | 1992 | 17,441 | 5,447 | 13,015 | 489 | 36,393 | 940 | 202 | 45 | 32,187 | |
| 8 | 1997 | 18,071 | 6,073 | 14,802 | 692 | 39,638 | 1,104 | 223 | 50 | 35,392 | |

* 'इतर पशुधन' या बाबीमध्ये डुकरे, घोडे व शिंगरे, खेचरे, उंट, गाढवे आणि ससे यांचा समावेश करण्यात आला आहे.

* 'Other livestock' includes pigs, horses and ponies, mules, camels, donkeys and rabbits.

टीप - आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

Note - Details may not add up to totals due to rounding.

आधार - पशुधन गणना

Source - Livestock Census

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 44

महाराष्ट्र राज्यातील सहकारी संस्था (ठळक वैशिष्ट्ये)
CO-OPERATIVE SOCIETIES IN MAHARASHTRA STATE (Salient Features)

| नाम (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1975-76 (4) | 1980-81 (5) | 1985-86 (6) | 1990-91 (7) | 1995-96 (8) | 2000-01 (9) | 2002-03 (10) | 2003-04 (11) | Item (1) |
|---|----------------|-----------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--|
| I. सहकारी संस्थांची संख्या-- | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | 39 | 29 | 30 | 31 | 34 | 34 | 34 | 34 | 34 | 34 | Number of co-operative societies— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था* | 21,400 | 20,420 | 20,130 | 18,577 | 18,458 | 19,565 | 20,137 | 20,551 | 20,839 | 21,000 | Primary Agricultural credit societies* |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 1,630 | 2,964 | 3,863 | 5,474 | 7,112 | 11,291 | 17,671 | 22,014 | 25,107 | 25,664 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 344 | 410 | 400 | 423 | 655 | 931 | 1,044 | 1,115 | 1,252 | 1,222 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 4,306 | 6,810 | 9,553 | 14,327 | 21,148 | 28,954 | 37,380 | 39,070 | 40,171 | 40,885 | Productive enterprises @ |
| (6) इतर | 3,846 | 11,964 | 15,683 | 21,915 | 31,883 | 43,845 | 62,823 | 75,232 | 85,999 | 90,049 | Others @ |
| एकूण | 31,565 | 42,597 | 49,659 | 60,747 | 79,290 | 1,04,620 | 1,39,089 | 1,58,016 | 1,73,402 | 1,78,854 | Total |
| II. सभासदांची संख्या (हजारामध्ये) | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | 76 | 70 | 951 | 1,014 | 1,065 | 1,485 | 1,305 | 1,371 | 177 | 186 | Number of members (In thousand)— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions** |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था | 2,170 | 3,794 | 4,447 | 5,416 | 6,327 | 7,942 | 8,936 | 10,125 | 11,500 | 11,692 | Primary Agricultural credit societies |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 1,087 | 2,438 | 3,143 | 3,759 | 6,169 | 9,302 | 14,488 | 18,467 | 19,818 | 20,059 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 141 | 282 | 351 | 471 | 624 | 745 | 888 | 840 | 903 | 912 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 323 | 959 | 1,396 | 2,124 | 3,037 | 3,974 | 5,246 | 6,339 | 8,722 | 8,802 | Productive enterprises |
| (6) इतर | 394 | 1,038 | 1,341 | 1,999 | 2,919 | 3,455 | 4,907 | 5,880 | 6,468 | 6,638 | Others |
| एकूण | 4,191 | 8,581 | 11,629 | 14,783 | 20,141 | 26,903 | 35,770 | 43,022 | 47,588 | 48,289 | Total |
| III. खेळते भांडवल (लाख रुपये) | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | 11,907 | 61,317 | 1,10,409 | 1,83,052 | 3,99,218 | 8,80,554 | 17,83,481 | 39,26,678 | 46,78,195 | 52,32,617 | Working capital (In lakh Rs.)— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था | 5,812 | 34,329 | 31,549 | 52,746 | 89,328 | 1,85,100 | 3,29,138 | 6,98,824 | 9,71,670 | 9,88,616 | Primary Agricultural credit societies |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 4,593 | 16,806 | 34,405 | 1,20,881 | 3,15,985 | 7,50,784 | 15,95,438 | 66,88,685 | 85,31,976 | 89,58,575 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 592 | 3,910 | 13,551 | 18,822 | 26,149 | 33,960 | 54,010 | 1,51,791 | 1,22,024 | 1,21,938 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 4,132 | 21,920 | 60,203 | 1,02,945 | 1,74,142 | 4,58,810 | 7,78,192 | 13,28,835 | 25,84,302 | 26,12,128 | Productive enterprises |
| (6) इतर | 2,060 | 10,749 | 28,728 | 42,591 | 79,915 | 1,19,137 | 5,03,676 | 6,49,249 | 3,98,256 | 4,06,221 | Others |
| एकूण | 29,096 | 1,49,031 | 2,78,845 | 5,21,037 | 10,84,737 | 24,28,345 | 50,43,935 | 1,34,44,062 | 1,72,86,423 | 1,83,20,095 | Total |

* यात प्राथमिक कृषि पत संस्था, प्राथमिक भू विकास बँका आणि धान्य बँका यांचा १९७०-७१ पर्यंत समावेश आहे.

** नाममात्र सभासद वगळून/Excludes Nominal Members.

*Includes primary agricultural credit societies, primary land development banks and grain banks upto 1970-71

@ १९९५-९६ या वर्षापासून उपसा सिंचन संस्थांचा समावेश 'उत्पादक' ऐवजी 'इतर' या प्रकारात करण्यात आला आहे

① Lift Irrigation societies are classified in 'Others' category instead of 'Productive' category since 1995-96.

| बाब (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1975-76 (4) | 1980-81 (5) | 1985-86 (6) | 1990-91 (7) | 1995-96 (8) | 2000-01 (9) | 2002-03 (10) | 2003-04 (11) | Item (1) |
|--|----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|--|
| IV. दिलेले कर्ज (लाख रुपये) | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | 17,538 | 75,103 | 1,90,954 | 1,52,751 | 2,80,348 | 9,08,475 | 16,97,396 | 28,70,873 | 26,80,617 | 18,48,343 | Advances (In lakh Rs.)— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था | 4,256 | 13,296 | 17,009 | 24,999 | 41,892 | 79,966 | 1,51,027 | 3,73,418 | 3,82,462 | 3,76,920 | Primary Agricultural credit societies |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 4,703 | 20,443 | 35,557 | 1,12,948 | 3,47,448 | 5,17,816 | 12,00,097 | 39,26,791 | 50,98,643 | 43,76,701 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 347 | 327 | 510 | 349 | 585 | 845 | 1,564 | 1,813 | 351 | 358 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 71 | 328 | 459 | 1,208 | 1,077 | 1,678 | 5,844 | 10,273 | 8,307 | 8,473 | Productive enterprises |
| (6) इतर | 84 | 374 | 445 | 1,218 | 5,289 | 6,029 | 17,540 | 23,476 | 21,719 | 21,936 | Others |
| एकूण | 26,999 | 1,09,871 | 2,44,934 | 2,93,473 | 6,76,639 | 15,14,809 | 30,73,468 | 72,06,644 | 81,92,099 | 66,32,731 | Total |
| V. घेणे कर्ज (लाख रुपये) | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | 8,714 | 47,803 | 71,563 | 1,13,677 | 2,47,693 | 5,88,901 | 11,00,931 | 23,12,013 | 26,17,031 | 26,06,411 | Outstanding loans (In lakh Rs.)— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था | 4,788 | 28,410 | 22,977 | 38,367 | 64,417 | 1,31,021 | 2,31,023 | 5,30,833 | 7,06,361 | 7,38,926 | Primary Agricultural credit societies |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 3,185 | 10,506 | 19,478 | 73,089 | 1,85,402 | 4,59,440 | 9,43,857 | 35,90,811 | 49,52,200 | 52,44,089 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 80 | 182 | 293 | 387 | 489 | 935 | 1,032 | 18,174 | 4,683 | 4,540 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 57 | 607 | 1,423 | 3,033 | 4,376 | 6,884 | 16,994 | 23,559 | 25,416 | 26,622 | Productive enterprises |
| (6) इतर | 218 | 785 | 1,370 | 2,523 | 10,870 | 19,101 | 39,181 | 2,89,949 | 59,300 | 62,265 | Others |
| एकूण | 17,042 | 88,293 | 1,17,104 | 2,31,076 | 5,13,247 | 12,06,282 | 23,33,018 | 67,65,339 | 83,64,991 | 86,82,853 | Total |
| VI. उलाढाल-तयार मालाच्या विक्रीचे मूल्य (लाख रुपये) | | | | | | | | | | | |
| (1) शिखर व मध्यवर्ती- कृषि व बिगर-कृषि पत संस्था | | | | | | | | | | | Turnover—Value of produced goods sold (In lakh Rs.)— Apex and central-Agricultural and non-agricultural credit institutions |
| (2) प्राथमिक कृषि पत संस्था | 1,005 | 5,097 | 8,209 | 14,623 | 19,458 | 23,948 | 47,052 | 1,01,159 | 1,17,054 | 1,19,395 | Primary Agricultural credit societies |
| (3) बिगर कृषि पत संस्था | 247 | 306 | 455 | 977 | 1,793 | | 6,802 | 3,754 | 13,240 | 13,505 | Non-agricultural credit societies |
| (4) पणन संस्था | 4,761 | 21,389 | 73,765 | 97,923 | 1,22,259 | 2,60,247 | 2,64,689 | 3,20,543 | 1,82,648 | 1,90,288 | Marketing societies |
| (5) उत्पादक उपक्रम | 3,601 | 19,433 | 52,001 | 1,03,134 | 1,95,400 | 3,46,703 | 6,82,402 | 7,49,603 | 11,42,617 | 11,65,470 | Productive enterprises |
| (6) इतर | 1,117 | 6,914 | 14,123 | 18,684 | 27,756 | 33,008 | 1,34,963 | 1,58,769 | 1,63,735 | 1,67,010 | Others |
| एकूण | 10,731 | 53,139 | 1,48,553 | 2,35,341 | 3,66,666 | 6,63,906 | 11,35,908 | 13,33,828 | 16,19,294 | 16,55,668 | Total |

टीप -- (१) २००३-०४ ची आकडेवारी अस्थायी आहे. (२) १९९०-९१ पर्यन्तची आकडेवारी जून अखेर असून १९९५-९६ पासून मार्च अखेरपर्यन्तची आहे.

Note—(1) Figures for 2003-04 are provisional. (2) Figures upto 1990-91 are at the end of June and from 1995-96 onwards are at the end of March.

महाराष्ट्र राज्यातील वीजपुरवठा
ELECTRICITY SUPPLY IN MAHARASHTRA STATE

| बाब (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1975-76 (4) | 1980-81 (5) | 1985-86 (6) | 1990-91 (7) | 2000-01 (8) | 2002-03 (9) | 2003-04 (10) | Item (1) |
|---|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|--|
| अ. स्थापित क्षमता (मेगॅवॅट) | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | A. Installed capacity (Mega Watt) |
| | | | | | | | | | | A-1 Installed Capacity in the State |
| अ-१ राज्यातील स्थापित क्षमता- | | | | | | | | | | |
| (1) औष्णिक | 443 | 1,051 | 1,401 | 2,771 | 4,890 | 6,462 | 8,075 | 8,075 | 8,075 | Thermal |
| (2) तेलजन्य | 34 | 14 | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Oil |
| (3) जलजन्य | 282 | 844 | 1,175 | 1,317 | 1,339 | 1,552 | 2,874 | 2,878 | 2,878 | Hydro |
| (4) नैसर्गिक वायूजन्य | ... | ... | ... | ... | 672 | 672 | 1,820 | 1,820 | 1,760 | Natural Gas |
| (5) अणुशक्तिजन्य (महाराष्ट्राचा वाटा) | ... | 210 | 210 | 210 | 190 | 190 | 190 | 190 | 190 | Nuclear (Maharashtra's share) |
| एकूण (अ-१) | 759 | 2,119 | 2,786 | 4,298 | 7,091 | 8,876 | 12,959 | 12,963 | 12,903 | Total (A-1) |
| अ-२ स्थापित क्षमतेत महाराष्ट्राचा वाटा | | | | | | | | | | |
| (1) राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ | NA | NA | NA | NA | NA | NA | 2,048* | 2,052 | 2,052 | National Thermal Power Corporation |
| (2) अणुशक्ती महामंडळ | NA | NA | NA | NA | NA | NA | 137 | 137 | 137 | Nuclear Power Corporation |
| एकूण (अ-२) | NA | NA | NA | NA | NA | NA | 2,185 | 2,189 | 2,189 | Total (A-2) |
| एकूण (अ-१+अ-२) | 759 | 1,304 | 2,119 | 2,786 | 4,298 | 7,091 | 15,144 | 15,152 | 15,092 | Total (A-1 + A-2) |
| ब. उत्पादन | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | B. Generation |
| | | | | | | | | | | (Million Kilo Watt Hour)- |
| (1) औष्णिक | 1,835 | 3,392 | 6,252 | 11,416 | 20,229 | 28,085 | 49,377 | 52,204 | 54,071 | Thermal |
| (2) तेलजन्य | 68 | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Neg. | Oil |
| (3) जलजन्य | 1,365 | 4,533 | 4,753 | 6,448 | 5,398 | 5,615 | 4,889 | 5,534 | 5,425 | Hydro |
| (4) नैसर्गिक व वायूजन्य | ... | ... | ... | ... | 1,128 | 2,730 | 6,943 | 5,043 | 5,432 | Natural Gas |
| (5) अणुशक्तिजन्य (महाराष्ट्राचा वाटा) | ... | 1,209 | 1,047 | 887 | 891 | 881 | 1,097 | 1,158 | 1,131 | Nuclear (Maharashtra's share) |
| (6) इतर | ... | ... | ... | ... | ... | ... | 151 | 801 | 932 | Other |
| एकूण | 3,268 | 9,134 | 12,052 | 18,751 | 27,646 | 37,311 | 62,457 | 64,740 | 66,991 | Total |

| बाब (1) | 1960-61 (2) | 1970-71 (3) | 1975-76 (4) | 1980-81 (5) | 1985-86 (6) | 1990-91 (7) | 2000-01 (8) | 2002-03 (9) | 2003-04 (10) | Item (11) |
|-------------------------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|---------------------------------------|
| क. वापर | | | | | | | | | | |
| (दशलक्ष किलोवॅट तास) | | | | | | | | | | C. Consumption |
| | | | | | | | | | | (Million Kilo Watt Hour)— |
| (1) घरगुती | 260 | 732 | 1,049 | 1,779 | 2,975 | 5,065 | 11,172 | 12,267 | 12,617 | Domestic |
| (2) वाणिज्यिक | 198 | 547 | 745 | 949 | 1,410 | 2,068 | 4,105 | 4,669 | 5,015 | Commercial |
| (3) उद्योगधंद्याकरिता वीज | 1,853 | 5,312 | 5,935 | 8,130 | 11,124 | 14,706 | 18,363 | 18,156 | 19,806 | Industrial |
| (4) सार्वजनिक दिवाबत्ती | 20 | 74 | 101 | 159 | 218 | 291 | 551 | 666 | 632 | Public lighting |
| (5) रेल्वे कर्षण | 339 | 421 | 658 | 766 | 853 | 970 | 1,581 | 1,748 | 1,749 | Railways |
| (6) कृषि | 15 | 356 | 803 | 1,723 | 3,671 | 6,604 | 9,940 | 10,642 | 10,572 | Agriculture |
| (7) सार्वजनिक पाणी पुरवठा | 35 | 146 | 196 | 330 | 511 | N.A. | 1,199 | 1,416 | 1,493 | Public Water works |
| (8) संकीर्ण | ... | 62 | 3 | 198 | 217 | 267 | 378 | 381 | 349 | Miscellaneous |
| एकूण | 2,720 | 7,650 | 9,490 | 14,034 | 20,979 | 29,971 | 47,289 | 49,945 | 52,233 | Total |
| ख. दरडोई विजेचा वापर - | | | | | | | | | | |
| (किलोवॅट तास) | | | | | | | | | | D. Per capita consumption |
| | | | | | | | | | | of electricity (KiloWatt Hour) |
| (1) वाणिज्यिक | 5.0 | 10.9 | 13.3 | 15.1 | 20.1 | 27.5 | 42.7 | 46.8 | 49.1 | Commercial |
| (2) औद्योगिक | 46.8 | 105.4 | 106.7 | 129.5 | 158.8 | 195.4 | 191.2 | 182.0 | 194.0 | Industrial |

Neg.—नगण्य / Negligible.

N.A. = उपलब्ध नाही / Not available.

- टीप -** (१) वरील आकडे केवळ सार्वजनिक विद्युत व्यवसायी यंत्रणेचे आहेत.
 (२) आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.
 (३) * यात राष्ट्रीय औष्णिक ऊर्जा महामंडळ व अणुशक्ती महामंडळाकडील वाटप न झालेला तसेच गोवा राज्याचा शिलकी ३२३ मेगॅवॅटचा अतिरिक्त वाटा समाविष्ट आहे.

- आधार -** (१) केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण.
 (२) महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळ, मुंबई.

- Note -** (1) The above figures are related to public utilities only.
 (2) Details may not add up to the totals due to rounding.
 (3) * This includes additional share of 323 MW from NTPC/ NPC which was unallocated share and surplus from Goa
- Source -** (1) Central Electricity Authority, Government of India, New Delhi
 (2) Maharashtra State Electricity Board, Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No.46

महाराष्ट्र राज्यातील रस्त्यांची निरनिराळ्या प्रकारांनुसार लांबी
(सार्वजनिक बांधकाम विभाग व जिल्हा परिषद यांच्या देखभालीखालील)
ROAD LENGTH BY TYPE OF ROAD IN MAHARASHTRA STATE
(MAINTAINED BY PUBLIC WORKS DEPARTMENT AND ZILLA PARISHAD)

(किलोमीटरमध्ये / In kilometres)

| अनु. क्र. Serial No. | वर्ष Year | राष्ट्रीय महामार्ग National highways | राज्य महामार्ग State highways | प्रमुख जिल्हा रस्ते Major district roads | इतर जिल्हा रस्ते Other district roads | ग्रामीण रस्ते Village roads | एकूण रस्ते All roads |
|-------------------------|--------------|---|--|---|--|--------------------------------------|-------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
| 1 | 1965-66 | 2,364 | 10,528 | 12,628 | 8,744 | 17,524 | 51,788 |
| 2 | 1970-71 | 2,445 | 14,203 | 17,684 | 11,012 | 20,020 | 65,364 |
| 3 | 1975-76 | 2,860 | 15,032 | 19,925 | 14,506 | 36,434 | 88,757 |
| 4 | 1980-81 | 2,945 | 18,949 | 25,233 | 25,404 | 68,600 | 1,41,131 |
| 5 | 1985-86 | 2,937 | 19,260 | 26,157 | 28,478 | 76,839 | 1,53,671 |
| 6 | 1990-91 | 2,959 | 30,975 | 38,936 | 38,573 | 61,522@ | 1,72,965 |
| 7 | 1992-93 | 2,949@@ | 31,772 | 39,349 | 39,819 | 63,123 | 1,77,012 |
| 8 | 1993-94 | 2,953 | 31,947 | 40,142 | 40,440 | 65,379 | 1,80,861 |
| 9 | 1995-96 | 2,958 | 32,259 | 40,514 | 40,733 | 68,829 | 1,85,283 |
| 10 | 1996-97 | 2,958 | 32,359 | 41,081 | 41,043 | 70,134 | 1,87,575 |
| 11 | 1997-98 | 2,972 | 32,380 | 41,166 | 41,701 | 72,834 | 1,91,053 |
| 12 | 1998-99 | 3,399 | 33,223 | 45,016 | 42,973 | 82,280 | 2,06,891 |
| 13 | 1999-00 | 3,688 | 33,212 | 46,473 | 43,005 | 87,573 | 2,13,951 |
| 14 | 2000-01 | 3,688 | 33,212 | 46,751 | 43,696 | 89,599 | 2,16,946 |
| 15 | 2001-02 | 3,710 | 33,405 | 47,927 | 43,906 | 93,652 | 2,22,600 |
| 16 | 2002-03 | 3,710 | 33,705 | 48,192 | 44,183 | 95,150 | 2,24,940 |
| 17 | 2003-04 | 4,225 | 33,633 | 48,220 | 44,321 | 96,593 | 2,26,992 |

टीप - (१) ग्रामीण रस्त्यांमध्ये अवर्गीकृत रस्त्यांचा समावेश आहे.

Note - (1) Unclassified roads included in village roads.

(२) @ १९८७ पर्यंतच्या रस्ते लांबीची विभागणी १९६१-८१ रस्ते विकास योजनेनुसार आणि १९८७-८८ पासून ही विभागणी १९८१-२००१ रस्ते विकास योजनेनुसार केली आहे. खालच्या दर्जाच्या रस्त्यांची दर्जाव्रती झाल्याने रकाना क्र.७ मध्ये रस्त्यांचे बाबतीत रस्त्यांची लांबी कमी झालेली दिसते.

(२) @ The classification of road length upto 1987 is according to " Road Development Plan, 1961-81 " and 1987-88 onwards it is according to 1981-2001 Road Development Plan. Due to upgradation of lower category roads to upper category roads there is reduction on column No. 7.

(३) @@ राष्ट्रीय महामार्ग नं.४ च्या काही भागाचे पिंपरी-चिंचवड महानगरपालिकेकडे हस्तांतरण केल्यामुळे घट झाली आहे.

(३) @@ Decline due to declassification of part of National Highway No.4 transferred to Pimpri-Chinchwad Municipal Corporation.

आधार - सार्वजनिक बांधकाम विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.**Source** - Public Works Department, Government of Maharashtra, Mumbai.

महाराष्ट्र राज्यातील वापरात असलेली मोटार वाहने

NUMBER OF MOTOR VEHICLES IN OPERATION IN MAHARASHTRA STATE

| अनुक्रमांक Sr. No. | वाहनांचा प्रकार | 1971 | 1976 | 1981 | 1986 | 1991 | 1996 | 2001 | 2003 | 2004 | 2005 | Class of vehicles |
|-----------------------|--|-----------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|---------------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (2) |
| 1 | मोटर सायकली, स्कूटर व मोपेड | 83,930 | 1,71,135 | 3,46,826 | 8,52,740 | 16,96,157 | 26,14,913 | 44,09,906 | 54,31,255 | 60,37,975 | 67,17,466 | Motor-cycles, scooters & moped |
| 2 | मोटर गाड्या, जीप आणि स्टेशन वॅगन्स | 1,22,508 | 1,79,989 | 2,24,752 | 3,08,566 | 4,23,505 | 5,28,154 | 9,01,278 | 10,65,035 | 11,62,978 | 12,97,632 | Motor cars, Jeeps & Station wagons |
| 3 | टॅक्सी कॅबज् | 17,806 | 22,657 | 31,302 | 39,838 | 43,168 | 58,662 | 86,438 | 89,958 | 99,389 | 1,10,666 | Taxi cabs |
| 4 | स्वयंचलित रिक्शा | 3,049 | 9,906 | 29,474 | 76,018 | 1,26,049 | 2,21,789 | 4,07,660 | 4,55,897 | 4,82,343 | 5,08,158 | Auto rickshaws |
| 5 | स्टेज कॅरेजेस् | 10,250 | 9,714 | 13,789 | 16,515 | 18,203 | 22,923 | 27,286 | 26,742 | 28,155 | 28,332 | Stage carriages— |
| 6 | कॉन्ट्रॅक्ट कॅरेजेस् | | | 1,498 | 2,732 | 3,980 | 8,616 | 13,975 | 12,068 | 13,121 | 16,604 | Contract carriages |
| 7 | मालमोटारी- | | | | | | | | | | | Lorries— |
| | (अ) खाजगी वाहने- | | | | | | | | | | | A. Private carriers— |
| | (१) डिझेल इंजिनवर चालणारी | 10,878 | 19,216 | 23,719 | 29,427 | 33,065 | @ | @ | @ | @ | @ | (i) Diesel engaged |
| | (२) पेट्रोल इंजिनवर चालणारी | 9,354 | 7,107 | 7,755 | 69,095 | 6,713 | @ | @ | @ | @ | @ | (ii) Petrol engaged |
| | (ब) सार्वजनिक वाहने- | | | | | | | | | | | B. Public carriers— |
| | (१) डिझेल इंजिनवर चालणाऱ्या | 24,109 | 40,744 | 63,360 | 1,06,482 | 1,47,818 | 2,35,842 | 3,41,334 | 4,48,301 | 4,88,211 | 5,42,785 | (i) Diesel engaged |
| | (२) पेट्रोल इंजिनवर चालणाऱ्या | 12,437 | 9,654 | 10,250 | 7,676 | 7,061 | 30,019 | 57,317 | | | | (ii) Petrol engaged |
| 8 | रुग्णवाहिका | 441 | 643 | 925 | 1,504 | 2,233 | 3,024 | 4,025 | 4,371 | 4,674 | 5,310 | Ambulances |
| 9 | शाळेच्या बसेस | 491 | 504 | 594 | 795 | 1,025 | 1,371 | 1,714 | 1,984 | 2,296 | 2,770 | School buses |
| 10 | खाजगी प्रवासी वाहने | 810 | 1,478 | 2,171 | 3,278 | 4,622 | 7,787 | 5,815 | 6,352 | 6,323 | 7,197 | Private service vehicles |
| 11 | जोड वाहने (ट्रेलर) | 7,075 | 11,298 | 23,173 | 40,159 | 60,858 | 1,01,073 | 1,67,856 | 1,84,456 | 1,89,049 | 1,92,072 | Trailors |
| 12 | ट्रॅक्टर्स | 7,821 | 12,019 | 24,079 | 40,452 | 61,088 | 1,00,521 | 1,72,578 | 1,92,211 | 1,99,707 | 2,07,029 | Tractors |
| 13 | इतर | 810 | 1,636 | 1,319 | 3,193 | 5,040 | 7,712 | 9,872 | 10,410 | 10,930 | 20,282 | Others |
| | एकूण | 3,11,669 | 4,97,700 | 8,04,986 | 15,36,280 | 26,40,585 | 39,42,406 | 66,07,054 | 79,29,040 | 87,25,151 | 96,56,303 | Total |
| | दर लाख लोकसंख्येमागे मोटार वाहनांची संख्या | 618 | 890 | 1,309 | 2,193 | 3,353 | 4,275 | 7,186 | 7,908 | 8,703 | 9,458 | Motor vehicles per lakh of population |
| | दर लाख लोकसंख्येमागे रुग्णवाहिकांची संख्या | 0.9 | 1.2 | 1.5 | 2.1 | 2.8 | 3.5 | 4.4 | 4.4 | 4.7 | 5.2 | Ambulances per lakh of population |

टीप / Note - (१) वरील आकडे दर वर्षीच्या १ जानेवारीचे आहेत./Figures are as on 1st January of each year.

(२) @ नवीन मोटार वाहन कायद्याप्रमाणे खाजगी वाहने व सार्वजनिक वाहने असे वर्गीकरण रद्द करण्यात आले असून १९९४ पासून खाजगी व सार्वजनिक मालवाहक वाहने सार्वजनिक वाहने या रकान्यात एकत्र दाखविण्यात आली आहेत. / According to New Act, separate classification of private carrier has been cancelled. From 1994 No. of private and public carriers together are shown in total 'Public carriers'.

(३) # पेट्रोल व डिझेल या दोन्ही वाहनांची संख्या समाविष्ट. / Includes petrol & diesel vehicles both

आधार - परिवहन आयुक्त, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

Source - Transport Commissioner, Government of Maharashtra, Mumbai

महाराष्ट्र राज्यातील प्रमुख उद्योग गटानुसार कारखान्यांतील रोजगार

FACTORY EMPLOYMENT IN MAJOR INDUSTRY DIVISIONS IN MAHARASHTRA STATE

| उद्योग गट* | सरासरी दैनिक रोजगार (संख्या) | | | एकूणशी टक्केवारी | | | Industry Division** |
|--|--------------------------------|------------------|------------------|---------------------|--------------|--------------|--|
| | Average daily employment (No.) | | | Percentage to total | | | |
| | 1961 | 2002 | 2003 | 1961 | 2002 | 2003 | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (1) |
| (अ) ग्राहक वस्तू उद्योग | 5,10,254 | 4,42,367 | 4,21,460 | 64.8 | 37.4 | 36.0 | A. Consumer goods industries |
| 1. खाद्य उत्पादने, पेये, व तंबाखूची उत्पादने | 90,190 | 1,60,843 | 1,60,270 | 11.5 | 13.6 | 13.7 | Food products, beverages and tobacco products |
| 2. वस्त्रोद्योग (परिधान करण्याची वस्त्रे धरून) | 3,69,157 | 2,07,012 | 1,87,962 | 46.9 | 17.5 | 16.0 | Textiles (including wearing apparels) |
| 3. लाकूड आणि लाकडाची उत्पादने | 10,873 | 14,825 | 15,269 | 1.4 | 1.3 | 1.3 | Wood and wood products |
| 4. कागद आणि कागदाची उत्पादने प्रकाशन, मुद्रण इत्यादी | 38,982 | 57,098 | 55,558 | 5.0 | 4.8 | 4.7 | Paper and paper products, publishing, printing etc. |
| 5. कातडी कामावणे व चामड्याची उत्पादने | 1,052 | 2,589 | 2,401 | 0.1 | 0.2 | 0.2 | Tanning and dressing of leather and leather products |
| (ब) पुनर्निर्माण वस्तू उद्योग | 1,29,631 | 3,52,601 | 3,61,313 | 16.5 | 29.8 | 30.8 | B. Intermediate goods industries |
| 6. रसायने व रासायनिक उत्पादने | 34,048 | 1,29,585 | 1,37,072 | 4.3 | 11.0 | 11.7 | Chemicals and chemical products |
| 7. पेट्रोलियम, रबर, प्लॅस्टिक यांची उत्पादने | 17,379 | 55,935 | 59,068 | 2.2 | 4.7 | 5.0 | Petroleum, rubber, plastic products |
| 8. अधातू खनिज उत्पादने | 28,351 | 33,298 | 29,666 | 3.6 | 2.8 | 2.5 | Non-metallic mineral products |
| 9. मूलभूत धातू, धातूच्या वस्तू | 49,853 | 1,33,783 | 1,35,507 | 6.3 | 11.3 | 11.6 | Basic metal and metal products |
| (क) भांडवली वस्तू उद्योग | 1,21,920 | 2,98,823 | 2,98,266 | 15.5 | 25.3 | 25.5 | C. Capital goods industries |
| 10. यंत्रे व यंत्रसामग्री (परिवहन सामग्री वगळून) | 59,396 | 1,67,662 | 1,64,662 | 7.5 | 14.2 | 14.1 | Machinery and equipments (other than transport equipments) |
| 11. परिवहन सामग्री | 46,867 | 88,637 | 89,046 | 6.0 | 7.5 | 7.6 | Transport equipments |
| 12. इतर वस्तुनिर्माण उद्योग | 15,657 | 42,524 | 44,558 | 2.0 | 3.6 | 3.8 | Other manufacturing industries |
| (ड) इतर | | | | | | | D. Others |
| 13. इतर | 25,574 | 87,735 | 90,519 | 3.2 | 7.4 | 7.7 | Others |
| एकूण | 7,87,379 | 11,81,526 | 11,71,558 | 100.0 | 100.0 | 100.0 | Total |

* राष्ट्रीय औद्योगिक वर्गीकरण १९९८ नुसार/As per National Industrial Classification-1998

आधार - औद्योगिक सुरक्षा व आरोग्य संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई

Source - Directorate of Industrial Safety and Health, Maharashtra State, Mumbai

महाराष्ट्र राज्यातील चालू कारखाने व त्यातील रोजगार
WORKING FACTORIES AND FACTORY EMPLOYMENT IN MAHARASHTRA STATE

(रोजगाराची संख्या हजाराने)
(Employment in thousand)

| वर्ष (1) | बाब ** Item (2) | शक्तीवर चालणारे कारखाने Power operated factories | | | बिगर शक्तीवर चालणारे कारखाने Non-power operated factories | | | एकूण कारखाने All factories | | | Year (1) |
|-------------|-----------------------|---|---|--|---|---|---|---|--|--|-------------|
| | | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers (3) | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers (4) | एकूण शक्तीवर चालणारे कारखाने Total power operated (5) | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers (6) | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers (7) | एकूण बिगर चालणारे कारखाने Total non-power operated (8) | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers (9) | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers (10) | एकूण सर्व कारखाने Total all factories (11) | |
| १९६१ | कारखाने / Factories | 5,097 | 1,781 | 6,878 | 1,004 | 351 | 1,355 | 6,101 | 2,132 | 8,233 | 1961 |
| | रोजगार / Employment | 99 | 626 | 725 | 21 | 41 | 63 | 120 | 667 | 787 | |
| १९६६ | कारखाने / Factories | 5,504 | 2,246 | 7,750 | 934 | 359 | 1,293 | 6,438 | 2,605 | 9,043 | 1966 |
| | रोजगार / Employment | 108 | 715 | 823 | 18 | 38 | 57 | 126 | 753 | 879 | |
| १९७१ | कारखाने / Factories | 6,341 | 2,701 | 9,042 | 856 | 343 | 1,199 | 7,197 | 3,044 | 10,241 | 1971 |
| | रोजगार / Employment | 123 | 824 | 947 | 15 | 36 | 51 | 138 | 860 | 998 | |
| १९७६ | कारखाने / Factories | 8,414 | 2,715 | 11,129 | 724 | 70 | 794 | 9,138 | 2,785 | 11,923 | 1976 |
| | रोजगार / Employment | 157 | 874 | 1,031 | 11 | 6 | 17 | 168 | 880 | 1,048 | |
| १९८१ | कारखाने / Factories | 10,238 | 3,132 | 13,370 | 3,154 | 70 | 3,224 | 13,392 | 3,202 | 16,594 | 1981 |
| | रोजगार / Employment | 183 | 983 | 1,166 | 20 | 6 | 26 | 203 | 989 | 1,192 | |
| १९८६ | कारखाने / Factories | 11,364 | 3,043 | 14,407 | 5,524 | 35 | 5,559 | 16,888 | 3,078 | 19,966 | 1986 |
| | रोजगार / Employment | 189 | 929 | 1,117 | 28 | 4 | 32 | 217 | 933 | 1,150 | |
| १९९१ | कारखाने / Factories | 13,139 | 3,199 | 16,338 | 7,743 | 38 | 7,781 | 20,882 | 3,237 | 24,119 | 1991 |
| | रोजगार / Employment | 215 | 910 | 1,124 | 40 | 4 | 44 | 254 | 914 | 1,169 | |
| १९९६ | कारखाने / Factories | 14,710 | 3,757 | 18,467 | 9,168 | 33 | 9,201 | 23,878 | 3,790 | 27,668 | 1996 |
| | रोजगार / Employment | 245 | 985 | 1,231 | 45 | 4 | 48 | 290 | 989 | 1,279 | |

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 49 - contd.

(रोजगाराची संख्या हजारत)
(Employment in thousand)

| वर्ष | बाब ** Item | शक्तीवर चालणारे कारखाने Power operated factories | | | बिगर शक्तीवर चालणारे कारखाने Non-power operated factories | | | एकूण कारखाने All factories | | | Year |
|------|---------------------|---|--|--|---|--|---|---|--|--|------|
| | | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers | एकूण शक्तीवर कारखाने Total power operated | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers | एकूण बिगर शक्तीवर कारखाने Total non-power operated | ५० हून कमी कामगार कामावर असलेले Employing less than 50 workers | ५० किंवा अधिक कामगार कामावर असलेले Employing 50 or more workers | एकूण सर्व कारखाने Total all factories | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (1) |
| २००१ | कारखाने / Factories | 15,977 | 3,929 | 19,906 | 8,393 | 25 | 8,418 | 24,370 | 3,954 | 28,324 | 2001 |
| | रोजगार / Employment | 266 | 891 | 1,157 | 42 | 2 | 44 | 308 | 893 | 1,201 | |
| २००३ | कारखाने / Factories | 16,991 | 3,713 | 20,704 | 8,091 | 21 | 8,112 | 25,082 | 3,734 | 28,816 | 2003 |
| | रोजगार / Employment | 283 | 846 | 1,129 | 40 | 2 | 42 | 323 | 848 | 1,171 | |

** कारखाने-चालू कारखान्यांची संख्या, रोजगार-रोजगारांची दैनिक सरासरी.

१९७४ पासून बिडी कारखान्यांची नोंद यातून काढून वेगळ्या अधिनियमाखाली समाविष्ट करण्यात आली आहे.

- टीप -** (१) रोजगारात प्रपत्र न पाठविणाऱ्या कारखान्यातील दैनिक सरासरी रोजगारांचा समावेश आहे.
 (२) वरील आकडे १९४८ च्या कारखाना अधिनियमाखाली येणाऱ्या कारखान्यासंबंधीचे आहेत.
 (३) २००३ चे आकडे अस्थायी स्वरूपाचे आहेत.
 (४) "बिगर शक्तीवर चालणारे कारखाने" यामध्ये कारखाना अधिनियम, १९४८ च्या विभाग ८५ खाली नोंदविलेल्या शक्तीवर चालणाऱ्या लहान कारखान्यांचा समावेश आहे.
 (५) रोजगाराचे आकडे संक्षिप्तात लिहिल्यामुळे काही ठिकाणी बेरजा जुळणार नाहीत.

आधार - औद्योगिक सुरक्षा व आरोग्य संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई.

** Factories-Number of working factories, Employment-Average Daily Employment.

Bidi factories are deregistered and covered under separate Act, from 1974.

- Note -** (1) Employment includes estimated average daily employment of factories not submitting returns.
 (2) Figures pertain to the factories registered under the Factories Act, 1948.
 (3) Figures for 2003 are provisional.
 (4) Non-power operated factories are inclusive of the power operated small factories registered under section 85 of the Factories Act, 1948.
 (5) Details may not add up to totals due to rounding in respect of employment.

Source - Directorate of Industrial Safety and Health, Maharashtra State, Mumbai.

EMPLOYMENT IN DIFFERENT INDUSTRIES IN MAHARASHTRA STATE

(संभरात / In hundred)

| अनुक्रमांक Serial No. (1) | उद्योग गट (2) | सरासरी दैनिक रोजगार Average daily employment | | | | | | | | | | Industry Group (2) |
|------------------------------------|--|---|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|--------------|--------------|--------------|--|
| | | 1961 (3) | 1966 (4) | 1971 (5) | 1976 (6) | 1981 (7) | 1986 (8) | 1991 (9) | 1996 (10) | 2001 (11) | 2003 (12) | |
| 1 | खाद्य उत्पादने, पेये व तंबाखूची उत्पादने | 902 | 916 | 921 | 839 | 965 | 1,196 | 1,330 | 1,591 | 1,662 | 1,603 | Food products, beverages and tobacco products |
| 2 | वस्त्रोद्योग (परिधान करण्याची वस्त्रे धरून) | 3,691 | 3,470 | 3,516 | 3,567 | 3,554 | 2,928 | 2,527 | 2,477 | 2,167 | 1,880 | Textiles (including wearing apparels) |
| 3 | लाकूड आणि लाकडाची उत्पादने | 109 | 111 | 75 | 62 | 75 | 152 | 152 | 153 | 154 | 153 | Wood and wood products |
| 4 | कागद, कागदाची उत्पादने मुद्रण व प्रकाशन | 390 | 451 | 494 | 511 | 549 | 530 | 491 | 546 | 525 | 556 | Paper, paper products, printing and publishing |
| 5 | कातडी कमावणे व चामड्याची उत्पादने | 11 | 13 | 14 | 23 | 25 | 27 | 35 | 36 | 25 | 24 | Tanning and dressing of leather and leather products |
| 6 | रसायने व रासायनिक उत्पादने | 340 | 519 | 760 | 947 | 1,059 | 1,034 | 1,215 | 1,361 | 1,299 | 1,371 | Chemicals and chemical products |
| 7 | पेट्रोलियम, रबर, प्लॅस्टिक यांची उत्पादने | 174 | 245 | 349 | 353 | 421 | 464 | 482 | 563 | 535 | 591 | Petroleum, rubber, plastic products |
| 8 | अधातू खनिज उत्पादने | 284 | 339 | 402 | 403 | 403 | 399 | 423 | 368 | 317 | 297 | Non-metallic mineral products |
| 9 | मूलभूत धातू, धातूची उत्पादने | 499 | 708 | 924 | 1,044 | 1,310 | 1,181 | 1,301 | 1,448 | 1,311 | 1,355 | Basic metals, metal products |
| 10 | यंत्रे व यंत्रसामग्री (परिवहन सामग्री वगळून) | 594 | 1,017 | 1,322 | 1,431 | 1,786 | 1,728 | 1,614 | 1,773 | 1,720 | 1,647 | Machinery and equipments (other than transport equipments) |
| 11 | परिवहन सामग्री | 469 | 502 | 608 | 701 | 903 | 1,004 | 867 | 1,018 | 1,025 | 890 | Transport equipments |
| 12 | इतर वस्तूनिर्माण उद्योग | 157 | 186 | 180 | 169 | 209 | 171 | 231 | 301 | 395 | 446 | Other manufacturing industries |
| 13 | इतर | 256 | 315 | 412 | 431 | 663 | 681 | 1,016 | 1,152 | 870 | 905 | Others |
| | एकूण | 7,873 | 8,792 | 9,977 | 10,481 | 11,922 | 11,496 | 11,684 | 12,787 | 12,006 | 11,716 | Total |

टीप - (१) आकडे सक्षिप्तात दिल्याने काही ठिकाणी बेरजा जुळणार नाहीत.

(२) १९७४ पासून बिडी कारखान्यांची नोंद वेगळ्या अधिनियमात करण्यात आली.

(३) २००३ चे आकडे अस्थायी आहेत.

आधार - औद्योगिक सुरक्षा व आरोग्य संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई.

Note - (1) Details may not add up to totals due to rounding.

(2) Bidi factories are covered under separate Act from 1974

(3) Figures for 2003 are provisional.

Source - Directorate of Industrial Safety and Health, Maharashtra State, Mumbai

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 51

राज्यातील रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांमध्ये नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या,
अधिसूचित केलेली रिक्त पदे व भरलेली पदे

**REGISTRATIONS IN THE EMPLOYMENT AND SELF EMPLOYMENT GUIDANCE CENTRES IN
THE STATE, THE VACANCIES NOTIFIED AND PLACEMENTS EFFECTED**

(हजारत/In thousand)

| वर्ष Year | नोंदणी झालेल्या व्यक्तींची संख्या Number of registrations | अधिसूचित केलेल्या रिक्त पदांची संख्या Number of vacancies notified | भरलेल्या पदांची संख्या Number of placements | वर्ष अखेरीस चालू नोंदवहीत असलेल्या व्यक्तींची संख्या Number of persons on live register as at the end of the year (5) |
|--------------|---|---|---|--|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) |
| 1960-61 | 278.0 | 62.0 | 29.0 | 162.0 |
| 1965-66 | 381.0 | 102.0 | 60.0 | 267.0 |
| 1970-71 | 415.0 | 87.0 | 40.0 | 361.0 |
| 1975-76 | 456.0 | 83.0 | 35.0 | 795.0 |
| 1980-81 | 608.0 | 86.0 | 40.0 | 1,268.0 |
| 1985-86 | 639.0 | 80.0 | 40.0 | 2,546.0 |
| 1990-91 | 622.0 | 64.0 | 31.0 | 3,022.0 |
| 1995-96 | 750.0 | 52.0 | 21.0 | 3,693.0 |
| 1996-97 | 654.0 | 51.0 | 21.0 | 3,799.0 |
| 1997-98 | 697.0 | 44.0 | 21.0 | 3,923.0 |
| 1998-99 | 785.0 | 46.0 | 16.0 | 4,153.0 |
| 1999-00 | 852.0 | 45.0 | 17.0 | 4,225.0 |
| 2000-01 | 668.0 | 40.0 | 17.0 | 4,322.0 |
| 2001-02 | 637.8 | 32.8 | 11.8 | 4,415.0 |
| 2002-03 | 691.0 | 44.4 | 10.1 | 3,979.0 |
| 2003-04 | 850.9 | 51.6 | 17.6 | 3,740.9 |
| 2004-05* | 662.5 | 31.7 | 11.0 | 4,105.7 |

टीप - वरील आकड्यात 'डीकॅज्युअलायझेशन स्कीम (टेक्स्टाईल)' यांचे आकडे समाविष्ट नाहीत.

Note - The above figures are exclusive of those relating to 'Decasualisation scheme (Textile)'

* सदर आकडेवारी एप्रिल ते डिसेंबर, २००४ या कालावधीसाठी आहे. /Figures are for the period of April to December, 2004

आधार - रोजगार व स्वयंरोजगार संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, नवी मुंबई.

Source - Directorate of Employment and Self - Employment, Government of Maharashtra, Navi Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 52

रोजगार व स्वयंरोजगार मार्गदर्शन केंद्रांच्या चालू नोंदवहीत डिसेंबर, २००४ अखेर असलेल्या व्यक्तींची संख्या
**NUMBER OF PERSONS ON THE LIVE REGISTER OF EMPLOYMENT AND
 SELF-EMPLOYMENT GUIDANCE CENTRES AS AT THE END OF DECEMBER, 2004**

| श. क्र. Sr. No. | शैक्षणिक पात्रता | व्यक्ती Persons | पैकी स्त्रिया of which, females | स्त्रियांची टक्केवारी Percentage of females | एकूण बेरजेशी व्यक्तींची टक्केवारी Percentage of persons to grand total | शैक्षणिक पात्रता Educational Qualification |
|--------------------|---|--------------------|---------------------------------------|--|--|---|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) |
| 1 | माध्यमिक शालांत परीक्षेपेक्षा कमी (निरक्षर धरून) | 7,02,193 | 1,32,471 | 18.87 | 17.10 | Below S.S.C (including illiterates) |
| 2 | माध्यमिक शालांत परीक्षा उत्तीर्ण | 20,55,286 | 3,85,228 | 18.74 | 50.06 | S.S.C. Passed |
| 3 | उच्च माध्यमिक शालांत परीक्षा उत्तीर्ण | 7,39,278 | 1,98,680 | 26.87 | 18.00 | H.S.C. Passed |
| 4 | ओ.प्र.स. प्रशासित व शिकाऊ उमेदवार | 1,50,324 | 5,971 | 3.97 | 3.66 | I.T.I. trained and Apprentices |
| 5 | पदवीकाधारक | | | | | Diploma holder |
| 5.1 | अभियांत्रिकी/तंत्रज्ञान | 49,275 | 5,401 | 10.96 | 1.20 | Engineering/Technology |
| 5.2 | वैद्यकीय, डी.एम.एल.टी. व फार्मसी | 246 | 2 | 0.81 | * | Medicine, DMLT and Pharmacy |
| 5.3 | इतर | 13,603 | 1,995 | 14.67 | 0.33 | Others |
| | एकूण (5.1 ते 5.3) | 63,124 | 7,398 | 11.72 | 1.54 | Total (5.1 to 5.3) |
| 6 | पदवीधर | | | | | Graduate |
| 6.1 | अभियांत्रिकी/तंत्रज्ञान | 23,013 | 3,748 | 16.29 | 0.56 | Engineering/Technology |
| 6.2 | वैद्यकीय | 5,329 | 1,609 | 30.19 | 0.13 | Medicine |
| 6.3 | इतर | 3,28,730 | 1,02,250 | 31.1 | 8.01 | Others |
| | एकूण (6.1 ते 6.3) | 3,57,072 | 1,07,607 | 30.14 | 8.70 | Total (6.1 to 6.3) |
| 7 | पदव्युत्तर पदवीधर | | | | | Post-Graduate |
| 7.1 | अभियांत्रिकी/तंत्रज्ञान | 407 | 22 | 5.41 | * | Engineering/Technology |
| 7.2 | वैद्यकीय | 186 | 30 | 16.13 | * | Medicine |
| 7.3 | इतर | 37,870 | 13,852 | 36.58 | 0.92 | Others |
| | एकूण (7.1 ते 7.3) | 38,463 | 13,904 | 36.15 | 0.94 | Total (7.1 to 7.3) |
| | एकूण बेरीज | 41,05,740 | 8,51,259 | 20.73 | 100.00 | Grand Total |

टीप / Note - * नगण्य / Negligible

आधार - रोजगार व स्वयंरोजगार संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, नवी मुंबई

Source - Directorate of Employment and Self-Employment, Government of Maharashtra, Navi Mumbai

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 53

रोजगार हमी योजनेखाली महाराष्ट्र राज्यात घेण्यात आलेली प्रकारानुसार कामे व त्यांवरील खर्च
CATEGORYWISE NUMBER OF WORKS AND EXPENDITURE INCURRED THEREON UNDER
THE EMPLOYMENT GUARANTEE SCHEME IN MAHARASHTRA STATE

(रुपये लाखात/Rs in lakh)

| कामाचा प्रकार (1) | 2002-03 | | 2003-04 | | 2004-05* | | Category of work (1) |
|---|--|--|--|--|---|---|--|
| | मार्च, २००३ अखेर पूर्ण केलेली एकूण कामे Number of completed works at the end of March, 2003 (2) | २००२-०३ मधील खर्च Expenditure incurred during 2002-03 (3) | मार्च, २००४ अखेर पूर्ण केलेली एकूण कामे Number of completed works at the end of March, 2004 (4) | २००३-०४ मधील खर्च Expenditure incurred during 2003-04 (5) | डिसेंबर, २००४ अखेर पूर्ण केलेली एकूण कामे Number of completed works at the end of Dec., 2004 (6) | २००४-०५ मधील डिसेंबर, २००४ पर्यंतचा खर्च Expenditure incurred during 2004-05 upto Dec., 2004 (7) | |
| 1. जलसिंचन | 1,434 | 10,961.44 | 1,286 | 17,015.81 | 1,514 | 12,895.56 | Irrigation |
| 2. मृदसंधारण व भू-विकास | 19,648 | 23,343.83 | 36,819 | 49,201.89 | 48,121 | 47,283.75 | Soil conservation and land development |
| 3. वनीकरणार्ची कामे | 1,085 | 8,631.40 | 2,857 | 7,498.29 | 3,318 | 8,597.05 | Forest works |
| 4. रस्तेविषयक कामे | 5,919 | 25,158.61 | 1,840 | 24,713.92 | 7,113 | 15,474.68 | Roads |
| 5. इतर कामे | 13 | 2,656.68 | 25,980 | 3,495.56 | 3,418 | 1,719.41 | Other works |
| 6. इतर (कर्मचाऱ्यांवरील खर्च, यंत्र, भूमिसंपादन, जवाहर विहिरी व फळबागा विकास इत्यादी) | 14,401 | 18,148.04 | -- | -- | 4,625 (Jawahar well) 19,057 (Hect.) (Horticulture) | 9,734.30 10,978.50 | Others (Expenditure under staff, machinery, land acquisition, jawahar wells, horticulture development etc.) |
| एकूण | 42,500 | 88,900.00 | 68,782 | 1,05,070.93** | 68,109@@ | 1,08,012.25 @ | Total |

T-60

* अस्थायी / Provisional @ आस्थापनेवरील खर्च रु. १,३२९ लाख चा समावेश आहे./Inclusive of Rs. 1,329 lakh establishment expenditure. @@ फळबागा वगळून / Excluding Horticulture

** आस्थापनेवरील खर्च ३,१४५.४६ लाखाचा समावेश आहे / Including of Rs 3,145.46 lakh establishment expenditure

आधार - नियोजन विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Planning Department, Government of Maharashtra, Mumbai.

महाराष्ट्र राज्यात राबविण्यात येणाऱ्या केंद्र पुरस्कृत रोजगार कार्यक्रमांची प्रगती
**PERFORMANCE OF CENTRALLY SPONSORED EMPLOYMENT PROGRAMMES
 IMPLEMENTED IN MAHARASHTRA STATE**

| अ. क्र. Sr No | रोजगार कार्यक्रम | डिसेंबर अखेरपर्यंत | | | | Employment Programme |
|--|--|--------------------|---------|---------------------------------|---------|---|
| | | 2002-03 | 2003-04 | Upto end of December 2003-04 | 2004-05 | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) |
| १. संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना | | | | | | Sampoorna Gramin Rojgar Yojana |
| १.१ आश्वासित रोजगार योजना (पहिला स्तर) | | | | | | 1.1 <i>Employment Assurance Scheme (First Stream)</i> |
| | अ) उपलब्ध निधी मागील वर्षाचा अर्जुचित निधी धरून (कोटी रुपये) | 242.68 | 258.76 | 354.64@ | 370.43@ | a) Funds available including unspent balance of last year (Crore Rs.) |
| | ब) झालेला खर्च (कोटी रुपये) | 205.48 | 239.51 | 252.46@ | 280.33@ | b) Expenditure incurred (Crore Rs.) |
| | क) रोजगार निर्मिती (कोटी मनुष्यदिवस) | 2.60 | 3.21 | 3.36@ | 3.89@ | c) Employment generated (crore mandays) |
| १.२ जवाहर ग्राम समृद्धी योजना (दुसरा स्तर) | | | | | | 1.2 <i>Jawahar Gram Samridhi Yojana (Second Stream)</i> |
| | अ) उपलब्ध निधी मागील वर्षाचा अर्जुचित निधी धरून (कोटी रुपये) | 228.79 | 246.91 | - | - | a) Funds available including unspent balance of last year (Crore Rs.) |
| | ब) झालेला खर्च (कोटी रुपये) | 209.58 | 234.60 | - | - | b) Expenditure incurred (Crore Rs.) |
| | क) रोजगार निर्मिती (कोटी मनुष्यदिवस) | 2.71 | 3.10 | - | - | c) Employment generated (Crore mandays) |
| २ स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना | | | | | | Swarnajayanti Gram Swarojgar Yojana |
| २.१ एकूण स्वरोजगारी (संख्या) | | 55,772 | 60,659 | 25,074 | 28,803 | 2.1 <i>Total Swarojgaries (Number)</i> |
| | अ) वैयक्तिक स्वरोजगारी (संख्या) | 21,643 | 15,165 | 7,234 | 5,582 | a) Individuals Swarojgaries (Number) |
| | ब) स्वसहाय्य गट स्वरोजगारी (संख्या) | 34,129 | 45,494 | 17,840 | 23,221 | b) SHG swarojgaries (Number) |
| २.२ स्वरोजगारींना एकूण अनुदान (कोटी रुपये) | | 56.62 | 59.97 | 24.98 | 28.89 | 2.2 <i>Total subsidy to Swarojgaries (Crore Rs.)</i> |
| | अ) वैयक्तिक स्वरोजगारी (कोटी रुपये) | 20.42 | 15.29 | 7.19 | 6.00 | a) Individuals Swarojgaries (Crore Rs.) |
| | ब) स्वसहाय्य गट स्वरोजगारी (कोटी रुपये) | 36.20 | 44.69 | 17.79 | 22.89 | b) SHG swarojgaries (Crore Rs.) |
| २.३ स्वरोजगारींना एकूण कर्ज (कोटी रुपये) | | 94.81 | 99.63 | 41.78 | 48.11 | 2.3 <i>Total credit to Swarojgaries (Crore Rs.)</i> |
| | अ) वैयक्तिक स्वरोजगारी (कोटी रुपये) | 43.39 | 32.17 | 14.41 | 12.10 | a) Individuals Swarojgaries (Crore Rs.) |
| | ब) स्वसहाय्य गट स्वरोजगारी (कोटी रुपये) | 51.42 | 67.47 | 27.37 | 36.01 | b) SHG swarojgaries (Crore Rs.) |
| २.४ सहाय्यीत स्वसहाय्य गट (संख्या) | | 3,227 | 4,309 | 1,686 | 2,230 | 2.4 <i>Self Help Group Assisted (Number)</i> |
| ३ स्वर्णजयंती शहरी रोजगार योजना | | | | | | Swarnajayanti Shahari Rojgar Yojana |
| ३.१ उपलब्ध निधी | | | | | | 3.1 <i>Funds available</i> |
| | अ) केंद्र शासन (कोटी रुपये) | 6.18 | 3.23 | 2.70 | 11.09 | a) Central Government (Crore Rs.) |
| | ब) राज्य शासन (कोटी रुपये) | 2.06 | 1.07 | 0.90 | 3.05 | b) State Government (Crore Rs.) |
| ३.२ शहरी स्वयंरोजगार कार्यक्रम | | | | | | 3.2 <i>Urban Self Employment Programme</i> |
| | अ) लक्ष्य (लाभधारकांची संख्या) | 32,630 | 13,637 | *13,637 | *14,366 | a) Target (Number of Beneficiaries) |
| | ब) साध्य (लाभधारकांची संख्या) | 11,802 | 8,332 | 5,459 | 4,037 | b) Achievement (Number of Beneficiaries) |
| | क) झालेला खर्च (कोटी रुपये) | 3.87 | 2.75 | 1.84 | 1.47 | c) Expenditure incurred (Crore Rs.) |
| ३.३ प्रशिक्षण | | | | | | 3.3 <i>Training</i> |
| | अ) लक्ष्य (प्रशिक्षणार्थींची संख्या) | 49,250 | 22,123 | *22,123 | *22,641 | a) Target (Number of Trainees) |
| | ब) साध्य (प्रशिक्षणार्थींची संख्या) | 39,700 | 21,758 | 10,337 | 7,557 | b) Achievement (Number of Beneficiaries) |
| | क) झालेला खर्च (कोटी रुपये) | 5.33 | 3.68 | 1.41 | 1.12 | c) Expenditure incurred (Crore Rs.) |
| ३.४ शहरी वेतनी रोजगार कार्यक्रम | | | | | | 3.4 <i>Urban Wage Employment Programme</i> |
| | अ) लक्ष्य (कोटी मनुष्यदिवस) | 0.03 | 0.03 | *0.03 | *0.05 | a) Target (Crore mandays) |
| | ब) साध्य (रोजगार निर्मिती लाख मनुष्यदिवस) | 4.93 | 3.19 | 1.86 | 0.76 | b) Achievement (Employment generated lakh mandays) |
| | क) झालेला खर्च (कोटी रुपये) | 12.44 | 5.88 | 4.40 | 1.81 | c) Expenditure incurred (Crore Rs.) |
| ४ पंतप्रधान रोजगार योजना | | | | | | Prime Minister's Rojgar Yojana |
| | अ) मंजूर कर्ज (कोटी रुपये) | 158.85 | 151.60 | 74.05 | 75.82 | a) Loan sanctioned (Crore Rs.) |
| | ब) लाभधारक (संख्या) | 27,201 | 26,181 | 12,734 | 12,848 | b) Beneficiaries (Number) |

* वार्षिक/Annual

@ पहिला स्तर आणि दुसरा स्तर यांची एकत्रित माहिती. २००४-०५ पासून सदर योजनेचा पहिला स्तर आणि दुसरा स्तर हे एकत्रित करून राज्यामध्ये राबविण्यात येतात./ Combined data of first and second streams. The first stream and second stream of this scheme are merged and implemented in the State from 2004-05

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 55
महाराष्ट्र राज्यातील औद्योगिक विवाद *
INDUSTRIAL DISPUTES IN MAHARASHTRA STATE *

(भाग घेतलेले कामगार व वाया गेलेले श्रमदिन शंभरात/
Workers participated and mandays lost in hundred)

| बाब | 1961 | 1966 | 1971 | 1976 | 1981 | 1986 | 1991 | 1996 | 2001 | 2003 | 2004@ | Item |
|----------------------------------|-------|--------|--------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|---------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (1) |
| 1 कापड गिरण्या-- | | | | | | | | | | | | Textile mills — |
| (अ) संप व टाळेबंदीची संख्या | 34 | 89 | 156 | 72 | 66 | 28 | 10 | 11 | 12 | 6 | 6 | (a) No. of strikes and lockouts |
| (ब) भाग घेतलेले कामगार | 172 | 3,069 | 3,197 | 955 | 564 | 108 | 61 | 38 | 86 | 17 | 17 | (b) Workers participated |
| (क) वाया गेलेले श्रमदिन | 356 | 22,280 | 9,702 | 1,917 | 47,356 | 5,920 | 2,368 | 5,492 | 4,533 | 5,666 | 3,063 | (c) Mandays lost |
| 2. अभियांत्रिकी कारखाने-- | | | | | | | | | | | | Engineering factories — |
| (अ) संप व टाळेबंदीची संख्या | 57 | 230 | 211 | 143 | 119 | 65 | 59 | 47 | 28 | 12 | 9 | (a) No. of strikes and lockouts |
| (ब) भाग घेतलेले कामगार | 122 | 485 | 469 | 276 | 412 | 140 | 110 | 184 | 65 | 25 | 30 | (b) Workers participated |
| (क) वाया गेलेले श्रमदिन | 1,071 | 3,340 | 5,641 | 1,747 | 16,209 | 10,927 | 14,462 | 26,720 | 25,786 | 25,317 | 18,024 | (c) Mandays lost |
| 3. संकीर्ण-- | | | | | | | | | | | | Miscellaneous — |
| (अ) संप व टाळेबंदीची संख्या | 183 | 462 | 323 | 122 | 451 | 207 | 148 | 54 | 19 | 9 | 8 | (a) No. of strikes and lockouts |
| (ब) भाग घेतलेले कामगार | 541 | 1,590 | 841 | 287 | 1,031 | 584 | 423 | 144 | 85 | 23 | 17 | (b) Workers participated |
| (क) वाया गेलेले श्रमदिन | 4,329 | 9,799 | 5,182 | 546 | 31,489 | 36,131 | 29,663 | 15,148 | 15,896 | 12,561 | 6,738 | (c) Mandays lost |
| 4. एकूण-- | | | | | | | | | | | | Total — |
| (अ) संप व टाळेबंदीची संख्या | 274 | 781 | 690 | 337 | 636 | 300 | 217 | 112 | 59 | 27 | 23 | (a) No. of strikes and lockouts |
| (ब) भाग घेतलेले कामगार | 834 | 5,144 | 4,507 | 1,519 | 2,007 | 831 | 594 | 366 | 237 | 65 | 63 | (b) Workers participated |
| (क) वाया गेलेले श्रमदिन | 5,756 | 35,419 | 20,525 | 4,210 | 95,054 | 52,978 | 46,493 | 47,360 | 52,309 | 43,543 | 27,825 | (c) Mandays lost |

टीप - (१) @ २००४ चे आकडे अस्थायी स्वरूपाचे आहेत.

(२) बाब क्रमांक ४(ब) व ४(क) समोरील आकडे संक्षिप्तात दिल्याने प्रत्यक्ष बेरजेची जुळतीलच असे नाही.

(३) * राज्य औद्योगिक संबंध यंत्रणेखालील.

आधार - कामगार आयुक्त, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

Note - (1) @ Figures for 2004 are provisional.

(2) Figures against item No. 4(b) and 4(c) may not tally against actual totals due to rounding

(3) *Under State Industrial Relations Machinery.

Source - Commissioner of Labour, Government of Maharashtra, Mumbai.

GROWTH OF EDUCATION IN MAHARASHTRA

| संस्थांचा प्रकार † | 1960-61 | 1965-66 | 1970-71 | 1975-76 | 1980-81 | 1985-86 | 1990-91 | 1995-96 | 2000-01 | 2003-04(E) | 2004-05(E) | Type of institutions † |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|------------|------------|--|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) | (12) | (1) |
| १ प्राथमिक | | | | | | | | | | | | Primary— |
| (१) संस्था | 34,594 | 41,781 | 44,535 | 48,018 | 51,045 | 54,406 | 57,744 | 62,342 | 65,960 | 67,291 | 67,964 | Institutions |
| (२) विद्यार्थी (हजारात) | 4,178 | 5,535 | 6,539 | 7,367 | 8,392 | 9,418 | 10,424 | 11,717 | 11,857 | 11,689 | 11,747 | Enrolment (in thousand) |
| (३) शिक्षक (हजारात) | 113 | 153 | 178 | 220 | 222 | 245 | 268 | 302 | 313 | 322 | 330 | Teachers (in thousand) |
| (४) प्रत्येक शिक्षकामागे विद्यार्थ्यांची संख्या | 37 | 36 | 37 | 33 | 38 | 38 | 39 | 39 | 38 | 36 | 36 | No. of students per teacher |
| २ माध्यमिक (उच्च माध्यमिक सह)@ | | | | | | | | | | | | Secondary (Including Higher Secondary)@ |
| (१) संस्था | 2,468 | 4,032 | 5,313 | 5,897 | 6,119 | 8,177 | 10,519 | 13,646 | 15,389 | 17,985 | 18,717 | Institutions |
| (२) विद्यार्थी (हजारात) | 858 | 1,500 | 1,985 | 2,513 | 3,309 | 4,585 | 6,260 | 7,615 | 9,267 | 10,122 | 10,499 | Enrolment (in thousand) |
| (३) शिक्षक (हजारात) | 35 | 57 | 75 | 94 | 114 | 146 | 194 | 229 | 255 | 273 | 278 | Teachers (in thousand) |
| (४) प्रत्येक शिक्षकामागे विद्यार्थ्यांची संख्या | 25 | 26 | 26 | 27 | 29 | 31 | 32 | 33 | 36 | 37 | 38 | No. of students per teacher |
| ३ उच्च (सर्व प्रकारचे)* | | | | | | | | | | | | Higher (All types)* |
| (१) संस्था | 211 | 361 | 547 | 701 | 739 | 964 | 1,134 | 1,339 | 1,528 | 1,878 # | 1,934 | Institutions |
| (२) विद्यार्थी (हजारात) | 110 | 189 | 328 | 474 | 589 | 864 | 1,135 | 873 | 1,086 | 1,111 # | 1,145 | Enrolment (in thousand) |

E - अंदाजित/Estimated. # - अस्थायी/Provisional.

† शालेय व पदवीपूर्व व्यवसाय शिक्षण संस्था वगळून/Excluding school level and pre-degree level vocational institutions

@ १९९४-९५ पासून कनिष्ठ महाविद्यालयांचा समावेश उच्च माध्यमिक शिक्षणामध्ये केला आहे/From 1994-95 onwards junior colleges are included in higher secondary education.

* १९९४-९५ पासून वैद्यकीय, अभियांत्रिकी व कृषि संस्था वगळल्या आहेत/From 1994-95 Medical, Engineering and Agricultural Institutions are excluded.

आधार - शिक्षण संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, पुणे.

Source - Directorate of Education, Government of Maharashtra, Pune.

राज्यातील वर्ष २००४-०५ मधील वैद्यकीय, परिचर्या महाविद्यालये / संस्थांची संख्या व त्यांची प्रवेशक्षमता
NUMBER OF MEDICAL, NURSING COLLEGES/INSTITUTIONS IN THE STATE AND THEIR INTAKE
CAPACITY FOR THE YEAR 2004-05

| विद्याशाखा | शासकीय Government @ | | शासन अनुदानित Government aided | | विनाअनुदानित Unaided | | एकूण Total | | Faculty | |
|--|------------------------|--------------------------|-----------------------------------|--------------------------|-------------------------|--------------------------|------------------------|--------------------------|---------|---|
| | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (1) | |
| अ) वैद्यकीय | | | | | | | | | | |
| Medical | | | | | | | | | | |
| Allopathic | | | | | | | | | | |
| 1. अॅलोपॅथिक | | | | | | | | | | Graduate |
| 1.1 पदवी | 18 | 2,060 | 1 | 64 | 16 | 1,645 | 35 | 3,769 | | Post-Graduate |
| 1.2 पदव्युत्तर | 15 | 1,063 | - | - | 6 | 62 | 21 | 1,125 | | |
| Ayurvedic | | | | | | | | | | |
| 2. आयुर्वेदिक | | | | | | | | | | Graduate |
| 2.1 पदवी | 4 | 220 | 16 | 810 | 33 | 1,575 | 53 | 2,605 | | Post-Graduate # |
| 2.2 पदव्युत्तर # | 4 | 81 | 11 | 157 | 4 | 37 | 19 | 275 | | |
| Homeopathic | | | | | | | | | | |
| 3. होमिओपॅथिक | | | | | | | | | | Graduate |
| 3.1 पदवी | - | - | - | - | 47 | 3,265 | 47 | 3,265 | | Post-Graduate # |
| 3.2 पदव्युत्तर # | - | - | - | - | 10 | 402 | 10 | 402 | | |
| Unani | | | | | | | | | | |
| 4. युनानी | | | | | | | | | | Graduate |
| 4.1 पदवी | - | - | 3 | 150 | 2 | 45 | 5 | 195 | | Post-Graduate # |
| 4.2 पदव्युत्तर # | - | - | 2 | 10 | - | - | 2 | 10 | | |
| Dental | | | | | | | | | | |
| 5. दंत चिकित्सा | | | | | | | | | | Graduate |
| 5.1 पदवी | 4 | 240 | - | - | 17 | 1,400 | 21 | 1,640 | | Post-Graduate |
| 5.2 पदव्युत्तर | 4 | 44 | - | - | 1 | 8 | 5 | 52 | | |
| ब) परिचर्या * | | | | | | | | | | |
| Nursing* | | | | | | | | | | |
| Nursing Degree | | | | | | | | | | |
| 1. परिचर्या पदवी | | | | | | | | | | Basic |
| 1.1 मूलभूत | 1 | 30 | - | - | 10 | 410 | 11 | 440 | | Post Basic |
| 1.2 मूलभूत नंतर | 2 | 38 | - | - | 4 | 75 | 6 | 113 | | |
| Nursing | | | | | | | | | | |
| 2. परिचर्या | | | | | | | | | | Post - Graduate |
| पदव्युत्तर | - | - | 1 | 16 | 1 | 20 | 2 | 36 | | |
| 3. सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविका प्रशिक्षण | 28 | 817 | - | - | 56 | 1,390 | 84** | 2,207 | | General Nursing and Midwifery Nursing Training |
| 4. सहाय्यकारी परिचर्या/ प्रसविका प्रशिक्षण | 23 | 460 | - | - | 26 | 525 | 49** | 985 | | Auxiliary Nursing / Midwifery Nursing Training |
| 5. सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविका प्रशिक्षण प्रमाणोत्तर शिक्षणक्रम | 2 | 50 | - | - | 3 | 40 | 5 | 90 | | Post Certificate course after General Nursing and Midwifery Nursing Training |

@ महानगरपालिका व विद्यापीठ व्यवस्थापनाखालील धरून / Including under management of Municipal Corporation and University.

आधार - संचालनालय वैद्यकीय शिक्षण आणि संशोधन, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Medical Education & Research, Government of Maharashtra, Mumbai

आयुर्वेद संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई * महाराष्ट्र परिचर्या परिषद, मुंबई.

Directorate of Ayurved, Government of Maharashtra, Mumbai * Maharashtra Nursing Council, Mumbai

** यात सर्वसाधारण परिचर्या व प्रसविका आणि सहाय्यकारी परिचर्या व प्रसविका ११ संस्थांचा समावेश आहे ** This includes 11 institutions of G.N.M & A.N.M.

राज्यातील वर्ष २००४-०५ यामधील तंत्र शिक्षणाची महाविद्यालये / संस्थांची संख्या व त्यांची प्रवेशक्षमता
NUMBER OF TECHNICAL COLLEGES/INSTITUTIONS IN THE STATE AND THEIR INTAKE
CAPACITY FOR THE YEAR 2004-05

| विद्याशाखा | शासकीय Government | | शासन अनुदानित Government aided | | विनाअनुदानित Unaided | | एकूण Total | | Faculty |
|---|------------------------|--------------------------|-----------------------------------|--------------------------|-------------------------|--------------------------|------------------------|--------------------------|---|
| | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | संस्था Institutions | प्रवेशक्षमता Capacity | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (1) |
| 1. अभियांत्रिकी | | | | | | | | | Engineering |
| 1.1 पदविका | 34 | 9,870 | 21 | 2,905 | 110 | 28,000 | 165 | 40,775 | Diploma |
| 1.2 पदवी | 6 | 1,830 | 10 | 2,302 | 135 | 42,737 | 151 | 46,869 | Graduate |
| 1.3 पदव्युत्तर | 5 | 766 | 6 | 640 | 20 | 503 | 31 | 1,909 | Post-Graduate |
| 2. वास्तुशास्त्र | | | | | | | | | Architecture |
| 2.1 पदविका | - | - | 1 | 60 | - | - | 1 | 60 | Diploma |
| 2.2 पदवी | - | - | 3 | 127 | 28 | 865 | 31 | 992 | Graduate |
| 2.3 पदव्युत्तर | - | - | 1 | 12 | 1 | 20 | 2 | 32 | Post-Graduate |
| 3. व्यवस्थापन शास्त्र | 10 | 780 | - | - | 92 | 6,450 | 102 | 7,230 | Management Sciences |
| 4. हॉटेल व्यवस्थापन व खाद्यपेय व्यवस्था तंत्रज्ञान | | | | | | | | | Hotel Management & Catering Technology |
| 4.1 पदविका | 2 | 120 | - | - | 14 | 765 | 16 | 885 | Diploma |
| 4.2 पदवी | - | - | 1 | 40 | 9 | 520 | 10 | 560 | Graduate |
| 5. औषध निर्माणशास्त्र | | | | | | | | | Pharmaceutical Science |
| 5.1 पदविका | 4 | 210 | 21 | 1,240 | 81 | 4,840 | 106 | 6,290 | Diploma |
| 5.2 पदवी | 3 | 150 | 6 | 270 | 63 | 3,467 | 72 | 3,887 | Graduate |
| 5.3 पदव्युत्तर | 2 | 28 | 4 | 90 | 3 | 30 | 9 | 148 | Post-Graduate |
| 6. मास्टर इन कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन | 2 | 60 | 4 | 215 | 53 | 2,743 | 59 | 3,018 | Master in Computer Application |
| 7. औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था * | 347 | 64,087 | - | - | 251 | 28,493 | 598 | 92,580 | Industrial Training * Institutes |

आधार - (१) तंत्रशिक्षण संचालनालय, मुंबई.

(२) * व्यवसाय शिक्षण संचालनालय, मुंबई.

Source - (1) Directorate of Technical Education, Mumbai

(2) * Directorate of Vocational Education, Mumbai

महाराष्ट्र राज्यातील उपलब्ध वैद्यकीय सुविधा
MEDICAL FACILITIES AVAILABLE IN MAHARASHTRA STATE
(सार्वजनिक आणि शासन सहाय्यित)
(Public and Government aided)

| अनुक्रमांक Serial No. | वर्ष Year | रुग्णालये (संख्या) Hospitals (No.) | दवाखाने (संख्या) Dis- pensaries (No.) | प्राथमिक आरोग्य केंद्रे (संख्या) Primary Health Centres (No.) | प्राथमिक आरोग्य पथके (संख्या) Primary Health Units (No.) | क्षयरोग रुग्णालये आणि रुग्ण चिकित्सालये (संख्या) T. B. Hospitals and Clinics (No.) | संस्थांतील@@ खाटांची (संख्या) Beds in Institu- tions (No.) | दर लाख@ लोकसंख्ये- मागे खाटा Beds per Lakh of popula- tion |
|-----------------------------|--------------|---|---|---|--|---|--|--|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) |
| 1 | 1971 | 299 | 1,372 | 388 | 1 | 72 | 43,823 | 88 |
| 2 | 1976 | 423 | 1,502 | 409 | 220 | 90 | 48,748 | 105 |
| 3 | 1981 | 530 | 1,776 | 454 | 400 | 90 | 71,385 | 114 |
| 4 | 1986 | 769 | 1,782 | 1,539 | 81 ++ | 90 | 99,487 | 142 |
| 5 | 1991 | 768 | 1,896 | 1,672 | 81 | 1,977 | 1,09,267 | 144 |
| 6 | 1994 | 826 | 1,404 † | 1,669 | 167 | 2,489 | 88,676 | 105 |
| 7 | 1995 | 828 | 1,404 † | 1,672 | 167 | 2,494 | 88,143 | 101 |
| 8 | 1996 | 828 | 1,399* | 1,675 | 167 | 2,497 | 88,530 | 99 |
| 9 | 1997 | 839 | 1,388** | 1,683 | 167 | 2,516 | 89,155 | 97 |
| 10 | 1998 | 843 | 1,396 | 1,683 | 169 | 2,520 | 89,575 | 96 |
| 11 | 1999 | 887 | 1,396 | 1,762 | 169 | 2,520 | 91,273 | 98 |
| 12 | 2000 | 889 | 1,629 | 1,763 | 169 | 2,520 | 97,007 | 104 |
| 13 | 2001 | 981 | 1,629 | 1,768 | 169 | 2,520 | 1,01,670 | 105 |
| 14 | 2002 | 964 | 2,081 | 1,806 | 174 | 2,520 | 92,106 | 93 |
| 15 | 2003 | 945 | 2,019 | 1,807 | 177 | 2,520 | 92,472 | 92 |

@@ फक्त सार्वजनिक व शासन सहाय्यित रुग्णालयातील खाटांचा समावेश आहे.
खाजगी रुग्णालयातील खाटांचा समावेश केलेला नाही.

Includes beds in General and Government Aided Hospitals only.
Beds in Private Hospitals not included.

@ संबंधित वर्षाच्या मध्याकरिता अंदाजित लोकसंख्येवर आधारित आहे. / Based on mid year projected population of respective year.

* नागरी दवाखाना कंधार, बिलोली, हदगाव, मुखेड (जि.नांदेड) बंद झाल्यामुळे.
Due to Close of Urban Dispensaries Kandhar, Biloli, Hadgaon, Mukhed (Dist.-Nanded)

** जिल्हा परिषद, यवतमाळ सेस फंडाअंतर्गत ११ अनुदानित दवाखान्याचे अनुदान बंद केल्यामुळे संख्या कमी.
Due to stop of aid from Zilla Parishad Cess Fund, 11 Dispensaries are reduced.

† जिल्हा परिषद, अमरावती सेस फंडाअंतर्गत २२ अनुदानित दवाखाने सर्वसाधारण सभेतील ठरावानुसार बंद करण्यात आल्यामुळे संख्या कमी झाली.
As per resolution passed in general body meeting 22 aided Dispensaries under Zilla Parishad Amaravati Cess Fund has been closed,hence reduction in number

++ प्राथमिक आरोग्य केंद्र म्हणून श्रेणीवाढ झाल्यामुळे.
Reduction in numbers due to upgradation as Primary Health Centers

आधार - आरोग्यसेवा संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, पुणे.

Source - Directorate of Health Services, Government of Maharashtra, Pune.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 60

| उपभोग्य वस्तूंचे गट (1) | जुलै, १९९३ ते जून, १९९४/ July, 1993 to June, 1994 | | | | | | जुलै, १९९९ ते जून, २०००/ | | |
|----------------------------|---|-------------------------|---------------------|-------------------------|---------------------|-------------------------|--------------------------|-------------------------|-------------------|
| | ग्रामीण/Rural | | नागरी/Urban | | राज्य/State | | ग्रामीण/Rural | | नागरी/ |
| | द.मा.ख. M.P.C.E. | टक्केवारी Percentage | द.मा.ख. M.P.C.E. | टक्केवारी Percentage | द.मा.ख. M.P.C.E. | टक्केवारी Percentage | द.मा.ख. M.P.C.E. | टक्केवारी Percentage | मा.ख. M.P.C.E. |
| | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) |
| 1. तृणधान्ये | 55.95 | 16.81 | 63.16 | 11.64 | 58.49 | 14.38 | 81.65 | 16.70 | 97.91 |
| 2. कडधान्ये | 16.41 | 4.93 | 19.32 | 3.56 | 17.43 | 4.29 | 21.73 | 4.44 | 26.68 |
| 3. दूध व दुधाचे पदार्थ | 21.75 | 6.53 | 45.40 | 8.36 | 30.07 | 7.39 | 33.16 | 6.78 | 66.62 |
| 4. इतर अन्नपदार्थ | 102.20 | 30.70 | 169.41 | 31.21 | 125.85 | 30.94 | 139.48 | 28.53 | 34.65 |
| एकूण अन्नपदार्थ | 196.31 | 58.97 | 297.29 | 54.77 | 231.84 | 57.00 | 276.02 | 56.45 | 25.86 |
| 5. कापड | 22.56 | 6.78 | 25.23 | 4.65 | 23.50 | 5.78 | 36.37 | 7.44 | 55.90 |
| 6. इंधन व दिवाबत्ती | 26.35 | 7.91 | 36.63 | 6.75 | 29.97 | 7.37 | 39.79 | 8.14 | 67.01 |
| 7. इतर अन्नतर पदार्थ | 87.71 | 26.34 | 183.61 | 33.83 | 121.46 | 29.85 | 136.75 | 27.97 | 36.61 |
| एकूण अन्नतर पदार्थ | 136.62 | 41.03 | 245.47 | 45.23 | 174.93 | 43.00 | 212.91 | 43.55 | 59.52 |
| एकूण | 332.93 | 100.00 | 542.76 | 100.00 | 406.77 | 100.00 | 488.93 | 100.00 | 85.38 |

टीप - वरील आकडेवारी राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या विविध राज्य नमुन्यातील फेऱ्यांच्या माहितीवर आधारित आहे. स्तंभ क्र. १४ ते १९ मधील आकडेवारी ६१ व फेरीच्या (जुलै, २००४ - जून, २००५) पहिल्या दोन उपफेऱ्यांवर आधारित असून ती अस्थायी आहे.

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

TABLE No. 60

दरडोई मासिक खर्च (द.मा.ख.)

BY GROUP OF ITEMS OF CONSUMPTION

(द.मा.ख. रुपयात/MPCE in Rs.)

| July, 1999 to June, 2000 | | | | | जुलै ते डिसेंबर, २००४/July to December, 2004 | | | | | Group of items of consumption (1) |
|--------------------------|---------------|---------------|---------------|---------------|--|---------------|---------------|---------------|-----|---|
| Urban | | राज्य/State | | ग्रामीण/Rural | | नागरी/Urban | | राज्य/State | | |
| टक्केवारी | द.मा.ख. | टक्केवारी | द.मा.ख. | टक्केवारी | द.मा.ख. | टक्केवारी | द.मा.ख. | टक्केवारी | | |
| Percentage | M.P.C.E. | Percentage | M.P.C.E. | Percentage | M.P.C.E. | Percentage | M.P.C.E. | Percentage | | |
| (11) | (12) | (13) | (14) | (15) | (16) | (17) | (18) | (19) | | |
| 11.06 | 88.01 | 13.67 | 81.31 | 13.38 | 102.10 | 8.24 | 89.30 | 10.50 | ... | Cereals |
| 3.01 | 23.66 | 3.67 | 22.01 | 3.62 | 28.91 | 2.33 | 24.66 | 2.90 | ... | Pulses |
| 7.53 | 46.24 | 7.18 | 34.20 | 5.63 | 81.66 | 6.59 | 52.43 | 6.17 | ... | Milk and milk products |
| 26.50 | 176.69 | 27.44 | 157.16 | 25.87 | 271.23 | 21.89 | 200.97 | 23.64 | ... | Other food items |
| 48.10 | 334.60 | 51.96 | 294.68 | 48.50 | 483.90 | 39.05 | 367.36 | 43.21 | ... | Total - Food items |
| 6.31 | 44.01 | 6.83 | 40.17 | 6.61 | 46.45 | 3.75 | 42.58 | 5.01 | ... | Clothing |
| 7.57 | 50.43 | 7.83 | 65.30 | 10.75 | 122.80 | 9.91 | 87.39 | 10.28 | ... | Fuel and light |
| 38.02 | 214.88 | 33.38 | 207.38 | 34.14 | 586.08 | 47.29 | 352.86 | 41.50 | ... | Other non-food items |
| 51.90 | 309.32 | 48.04 | 312.85 | 51.50 | 755.33 | 60.95 | 482.83 | 56.79 | ... | Total - Non-food items |
| 100.00 | 643.92 | 100.00 | 607.53 | 100.00 | 1,239.23 | 100.00 | 850.19 | 100.00 | ... | Total |

Note - Figures are based on the State sample data of various rounds of the National Sample Survey. Figures in col. no. 14 to 19 are based on first two sub-rounds of 61st Round (July, 2004 - June, 2005) and are provisional.

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

तक्ता क्रमांक / TABLE No. 61

दरडोई मासिक खर्चाच्या वर्गाप्रमाणे लोकसंख्येची टक्केवारी
**PERCENTAGE DISTRIBUTION OF POPULATION ACCORDING TO MONTHLY PER CAPITA
EXPENDITURE CLASS**

| दरडोई मासिक खर्चाचे वर्ग (रुपये) Monthly per capita expenditure class (Rs.) (1) | जुलै, १९९३ ते जून, १९९४ July, 1993 to June, 1994 | | | जुलै, १९९९ ते जून, २००० July, 1999 to June, 2000 | | | जुलै ते डिसेंबर, २००४ July to December, 2004 | | |
|---|---|-----------------------|-----------------------|---|-----------------------|-----------------------|---|-----------------------|------------------------|
| | ग्रामीण Rural (2) | नागरी Urban (3) | राज्य State (4) | ग्रामीण Rural (5) | नागरी Urban (6) | राज्य State (7) | ग्रामीण Rural (8) | नागरी Urban (9) | राज्य State (10) |
| | Below 100 पेक्षा कमी | 0.15 | 0.01 | 0.10 | 0.07 | 0.00 | 0.04 | 0.13 | 0.00 |
| 100-200 | 16.25 | 3.29 | 11.69 | 1.72 | 0.10 | 1.08 | 0.50 | 0.02 | 0.32 |
| 200-400 | 61.55 | 38.01 | 53.27 | 37.32 | 10.17 | 26.72 | 27.47 | 6.32 | 19.35 |
| 400-600 | 15.64 | 28.37 | 20.12 | 42.08 | 23.81 | 34.94 | 36.25 | 14.29 | 27.80 |
| 600-800 | 3.83 | 14.91 | 7.73 | 12.17 | 21.48 | 15.81 | 18.22 | 17.33 | 17.88 |
| 800-1000 | 1.38 | 7.38 | 3.48 | 3.60 | 14.60 | 7.90 | 8.21 | 16.11 | 11.24 |
| 1000 आणि अधिक/ and above | 1.20 | 8.03 | 3.61 | 3.04 | 29.84 | 13.51 | 9.22 | 45.93 | 23.33 |
| एकूण /Total | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 | 100.00 |

टीप - वरील आकडेवारी राष्ट्रीय नमुना पाहणीच्या विविध फेऱ्यांच्या राज्य नमुन्यातील माहितीवर आधारित आहे. स्तंभ क्र. ८ ते १० मधील आकडेवारी ६१ व्या फेरीच्या (जुलै, २००४ - जून, २००५) पहिल्या दोन उपफेऱ्यांवर आधारित असून ती अस्थायी आहे.

Note - Figures are based on the State sample data of various rounds of the National Sample Survey. Figures in col. no. 8 to 10 are based on first two sub-rounds of 61st Round (July, 2004 - June, 2005) and are provisional

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

वृष्टिक्षेपात आर्थिक गणना १९९० आणि १९९८
ECONOMIC CENSUS 1990 AND 1998 AT A GLANCE

(हजारत/In thousand)

| बाब | ग्रामीण/Rural | | | नागरी/Urban | | | एकूण/Total | | | Item |
|---|---------------|-------|-----------------------------------|-------------|-------|-----------------------------------|------------|--------|-----------------------------------|--|
| | 1990 | 1998 | शेकडा वाढ per cent increase | 1990 | 1998 | शेकडा वाढ per cent increase | 1990 | 1998 | शेकडा वाढ per cent increase | |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) |
| 1. उपक्रमांची संख्या | | | | | | | | | | I. No. of Enterprises |
| (अ) स्व-कार्यरत उपक्रम | 1,008 | 1,294 | 28.36 | 714 | 969 | 35.76 | 1,722 | 2,263 | 31.42 | (a) Own Account Enterprises |
| (ब) आस्थापना* | 300 | 319 | 6.30 | 602 | 652 | 8.38 | 902 | 971 | 7.69 | (b) Establishments* |
| (क) एकूण | 1,308 | 1,613 | 23.30 | 1,316 | 1,621 | 23.24 | 2,624 | 3,234 | 23.27 | (c) Total |
| 2. काम करणाऱ्या व्यक्तींची संख्या-- | | | | | | | | | | II. Persons usually working in-- |
| (अ) स्व-कार्यरत उपक्रम | 1,375 | 2,008 | 46.09 | 998 | 1,305 | 30.71 | 2,373 | 3,313 | 39.62 | (a) Own Account Enterprises |
| (ब) आस्थापना | 1,472 | 1,680 | 14.10 | 5,115 | 5,452 | 6.62 | 6,587 | 7,132 | 8.26 | (b) Establishments |
| (क) एकूण | 2,847 | 3,688 | 29.55 | 6,113 | 6,757 | 10.52 | 8,960 | 10,445 | 16.57 | (c) Total |
| 3. प्रति उपक्रम काम करणाऱ्यांची सरासरी संख्या | 2.2 | 2.3 | | 4.7 | 4.2 | | 3.4 | 3.2 | | III. Average No. of workers per enterprise |
| 4. प्रति आस्थापना काम करणाऱ्यांची सरासरी संख्या | 4.9 | 5.3 | | 8.5 | 8.4 | | 7.3 | 7.4 | | IV. Average No. of workers per establishment |
| 5. एकूण आस्थापनांवरील मजुरीवरील व्यक्ती | 1,332 | 1,495 | 12.25 | 4,561 | 4,782 | 4.83 | 5,893 | 6,277 | 6.50 | V. Hired workers in all to establishments |
| 6. प्रमुख वैशिष्ट्यांनुसार उपक्रमांची संख्या-- | | | | | | | | | | VI. No. of enterprises according principal characteristics |
| (१) हंगामी | 163 | 137 | (-) 16.13 | 38 | 23 | (-) 37.19 | 201 | 160 | (-) 20.08 | (1) Seasonal |
| (२) परिसर नसलेले | 231 | 218 | (-) 5.88 | 156 | 226 | 44.73 | 387 | 444 | 14.54 | (2) Without premises |
| (३) शक्ती/इंधन वापरणारे | 218 | 239 | 9.46 | 304 | 363 | 19.44 | 522 | 602 | 15.27 | (3) With power /fuel |
| (४) मालकाचा सामाजिक गट | | | | | | | | | | (4) Social group of owner- |
| (अ) अनुसूचित जाती | 118 | 124 | 5.11 | 62 | 100 | 62.39 | 180 | 224 | 24.82 | (a) Scheduled castes |
| (ब) अनुसूचित जमाती | 63 | 92 | 45.04 | 26 | 48 | 87.78 | 89 | 140 | 57.34 | (b) Scheduled tribes |
| (५) मालकीचा प्रकार-- | | | | | | | | | | (5) Type of ownership |
| (अ) खाजगी | 1,147 | 1,472 | 28.27 | 1,241 | 1,568 | 26.36 | 2,388 | 3,040 | 27.28 | (a) Private |
| (ब) सहकारी | 25 | 21 | (-) 17.12 | 18 | 12 | (-) 36.29 | 43 | 33 | (-) 25.18 | (b) Co-operative |
| (क) सार्वजनिक | 136 | 121 | (-) 11.11 | 55 | 40 | (-) 27.03 | 191 | 161 | (-) 15.72 | (c) Public |

*आस्थापना -- ज्या उपक्रमात कमीत कमी एक तरी व्यक्ती मजुरीवर काम करते/ Establishment -- enterprises with atleast one hired worker.

टीप - आकडे शिक्षेपात दिल्याने टक्केवारी जुळतीलच असे नाही/Note - Percentage may not tally due to rounding

आधार - अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई /Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai

आर्थिक गणना/ ECONOMIC CENSUS 1998

प्रमुख उद्योग गटांनुसार उपक्रमांची आणि कामगारांची संख्या

NUMBER OF ENTERPRISES AND PERSONS USUALLY WORKING ACCORDING TO MAJOR INDUSTRY GROUPS

| प्रमुख उद्योग गट (1) | उपक्रमांची संख्या No. of enterprises | | | कामगारांची संख्या (हजारात) Persons usually working (In thousand) | | | मजुरीवरील कामगारांची संख्या (हजारात) Hired persons usually working (In thousand) | | | Major industry groups (1) |
|--|---|-----------------------|----------------------|--|-----------------------|----------------------|--|-----------------------|-----------------------|--|
| | ग्रामीण Rural (2) | नागरी Urban (3) | एकूण Total (4) | ग्रामीण Rural (5) | नागरी Urban (6) | एकूण Total (7) | ग्रामीण Rural (8) | नागरी Urban (9) | एकूण Total (10) | |
| 1 कृषि ... | 4,88,692 | 28,840 | 5,17,532 | 903 | 65 | 968 | 54 | 19 | 73 | Agriculture |
| 2 खाणकाम व दगड खाणकाम ... | 2,361 | 507 | 2,868 | 22 | 22 | 44 | 19 | 21 | 40 | Mining and quarrying |
| 3 वस्तुनिर्माण व दुरुस्ती सेवा ... | 2,15,909 | 2,27,936 | 4,43,845 | 861 | 1,547 | 2,408 | 533 | 1,245 | 1,778 | Manufacturing and repair services |
| 4 वीज, गॅस आणि पाणीपुरवठा ... | 600 | 671 | 1,271 | 9 | 22 | 31 | 9 | 22 | 31 | Electricity, gas and water supply |
| 5 बांधकाम ... | 38,002 | 20,306 | 58,308 | 70 | 67 | 137 | 18 | 42 | 60 | Construction |
| 6 घाऊक व्यापार ... | 21,984 | 65,658 | 87,642 | 54 | 214 | 268 | 24 | 129 | 153 | Wholesale trade |
| 7 किरकोळ व्यापार... | 3,99,319 | 6,87,286 | 10,86,605 | 634 | 1,365 | 1,999 | 93 | 497 | 590 | Retail trade |
| 8 उपाहारगृहे आणि हॉटेल्स ... | 46,052 | 77,256 | 1,23,308 | 112 | 349 | 461 | 43 | 248 | 291 | Restaurants and hotels |
| 9 वाहतूक ... | 34,533 | 84,929 | 1,19,462 | 64 | 323 | 387 | 23 | 232 | 255 | Transport |
| 10 साठवण आणि गोदामे ... | 1,606 | 9,258 | 10,864 | 5 | 30 | 35 | 4 | 21 | 25 | Storage and warehousing |
| 11 दळणवळण ... | 5,805 | 18,989 | 24,794 | 14 | 108 | 122 | 12 | 88 | 100 | Communications |
| 12 वित्तीय, विमा, स्थावर मालमत्ता आणि व्यावसायिक सेवा. | 33,015 | 79,859 | 1,12,874 | 89 | 582 | 671 | 58 | 500 | 558 | Financial, insurance, real estate and business services. |
| 13 सामूहिक, सामाजिक व व्यक्तिगत सेवा | 3,25,474 | 3,19,175 | 6,44,649 | 852 | 2,062 | 2,914 | 605 | 1,718 | 2,323 | Community, social and personal services. |
| 14 इतर (उल्लेख न केलेले उद्योग गट) | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | Others (Unspecified industry groups). |
| एकूण ... | 16,13,352 | 16,20,670 | 32,34,022 | 3,689 | 6,756 | 10,445 | 1,495 | 4,782 | 6,277 | Total |

टीप - रकाना क्रमांक ५ ते १० मधील आकडे संक्षिप्तात दिल्याने बेरजा जुळतीलच असे नाही.

Note - Details may not add up to totals due to rounding of figures in column No. 5 to 10.

संस्कार अर्थ व आर्थिकी मंत्रालय, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

Source - Directorate of Economics and Statistics, Government of Maharashtra, Mumbai.

Director
and Administration,
17, Anand Bhawan Marg,
New Delhi-110016
DOC, No. ...
Date: ...

मुद्रणस्थळ : शासकीय मध्यवर्ती मुद्रणालय, मुंबई

NIEPA DC



D12607